सिंघी जैन ग्रन्थमाला

जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, कथात्मक–इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध
बहु उपयुक्त पुरातनवाङ्मय तथा नवीन संशोधनात्मक
साहित्यप्रकाशिनी जैन ग्रन्थावलि ।

कलकत्तानिवासी स्वर्गस्थ **श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी** की पुण्यस्मृतिनिमित्त
तत्सुपुत्र **श्रीमान् बहादुरसिंहजी सिंघी** कर्तृक
संस्थापित तथा प्रकाशित

सम्पादक तथा संचालक

जिन विजय मुनि

[सम्मान्य सभासद–भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर पूना, तथा गुजरात साहित्यसभा अहमदाबाद;
भूतपूर्वाचार्य–गुजरात पुरातत्त्वमन्दिर अहमदाबाद, जैनवाङ्मयाध्यापक विश्वभारती, शान्तिनिकेतन;
प्राकृतभाषादि–प्रधानाध्यापक भारतीय विद्या भवन बंबई, तथा, जैन साहित्यसंशोधक ग्रन्थावलि–
पुरातत्त्वमन्दिर ग्रन्थावलि–भारतीय विद्या ग्रन्थावलि–अन्तर्गत संस्कृत–प्राकृत–पाली–
अपभ्रंश–प्राचीनगूर्जर–हिन्दी–आदि भाषामय अनेकानेक ग्रन्थ संशोधक–सम्पादक ।]

ग्रन्थांक ३

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक - सिंघी जैन ग्रन्थमाला

अनेकान्त विहार, ९, शान्तिनगर; पो० साबरमती, अहमदाबाद		सिंघी सदन, ४८, गरियाहाट रोड; पो० बालीगंज, कलकत्ता

स्थापनाब्द] सर्वाधिकार संरक्षित [वि० सं० १९८९

श्री मेरुतुङ्गाचार्यविरचित

प्रबन्धचिन्तामणि

संस्कृत ग्रन्थका

हिन्दी भाषान्तर



अनुवादक

पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदी

[आचार्य-हिन्दी शिक्षापीठ, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन]

सम्पादक

जिन विजय मुनि

[प्राकृत भाषादि प्रधानाध्यापक-भारतीय विद्या भवन, बम्बई;

सम्पादक-भारतीय विद्या-त्रैमासिक पत्रिका-इत्यादि]

प्रकाशन-कर्ता

संचालक-सिंघी जैन ग्रन्थमाला

अहमदाबाद-कलकत्ता

प्रबन्धचिन्तामणिकी संकलना ।

इस ग्रन्थका संकलन और प्रकाशन निम्न प्रकारसे, ५ भागोंमें, पूर्ण होगा।

(१) प्रथम भाग –

भिन्न भिन्न प्रतियोंके आधारपर संशोधित – विविध पाठान्तर समन्वित – मूल ग्रन्थ; १ परिशिष्ट; मूलग्रन्थ और परिशिष्टमें आये हुये संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषामय पद्योंकी अकारादिक्रमानुसार सूचि; पाठ संशोधनके लिये काममें लाई गई पुरातन प्रतियोंका सचित्र वर्णन । (छप गया)

(२) द्वितीय भाग –

प्रबन्धचिन्तामणिगत प्रबन्धोंके साथ सम्बन्ध और समानता रखनेवाले अनेकानेक पुरातन प्रबन्धोंका संग्रह; पद्यानुक्रमसूचि; विशेषनामानुक्रम; विस्तृत प्रस्तावना और प्रबन्ध संग्रहोंकी मूल प्रतियोंका सचित्र परिचय । (छप गया)

(३) तृतीय भाग –

प्रबन्ध चिन्तामणिके मूल संस्कृतका शुद्ध और सरल संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर, विशिष्ट प्रास्ताविक वक्तव्यके साथ । (प्रस्तुत ग्रन्थ)

(४) चतुर्थ भाग –

पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह नामक द्वितीय भागका संपूर्ण हिन्दी भाषान्तर । (छप रहा है)

(५) पञ्चम भाग – दो विभागोंमें

(१) पहले विभागमें – शिलालेख, ताम्रपत्र, पुस्तक प्रशस्ति आदि जितने समकालीन साधन और ऐतिह्य प्रमाण उपलब्ध होते हैं उनका एकत्र संग्रह और तत्परिचायक उपयुक्त विस्तृत विवेचन; प्राक्कालीन और पश्चात्कालीन अन्यान्य ग्रन्थोंमें उपलब्ध प्रमाणभूत प्रकरणों, उल्लेखों और अवतरणोंका संग्रह; कुछ शिलालेख, ताम्रपत्र और प्राचीन ताडपत्रोंके चित्र – इत्यादि ।

(२) दूसरे विभागमें – प्रबन्धचिन्तामणिग्रथित सब विषयोंका विवेचन करनेवाली विस्तृत प्रस्तावना – जिसमें तत्कालीन ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक और राजकीय परिस्थितिका सविशेष ऊहापोह और सिंहावलोकन किया जायगा । साथमें प्राचीन मन्दिर, मूर्तियां, पोथियां इत्यादिके अनेक चित्र भी दिये जायँगे ।

समर्पण

*

परमधामप्रस्थित
पितृपादकी पुण्यप्रतिमाको
प्रणति पूर्वक



प्रबन्धचिन्तामणि विषयानुक्रम

–तीसरा प्रकाश–

–चतुर्थ प्रकाश–

—पंचम प्रकाश—

पुरातन प्रबन्ध संग्रह

प्रस्तुत प्रबन्धचिन्तामणिके भाषान्तरके साथ पुरातन-प्रबन्ध-संग्रहका भाषान्तर भी विद्वानोंको अवश्य अवलोकनीय है। इस संग्रहमें, ऐसे अनेक छोटे-छोटे और-और प्रबन्ध भी संगृहीत हैं जो प्र० चि० में बिल्कुल नहीं है; अथवा जिनमेंकी ऐतिहासिक बातें विशेष ज्ञातव्य हैं और जो प्र० चि० की पूरक हैं। खास करके वस्तुपाल-तेजपाल प्रबन्धके साथ सम्बन्ध रखनेवाली कितनीक बहुत ही महत्त्वकी ऐतिहासिक घटनाओंका इसमें सविशेष वर्णन किया गया है। वीरधवलकी मृत्युके बाद किस तरह वीसलदेवको राजगादी मिली और किस तरह मंत्री तेजपालने उसको गुजरातके साम्राज्यका स्वामी बनाया यह बात इसमें बड़ी स्पष्टता और विश्वसनीय ढंगसे बताई गई है। तदुपरान्त, नाडोलके राव लाखण, काशीके राजा जयचन्द्र, दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान आदिके विषयके भी कितने ही महत्त्वके उल्लेख इस संग्रहमें प्राप्त होते हैं।

इस तरह प्र० चि० वर्णित व्यक्तियोंके विषयकी कई नवीन बातें इस संग्रहके अवलोकनसे ज्ञात होगी। अतएव इतिहासके अभ्यासियोंके लिये यह संग्रह अवश्य अवलोकनीय है।

प्रास्ताविक वक्तव्य।

श्री मेरुतुङ्गाचार्यरचित **प्रबन्धचिन्तामणि** नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक-प्रबन्ध-संग्रहात्मक संस्कृत ग्रन्थका यह हिन्दी भाषान्तर, आज सहर्ष हम हिन्दी भाषाभाषियोंकी सेवामें उपस्थित करते हैं।

१. प्रबन्धचिन्तामणिका महत्त्व और प्रामाण्य।

गुजरातके प्राचीन इतिहासकी विशिष्ट श्रुति और स्मृतिके आधारभूत जितने भी प्रबन्धात्मक और चरित्रात्मक ग्रन्थ-निबन्ध इत्यादि प्राकृत, संस्कृत या प्राचीन देशी भाषामें रचे हुए उपलब्ध होते हैं, उन सबमें इस प्रबन्धचिन्तामणिका स्थान सबसे विशिष्ट और अधिक महत्त्वका है।

उस प्राचीन समयसे ही—जबसे इसकी रचना हुई है तबसे ही—इस ग्रन्थकी प्रतिष्ठा विद्वानोंमें खूब अच्छी तरह हो गई थी और जिनको कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्तोंके जाननेकी उत्कण्ठा होती थी वे प्रायः इसका वाचन और अध्ययन किया करते थे। पिछले कई ग्रन्थकारोंने इस ग्रन्थका अपनी रचनाओंमें अच्छा उपयोग भी किया है, और आदरपूर्वक इसका उल्लेख भी किया है। इन ग्रन्थकारोंमें, सबसे पहले शायद जिनप्रभ सूरि हैं जो प्रायः इनके समकालीन थे। यद्यपि उन्होंने इनका कहीं नामोल्लेख नहीं किया है तथापि अपने महत्त्वके ग्रन्थ, विविधतीर्थकल्पमें, जैसा कि हमने उसकी प्रस्तावनामें (पृ० ३, पंक्ति ४-५ पर) सूचित किया है, इस ग्रन्थका सर्व प्रथम उपयोग किया है। इसके बाद, इन जिनप्रभ सूरिके उत्तरावस्थाके समकालीन और इन्हींके पास कुछ गहन शास्त्रोंका अध्ययन भी करनेवाले मलधारी राजशेखर सूरिने, अपने प्रबन्धकोषमें, इस ग्रन्थका जैसा उपयोग किया है, उसका परिचय हमने, प्रबन्धकोषकी प्रस्तावनामें, '**प्रबन्धचिन्तामणि और प्रबन्धकोष**' इस शीर्षकके नीचे (पृ० २, कण्डिका ४ में) कराया है। राजशेखर सूरिने तो प्रकट रूपसे इस ग्रन्थका नामोल्लेख भी किया है। हेमचन्द्र सूरिके वृत्तान्तमें उन्होंने कहा है कि–' इन आचार्यके जीवनके सम्बन्धमें जो जो बातें प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थमें लिखी गई हैं, उनका वर्णन हम यहां पर नहीं करना चाहते। ऐसा करना चर्वित-चर्वण मात्र होगा। '–इत्यादि। (देखो, प्र० को० पृ० ४७, प्रकरण ५७, पंक्ति १२-१६). संवत् १४२२ में समाप्त होनेवाले जयसिंह-सूरि-रचित **कुमारपालचरितमें**, तथा संवत् १४६४ के पूर्वमें लिखे गये **कुमारपालप्रबोधप्रबन्धमें** (–यह ग्रन्थ शीघ्र ही प्रस्तुत ग्रन्थमालामें प्रकाशित होनेवाला है); और संवत् १४९२ में संकलित, जिनमण्डनोपाध्यायके **कुमारपालप्रबन्धमें**, इस ग्रन्थका खूब उपयोग किया गया है। सं० १४९७ में परिपूर्ण होनेवाले **जिनहर्षगणीकृत वस्तुपालचरित्रमें** भी इसका यथेष्ट आधार लिया गया है। सं० १५०० के बाद, प्रायः १०-१५ वर्षके बीचमें जिसकी रचना हुई जान पड़ती है, उस **उपदेशतरंगिणी** नामक ग्रन्थमें तो इस ग्रन्थमेंसे प्रायः सैंकडों ही पद्य उद्धृत किये गये हैं और इसके अने‍क प्रबन्धोंका बहुत कुछ सार लिया गया है। एक जगह तो ग्रन्थकारने इसका प्रकट नामनिर्देश भी कर दिया है और लिख दिया है कि–' **सर्वेऽपि प्रबन्धाः प्रबन्धचिन्तामणितो ज्ञेयाः।**' (बनारस आवृत्ति, पृ० ५८). इसके बादके **श्राद्धविधि, उपदेशसप्ततिका** आदि १६ वीं शताब्दीमें बने हुए ग्रन्थोंमें, उनके कर्ताओंने भी अपने अपने ग्रन्थोंमें इस ग्रन्थका जहां-तहां आधार लिया है और इसमें वर्णित ऐतिहासिक उल्लेखोंका सार उद्धृत किया है। १७ वीं सदीमें, अकबरके समयमें होनेवाले हीरविजय सूरिके प्रसिद्ध सहपाठी और अनुगामी विद्वान् महोपाध्याय धर्मसागर गणीने अपनी सुप्रचलित **तपागच्छपट्टावलि** और अन्य ग्रन्थोंमें भी

इस ग्रन्थके कई उल्लेखोंका आधार लिया है। इसी तरह १८ वीं शताब्दीमें बने हुए वस्तुपालरास, कुमारपाल-रास आदि भाषा ग्रन्थोंके रचयिताओंने भी अपनी अपनी कृतियोंमें इस ग्रन्थका बहुत कुछ उपयोग किया है, जिनका विशेष वर्णन करना आवश्यक नहीं है।

इस कथनसे ज्ञात होता है कि उस पुरातन समयसे ही मेरुतुङ्ग सूरिके इस महत्त्वके ग्रन्थकी अच्छी ख्याति और उपयोगिता स्थापित हो गई थी।

२. प्रबन्धचिन्तामणिकी वर्तमान नवीन युगमें प्रसिद्धि और उपयोगिता।

प्रवर्तमान नवीन कालके प्रारंभमें, सबसे पहले इंग्रेज विद्वान् श्री **एलेक्झेंडर किन्लॉक फॉर्बस** साहबको इसका परिचय हुआ और उन्होंने गुजरातके इतिहास विषयकी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक **' रासमाला '** में इसका सर्वप्रथम उपयोग किया। अपने ग्रन्थमें लिखे गये गुजरातके प्राचीन इतिहासका मुख्य ढांचा उन्होंने इसी ग्रन्थ परसे तैयार किया। वे अपने ग्रन्थमें, इस ग्रन्थका पद पद पर उल्लेख करते हैं और इसमें लिखी गई बातोंका संपूर्ण उपयोग करते हैं। उनके पीछे, भारतीय पुरातत्त्वके प्रखर पण्डित, जर्मन विद्वान्, डॉ० ब्युह्लरने इस ग्रन्थका खूब बारीकीके साथ अध्ययन किया और इसमें वर्णित ऐतिहासिक तथ्योंका सविशेष ऊहापोह किया। ' इन्डियन ऐन्टीकेरी ' नामक भारतीय-विद्या विषयक सुप्रसिद्ध पत्रिकाके सन् १८७७ के जुलाई मासके अंकमें उन्होंने 'अनहिलवाडके चालुक्योंके ११ दानपत्र' (Eleven land-grants of the Chalukyas of Anhilvad) इस शीर्षक नीचे, अणहिलपुरके राजकीय इतिहास पर प्रकाश डालनेवाला एक महत्त्वका लेख लिखा जिसमें इस प्रबन्धचिन्तामणि कथित बातोंका अच्छा अवलोकन किया। फिर उसके बादमें, डॉ० ब्युह्लरने, जर्मन भाषामें Uber das Leben des Jaina Monches Hemacandra इस नामसे, आचार्य हेमचन्द्रका सविस्तर जीवनचरित्र लिखा, जिसमें उन्होंने प्रस्तुत प्रबन्धचिन्तामणिका पूरा पूरा उपयोग किया*। इसके बाद, बंबई सरकारने, बॉम्बे गेझेटियरके लिये जब गुजरातका प्राचीन इतिहास तैयार करवाया, तो उसके संकलनकर्ता प्रसिद्ध गुजराती पुरातत्त्वज्ञ डॉ० भगवानलाल इन्द्रजीने, इस ग्रन्थका बहुत सूक्ष्मताके साथ सांगोपांग निरीक्षण किया और गुजरातके राजकीय इतिहासके साथ संबन्ध रखने वाली प्रायः सारी ऐतिह्य उक्तियों और श्रुतियोंका जो जो इसमें निर्देश मिलता है उन सबका ठीक ठीक पर्यालोचन कर, यथायोग्य उनका उपयोग किया। तदुपरान्त, गुजरातके इतिहास विषयक भिन्न भिन्न प्रकारके पुस्तकों और निबन्धोंके रचयिता एतद्देशीय और विदेशीय सैंकडो ही विद्वानोंने जहां-तहां इस ग्रन्थका अनेकशः आधार लिया है और उल्लेख किया है।

इस ग्रन्थकी ऐसी सार्वजनिक उपयोगिताको लक्ष्य कर, रासमालाके कर्ता विद्वान् फॉर्बस् साहबकी, और तदनुसार डॉ० ब्युह्लरकी भी, यह खास इच्छा रही कि विस्तृत टीका-टिप्पणियोंके साथ इस ग्रन्थका संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद किया जाय। डॉ० ब्युह्लरकी इस इच्छाको, कथासरित्सागर आदि प्रसिद्ध संस्कृत कथाग्रन्थोंके सिद्धहस्त इंग्रेजी अनुवादक, इंग्रेज विद्वान्, श्रीयुत सी. एच्. टॉनी, एम्. ए. ने पूरा किया। उन्होंने इस ग्रन्थका सुन्दर और संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद किया जिसको कलकत्ताकी एसियाटिक सोसाइटीने सन् १९०१ में छपा कर प्रकाशित किया। डॉ० ब्युह्लरकी उत्कण्ठा थी कि वे टॉनीके इस भाषान्तरके साथ, ऐतिहासिक और भौगोलिक विषयोंकी परिचायक ऐसी अपनी टीका-टिप्पणियाँ दे कर, इस ग्रन्थकी उपादेयताका महत्त्व बढावेंगे; पर दुर्दैवसे इस कार्यके पूर्ण होनेके पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया और उनकी वह इच्छा यों ही अपूर्ण रह गई। विद्वान् टॉनीने अपने इंग्रेजी अनुवादकी प्रस्तावनाके प्रारंभमें, जो इस बारेमें कुछ लिखा है, उसका भावार्थ यह है—

---

* डॉ० ब्युह्लरका यह बडे महत्त्वका ग्रन्थ है। इसका इंग्रेजी अनुवाद The Life of Hemacandracarya इस नामसे, हमने अपने सहकारी मित्र डॉ. मणिलाल पटेल Ph. D. (मारबुर्ग-जर्मनी) द्वारा करवा कर, इसी सिंघी जैन ग्रन्थमालाके १२ वें नंबरमें प्रकाशित किया है। इंग्रेजी ज्ञाता विद्वानोंके लिये यह ग्रन्थ अवश्य पठनीय है।

" राजतरंगिणीके अकेले अपवादको बाद किया जाय तो, संस्कृत साहित्यमें ऐतिहासिक कहलाने लायक एक भी कोई ग्रन्थ नहीं है–ऐसा जो आक्षेप वारंवार किया जाता है, वह इस प्रबन्धचिन्तामणि जैसे ग्रन्थके अस्तित्वसे, किसी अंशमें मोटा पाडा जा सकता है। इस आक्षेपको निःसार सिद्ध करना यह स्वर्गगत डॉक्टर प्रोफेसर ब्युह्लरकी जीवन भरकी अभिलाषा थी। ग्रुन्डरिस्स् डेर इन्डो-आरिशेन् फिलोलोगी (Grundriss der Indo-Arischen Philologie) नामक ग्रन्थ-मालाके लिये, डॉ॰ ब्युह्लरकी रसप्रद जीवन कथाका आलेखन करनेवाले प्रो॰ जोलीने (Jolly), ई॰ स॰ १८७७ में श्रीयुत न्योल्डेके (Noldeke) नामक विद्वान् पर लिखे हुए ब्युह्लरके एक पत्रमेंसे अवतरण दिया है, जिसमें उन्होंने लिखा था कि–' भारतवासियोंके पास कुछ भी ऐतिहासिक साहित्य नहीं है इस प्रकारकी मान्यता रखनेमें आपलोग, वर्तमान समयसे कुछ थोडेसे पिछडे हुए मालूम दे रहे हैं। पिछले बीस वर्षोंमें ठीक ठीक विस्तृत ऐसे पाँच ऐतिहासिक ग्रन्थ मिल आये हैं, जो उनमें वर्णित घटनाओंके समकालीन ग्रन्थकारोंके बनाये हुए हैं। इनमेंसे ४ तो, जिनके नाम **विक्रमांकचरित, गउडवहो, पृथ्वीराज-दिग्विजय** और **कीर्तिकौमुदी** हैं, खुद मैंने खोज निकाले हैं। और एक डझनसे भी अधिक अन्य और ग्रन्थ खोज निकालनेकी तलाशमें हूँ।' यह प्रोफेसर ब्युह्लर-ही-के श्रमका फल है कि जो इतने सारे ऐतिहासिक वृत्तांत, इतने ऐतिहासिक काव्य और इतनी ऐतिहासिक कथायें संपादित हो सकीं। इस ग्रन्थके इंग्रेजी अनुवादके करनेका काम जो मैंने हाथमें लिया वह भी डॉ॰ ब्युह्लर-ही-की सूचनाका परिणाम है; और जो कोई पाठक मेरी टिप्पणियोंके पढनेका कष्ट उठायेगा उसे स्पष्ट ज्ञात हो जायगा, कि उन्हींके उत्तेजन और साहाय्यके विना मेरा यह काम अपने अन्तको न प्राप्त कर सकता। इस अनुवादके साथ ऐतिहासिक और भौगोलिक विषयोंकी पूर्ति करनेवाली टिप्पणियाँ लिखनेका उनका खास इरादा था। अगर यह बन पाता तो इस ग्रन्थकी उपयोगितामें खूब महत्त्वकी वृद्धि हो पाती; पर इस विचारके, कार्यरूपमें परिणत होनेके पहले ही, दुर्दैवसे उनका अवसान हो गया और अब यह बात ' मनकी बात मनमें ही रही ' जैसी कहावतके योग्य हो गई। भारतके इतिहास विषयक साहित्यके बारेमें और उसमें भी खास करके गुजरातके इतिहासके साथ संबद्ध साहित्यके संबन्धमें, हरएक इंग्रेज विद्यार्थीको एक और नामका स्मरण हो आना चाहिए और वह नाम है रासमालाके कर्ता श्री एलेक्झेंडर किन्लॉक फॉर्बस्का। मि. ए. जे. नैर्ने, बी. सी. एस. (Mr. A. J. Nairne, B. C. S.) ने फॉर्बस् साहबका जीवनचरित लिखा है, जो कर्नल वॉटसन् द्वारा संपादित और सन् १८७८ में प्रकाशित, **रासमाला**की आवृत्तिके प्रारंभमें मुद्रित है। श्री फॉर्बस् साहब एक ऐसे इन्डियन सिवीलियन थे, जिनको अपने भाग्यका पासा जिन लोगोंके साथ डाला गया हो उन लोगोंके इतिहास, वाङ्मय और पुरातत्त्वके विषयमें पूरा रस रहता हो। इस विषयकी उनकी, उत्कण्ठा और सत्यनिष्ठापूर्ण अध्ययनशीलताकी प्रतीति, **रासमाला**के प्रत्येक पृष्ठ पर होती रहती है। जिन अनेक मूलभूत आधारोंके ऊपरसे उन्होंने अपना ग्रन्थ तैयार किया, उनमेंका यह एक प्रबन्धचिन्तामणि है। इस ऐतिहासिक ग्रन्थका उन्होंने इतना तो संपूर्ण उपयोग किया है कि जिसे देख कर मेरे मनमें, अपने इस अनुवादके करते समय, वारंवार यह उठ आता था कि मैं निरर्थक ही यह श्रम कर रहा हूँ। किन्तु प्रो॰ ब्युह्लरने मुझसे कहा था कि इस ग्रन्थका संपूर्ण इंग्रेजी अनुवाद हो ऐसी इच्छा स्वयं फॉर्बस्ने अनेक बार प्रदर्शित की थी*। और यही मेरे इस परिश्रमकी उपयोगिताका आधार है। लेकिन, मैं अपने मनको इस तरह भी प्रोत्साहित रखना चाहता हूँ कि–मध्यकालीन इस जैन यतिने लिख रखी हुई इन श्रुतपरंपराओंमें, जिनका विवरण या संक्षिप्तीकरण करनेसे इनके मूलमें रही हुई आधी मोहकता नष्ट हो जाती है, न केवल भारतके इतिहासके अभ्यासियों-ही-को, किन्तु तदुपरान्त लोककथाओंके ज्ञाताओंको और मानव-नीति-शास्त्रके विद्वानोंको भी, रस प्राप्त होगा। ग्रन्थकार स्वयं भी कहता है कि–इस रचनाके करनेमें मेरा उद्देश जनमन रंजन करनेका है। " इत्यादि।

*

३. प्रबन्धचिन्तामणिके मूल संस्कृत ग्रन्थका प्रथम प्रकाशन और गुजराती भाषान्तर।

जैसा कि हमने, अपनी मूल आवृत्तिके प्रारम्भमें दिये हुए ' किंचित् प्रास्ताविक ' शीर्षक वक्तव्यमें लिखा है, इस ग्रन्थके संस्कृत मूलका प्रथम प्रकाशन, गुजरातके शास्त्री रामचन्द्र दीनानाथ नामक विद्वान्ने, संवत्

* फॉर्बस् साहबकी ऐसी इच्छा ही नहीं थी, बल्कि उन्होंने तो इसका पूरा इंग्रेजी अनुवाद खुद ही सबसे पहले कर लिया था और फिर उसका उपयोग रासमालामें किया था; ऐसा बम्बईकी फॉर्बस् सभामें जो उनका ग्रन्थसंग्रह विद्यमान है उससे मालूम होता है। बम्बईके इस संग्रहमें फॉर्बस् साहबकी हाथकी लिखी हुई एक नोटबुक है जिसमें इस ग्रन्थके ३,४ और ५ वें प्रकाशका इंग्रेजी भाषान्तर लिखा हुआ है। पहले दो प्रकाशोंका भाषान्तर, शायद किसी दूसरी नोटबुकमें लिखा हुआ होगा जो अब उपलब्ध नहीं है। श्री टॉनीको इसकी खबर न होनेसे, शायद उन्होंने वैसा लिखा होगा। अथवा वह भाषान्तर वैसा पूर्ण और शुद्ध न होगा जिससे फॉर्बस्को संतोष रहा हो, और इसीलिये उन्होंने इसका एक उत्तम भाषान्तर, योग्य संस्कृतज्ञ पण्डितके हाथसे हो, ऐसी इच्छा डॉ॰ ब्युह्लरके आगे प्रदर्शित की हो।

१९४४ में, बम्बईसे किया था। उसीके साथ उन्होंने, इसका गुजराती भाषामें अनुवाद भी छपवा कर प्रकाशित किया था। शास्त्रीजीका यह अनुवाद – जिसे अनुवाद नहीं लेकिन एक तरहका विवरण कहना चाहिए – पुराने ढंगसे और पुरानी शैलीकी भाषामें किया गया था और इसमें उन्होंने अपनी तरफसे भी बहुतसे वाक्य और विचार, जो मूलमें सर्वथा नहीं थे, खूब फैला फैला कर लिख दिये थे। परन्तु साथमें कोई ऐतिहासिक पर्यालोचनकी दृष्टिसे उपयुक्त ऐसा कुछ भी नहीं लिखा गया था। अनुवादमें – खास करके प्राकृत गाथाओं और सुभाषित रूपसे उद्धृत पद्योंके भाषान्तरमें – तो अनेकानेक बड़ी बड़ी भद्दी भूलें भी की गई हैं, जिनका यहाँ पर दिग्दर्शन कराना निरर्थक है। यहाँ पर इतना यह अवश्य कहना चाहिये कि इस उपयोगी ग्रन्थको सर्वसाधारणके लिये सुलभ बनानेका श्रेयस्कर कार्य, सबसे प्रथम उन्हीं शास्त्रीजीने किया और तदर्थ उनकी स्मृति सदैव आदरकी दृष्टिसे की जानी चाहिए।

जैसा कि, प्रथम भागरूप मूल ग्रन्थकी प्रस्तावनामें सूचित किया है, गुजरातके इतिहासकी दृष्टिसे इस ग्रन्थका महत्त्व लक्ष्यमें रख कर, हमने अहमदाबादके गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ओरसे – जिसके कि हम सर्व प्रधान संचालक और नियामक थे – इसकी एक सर्वांगपूर्ण सुविस्तृत आवृत्ति, विशुद्ध मूल और उत्तम गुजराती भाषान्तर आदिके साथ, प्रकट करनेका प्रयत्न करना शुरू किया था। यथानुक्रम, मूलका कुछ भाग संशोधित और संपादित कर, बम्बईके सुप्रसिद्ध कर्णाटक प्रेसमें छपनेको भी भेज दिया था और उसमें प्रायः प्रथमके दो प्रकाश जितना भाग छप भी चुका था। उसी बीचमें हमारा युरोप जाना हुआ और वह कार्य कुछ समयके लिये स्थगित रहा। करीब दो वर्षके बाद, वहाँसे हम जब वापस आये तो, देशमें राष्ट्रीय आन्दोलन बड़े जोरोंसे शुरू हुआ और हम भी उसमें संलग्न हो गये। सन् १९३० के अप्रेलमें, धारासणाके विख्यात नमक-सत्याग्रहमें सम्मीलित होनेके लिये, अहमदाबादसे ६०–७० जितने सत्याग्रहियोंकी एक जबर्दस्त टोली ले कर हमने प्रस्थान किया। पर अहमदाबादसे दूसरे ही स्टेशन पर, सरकारने हमको गिरफ्तार कर लिया और वहीं जंगल-ही-में मॅजिस्ट्रेटने हमको छ महिनेकी सजा दे कर, पहले बम्बई और फिर वहाँसे नासिक जेलमें भेज दिया।

इधर पीछेसे, गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरको भी – गुजरात विद्यापीठके साथ – सरकारने कब्जे कर, उसके विशाल ग्रन्थसमूहको जप्त कर लिया और उसकी वह सब स्थिति छिन्न-भिन्न हो गई। इस तरह प्रबन्धचिन्तामणिके विस्तृत प्रकाशनका जो आयोजन हमने गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ओरसे किया था, वह एक प्रकारसे उन्मूलित हो गया। इस परिस्थितिको जान कर, बंबईकी 'फॉर्बस् गुजराती साहित्य सभा'ने, जिसका भी प्रधान ध्येय गुजरातकी प्राचीन संस्कृतिके विविध साधनोंको प्रकाशमें लानेका है, इस ग्रन्थके प्रकाशनका कार्य हाथमें लिया और हमारे विद्वान् मित्र एवं गुजरातके इतिहासके एक विशिष्ट अभ्यासी, साक्षर श्रीदुर्गाशंकर केवलराम शास्त्रीको वह कार्य सौंपा गया। यह जान कर हमने शास्त्रीजीको हमारे मूलके छपे हुए उक्त उन दो प्रकाशोंके एड्वान्स फार्म भी उनके उपयोगके लिये भेज दिये। शास्त्रीजीने यथाशक्ति परिश्रम कर, पहले ग्रन्थका मूल भाग तैयार कर उसे प्रकट करवाया और फिर उसका शुद्ध गुजराती भाषान्तर, कितनीक ऐतिहासिक टीका-टिप्पणियोंके साथ संपादित कर, उक्त सभाकी ही ओरसे प्रकाशित कराया।

४. प्रबन्धचिन्तामणिका हमारा प्रकाशन।

जेलनिवाससे मुक्त होने पर कैसे दानवीर बाबू श्री बहादुरसिंहजीकी प्रियकर प्रेरणासे हमारा जाना शान्तिनिकेतन – विश्वभारतीमें हुआ और वहाँ पर रहते हुए कैसे इस '**सिंघी जैन ग्रन्थमाला**' के प्रकाशनका कार्य प्रारंभ किया गया – इत्यादि बातें हमने, संक्षेपमें, इसके पहले भागमें उल्लिखित कर दी हैं जिनको यहाँ पर दुहरानेकी आवश्यकता नहीं है।

उक्त रीतिसे फॉर्बस् सभाकी ओरसे इस ग्रन्थका, गुजराती भाषान्तर समेत, प्रकाशन होना चालू था, तब भी हमारे मनमें इसके प्रकाशनकी वह जो पूर्व कल्पना थी और इसके लिये जो साधन-सामग्री हमने वीसों वर्षोंसे इकट्ठी करनी शुरू की थी, उसका खयाल कर, हमने अपने उसी ढंगसे, इस ग्रन्थका पुनः संपादन करना प्रारम्भ किया। और चूंकि इसका गुजराती भाषान्तर, हमारे साक्षरमित्र श्री दुर्गाशंकर शास्त्री कर चुके हैं, इसलिये हमने इसका हिन्दी भाषान्तर प्रकट करनेका मनोरथ किया। हिन्दी भाषा, यों भी सबसे अधिक व्यापक भाषा है और फिर अब तो यह राष्ट्रकी सर्व प्रधान भाषा बन रही है, इसलिये सिंघी जैन ग्रन्थमालाके कार्यका लक्ष्य हिन्दीकी ओर ही अधिक रखा गया है।

इंग्रेजी और गुजरातीमें एकसे अधिक भाषान्तर होने पर भी हिन्दीमें इसका कोई भाषान्तर आज तक नहीं हुआ था; और इसकी कमी कई हिन्दी भाषाभाषी विज्ञजनोंको बहुत अर्सेसे खटक भी रही थी। हिन्दीके स्वर्गवासी प्रसिद्ध पण्डित और पुरातत्त्वज्ञ विद्वान्, चन्द्रधर शर्मा गुलेरीने बहुत वर्ष पहले हमसे अनुरोध किया था, और शायद *नागरीप्रचारिणी पत्रिका*के एक लेखमें उन्होंने लिखा भी था, कि इस ग्रन्थका हिन्दी अनुवाद होना आवश्यक है। आशा है गुलेरीजीकी स्वर्गस्थित आत्मा आज इसे देख कर प्रसन्न होगी।

*

५. प्रस्तुत हिन्दी भाषान्तर।

पाठकोंके हाथमें जो हिन्दी भाषान्तर उपस्थित किया जा रहा है, इसका प्राथमिक कच्चा खर्रा, जब हम शान्तिनिकेतनमें थे तब (सन् १९३२ में), वहाँके हिन्दी शिक्षापीठके विद्वान् आचार्य और हमारे सहृदय मित्र पं० श्रीहजारी प्रसादजी द्विवेदीने किया था, जिसको हमने अपने ढंगसे यथेष्ट रूपमें संशोधित-परिवर्तित कर वर्तमान रूप दिया है। इससे संभव है कि विज्ञ पाठकोंको इसमें कहीं कहीं भाषाविषयक शैलीका कुछ सूक्ष्म भिन्नत्व मालूम दे। हमारा प्रयत्न इस बातकी ओर रहा है कि भाषा जहाँ तक हो, सरल और सबको सुबोध हो; और जिनकी मातृभाषा खास हिन्दी न हो उनको भी इसके समझनेमें कोई कठिनाई न हो। इसलिये हमने इसमें ऐसे शब्दोंका बहुत ही कम प्रयोग किया है कि जो खास हिंदीका विशेष परिचय न रखनेवाले – राजस्थानी या गुजराती भाषाभाषी – जनोंको बिल्कुल अपरिचित मालूम दे।

इस ग्रन्थके संस्कृत मूलकी लेखशैली कुछ संकीर्ण और समास-बहुल है। वाक्य बड़े लंबे लंबे और कुछ जटिलसे हैं। क्रियापदोंका व्यवहार इसमें बहुत कम किया गया है। रचना कहीं तो शिथिलसी और कहीं निबिड बन्धवाली है। इसलिये भाषान्तरमें भी हमें कहीं कहीं, मूलके अनुसार, कुछ लंबे वाक्य रखने पड़े हैं। भाषान्तरको हमने प्रायः संपूर्ण मूलानुसारी बनानेका लक्ष्य रखा है। मूलका कोई एक शब्द भी प्रायः छोड़ा नहीं गया है और ना-ही विशेष स्पष्टीकरणकी दृष्टिसे कोई अधिक शब्द या वाक्यांश बढाया गया है। जहाँ कहीं मूलके संक्षिप्त सूचन या अध्याहृत कथनमें, पाठकोंके स्पष्टावबोधके लिये, किसी अधिक शब्द या वाक्यांशके पूर्तिकी विशेष आवश्यकता मालूम दी, वहाँ उसे [ ] ऐसे पूरक ब्रैकेटमें समाविष्ट किया गया है। किसी खास शब्दका पर्याय वाचक दूसरा विशेष परिचित शब्द या उसका अर्थ बतलानेकी कहीं जरूरत दिखाई दी उसे ( ) ऐसे गोल ब्रैकेटमें दिया गया है। प्रकरणोंकी कण्डिकाओंके प्रारंभमें जो '१) २) ३)' ऐसे इकेरे गोल ब्रैकेटके साथ क्रमांक दिये गये हैं वे, हमारी मूल ग्रन्थकी आवृत्तिमें, इस ग्रन्थका अर्थानुसन्धान बतलानेवाली कण्डिकाओंके जो क्रमाक हमने दिये हैं, उन्हींके बोधक हैं। मूलमें जो संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाके अनेकानेक प्राचीन पद्य उद्धृत किये गये हैं उनको हमने दो भागोंमें विभक्त किया है। एक वे जो प्रायः सब प्रतियोंमें समान संख्यामें मिलते हैं और दूसरे वे जो खास कोई एकाध ही प्रतिमें

मिलते हैं। इस पिछले प्रकारके पद्योंको हमने पीछेसे लिखे गये अर्थात् प्रक्षिप्त माना है; और बाकीको मौलिक। इन दोनों तरहके पद्योंके लिये हमने दो प्रकारके क्रमांक दिये हैं। जो मौलिक हैं वे '१. २. ३.' इस प्रकारके चालू अंकोंसे सूचित किये गये हैं और जो प्रक्षिप्त हैं वे '[१]-[२]-[३]' इस प्रकार चोकौनी डबल ब्रैकेटवाले अंकोंसे बताये गये हैं। पद्योंकी तरह, मूल ग्रन्थमें, कुछ गद्य प्रकरण-कण्डिकायें भी प्रक्षिप्त हैं, जिनको हमने अपनी उस मूलावृत्तिमें तो जुदा तरहके टाईपोंमें और { } ऐसे अथवा [ ] ऐसे ब्रैकेटोंके बीचमें मुद्रित की हैं। यहाँ, इस भाषान्तरमें वे कण्डिकायें जुदा टाईपोंमें न छाप कर, शीर्फ उनके ऊपर, ब्लेक टाईपमें ( ) ऐसे गोल ब्रैकेटमें, अथवा चालू टाईपमें [ ] ऐसे चोकौनी ब्रैकेटमें, उसकी ज्ञापक पंक्तियाँ लिख कर, उल्लिखित कर दी हैं। (–देखो, पृष्ठ १६, २०, ४८, ४९ इत्यादि।).

इस ग्रन्थमें जहाँ-तहाँ, जो प्रसङ्गोचित पद्य उद्धृत किये गये हैं उनमेंसे कुछ तो ऐतिहासिक घटना बतानेवाले हैं और कुछ सुभाषित स्वरूप हैं। इनमेंके कुछ पद्य द्विअर्थी अर्थात् श्लेषार्थक हैं जिनका स्वारस्य संस्कृत या प्राकृत भाषा-ही-में ठीक आस्वादित हो सकता है। हिन्दीमें उसका अर्थ ठीक अनूदित नहीं हो पाता। ऐसे पद्योंके अर्थके विषयमें जहाँ तक हो सका, तदन्तर्गत मुख्य भावार्थ बतलानेका ही प्रयत्न किया गया है। कोई कोई पद्य ऐसे भी दुरवबोध मालूम देते हैं जिनका तात्पर्य ठीक ठीक समझमें नहीं आता। ऐसे स्थानोंमें जो अर्थ दिये गये हैं वे शंकित ही समझे जायें–जैसा कि पृ. ७७ आदि पर सूचित किया गया है।

कहीं कहीं गद्य कथनमें भी ऐसी दुरवबोधता और अस्पष्टार्थता प्रतीत होती है और उसका ठीक ठीक तात्पर्य नहीं जाना जा सकता–जैसा कि पृ. ९४ परकी टिप्पणीमें सूचित किया गया है।

ग्रन्थकारने कहीं कहीं ऐसे अपरिचित शब्दोंका प्रयोग किया है जो शुद्ध संस्कृतके न हो कर देश्य भाषाके हैं और जिनका अर्थ ठीक ठीक समझमें नहीं आता। ऐसे शब्दोंके दिये गये अर्थ भी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं कहे जा सकते। इन सब शंकित स्थानों और अर्थोंके विषयमें पाठक हमें कोई दोष न दें ऐसी विज्ञप्ति है।

*

जब यह भाषान्तर छपाना शुरू किया गया तब हमारी इच्छा थी, कि हम इसके साथ, इस ग्रन्थमें वर्णित विशेष विशेष ऐतिहासिक और भौगोलिक नामोंके बारेमें, अन्यान्य साधनोंद्वारा उपलब्ध या ज्ञात बातोंका परिचय करानेवाली विस्तृत टिप्पणियाँ दें; और इसमें जो कुछ पारिभाषिक शब्दसमूह और लोकोक्तिरूप वाक्य-विन्यास उपलब्ध होते हैं उनको स्फुट करनेवाली व्याख्यात्मक पंक्तियाँ भी लिखें। किन्तु, जब हमने कुछ ऐसी टिप्पणियाँ और पंक्तियाँ लिखनी प्रारंभ की तो उनका कलेवर इतना बढ़ता हुआ दिखाई देने लगा जो मूल ग्रन्थसे भी कहीं अधिक बढ जानेकी आशंका कराने लगा। और ये सब टिप्पणियाँ लिखनेका तो हमारा उत्कट लोभ है। क्यों कि इन्हीं टिप्पणियों द्वारा तो इस ग्रन्थका सारा महत्त्व प्रकट होनेवाला है। इसलिये फिर हमने यह विचार किया कि इन टिप्पणियों आदिका संकलनवाला एक पर्यालोचनात्मक पूरा भाग ही अलग निकाला जाय; जिसमें भाषान्तरवाला यह भाग अनपेक्षित रूपसे विस्तृत न हो; और जिनको केवल प्रबन्धचिन्तामणिका मूलगत ग्रन्थसार मात्र ही पढना-समझना अपेक्षित हो उनको इसके पढनेमें कोई कठिनता प्रतीत न हो। इसीलिये हमने पृष्ठ ३, ११, १८ आदि पर जो टिप्पणियाँ दी हैं उनमें यह सूचित कर दिया है कि इन बातोंका विशेष विवेचन या ऊहापोह इसके अगले भागमें किया जायगा – इत्यादि।

यह अगला भाग, पुरातनप्रबन्धसंग्रह नामक, मूल ग्रन्थके पूरकात्मक द्वितीय भागके, इसी तरहके

हिन्दी भाषान्तरके प्रकट होनेके बाद, (जो अब शीघ्र ही प्रेसमें जानेवाला है) प्रकट होगा – अर्थात् हमारी संकल्पित योजनाके अनुसार, वह इस प्रबन्धचिन्तामणका ५ वाँ भाग होगा।

*

६. प्रबन्धचिन्तामणि वर्णित ऐतिहासिक तथ्योंके विषयमें कुछ साभिप्राय ज्ञापन।

इस ग्रन्थके पढ़नेवाले पाठकोंको यह बात लक्ष्यमें रखनी चाहिये कि –"यद्यपि ग्रन्थ प्रधानतया ऐतिहासिक प्रबन्धोंका संग्रहात्मक है, तथापि इसके सब-के-सब प्रबन्ध ऐतिहासिक नहीं हैं। खास करके अन्तिम प्रकाशमें जो पुण्यसार, कर्मसार, वासना, कृपाणिका इत्यादि शीर्षक ५-७ प्रबन्ध हैं वे पौराणिक ढंगके कथात्मक रूप हैं। उनमें ऐतिहासिकता खोज निकालना निरर्थक है। बाकीके अन्य बहुतसे – प्रायः सब ही – ऐतिहासिक माने जा सकते हैं; पर इनमेंसे भी कुछ प्रबन्धोंमें वर्णित व्यक्तियोंके विषयमें, अभी तक इतिहासविदोंमें थोड़ा बहुत मतभेद अवश्य है। दृष्टान्तके तौरपर, प्रथम प्रकाशमें प्रारंभ-ही-में दिये गये विक्रमार्क राजाके व्यक्तित्वके विषयमें विद्वानोंमें अभी तक कोई एक निर्णयात्मक विचार स्थिर नहीं हो पाया। वह राजा कौन था और कब हो गया इसके विषयमें अभी तक अनेक तर्क-वितर्क किये जा रहे हैं। नामके अतिरिक्त प्रबन्ध कथित और सब बातें तो एक कहानीकी अपेक्षा अन्य कोई अधिक महत्त्व नहीं रखतीं।"

" यही बात सातवाहनवाले प्रबन्धके विषयमें कही जा सकती है। सातवाहन राजाका नाम यद्यपि शिलालेखों वगैरहमें उपलब्ध होता है, पर इस नामके कई राजा हो जानेसे और प्रबन्धमें वर्णित घटनाका कोई ऐतिहासिकत्व प्रतीत न होनेसे उसके विषयमें भी नामके अतिरिक्त प्रबन्धकथित समूचा वर्णन कल्पनात्मक ही मानना चाहिए।

" सातवाहनके बाद भूयराजका जो प्रबन्ध है, उसके अस्तित्वके विषयका अभीतक अन्य कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है, पर उसके ऐतिहासिक पुरुष होनेका संभव माना जा सकता है।"

" इस तरह इन कुछ दो चार नामोंकी व्यक्तियोंको छोड़ कर, बाकी जितने भी नाम इस ग्रन्थमें आये हुए हैं वे सब प्रायः ऐतिहासिक पुरुष हैं। हाँ उनमेंसे कुछ कुछ व्यक्तियोंका संबन्ध, परस्पर एक दूसरेके साथ, इस तरह जोड दिया गया है जो भ्रमात्मक है। उदाहरणके तौरपर, भोज-भीमके वर्णनवाले दूसरे प्रकाशमें, धाराके परमार राजा भोजदेवके साथ खास करके महाकवि बाण, मयूर, मानतुङ्ग और माघ आदिका जो परस्पर सम्बन्ध और समकालीनत्व वर्णन किया गया है वह सर्वथा भ्रान्त और निराधार है। ग्रन्थकारके पूर्ववर्ती और प्रसिद्ध विद्वान् प्रभाचन्द्र सूरिने, अपने प्रभावकचरित्रमें, इन व्यक्तियोंका वर्णन और ही राजाओंके समयमें दिया है और वह कुछ प्रमाणभूत भी सिद्ध होता है। तब फिर न मालूम मेरुतुङ्ग सूरिने किस आधार पर, ऐसा भ्रान्तिपूर्ण यह वर्णन अपने इस महत्त्वके ग्रन्थमें ग्रथित कर डाला है, सो समझमें नहीं आता। भोजप्रबन्धकी ये बहुतसी बातें कल्पनाप्रसूत और लोककथायें जैसी प्रतीत होतीं हैं। ग्रन्थकारने ये बातें किसी पुरातन प्रबन्ध आदिके आधार पर लिखीं हैं या किसीके मुखसे सुन कर लिखीं हैं इसके जाननेका कोई साधन अभीतक ज्ञात नहीं हुआ।

" सिद्धराज और कुमारपालके समयके जितने वर्णन इसमें ग्रथित हैं वे प्रायः सब-के-सब ऐतिहासिक और आधारभूत हैं। उनके घटनाक्रममें कुछ आगे-पीछे पनका संभव हो सकता है पर उनमेंका कोई वर्णन सर्वथा निर्मूल हो ऐसा नहीं माना जा सकता।

✓ मेरुतुङ्ग सूरिके इस ग्रन्थमें, ऐतिहासिक दृष्टिसे, जो सबसे अधिक विशेष महत्त्वका उल्लेख पाया गया है

वह है अणहिलपुरके राजाओंके समयका कालक्रम-ज्ञापक निश्चित निर्देश। अणहिलपुरके राज्यसिंहासन पर, कौन राजा कब गद्दीपर बैठा और उसने कितने वर्ष राज्य किया इसका जो उल्लेख इस ग्रन्थमें किया गया है वैसा उल्लेख, पूर्वके अन्य किसी ग्रन्थमें नहीं मिलता। यद्यपि इस उल्लेखमें चावडा (चापोत्कट) वंशके जो संवत्सर निर्दिष्ट किये गये हैं उनकी निश्चितिके निर्णायक और समर्थक अन्य कोई वैसे प्रमाण अभीतक उपलब्ध नहीं हो पाये, तथापि उनके बाधक भी वैसे कोई प्रमाण अभीतक उपस्थित नहीं हुए। और चौलुक्य वंशके राजाओंके राज्यकालकी जो संवत्सरावलि इसमें दी गई है वह तो शिलालेख आदि अन्यान्य अनेक प्रमाणोंसे प्रायः सर्वथा निर्भ्रान्त सिद्ध हो चुकी है। इसलिये इसमें दी गई यह राजसंवत्सरावलि बडे ही महत्त्वकी और एक अद्वितीय ऐतिह्य वस्तु साबित हुई है।

७. प्रबन्धचिन्तामणिकी रचना कब और क्यों की गई।

मेरुतुङ्ग सूरिने यह ग्रन्थ कब और कहां बनाया इसका उल्लेख उन्होंने ग्रन्थके अन्तमें स्पष्ट कर ही दिया है। इस उल्लेखसे ज्ञात होता है, कि वि० सं० १३६१ में, काठियावाडके वर्तमान वढवान शहरमें उन्होंने इस ग्रन्थको पूर्ण किया। यह वह समय है, जब गुजरातके स्वातंत्र्य और स्वराज्यका सर्वनाश हुआ और विधर्मी यवनराज्य और पारवश्यका प्रादुर्भाव हुआ। मेरुतुङ्गके सामने ही अणहिलपुरका वह चौलुक्य वंश नामशेष हुआ, जिसके स्थापक पुरुषसे ले कर अन्तिम पुरुषके समय तककी गुजरातके राजकीय, सामाजिक और धार्मिक जीवनकी कुछ विशिष्ट स्मृतियां लिपिबद्ध करनेका उन्होंने इस ग्रन्थमें मौलिक प्रयत्न किया है। मेरुतुङ्ग सूरिके विचारसे, गुजरातमें – अणहिलपुर पाटनमें – वीरप्रकृति राजा वीरधवल और उसके विचक्षण मंत्री वस्तुपाल-तेजपालके बाद और कोई वैसा स्मरणीय पुरुष पैदा नहीं हुआ जिसका नामनिर्देश वे अपने इस ग्रन्थमें करते। यद्यपि वीरधवलके बाद उसके वंशजोंने प्रायः ५०-५५ वर्षतक अणहिलपुरमें राज्यसिंहासनका उपभोग किया, पर उनका शासन प्रायः निष्प्राण और निस्तेजसा ही रहा। मेरुतुङ्ग सूरिको उस शासनकालमें कोई महत्त्व नहीं मालूम दिया और इसलिये उन्होंने उस समयकी किसी भी घटनाका उल्लेख अपने ग्रन्थमें नहीं आने दिया। उनके अभिप्रायमें, वीरधवल और वस्तुपाल-तेजपालके साथ गुजरातके ज्योतिर्मय जीवनकी समाप्ति हो गई। चाहे मेरुतुङ्ग सूरिको, इतिहासके आत्माका दिव्य दर्शन हुआ हो या न हुआ हो, पर इसमें कोई शक नहीं कि उनका यह ग्रन्थलेखन, सचमुच, इतिहासदर्शनकी एक अस्पष्ट पर सूक्ष्म कलाके आभासका उत्तम सूचन करता है। जब हम गुजरातके भूतकालीन राष्ट्रीय जीवन पर एक गहरी दृष्टि डालते हैं, तब हमें यह बहुत स्पष्टताके साथ दिखाई देता है, कि यथार्थ ही, गुजरातके भाग्याकाशमें वीरधवल और वस्तुपाल-तेजपालके बाद, अब तक, वैसा कोई ज्योतिर्धर तेजस्वी तारक उदित नहीं हुआ। और जब तक गुजरातमें पुनः वैसा पूर्ण स्वराज्य स्थापित नहीं हो पाता तब तक हम इस अन्तर्दाहक अनुभूतिको मिटा नहीं सकते।

*

मेरुतुङ्ग सूरिने इस ग्रन्थकी रचना किस लिये की—यह भी उन्होंने ग्रन्थके प्रारम्भमें और अन्तमें, संक्षिप्त रूपमें सूचित किया है। वे कहते हैं कि—"बारंबार सुनी जानेके कारण पुरानी कथायें बुद्धिमानोंके मनको वैसा प्रसन्न नहीं कर पातीं। इसलिये मैं निकटवर्ती सत्पुरुषोंके वृत्तान्तोंसे [संकलित ऐसे] इस प्रबन्ध-चिन्तामणि ग्रन्थकी रचना कर रहा हूं।" (—देखो पृ० २, पद्य ६ का अनुवाद). इस कथनके भावको स्पष्ट करनेके लिये, इसके नीचे एक टिप्पणी दे कर हमने उसमें कहा है कि—" पुराने जमानेमें व्याख्यानकार और कथाकार प्रायः सदा उन्हीं कथा-वार्ताओंको सुनाया करते थे जो महाभारत और रामायण आदि पुराण ग्रन्थोंमें

प्रसिद्ध हैं। एक-की-एक ही कथा वारंवार सुननेमें विज्ञ मनुष्योंके मनको विशेष आनन्द नहीं आता यह सर्वानुभव सिद्ध बात है। मेरुतुङ्ग सूरिने इस वातका विचार कर, लोगोंका मनरंजन करनेके लिये, कथाकारोंको, कुछ नई सामग्री प्राप्त हो इस उद्देशसे, कितनेएक इतिहास-वृत्तान्तोंसे अलंकृत ऐसे इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक ग्रन्थकी रचना की।"

ग्रन्थके अन्तमें वे, इस रचनाके करनेमें एक दूसरा भी कारण बतलाते हुए लिखते हैं कि—"बहुश्रुत और गुणवान् ऐसे वृद्धजनोंकी प्राप्ति प्रायः दुर्लभ हो रही है और शिष्योंमें भी प्रतिभाका वैसा योग न होनेसे शास्त्र प्रायः नष्ट हो रहे हैं। इस कारणसे तथा भावी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इच्छासे, सुधासत्रके जैसा, सत्पुरुषोंके प्रबन्धोंका संघटन रूप यह ग्रन्थ मैंने बनाया है।" मेरुतुङ्ग सूरिका यह कथन बहुत अनुभवपूर्ण और भावि परिस्थितिका द्योतक है। "इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि मेरुतुङ्ग सूरि इस ग्रन्थकी रचना द्वारा, इन पुरातन ऐतिह्य श्रुतियोंका, यह विशिष्ट संग्रह न कर जाते तो, आज हमें, उस जमानेकी इन इनीगिनी वातोंके जाननेका भी और कोई साधन उपलब्ध नहीं होता। यह सब-किसीको मंजूर करना पडेगा कि जैन धर्मके उस मध्यकालीन इतिहासकी जो अनेकानेक विश्वसनीय और प्रमाणभूत वातें, इस ग्रन्थमें उपलब्ध होतीं हैं और उसके साथ ही गुजरातके समूचे राष्ट्रीय इतिहासकी भी बहुत आधारभूत जो कथायें इसमें दृष्टिगोचर होतीं हैं, वैसी और किसी ग्रन्थमें विद्यमान नहीं हैं।"

८. प्रबन्धचिन्तामणिके उल्लेखों पर कुछ विद्वानोंके मिथ्या आक्षेप।

कुछ कुछ विद्वानोंका खयाल है कि—ग्रन्थकार जैनधर्मी होनेसे, उसने इस ग्रन्थमें अपने धर्मका प्रभाव बतलानेकी दृष्टिसे, बहुत कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण कथन किया है; और उसके साथ अन्य धर्मकी—खास करके शैवधर्म और ब्राह्मण संप्रदायकी—लघुता बतानेका भी प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थके उक्त इंग्रेजी अनुवादक मि. टॉनीने अपनी प्रस्तावनामें, इस बारेमें लिखा है कि—'जिस तरह, एक्झीटर स्ट्रीटके एक छप्परके नीचेके कोनेमें बैठ कर, पार्लियामेंटके संभाषणोंको लेखबद्ध करते समय, डॉ० जोनसन् इस बातकी पूरी सावचेती रखता था कि 'व्हीगके प्रतिपक्षी उसमेंसे किसी तरहका कोई लाभ न उठा पावें'—इसी तरह सभी शंकास्पद स्थानोंमें, यह अमर्पशील जैन ग्रन्थकार, स्पष्ट रूपसे महावीरके धर्मके दृढ श्रद्धालु अनुयायियों (अर्थात् जैनों) के पक्षकी ओर झुकता है; और जैन लोक, शैवोंकी तुलनामें कहीं नीचे न दिखाई दें इसकी सावधानी रखता है।' इत्यादि। इसमें कोई शक नहीं कि—ग्रन्थकार जैन धर्मका एक विद्वान् धर्माचार्य है और इस ग्रन्थकी रचनामें उसका प्रधान उद्देश जैन धर्मकी पुरातन महत्ता और गौरव गाथाको, कालके कुटिल और प्रबल प्रवाहके कारण नष्ट होनेसे बचा रखनेका है। अतएव वह इसमें अपने धर्मका उत्कर्ष बतानेवाली श्रुतियों और उक्तियोंका यथेष्ट उपयोग करे, यह स्वाभाविक ही है। उस पुराने जमानेमें, जब धार्मिक वाद-विवादकी बडी प्रतिष्ठा थी और उसका खूब जोरदार प्रचार था; एवं सभी धर्मोंके और संप्रदायोंके अग्रणी विद्वान् गण अपनी अपनी विद्याका प्रभाव और पराक्रम बतलानेके लिये, राजसभाओंमें, नामी पहलवानोंके मुष्टि-प्रहारोंकी नाईं, वाक्प्रहारोंकी वडी सख्त कुस्ती किया करते थे, तब उन विद्वान् ग्रन्थकारोंकी तद्विषयक रचनाओंमें, ऐसी अमर्षशील भावना और लेखन-शैलीका दृष्टिगोचर होना नितान्त स्वाभाविक ही है। केवल जैन ग्रन्थकार ही इसमें अधिक उल्लेखनीय हैं सो बात नहीं है। संसारके सभी धर्मों, संप्रदायों, मतों और मंतव्योंके लेखक इससे मुक्त नहीं हैं। मेरुतुङ्ग सूरि भी उन्हींमेंका एक स्वधर्मप्रिय लेखक है, अतः उसके लेखमें, अपने धर्मको नीचा दिखाने-

वाली किसी उक्तिके न आने देनेकी सावचेतीका रखना, उसका कर्तव्य है। ब्राह्मण और शैव ग्रन्थकारोंने भी वैसा ही किया है; मुसलमान और ईसाई इतिहास-लेखकोंने भी वैसा ही किया है – और अब भी सब वैसा ही करते रहते हैं। इसलिये इसमें जैनधर्मके महत्त्वके प्रतिपादनका होना कोई खास दूषण नहीं है। रही बात अतिशयोक्तिकी – सो विशुद्ध इतिहासकी दृष्टिसे किसी भी प्रकारकी अतिशयोक्ति अवश्य ही आलोचनीय है और उसकी प्रामाणिकता विचारणीय है। पर जैसा कि हमने पहले ही सूचित कर दिया है, यह ग्रन्थ कोई विशुद्ध इतिहास ग्रन्थ नहीं है। यह तो कुछ पुरातन प्रकीर्ण पोथियोंमें यत्र-तत्र लिखित और कुछ कुछ वृद्ध जनोंके मुखसे यथा-तथा श्रुत ऐसी इतिहासविषयक कथा-वार्ताओंका एकत्र संकलनवाला एक संग्रह मात्र है। अतः इसमेंकी कुछ उक्तियाँ अथवा घटनाएँ, विशुद्ध इतिहासकी दृष्टिसे, यदि भ्रान्तिपूर्ण, अतिशयोक्तिपूर्ण अथवा निर्मूलप्राय भी सिद्ध हों तो उसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। और खुद ग्रन्थकारको भी इस विषयमें कुछ आशंका हुई है, कि उनके इस संकलनमें, विद्वानोंको कुछ बातें संदिग्ध या भिन्नभाववाली मालूम दें। इसलिये उन्होंने ग्रन्थारंभमें यह बात भी इस तरह कह दी है कि–" यद्यपि विद्वानों द्वारा अपनी बुद्धि [संकलना] से कहे गये प्रबन्ध [कुछ कुछ] भिन्न भिन्न भावोंवाले अवश्य होते हैं, तथापि इस ग्रन्थकी रचना सुसंप्रदाय (योग्य परंपरा) के आधार पर की गई है; इसलिये चतुर जनोंको [इसके विषयमें] वैसी चर्चा न करनी चाहिए। " इस कथनको स्पष्ट करनेके इरादेसे इसके नीचे जो टिप्पणी हमने दी है उसमें लिखा है कि – " मेरुतुङ्ग सूरिने इस ग्रन्थकी संकलना करनेमें कुछ तो पुराने प्रबन्ध-ग्रन्थोंकी सहायता ली और कुछ परंपरासे चली आती हुई मौखिक बातोंका आधार लिया। इस प्रकार परंपरासे सुनी हुई बातोंका परस्पर मिलान करनेमें विद्वानोंको अवश्य ही उनमें कुछ-न-कुछ भिन्न भाव मालूम पडता रहता है। मेरुतुङ्ग सूरिको भी अपनी इस रचनामें कहीं कहीं ऐसा भिन्न भाव मालूम हुआ है। इस भिन्न भावके निराकरण करनेका या खुलासा करनेका उनके पास न तो कोई साधन था और न कोई उनको उसकी वैसी आवश्यकता थी। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहना पर्याप्त समझा कि हमने जो बातें इस ग्रन्थमें संकलित की हैं वे एक सुसंप्रदाय द्वारा प्राप्त की हुई हैं। इसलिये इनके तथ्यातथ्यके बारेमें चतुर मनुष्योंको चर्चा करनेसे कोई लाभ नहीं। प्रबन्धचिन्तामणिकी कुछ बातें ऐतिहासिक दृष्टिसे सर्वथा भ्रान्त भी मालूम होती हैं लेकिन मेरुतुङ्ग सूरि उनके लिये निष्पक्ष और निराग्रह हैं।"

यद्यपि यह बात ठीक है कि मेरुतुङ्ग सूरिका मुख्य लक्ष्य जैन धर्मके महत्त्वकी ओर रहा है; तथापि उन्होंने अन्य धर्मोंकी निन्दा करनेकी दृष्टिसे या अन्य धार्मिक जनोंकी हीनता बतानेकी भावनासे इसमें कुछ भी नहीं लिखा है। बल्कि प्रसङ्गोपात्त अन्य-धर्म-विषयक कुछ महत्त्वकी बातें भी उन्होंने उसी आदरकी दृष्टिसे लिखी हैं, जैसी अपने धर्मकी लिखी हैं। उदाहरणके तौरपर, मूलराजके प्रबन्धमें जो शिवपूजाका प्रभाव और शैवाचार्य कंथडी नामक तपस्वीके तपकी महिमाका वर्णन किया गया है, वह सर्वथा वैसा ही आदरयुक्त पंक्तियोंमें लिखा गया है, जैसा जिनपूजा या किसी जैन आचार्यके बारेमें लिखा गया हो। इसी तरह सिद्धराजकी माता मयणल्लाकी शिवभक्तिके विषयमें जो उल्लेख किया गया है वह भी वैसा ही निष्पक्ष भावसे भरा हुआ है। अगर मेरुतुङ्ग सूरिको शिवधर्मकी महत्ताके बारेमें अनादर होता तो वे इन उल्लेखोंको इसमें स्थान ही क्यों देते।

मुख्यतया जैन श्रोताओं (श्रावकों) के सम्मुख, व्याख्यान सभामें, जैन साधुओं-यतियोंके वाचने निमित्त, इस ग्रन्थकी रचना की गई है; इसलिये इसमें जैन व्यक्तियोंका और उनके कार्यकलापोंका ही अधिक वर्णन होना स्वाभाविक है। पर, उसके साथ ही मेरुतुङ्ग सूरिको, गुजरातके सर्व सामान्य प्रजाकीय और राष्ट्रीय जीवनकी उन्नायक इतर व्यक्तियों और उनकी कार्य-स्मृतियोंके तरफ भी अनुराग है; और इसलिये उन्होंने अपने इस संग्रहमें, उन इतर व्यक्तियोंकी जीवन-स्मृतियोंके भी, यथाश्रुत और यथाज्ञात वृत्तान्तोंको, जहाँ-तहाँ ग्रथित

कर लेनेमें कोई संकोच नहीं किया। भोज-भीमप्रबन्धकी बहुतसी स्मृतियाँ इसी दृष्टिसे संगृहीत की गई हैं। सिद्धराजके प्रबन्धमेंकी भी बहुतसी बातें इसी आशयसे लिखी गई हैं।

*

९. मेरुतुङ्ग सूरिकी इतिहास-प्रियता।

मालूम देता है कि मेरुतुङ्ग सूरिको ऐतिहासिक बातोंमें कुछ अधिक रस था और ऐतिहासिक तथ्यपर पक्षपात था। इसलिये उन्होंने सिद्धराज और कुमारपालके जीवन विषयकी वैसी भी कुछ तथ्यभूत बातें उल्लिखित कर दीं हैं जिससे उन व्यक्तियोंके, कुछ चरित्र-दुर्बलता और स्वभाव-कृपणता आदि दोषोंकी भी, हमको झांकी हो जाती है। हेमचन्द्र सूरि आदि विद्वानोंने अपनी रचनाओंमें ऐसे दोषोंका बिल्कुल भी आभास नहीं आने दिया है।

*

इस विषयमें, मेरुतुङ्ग सूरिने सबसे अधिक महत्त्वकी जो सत्य ऐतिहासिक बात लिख डाली है वह है मंत्रीवर वस्तुपाल-तेजपालकी माता कुमारदेवीके पुनर्लग्नकी। तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक नीतिकी भावनाकी दृष्टिसे कुमारदेवीका वह पुनर्लग्न अवश्य निन्दनीय और हीन कार्य समझा जाता था। वैसे कार्यको समाज बडी हलकी दृष्टिसे देखता था और उस कार्यके करनेवाली व्यक्तिको बडे कठोर भावसे समाजसे बहिष्कृत और तिरस्कृत किये करता था। यह तो उस एक-अद्वितीय भाग्यवती कुमारदेवीका लोकोत्तर पुण्यकर्म ही था, जिसके प्रभावसे उसकी कुक्षीमें ऐसे प्रभावशाली पुत्ररत्न पैदा हुए जिनकी समता रखनेवाले पुरुष, सारे संसारके इतिहासमें भी इने-गिने ही दिखाई देंगे। इन पुत्र-पुङ्गवोंके प्रतापके कारण कुमारदेवी तत्कालीन समाजमें बडी भारी प्रतिष्ठाकी पुण्यभूमि बन सकी और सारे देशके जनोंसे बडी श्रद्धाके साथ पूजी और प्रशंसी गई। बडे-से-बडे धर्माचार्योंने, बडे-से-बडे कवियोंने, बडे-से-बडे राष्ट्रपुरुषोंने उसकी प्रतिमाकी पूजा की और उसके नामकी स्तुतियाँ गाईं। पर उसके जीवनका वह महत् प्रेमकार्य, जिसके वश हो कर उसने, अणहिलपुरके एक बडे खानदानके प्राग्वाट कुटुंबके पराक्रमी युवक ठकुर आसराजके साथ पुनर्लग्न किया था, उसकी स्मृतिका किंचित् आभास भी उन समकालीन कवियों और ग्रन्थकारोंने अपनी कृतियोंमें न आने दिया। क्यों कि वह कार्य समाज और धर्मको नापसन्द था। उसकी स्मृतिको जीवित रखना अप्रिय था। श्रद्धेय और पूजनीय माता कुमारदेवीके पुण्य जीवनकी उस मानी गई कृष्णकलाका सूचन करना उन कवियोंके लिये बडा पातक कार्य था। महामात्य वस्तुपाल-तेजपाल जैसे जगत्श्रेष्ठ, पुण्यप्रभावक और धर्मावतार नरशिरोमणि विधवा-विवाहसे प्रसूत पुत्ररत्न थे, इस विचारको स्मृतिमें लाना भी उन ग्रन्थकारोंके लिये, शायद बडा दुःखद और दुर्विचारक कर्तव्य था। इसलिये उन्होंने अपनी कृतियोंमें इसकी कहीं भी स्मृति नहीं होने दी। उन्हींका अनुगमन करनेवाले, वस्तुपाल-तेजपालके अन्यान्य पिछले प्रसिद्ध चरित्रकारोंने भी उस बातका कहीं सूचन नहीं होने दिया। परंतु मेरुतुङ्गने अपने ग्रन्थमें इस बातका बहुत ही संक्षेपमें पर बडे स्पष्ट रूपसे उल्लेख कर दिया। ऐसा ही एक दूसरा स्पष्ट उल्लेख उन्होंने राणा वीरधवलकी माताके विषयमें भी किया है, जो भी इसी तरहका एक सामाजिक अपवादका ज्ञापक हो कर भी ऐतिहासिक तथ्य था। इन उल्लेखोंसे मेरुतुङ्ग सूरिकी सच्ची इतिहास-प्रियताका हमको अच्छा आभास हो जाता है।

बाकी उस समयके ग्रन्थकारोंके विषयमें, इससे अधिक विशुद्ध इतिहास-दृष्टिकी अपेक्षाकी कल्पना करना और उनमें धार्मिक या साम्प्रदायिक भावनाके पोषक विचारोंका दोषारोप कर, उनके अबाधित कथनोंको भी उपेक्षाकी दृष्टिसे देखना, एक प्रकारसे निजकी ऐतिहासिक दृष्टिकी विपर्यासताका बोध कराना है।

*

१०. ग्रन्थकारके जीवनके विषयमें ।

ग्रन्थकार मेरुतुङ्ग सूरिके जीवन आदिके विषयमें कोई विशेष वस्तु ज्ञात नहीं होती । ये नागेन्द्र गच्छके आचार्य थे और इनके गुरुका नाम चन्द्रप्रभ सूरि था । धर्मदेव नामक विद्वान्—जो शायद इनके वृद्ध गुरुभ्राता या अन्य कोई गच्छवासी स्थविर साधु-पुरुष थे—उनके पाससे इन्होंने, इस ग्रन्थकी रचनामें बहुत कुछ ऐतिह्य सामग्री प्राप्त की थी । गुणचन्द्र नामक इनका प्रधान शिष्य था जिसने इस ग्रन्थकी पहली संपूर्ण प्रतिलिपि लिख कर तैयार की थी ।

इनकी एक और ग्रन्थकृति उपलब्ध होती है जिसका नाम **महापुरुषचरित** है । इस ग्रन्थमें ऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर—इस प्रकार पाँच तीर्थंकरोंका संक्षिप्त चरित वर्णन है । इसके अतिरिक्त और कोई इनकी कृति हमें अभीतक ज्ञात नहीं हुई ।

*

अन्तमें हम आशा करते हैं कि हिन्दी-भाषा-भाषी जिज्ञासु जन, इस ग्रन्थके वाचन-मननसे अपने प्राचीन इतिहास विषयक ज्ञानमें उचित वृद्धि करेंगे; और खुद ग्रन्थकारने, ग्रन्थान्तमें जो नम्र निवेदन किया है उसकी तरफ लक्ष्य रखनेकी सूचना कर, उसी कथनको उद्धृत करते हुए, हम अपना यह प्रास्ताविक वक्तव्य समाप्त करते हैं ।

यथाश्रुतं सङ्कलितः प्रबन्धैर्ग्रन्थो मया मन्दधियापि यत्नात् ।
मात्सर्यमुत्सार्य सुधीभिरेष प्रबोधुरैरुन्नतिमेव नेयः ॥

मार्गशीर्षपूर्णिमा, वि० सं० १९९७
भारतीय विद्या भवन
आन्ध्रगिरि (अन्धेरी), बम्बई.

—जिन विजय

श्रीमेरुतुङ्गाचार्यविरचित

प्रबन्धचिन्तामणि

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

श्रीनाभिभूर्जिनः पातु परमेष्ठी भवान्तकृत् । श्रीभारत्योश्चतुर्द्वारमुचितं यच्चतुर्मुखी ॥ १ ॥

नृणामुपलतुल्यानां यस्य द्रावकरः करः । ध्यायामि तं कलावन्तं गुरुं चन्द्रप्रभं प्रभुम् ॥ २ ॥

गुम्फान् विधूय विविधान् सुखबोधाय धीमताम् । श्रीमेरुतुङ्गस्तद्दृब्धबन्धाद् ग्रन्थं तनोत्यमुम् ॥ ३ ॥

रत्नाकरात् सद्गुरुसम्प्रदायात् प्रबन्धचिन्तामणिमुद्दिधीर्षोः ।
श्रीधर्मदेवः शतधोदितेतिवृत्तैश्च साहाय्यमिव व्यधत्त ॥ ४ ॥

श्रीगुणचन्द्रगणेशः प्रबन्धचिन्तामणिं नवं ग्रन्थम् ।
भारतमिवाभिरामं प्रथमादर्शेऽत्र दर्शितवान् ॥ ५ ॥

भृशं श्रुतत्वान्न कथाः पुराणाः प्रीणन्ति चेतांसि तथा बुधानाम् ।
वृत्तैस्तदासन्नसतां प्रबन्धचिन्तामणिग्रन्थमहं तनोमि ॥ ६ ॥

बुधैः प्रबन्धाः स्वधियोच्यमाना भवन्त्यवश्यं यदि भिन्नभावाः ।
ग्रन्थे तथाप्यत्र सुसम्प्रदायाद् दृब्धे न चर्चा चतुरैर्विधेया ॥ ७ ॥

॥ ॐ सर्वज्ञको नमस्कार हो ॥

जिनकी चतुर्मुखी (चार मुख) लक्ष्मी और सरस्वतीका उचित द्वार है, और जो भवका अन्त करनेवाले हैं ऐसे श्री नाभिभू, परमेष्ठी जिन (ऋषभनाथ) रक्षा करें[1] ॥ १ ॥

उस कलावान् प्रभु चन्द्रप्रभ नामक गुरुका मैं ध्यान करता हूं जिनका कर (=हाथ, किरण) पत्थरके समान मनुष्योंको भी द्रवित करनेवाला है[2] ॥ २ ॥

---

१ इस श्लोकमें ग्रन्थकारने ब्रह्मा और जिनदेव ऋषभनाथकी एक साथ स्तुति की है । ब्रह्माके चार मुख होनेसे वे चतुर्मुखके नामसे प्रसिद्ध हैं । जैन शास्त्रोंमें वर्णन है कि भगवान् ऋषभदेव जब धर्मोपदेश देते थे तब वे भी श्रोताओंको चार मुखवाले दिखाई देते थे । इस लिये जिन भगवानको भी चतुर्मुखका विशेषण दिया जाता है । ब्रह्मा भी परमेष्ठी पदसे प्रसिद्ध हैं और जिन भगवान् भी परमेष्ठी कहलाते हैं । ब्रह्मा विष्णुके नाभिकमलसे पैदा हुए ऐसी पुराणोंमें प्रसिद्धि है इस लिये वे नाभिभू कहे जाते हैं और जिनदेव ऋषभनाथके पिताका नाम नाभिराज था इस लिये वे भी नाभिभू कहे जाते हैं ।

२ इस श्लोकमें ग्रन्थकारने अपने गुरुको नमस्कार किया है जिनका नाम चन्द्रप्रभ था । चन्द्रप्रभ शब्दका श्लेषार्थ करते हुए गुरुकी तुलना चन्द्रमाके साथ की है । चन्द्रमा अपनी १६ कलाओंके कारण कलावान् कहलाता है, ग्रन्थकारके गुरु भी अनेक विद्या-कलाओंमें अलङ्कृत होनेके कारण कलावन्त थे । चन्द्रमाके कर याने किरण चन्द्रकान्त मणिको–जो एक प्रकारका पत्थर ही है–द्रवित (जलबिन्दु युक्त) करते हैं; वैसे ही चन्द्रप्रभ गुरुके कर याने हाथ यदि पत्थरतुल्य मनुष्यके मस्तिष्क ऊपर भी पड़ते हैं तो उसको भी वे द्रवित (आर्द्र,–कोमलचित्त) बनाते हैं ।

विविध प्रकारके ग्रन्थों और प्रबन्धोंको छोड कर बुद्धिमानोंको सुखसे जिनका बोध हो सके इसलिये गद्यरचना द्वारा ही मैं मेरुतुंग इस ग्रन्थकी रचना करना चाहता हूं[3] ॥ ३ ॥

रत्नाकर (समुद्र) समान सद्गुरु सम्प्रदायसे, जब मेरी इस प्रबंधरूप चिन्तामणि (रत्न) के उद्धार करनेकी इच्छा हुई तो श्रीधर्मदेवने सैंकडो वार इतिहासकी बातें कह कहकर मानों मेरी सहायता की[4] ॥४॥

जिस प्रकार महाभारत ग्रन्थका प्रथम आदर्श (पहली नकल) गणेश (गजाननने) तैयार किया, उसी प्रकार इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक नये ग्रंथका प्रथम आदर्श गुणचन्द्र नामक गणेश (गच्छपति) ने सुन्दर रितिसे तैयार किया[5] ॥ ५ ॥

वारंवार सुनी जानेके कारण पुरानी कथायें बुद्धिमानोंके मनको वैसा प्रसन्न नहीं कर पातीं । इस लिये मैं निकटवर्ती सत्पुरुषोंके वृत्तान्तोंसे [संकलित ऐसे] इस प्रबंधचिन्तामणि ग्रन्थकी रचना कर रहा हूं[6] ॥ ६ ॥

यद्यपि विद्वानों द्वारा अपनी बुद्धि [संकलना] से कहे गये प्रबंध [कुछ कुछ] भिन्न भिन्न भावों वाले अवश्य होते हैं; तथापि इस ग्रंथकी रचना सुसम्प्रदाय (योग्य परंपरा) के आधारपर की गई है; इसलिये चतुर जनोंको [इसके विषयमें] वैसी चर्चा न करनी चाहिये[7] ॥ ७ ॥

---

३ मेरुतुंगसूरिने इस ग्रथकी रचना की उसके पूर्व, कुछ गद्य और कुछ पद्यमें, कुछ प्राकृत और कुछ संस्कृतमें, कुछ पुरातन अपभ्रंश और कुछ अर्वाचीन देश्य भाषामें, इस प्रकारके कई छोटे बडे प्रबन्धात्मक ग्रन्थ विद्यमान थे। उन ग्रन्थोंमेंसे अपनी मनोरुचिके अनुसार कितने एक विषय चुनकर मेरुतुंगने सरल संस्कृत गद्य रचना द्वारा इस ग्रन्थका संकलन किया।

४ ग्रन्थकार मेरुतुंगसूरिके धर्मदेव नामक कोई वृद्ध गुरुभ्राता अथवा गुरुजन थे जिन्होंने समय समय पर इतिहासकी सैंकडों पुरानी बातें सुना सुनाकर इस ग्रन्थकी रचना सामग्रीमें यथेष्ट सहायता दी। इस लिये ग्रन्थकारने अपने गुरुके बाद उनका भी सम्मानपूर्वक इस श्लोक द्वारा स्मरण और उपकृत भाव प्रदर्शित किया है।

५ जैन ग्रन्थोंमें यति मुनियोंके समुदायको गण नामसे भी उल्लिखित किया जाता है। गणका नायक जो सूरि–आचार्य होता है उसे गणेश–गणपति–गणनायक–आदि शब्दोंसे सम्बोधित किया जाता है। प्रबन्धचिन्तामणिका प्रथम आदर्श तैयार करनेवाले गुणचन्द्र नामक गणी थे जो शायद मेरुतुंगसूरिके प्रधान शिष्य हों और उनके बाद उनके पट्टधर गणनायक बने हों। गणेश शब्दसे, ग्रंथकारने पुराण प्रसिद्ध देव गणपति (गजानन विनायक) जिन्होंने वेदव्यास कथित महाभारतकी प्रथम नकल की, उसके साथ यहां पर श्लेषार्थ कर अर्थ घटना बताई है।

६ पुराने जमानेमें व्याख्यानकार और कथाकार प्रायः सदा उन्हीं कथा-वार्ताओंको सुनाया करते थे जो महाभारत और रामायण आदि पुराण ग्रन्थोंमें प्रसिद्ध हैं। एककी एकही कथा वारंवार सुनकर विज्ञ मनुष्योंके मनको विशेष आनन्द नहीं आता यह सर्वानुभव सिद्ध बात है। मेरुतुंगसूरिने इस बातका विचार कर, कथाकारोंको, लोगोंका मनोरंजन करनेके लिए कुछ नई सामग्री प्राप्त हो इस उद्देश्यसे, कितने एक इतिहास प्रसिद्ध और निकट समयवर्ती श्रेष्ठ पुरुषोंके ऐतिहासिक वृत्तान्तोंसे अलंकृत ऐसे इस प्रबन्धचिन्तामणि नामक ग्रन्थकी रचना की। ग्रन्थकारका यह कथन खास ध्यान देने योग्य है।

७ मेरुतुंगसूरिने इस ग्रन्थकी संकलना करनेमें कुछ तो पुराने प्रबन्ध–ग्रन्थोंकी सहायता ली और कुछ परंपरासे चली आती हुई मौखिक बातोंका आधार लिया। इस प्रकार परंपरासे सुनी हुई बातोंका परस्पर मिलान करनेमें विद्वानोंको अवश्य ही उनमें कुछ न कुछ भिन्नभाव मालूम पडता रहता है। मेरुतुंगसूरिको भी अपनी इस रचनामें और दूसरी अन्यकृत रचनामें कहीं कहीं ऐसा भिन्नभाव मालूम हुआ है। इस भिन्नभावका निराकरण करनेका या खुलासा करनेका उनके पास न तो कोई साधन था और न कोई उनको उसकी आवश्यकता थी। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहना पर्याप्त समझा कि–हमने जो बातें इस ग्रन्थमें संकलित की हैं वे एक सुसम्प्रदाय द्वारा प्राप्त की हुई हैं। इस लिये इनके तथ्यातथ्यके बारेमें चतुर मनुष्योंको चर्चा करनेसे कोई लाभ नहीं। प्रबन्धचिन्तामणिकी कुछ बातें ऐतिहासिक दृष्टिसे सर्वथा भ्रान्त भी मालूम होती हैं लेकिन मेरुतुंगसूरि उनके लिये निष्पक्ष और निरपराध हैं–यह बात इस श्लोकगत कथनसे सूचित होती है।

१. विक्रमार्क राजाका प्रबन्ध ।



१. इस पृथ्वीतल पर विक्रमादित्य [कालक्रमसे] अन्तिम राजा होते हुए भी, अपने शौर्य औदार्य आदि गुणोंसे वह प्रथम और अद्वितीय राजा हुआ[१]। श्रोताओंके कानोंमें अमृतकासा आसिंचन करनेवाला उस राजाका इतिवृत्त बहुत कुछ विस्तृत है। हम यहां पर, ग्रंथकी आदिमें उसीका संक्षेपमें कुछ वर्णन करते हैं * ।

१) वह इस प्रकार है–अवन्ति देशके[२] सुप्रतिष्ठान[३] नामक नगरमें असम साहसका एक मात्र निधि; दिव्य लक्षणों (चिह्नों) से लक्षित; सत्कर्म, पराक्रम इत्यादि गुणोंसे भरपूर ऐसा एक विक्रम नामक राजपूत (राजपुत्र) था। आजन्म दरिद्रतासे तंग होता हुआ भी वह अति नीति-परायण था; सैंकडों उपाय करके भी जब धन नहीं प्राप्त कर सका तो एक बार भट्टमात्र नामक मित्र के साथ रोहणपर्वतको चला। उसके निकटवर्ती प्रथर नामक नगरमें [एक] कुम्हारके घर विश्राम करके प्रातःकाल उस कुम्हारसे भट्टमात्रने कुदाल मांगा। उसने कहा–इस जगह खानके भीतर जाकर प्रातःकाल पुण्यात्मक नामका श्रवण करके, ललाटको हथेलीसे स्पर्श कर 'हा दैव !' ऐसा कहकर चोट मारनेसे, दुर्भागी मनुष्यको भी अपनी प्राप्तिके अनुसार रत्न मिलते हैं। उस भट्टमात्रने कुम्हारसे इस वृत्तान्तको भली भाँति सुन लिया पर विक्रमसे इस प्रकारकी दीनता करानेमें वह असमर्थ था। उन साधनोंको साथ लेकर विक्रम जब उस स्थानमें कुदालका प्रहार करनेको उद्यत हुआ तो उस उसम उसने [अकस्मात्] विक्रमसे इस प्रकार कहा कि–'अवन्तीसे आए हुए किसी वैदेशिकसे घरका कुशल समाचार पूछने पर उसने आपकी माताका मरण बताया है।' इस तप्त वज्र-शूची (हीरा छेदनेकी सुई–हीराकणी) के समान वचनको सुनकर विक्रमने हथेलीसे माथा ठोंककर 'हा दैव !' ऐसा कहा और कुदालको हाथसे फेंक दिया। उस कुदालके अग्रभागसे फटी हुई ज़मीनमेंसे सवा लाख मूल्यका चमकता हुआ रत्न (हीरा) प्रादुर्भूत हुआ। भट्टमात्र उसे लेकर

---

१ मध्यकालीन प्रबन्धकारोंकी यह मान्यता थी कि विक्रमादित्यके बाद उसके जैसा पराक्रमी, शूर, वीर, उदारचेता और कोई राजा नहीं हुआ। उसके पहलेके युगमें यद्यपि पुराणप्रसिद्ध अनेक राजा हुए जो इन गुणोंसे यथेष्ट अलंकृत थे, तथापि वे भी विक्रमके जैसे संपूर्ण आदर्श नृपति नहीं थे। इसलिये इन गुणोंकी दृष्टिसे विक्रम उन राजाओंमें भी सर्व प्रथम स्थान प्राप्त करता है और इसीलिये इस पद्यमें, ग्रंथकारने उसको कालक्रमसे अन्तिम होनेपर भी गुणक्रममें वह सर्व प्रथम था, ऐसा कहा है। प्रबन्धचिन्तामणिका इंग्रेजी भाषामें जो अनुवाद टॉनी नामक इंग्रेज विद्वान्ने किया है, उसमें उसने अन्त्य इस शब्दका अर्थ अन्त्यज–हीन जातीय (of Lowest rank) ऐसा किया है, लेकिन वह भ्रमात्मक है। विक्रम हीन जातीय था ऐसा कहीं भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। प्रबन्धोंमें विक्रमका कहीं तो राजपूत जातिके परमारवंश में उत्पन्न होना लिखा है और कहीं हूणवंश में; ये दोनों ही प्रसिद्ध राजवंश है। इस विषयकी विशेष चर्चा हम अगले भागमें करेंगे।

* इस प्रबन्धचिन्तामणिकी रचनाके पूर्व, विक्रमविषयक कई चरित्र और प्रबन्ध बने हुए विद्यमान थे। ये चरित्र-प्रबन्ध बहुत कुछ विस्तृत और विविध वर्णनवाले थे। उनमेंसे कुछ थोडेसे वर्णन, संक्षेप करके, मेरुतुंगसूरिने यहांपर ग्रथित किये हैं। विक्रम विषयक इस विविध साहित्यका विशेष परिचय हम यथास्थान अगले ग्रन्थमें लिखेंगे।

२ वर्तमान मालवेका प्राचीन नाम अवन्ती था।

३ मालवा याने अवन्तीमें सुप्रतिष्ठान नामक कोई नगरका उल्लेख कहीं नहीं मिलता। अवन्तीकी राजधानी प्राचीन काल ही से उज्जयिनी प्रख्यात है और विक्रमकी राजधानी यही उज्जयिनी थी। इसलिये संभव है कि ग्रंथकारने इसी उज्जयिनी को सुप्रतिष्ठान–जिसका प्रतिष्ठान=स्थापन खूब दृढ है–इस विशेषणसे उल्लिखित किया हो। उज्जयिनीके विशाला आदि और भी उपनाम थे, इसलिये यह भी संभव है कि यह सुप्रतिष्ठान भी उसका एक उपनाम हो। दक्षिण अर्थात् महाराष्ट्रकी पुरानी राजधानी प्रतिष्ठान नगरी थी–जो वर्तमानमें निजाम राज्यमें गोदावरीके कॉंठेपर पैठण नामक कसबेसे प्रसिद्ध है–उसकी प्रतिस्पर्धामें भी शायद उज्जयिनीको सुप्रतिष्ठान नाम प्रदान किया गया हो।

विक्रमके साथ लौट आया। फिर उसके शोकरूपी शंकुकी शंकाको दूर करनेके लिये, भट्टमात्रने खानका वृत्तान्त बताते हुए, तत्काल ही उसकी माताका कुशल समाचार कहा। विक्रमने इसे भट्टमात्रकी सहज लोलुपता समझकर उसके हाथसे रत्न छीन लिया, और फिर खानके पास पहुँचा और बोला–

२. गरीबोंके दरिद्रतारूप घावको भरनेवाले इस रोहणगिरिको धिक्कार है जो [इस प्रकार] अर्थिजनों [याचकों] से 'हा दैव !' ऐसा कहलाकर फिर रत्न देता है।

यह कह कर उसने सब लोगोंके सामने उस रत्नको वहीं फेंक दिया। फिर देशान्तर भ्रमण करता हुआ अवन्तीकी सीमामें पहुँचा। वहां पर, नगारेकी मनोरम ध्वनि सुनकर और उसके कारणका वृत्तान्त जानकर उसका स्पर्श किया[1]। फिर उस भट्टमात्रके साथ वह राजमन्दिरमें आया। [ज्योतिषीसे] बिना पूछे हुए उसी मुहूर्तमें दिनभरके लिये मंत्रियोंने उसे राज-पदपर अभिषिक्त किया। उसने अपनी दूरदर्शितासे समझ लिया कि इस राज्यपर कोई प्रबल राक्षस या देवता क्रुद्ध होकर प्रतिदिन एक एक राजाका संहार करता है और राजाके अभावमें देशका विनाश करता है। इसलिये भक्ति या शक्तिसे उसका अनुनय करना उचित है। यह सोच, नाना प्रकारके भक्ष्य-भोज्य आदि बनवाकर, सायंकाल चंद्रशाला (राजमहलका ऊपरी हिस्सा) में सब कुछ सजा कर रखा। रातकी आरती हो जानेके बाद, अंगरक्षकोंसे मारशृंखलामें लटकते हुए पलँगपर अपने पट्ट-दुकूल आदिसे आच्छादित तकियाको रखवाकर, स्वयं प्रदीपच्छायामें–अर्थात् ऐसी जगहपर जहाँ प्रदीपका प्रकाश नहीं पड़ता था,–जाकर बैठ गया। हाथोंमें तलवार धारण किये हुए, और धैर्यमें जिसने तीनों लोकको जीत लिया वैसा वह चारों ओर [तीक्ष्ण दृष्टिसे] देखता रहा। एकाएक घोर अर्द्धरात्रिको खिड़कीके रास्ते पहले धुआँ उठा, फिर ज्वाला निकली और बादको साक्षात् प्रेतकी प्रतिमूर्तिके समान एक विकराल बेतालको उसने आते देखा। भूखसे उस बेतालका पेट फक हो रहा था, [इसलिये पहले] उसने खूब इच्छापूर्वक उन भोज्य द्रव्योंको खाया, फिर गंध द्रव्योंको शरीरमें लगाया और पान खाकर सन्तुष्ट होकर फिर वहीं पलँगपर वह बैठ गया और विक्रमादित्यसे बोला–' अरे मनुष्य ! मेरा नाम अग्निबेताल है, देवराज (इन्द्र) के प्रतीहार रूपसे मैं प्रसिद्ध हूं। मैं प्रतिदिन एक एक राजाको मारता हूं। पर [आज] तुम्हारी इस भक्तिसे संतुष्ट होकर मैंने तुम्हें अभयदानपूर्वक यह राज्य दे दिया है। पर इतना भक्ष्य-भोज्य मुझे सदैव देना। इस प्रकार दोनोंमें तै होनेके बाद, कुछ काल बीतनेपर, विक्रमराजाने [उससे] अपनी आयु पूछी। तब वह यह कहकर चला गया कि–' मैं तो नहीं जानता पर स्वामी (इन्द्र) से जानकर तुम्हें बताऊँगा। ' फिर दूसरी रातको वह आया और विक्रमसे बोला कि–' इन्द्रने तुम्हारी आयु सौ सालकी बताई है। ' राजाने अपने मित्रधर्मका अधिक आरोप करके इस प्रकार अनुरोध किया कि–'इन्द्रसे मेरी आयु सौ वर्षसे एक वर्ष अधिक या कम करा दो ! ' उसने यह अंगीकार किया और फिर दूसरे दिन आकर यह बात कही–' महेन्द्रके किये भी [तुम्हारी आयु] निन्यानबे या एक सौ एक वर्ष नहीं होगी।' इस निर्णयके जान लेनेपर, राजा दूसरे दिन उसके लिये भक्ष्य-भोज्य न बनवाकरके, लड़ाईके लिये सज्जित होकर रातमें तैयार रहा। वह बेताल भी यथारीति आकर उन भक्ष्य-भोज्योंको न पाकर क्रुद्ध हुआ और उसने राजा ऊपर आक्रमण किया। बड़ी देरतक उन दोनोंमें युद्ध होता

१ प्राचीन कालमें यह प्रथा थी कि राज्यकी ओरसे किसी साहस या दुष्कर कार्यके करने-करवानेकी घोषणा जब कराई जाती थी, तब एक विशिष्ट राजपुरुष, कुछ अन्य राजकर्मचारियों–सैनिकों आदिको साथ लेकर, नगरके प्रधान प्रधान राजमार्गोंसे ढोल या नगारा बजवाता हुआ घूमता फिरता और मुख्य मुख्य स्थानोंपर खड़ा होकर जो कार्य करना करवाना हो उसकी उद्घोषणा करता। जिस मनुष्यको वह कार्य करना अभीष्ट होता वह उस घोषणाके बाद उस ढोल या नगारेको अपना हाथ लगाता, जिससे वे राजकर्मचारी यह समझ लेते कि इस मनुष्यको यह कार्य करना सम्मत है। फिर उस मनुष्यको वे सम्मानके साथ प्रधान या राजाके पास ले जाते।

रहा। बादको पुण्यबलके सहायसे राजाने उसे पृथ्वी तलपर पटक दिया, और उसकी छातीपर पैर रखकर कहा कि–' इष्ट देवताका स्मरण करो!' तब वह बोला कि–' मैं तुम्हारे अद्भुत साहससे संतुष्ट हूँ। तुम जो करनेको कहो उस आदेशका पालन करनेवाला मैं अग्नि नामक बेताल तुम्हें सिद्ध हुआ।' ऐसा होनेपर उसका राज्य निष्कंटक हुआ। इसी तरह अपने पराक्रमसे दिग्मण्डलको आक्रान्त करनेवाले उस राजाने छानबे प्रतिद्वन्द्वी राजाओंके राज्यको अपने अधिकारमें किया।

३. जंगली हाथी, तुम्हारे शत्रुओंके [उज्जड पड़े हुए] घरोंकी स्फटिक निर्मित दीवालपर दूरसे अपनी परछाई देखकर, उसे प्रतिद्वंद्वी हाथी समझकर, क्रोधसे आघात करता है। [उस आघातके कारण] फिर जब उसका दाँत टूट जाता है तो उसे ही हथिनी समझकर धीरे धीरे साहस[1] के साथ उसका स्पर्श करता है।

इस[2] प्रकार, कालिदासादि महाकवियों द्वारा की हुई स्तुति (प्रशंसा) से अलंकृत होते हुए उसने चिरकाल तक विशाल साम्राज्यका उपभोग किया।

अब यहाँपर प्रसंगसे महाकवि कालिदासकी उत्पत्ति संक्षेपमें कहते हैं–

२) अवन्ती नामक नगरीमें राजा विक्रमादित्यकी लड़की प्रियंगुमंजरी थी। वह अध्ययनके लिये वररुचि नामक पंडितको समर्पण की गई। बुद्धिमती होनेके कारण सभी शास्त्रोंको उसने उस पंडितसे कुछ ही दिनोंमें पढ़ लिया। वह पूर्ण यौवनावस्था प्राप्त कर चुकी थी, और नित्य अपने पिताकी सेवा करती थी। किसी समय, वसन्त कालमें दोपहरको–जब कि सूर्य सिरपर आगया था, वह खिड़कीके सामने एक सुखासन (सोफा) पर बैठी हुई थी; इसी समय उपाध्याय (वररुचि) रास्तेमें चलते हुए खिड़कीकी छायामें कुछ विश्राम लेने खडे रहे। कुमारीने उन्हें देखा और खूब पके हुए आमके फलोंको दिखाया। उसने समझा कि वे (उपाध्याय) उन फलोंके लोलुप हैं, और बोली–' आपको ये फल ठंडे रुचेंगे या गरम?' उसकी इस बातकी चातुरीको न समझते हुए उस (उपाध्याय) ने कहा कि–' गरम ही चाहते हैं' इस प्रकार कह कर, उस उपाध्यायने अपना वस्त्र फैलाया जिसमें उसने ऊपरसे वे फल नीचे फेंके। लेकिन फल पृथ्वीपर गिर पडे और उससे उनमें धूल लग गई। वररुचि हाथ में लेकर मुँहसे फूंक फूंक कर उस धूलको झाड़ने लगा। राजकन्याने उपहासके साथ कहा–' क्या ये बहुत गरम हैं कि जिससे मुंहसे फूंक कर ठंडा कर रहे हो?' उसकी इस बातसे चिढ़कर उस ब्राह्मणने कहा–' ऐ अपनेको चतुर समझनेवाली अभिमानिनि! तू गुरुके साथ ऐसा मज़ाक कर रही है; जा तुझको पशुपाल पति मिलो'। इस प्रकार उनका शाप सुनकर उसने कहा–' आप तो त्रैविद्य हैं, लेकिन मैं तो, आपसे अधिक विद्यावान् होनेके कारण जो आदमी आपका भी गुरु होगा, उसीसे विवाह करूंगी।' उसने इस प्रकार प्रतिज्ञा की। इसके बाद विक्रमादित्य जब कन्याके लिये उचित श्रेष्ठ वर पाने की चिन्तारूपी समुद्रमें डूब रहे थे, तो वह पंडित जिसे राजाने अभिलषित वर की खोज करनेका आग्रहपूर्वक आदेश कर रखा था, एक वार एक जंगलमें घूमता हुआ पिपासासे व्याकुल हुआ। जब

१ मूलमें यहांपर ' साहसाङ्कः ' ऐसा सविभक्तिक पाठ है इसलिये इसे हाथीका विशेषण मान कर यह अर्थ किया गया है। प्रत्यंतरोंमें ' साहसाङ्क ' ऐसा निर्विभक्तिक पाठ भी मिलता है जो अर्थदृष्टिसे संबोधनात्मक हो सकता है। उस अर्थमें यह ' हे साहसाङ्क!' ऐसा विक्रमका विशेषण हो सकता है। विक्रमका उपनाम साहसाङ्क था, इसके यथेष्ट प्रमाण मिलते हैं।

२ यह जो राजाकी स्तुतिका पद्य उद्धृत किया गया है वह महाकवि कालिदासका बनाया हुआ है, ऐसा मेरुतुंगका मंतव्य मालूम देता है।

चारों ओर कहीं जल नहीं मिला तो एक पशुपालको देखकर उससे जल मांगा। उसने जलके अभावमें दूध पीनेको कहा और बोला कि–' करचंडी ' करो। उसके ऐसा कहने पर व र रु चि बड़ी चिन्तामें पड़ गया, क्यों कि उसने इसके पहले यह शब्द किसी भी कोष ग्रंथमें नहीं पढा सुना था। उस पशुपालने उसके मस्तक पर हाथ रखकर और भैंसके नीचे बिठाकर, दोनों हथेलियों को जोड़कर 'करचंडी' नामक मुद्रा बताकर, उसे पेट भर कर दूध पिलाया। उस (उपाध्याय)ने अपने मस्तक पर हाथ रखनेके कारण और एक ' करचंडी ' इस विशेष शब्दके बतानेके कारण, उसे गुरुके समान समझा और फिर उसको ही उस राजकुमारीका समुचित पति निश्चित किया। भैंसोंसे हटाकर उसे अपने महलमें ले आया और ६ महिने तक उसके शरीरकी शुश्रूषा करते हुए " ओं नमः शिवाय " इस आशीर्वादको पढ़ाया। ६ महिने बाद जब पण्डितने समझ लिया कि ये अक्षर उसे कण्ठस्थ हो गये हैं तो एक दिन शुभ मुहूर्तमें उसको अच्छी तरह शृंगार कराके उसे राजसभामें ले गया। राजाको आशीर्वाद देते समय, बहुत बारका अभ्यस्त यह आशीर्वाद भी, सभाक्षोभके कारण "उ श र ट" इस प्रकारके शब्दमें बोल गया। उसकी इस ऊटपटांग बातसे राजा विस्मित हुआ। व र रु चि ने उसकी [मूर्खता छिपाने और] चतुरता बतानेके लिये राजाके सामने कहा–

४. उमाके साथ रुद्र जो, शङ्कर और शूलपाणि है।
रक्षा करें तुम्हारी हे राजन्, टंकारके बलसे जो गर्वित है॥

इस प्रसिद्ध श्लोकद्वारा [जिसके चारों चरणोंके प्रथमाक्षरोंसे ' उशरट ' शब्द बनता है] व र रु चि ने उसके पाण्डित्यकी गंभीरताका विस्तारपूर्वक विवेचन किया। उसकी बातसे प्रसन्न होकर, राजाने उस भैंस चरानेवालेसे अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया। पर पण्डितके सिखानेसे यह सदा मौन ही रहा करता। राजकन्याने उसकी चतुरता जाननेके लिये, कोई नई लिखी हुई पुस्तकके संशोधनका उससे अनुरोध किया। उसने उस पुस्तकको हथेलीपर रखकर, नहरनी लेकर, सारे अक्षरोंको बिंदु और मात्रासे रहित कर दिया। उसे ऐसा करते देख राजपुत्रीने निर्णय किया कि यह तो मूर्ख है। तबसे सर्वत्र ही ' जा मा तृ शु द्धि '[1] की कहावत प्रचलित हुई। एक बार दीवालपरके चित्रमें भैंसोंका झुण्ड देखकर, आनंदित होकर, वह अपनी प्रतिष्ठा भूल गया और उनके बुलानेकी विकृत बोली बोलने लगा। तब राजकुमारीने निश्चय किया कि यह निरा पशुपाल–भैंसोंका चरवाहा है। फिर यह (चरवाहा) राजकन्याकी अवज्ञा देखकर विद्वत्ताके लिये कालिकाकी आराधना करने लगा। अपनी पुत्रीके वैधव्यसे शंकित होकर राजाने[2] रातके समय गुप्त वेशमें दासीको भेजा। उसने यह कहकर कि–' मैं तुझे तुष्टमान हुई हूँ ' ज्यों ही उठाने लगी त्यों ही विप्लवकी आशंकासे, स्वयं कालिका देवीने ही प्रत्यक्ष होकर उसे अनुगृहीत किया। इस वृत्तान्तको सुनकर राजकुमारी प्रमुदित हुई और आकर बोली कि–' क्या कुछ विशेष वाणी प्राप्त हुई है ? ' उसके ऐसा कहनेपर वह तभीसे का लि दा स नामसे प्रसिद्ध हुआ और उसने कु मा र सं भ व प्रभृति ३ महाकाव्य और ६ प्रबंध बनाये।

–इस प्रकार यह कालिदासकी उत्पत्तिका प्रबंध है॥ १ ॥

---

१ 'जामातृ शुद्धि' की कहावत हिंदीमें या गुजराती भाषामें प्रचलित हो ऐसा ज्ञात नहीं हुआ; लेकिन मराठी भाषामें 'जावंई शोध' नामकी कहावत प्रचलित है। विक्रमकी और और कथाओंमें भी इसका उल्लेख मिलता है इससे ज्ञात होता है पुराने समयमें यह कहावत गुजरात आदि देशोंमें भी प्रचलित होगी।

२ पुत्रीको वैधव्य प्राप्त होनेकी शंका राजाको इसलिये हुई कि यह पशुपाल आमरणान्त उपवास करनेकी प्रतिज्ञा करके देवीकी आराधना करने बैठा था। मेरुतुङ्गसूरिका यह ग्रन्थ बहुत ही संक्षिप्त शैलीमें लिखा हुआ है, इसलिये इसमें बहुतसी बातें अस्पष्ट रहती हैं। दूसरे निबन्धोंमें ये बातें खुलासेके साथ लिखी हुई मिलती हैं।

३) एक वार, उस नगरका निवासी दांता नामक सेठ, हाथमें भेंट लेकर आया और सभामें बैठे हुए विक्रमादित्यको प्रणाम करके कहने लगा–' महाराज, मैंने शुभ मुहूर्तमें प्रधान बढ़इयोंसे एक धवलगृह (महल) बनवाया, और उसमें बड़े उत्सवके साथ प्रवेश किया। मैं जब रातको उसमें पलँग-पर पड़ा हुआ, आधा-सोया, आधा-जागा वाली अवस्थामें था उस समय ', गिरता हूँ ' इस प्रकारकी मैंने आकस्मिक वाणी सुनी। मैं मारे डरके ' मत गिरो ' यह कहता हुआ उसी समय वहाँसे भाग निकला। उस मकानके बनवानेके संबंधमें ज्योतिषियों और कारीगरोंको समय समय पर जो धन दान किया गया है वह मेरे ऊपर वृथा दण्ड ही हुआ। अब इस विषयमें महाराज जो उचित समझें करें। ' राजाने उस सेठकी बात भली भाँति सुनकर, उस धवलगृहका मूल्य जो तीन लाख उसने बताया, वह उसे चुकाकर, उसको स्वायत्त कर लिया। सायंकाल होनेपर; सर्वावसर[१] यानि राजसभामें बैठकर, तत्संबंधी सब कार्योंसे निवृत्त होकर, उस घरमें सुखपूर्वक जा सोया। उसी ' गिरता हूँ ' इस वाणीको सुनकर वह असम साहसी राजा बोला कि ' जल्दी गिरो। ' और उसके ऐसा कहते ही पास ही गिरे हुए सुवर्ण पुरुषको उसने प्राप्त किया।

—इस तरह यह सुवर्ण पुरुषकी सिद्धिका प्रबन्ध है ॥ २ ॥

४) एक दूसरे अवसरपर कोई अभागा पुरुष, अपने हाथसे बनाये हुए एक लोहेका दुबला पतला दरिद्र नामक पुतला लेकर द्वारपर आया। जब द्वारपाल उसे राजाके पास ले गया तो उसने कहा कि–' महाराज, आप जैसे स्वामीसे शासित इस अवन्तीपुरीमें सभी चीज़ें जल्दी बिक जाती हैं और मिल जाती हैं, ऐसी प्रसिद्धि जानकर मैंने चौरासी चौहटोंपर विक्रयके लिये इस दरिद्र-पुतलेको घुमाया, लेकिन किसीने इसे नहीं खरीदा और उलटी मेरी भर्त्सना की गई। आपकी इस नगरीका यह कलंक यथार्थ रीतिसे आपको बताकर, क्या मैं जैसे आया था वैसे ही चला जाऊं ? यह आपसे पूछने आया हूँ। ' उसकी इस घटनाको पुरीका एक महान् कलंक समझकर राजाने उसी समय उसे एक लाख दीनार देकर, लोहेके उस दरिद्र-पुतलेको खरीद लिया और अपने खजानेमें रखवा दिया। ऐसा करनेपर उसी रातको, सुख पूर्वक सोये हुए राजाके निकट, पहले पहरमें हाथियोंकी अधिष्ठात्री देवता, दूसरेमें घोड़ोंकी अधिष्ठात्री देवता और तीसरेमें लक्ष्मीने आविर्भूत होकर कहा कि – ' महाराजने जब दरिद्र-पुतलेको ख़रीद लिया है तो, फिर हमारा यहाँ रहना उचित नहीं है '— यह कह, अनुज्ञा लेकर वे चले जानेको पूछने आये, तो राजाने अपना साहस भंग न हो इसलिये उनको जानेकी अनुमति दे दी। चौथे पहरमें कोई दिव्य तेजःसम्पन्न उदार पुरुष प्रकट हुआ और बोला कि–' मैं सत्त्व (साहस) हूँ, जानेके लिये आपकी अनुज्ञा चाहता हूँ '। उसके ऐसा पूछनेपर राजा हाथमें तलवार लेकर जब आत्मघात करनेको उद्यत हुआ तो फिर उसने हाथ पकड़कर कहा कि–' मैं तुष्टमान हुआ ' और राजाको उस कृत्यसे रोका। सत्त्वके यहीं रहनेपर हाथी आदिकी तीनों अधिष्ठात्री देवतायें लौटकर राजासे बोलीं–'जानेके संकेतको नष्ट करके सत्त्वने हमें धोखा दिया है। इसलिये राजाको छोड़कर हम लोगोंका जाना अब उचित नहीं है। इस प्रकार वे भी बिना किसी यत्नके ही स्थिर होकर रह गईं।

[१] तभीतक धन है, तभीतक गुण है, और तभीतक समुज्ज्वल कीर्ति है, जबतक हे सत्त्व (साहस)! तुम चित्तरूपी नगरमें खेल रहे हो।

---

१ सर्वावसर उस जगहका नाम है जहां राजा अपने मुख्य सिंहासन पर बैठकर सब कोई प्रजाजन और राजकीय पुरुषोंकी मुलाकात लेता देता है और राज्यके सब कार्योंका विचार करता है। दिवान-ए-आम या दरबार-ए-आम यह उर्दू शब्द इसका प्रायः समानार्थक हो सकता है।

[२] राज्य भी जाय, स्त्रियां भी जाय और इस लोकसे यश भी चला जाय; किन्तु हे सत्त्व! हम तुम्हारे जानेकी अनुमति आजीवन नहीं दे सकते।

—इस प्रकार यह विक्रमादित्यके सत्त्वका प्रबंध है ॥ ३ ॥

५) एक दूसरे अवसरपर, कोई विदेशी सामुद्रिक-शास्त्रज्ञ द्वारपालके द्वारा सभामें बैठे हुए विक्रमादित्यके पास ले जाया गया। प्रवेश करते ही राजाके लक्षणोंको देखकर वह सिर पीटने लगा। राजाने विषादका कारण पूछा, तो बोला—' महाराज, सभी अपलक्षणोंके निधान होनेपर भी तुम्हें छानवे देशोंकी साम्राज्य लक्ष्मीको भोगते हुए देखकर, सामुद्रिक शास्त्रके ऊपर मेरा विराग हो गया है। मैं तुम्हारे अन्दर ऐसी कोई काबरी (चितकबरी) आंत नहीं देख रहा हूं जिसके प्रभावसे तुम भी कोई राज्यकर्ता बनो। उसके इस वाक्यके सुनते ही विक्रमादित्य तलवार खींचकर जब अपने पेटमें मारने लगा तो उस (सामुद्रिकज्ञ) ने पूछा कि ' यह क्या! ' इस पर विक्रमने कहा—' पेट फाड़कर तुम्हें उसी प्रकारकी (काबरी) आंत दिखाता हूं। तब उसने कहा कि—' मैंने पहले नहीं समझा था कि, तुम्हारा यह सत्त्वरूपी महालक्षण बत्तीस लक्षणोंसे भी बढ़कर है। इसपर राजाने उसे पारितोषिक देकर विदा किया।

—इस प्रकार यह सत्त्वपरीक्षाका प्रबंध है ॥ ४ ॥

६) इसके बाद एक अवसरपर, विक्रमने सुना कि दूसरेके शरीरमें प्रवेश करनेवाली विद्यासे तिरस्कृत होकर अन्य सारी कलायें निष्फल-सी हैं। यह सुनकर उस विद्याकी प्राप्तिके लिये श्रीपर्वत पर भैरवानन्द योगीके पास जाकर उसने चिरकाल तक उस (योगी) की सेवा करनी शुरू की। योगीके पूर्वसेवक किसी ब्राह्मणने [राजासे यह कहा कि—तुम] मुझे छोड़कर (अकेले) गुरुसे पर-काय-प्रवेश विद्या न लेना। राजाने उसका अनुरोध मान लिया। जब गुरु विद्या देनेको उद्यत हुए तो उनसे कहा कि—' पहले इस ब्राह्मणको विद्या दीजिये, बादको मुझे '। ' राजन्! यह (ब्राह्मण) विद्याके सर्वथा अयोग्य है ' ऐसा गुरुके कहनेपर भी बार बार विक्रम अनुरोध करता रहा। तब गुरुने यह उपदेश देकर कि—'पीछे तुम पछताओगे' उस ब्राह्मणको भी विद्या दी। बादमें लौटकर दोनों उज्जयिनी पहुंचे। वहां पट्टहस्तीके मर जानेसे राजपुरुषोंको उदास देखकर और स्वयं परकाय-प्रवेश विद्याका अनुभव करनेके निमित्त, राजाने उस हाथीके शरीरमें अपनी आत्माका प्रवेश कराया। [इस प्रसंगका वर्णन करनेवाला यह एक पद्य है—]

> ५. ब्राह्मणको अंगरक्षक बनाकर राजा (परकाय-प्रवेश) विद्याके द्वारा अपने हाथीके शरीरमें प्रविष्ट हुआ। [बादमें] ब्राह्मण राजाके शरीरमें पैठ गया। तब राजा क्रीडा-शुक (महलके पींजरेमेंका तोता) हुआ। बादमें (शुकरूपी) राजाने छिपकली के शरीरमें प्रवेश किया तो रानीने उसकी मृत्यु समझी। (इस पर) ब्राह्मणने (जो राजाके शरीरमें प्रविष्ट हुआ बैठा था) शुकको जिलाया और विक्रम ने फिर अपना शरीर पाया ॥ ५ ॥ इस तरह विक्रम को परकाय प्रवेश विद्या सिद्ध हुई।

—इस प्रकार यह विद्यासिद्धिका प्रबंध है ॥ ५ ॥

७) फिर एक दूसरे अवसरपर, विक्रमादित्य राजपाटिका [१] (बहिर्भ्रमण) में जा रहा था तब मार्गमें सिद्धसेन सूरिको आते देखा। उस नगरका (जैन) संघ उनके पीछे पीछे आरहा था और बन्दी जन

---

१ ' राजपाटिका ' यह प्राकृत ' रायवाडिया ' और देश्य ' रहवाडी ' शब्दका संस्कृत भाषांतर है। पुराने समयमें राजा आदि राज्यनायक पुरुष प्रायः मध्यान्होत्तर तीसरे प्रहरके अंतमें या चतुर्थ प्रहरमें, राजमहलसे अनुचर आदिके खास परिवारके साथ निकल कर, प्रधान राजमार्गसे होते हुए नगर या गांवके बाहर जो राजकीय उद्यानादि स्थान होते थे उनमें जाते थे और वहांपर घंटे-दो घंटे ठहर कर, संध्याकाल होते समय वापस निवासस्थान पर आते थे। राजाओंका यह इस प्रकार टहलने या हवाखानेके लिये जो महल बाहर जाना होता था उसको राजपाटिका कहते थे।

'सर्वज्ञपुत्र' कह कर उनकी स्तुति कर रहे थे। 'सर्वज्ञपुत्र' इस विरुदसे कुपित होकर विक्रमादित्य ने उनकी सर्वज्ञताकी परीक्षाके लिये मन-ही-मन प्रणाम किया। सिद्धसेन ने भी पूर्वगत श्रुतज्ञानके द्वारा राजाका मनोगत भाव समझकर, दाहिना हाथ उठाकर धर्मलाभ का आशीर्वाद दिया। राजाने जब आशीर्वाद देनेका कारण पूछा, तो महर्षिने कहा कि—तुम्हारे मानस नमस्कारके लिये यह आशीर्वाद दिया गया है। इस पर उनके ज्ञानसे चकित होकर राजाने उनके पारितोषिक निमित्त एक करोड़ सुवर्ण वितरण किया।

८) एक बार, एक दूसरे अवसरपर, राजाने कोशाध्यक्षसे अपने दिलाए हुए सुवर्णका वृत्तान्त पूछा, तो वह बोला कि—धर्मकी बहीमें मैंने श्लोक बनाकर सुवर्णका वृत्तान्त लिखा है; जो इस प्रकार है —

६. दूर-ही-से हाथ उठाकर 'धर्मलाभ हो' इस प्रकार कहनेवाले सिद्धसेन सूरिको राजाने एक कोटि [सुवर्ण] दिया।

इसके बाद श्री सिद्धसेन सूरिको सभामें बुलाकर राजाने जब कहा कि—उस सुवर्णको ग्रहण कीजिये। तो उन्होंने कहा कि—खाये हुए को खिलाना वृथा है। उसी सुवर्णसे ऋणग्रस्ता पृथ्वीको ऋणमुक्त कीजिये। इस प्रकारका उपदेश मिलनेपर, सूरिके सन्तोषसे सन्तुष्ट होकर राजाने उस बातको स्वीकार किया।

९) उसी रातको राजा वीरचर्या[1] निमित्त नगरमें घूम रहा था, उस समय एक तेलीको बारबार इस (श्लोकार्ध) को पढ़ते सुना—

७. 'हमारा संदेश नारद! कृष्णको कहना।'

राजा सबेरा होनेतक रुका रहा पर उत्तरार्ध न सुन सका। उदास होकर राजमहलमें आकर सो गया। सबेरे सामयिक कृत्य करके राजाने उस तेलीको बुलाकर उत्तरार्ध पूछा। उसने कहा—

'जगत् दारिद्र्यसे दुःखित है [इस लिये] बलिके बन्धनको छोडो ॥ ७ ॥'

यह सुनकर सिद्धसेन सूरिके उपदेशको फिरसे कहा हुआ समझकर पृथ्वीको ऋणमुक्त करना शुरू किया।

[उज्जयिनीमें राजा विक्रमादित्य भट्टमात्रके साथ गुप्त वेश धारण करके महाकालके मंदिरमें नाटक देखने गया। कुछ समयके बाद नागरिकके लड़के द्वारा कराये जानेवाले नाटकमें सूत्रधारके मुखसे उसका वर्णन सुनकर राजाने भी उस नागरिकका धन ले लेनेके लिये मन-ही-मन लोभ किया। बादको कुछ समय बीतनेपर वह प्यासा होकर मुख्य वेश्याके घर परसे भट्टके पाससे पानी मंगवाया। वहां बुढ़िया वेश्या प्रधान पुरुषोंसे कह कर उसके लिये ईखका रस लेनेके लिये उपवनमें गई। काटनेवालोंसे ईख कटवाकर उसका रस निकलवाया पर उससे घड़िया बिलकुल नहीं भरी तो मनमें दुखी होकर ऊपरका शकोरा भर कर ही बहुत देरसे आई। राजाके रस पी लेनेपर भट्टमात्रने उसकी देरी और उदासीका कारण पूछा। वह बोली—और और दिन तो एक ही ईखसे घड़ा और शकोरा दोनों भर जाते थे लेकिन आज तो घड़ा भी नहीं भरा। इसका कारण समझमें नहीं आता। भट्टमात्रने फिर पूछा कि—तुम लोग तो बड़ी पक्की बुद्धिवाली होती हो इसलिये इसका कारण जानकर और विचारकरके बताओ। फिर वेश्या बोली कि—पृथ्वीके मालिक (राजा) का मन प्रजाके प्रति विरुद्ध होगया है, इसलिये पृथ्वीका रस भी क्षीण होगया है। यह कारण उसने निवेदन किया तो राजा भी उसके बुद्धिकौशल्यसे चकित हुआ। वह फिर अपने घरकी शय्यापर सोया हुआ इस प्रकार विचार करने लगा कि—प्रजा-पीड़न किये विना, केवल विरुद्ध चिन्ता मात्रसे ही पृथ्वीके रसकी इस प्रकार हानि हुई। तो

१ वीरचर्या—उस जमानेके राजा अपनी प्रजाके सुख दुःखोंकी बातें स्वयं जानने-सुननेके लिये कभी कभी रातके समय, एकाकी गुप्तवेशमें महलोंसे बाहर निकल जाते थे और दो चार घंटे इधर उधर घूम फिर कर नगर चर्चाका प्रत्यक्ष अनुभव करते थे। इसका नाम वीरचर्या है।

मैं अब प्रजाको पीड़ा नहीं पहुँचाऊंगा। ऐसा निश्चय करके राजा दूसरी रातको प्यासका बहाना करके परीक्षाके लिये फिर उसके घर गया। वह शीघ्र ही ईखका रस ले आई और राजाको दिया जिसे पीकर वह [अपने महलमें आया और] शय्यापर सो गया। भट्टमात्रके पूछनेपर वेश्याने भी [उसी तरह] निवेदन किया (बताया) कि–[आज] राजाका मन प्रजापर प्रसन्न है। राजाने भी रातवाली अपनी बात बताकर, परके चित्तको इस प्रकार पहचान लेनेके कारण, सन्तुष्ट होकर उस वृद्ध वेश्याको [पारितोषिकके ढंगपर] हार दिया।–इस प्रकार यह राजाके मनके अनुसार होनेवाले पृथ्वीरसका प्रबंध है।]

१०) इसके बाद एक बार श्री सिद्धसेन सूरिने, यह पूछे जानेपर कि–' मुझ (विक्रम) के समान क्या कोई [और भी] जैन राजा होगा ? ' कहा–

८. एक हजार एक सौ निन्यानवे वर्ष पूर्ण होनेपर तुझ विक्रमादित्यके समान एक कुमार [पाल] नामक राजा होगा।

११) इसके बाद, एक दूसरे अवसरपर, जब राजा जगत्को ऋणमुक्त कर रहा था, अपने औदार्य गुणका अहंकार करते हुए उसने सोचा कि–' प्रातःकाल एक कीर्ति-स्तम्भ बनवाऊँगा। [उसी दिन] रातको वीरचर्या निमित्त चतुष्पथमें घूम रहा था कि दो सांढ लडते हुए सामने आये। उनसे डर कर राजा किसी दारिद्र्यग्रस्त ब्राह्मणकी पुरानी गोशालाके एक खंभेपर चढ़ गया। वे दोनों सांढ भी सींगसे वारंवार उसी खंभेपर प्रहार करने लगे। इसी बीच उस ब्राह्मणने अकस्मात् जग कर, आकाशमें शुक्र और बृहस्पतिसे अवरुद्ध चन्द्र-मण्डलको देखकर, गृहिणीको उठाया और चन्द्रमण्डलसे सूचित होनेवाले राजाका प्राणभय जान कर कहा कि–उसकी शान्तिके लिये हवनीय द्रव्यसे हवन करूंगा। राजा कान लगा कर यह बात सुन रहा था। गृहिणीने उससे कहा–' इस राजाने सारी पृथ्वीको तो ऋणमुक्त किया है, लेकिन मेरी सात कन्याओंके विवाहार्थ तो कुछ द्रव्य नहीं दिया। तो फिर शान्तिकर्म करके उसे व्यसन (संकट) से मुक्त करनेमें क्या लाभ है ? ' इस प्रकार उसकी बात सुन कर वह सर्वथा गर्वसे रहित हुआ और उस संकटसे छूटकर और उस कीर्तिस्तम्भकी बातको भूलकर चिरकाल तक राज्य करता रहा।

–इस प्रकार यह विक्रमादित्यकी निर्गर्वताका प्रबन्ध है ॥ ६ ॥

[इसके बाद एक दूसरी रातको एक धोबिनसे राजाने पूछा कि–' वस्त्रोंमें बालू क्यों लगी रहती है और वे गन्दे क्यों हैं ? ' उसने कहा–

[३] हे महाराज, यह जो दक्षिण समुद्ररूपी दक्षिण नायककी वधू, रेवाकी प्रतिस्पर्द्धिनी, गोदावरी नामक प्रसिद्ध नदी, जिसका तट गोविन्दके प्रिय गोकुलोंसे आकुल है, उसका जल, वर्षाकाल बीत जानेपर भी आपकी सेनाके हाथियोंके दाँतरूपी मूसलसे प्रक्षोभित धूलिके कारण, स्वच्छ नहीं हुआ।

[४] उस राजाओंके राजाने धोबिनकी वह बात सुन कर भ्रूक्षेप मात्रमें अपने शरीरके आभूषणोंके साथ एक लाख [का दान] दे दिया।

[५] राजा विक्रमादित्यने चोर, मागध (भाट), ब्राह्मण और धोबिनसे कविता सुन कर [रातके] चारों पहर दान दिया।]

–[1] इस प्रकार यहांपर विक्रमके संबंधके [और भी] विविध प्रबंध, परंपरा द्वारा जानलेने चाहिए।

---

१ इस पंक्तिके लेखसे मेरुतुंगसूरि यह सूचित करना चाहते हैं कि विक्रमके विषयके जैसे ये प्रबन्ध हमने यहां लिखे हैं, वैसे और भी अनेक प्रबन्ध हैं, जिनका ज्ञान अन्यान्य ग्रंथों प्रबन्धों द्वारा प्राप्त करना चाहिए। हमने तो यहां पर कुछ दिग्दर्शन करानेके लिये ही ये थोडेसे प्रबन्ध लिख दिये हैं।

१२) एक वार, आयुके अन्तमें विक्रमादित्य का शरीर कुछ कमजोर हुआ तो एक वैद्यने उपदेश दिया कि, कौवेका मांस खानेसे रोगकी शान्ति होगी। जब राजा उसे पकवाने लगा तो इससे वैद्यने राजाका प्रकृति-व्यत्यय देखकर कहा–इस समय धर्मौषध ही बलवान है। क्यों कि प्रकृतिकी विकृति होनेसे उत्पात होता है। जीवनके लोभसे लोकोत्तर सत्त्व-प्रकृतिका त्याग करके काकमांस खाकर आप किसी तरह भी न जियेंगे। वैद्यके ऐसा कहनेपर उसको 'परमार्थबान्धव' कह कर राजाने उसकी प्रशंसा की और पारितोषिक देनेके लिये कहा। फिर और हाथी, घोड़ा, कोश इत्यादि सर्वस्व याचकोंको देकर, राजपुरुषों और नागरिकोंसे विदा लेकर, धवल गृहके किसी निर्जन प्रान्तमें तत्कालोचित दान और देव-पूजन करके कुशासनपर बैठ गया और सोच ही रहा था कि ब्रह्मद्वारसे प्राणोंको निकाल दूं; अकस्मात् आविर्भूत अप्सराओंके समूहको देखा। राजाने हाथ जोड़कर प्रणाम करके उनसे पूछा कि–'तुम लोग कौन हो?' इस पर अप्सराओंने कहा कि–विस्तारके साथ कुछ कहनेका यह अवसर नहीं है; हम तो विदा लेनेके लिये ही यहां आई हैं। इस प्रकार कहकर जाती हुई अप्सराओंसे राजाने फिर कहा–'नवीन ब्रह्माने आप लोगोंको एक अद्वितीय रूप दे कर बनाया है। फिर भी जानना चाहता हूं कि, यह अद्वितीय रूप नासिकाहीन क्यों है?' इस पर वे ताली बजाकर हँसती हुई बोलीं–'अपने ही अपराधको हमारे ऊपर डाल रहे हो!' ऐसा कह कर वे चुप हो गई। तब राजाने कहा–आप लोग तो स्वर्ग लोकमें रहती हैं। आपके ऊपर मेरे अपराधकी सम्भावना कैसे हो सकती है? इस तरह राजाका वचन समाप्त होनेपर उनमें की मुख्य सुमुखीने कहा–'हे राजन्, पूर्वतन पुण्यके प्रभावसे नव निधियोंने तुम्हारे महलमें अवतार ग्रहण किया था, हम लोग उन्हींकी अधिष्ठात्री देवतायें हैं। आपने जन्मसे महादान देते हुए भी एक ही निधिमेंसे इतना ही मात्र दिया है कि जिससे आप नासाग्र देख नहीं सकते।' इस प्रकारका उनका कथन सुनकर हाथसे सिर ठोकते हुए राजाने कहा कि–'यदि मैं जानता कि नव निधियां अवतीर्ण हुई हैं तो उन्हें नौ ही पुरुषोंको दे देता। दैवने अज्ञान भावसे मुझे वञ्चित किया।' उसके ऐसा कहते समय उन्होंने यह कह कर आश्वासित किया, कि–कलियुगमें तो आप ही एकमात्र उदार हैं। और वह परलोक प्राप्त हुआ। उसी दिनसे उस विक्रमादित्यका संवत्सर प्रवृत्त हुआ जो आज भी जगत्में वर्तमान है।

॥ श्रीविक्रमादित्यके दान विषयक ये विविध प्रबंध पूरे हुए ॥

२. सातवाहन राजाका प्रबन्ध ।

१३) दान और विद्वत्ताके विषयमें श्री सातवाहनकी कथा परम्परागत यथाश्रुतिके अनुसार जानना चाहिये ।[1] उसके पूर्व जन्मकी कथा इस प्रकार है–प्रतिष्ठानपुरमें सातवाहन राजा जब राजपाटिका (बहिर्भ्रमण) करने जा रहा था तो नगरके निकट नदीमें एक मछलीको हँसते देखा, जिसे लहरोंने पानीके किनारे फेंक दिया था। इस अस्वाभाविक बातको देखकर राजाको भय हुआ। उसने सभी पंडितोंसे इस सन्देहको पूछते हुए एक ज्ञानसागर नामक जैन मुनिसे भी पूछा। अपने अतिशय ज्ञानके बलसे उसने राजाके पूर्वजन्मको जानकर इस प्रकार उपदेश दिया कि–' पिछले जन्ममें तुम इसी नगरमें रहते थे। तुम्हारे कुल-वंशमें कोई नहीं था। और तुम्हारी जीवनवृत्ति एकमात्र लकड़ीका बोझ ढोना था। तुम नित्य ही भोजनके अवसर पर इसी नदीके निकटवर्ती शिलातलपर बैठकर पानीसे सत्तू सानकर खाया करते थे। किसी दिन, एक महीनेके उपवासकी पारणाके लिये नगरमें जाते हुए एक जैन मुनिको बुलाकर वह सत्तूका पिंड उनको दानकर दिया। उस पात्रदानके माहात्म्यसे तुम सातवाहन नामक राजा हुए और वह मुनि देवता हुआ। वही देवता अपने अधिष्ठान वश होकर, उस काष्ठभारवाही जीवको तुझे इस राजाके रूपमें पहचानकर, प्रमादके कारण हँस पड़ा।' इस कथागत वस्तुका संग्रह सूचक यह [पुरातन] काव्य है–

९. मछलीके मुँहके हँसनेपर जो सातवाहन राजा भयभीत होगया था उससे मुनिने कहा कि जिसने सत्तूसे मुनिको पूर्व जन्ममें जो पारणा कराया था वही आप हैं और दैवात् मछलीने आपको पहचान लिया इसलिये वह हँस रही।

वह सातवाहन उस पूर्व जन्मके वृत्तान्तको जातिस्मृतिसे प्रत्यक्ष करके उस दिनसे दानधर्मकी आराधना करता हुआ सब महाकवियों और विद्वानोंका संग्रह करता रहा। उसने चार करोड़ सुवर्णसे चार गाथाओंको खरीदा और सात सौ गाथाओंवाला ' सातवाहन ' नामक संग्रह गाथा कोश शास्त्र निर्माण कराया। इस प्रकार वह नाना सद्गुणोंका निधि बनकर चिरकाल तक राज्य करता रहा। वे चारों गाथायें ये हैं। जैसे–

[प्रबन्धचिन्तामणिकी मूल पाठकी जो आवृत्ति हमने तैयार की है उसमें यहा पर (देखो पृष्ठ ११) १० प्राकृत गाथायें दी हुई हैं। इन गाथाओंके क्रम आदिके विषयमें पुरानी प्रतियोंमें बहुत कुछ गड़बड़ मालूम देती है। कोई प्रतिमें तो ये गाथायें सर्वथा नहीं दी गई हैं और ' गाथाचतुष्टयमेतद् ' (अर्थात्–ये चार गाथायें इस प्रकार हैं) इस वाक्यके बदले ' तद्गाथाचतुष्टयं बहुश्रुतेभ्यो ज्ञेयं ' (अर्थात्–ये चार गाथायें बहुश्रुत विद्वानों द्वारा जाननी चाहिए) ऐसा वाक्य है; और कुछ प्रतियोंमें पहली ५ गाथायें लिखी हुई मिलती हैं, कुछमें दूसरी ५ गाथायें, कुछमें दसों गाथायें मिलती हैं। हमने मूलमें, संग्रहकी दृष्टिसे इन दसों गाथाओंका पाठ दे दिया है। इनमें पहला गाथा-पचक है वह शृंगार विषयक वस्तुका वर्णनवाला है; दूसरा गाथा-पचक अन्योक्तिद्वारा सत्पुरुषोंके परोपकार भावका वर्णन करता है। इन गाथाओंका अर्थ इस प्रकार है–]

१० ' हार, ' ' वेणीदंड, ' ' खट्वोद्गालि ' और ' ताल ' इन ४ वस्तुओंका वर्णन करनेवाली ४ गाथायें सातवाहन राजाने दसकोडि [सुवर्ण] दे कर ग्रहण कीं ॥ १ ॥

---

१ विक्रमकी तरह सातवाहन राजाकी भी बहुतसी कथायें परंपरासे चली आती हैं। विक्रमचरितके समान सातवाहनचरित भी बना हुआ है। संस्कृतके कथासरित्सागर नामक प्रसिद्ध ग्रंथमें सातवाहनकी बहुतसी कथायें गूथी हुई हैं। वे सब कथायें मेरुतुंगसूरिके समयमें बहुत प्रचलित थीं और लोक-प्रसिद्ध थीं इसलिये उन्होंने उन कथाओंको इस ग्रंथमें संकलित नहीं किया। विक्रमके बाद सातवाहन प्रसिद्ध ऐतिहासिक दानशील राजा हो गया और उसने भी विद्वानोंको खूब धन दान किया, इसलिये सिर्फ उसका नाम निर्देश करनेके निमित्त ही यह इतना-सा वृत्तांत उसके विषयमें मेरुतुंगसूरिने लिख दिया है। इसकी विशेष चर्चा अगले ऐतिहासिक विवेचनवाले भागमें की जायगी।

[हारका वर्णन करनेवाली गाथाका अर्थ इस प्रकार है–]

११. खूब पुष्ट और ऊंचे उठे हुए स्तनोंवाली स्त्रीके वक्षस्थलपर रहा हुआ [मोतीयोंका] हार स्थिर होकर रहनेकी ठीक जगह न मिलनेसे छातीपर उद्विग्न अथवा उन्मुख होकर इधर उधर फिरता रहता है–जैसे यमुना नदीके प्रवाहमें पानीके फेनके बुद्बुदे इधर उधर फिरते रहते हैं।

['वेणीदण्ड'का वर्णन करनेवाली गाथाका अर्थ इस प्रकार है–]

१२. हे सुन्दरि, तेरा यह कृष्णकांति-वेणीदण्ड नितम्ब-बिम्बपर जो शोभ रहा है वह मानों ऐसा लगता है कि सुरतस्थानरूप महानिधिकी रक्षा करनेवाला कोई भुजंग है।

['खट्वोद्गालि'के वर्णनवाली गाथाका अर्थ इस प्रकार है–]

१३. सुरत-संभोगके समय जो संतोषप्रदायक सुंदर सुखानुभव हुआ, उसका विरह होनेसे, हे प्रिय सखि! यह खाट चूं चूं ऐसा शब्द कर रही है।

['ताल' का वर्णन करनेवाली गाथाका अर्थ इस प्रकार है–]

१४. हे शुक! तूं इसे चांचके लगाने-हीसे गिर जानेवाला पका हुआ आम्रफल मत समझ। यह तो जरठ हो जानेसे बेस्वादवाला और उमडा हुआ तालफल है।

[दूसरा गाथा-पंचक है उसमें 'कदली वृक्ष', 'विन्ध्य गिरी', 'स्नेहाधार' और 'चन्दन वृक्ष' इन ४ वस्तुओंका अन्योक्तिमय वर्णन है। इसकी आखिरी १० वीं गाथामें कहा गया है कि शालीवाहन राजाने ये गाथायें ९ कोडि (प्रत्यंतरमें ४ कोडि) देकर ग्रहण कीं। इनका अर्थ क्रमशः इस प्रकार है–]

१५. जो पुरुष, केलके झाडके समान, दूसरोंको फल देते हुए अपना विनाशका भी विचार नहीं करते, उनके सामने मरना भी वांछनीय है।

१६. जिस तरह विन्ध्याचल पर्वत सदा सरस (हरे भरे) वृक्षोंको धारण करता है वैसे ही शुष्क-(निकम्मे) वृक्षोंको भी धारण करता है। उसी तरह बड़े पुरुष अपने उत्संगवर्ती–समीपवर्ती निर्गुणोंका भी त्याग नहीं करते।

१७. ये मुञ्झार[1] जिन्होंने तृषित होकर प्रथम ही प्रथम जो स्नेहाधार(जलधारा)का जैसे तैसे करके पान किया है वे फिर आजन्म अन्य पानकी इच्छा नहीं करते।

१८. शुष्क हो जानेपर भी जिस चन्दनके वृक्षका, सब जनोंको आनन्द देनेवाला ऐसा सुरभि गन्ध है वह जब सरस भाववाला (हरा फूला) होगा तब तो फिर कैसा ही होगा।

---

१ यह 'मुञ्झार' क्या वस्तु है इसका अर्थ हमें स्पष्ट नहीं हुआ। यह शब्द भी शुद्ध है या नहीं इसकी हमें शंका है। कोश वगैरह ग्रंथोंमें यह शब्द हमें नहीं मिला।

३. शीलव्रतके विषयमें भूयराजका प्रबंध।

१४) यह प्रबंध इस प्रकार है—कान्यकुब्ज देशमें, जो छत्तीस लाख गाँवोंका प्रगणा है, 'कल्याणकटक' नामक राजधानीमें भूयराज नामक राजा राज्य कर रहा था। किसी दिन प्रभात कालमें जब कि वह राजपाटिका करनेके लिये जा रहा था, उस समय खिड़की पर बैठी हुई किसी मृग-नयनीको देखता हुआ उसका अपहरण करनेके लिये अपने पानीयके अधिकारी पुरुषको आदेश किया। उसने उसे राज-भवनमें लाकर किसी संकेत स्थलपर रखकर राजाको निवेदन किया। वहां आकर राजाने उसका हाथ पकड़कर खींचना चाहा तो इसपर वह राजासे बोली—' स्वामिन्, आप तो सर्व देवताके अवतार हैं; अफसोस कि आपका इस नीच नारीमें क्यों अभिलाष है!' उसके इस वाक्यसे राजाकी कामाग्नि कुछ शान्त हुई, और वह बोला कि—'तुम कौन हो?' उसके यह कहनेपर कि 'मैं आपकी दासी हूं'—राजाने कहा कि 'यह बात क्या ठीक कह रही हो?' तो उसने बताया कि 'आपका दास जो पानीयका अधिकारी है, मैं उसकी स्त्री, और आपकी दासानुदासी हूं!' उसकी बातसे राजा चकित हुआ और उसकी कामपीडा सर्वथा विलीन हो गयी। उसको अपनी पुत्री मानकर उसे विदा किया। उस (स्त्री)के शरीरमें हमारे हाथ लगे हैं, यह सोचकर उनके निग्रह (नष्ट करने) की इच्छासे रातको यह भ्रान्ति जन्माकर कि खिड़कीके रास्ते कोई प्रवेश कर रहा है, अपने ही पहरेदारोंसे अपने दोनों ही हाथ कटवा डाले। सबेरे पहरेदारोंको मंत्रीलोग दण्ड देने लगे तो उन्हें रोककर मालवमण्डलमें महाकाल देवके प्रासाद (मन्दिर) में जाकर उनकी आराधना करता रहा। देवताके आदेशसे जब दोनों भुजायें लग गईं तो अपने अन्तःपुरके साथ सारा मालवदेश उसी देवको समर्पण कर दिया और परमार [जातिके] राजपूतोंको उसकी रक्षाके अधिकारी नियुक्त करके स्वयं तापसी दीक्षा ग्रहण की।

—इस प्रकार शीलव्रत विषयक यह भूयराजका प्रबन्ध है ॥ ९ ॥

४. वनराजादि प्रबन्ध ।

१५) उसी कान्यकुब्ज देशके [अधिकारमें] गुर्जर धरित्री (गुजरात) भी एक प्रांतरूप है । उस गुजरातके वढीयार नामक देशके पञ्चाशर ग्राममें चापोत्कट वंशमें जन्म लेनेवाले एक बालकको उसकी माता झोलीमें रखकर और उसे 'वण' नामक वृक्षमें लटकाकर लकडी चुन रही थी । कार्यवश वहां आये हुये श्री शीलगुण सूरि नामक जैनाचार्यने यह देखकर कि, अपराह्नमें (दोपहरके बाद) भी उस वृक्षकी छाया नहीं झुक रही है, सोचा कि इस झोलीवाले बालकके पुण्यका ही यह प्रभाव है; और इस आशासे कि [भविष्यमें] यह जैन धर्मका प्रभावक पुरुष होगा, उसकी माताकी वृत्तिका उचित प्रबन्ध करवाकर उस बालकको उससे अपने अधीन ले लिया । वीरमती गणिनी नामक एक आर्या बालकका पालन करने लगी । गुरुने उसका नाम वनराज रखा । जब वह आठ वर्षका हुआ तो गुरुने देवपूजाके द्रव्योंको नष्ट करनेवाले चूहोंसे उस द्रव्यकी रक्षा करनेके काममें उसे नियुक्त किया । वह तो उन्हें बाणोंसे मारने लगा । गुरुके निषेध करने पर उसने कहा कि–'ये चूहे तो चौथे उपाय यानि दण्डसे ही साध्य हैं ।' उसके जातक (जन्मकुण्डली) में राजयोग देखकर और यह निर्णय करके कि यह महा नृपति होनेवाला है, गुरुने उसे फिर उसकी माताको सौंप दिया । वह माताके साथ किसी पल्ली (गाँव) में रहने लगा । वहां उसका मामा रहता था जो डकैती करता था, उसका वह आदरपात्र बन गया और उसके साथ गाँवों और नगरोंमें, अपने पौरुषका आतंक बतलाता हुआ, चारों ओर लूट-पाट करने लगा ।

१६) एकबार काकर नामके गाँवमें किसी व्यवहारीके घरमें सेंध मारा और धन चुराते समय उसका हाथ दहीके भाण्डमें पड़ गया । तब यह सोचकर कि मैंने इस घरमें खाया है, सब कुछ वहीं छोड़कर निकल गया । दूसरे दिन उस व्यवहारीकी बहन श्रीदेवीने, रातको गुप्तरूपसे, उसे भाईके समान स्नेह बतलाकर अपने यहाँ बुलाया और पूछा–'मेरे घरमें प्रवेश करके तुमने सब सार ग्रहण करके भी इस तरह क्यों छोड़ दिया ?' उसने कहा–

२०. कोप करनेका निमित्त मिलने पर भी उस मनुष्यके प्रति कैसे पापविचार किया जाय जिसके घरमें उत्पलदल (कमलपत्र) के समान सुकुमार हाथको गीला* बनाया हो ।

उस स्त्रीने भी उसकी बात सुनकर और उसके चरित्रसे चमत्कृत होकर भोजन और वस्त्र आदिसे उसका उपकार किया । वनराजने उसके बदलेमें प्रतिज्ञा की कि–मेरे पट्टाभिषेकके समय तुम्ही बहन होकर टीका देना ।

१७) इसके बाद, एक दूसरे अवसरपर जब वह डकैती करने जा रहा था उस समय [उसके साथी] चोरोंने किसी एक जंगलमें जाम्बा नामक बनियेको जा घेरा । वे चोर जो तीन थे उनको देखकर बनियेने अपने पासके पांच बाणोंमेंसे दोको तोड़ डाले । चोरोंके पूछनेपर बोला कि–तुम तो तीन ही जन हो, इसलिये उससे अधिक दो बाण व्यर्थ हैं । ऐसा कहकर उसने उनके बताए हुए एक चलते लक्ष्यको अपने बाणसे बींध दिखाया । उसके इस लक्ष्यवेधसे सन्तुष्ट होकर, वे उसे अपने साथ ले गये । उसकी ऐसी युद्ध-विद्यासे चकित होकर श्री वनराजने यह आदेश देकर विदा किया कि–मेरे पट्टाभिषेकके समय तुम महामन्त्री होगे ।

---

* हाथ गीला बनानेका तात्पर्य भोजन करनेसे है ।

१८) बादमें कान्यकुब्ज देशसे एक पञ्चकुल (कर वसूल करनेवाला) गुजरात देशका कर उगाहने आया। यह गुजरात देश उस कान्यकुब्ज देशके राजाने अपनी 'महणका' नामक कन्याको दहेजमें दे दिया था। इस पञ्चकुलने उस वनराज नामक पुरुषको अपना सेलभृत् (शस्त्राधिकारी) बनाया। छ महीने तक देशसे कर वसूल कर २४ लाख पारुथक द्रम्म (चाँदीके सिक्के ?) और ४ हज़ार अच्छी नस्लके तेजवान् घोड़े लेकर जब वह पञ्चकुल अपने देशको चला तो वनराजने सौराष्ट्र नामक घाटपर उसे मार डाला और फिर उस राजाके भयसे साल भर तक किसी वनमें जाकर छिपा रहा।

१९) इसके बाद, अपने राज्याभिषेकके लिये राजधानीका नगर बसानेकी इच्छासे एक अच्छी भूमि खोजने लगा। पीपलुला सरोवरके किनारे, अणहिल्ल नामका भारूयाड साखड़का लड़का जो सुखपूर्वक बैठा था, उसने पूछा कि–'तुम यहांपर क्या देख रहे हो ?' उसके प्रधानोंके यह कहनेपर कि नगर बसानेके योग्य अच्छी भूमि देखी जा रही है। वह बोला कि–'यदि उस नगरको मेरे नामपर बसाओ तो मैं वैसी भूमि बताऊँ।' यह कहकर वह जालि वृक्षके पास गया और वहां जितनी भूमिमें खरगोशके द्वारा कुत्ता त्रासित होता रहता था उतनी भूमिको उसने बताया। उसी भूमिमें वनराजने अणहिल्लपुर इस नामसे नया नगर बसाया।

[यहांपर, एक P नामक प्रतिमें अणहिल्लपुरकी प्रशंसा बतलानेवाले निम्नलिखित पद्य लिखे हुए मिलते हैं–]

[६] जो (नगर) हारका अनुकरण करनेवाले प्राकार (खाई) से प्रकाशित हो रहा है, वह ऐसा लग रहा है मानों सत्ययुग वृत्ताकार होकर कलिसे उसकी रक्षा कर रहा है।

[७] जिस नगरमें रातके आरंभमें चन्द्रशाला (ऊपरी तल) में खेलती हुई स्त्रियोंके मुखकी शोभासे आकाश ऐसा जान पड़ता है कि उसमें सैकड़ों चन्द्रमा उदय हुए हैं।

[८–९] जिस नगरीके विजयी गुणके सामने लंकाको शंका हो गई, चम्पा कांपने लगी, विदिशा कृश हो गई, काशीकी सम्पत्ति नष्ट हो गई, मिथिलाका आदर शिथिल हो गया, त्रिपुरीकी शोभा विपरीत हो गई, मथुराकी आकृति मन्थर (सुस्त, फीकी) पड़ गई और धारा भी निराधार हो गई।

[१०] जिस नगरके स्त्रीजन और कौरवेश्वरके सैन्यमें हम कोई अन्तर नहीं देखते क्यों कि दोनों ही 'गांगेय-कर्ण' (स्त्री-पक्षमें सोना है कानमें जिनके; और सेना-पक्षमें भीष्म और कर्ण हैं जिनमें) हैं।

[११] जिसके आगे प्रौढ शोभाशाली अलकापुरीको पुलक नहीं होता (आनंदित नहीं होती), लंका अति शंकाकुला हो उठती है, उज्जयिनीकी भी कभी जीत नहीं होती, चम्पा अति कांपती रहती है, कान्तिपुरी कान्तिविभूषिता नहीं होती, अयोध्या अतियोध्या हो जाती है, ऐसा यह अद्भुत पत्तन (अणहिल्लपुर) नगर है जिसमें लक्ष्मी सदा नाच करती रहती है। इस नगरकी जय हो।

२०) श्रीविक्रमादित्यके संवत् ८०२ आठ सौ दोमें–प्रत्यंतरमें, संवत् ८०२ के वैशाख सुदी दूज, सोमवारको–उस जालि वृक्षके नीचे बड़ा भारी राजप्रासाद बनाकर राज्याभिषेक लग्नके समय श्रीवनराजने काकर ग्रामकी रहनेवाली उस प्रतिपन्न बहन श्रीदेवीको बुलाकर उसके हाथसे तिलक करवाया। उस समय उसकी आयु पचास वर्षकी थी। वह जांबा नामक वणिक महामंत्री बनाया गया। पञ्चासर ग्रामसे श्रीशीलगुणसूरिको भक्तिके साथ ले आकर धवल गृहमें अपने सिंहासनपर बैठाया और कृतज्ञोंमें श्रेष्ठ होनेके कारण समग्र राज्य उन्हें समर्पण किया। उन निःस्पृह सूरिने उसका बार बार निषेध किया। किन्तु उसने

उनके प्रत्युपकारकी बुद्धिसे उन्हींकी आज्ञासे श्री पार्श्वनाथकी प्रतिमासे अलंकृत पञ्चासर नामक चैत्य बनवाया और उसमें देवकी आराधना करती हुई अपनी निजकी मूर्ति भी स्थापित की। धवल गृहमें कण्टेश्वरी देवीका भी मन्दिर बनवाया।

२१. वनराजके समयसे ही गूर्जरोंका यह राज्य जैन मंत्रों द्वारा स्थापित हुआ है इसलिये इसका द्वेषी कभी भी आनंद प्राप्त नहीं कर सकता।

२१) संवत् ८०२ से लेकर ५९ वर्ष २ मास २१ दिन तक श्री वनराजने राज्य किया। श्री वनराज की पूरी आयु १०९ वर्ष २ मास २१ दिन की थी।

संवत् ८६२ की आषाढ सुदी तृतीयाको अश्विनी नक्षत्र और सिंह लग्नके बीतते समय श्री वनराजके पुत्र श्री योगराजका राज्याभिषेक हुआ।

[B. P. प्रतिमें "संवत् ८०२ से लेकर ६० वर्ष तक श्री वनराजने राज्य किया। संवत् ८६२ वर्षमें श्री योगराजका राज्यभिषेक हुआ (P. प्रतिमें श्री योगराजने राज्य अलंकृत किया)," इतना ही पाठ है।]

२२) उस राजा (योगराज) के तीन लड़के हुए। किसी समय क्षेमराज नामक कुमारने राजाको इस प्रकार सूचित किया कि एक अन्य देशीय राजाके प्रवहण (जहाज) बवंडरमें पड़कर तितर बितर हो गये हैं। वे अन्यान्य बंदरगाहोंसे हटकर श्री सोमेश्वर पत्तनमें आ लगे हैं। उनमें १० हजार तेजस्वी घोड़े और १८ सौ (?) हाथी, तथा एक करोड किमतवाली और और चीजे हैं। यह सब संपत्ति हमारे देशसे होकर अपने देशको जायगी। यदि महाराजकी आज्ञा हो तो उसे ले आया जाय। उसके ऐसी विज्ञप्ती करने पर राजाने वैसा करनेका निषेध किया।

उसके बाद जब वह सब स्वदेशकी अन्तिम सीमाके प्रान्तमें पहुँचा, तो वृद्धावस्थाके कारण राजाकी विकलताका विचार कर, तीनों कुमार अपनी सेना सजाकर उसपर टूट पड़े, और अज्ञात चौर वृत्तिसे, उसके पाससे सब कुछ छीनकर अपने पिताके पास ले आये। भीतर-ही-भीतर कुपित किन्तु ऊपरसे मौन धारण किये हुए राजाने उनसे कुछ नहीं कहा। यह सब कुछ राजाको भेंटकर जब पूछा गया कि—क्षेमराज कुमारने यह अच्छा किया या बुरा? तो राजा बोला—यदि कहूं कि अच्छा किया तो दूसरेके धन लूटनेका पाप लगता है और यदि कहूं कि अच्छा नहीं किया तो तुम लोगोंके मनमें बुरा लगता है। इससे यही सिद्ध होता है कि मौन ही रहना अच्छा है। फिर और भी सुनो! तुमारे प्रथम प्रश्नके उत्तरमें, दूसरेके धनके हरण करनेका जो मैंने निषेध किया था उसका कारण यह है कि—और और देशोंमें राजगण, अन्यान्य राजाओंकी जब प्रशंसा करते हैं, तब गूर्जर देशमें चोरोंका राज्य है ऐसा कहकर वे नित्य उपहास किया करते हैं। जब हमारे स्थान पुरुष (प्रतिनिधि) इन बातोंके समाचार हमें देते हैं तो हमें सुनकर दुःख होता है और हमारे पूर्वजोंने कुछ इस तरहकी बातें की थीं, इसकी हमें ग्लानि होती है। पूर्वजोंका यह कलङ्क यदि लोगोंके हृदयसे भूल जाय तो, अन्य सब राजाओंकी पंक्तिमें हम भी राज शब्दका सम्मान पावें। किंचित् धन लोभसे लुब्ध होकर तुम लोगोंने पूर्वजोंके इस कलंकको मांज-मूंजकर फिरसे ताजा बना दिया। इसके बाद राजाने शस्त्रागारसे अपना धनुष्य मँगाकर यह आज्ञा दी कि तुम लोगोंमेंसे जो बलवान् हों वह इस धनुष्यको चढ़ावे। यथाक्रम सभी ऊठे पर जब कोई न चढ़ा सका तो राजाने खेलकी भांति उसे चढा दिया; और कहा—

२२. राजाकी आज्ञाका भंग करना, नौकरोंका वेतन काट लेना और स्त्रियोंको अलग शय्या देना—बिना शस्त्र ही से हत्या करना कहलाता है।

इस प्रकार नीतिशास्त्रके उपदेशानुसार, मेरी आज्ञा भंग करके विना शस्त्रके वध करनेवाले तुम पुत्रोंको मैं क्या दंड दूं! इसके बाद राजाने आयुके १२० वें वर्षमें प्रायोपवेशन (अन्न जलका त्याग) कर चितामें प्रवेश किया। इस राजाने भट्टारिका श्री योगीश्वरीका मन्दिर बनाया।

२३) इस [योगराज नामक] राजाने ३५ वर्ष राज्य किया।

सं० ८९७ से लेकर २५ वर्ष श्री क्षेमराजने राज्य किया।

सं० ९२२ से लेकर २९ वर्ष तक श्री भूयडने राज्य किया। इसने श्री पत्तन नगरमें भूयडेश्वरका मन्दिर बनवाया।

सं० ९५१ से लेकर २५ वर्ष तक श्री वैरसिंहने राज्य किया।

सं० ९७६ से लेकर १५ वर्ष तक श्री रत्नादित्यने राज्य किया।

सं० ९९१ से लेकर ७ वर्ष तक श्री सामन्तसिंहने राज्य किया।

इस प्रकार चापोत्कट वंशमें सात राजा हुए। विक्रमादित्य संवत् ९९८ वर्ष तक [इस वंशका राज्य रहा।]

[A प्रति और उसके साथ प्रायः मिलती हुई D प्रतिमें यह राजावली निम्नलिखित रूपसे मिलती है।]

सं० *८...(?) श्रावण सुदी ४ से १० वर्ष १ मास १ दिन श्री योगराजने राज्य किया।

सं० ८....श्रावण सुदी ५ उत्तराषाढा नक्षत्र और धनुष लग्नमें रत्नादित्यका राज्याभिषेक हुआ।

सं० ८....कार्तिक सुदी ९ से लेकर ३ वर्ष ३ मास ४ दिनतक इस राजाने राज्य किया।

सं० ८....कार्तिक सुदी ९ रविवारको मघा नक्षत्र और वृषलग्नमें श्री वैरसिंह राज्यपर बैठा।

सं० ८....ज्येष्ठ सुदी १० शुक्रवारसे लेकर ११ वर्ष ७ मास २ दिनतक इस राजाने राज्य किया।

सं० ८....ज्येष्ठ सुदी ११ को हस्त नक्षत्र और सिंह लग्नमें श्री क्षेमराजदेवका राज्याभिषेक हुआ।

सं० ९३....भादों सुदी १५ रविवारको, इस राजाको राज्य करते, ३८ वर्ष ३ महीना १० दिन व्यतीत हुए थे।

सं० ९३५ वर्षमें आश्विन सुदी १ सोमवारको रोहिणी नक्षत्र और कुम्भ लग्नमें श्री चामुण्डराजदेवका पट्टाभिषेक हुआ।

सं० ९....माघ वदी ३ सोमवारसे लेकर १३ वर्ष ४ मास १७ दिनतक इस राजाने राज्य किया।

सं० ९३८ (?) माघ वदी ४ मंगलवारको स्वाती नक्षत्र और सिंह लग्नमें श्री आगडदेव राज्यपर बैठा। इसने कर्करापुरीमें आगडेश्वर और कण्टकेश्वरीके मंदिर बनवाये।

सं० ९६५ पौष सुदी ९ बुधवारसे लेकर २६ वर्ष १ मास २० दिनतक इसने राज्य किया।

सं० ९....पौष सुदी १० गुरुवारको आर्द्रा नक्षत्र और कुम्भ लग्नमें भूयगडदेव राज्यपर बैठा। इस राजाने भूयगडेश्वरका मंदिर और श्री पत्तनमें प्रकार बनवाया।

सं० ९....वर्षसे आषाढ सुदी १५ से लेकर २७ वर्ष ६ महिने ५ दिनतक इसने राज्य किया।

इस प्रकार चापोत्कट वंशमें ८ पुरुष हुए। १९० वर्ष, २ मास, सात दिनतक इस वंशके राजाओंने राज्य किया।]

---

* जिन प्रतियोंमें यह पाठ मिलता है उनमें इन संवत् सूचक अंकोंके विषयमें बड़ी गड़बड़ी है। कहीं कोई अंक लिखा हुआ मिलता है और कहीं कोई। पंक्तियोंमें जो वर्ष मास आदि दिये गये हैं उनका इन अंकोंके साथ कोई मेल नहीं मिलता। इसलिये हमने इन अंकोंके स्थान शून्य दी रखे हैं। आगेके भागमें जो ऐतिहासिक विवेचन किया गया है उससे इन अंकोंकी निरर्थकता मालूम हो जायगी।

चौलुक्यवंशका प्रारंभ।

२३. हाथी (मातङ्ग होनेके कारण) सेवाके योग्य नहीं रहे, पहाड़ोंके पर गिर गये, कच्छप जड़ प्रीतिवाला है, शेषनागको दो जीभें हैं, इसलिये पृथ्वीको कौन धारण करने योग्य है–इस तरह चिन्ता करनेवाले विधाताकी सायंकालीन संध्याके चुल्लूसे कोई तलवारधारी वह सुभट उत्पन्न हुआ[1]

[जिससे चौलुक्यवंशका प्रारंभ हुआ।]

[यह पद्य श्लेषार्थात्मक है और उस अर्थ ही में इसका कवित्व है। एक समय ब्रह्मदेव सन्ध्या-कृत्य कर रहे थे उस समय पृथ्वीकी दशाका उन्हें विचार आया। पृथ्वीको धारण करने योग्य कौन कौन पदार्थ है इसका, विचार करते हुए उनके मनमें दिग्गजोंका खयाल आया–लेकिन वे असेव्य मालूम दिये क्यों कि वे मातंग कहलाते हैं। (संस्कृत भाषामें मातंग शब्दके दो अर्थ है–१ हाथी, और २ चंडाल)। फिर उन्हें कुलाचल पर्वतोंका खयाल आया, लेकिन वे पक्ष विहीन मालूम दिये। (पुराणोंमें पर्वतोंके पक्ष यानि पर इन्द्रने काट डाले ऐसी कथा प्रचलित है।) संस्कृतमें पक्ष शब्दका अर्थ पाख भी होता है। फिर ब्रह्माका खयाल कूर्म यानि कच्छपकी ओर गया, लेकिन वह जडप्रीतिवाला मालूम दिया। जो जडके साथ प्रीति रखता हो वह पृथ्वीको धारण करने जैसा महान् कार्य करने योग्य कैसे हो सकता है! (संस्कृतमें जड यानि मूर्ख और जल=पानी ऐसे दो अर्थ इसके होते हैं। कच्छपकी प्रीति जल यानि पानीके साथ होती ही है। इसके बाद ब्रह्माका ध्यान फणिपति=शेषनागकी तरफ गया–लेकिन वह उन्हें दो-जीभा मालूम दिया। सर्पके दो जीभें होती ही हैं। (संस्कृतमें द्विजिह्व=दो-जीभेका अर्थ चुगलखोर ऐसा निन्दात्मक भी होता है।) इसलिये जो दो-जीभा हो वह पृथ्वीका भार उठाने लायक नहीं हो सकता। इस प्रकार ब्रह्मा इनकी अयोग्यताका खयाल कर चिन्तामग्न हो रहे थे और चुल्लूमें पानी भरकर संध्याञ्जलि देनेका विचार कर रहे थे, उतनेमें उस चुल्लूमेंसे, हाथमें तलवार धारण किये हुए एक सुभट बाहर निकला और ब्रह्मदेवने उसे ही पृथ्वीका भार वहन करनेमें समर्थ और योग्य समझ कर उसे पृथ्वीका शासक नियत किया। उसकी जो संतान हुई वह चौलुक्यवंशके नामसे प्रसिद्ध हुई।]

---

५. मूलराजका प्रबंध।

२४) पूर्वोक्त श्री भूयराजके वंशज मुंजालदेवके तीन पुत्र हुए जिनका नाम राज, बीज और दण्डक था। ये तीनों भाई तीर्थयात्राके लिये निकले। श्री सोमेश्वरको नमस्कार करके वहांसे लौटते हुए अणहिल्लपुरमें आए। यहां पर वे सामन्तसिंह राजाकी घुड़दौड़ देख रहे थे। राजाने विना ही कारण घोड़ेको कोड़ा मारा जिसे देखकर, राज नामक क्षत्रियने, जो कार्पटिक (कापड़िये) का वेश धारण किये हुए था, पीड़ित होकर अपना सिर हिलाते हुए, आह! आह! ऐसा शब्द कहा। राजाके उसका कारण पूछने पर उसने कहा कि, घोड़ेकी यह अत्युत्तम विशेष चाल जो न्युंछन करने योग्य है, उसको न समझकर आपने जो कोड़ा मारा वह मुझे जैसे अपने ही मर्मपर लगा अनुभूत हुआ। उसकी इस बातसे चकित होकर राजाने वह घोड़ा उसीको चढ़नेके लिये दिया। घोड़ा और घुड़सवार दोनोंका सदृश योग देखकर उसने पद पद पर उनका न्युंछन किया, और उसके इस आचरणसे किसी महत् कुलवाला उसे समझकर, अपनी लीलादेवी नामक बहनका उसके साथ व्याह कर दिया। कुछ समय बाद जब वह गर्भवती हुई तो अकालमें ही उसकी मृत्यु हो गई। मंत्रियोंने, गर्भस्थ सन्तानका मरण न हो जाय इस विचारसे उसका पेट चीरकर सन्तानका उद्धार किया। मूल नक्षत्रमें जन्म होनेके कारण उसका नाम मूलराज रखा गया। उदय-कालीन सूर्यकी भाँति जन्मसे ही तेजोमय होनेके कारण वह सबका आदरपात्र हो गया। अपने पराक्रमसे वह मामाके राज्यको बढ़ाता रहा। सामंतसिंह मदमत्त होकर उसको कभी राज्यासनपर बिठा देता था और फिर

---

१ यह पद्य चौलुक्य वंशकी आद्य उत्पत्तिका सूचक है। किसी कोई शिलालेखमेंसे यह लिया गया मालूम देता है। ब्रह्माके चुल्लूमेंसे इस वंशका मूल पुरुष पैदा हुआ और इसी लिये इस वंशका नाम चौलुक्य हुआ, यह पीछेके भाट लोगोंकी कल्पना है और इसका कोई ऐतिहासिक महत्त्व नहीं है यह आगेके भागमें स्पष्ट हो जायगा।

होशमें आकर उठा देता था। तभीसे चा पो त्क टों का दान उपहासके रूपमें मशहूर हुआ[1]। वह इस प्रकार बार बार चिढ़ाया जानेपर एक दिन उसने अपने नौकरोंको तैयार किया और जब मामाने बेहोशीमें राज्यासनपर बिठाया तो उसे मारकर सचमुच ही वह राजा बन गया।

२५) सं० ९९३ के आषाढ़ सुदी १५ बृहस्पति वारको, अश्विनी नक्षत्र और सिंह लग्नमें, जन्मसे इकीसवें वर्षमें मू ल रा ज का राज्याभिषेक हुआ।

[B. P. आदर्शमें 'सं० ९९८ में श्री मू ल रा ज का राज्याभिषेक हुआ' ऐसा पाठ मिलता है।]

२४. [2]शास्त्रमें तो सुना जाता है कि मूलार्क (मूल नक्षत्रका सूर्य) सब प्रकारका कल्याण करता है। लेकिन आश्चर्य है कि वर्तमानमें तो मूलराज ही ने ऐसा योग कर दिया है।

[१२] *उस विभुने स्वप्नमें आकर कहा कि चा पो त्क ट वंशके राजा है ह य भूपतिके वंशमें वंशोज्ज्वला कन्या है। अगर तुमको यह दान की जाय तो निःशंक भावसे उसके साथ विवाह कर लेना क्यों कि यह मृगाक्षी अपने उदरमें सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजाको धारण करेगी।

[१३] श्री गु र्ज र म ण्ड ल में उसकी कुक्षिसे श्री रा जि रा ज का पुत्र राजा श्री मू ल रा ज पैदा हुआ। अपने अद्भुत महाप्रभावसे, जब वह दिग्विजयके लिये उद्यम करता था तो उस समय केवल पृथ्वी ही नहीं काँप उठती थी परंतु उसके साथ उसके स्वामी राजाओंके दिल भी काँप उठते थे।

[श्रीसौराष्ट्र मण्डलमें श्री सा....सिंहके साथ युद्ध हुआ यह प्रबंध प्रसिद्ध है×।]

[१४] जिसने अपने शत्रुओंको जीत लिया ऐसे उस राजाको गू र्ज रे श्व रों की राज्यश्री, उसके गुणोंसे आवर्जित होकर बाणरिपु (विष्णु) को लक्ष्मीकी तरह, स्वयं वरनेको आई।

[१५] उस महा इच्छावाले राजाने क च्छ के राजा ल क्ष को, शत्रुको बुरी तरह घायल करनेवाले अपने बाणोंका लक्ष्य बनाया।

[१६] उस असामान्य पराक्रमीने ला टे श्व र के दुर्वारणीय सेनानायक बा ण (र?) प को मारकर हाथियोंको ग्रहण किया था।

---

१ गुजरातमें, उस जमानेमें शायद यह एक लोकोक्ति प्रचलित थी कि—'य ह तो चा उ डों का दा न है'। किया हुआ दान मिलेगा या नहीं और मिलनेपर भी वह स्थिर रूपसे रहेगा या नहीं—ऐसा जिस दान पर विश्वास नहीं किया जाता उसे लोग चाउडोंका दान कहकर उसका उपहास किया करते थे।

२ मू ल रा ज शब्द पर यह श्लेष है। इसका दूसरा अर्थ मूलराज यानि मू ल च न्द्र यह निकाला गया। राज शब्द चद्रमाका भी वाचक है। ज्योतिष शास्त्रके विधानानुसार सूर्य जब मूल नक्षत्रमें आता है तब वह मू ला र्क योग कहलाता है। यह योग अनेक तरहके शुभ कल्याणोंका करनेवाला माना जाता है। लेकिन यह राजा तो मूलार्क नहीं है मूलराज (=मूलचंद्र) है, तो भी इसने अपने उदयकालमें वैसे ही अनेक कल्याणकारक योग कर बतलाए हैं, इसलिये यह खास आश्चर्यकी बात है।

* १२ और १३ अंक वाले ये दोनों पद्य किसी पुरानी प्रशस्तिमेंसे उद्धृत किये गये मालूम देते हैं। पहले पद्यमें यह बतलाया गया है कि—शायद शंभु या अन्य किसी देवने मू ल रा ज के पिता रा जि रा ज को स्वप्नमें आकर यह कहा कि—चा पो त्क ट वं श का राजा, जो है ह य वं श का है, उसकी गुणवती कन्यासे विवाह करनेके लिये तुमसे कहा जाय तो उसे निःशंक होकर ब्याह लेना। क्यों कि उसकी कोखमें ऐसा गर्भ उत्पन्न होगा जो सार्वभौम राजा बनेगा। यह पद्य ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्वका है। इसमें चापोत्कट वंशको है ह य वं श कहा है। चावडाओंके मूल वंशका विचार करनेके लिये यह एक नया उल्लेख है। विशेष विचारके लिये अगला विवेचनात्मक भाग देखना चाहिए।

× यह पंक्ति, मूल प्रतिमें अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसका स्पष्ट कथन क्या है सो ज्ञात नहीं होता। सौराष्ट्रके किसी राजाके साथ मूलराजके युद्ध होनेका इसमें उल्लेख किया गया मालूम देता है। यह पंक्ति दूसरी दूसरी प्रतियोंमें नहीं मिलती।

[१७] जिसने दानसे दारिद्र्यको नष्ट किया, शौर्यसे दुर्जनोंका दमन किया और कीर्तिसे रामचंद्रको भी म्लानकर दिया ऐसे उस राजाने चिरकाल तक राज्यका उपभोग किया।

इत्यादि स्तुतियों द्वारा पंडित लोगोंसे प्रशंसित होता हुआ वह इस प्रकार साम्राज्य कर रहा था, तब किसी अवसरपर सपादलक्ष देशका राजा, मूलराज पर चढ़ाई करनेके लिये गूर्जर देशकी सीमापर आया। दूसरी ओर, उसी समय तिलंगदेशके राजाका बारप नामक सेनापति भी चढ़ आया। इन दोनोंमेंसे किसी एकके साथ जब युद्ध शुरू होगा, तब दूसरी ओरसे दूसरा शत्रु आक्रमण कर बैठेगा; ऐसी परिस्थितिमें क्या करना चाहिए इसका विचार मूलराज अपने मंत्रियोंके साथ करने लगा, तो उन्होंने कहा कि कुछ समय कन्यादुर्गमें बैठकर व्यतीत कर देना अच्छा है; और जब नवरात्र आनेपर सपादलक्षका राजा अपनी कुलदेवीकी आराधनाके लिये चला जाय, तब अवसर पाकर बारप नामक सेनापतिको जीत लिया जाय। और इसके बाद वापस आनेवाले सपादलक्षके राजाका भी पराजय किया जाय। उनके इस प्रकारके विचार सुनकर राजा बोला कि ऐसा करनेपर क्या लोगोंमें मेरे भाग निकलनेकी निंदा न होगी ?। इसपर वे मंत्री बोले—

२५. [परस्परके द्वन्द्व-युद्धमें] भेड़ा जो पीछे हटता है वह प्रहार करनेके लिये है, और सिंह भी आक्रमण करते समय क्रोधसे संकुचित होता है। हृदयमें वैरभावको भर रखनेवाले और गूढ़ यंत्र चलानेवाले बुद्धिमान लोग किसी अवगणनाकी परवा न करके [सब कुछ] सह लेते हैं।

इस प्रकार उनकी बात सुनकर मूलराजने कन्यादुर्गमें जाकर आश्रय लिया। इधर सपादलक्षके राजाने गूर्जर देशमें ही सारा वर्षाकाल बिताया और जब नवरात्रके दिन आए तो उस रणभूमिमें ही शाकम्भरी नगरकी स्थापना कर गोत्रदेवी भी वहीं मँगा ली और वहीं नवरात्रकी पूजाका समारम्भ किया। मूलराजने यह हाल सुनकर मंत्रियोंके बतलाए हुए उपायको निरर्थक समझा। उसको तत्काल एक मति सूझ आई। राजकीय भेट-सौगाद भेजनेके बहाने उसने अपने सब आसपासके सामंतोंको बुलवा भेजा और फिर जासूसी काम करनेवाले अधिकारियोंके पाससे सभी राजपूतों और सैनिकोंको, वंश और चरित्रसे, पहचान कर उन्हें यथोचित दान आदिसे सम्मानित किया और समयका संकेत बताकर उन सबको सपादलक्ष देशके राजाके शिबिरके आसपास तैनात कर दिया। निश्चित दिनपर स्वयं, अपनी प्रधान साँढनीपर बैठकर उसके पालकके साथ बहुत सी भूमि पार करके, प्रातःकाल जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सके उस तरह, सपादलक्ष नृपतिकी छावणीमें जा पहुँचा। सांढनी परसे उतरकर हाथमें तलवार लेकर मूलराजने अकेले ही वहाँ पहुँचकर द्वारपालसे कहा—इस समय राजा किस काममें होते हैं ?। जाकर अपने स्वामीको कहो कि मूलराज राजद्वारमें प्रवेश कर रहा है। यह कहता हुआ [द्वारपालने कुछ आनाकानी की तो] अपने भुजदण्डके बलसे उसे द्वारपरसे हटा दिया। फिर जब वह 'यह श्रीमूलराज द्वारमें प्रवेश कर रहे हैं'—इस प्रकार पुकार ही रहा था कि उतनेमें तो वह, उस राजाके तंबूके भीतर प्रवेश करके, राजाके पलंग पर ही स्वयं जा बैठा। यह देखकर क्षणभर तो वह राजा भयभीत होकर मौन ही रहा। फिर कुछ भय दूर करके उसने पूछा कि—'क्या आप ही श्रीमूलराज हैं ?'। मूलराजके मुँहसे 'हाँ' यह शब्द सुन कर जितनेमें वह कुछ समयोचित बोलना चाहता था, उतनेमें तो पूर्व संकेतित चार हजार सैनिकोंने उस राजाके बडे डेरे (तंबू) को चारों ओरसे घेर लिया। इसके बाद मूलराजने उस राजासे इस प्रकार कहा—इस भूमण्डलमें, ऐसा कोई युद्धवीर राजा, जो मेरे सामने लड़ाईमें टिक सके, है या नहीं—इसका मैं सोच किया करता था और कोई वैसा वीर निकल आवे उसके लिये मैं सैंकड़ों मिन्नते मनाता था। भाग्ययोगसे आप

उपस्थित हुए हैं। किन्तु भोजनके समय मक्खी पड़ जानेके समान, इस तिलङ्ग देशके तैलिप नामक राजाके सेनापतिको, जो मुझे जीतनेके लिये आया है, जब तक शिक्षा न दे दूं तब तक आप पीछेसे हमला इत्यादि न करके रुक जाइये, यही अनुरोध करने मैं आपके पास आया हूं। मूलराजने जब ऐसा कहा तो उस राजाने इस प्रकार कहा—राजा होकर भी अपने प्राणोंकी परवा न करके, सामान्य सैनिककी भाँति अकेले ही इस प्रकार शत्रुगृहमें प्रवेश करके चले आये इसलिये [मैं तुम्हारे साहससे मुग्ध हूँ और] जब तक जीऊंगा तब तक तुम्हारे साथ हमारी सन्धि बनी रहेगी। उस राजाके ऐसा कहने पर 'ऐसा मत कहो, ऐसा मत कहो' इस प्रकार निवारण करता हुआ, उसके द्वारा भोजनार्थ निमंत्रित होनेपर, अवज्ञापूर्वक अस्वीकार करके, वह हाथमें तलवार लेकर उठ चला और उसी सांढनीपर सवार होकर, अपनी उस सेनासे परिवृत होकर उस बारप सेनापतिकी सेनापर टूट पड़ा। उसे मारकर उसके दस हज़ार घोड़े और १८ सौ हाथी छीन कर, जितनेमें पड़ाव डालनेकी तैयारी कर रहा था, उतनेमें तो अपने गुप्तचरोंसे यह सब हाल सुनकर वह सपादलक्षका राजा वहाँसे भाग निकला।

२६) उस राजाने पत्तनमें श्रीमूलराज वसहिका [नामक जैन मन्दिर] और श्रीमुञ्जालदेव स्वामी (शिव) का प्रासाद बनवाया। वह प्रति सोमवारको शिवकी भक्ति करनेके निमित्त सोमेश्वर पत्तन (सोमनाथ पाटन) की यात्राको जाता था। उसकी इस प्रकारकी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर सोमनाथ उपदेश देकर मण्डली नगरीमें आये। उस राजाने वहाँ 'मूलेश्वर' नामका मन्दिर बनवाया। नमस्कार करनेकी इच्छासे हर्षित होकर वहाँपर नित्य आनेवाले उस राजाकी, उस प्रकारकी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर, सोमनाथने यह कहा कि—मैं समुद्रके साथ तुम्हारे नगरमें अवतीर्ण हूँगा। यह कहकर सोमेश्वर अणहिल्लपुरमें अवतीर्ण हुए। आये हुए समुद्रकी सूचना मिले इसलिये नगरके सभी जलाशयोंका पानी खारा होगया। उस राजाने वहाँपर त्रिपुरुषप्रासाद नामक शिवका मन्दिर बनवाया।

२७) इसके बाद, वह उस प्रासादके प्रबंधक होने योग्य किसी उचित तपस्वीकी खोज करते हुए उसने एक कान्थडी नामक तपस्वीका नाम सुना, जो सरस्वती नदीके किनारे, एकान्तर दिनको उपवास किया करता था और पारणाके दिन अनिर्दिष्ट भिक्षाके पाँच ग्रासका आहार किया करता था। जब राजा इसकी वन्दना करने गया, तो उस समय उसे तीन दिनका ज्वर था। उसने अपने ज्वरको कंथामें संक्रामित कर दिया। राजाने उसे देखकर पूछा कि—यह कन्था (गुदड़ी) काँप क्यों रही है ?। राजाके साथ बात करनेमें असमर्थ होनेके कारण मैंने ज्वरको उसमें संक्रामित किया है—ऐसा कहनेपर, राजा बोला—यदि इतनी शक्ति है तो फिर ज्वरको सर्वथा दूर क्यों नहीं कर देते ?। राजाके यों कहनेपर उसने—

२६. पूर्वजन्मके सञ्चित हमारे जो कोई भी रोग हों वे अब उपस्थित हों। मैं उनसे अनृण होकर शिवके उस परम पदको प्राप्त होना चाहता हूँ।

शिवपुराणके इस वचनको कह कर बताया कि—'कर्म भोगे विना क्षय नहीं होते' यह जानते हुए मैं इसे कैसे दूर कर सकूँ ?। राजाने फिर त्रिपुरुषधर्मस्थानकके प्रबंधक होनेके लिये उससे प्रार्थना की।

२७. अधिकार मिलनेसे तीन महीनोंमें, और मठका महन्त बननेसे तीन दिनोंमें [नरक प्राप्त होता है]; और अगर शीघ्र ही नरकप्राप्तिकी इच्छा हो तो एक दिन पुरोहित बन जाओ।

इस स्मृति-वाक्यके तत्त्वको जानते हुए, तपरूपी नौकासे संसार सागरको पार करके मैं फिर इस गोष्पदमें कैसे डूबना चाहूं। इस वाक्यसे निषिद्ध होकर राजाने [और कोई उपाय न सोच कर] ताम्र-शासनको

मण्डक (परोंठे) में वेष्टित करके भिक्षाके लिये आये हुए उस तपस्वीके पत्रपुटमें छोड़ दिया। वह उसे न जानता हुआ लेकर वहाँसे लौट गया। यद्यपि सरस्वती नदीने पहले तो उसे मार्ग दे दिया था, पर इस वार बढ़ जानेसे जब उसे मार्ग नहीं मिला, तो वह जन्मकालसे लेकर अपने दोषोंका विचार करने लगा। तात्कालिक भिक्षा संबंधी दोषको जाननेके लिये जब उसे देखता है, तो उसमें उस राजाका दिया हुआ ताम्र-शासन मालूम दिया। इससे तपस्वीको क्रुद्ध जानकर, राजा वहाँ आया और उसकी सान्त्वनाके लिये वह जब अनुनय विनय करने लगा, तो उसने यह कह कर कि–मैंने स्वयं जो दाहिने हाथसे दान ग्रहण किया है वह अन्यथा कैसे होगा; अपने शिष्य वयजल्लदेवको राजाको सौंपा। उस वयजल्लदेवने कहा कि–शरीरमें उबटनके लिये हमको प्रतिदिन आठ पल उत्तम जातिका चंदन, चार पल कस्तूरी, एक पल कपूर तथा बत्तीस वारांगनाएँ, और जागीरके साथ श्वेत छत्र प्रदान करो; तो मैं प्रबंधकका पद स्वीकार करूँगा। राजाने सब देनेका स्वीकार कर, त्रिपुरुषधर्मस्थानमें उसे 'तपस्वियोंका राजा' के पदपर अभिषिक्त किया। वह 'कंकूलोल' इस नामसे प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकारके भोगोंको भोगते हुए भी वह अकुटिल भावसे ब्रह्मचर्य व्रतमें निरत रहा। एक बार रातको मूलराजकी रानी उसकी परीक्षा लेने लगी तो उसे पानका बीडा मार कर कुष्टिनी बना दिया और फिर अनुनीत होकर उसे अपने उबटनके लेपसे और स्नानके मैले जलसे स्नान करवा कर नीरोग किया।

यहांपर लाखाककी उत्पत्ति और विपत्तिका प्रबंध भी दिया जाता है–

२८) प्राचीन कालमें, किसी परमार वंशमें, राजा कीर्तिराज देवकी कामलता नामकी लड़की थी। वह बाल्यकालमें, सखियोंके साथ, किसी महलके आंगनमें खेल रही थी। सखियोंने कहा कि अपना अपना वर वरण करो। घोर अन्धकारमें उस कामलताकी आँखोंका मार्ग बंद हो जानेसे, उसने फूलड नामक पशुपालको, जो उस महलके एक खंभेकी ओटमें खड़ा हुआ था और जिसे यह कुछ भी वृत्तान्त मालूम नहीं था, वरण कर लिया। इसके अनन्तर, कुछ वर्षोंके बाद, जब किसी अच्छे वरोंकी खोज उसके लिये की जाने लगी, तो पतिव्रता-व्रतके निर्वाहके विचारसे, उसने अपने माता पितासे अनुज्ञा लेकर उसी (पशुपाल)से विवाह किया। उन दोनोंका पुत्र लाखाक हुआ। वह कच्छदेशका राजा बना। यशोराजको उसने [अपने पराक्रमसे] खुश किया था और उसकी बड़ी कृपासे वह सबसे अजेय हो गया था। उसने ग्यारह वार मूलराजकी सेनाको त्रासित किया था। एक वार, जब कि वह लाखा, कपिलकोटके किलेमें रहा हुआ था उसी समय, राजा (मूलराज) ने स्वयं जाकर उसे घेर लिया। वह लक्ष (लाखाक) अपने माहेच नामक एक परम साहसी सुभटके आनेकी प्रतीक्षा करने लगा–जिसको कि उसने कहीं धाड पाड़नेके लिये भेजा था। यह बात जानकर मूलराजने उसके आगमनके मार्ग घेर लिये। कार्य समाप्त करके आते हुए उस भृत्यसे राजपुरुषोंने कहा 'हथियार रख दो !'। अपने स्वामीके कार्यकी सिद्धिके लिये उसने वैसा ही करके युद्धके लिये प्रस्तुत लाखाकके पास आकर प्रणाम किया। इसके बाद संग्रामके अवसरपर–

२८. 'ऊगे हुए सूर्यने जो प्रताप नहीं बताया तो हे लाखा! वह दिन निकृष्ट कहा जाता है। गिनती करनेसे तो आठ कि दस दिन मिल सकते हैं।

१ इस वचनका भावार्थ यह मालूम देता है कि सूर्यका उदय होनेपर भी यदि जिस दिन उसका तेज नहीं दिखाई देता–अर्थात् कुहासा छाया रहता है तो लोक उस दिनको निकृष्ट=दुर्दिन मानते हैं। वीर पुरुष या तेजस्वी पुरुष उत्पन्न होकर भी यदि अपना कोई तेज नहीं बतलावे तो उसका उत्पन्न होना निरर्थक ही समझा जाता है।

२ इस दूसरे वचनका भावार्थ यह ज्ञात होता है कि–वीर पुरुषको समय प्राप्त होनेपर शीघ्र ही अपना पराक्रम बतलानेके लिये उद्यत हो जाना चाहिए। दिनोंकी गिनती करते रहनेसे तो कुछ लाभ नहीं होता।

इत्यादि प्रकारके बहुतसे बोध-वाक्य उस भृत्यके सुनकर और उसकी उत्कट[1] वीरता देखकर लक्षका साहस खूब बढ़ा और उसने मूलराजके साथ बराबर तीन दिन तक द्वन्द्व-युद्ध किया। मूलराजने उसकी अजेयता देखकर चौथे दिन सोमेश्वरका स्मरण किया। रुद्रकी कला जब उसके अन्दर अवतीर्ण हुई, तो [उसके प्रभावसे] उसने लाखाको मार डाला। बादमें लाखाकी देह जब पृथ्वीपर गिरी हुई पड़ी थी तब हवाके संचारसे उसकी हिलती हुई दाढ़ीको मूलराजने पैरसे छुआ। इसपर लक्ष की माताने कुपित होकर यह शाप दिया कि तुम्हारा वंश लूति (कुष्ठ) रोगसे मरा करेगा।

२९. मूलराजने अपने प्रतापाग्निमें लक्षको होम करके उसकी स्त्रियोंके आँसूओंकी धाराको उन्मुक्त किया।

३०. सहसा ऊंचे जालमें आये हुए लक्षरूपी कच्छप (कछुआ और कच्छका राजा) को मारकर जिसने संग्रामरूपी सागरमें अपनी धी-वरताका परिचय दिया +।

३१. हे मूलराज! दानरूपी लता, बलिके समयमें पृथ्वीमें पैदा हुई, दधीचिके समय उसकी जड़ जमी, रामके होनेपर उसमें अंकुर उगे, कर्णके समय उसमें डाल और टहनियां निकलीं, नागार्जुनके समय कलियाँ प्रकट हुईं, विक्रमादित्यके समय फूली और तुम्हारे समयमें आमूल फलवती हुई।

३२. तुम्हारे शत्रुओंके [सूने] महल, जो वर्षाकालमें, बादलोंके पानीसे स्नान करते हैं, उनके ऊपर जो तृण उग आये हैं उसके बहाने मानों वे कुश लिये हुए हैं, नालोंके पानीसे मानों श्राद्धकी अञ्जलि दे रहे हैं, और दीवालके ढोंकोंके गिरनेके मिससे पिण्डदान करते हैं; इस प्रकार अपने स्वामीके प्रेतके लिये वे प्रतिदिन श्राद्ध कर रहे हैं।

—इस प्रकार लाखा फूलाणीकी उत्पत्ति और विपत्ति का यह प्रबंध है ॥ ११ ॥

२९) इस प्रकार उस राजाने पचपन वर्ष तक निष्कण्टक राज्य किया। एक बार सायंकालकी आरतीके अनन्तर राजाने एक दासको इनाममें पानका बीड़ा दिया। उसने हाथमें लेकर देखा तो उसमें कृमि दिखाई दिये। राजाके आग्रह पूर्वक पूछनेपर उसने यह बात कही। इससे राजाको वैराग्य आया और उसने संन्यास ग्रहण किया और दाहिने पैरके अंगूठेमें अग्नि प्रज्वलित कर, आठ दिनतक गज दान इत्यादि महादान देता रहा।

३३. एकमात्र विनय भावके वशीभूत होकर उसने पैरमें लगी हुई उद्धूमकेश अग्निको सहन किया। अन्य प्रतापियोंकी तो बात ही क्या है, उसने सूर्यके मण्डलको भी भेद दिया।

इस प्रकारकी स्तुतियोंसे स्तुत होते हुए उसने स्वर्गारोहण किया।

सं० ९९८ से लेकर ५५ वर्ष श्री मूलराजने राज्य किया।

॥ श्रीमूलराज प्रबंध समाप्त ॥

---

१ यह श्लोक श्लेषार्थवाला है—लक्षहोम के दो अर्थ होते हैं—लक्ष=लाखा राजाका होम, और लक्ष=एक लाख बार होम। आकाशमें बादलोंकी वृष्टिका किसी कारणसे जब रुकाव हो जाता है तो उसके प्रतिकारके लिये एक लाख आहुतियों वाला होम करनेका वैदिक शास्त्रोंमें विधान है। इधर, लाखाकी रानियां, जो कभी रुदन नहीं करती थीं, उनके आंसूरूपी वृष्टिका प्रवाह चालू करनेके लिये, मूलराजने अपने प्रतापरूपी अग्निमें लाखाको होम दिया—भस्म कर दिया।

+ इस श्लोकमें 'कच्छपलक्ष' और 'धीवरता' शब्द पर श्लेष है। मूलराजने कच्छप=कच्छपति लक्षराजको मारकर अपनी धीवरता=श्रेष्ठ बुद्धिमत्ताका परिचय दिया। दूसरा अर्थ कच्छपलक्ष यानि एक लाख कछुए, और उस अर्थमें धीवरका अर्थ मच्छीमार ऐसा किया गया है।

मूलराजके वंशज।

[१८] अपने सारे शत्रुओंको समाप्त करके जब वह–(मूलराज)–कथाशेष होगया (मृत्युको प्राप्त हुआ) तो उसके बाद पृथ्वीमण्डलका आभूषण ऐसा चामुण्डराज राजा हुआ।

[१९] उसकी सेनाका साज, शत्रुओंकी स्त्रियोंके मनको संतप्त होनेकी विद्या सिखानेमें निपुण पण्डित था और उसके सैन्यने इन्द्रको भी भयभीत कर दिया था।

[२०] उसके हाथरूपी कमलमें रहनेवाली, कोश (१ म्यान; २ कमल) में विलास करनेसे चमकती हुई तलवार रूपी भौंरोंकी श्रेणीने राजाओंके वंशोंको भिन्न कर दिया।

३०) संवत् १०५३ से लेकर १३ वर्षतक चामुण्डराजने राज्य किया।

[२१] जिसकी कीर्ति तीनों लोकोंमें प्रकाशित हो रही है, और जो महीपतियोंमें श्रेष्ठ माना जाता है ऐसा वल्लभराज नामक उसका पुत्र राजा हुआ।

[२२] वह दृढ पौरुषवाला राजा शत्रुओंकी नगरियोंको घेरे रहता था इसलिये विशेषज्ञोंने उसका नाम 'जगत्-झम्पन' रक्खा था।

३१) सं० १०६६ से लेकर ६ महीने तक राजा वल्लभराजने राज्य किया।

[२३] जिसमें रजोगुण और तमोगुणका अभाव था और जिसके जैसा यश प्राप्त करना औरोंके लिये अत्यंत दुर्लभ था, ऐसा दुर्लभराज नामका उसका छोटा भाई [उसके बाद] राजा हुआ।

[२४] साँपकी भाँति, काल करवाल (कठिन तलवार) से सुरक्षित होकर उसका राज्य, निधानके समान, अन्यों (शत्रुओं)का भोग न हो सका।

[२५] सौभाग्यसे प्रकाशमान उस राजाका कर (१ हाथ; और २ मालगुजारी) सर्वथा अनुपभोग्य ऐसी परस्त्री पर और ब्राह्मणोंको प्रदान की हुई भूमिपर, कमी नहीं पड़ा।

३२) सं० १०६६ से लेकर ११ साल ६ महीने तक श्रीदुर्लभराजने राज्य किया। इस राजा दुर्लभने पत्तनमें 'दुर्लभ सर' नामक सरोवर बनवाया।

[२६] फिर, उसके भाईका लड़का 'भीम' नामक राजा हुआ जिसकी प्रवृत्ति तीनों जगत्को अभीष्ट फल देनेवाली हुई।

*

[यहाँ A आदर्शका अनुसरण करनेवाली मुद्रित पुस्तकमें, यह समय-सूचक पाठ इस प्रकार है–]

[इसके बाद सं० १५० (! १०५२) श्रावण सुदी ११ शुक्रवारको पुष्य नक्षत्र और वृष लग्नमें श्रीचामुण्डराजका राज्यारोहण हुआ। इसने पत्तनमें चन्द्रनाथदेव और चाचिणेश्वरके मन्दिर बनाये।

सं० ५५ (! १०६५) आश्विन सुदी ५से लेकर १३ वर्ष १ मास २४ दिन राज्य किया।

सं० १०५५ (! १०६५) आश्विन सुदी ६ मंगळवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, मिथुन लग्नमें श्रीवल्लभराजदेव गद्दी पर बैठा।

इस राजाने जब मालवा देशकी धारानगरीके प्राकार (किलेको) घेर रक्खा था उसी समय शीली रोगसे इसकी मृत्यु हुई। इसके दो विरुद थे–'राजमदनशंकर' (राजारूपी कामदेवके लिये शिव) और 'जगज्झम्पन'। सं० १० (! १०६६) चैत्र सुदी ५ से लेकर ५ महीने २९ दिन तक इस राजाने राज्य किया।

सं० १५५ (१०६६) चैत्र सुदी ६ गुरुवारको, उत्तराषाढा नक्षत्र और मकर लग्नमें, दुर्लभराज नामक उसका भाई राज्यपर अभिषिक्त हुआ। इसने पत्तनमें व्ययकरण (कचहरी), हस्तिशाला और घटीगृह युक्त सात तल्लेवाला धवलगृह (राजप्रासाद) बनवाया। अपने भाई वल्लभराजके कल्याणार्थ मदनशङ्कर प्रासाद बनवाया और दुर्लभसर नामक सरोवर भी बनवाया। इस तरह बारह वर्ष इसने राज्य किया।]

[प्रबन्धचिन्तामणिकी इस A संज्ञावाली प्रतिमें चौलुक्य वंशके इन राजाओंका कालक्रम आदि कुछ भिन्न क्रमसे लिखा हुआ मिलता है जिसका भी संग्रह करना ऐतिहासिक दृष्टिसे कुछ उपयोगी होगा ऐसा समझ कर हमने इन कोष्ठकान्तर्गत कंडिकाओंमें उसे मुद्रित किया है। यह कालक्रम सूचक पाठ भी चावडोंके कालक्रम सूचक उस द्वितीय पाठके समान अपूर्ण और अव्यवस्थित है। हमारा अनुमान होता है कि ग्रंथकारने पहले पहल जब यह कालक्रमके बतलानेवाले उल्लेखों और संवतोंका संग्रह करना शुरू किया होगा और वृद्ध जनोंसे तथा अन्यान्य लेखोंसे इस विषयके प्रमाण एकत्रित करने प्रारम किये होंगे, उस समयका लिखा हुआ जो प्राथमिक असंशोधित आदर्श रहा होगा उस परसे यह A संज्ञक आदर्श (तथा उसके समान जातीय अन्य आदर्श) की प्रतिलिपि हुई होगी और इसलिये इनमें यह असंशोधित कालक्रमवाला पाठ वैसाका वैसा नकल होता हुआ चला आया हुआ होना चाहिए। संशोधित पाठ वही है जो ऊपर मूलमें दिया गया है।]

*

३३) इसके बाद [A D प्रतिके अनुसार 'सं० १०५ (१०७८) ज्येष्ठ सुदी १२ मंगलवारको अश्विनी नक्षत्र, मकर लग्नमें'] श्री भीम नामक अपने पुत्रका राज्याभिषेक करके स्वयं तीर्थोपासनाकी वासनासे वाणारसीके प्रति प्रस्थान किया। मालवकमण्डलमें पहुँचनेपर वहांके महाराजा मुञ्जने रोक कर इस प्रकार कहा कि–'छत्रचामरादि राज-चिन्होंका परित्याग करके कार्पटिक (संन्यासी) की भाँति आगे जाओ, नहीं तो युद्ध करो'। बीच ही में उत्पन्न ऐसा इसे धार्मिक विघ्न समझकर, यह वृत्तान्त भीमराजको कहलाया और स्वयं कार्पटिकका वेश पहन कर तीर्थयात्रा की; और वहींपर परलोक साधन किया।

३४) इसीके बाद मालवाके राजाओंके साथ गूजरातके राजाओंका दृढमूल ऐसा विरोधका बंधन बंध गया।

६. मुञ्जराज प्रबन्ध ।

३५) अब यहांपर प्रसङ्गसे आया हुआ, मालवामण्डल के मण्डनरूप श्री मुञ्जराजका चरित्र वर्णन किया जाता है – प्राचीन कालमें, उस मण्डलका परमारवंशी राजा, जिसका नाम श्री सिंहभट था, राजपाटी निमित्त परिभ्रमण करते हुए, उसने मुंजके वनमें एक सद्यःजात अति रूपवान् बालकको देखा और स्वकीय पुत्रके समान वात्सल्य भाव धारण करके उसे उठा लिया और महलमें लाकर रानीको समर्पण किया । मुंजके वनमें प्राप्त होनेके कारण उसका नाम मुञ्ज रक्खा । बादमें उसके एक सीन्धल नामक ओरस पुत्र भी पैदा हुआ । [एक समय] निःशेष राजगुणोंके समूहसे भूषित ऐसे उस मुञ्जका राज्याभिषेक करनेकी इच्छासे राजा उसके महलमें गया । मुञ्ज अपनी स्त्रीको, जो उस समय वहां उपस्थित थीं, किसी एक वेत्रासनकी ओटमें बिठाकर, प्रणाम पूर्वक राजाकी सेवा करने लगा । राजाने उस प्रदेशको निर्जन देखकर प्रारंभसे लेकर उसके जन्म आदिका वृत्तान्त कह सुनाया और फिर कहा कि–तुम्हारी भक्तिसे सन्तुष्ट होकर अपने ओरस पुत्रको छोड़कर, तुम्हें राज्य दे रहा हूँ; पर इस सीन्धल नामक भाईके साथ पूरे प्रेमके व्यवहारके साथ वर्तना । इस प्रकारकी आज्ञा देकर राजाने उसका अभिषेक किया । कहीं, अपने जन्मका यह गुप्त वृत्तान्त बाहर न फैल जाय इस आशंकासे उसने अपनी उस स्त्रीको मार डाला । बादमें उसने अपने पराक्रमसे सारे भूतलको आक्रान्त किया और समस्त विद्वज्जनोंके चक्रवर्ती जैसे रुद्रादित्य नामक पंडितको महामंत्री बनाकर अपने राज्यकी चिन्ताका समस्त भार उसे सौंपा । उस सीन्धल नामक भाईको, जिसने अपने उत्कट स्वभावके कारण राजाका कुछ आज्ञाभंग किया था, स्वदेशसे निर्वासित कर, चिरकाल तक निष्कंटक राज्य करता रहा ।

३६) वह सीन्धल गूजरात देशमें आकर, अर्बुद पर्वतकी तलहटीमें काशहृद नगरके निकट अपना एक छोटा सा गाँव बसा कर रहने लगा । दीवालीकी रातको शिकार खेलने निकला । चोरोंको वध करनेवाली भूमिके निकट एक सूअरको चरते देख, उसने सूलीपरसे गिरे हुए एक चोरके शवको न देख कर, उसे घुटनोंसे दबा कर, जब वह अपना बाण चलाने लगा, तो उस शवने [मारनेका] संकेत किया । उसे हाथ लगा कर मना करते हुए, उस बाणसे सूअरको मार गिराया । बादमें जब सूअरको अपनी ओर खींचने लगा तो वह शव जोरोंका अट्टहास करके उठ खड़ा हुआ । इस पर सीन्धुलने कहा–तुम्हारे किये हुए संकेतके समय सूअरपर प्रहार करना उचित था, या समझ बूझकर जो मैंने प्रहार किया वह ठीक था ?' उसके इस वाक्यके पूरा होनेपर, वह छिद्रान्वेषी प्रेत, उसके ऐसे निःसीम साहससे सन्तुष्ट होकर बोला कि 'वरदान माँगो ।' ऐसा कहनेपर–' मेरे बाण जमीनपर न गिरें ' ऐसा माँगा; उस शबने कहा ' और भी कुछ माँगो ।' इसपर उसने कहा कि–'मेरी भुजाओंमें सारी लक्ष्मी स्वाधीन हो ।' उसके साहससे चकित होकर उस प्रेतने कहा कि–तुम मालवमण्डलमें जाओ । वहाँ मुञ्ज राजाका विनाश निकट है, इसलिये तुम वहीं जाकर रहो । तुम्हारे ही वंशमें वहाँ राज्य रहेगा । इस प्रकार उसके कथनानुसार वह वहाँ गया और मुञ्ज राजासे कोई एक संपत्‌शाली प्रदेश प्राप्त कर, कुछ काल बाद, फिर उसी प्रकार उद्धत भावसे वर्तने लगा । एक बार एक तेलीसे कुश माँगी । उसने नहीं दी । इसपर कुपित होकर, बलात्कार पूर्वक छीन कर, और उसे मरोड कर उसके गलेमें डाल दी । तेलीने राजाके आगे पुकार की । राजाने समझा बुझाकर उसे सीधी करवाई । उसके ऐसे उत्कट बलसे राजा मुञ्ज भयभीत हो गया । इसके बाद, मालिश करनेमें बड़े कुशल ऐसे कुछ कलावन्त विदेशसे वहाँपर आये । वे राजासे मिले । राजा उनसे अपने शरीरमें मालिश कराने लगा । वे भी अपनी कलासे हाथ पैर आदि अंग

उतार कर फिरसे वैसे चढा देते थे। इस प्रकार दो तीन बार कराया। प्रसन्न होकर राजा सीन्धलका भी इसी प्रकारका मर्दन करवाने लगा। उसके अंगोंके उतार लेनेपर जब वह निश्चेष्ट हो गया तो आंखें निकलवा लीं। [क्यों कि] सुसज्जित अवस्थामें तो उसकी आँख निकालनेमें कौन समर्थ हो सकता था ?। अतः इस प्रकार मुञ्जने उसकी आँखें निकलवा लीं और फिर उसे काठके पींजरेमें बंद करा दिया। उसके भोज नामक पुत्रका जन्म हुआ। उस पुत्रने सभी शास्त्रोंका खूब अभ्यास किया। छत्तीस प्रकारके आयुधोंका आकलन कर, बहत्तर कलारूपी समुद्रका पारगामी बना। इस तरह सभी लक्षणोंसे युक्त होकर वह बडा होने लगा। उसके जन्म समय किसी निमित्तज्ञ ज्योतिषीने जन्मकुण्डली बना कर दी [जिसमें लिखा था कि—]

३४. पचपन वर्ष, सात मास, तीन दिनतक भोजराजा गौड़ देशके साथ दक्षिणापथका भोक्ता होगा।

इस श्लोकके अर्थको जब मुञ्जराजने समझा, तो सोचा कि इसके रहनेपर मेरे लड़केको राज्य नहीं होगा; इस आशंकासे उसने भोजको, वध करनेके लिये अन्त्यजोंके सुपुर्द किया। उन्होंने रातको उसकी मधुर मूर्ति देखकर, अनुकम्पाके साथ कांपते हुए कहा कि—अपने इष्ट देवताको याद करो। इसपर भोजने निम्नलिखित काव्य, पत्रपर लिखकर, मुञ्जराजको देनेके लिये समर्पण किया।

> ३५. सत्ययुगके अलंकारके समान वह राजा मान्धाता चला गया। जिस रावणके शत्रु रामचन्द्रने महासागरमें सेतु बांधा था वह भी आज कहां है ? और फिर युधिष्ठिर प्रभृति अनेक राजा जो आपके समय तक हो गये हैं, सब चले गये; पर यह पृथ्वी किसीके भी साथ नहीं गई। पर मैं समझता हूं, तुम्हारे साथ तो जायगी।

राजा उसे पढकर मनमें अत्यन्त खिन्न हुआ और बालहत्या करनेवाले अपने आपकी निन्दा करने लगा।

> [२७] हाय, हे भोज ! मरण कालमें कहा हुआ तुम्हारा काव्य हृदय वेध रहा है। दौर्भाग्यके स्थान समान मुझ पापी, दुष्टको तुम्ही शरण हो।

> [२८] हे गुणागार भोज ! तुझ विना इस राज्यसे मुझे क्या काम है ? अरे कोई चिता सजा दो, ताकि मैं मरकर जाकर भोजसे मिलूं।

तब मंत्रियोंने राजाको प्रबोधित करते हुए यह वाक्य कहा—

> [२९] हे स्वामिन् ! यह अति अज्ञान सूचक है जो इस तरह अब आप बोल रहे हैं। जानना वही प्रमाण है जो ऐसी कदर्थनाका कारण न हो।

—इस प्रकार वारंवार विलाप करने लगा।]

३७) बादमें, उनके पाससे अत्यन्त आदरके साथ बुलाकर उसे युवराजकी पदवी देकर सम्मानित किया। तैलिपदेव नामक तिलङ्गदेशके राजाने सेना भेज कर उस (मुञ्ज) पर आक्रमण किया। उस समय रुद्रादित्य नामक महामंत्री रोगग्रस्त था; उसके बारंबार निषेध करनेपर भी मुञ्जने उसके ऊपर चढाई करना चाहा। [मंत्रीने कहा—

> [३०] हे महाराज ! हमारी सीख मान लीजिये, अवहेला न कीजिये। तुम्हारे उधर चले जानेपर इस (मुञ्ज) मंत्रीको भीख माँगनी पडेगी।

> [३१] तुम्हारे बैठे रहनेपर और मेरे लाँघ (चले) जानेपर राजाका राज्य रुल जायगा। ऐसा होनेपर बडा ही अकाज होगा और उसकेलिये तुम मालवके धनी जानो।

[३२] हे स्वामिन्! यह महेता (महत्तम=महामात्य) विनति करता है कि–अब हमारा यह आखिरी जुहार (नमस्कार) हो। हमें [जानेका] आदेश हो। क्यों कि हम तुम्हारे सिरपर राख पडती देख रहे हैं।

इस प्रकार मंत्रीके निषेध करने पर भी वह सेनाके साथ चला।]

[मंत्रीने आखिरमें कहा कि–] गोदावरी नदीको सीमा मान उसे लाँघकर आगे प्रयाण न कीजियेगा। इस प्रकार मंत्रीने शपथ देकर आगे न जानेके लिये रोका था; तथापि मुञ्ज ने यह विचार कर कि पहले छ बार उसे जीता है, जोशमें आकर उस नदीको पार करके, सामने किनारे जाकर पडाव डाला। रुद्रादित्य ने जब राजाके उस वृत्तान्तको सुना, तो उसकी अविनयशीलताके कारण कोई भावी विपद आनेवाली है, यह सोचकर स्वयं चिताग्निमें प्रवेश किया। इसके अनन्तर तैलिप ने छल और बलसे उसकी सेनाको तितर-बितर कर मुञ्जराजा को गिरफ्तार कर लिया और मूंजकी रस्सीसे बाँध उसे कारागारमें बन्द कर दिया। काठके पिंजडेमें उसे रक्खा गया था और राजा तैलिप की बहन मृणालवती उसकी परिचर्या करती रहती थी। मुञ्ज का उसके साथ पत्नीका-सा स्नेह सम्बन्ध हो गया। उधर पीछे रहे हुए उसके मंत्रियोंने एक सुरंग खुदवाई और उसके जरिये मुञ्ज को संकेत करवाया। इतनेमें, एक बार जब वह दर्पणमें अपना प्रतिबिंब देख रहा था, तो उसी समय मृणालवती, अनजानमें, पीछे आ खडी हुई। उसने भी दर्पणमें अपने बुढापेके जर्जर मुखको देखा और फिर देखा कि युवक मुञ्जराज के मुँहके पास उसका मुँह अत्यन्त भद्दा दिखाई दे रहा है। इसलिये उसे उदास होते देख मुञ्ज ने कहा–

३६. मुञ्ज कहता है कि–ऐ मृणालवती! गये हुए यौवनको झुरो मत; यदि सक्करकी डली पीसी जाकर सैंकडों टुकडोंमें छिन्न-भिन्न हो जाय, तो भी वह मीठी चूर ही लगती है।

इस प्रकार कह कर [उसे शान्त बनानेका प्रयत्न किया], बादमें अपने स्थानको जानेकी इच्छा-वाला होते हुए भी मृणालवतीका विरह वह नहीं सह सकता था, और भयसे उसे वह वृत्तान्त भी कह नहीं सकता था। बार बार [मृणालवतीके] पूछनेपर भी, अपनी चिन्ता न कह सका। बिना नमककी और अधिक नमक दी हुई रसोई खाकर भी जब वह उसका स्वाद नहीं जान सका तो, मृणालवती ने अत्यंत आग्रह और प्रेमपूर्वक पूछा; तब बोला कि मैं इस सुरङ्गके रास्ते अपने घर जानेवाला हूँ। यदि तुम भी वहाँ चलो तो मैं तुम्हें पटरानीके पदपर अभिषिक्त करके अपने प्रसादका फल दिखाऊं। इसपर उसने कहा कि क्षणभर प्रतीक्षा करो; तब तक मैं अपने गहनोंकी सन्दूक ले आऊं। यह कहकर उस कात्यायिनी (ढलती उमरकी विधवा) ने सोचा कि यह वहाँ जाकर मुझे छोड देगा, अपने भाई राजासे वह वृत्तान्त जाकर कह दिया। इस पर वह राजा, उसकी विशेष विडम्बना करनेके लिये, उसको बन्धनमें बाँधकर प्रतिदिन भिक्षाटन कराने लगा। वह घर घर घूमता हुआ, खिन्न होकर उदासीके इन वचनोंको बोला करता। जैसे कि–

३७. वे नर मूर्ख है जो स्त्रीपर विश्वास करते हैं; जिस स्त्रीके चित्तमें सौ, मनमें साठ, और हृदयमें बत्तीस आदमी बसा करते हैं।

और भी–

३८. यह मुञ्ज जो इस प्रकार रस्सीमें बन्धा हुआ बंदरकी तरह घुमाया जा रहा है, वह बचपन-ही-में झोटीके टूट जानेसे गिरकर क्यों न मर गया, या आगमें जल कर राख क्यों न हो गया।

तब किन्हीं सज्जन पुरुषोंने दिलासा देते हुए कहा कि–

[३३] हे रत्नाकर, हे गुणपुञ्ज मुञ्ज ! चित्तमें इस प्रकार विषाद न करो। क्यों कि जिस प्रकार विधाता ढोल बजाता है उसी तरह मनुष्यको नाचना पड़ता है।

फिर किसी और दयार्द्रचित्त सज्जनने कहा–

[३४] हे मुञ्ज ! इस प्रकार खेद न करो। क्यों कि भाग्यक्षय होनेपर वह रावण भी नष्ट हो गया, जिसका गढ़ तो लंका था और जिस गढ़की खाई खुद समुद्र था और उस गढ़का मालिक खुद रावण दस माथेवाला था।

इसी प्रकार–

३९. हाथी गये, रथ गये, घोड़े गये, पायक और भृत्य भी चले गये। महता (महामात्य) रुद्रादित्य भी स्वर्गमें बैठा आमंत्रण कर रहा है।

बादमें, एक अवसरपर, किसी गृहस्थके घरपर वह भिक्षाके लिये ले जाया गया। उसकी स्त्री उस समय छोटे पाड़ेको छाछ पिला रही थी। उसने उसको भिक्षाके लिये खड़ा देख कर गर्वसे कन्धा ऊँचा किया और भीख देनेका इन्कार किया। इसपर मुञ्ज बोला–

४०. हे भोली मुग्धे ! इन छोटेसे पाडों (भैंसके बच्चों) को देख कर ऐसा गर्व न कर। मुञ्जके तो चौदह सौ और छहत्तर हाथी थे, पर वे भी चले गये।

उसने इस प्रकार उत्तर दिया–

[३५] जिसके घर चार बैल हैं, दो गायें हैं और मीठा बोलने वाली ऐसी [मैं] स्त्री हूँ, उस कुटुंबी (कणबी=किसान) को अपने घरपर हाथी बाँधनेकी क्या जरूरत है ?

एक दूसरी बार जब कि मुञ्जको इस प्रकार इधर उधर घुमाया जा रहा था, तब, राजा किसी बावडी पर बैठा हुआ उसे देख कर हँसने लगा। इस पर वह बोला–

[३६] ऐ धनके अन्धे मूढ़ ! मुझे विपत्तिग्रस्त देखकर हँसता क्या है ?–लक्ष्मी कभी कहीं स्थिर होती देखी है ? तूं क्या इस जलयंत्र-चक्र (अरहट) की घटियोंको नहीं देखता जो क्रमसे खाली होती हैं, भरती हैं और फिर खाली होती हैं।

इसी तरह पीछे लगकर चिढ़ानेवाले आदमियोंको देखकर उसने कहा–

[३७] मैं उन पर वारी जाता हूँ जो गोदावरी नदीके ऊपर ही अटक गये (मर गये), जिन्होंने न इन दुर्जनोंकी ऋद्धि देखी और न इस विह्वल मुञ्जको देखा।

फिर अपनी मन्दबुद्धिताका स्मरण करता हुआ इस प्रकार बोला–

[३८] दासीको कभी प्रेम नहीं होता यह निश्चित जानना चाहिए। देखो, दासीने राजा मुञ्जेश्वरको घर घर भीख माँगता करवाया।

[३९] और जो लोग अपना बड़प्पन छोड़कर वेश्या और दासियोंमें राचते हैं वे मुञ्ज राजाके समान बहुत ही अनादर सहन करते हैं।

[४०] हे * मर्कट (बंदर) ! इसलिये तुम अफसोस न करो कि मैं इस स्त्रीके द्वारा खँडित किया जा रहा हूँ। राम, रावण, और मुञ्ज आदि कैसे कैसे लोग स्त्रियोंसे खंडित नहीं हुए ?

---

* मदारी लोग बंदर और बंदरियाका जब खेल करते हैं तब, बंदरिया रूठकर बंदरका अपमान करती है और बंदरसे पानी भरवाना चक्की चलवाना आदि काम करवाती है। बंदर अपमानित होकर मुँह फेर बैठ जाता है और हाथसे अपने शिरको पीटता है। इस दृश्यपर किसीकी यह उक्ति है।

[४१] ऐ यन्त्र, +चरखा ! तुम इसलिये न रोओ कि मैं इस स्त्री द्वारा भमाया (घुमाया) जा रहा हूँ। ये तो कटाक्ष फेंक कर ही (मनुष्योंको) घुमाया करती हैं, तो फिर हाथसे खींचने पर की बातका तो कहना ही क्या है ?

[४२] मुञ्ज कहता है कि, हे मृणालवती ! जो बुद्धि पीछे उत्पन्न होती है, वह अगर पहले ही हो जाय तो कोई विघ्न आकर घेर नहीं सकता।

[४३] जो राजा दशरथ देवताओंके राजा (इन्द्र) के तो मित्र थे, और यज्ञ पुरुषके तेजःअंशके समान रामके पिता थे, वही पुत्रविरहके दुःखसे शय्यापर ही पडे पडे मर गये, उनका शरीर जलते हुए तेलके मटकेमें रक्खा गया और बहुत दिनोंके बाद उसका संस्कार हुआ। हाय, कर्मकी गति टेढ़ी है !

[४४] सिरपर विधु ×(चंदमा और विधाता) के वक्र हो कर आ बैठने पर, शिवके सदृश जो सब देवताओंके गुरु हैं उनका भी कैसा हाल हो गया है सो तो देखो। उनके पास अलंकारमें तो मात्र नर-कपाल है जिसे देखते ही डर लगता है, परिवारमें जिसका सारा शरीर छिन्न भिन्न है ऐसा एक भृंगी है, और सम्पत्तिमें एक ढलती उमरका बूढ़ा बैल है ! फिर हम लोगोंके सिरपर जो विधि यानि विधाता वक्र हो कर आ बैठे तो क्या क्या हाल न हो।

इस प्रकार चिरकाल तक भिक्षा मँगवाने बाद राजाकी आज्ञासे मुञ्जको वध्य-भूमिमें ले गये। वहाँ पहले पहननेका उसका वस्त्र ले लिया गया। तब वह बोला—

[४५] यह कमर जो हमेशां मतवाले हाथीके ऊपर ही बैठकर चलनेवाली थी, जो सदा विचित्र सिंहासनपर ही बैठती थी और जो अनेक रमणियोंके जघनस्थल पर लालित होती थी; वह आज इस प्रकार विधिवश बिना वस्त्रकी कर दी गई !

तब मुञ्जने पूछा कि–' किस प्रकार मुझे मारोगे ?' [उत्तर मिला] ' वृक्षकी शाखामें लटका कर।' तब वह बोला–

[४६] कहाँ तो यह महावनमें रहा हुआ वृक्ष है और कहाँ हम संसारका पालन करनेवाले राजाओंके पुत्र ! अहो, कभी न घट सकनेवाली बातको घटानेमें पटु ऐसा यह विधिका चरित्र बड़ा दुरबोध है !

उन्होंने कहा कि ' इष्ट देवताको याद करो ' इस पर वह बोला–

४१. इस यशके पुंजके समान मुञ्जके गत होनेपर, लक्ष्मी है सो तो विष्णुके पास चली जायगी और वीरश्री है वह वीर मन्दिरमें चली जायगी; किन्तु [और कोई आश्रयस्थान न मिलनेसे] सरस्वती है सो निराश्रित हो जायगी।

+ स्त्री जब चरखा चलाती है तब उसमेंसे रूँ...रूँ...इस प्रकारकी अवाज निकलती है। उस अवाजपर यह किसीकी अन्योक्ति है। स्त्री अपने हाथसे चरखेको खूब घुमा रही है इसलिये मानों चरखा रो रहा है। कवि कहता है कि, भाई चरखा तूं रो मत ! स्त्रीके तो कटाक्ष मात्रसे भी मनुष्य घूमने लगते हैं, तो फिर तुझे तो यह अपने हाथसे फिरा रही है।

× यहांपर ' विधौ वक्रे मूर्ध्नि ' इस वाक्यांश पर श्लेष है। संस्कृतमें ' विधु ' शब्द चंद्रका वाचक है और ' विधि ' विधाताका। इन दोनों शब्दोंका सप्तमी विभक्तिके एक वचनमें ' विधौ ' ऐसा रूप बनता है। शिवके पक्षमें ' विधुके वक्र होनेपर;' और दूसरे पक्षमें ' विधिके वक्र होनेपर ' ऐसा अर्थ घटाया गया है।

इस तरहके उसके अन्य बहुत वाक्य हैं जो परम्पराके अनुसार जानने चाहिये* ।

बादमें उस मुञ्ज को मारकर उसका सिर सूलीमें पिरोकर अपने आँगनमें रखवाया और उसमें रोज दहीं लगवा लगवाकर अपने अमर्षका पोषण करता रहा ।

४२. जो मुञ्ज यशका पुञ्ज था, हाथियोंका पति था, अवन्तीका स्वामी था, सरस्वतीका पुत्र था, प्राचीन कालके जैसा कृती पुरुष था; वही कर्णाट देशके राजाके द्वारा अपने मंत्रीकी कुबुद्धिसे पकड़ा गया और सूलीपर चढ़ा दिया गया । हाय, कर्मकी गति कैसी विषम है ।



३८) उसके बाद, मालवा मण्डलके मंत्रियोंने जब यह वृत्तान्त सुना तो, उन्होंने फिर उसके भतीजे भोजको राज्य पदपर अभिषिक्त किया ।

इस प्रकार श्रीमेरुतुङ्गाचार्य रचित प्रबंधचिन्तामणि ग्रन्थका 'राजा श्रीविक्रमादित्य प्रभृति महासाहसिक और परोपकार-आदि गुणरूपी रत्नोंसे अलंकृत राजाओंके चरित्र' नामक यह पहला प्रकाश समाप्त हुआ ।

---

* मालूम होता है मुंजकी यह करुण कथा उस जमानेमें बहुत लोक प्रसिद्ध और लोक साहित्यकी विशिष्ट वस्तु बनी हुई थी । मेरुतुङ्गसूरिने जो यहाँ पर ये कुछ संस्कृत, प्राकृत और देश्य पद्य दिये हैं वे या तो भिन्न भिन्न कर्तृक मुंज विषयक प्रबंधोंमेंसे उद्धृत किये गये हैं; या परंपरासे सुनकर लिख लिये गये हैं । मुंजकी इस कथामें एक तो संपत्तिकी अस्थिरता और दूसरी स्त्रीकी अविश्वसनीयता और तीसरी मुंज जैसे महाबुद्धिवान् शक्तिवान् राजाकी, दुश्मनके द्वारा की गई त्रासोत्पादक विटंबना– इन तीन बातोंका विचित्र संघटन हो जानेसे उपदेशकोंको अपने उपदेशकेलिये यह एक वास्तविक घटनाका बतलानेवाला करुण रसका बोधदायक आख्यान ही मिल गया । अभी तक निश्चय नहीं हो सका कि इस कथामें ऐतिहासिक तथ्य कितना है और प्रबन्धकारोंकी बनावट कितनी है । यहाँपर जो पद्य दिये गये हैं वे तो प्रबन्धकारोंकी उपदेशात्मक उक्तियाँ मात्र हैं । कुछ पद्य तो मेरुतुङ्गसूरिके भी पीछेके बने हुए हैं और किसीने प्रसंगोचित समझकर इस ग्रंथमें प्रक्षिप्त कर दिये हैं ।

१. दही लगवानेका मतलब यह कि उसे देखकर कौए आवें और उस मस्तकपर बैठें । किसी दुश्मनका बहुत ही बुरा चाहना होता है तब लोग बोला करते हैं कि–उसके सिरपर तो कौए बैठेंगे । उसी लोकोक्तिका सूचक यह कथन है ।

७. भोज और भीमका प्रबन्ध।

३९) इसके बाद [सं० १०७८ के साल] जब मालवंमण्डलमें श्री भोजराज राज्य करता था, तब इधर गूर्जरभूमिमें चौलुक्य चक्रवर्ति भीम पृथिवीका शासन करता था।

एक रात्रिके अन्तमें राजा भोजने, अपने चित्तमें लक्ष्मीकी अस्थिरताको विचारते हुए और अपने जीवनको भी तरंगकी भाँति चञ्चल समझते हुए, प्रातः कृत्यके बाद, दानमण्डपमें बैठकर नौकरोंके द्वारा याचकोंको बुला, यथेच्छ सुवर्ण टंकोंका (सोनेकी मोहरोंका) दान देना प्रारंभ किया।

४०) इस पर, रोहक नामक उसके मंत्रीने, खजानेका नाश होता देख, राजाके औदार्य गुणको दोष समझते हुए उसे रोकनेके लिये अन्य उपायोंसे समर्थ न होकर, एक दिन सर्वावसर (न्याय सभा) के उठ जाने बाद सभामण्डपके भारपट्ट पर खड़ियासे इन अक्षरोंको लिख दिया—**आपत्ति कालके लिये धनकी रक्षा करनी चाहिए।**

प्रातः काल यथा समय राजाने उन अक्षरोंको पढ़ा। सभी परिजनोंमेंसे किसीने भी जब उस कार्यके करनेका स्वीकार नहीं किया तो राजाने उसके साथ यह लिख दिया—**भाग्यवानको आपत्ति कहां है।**

इस पर मंत्रीने जबाबमें लिखा कि—**कभी दैव कुपित हो जाय तो ?।**

इस पर राजाने फिर उसके सामने लिख दिया कि—[तब तो] **सञ्चित भी विनष्ट हो जायगा।**

इससे निरुत्तर होकर उस मंत्रीने अभय वचन माँगकर उस कथनको अपना लिखा बताया। बादमें राजाने कहा, कि मेरे मनरूपी हाथीको ज्ञानरूप अंकुशसे वशमें रखनेके लिये महामात्रके समान ५०० पण्डितोंका यह समूह यथेच्छ रूपसे अपना अपना ग्रास प्राप्त किया करें[1]।

राजाने अपने जीवनका ध्येय सूचित करनेवाली ऐसी चार आर्याओंको अपने कङ्कणपर खुदवाई[2] जिनका अर्थ यह है—

४४. यही उपकार करनेका अवसर है; जब तक कि स्वभावतः ही चञ्चल ऐसी यह सम्पत्ति विद्यमान है। फिर वह विपत्ति कि जिसका उदय भी निश्चित है, उसके आनेपर उपकार करनेका अवसर कहाँ रहेगा ?।

४५. हे पूर्णिमाके चन्द्रमा ! अपने किरण-समूहकी समृद्धिसे अभी आज इस सारे भुवनको उज्ज्वल कर दे। [फिर यह मौका न मिलेगा, क्यों कि] निर्दय विधाता चिरकाल तक किसीका सुस्थिर होना सह नहीं सकता।

४६. ऐ सरोवर ! दिन और रात याचकोंका उपकार करनेका यही अवसर है। यह जल तो उन पुराने बादलोंके उदय होनेपर फिर सर्व-सुलभ ही है।

४७. ऐ किनारेके वृक्षोंको गिरा देनेवाली नदी ! यह सुदूर तक उन्नत दिखाई देनेवाला पानीका पूर तो कुछ ही दिनों तक ठहरेगा; पर यह एक पातक (पेड़का गिरा देना) तो चिरस्थायी होकर रहेगा। और फिर—

---

१ इसका मतलब यह है कि राजा भोजने अपने पास ५०० पंडित रक्खे थे जिनके निर्वाहके लिये राज्यकी ओरसे स्थायी ग्रासका प्रबन्ध कर दिया गया था।

२ पुराने जमानेमें यह एक प्रथा थी कि-विचारशील लोग, जिस किसी सद्विचारको अपना जीवन-ध्येय बना लेते थे उसका सतत स्मरण रहा करे इसलिये उस विचारके सूत्रको अपने हाथके कंकणपर उत्कीर्ण करा (खुदा) लेते थे और उसका सदैव अवलोकन किया करते थे। वस्तुपाल आदि अन्य भी महापुरुषोंने अपने जीवनसूत्र कंकणपर खुदवा रक्खे थे।

४८. सूर्यके अस्त होनेके पहले जो धन याचकोंको नहीं दे दिया गया, मैं नहीं जानता, वह धन प्रातःकाल किसका होगा।

इस प्रकार अपना ही बनाया हुआ यह श्लोक जो मेरे कण्ठका आभरण-सा होगया है उसको इष्ट मंत्रकी तरह जपता हुआ, हे मंत्रिन्! मैं आप जैसे प्रेतके समान [लोभी] पुरुषसे कैसे ठगा जा सकता हूँ।

४१) एक दूसरे अवसरपर, राजा राजपाटिकामें घूमता हुआ नदीके किनारे जा खडा हुआ। वहाँ सिरपर काठका भरा उठाए हुए और पानीको लाँघ कर आते हुए किसी दरिद्री ब्राह्मणको देखा। उससे उसने पूछा कि–

४९. 'कितना है पानी ब्राह्मण!' उसने कहा–'घुटने तक है राजा।'

राजाने फिर पूछा–'तेरी अवस्था ऐसी क्यों?' वह बोला–'आप जैसे सब कहीं नहीं!'

उसके इस वाक्यको सुनकर राजाने जो पारितोषिक उसे दिया, मंत्रीने धर्म-खातेमें इस प्रकार लिख रखा–

५०. "जानुदघ्न" (जानुतक) कहनेवाले ब्राह्मणको सन्तुष्ट होकर भोजने एक लाख, फिर एक लाख, फिर एक लाख; और उसपर दस मतवाले हाथी; इस प्रकार दान दिया।

४२) एक दूसरी बार रातमें, आधीरातको राजाकी अचानक नींद खुली। उस समय आकाशमण्डलमें चंद्रमा नया ही उदित हुआ था। उसे देखकर वह अपने विद्यारूपी समुद्रके उठते हुए तरंगके जैसा यह काव्यार्ध बोलने लगा–

५१. यह चंद्रमाके भीतर, बादलके टुकडेकी-सी जो लीला कर रहा है लोग उसे शशक (खरगोश) कहते हैं, किन्तु मुझे वह ऐसा नहीं मालूम देता।

राजाके बारंबार ऐसा कहनेपर, कोई चोर जो उसी समय सेंध मारकर, कोशगृहमें घुसा था, अपने प्रतिभाके बेगको रोकनेमें असमर्थ होकर बोल उठा–

'मैं तो चंद्रमाको ऐसा समझता हूँ कि तुम्हारे शत्रुओंकी विरहाक्रान्त तरुणियों (स्त्रियों) के कटाक्षरूपी उल्कापातके सैकड़ों व्रणके चिन्हसे वह अंकित हो रहा है।'

उसके ऐसा बोल पडने पर, अंगरक्षकोंने उसे पकड लिया और कारागारमें बंद कर दिया। इसके बाद प्रातःकाल, सभामें ले आये हुए उस चोरको राजाने जिस पारितोषिकसे पुरस्कृत किया, उसे धर्म-खाताके काममें नियुक्त अधिकारीने इस प्रकार लिखा–

५२. उस चोरको, जिसे मृत्युका भय लगा हुआ था, राजाने ऊपर लिखे दो चरणोंके लिये प्रसन्न होकर यह दान दिया–दस करोड सुवर्ण मुद्रायें और ऊपर आठ हाथी, जो दाँतोंके आघातसे पर्वतका भेदन करते थे और जिनके मदसे मुदित हो कर भौंरे गुञ्जारव किया करते थे।

[फिर एक बार खिड़कीकी जालीसे आते हुए चंद्रमाको देख कर बोला–

[४७] हे सुभ्रु! खिड़कीकी जालीमेंसे प्रवेश करनेके कारण जिसकी चाँदनी खंड खंड हो गई है, वह चंद्रमा, तुम्हारे वक्षःस्थल पर आकर विराज रहा है।

उसी समय घरमें प्रवेश करनेवाले चोरने कहा–

'यह चन्द्रमा मानों तुम्हारे स्तनके संगकी आसक्तिके वश होकर आकाशमेंसे झंपापात कर नीचे कूदा है और दूरसे गिरनेके कारण खंड खंड हो गया है।'

इस चोरको भी उसी तरहका दान दिया गया और उसे धर्म-बहीमें लिख लिया गया।]

४३) इसके बाद, एक बार, जब वह बही [राजाके आगे] बांची जाने लगी तो राजा अपनेको बड़ा उदार दानी मानकर घमंडरूपी भूतसे आविष्ट होनेकी भाँति–

५३. मैंने वह किया जो किसीने नहीं किया, वह दिया जो किसीने नहीं दिया, वह साधना की जो असाध्य थी; इसलिये [अब] हमारा चित्त दुःखित नहीं है।

इस प्रकार वारंवार अपने भाग्यकी प्रशंसा करने लगा। तब किसी पुराने मंत्रीने, उसके अभिमानको दूर करनेकी इच्छासे, श्री विक्रमादित्य की धर्म-वही राजाको दिखाई। उसके ऊपरवाले विभागमें शुरूमें ही पहला काव्य इस प्रकार था–

५४. तुम्हारे मुखकमलमें 'सरस्वती' वसती है, 'शोण' तो तुम्हारा अधर ही है, और रामचन्द्रके वीर्यकी स्मृति दिलानेमें पटु ऐसी तुम्हारी दक्षिण भुजा 'समुद्र' है। ये वाहिनियाँ (सेना और नदियाँ) सदा तुम्हारे पास रहती हैं; क्षणभर भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़तीं; और फिर तुम्हारे अंदर ही यह स्वच्छ मानस (मानसरोवर, मन) है; तो फिर हे राजन्, तुम्हें जलपानकी अभिलाषा क्यों हो ![1]

इस काव्यके पारितोषिकमें राजाने इस प्रकार दान दिया था–

५५. आठ करोड़ स्वर्णमुद्रा, ९३ तुला मोती, मदमत्त भौरोंके कारण क्रोधसे उद्धत ऐसे ५० हाथी, चलनेमें चतुर ऐसे दस हजार घोड़े और सौ वेश्यायें;–यह सब जो पाण्डय राजाने दण्डके स्वरूपमें विक्रम राजाको भेट किया था; वह उसने उस वैतालिकको दानमें दे दिया।[2]

इस प्रकार उस काव्यके अर्थको जानकर, विक्रमकी उदारतासे अपने सारे गर्व सर्वस्वको पराजित मानकर, उस बही की पूजा करके उसे यथास्थान रखवा दिया।

४४) एक समय, प्रतीहारने आकर सूचित किया–'महाराजके दर्शनके लिये उत्सुक ऐसा एक सरस्वती-कुटुम्ब द्वारपर खड़ा है।' 'शीघ्र प्रवेश कराओ' राजाकी ऐसी आज्ञा होनेपर पहले उसकी दासीने प्रवेश करके कहा–

५६. बाप भी विद्वान् है, बापका बेटा भी विद्वान् है, माँ भी विदुषी है, माँकी लड़की भी विदुषी है; जो उनकी बिचारी कानी दासी है वह भी विदुषी है; इसलिये हे राजन्! मैं समझती हूँ कि यह सारा कुटुम्ब ही विद्याका एक पुञ्ज है।

उसके इस हास्यकर वचनसे राजाने जरा हँसकर, उनमेंके सबसे बड़े पुरुषको बुलाया और यह समस्या दी–'**असारसे सारका उद्धार करना चाहिये।**'

[उसने इसकी पूर्ति इस तरह की–]

५७. धनसे दान, वचनसे सत्य, और वैसे ही आयुसे धर्म और कीर्ति तथा शरीरसे परोपकार–इस प्रकार असारसे सारका उद्धार करना चाहिये।

---

१ किसी समय विक्रम राजाने अपने नोकरसे पीनेको पानी मागा तब पासमें बैठे हुए किसी कविने यह पद्य बनाया और राजाको सुनाया। इसमें, सरस्वती, शोण, दक्षिण समुद्र, मानस और वाहिनी इतने शब्दोंपर श्लेष है। ये सब शब्द द्वयर्थक हैं, जिनमें एक अर्थ प्रसिद्ध जलाश्रय वाचक है और दूसरा अन्यार्थ वाचक है। यथा–सरस्वती=१ नदी, २ विद्यादेवी; शोण=१ नद, २ लालवर्ण; दक्षिण समुद्र=१ महासागर, २ मुद्रावाला हाथ; वाहिनी=१ सेना, २ नदी; मानस=१ सरोवर, २ मन।

२ इस पद्यमें जो सामग्री वर्णित की गई है वह विक्रम राजाको दक्षिणके पाण्डय राजाने दण्डके रूपमें दी थी और उसी सामग्रीको विक्रमने किसी वैतालिक यानि स्तुतिपाठक कविको, उक्त श्लोकके कहनेपर पारितोषिकके रूपमें–दानमें दे दिया; यह इसका तात्पर्य है।

इसके बाद राजाने उसके पुत्रको [यह समस्या दी]–' हिमालय नामक पर्वतोंका राजा है ! '– 'प्रवाल (तृणाङ्कुर) की शय्याको शरीरका शरण' बनाया। राजाके इस वाक्यको सुनकर उसने उत्तर दिया–

५८. वह जो हिमालय नामक पर्वतोंका राजा है, तुम्हारे प्रतापरूपी अग्निसे पिघल रहा है; और विरहसे आतुर बनी हुई मेना (हिमालय-पत्नी मेनका) अपने शरीरको प्रवाल (तृणांकुरों) की शय्याके शरण कर रही है।

इस प्रकार उसके समस्या पूरी कर देनेपर, ज्येष्ठकी पत्नीको राजाने समस्याका यह पद अर्पित किया– किससे पिलाऊँ दूध ?

५९. जब रावण पैदा हुआ तो उसके एक शरीरपर दस मुँह देख कर उसकी माता बड़ी विस्मित हुई और सोचने लगी कि कौनसे मुँहसे इसे दूध पिलाऊँ ?

–उसने इस प्रकार यह समस्या पूरी की।

इसके बाद राजाने दासीसे भी इस प्रकारका पद समस्याके लिये दिया–' कंठमें काक लटक रहा है।'

६०. पतिविरहसे कराल बनी हुई किसी स्त्रीने उस बेचारे कौवेको उडाया तो, बड़ा आश्चर्य मैंने हे सखि ! यह देखा कि वह काक उसके कंठमें लटक रहा *।

उसने इस तरह पूरा किया। राजाने उस कुटुंबमेंकी लड़कीको भूलकर, अन्य सबको सत्कार करके विदा किया।

बादमें राजाने जब सर्वावसर (राजसभा) का विसर्जन किया और स्वयं चन्द्रशाला (चाँदनी=महलके ऊपरकी छत) की भूमिमें छत्र धारण करके टहल रहा था, तब द्वारपालने उस लड़कीका वृत्तान्त कहा। राजाने उसे [बुलाकर] कहा–' कुछ बोलो '–तो वह बोली कि–

६१. हे राजन्, हे मुञ्जकुलके दीपक, हे समस्त पृथ्वीके पालक, राजाओंके चूडामणि ! इस भवनमें रातमें भी, तुम इस प्रकार छत्र धारण करते हो वह उचित ही है। इससे न तो तुम्हारे मुखकी कान्तिको देखकर चंद्रमाको लज्जित होना पड़ता है और न भगवती अरुन्धतीको (पर पुरुषके मुखदर्शनसे) दुःशीलताका भाजन होना पड़ता है।

उसके इस वाक्यके अनन्तर राजाने, जिसके चित्तको उसके सौन्दर्य और चातुर्यने हरण कर लिया था, उससे विवाह करके अपनी भोगिनी बनाया।

---

* इस पद्यमें ' काउ ' इस देश्य शब्दपर श्लेष है। काउ काग–काक–कौआ वाचक तो प्रसिद्ध है ही–इसके सिवा गलेमें जो एक लटकता हुआ छोटासा मांसपिंड है उसका नाम भी काक–काग (गुजराती–कागडा) है। कोई विरहिनी स्त्रीका शरीर इतना कृश होगया है कि जिससे उसके कंठमें लटकता हुआ काग स्पष्टतया बहार दिखाई देता है। उसके घरके सामने आ आकर कौआ बोलता है, जिसका यह अर्थ समझा जाता है कि, उसका स्वजन आनेवाला है। लेकिन उसके वारवार ऐसा बोलने पर भी वह जब नहीं आता मालूम देता है तो फिर वह विरहिनी चिढकर उस कौवेको उडा देती है। इस कौवेके उडाते समय उसके पासमें बैठी हुई सखिको उसके दुर्बल कंठमेंका वह काग नजर आया। इस अर्थकी घटना बतलानेके लिये कविने इस पद्यमें ' काउ ' शब्दका प्रयोग कर उसकी समस्यापूर्ति बनाई है। इस ग्रंथके गुजराती और इंग्रजी भाषांतरकारोंने इन पद्योंके कुछके कुछ उटपटांग अर्थ किये हैं।

भोजकी गूजरातके राजा भीमके प्रति प्रतिस्पर्धा।

४५) इसके बाद, एक समय, संधिपत्रके होते हुए भी, सन्धिमें दोष उत्पादनके विचारसे भोज राजाने गूर्जर देशकी बुद्धिमत्ताका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छासे अपने सान्धिविग्रहिकके हाथ, भीमके पास यह [प्राकृत] गाथा लिख भेजी–

६२. क्रीडा मात्रमें जिसने हाथीका कुम्भस्थल विदीर्ण किया हो और चारों दिशामें जिसका प्रताप फैल रहा हो उस सिंहका, मृगके साथ न तो विग्रह ही [शोभता है] और न सन्धि ही [रहती है]।

भीमने इस गाथाका उत्तर देनेके लिये सब महाकवियोंसे गाथा माँगी। पर उनकी बनाई सब गाथाओंको निःसारार्थक देखकर वह सोचमें पड़ गया। उसी समय नगरमेंके जैन मन्दिरके अन्दर नाचनेके लिये सज्ज बनी हुई नर्तकीको खंभेके पास खड़ी हुई देखकर मंत्रीने वहीं बैठे हुए किसी आचार्य-शिष्यसे स्तंभ-वर्णनके लिये कहा। वह बोला–

[४८] हे स्तंभ ! तुम जो इस मृगनयनी नवयौवनाकी, कंकणाभरण आदिसे सज्जित बाहुलतासे [वेष्टित होकर भी] न स्वेद-युक्त होते हो, न हिलते हो और न काँपते हो; सो सचमुच ही तुम पत्थरके बने हो यह निश्चित होता है।

[आचार्य-शिष्यकी विद्वत्ताकी यह बात जब मंत्रीने राजासे कही तो राजाने [उसके गुरु] आचार्यको बुलाकर उस विषयमें पूछा–

६३. विधाताने भीमको अन्धकके * पुत्रोंको मारनेके लिये ही निर्माण किया है। जिस भीमने सौ [अन्धक पुत्रों] को कुछ नहीं गिना उसके सामने तुझ अकेलेकी क्या गणना है। '

इस प्रकार गोविन्दाचार्यकी बनाई हुई चित्तको चमत्कृत कर देनेवाली इस गाथाको दूतके हाथ भेजकर, सन्धिके दोषको दूर किया।

४६) बादमें किसी एक रातको, जाड़ेके दिनोंमें, राजा जब वीरचर्यामें घूम रहा था, तो किसी मन्दिरके सामने, किसी पुरुषको यह पढ़ते सुना–

६४. मेरा पेट भूखसे व्याकुल है, ओंठ फट गये हैं, ऐसी अवस्थामें फूंकते फूंकते आग ठंडी हो गई है, चिन्ताके समुद्रमें डूब रहा हूँ, शीतसे मापके फलकी तरह सिकुड़ गया हूँ। निद्रा अपमानिता स्त्रीकी भाँति कहीं दूर चली गई है; और सत्पात्रमें दी गई लक्ष्मीकी भाँति रात भी खतम नहीं हो रही है।

यह सुनकर रात बिताकर सबेरे उसे बुलाकर पूँछा–' किस प्रकार तुमने रात्रिशेषमें शीतका अत्यन्त उपद्रव सहन किया ! '। ' सत्पात्रमें दी गई लक्ष्मी ' इत्यादि कथनकी ओर संकेत करके उसने कहा था। [वह बोला–] ' महाराज ! मैं खूब गाढ़े तीन वस्त्रोंसे जाड़ा काटता हूँ। ' राजाने पूछा कि तुम्हारे वे तीन वस्त्र क्या हैं ! तब उसने फिर कहा–

६५. रातमें घुटने, दिनमें सूर्य और दोनों शामको आग, इस प्रकार हे राजन्! घुटने, सूर्य और आगके बलपर मैं शीत काटता हूँ।

जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाने उसे तीन लाखका दान देकर सन्तुष्ट किया।

६६. तुमने अपनी आभाको धारण करके बलि, कर्ण आदि उन त्यागमूर्ति धनवान पुरुषोंको मुककर

* यहांपर ' अन्धक ' इस शब्दपर श्लेष है। कौरवोंका पिता धृतराष्ट्र अन्धा था इसलिये उसको अन्धक कहा है। भोजका पिता सिंधुल भी अन्धा था इसलिये उसका विशेषण भी अन्धक सार्थक है।

दिया, जो सज्जनोंके चित्तरूपी कैदखानेमें आबद्ध थे।

इस प्रकार जब वह साक्षात् काव्यका उद्गार प्रकट कर रहा था तो राजाने उसका पारितोषिक देनेमें अपनेको असमर्थ समझ कर अनुरोधपूर्वक रोक दिया।

[यहाँ P. B. नामक प्रतिमें निम्नांकित वर्णन अधिक पाया जाता है–]

[४९] शीतसे रक्षा करनेके लिये पटी (वस्त्र) नहीं है, आग सुलगानेके लिये सगड़ी नहीं है। कमर भूमिपर घिस गई है–सोनेको शय्या नहीं है, कुटियामें हवाके रोकनेका कोई उपाय नहीं है, खानेको मुट्ठीभर चावल नहीं है, घड़ीभर भी मनमें संतोष नहीं है, शृंगार की कोई रुचि नहीं है, मनको प्रसन्न करनेवाली कोई प्रिया नहीं है, लेनदारोंसे संकटमें पड़ा हूँ; ऐसी दशामें हे भोजराज! तुम्हारे कृपारूपी हाथी द्वारा ही मेरी इस आपदाकी तटीका नाश हो सकता है।

इस श्लोकमें आई हुई ग्यारह टी[1] के हिसाबसे भोजराजाने उसे ११ लाखका दान दिया।

एक बार, किसी विद्वत्कुलके निवासके लिये घर देखे जा रहे थे। उनके न मिलनेपर राजाने कहा कि जुलाहों और मच्छीमारोंको उजाड़ दिया जाय। जब राजपुरुष उन्हें उजाड़ने लगे तो एक जुलाहा उन्हें रोककर राजाके पास गया, और बोला कि–महाराज! क्यों हमें उजाड़ रहे हैं? तो राजाने पूछा–क्या तू कविता करता है? वह बोला–

[५०] जिसके चरणोंपर राजाओंके मुकुटके मणि लोटते रहते हैं ऐसे हे साहसांक महाराज! मैं काव्य तो करता हूँ पर सुन्दर नहीं कर पाता। जैसा-तैसा करता हूँ पर सिद्ध नहीं होता। मैं उसका क्या करूँ? मैं कविता करता हूँ, कपड़ा बुनता हूँ और अब जाता हूँ।

धीवरकी बहू भी हाथमें माँस लेकर राजाके पास गई और बोली–

[५१] 'महाराज, तुम्हारी जय हो!'–'तू कौन है?'–'लुब्धक (धीवर) की बहू।'–'हाथमें यह क्या है?'–'मांस।'–'सूखा क्यों है?'–'यों ही'–और यदि महाराज! आपको कौतुक हो तो कहती हूँ कि–तुम्हारे शत्रुओंकी प्रियाओंके आँसूकी नदीके किनारे सिद्धोंकी स्त्रियाँ गान करती हैं। गीतमें अन्धे होकर हरिण चरते नहीं। इसलिये उनका यह मांस दुर्बल हो गया है।

इस प्रकार उक्ति-प्रयुक्तिमय ये दो काव्य सुनकर राजाने उन्हें नगरके भीतर स्थापन किया।

एक बार, कोई विद्वान्, जो गर्वोद्धत था, उस नगरके निवासियोंको घरमें ही गरजनेवाले समझकर अवज्ञापूर्वक वादके लिये आया। नगरके समीप किसी पुरुषसे (धोबीसे) जो वस्त्र धो रहा था बोला–'अरे साड़ीका मैल धोनेवाले! नगरमें क्या हालचाल हो रहा है?' वह बोला–

[५२] घोड़े तोरण लगे हुए मकानोंको ढोते हैं, गायें केसरके सहित कमलोंको चरती हैं, दही यहाँ-पर पीला मिलता है, तिलोंमें यहाँ तैल नहीं होता और मकानोंके दरवाजेके शिखरपर हिरण चरा करते हैं।

इसके बाद, किसी बालिकासे पूँछा–'तू कौन है?' तो वह बोली–

[५३] मरे हुए जहाँ जीता होते हैं, जिनकी आयु बीत गई है वे उच्छ्वसित होते हैं और अपने गोत्रमें जहाँ कलह होता है, मैं उस कुलकी बालिका हूँ।

इसका अर्थ न समझकर उसने विचार किया, कि जहाँ बालिका भी इस तरहकी वाचाली है वहाँके विद्वान् कैसे होंगे, वह उल्टे पाँव लौट गया।

---

[1] इस श्लोकमें 'टी' जिनके अंतमें है ऐसे पटी, कटी, कुटी, घटी, रुटी इत्यादि ११ शब्द आये हैं उन शब्दोंको गिनकर ११ लाखका भोजने उस कविको दान दिया ऐसा इसका तात्पर्य है।

४७) इसके बाद, एक दूसरे अवसरमें, राजा राजपाटीमें भ्रमणार्थ हाथीपर चढ़कर नगरके भीतर जा रहा था। उस समय किसी भिक्षुकको, पृथिवीपर गिरे हुए अन्न-कणोंको चुनते हुए देखकर बोला—

६७. अपना पेट भरनेमें भी जो असमर्थ हैं उनके जन्म लेनेसे क्या है?

—इस प्रकार उसके पूर्वार्ध कहनेपर;

सुसमर्थ होकर भी जो परोपकारी नहीं उनके [जन्म लेने] से भी क्या है?

६८. 'उनके [जन्म लेने] से भी क्या है'—यह कहनेपर, दानशूर भोजनरेन्द्रने उसको सौ हाथी और एक करोड़ सुवर्ण मुद्रायें दीं।

उसके इस वचनके अन्तमें [राजाने कहा]—

६९. हे जननि! ऐसा पुत्र न जन जो दूसरोंके आगे प्रार्थना किया करे।

उसके इस वाक्यके पश्चात् [भिक्षुक बोला]—

उसको भी उदरमें न धारण कर जो दूसरोंकी प्रार्थनाका भंग करे।

जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाने पूछा—'तुम कौन हो?' इस पर नगरके प्रधान पुरुषोंने कहा, कि आपके यहाँ, नाना भाँतिके विद्वानोंकी घटामें जब अन्य किसी उपायसे प्रवेश न पा सका तो इसी प्रपञ्चसे स्वामिदर्शनकी इच्छा रखनेवाला यह [व्यक्ति] राजशेखर है। उसको उचित महादानोंसे पुरस्कृत करनेपर उस राजशेखरने ये कवितायें पढ़ीं—

[५४] अच्छृंखल मेघोंके नादसे नाचती हुई मयूरियोंकी उन्नत आवाज़से आकुल, मेघागमन कालमें (वर्षामें) तो जमीनपर भी जल सुविधासे मिल जाया करता है। लेकिन, इस भयानक उष्णता भरे ग्रीष्म कालमें करुणासे एक दूसरेकी ओर देखनेवाली और इधर उधर ताकती हुई मछलियोंका यदि तू पालन नहीं करता, तो, रे कासार (तालाब) तेरी फिर सारता ही क्या है!

७०. जिस सरोवरमें, मेंढक मरे हुओंकी भाँति कोटरोंमें सो गये थे, कछुए पृथ्वीमें छिप गये थे, और गाढ़े पंकके ऊपर लोटनेसे मछलियाँ बारंबार मूर्छित हो रही थीं, उसी तालाबमें, अकालके मेघने उतरकर ऐसा किया कि उसमें कुंभस्थल तक डूबे हुए हाथियोंके झुंड पानी पी रहे हैं।

इस प्रकार अकालजलद राजशेखरकी यह उक्ति है।

*

राजा भोजकी गूजरातपर आक्रमण करनेकी इच्छा।

४८) इसके बाद, किसी साल, वर्षा न होनेके कारण राजा भीमके देशमें (गूजरातमें) जब, कण और तृण भी नहीं मिलता था ऐसे कुसमयमें, राजपुरुषोंने भोजका आना बताया (अर्थात्—भोजराजाने गूजरात पर चढाई करनेकी बात चलाई)। यह सुनकर भीमको चिन्ता हुई और उसने अपने दामर नामक सान्धि-विग्रहिकको आदेश किया कि कुछ दण्ड देकर इस साल भोजको यहाँ आनेसे रोको। उसका यह आदेश पाकर वह वहाँ गया। वह दामर अत्यंत कुरूप समझा जाता था। भोजने [उसका उपहास करनेकी दृष्टिसे] कहा—

७१. 'हे ब्राह्मण! तुम्हारे स्वामीके सन्धि-विग्रह पदपर तुम्हारे जैसे कितने दूत हैं?' [उत्तर—] 'यों तो बहुत ही हैं, हे मालव-नरेश! पर वे सब गुणकी दृष्टिसे तीन प्रकारके हैं—अधम, मध्यम और उत्तम। [इनमें] जो जिस गुणके योग्य होता है उसीके अनुसार ये दूत उन उन

राज्योंमें भेजे जाते हैं।' इस प्रकार भीतर ही भीतर हँसते हुए उत्तर देकर उसने धाराके स्वामी (भोज) को प्रसन्न किया।

इस प्रकार उसकी वचन-चातुरीसे राजा चमत्कृत हुआ। गूर्जर देशके प्रति प्रयाण करनेका राजाने नगाड़ा बजवाया। प्रयाणके समय बंदीने यह स्तुतिपाठ किया—

७२. चौड [का राजा] समुद्रकी गोदमें प्रवेश कर रहा है और आन्ध्र [पति] पर्वतकी खोहमें निवास कर रहा है, कर्णाटका राजा पट्ट बंध (पगड़ी बाँधना) नहीं करता है, गूर्जर [का राजा] निर्झरका आश्रय लेता है, चेदि [नरेश] अस्त्रोंसे म्लान होगया है और राजाओंमें सुभट समान कान्यकुब्ज कूबड़ा होगया है—हे भोज! तुम्हारे मात्र भैनातंत्रके प्रसारके भयसे ही सभी राजा लोक व्याकुल हो रहे हैं।

७३. कोंकण [का राजा] कोनेमें, लाट (नरेश) दरवाज़ेके पास, कलिङ्ग [पति] आँगनमें सोया करते हैं। अरे कोशल [नरेश], तू अभी नया है, मेरे पिता भी इस आसनपर सोया करते थे। इस प्रकार जिस (भोज) के कारागृहमें रातमें प्रत्यर्थियोंमें स्थानप्राप्तिके लिये उठा हुआ पारस्परिक विरोध निरंतर बढ़ाता रहता है।

प्रयाणके लिये नगाड़े बजवाये जानेके बाद, रातको समस्त राजाओंकी दुर्दशाका दृश्य दिखलानेवाला नाटक अभिनीत होने लगा। उसमें कोई क्षुद्र राजा, कारागारके भीतर सामनेकी ज़मीनपर सुख भावसे सोये हुए तैलिप राजाको उठाने लगा। तैलिपने उससे कहा—'मैं तो यहाँ पुश्त-दर-पुश्तसे वास कर रहा हूँ, आप जैसे नये आये हुए राजाकी बातसे अपना पद कैसे छोड़ दूँ!' राजा भोजने हँसकर दामरसे नाटकके रसावतारकी प्रशंसा की। इसपर वह बोला—'महाराज! यद्यपि नाटकमें रसकी जमावट बहुत उत्तम है तथापि इस नटकी, कथानायकके वृत्तान्तसे जो नितान्त अनभिज्ञता है वह धिक् है। क्यों कि राजा तैलिपदेव सूलीपर चढ़ाये हुए मुञ्जके सिरसे पहचाना जाता है। सभाके सामने जब उसने इस प्रकार कहा तो राजाको उसकी निर्भर्त्सनापर क्रोध हो आया और उसी समय उस सामग्रीके साथ, जो दूसरोंके जुटाये न जुट सकती थी, तिलङ्ग देशके प्रति प्रयाण किया।

४९) बादमें तैलिपदेवको बड़ी भारी सेनाके साथ आता हुआ सुनकर भोज व्याकुल हुआ। उतनेमें उसे दामरने [अपने] राजाके यहाँसे आये हुए एक कल्पित (जाली) आदेशको दिखाकर कहा कि भीम भी चढकर भोगपुरतक आगया है। जलेपर नामक छिड़कनेके समान उसकी उस बातसे राजा भोज खूब संचित हो गया। उसने दामरसे कहा—इस वर्ष किसी तरह तुम अपने स्वामीको यहाँ आनेसे रोको। उसने बार बार इस प्रकार दीनताके साथ कहा और उस अवसरके जाननेवाले [दामर] को हाथीके साथ हथिनी भेंट दी। उनको लेकर वह पत्तनमें आया और भीमको परितुष्ट किया।

५०) एक बार, जब वह धर्मशास्त्र सुन रहा था, उस समय अर्जुनका राधा-वेध (मत्स्य-वेध) सुनकर सोचा कि 'अभ्यास करनेपर क्या कठिन है।' फिर बराबर अभ्यास करके उस विश्वविदित राधावेधको उसने सिद्ध किया और उसकी सारे नगरवासियोंको जान हो इसलिये नगरमें खूब सजावट कराई। किन्तु एक तैली और एक दर्जीके, अवज्ञासे उत्सवमें कोई भाग न लेने पर, राजाको उसकी खबर की गई। तैलीने चंद्रशाला (ऊपरी छत) पर खड़े होकर, पृथ्वीपर रक्खे हुए संकड़े मुँहके पात्रमें तेल ढालकर; और दर्जीने पृथ्वीपर खड़े होकर ऊपरकी ओर उठाये सूतके डोरेके अग्रभागको आकाशसे पड़ती हुई सुईके छेदमें

पिरो कर अपने अभ्यास-कौशलका परिचय दिया; और फिर राजासे 'यदि शक्ति है तो स्वामी भी ऐसा कर दिखावें' ऐसा कह कर राजाका गर्व खंडित किया। [उसका राधावेध करना देखकर किसी कविने उसकी प्रशंसामें कहा—]

७४. हे भोजराज ! मैंने राधा-वेध (मत्स्य-वेध) का कारण जान लिया। वह यह कि आप 'धारा' के विपरीत (राधा) को नहीं सह सकते।

५१) विद्वानों द्वारा इस प्रकार प्रशंसित होते हुए उस राजाको नया नगर बसानेकी इच्छा हुई तो उसने पटह बजवाया। उस समय धारा नामक एक वेश्या अपने अग्निवेताल नामक पतिके साथ लंका जाकर उस नगरका निवेश देख आई; और उसने यह कह कर कि नगरको मेरा नाम देना, लंकाका प्रतिच्छन्द पट (मानचित्र) राजाको दिया। उसके अनुसार राजाने नई धारा नगरी बसाई।

*

दिगंबर कुलचन्द्रको सेनापति बनाना।

५२) किसी दिन वह राजा सायंकालके सर्वावसरके बाद अपने नगरके भीतर [वीरचर्या निमित्त] घूम रहा था, उसी समय किसी दिगंबर विद्वान्को यह कविता पढ़ते सुना—

७५. न किसी सुभटके सिरपर खड्गके टुकड़े किये, न तेजी घोड़ोंपर सवारी ही की और न गोरी स्त्रीको गले ही लगाई—इस प्रकार निरर्थक ही यह नग्न जन्म चला गया।

राजाने सवेरे ही उसको बुलाकर और वह संकेत सुनाकर उसकी शक्ति पूंछी। वह बोला—

७६. महाराज ! रमणीय दीपोत्सवके बीत जानेपर जब हाथियोंका मद झरने लगेगा तो मैं अपनी शक्तिसे गौडदेशके साथ सारे दक्षिणापथको एक छत्र नीचे कर दूँगा।

उसने अपना ऐसा पौरुष प्रकट किया तो राजाने उसे [योग्य समझकर] सेनापतिके पद पर अभिषिक्त किया।

कुलचन्द्रकी गुजरातपर चढ़ाई।

५३) इधर, जब राजा भीम सिन्धु देशकी विजयमें रुका हुआ था, [वह दिगम्बर] सारे सामन्तोंके साथ, अणहिलपुर पर आक्रमण करके, उसके धवलगृहके घटिकाद्वार पर, कौड़ियाँ वपन कराकर उसने जयपत्र ग्रहण किया। तबसे सर्वत्र "कुलचन्द्रने लूट लिया" [कहावत] की प्रसिद्धि हुई। वह जयपत्र लेकर मालवामें गया। श्रीभोजको यह वृत्तान्त विदित किया। 'तुमने वहाँपर कोयला क्यों नहीं बोया ? [इन कौडियोंके बोनेसे तो यह सूचित होता है कि भविष्यमें] यहाँसे कर वसूल होकर गूर्जर देशमें जायगा।' इस प्रकार सरस्वती-कण्ठाभरण श्रीभोजने [यह भविष्यवचन] कहा।

५४) एक बार चन्द्रातप (चाँदनी) में श्रीभोज राजा बैठे थे, पास-ही-में कुलचंद्र भी था। पूर्ण चन्द्रमण्डलको देखकर [पुनः पुनः उसकी ओर देखकर] (राजाने) यह पढ़ा—

७७. जिन लोगोंका रात प्रियाके साथ क्षणभरकी तरह व्यतीत हो जाती है, चन्द्रमा उनके लिये शीतल है; किन्तु विरहियोंके लिये तो उल्काके समान सन्तापदायक है।

उस कविके इस प्रकार आधा कहनेपर कुलचन्द्र बोला—

हम लोगोंके न तो प्रिया है और न विरह है, इसलिये दोनों ओरसे भ्रष्ट होनेके कारण हमको तो चंद्रमा दर्पणकी आकृतिके समान दिखाई देता है। न वह उष्ण है, न शीतल।

ऐसा कहनेके अनन्तर ही उसे पुरस्कारमें एक वेश्या प्रदान की गई।

■

५५) इसके बाद, मालव मण्डलसे लौटे हुए दामर नामक सन्धि-विग्रहिकने भोजकी सभाका वर्णन करते हुए [सबको] बहुत आश्चर्य उत्पन्न किया । और वहाँ (मालवामें) जाकर भीमके अलौकिक रूप सौन्दर्यके वर्णनसे भोजको उसे देखनेकी इच्छासे चञ्चल कर दिया । भोजने अनुरोध किया कि 'या तो भीमको यहाँ ले आओ या मुझे वहाँ ले चलो ।' इसी तरह भोजकी सभाको देखनेके लिये उत्कण्ठित भीमने भी वैसा ही अनुरोध किया । किसी एक समय, उपायोंका जाननेवाला वह (दामर) बहुतसा उपहार लेकर भीमको, जो विप्रका वेश धारण किए हुए था और हाथमें पानदान लिये था, साथ लेकर भोजकी सभामें गया। प्रणाम करते हुए उस दामर को [भोजने भीमके] ले आनेके वृत्तान्तके बारेमे पूछा। उसने कहा– 'हमारे स्वामी स्वतन्त्र हैं, जो काम उनको अभिमत नहीं उसे जबर्दस्ती कौन करा सकता है। महाराजको ऐसी दुराशा सर्वथा धारण नहीं करना चाहिये ।' भोजने भीमकी उम्र, वर्ण और आकृति पूँछी। दामरने सभामें बैठे हुए लोगोंके देखते हुए, पान-दान धारण करनेवालेको लक्ष्य करके कहा–स्वामिन् !

७८. यही आकृति है, यही वर्ण है, यही रूप और यही अवस्था है । इसमें और उस राजामें अन्तर केवल काच और मणिके समान है ।

इस प्रकार उसके बतानेपर, चतुर चक्रवर्ती भोजने सामुद्रिक शास्त्रके आधारपर, उस निश्चल दृष्टि-वालेको ही राजा [यही भीम है ऐसा] जब समझ लिया तो, उपायन वस्तुयें (भेंटकी चीजें) ले आनेके बहानेसे उस सन्धि-विग्रहिक (दामर) ने उसे बहार भेज दिया। जब वे (भेंटकी) चीजें आ गई तो दामरने उनका गुण वर्णन करके तथा इधर उधरकी बातें करके बहुत-सा काल काट दिया । जब राजाने कहा कि–'वह पान-दानवाला अभीतक क्यों नहीं आया, कितना विलम्ब करता है!' तो उस (दामर) ने बताया कि वही तो भीम था। तब राजा उसके पीछे सैन्य दौडाने लगा। इसपर दामरने कहा–'बारह बारह योजनके अन्तरपर सवारीके घोड़े खडे हैं, और एक घडीमें योजनभर चली जानेवाली करभियाँ (साँढनियाँ) रखी हैं । इन सारी सामग्रियोंसे भीम प्रतिक्षण बहुत-सी भूमि तै करता चला जा रहा है। आप उसे कैसे पकडेंगे !' उसके ऐसा बतानेपर वह देर तक हाथ मलता रहा ।

[यहाँपर Pb संज्ञक आदर्शमें निम्नलिखित प्रकरण अधिक पाये जाते हैं–]

इसके बाद एक दूसरे साल, भीम उस डामर को मालव मण्डलमें भेजनेकी इच्छासे वार्ता आदि (नीति) सिखा रहा था । डामरने उठकर वस्त्र झाड लिया । तब भीम ने [कारण] पूछा । वह बोला– आपका सिखाया हुआ यहीं छोड जाता हूँ । क्यों कि वहाँ जाकर तो मुझे स्वयं ही अवसरोचित बोलना पड़ेगा। दूसरेका सिखाया कितना काम आ सकता है। इसके बाद राजाने उसकी अवसरोचित चातुरी जाननेके लिये, प्रच्छन्न भावसे, सोनेके डिब्बेको राखसे भरकर उसके हाथमें, यह सिखाकर भेंट देनेको कहा कि भोजकी सभाके सिवा अन्यत्र कहीं भी इसे न खोलना । उसे लेकर वह मालवामें गया। भोज की सभामें जाकर उस डिब्बेको, जो अनेक रेशमी वस्त्रोंसे वेष्टित था, राजाको भेंट किया । जब राजाने उसे खोलकर देखा तो भीतर राखका पुञ्ज था । तब राजाने कहा–'अजी, यह कैसी भेंट है!' हाज़िर जवाब डामर ने तत्काल कहा–'महाराज श्रीभीमने एक कोटिहोम कराया है। यह उसीकी रक्षा है, जो तीर्थके समान पवित्र है । प्रीति-सम्बन्धसे उन्होंने आपको भेंट किया है।' उसके ऐसा कहनेपर, राजाने प्रसन्न होकर, अपने हाथसे सब लोगोंको वह थोड़ी थोडी दी । उन सबोंने उससे तिलक करके उसका वंदन किया। अन्तःपुरमें भी वह रक्षा भेजी गई। बादमें वह डामर सम्मानित होकर, प्रति-प्राभृतके (भेंटके बदलेमें दी हुई भेंटके) साथ लौट आया। भीमको जब यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो उसने भी उसकी पूजा (सम्मानना) की।

पुनः एक वार भी म के चित्तमें कौतुक उत्पन्न हुआ। उसने एक वार डा म र के हाथमें अपनी मुद्रासे मुद्रित (मुहर किया हुआ) लेख दिया और हाथमें भेंटकी सामग्री देकर उसे मा ल वा में भेजा। उसने उस भेंटके साथ वह लेख राजाको दिया। राजाने जब खोलकर पढ़ा तो, उसमें लिखा मिला कि–'इसको आप शीघ्र ही मार डालिये।' तब विस्मयके साथ राजाने पूछा–'अजी, इसमें यह क्या लिखा है?' तब उस शीघ्रबुद्धिने कहा–'महाराज! मेरी जन्म-पत्रिकामें ऐसा लिखा है कि जहाँ इसका रुधिर पड़ेगा वहाँ बारह वर्षतक अकाल पड़ेगा। यही जानकर भी म ने, स्वदेशके विनाशसे भीत होकर, प्रच्छन्न लेखके साथ मुझे यहाँ भेजा है। ऐसी स्थिति होनेपर आप अपनी रुचिके अनुसार करें।' उसके ऐसा कहनेपर राजाने कहा–'मैं अपने देशकी प्रजाको अनर्थमें नहीं पड़ने दूँगा।' इसके बाद, उसका सम्मान करके उसे विदा किया और वह अपने देशमें आया। उसकी बुद्धिके कौशलसे चमत्कृत होकर भी म उसे बहुत मानने लगा।

*

महाकवि माघका प्रवन्ध।

५६) इसके बाद, भो ज राजा मा घ पंडितकी विद्वत्ता और पुण्यवत्ताको सदा सुनकर उसके दर्शनकी उत्सुकतासे अनेक राजकीय आदेश बारंबार भेजकर श्री मा ल न ग र से जाड़ेके दिनोंमें उसे अपने यहाँ बुलाया और अत्यन्त मानके साथ भोजनादिसे उसका सत्कार किया। बादमें राजोचित विनोदोंको दिखाकर और रातकी आरतीके अनन्तर अपने निकट ही, अपने ही समान पलँगपर सुलाकर, उसे अपनी निजकी शीतरक्षिका (रजाई, लिहाफ़) ओढ़ने दी और चिरकाल तक उसके साथ प्रिय आलाप करता हुआ सुखपूर्वक सो गया। प्रातःकाल मांगल्य तुर्यनादसे जब राजाकी नींद खुली तो मा घ पंडितने घर जानेके लिये विदा माँगी। राजाने विस्मित होकर अगले दिनके भोजन आच्छादन आदिके सुखकी बात पूँछी। उसने कहा–'उस अच्छे-बुरे अन्नकी बात रहने दीजिये।' और कहा कि शीतरक्षिका (रजाई) के भारसे तो मैं थक-सा गया। राजाने अपना खेद प्रकट करते हुए किसी प्रकार जानेकी अनुज्ञा दी। नगरके उपवन तक राजाने अनुगमन किया। मा घ पंडितने भी कहा कि कभी अपने आगमनसे मुझे भी धन्य करें। राजाकी अनुज्ञा लेकर मा घ पंडित अपने स्थानपर आया। उसके बाद, कितनेएक दिन बीतनेपर, भो ज राजा उसकी विभव-सामग्री देखनेकी इच्छासे श्री मा ल न ग र में आया। मा घ पंडितके द्वारा अगवानी आदिसे यथोचित सत्कृत होकर वह अपनी सारी सेनाके साथ उसकी घुड़सालमें ठहरा। फिर वह अकेला मा घ पंडितके महलमें गया। वहाँ उसने सञ्चारक भूमि (महलमें जानेकी पगडंडी) को काचसे जड़ी देखी। स्नान करनेके बाद, देवताके मन्दिरमें जानेपर, वहाँकी भूमिपर, जिसका गच मरकतका था, शैवाल सहित जलकी भ्रान्तिसे धोती और चादरको समेटने लगा। तब पुरोहितने उसका स्वरूप बतलाया। फिर देवताकी पूजा की। बाद जब मंत्रावसर समाप्त हुआ तो, भोजनके समय आई हुई रसोईका आस्वादन किया। ऐसे ऐसे व्यंजनों और फलोंको देखकर, जो उस काल और उस देशमें नहीं होते थे, वह चित्तमें बड़ा विस्मित हुआ। संस्कार किये दूध और चावलकी बनी रसोईका आकण्ठ उपभोग किया। भोजनके अन्तमें चन्द्रशालापर आरोहण करके, ऐसे ऐसे काव्यों, कथाओं, इतिहासों और नाटकोंको देखा, जिन्हें इसके पहले कहीं देखा या सुना नहीं था। जाड़ेके दिनोंमें भी उसे अकस्मात् उग्र ग्रीष्म ऋतु हो जानेकी भ्रान्ति हुई। उस समय सफेद स्वच्छ वस्त्र पहने, हाथमें तालके पंखे लिये हुए अनुचर उसको हवा करने लगे। उसके वस्त्रोंमें सुन्दर चन्दन लेप दिया गया और उस रातको उसने क्षणभरकी नांई बिता दी। सबेरे जब शंखके नादसे राजाकी नींद खुली तो मा घ पंडितने शीतकालमें अकस्मात् कैसे ग्रीष्म ऋतु उतर आई इसका स्वरूप समझाया। [इस प्रकार प्रत्येक क्षण विस्मयके साथ बिताता हुआ

कुछ दिनोंतक वहाँ रहकर] स्वदेशगमनके लिये विदा माँगते हुए, अपने बनाये हुए नये भोजस्वामी मन्दिरके पुण्यको उसे समर्पण कर माळवमण्डलको प्रस्थान किया।

माघ के जन्म दिनके समय उसके पिताने ज्योतिषीसे जन्मपत्र बनवाया था। ज्योतिषीने उसमें लिखा था कि पहले तो इसकी समृद्धि बराबर बढ़ती जायगी; पर बाद में (पिछली अवस्थामें) विभव नष्ट हो जायगा और चरणोंमें कुछ सूजन आ कर मृत्यु प्राप्त करेगा। माघ के पिताने अपने विभव-सम्भारसे ग्रहदशाका निवारण करना चाहा और यह सोचा कि मनुष्यकी आयु यदि सौ वर्ष की होगी, तो ३६ हज़ार दिन होंगे, एक नया कोश (निधि) बनवा कर उसमें उतनी ही संख्याके मणियोंका हार बनाकर रख दिया। इससे सैकडों गुनी अधिक और समृद्धि रख दी। लड़केका नाम माघ रखा और अपने कुलके उचित शिक्षा दे कर और यह समझ कर कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया, वह मर गया। इसके बाद माघ कुबेरकी भाँति विशाल समृद्धि-साम्राज्य पाकर, विद्वज्जनोंको उनकी इच्छाके अनुसार धन देने लगा। अपरिमित दानसे अर्थि-जनोंको कृतार्थ करते हुए और भोगकी विधिसे अपनेको अमानुषकी भाँति दिखाते हुए, उसने 'शिशुपालवध' नामक महाकाव्य बनाया। इस काव्यको देखकर विद्वानोंका मन चमत्कृत हो गया। अन्तमें पुण्य-क्षय होने पर जब उसका धन क्षीण हो गया और विपत्तिका समय आ गया, तो उसने अपने देशमें रहना अयुक्त समझ कर, अपनी स्त्रीके साथ माळवमण्डल में जा कर धारा नगरीमें वास किया। राजा भोज के पास पत्नीको यह कह कर भेजा कि मेरा पुस्तक है उसे बंधक रख कर, राजाके पाससे कुछ भी द्रव्य ले आओ। स्वयं उसकी आशामें चिरकाल तक बैठा रहा। उधर भोजने उसकी स्त्रीकी वह अवस्था देखकर संभ्रमके साथ उस पुस्तकको हाथमें लिया और उसकी शलाका निकाल कर उसे खोला तो उसमें पहला ही यह काव्य देखा—

> ७९. कुमुदवनकी शोभा नष्ट हो गई और कमलोंका समूह शोभान्वित हो उठा। घूक हर्ष छोड़ रहा है और चकवा प्रीतिमान् हो रहा है। सूर्यका उदय हो रहा है और चन्द्रमाका अस्त। अहो, दुर्भाग्यके खेलका परिणाम 'ही' विचित्र है।

काव्यका मर्म समझकर भोजने कहा कि सारे ग्रंथकी तो बात ही क्या है, इसी एक काव्यके मूल्यके लिये पृथ्वी भी दे दी जाय तो वह कम है। समयोचित और अनुच्छिष्ट इस 'ही' शब्दके पारितोषिकमें ही एक लाख रुपये दे कर राजाने उसे विदा किया। वह भी जब वहाँसे चली तो याचकोंने उसे माघकी पत्नी समझकर माँगना शुरू किया। इस पर उसने वह सारा-का-सारा पारितोषिक उन याचकोंको दे दिया और स्वयं ज्यों की त्यों घर लौटी। उसने अपने पतिको, जिसके चरणमें कुछ सूजन हो आई थी, उस वृत्तान्तको कह सुनाया। इस पर माघने यह कह कर उसकी प्रशंसा की कि—'तुम्हीं मेरी शरीर-धारिणी कीर्ति हो।' इसी समय एक भिक्षुकको, जो उसके घरपर आया था, देखा। घरमें उसे देने योग्य कुछ न देखकर दुःखके साथ वह बोला—

> ८०. धनतो है नहीं, और दुराशा भी मुझे छोड़ती नहीं। मैं बुरी तरहसे बहका हुआ हूँ और फिर त्यागसे हाथ भी संकुचित नहीं होता। याचना करना लघुताका कारण है और आत्महत्यामें पाप लगता है। अतः हे प्राणों! तुम स्वयं चले जाओ तो अच्छा है। मुझे इस प्रकार दुःख देनेसे क्या होगा!।

> ८१. दारिद्र्यकी आगका जो सन्ताप था वह तो सन्तोष रूपी जलसे शान्त हो गया; किन्तु दीन जनोंकी आशा भंग करनेमें जो [सन्ताप] पैदा हुआ है, यह किससे शान्त होगा!।

> ८२. अकालमें भिक्षा कहाँ! बुरी अवस्थावालोंको ऋण क्योंकर मिले! भू-स्वामियोंसे काम क्योंकर

करावें [। और दान भी कौन देना चाहे, जब कि] बिना दान दिये यह सूर्य भी अस्त हो जाता है । [इस प्रकार] हे गृहिणी ! कहाँ जायें, और क्या करें ? जीवन-विधि बड़ा गहन हो गया है ।

८३. भूखसे कातर बना हुआ यह पथिक मेरा घर पूछते पूछते कहींसे आया है, सो हे गृहिणी ! क्या कुछ है कि इस बुभुक्षितको खानेको दिया जाय ? '–पत्नीने वचनसे तो ' है ' यह कहा लेकिन फिर ' नहीं है ' यह बात बिना अक्षरोंके ही, चंचल नेत्रोंसे टपकते हुए बड़े बड़े अश्रुबिन्दुओंसे सूचित की ।

८४. हे प्राणों ! जाओ, याचकके व्यर्थ लौट जानेपर, चले जाओ; बादको भी तो जाना है; ' फिर ऐसा साथी कहाँ मिलेगा ? '

' फिर ऐसा साथी कहाँ मिलेगा ? '–इस वाक्यके बोलते ही माघ पण्डितकी मृत्यु हो गई ।

प्रातःकाल राजा भोजने उस वृत्तान्तको सुनकर, श्रीमालनगरमें [अनेक] धनवान् सजातियोंके रहते हुए भी, जो ऐसा पुरुष-रत्न क्षुधापीड़ित होकर मर गया, इसलिये उसने उस जातिका नाम ' भिल्लमाल ' * ऐसा रख दिया ।

इस प्रकार श्री माघपण्डितका प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

महाकवि धनपालका प्रबन्ध ।

५७) प्राचीन कालमें, समृद्धिसे विशाल ऐसी विशाला (उज्जयिनी) नामक नगरीमें, मध्यदेशोत्पन्न संकाश्य गोत्रीय सर्वदेव नामक ब्राह्मण वास करता था। जैनदर्शनके संसर्गसे उसका मिथ्यात्व प्रायः शान्त हो गया था । उसके दो पुत्र थे जिनका नाम धनपाल और शोभन था । एक बार श्रीवर्द्धमान सूरि वहाँ आये । गुणानुरागी होनेके कारण सर्वदेवने उन्हें अपने उपाश्रयमें निवास कराया और अपनी अनन्य भक्तिसे उन्हें सन्तुष्ट किया । उन्हें ' सर्वज्ञ-पुत्रक ' जानकर गुम हो जानेवाली पूर्वजोंकी निधिके बारेमें पूँछा । उन्होंने वचन-चातुरीसे पुत्रोंका आधा हिस्सा माँग लिया । संकेत बतानेपर निधि मिली । जब वह आधा भाग देने लगा तो सूरिने दोनों पुत्रोंमेंसे आधा हिस्सा माँगा । धनपालने, जिसकी मति मिथ्यात्वके कारण अन्धी हो रही थी, जैन मार्गकी निन्दा करते हुए नहीं कर दी । छोटे लड़के शोभन पर कृपा-परायण हो कर, पिताने उसको देना नहीं चाहा । इसपर उसने अपनी प्रतिज्ञाके भंग होनेके पापको तीर्थमें जाकर प्रक्षालन करनेकी इच्छासे, तीर्थके प्रति प्रस्थान करना निश्चित किया । पितृभक्त शोभन नामक छोटे पुत्रने, उसको उस आग्रहसे रोककर, पिताकी प्रतिज्ञाका पालन करनेके लिये जैन दीक्षाव्रत ग्रहण कर स्वयं गुरुका अनुसरण किया । धनपाल समस्त विद्याओंका अध्ययन करके श्री भोजके प्रसाद-प्राप्त समस्त पंडित-मण्डलमें सुप्रतिष्ठ हुआ और फिर अपने सहोदरकी ईर्ष्यासे बारह वर्षतक अपने देशमें जैन दर्शनियोंका आगमन निषिद्ध कराया ।

---

* श्रीमाल नगरका दूसरा नाम भिल्लमाल भी है । वर्तमानमें वह स्थान इसी नामसे प्रसिद्ध है । श्रीमाली जातिके वैश्य और ब्राह्मण कुल इसी स्थानसे निकले हुए हैं । श्रीमालका दूसरा नाम भिल्लमाल ऐसा कब और क्यों पड़ा इसका अन्य कोई दूसरा ऐतिहासिक उल्लेख अभी तक प्राप्त नहीं हुआ । महाकवि माघकी जन्मभूमि श्रीमाल थी यह बात कविके कथन ही से सिद्ध होती है, लेकिन उसकी मृत्युका जो यह करुण वृत्तान्त मेरुतुङ्गाचार्यने लिखा है और उसी प्रसंग परसे भोज राजाने श्रीमालका नाम भिल्लमाल रख दिया यह जो उल्लेख किया है, इसकी सत्यताके लिये और कोई सुनिश्चित प्रमाण जबतक प्राप्त न हो तबतक इस कथनको एक किंवदन्तीके रूपमें ही समझना चाहिए । माघ और भोजकी समकालीनता भी सन्दिग्ध है । और कम-से कम यह भोज प्रसिद्ध धारापति परमारवंशीय राजा भोज तो किसी तरह संभवित नहीं है । इसकी विशेष विवेचना अगले ऐतिहासिक अवलोकनवाले खंडमें की जायगी ।

उस देशके उपासकोंद्वारा अत्यन्त अभ्यर्थनाके साथ गुरुको बुलानेपर, सकल शास्त्ररूपी समुद्रके पारको प्राप्त कर लेनेवाला वह शोभन नामक तपोधन गुरुसे अनुमति लेकर वहाँ आया। धारा में प्रवेश करते ही, पंडित धनपालने, जो उस समय राजपाटिकामें [राजाके साथ] भ्रमणमें जा रहा था, उसे न पहचान कर, उपहासके साथ कहा–' गर्दभदन्त (गधेके समान दाँतवाले) भदन्त, तुमको नमस्कार!' इसपर उसने– ' कपिके वृषणके समान मुँहवाले मित्र, तुम्हें सुख हो!' [इस प्रकार प्रत्युत्तर दिया। तब चमत्कृत होकर धनपालने सोचा कि मैंने तो दिल्लगीमें भी 'नमस्ते' कहा और इसने तो 'मित्र तुम्हें सुख हो'] इतना ही कहकर अपनी वचन-चातुरीसे मुझे जीत लिया। फिर धनपालके यह कहने पर कि 'आप किसके अतिथि हैं?' शोभनमुनि ने कहा–' हमें आपके ही अतिथि समझिये!' उसकी यह बात सुनकर एक विद्यार्थीके साथ उन्हें अपने स्थानपर भेजकर वहीं ठहराया। स्वयं घर आकर धनपाल ने प्रिय आलापोंके साथ उसे सपरिकर भोजनके लिये निमंत्रित किया। पर वे तपोधन तो प्रासुक (अनुद्दिष्ट) आहार भोजी थे इसलिये उन्होंने निषेध किया। आग्रहपूर्वक जब उसने दोषका हेतु पूँछा तो कहा–

८५. मुनि म्लेच्छ कुलसे भी मधुकरी वृत्तिके साथ भिक्षा ग्रहण करे परन्तु बृहस्पतिके समान श्रेष्ठ कुलीन एक ही गृहस्थके वहाँ भोजन न करे।

इसी प्रकार जैन धर्मके दशवैकालिक सूत्रमें भी कथन है–

८६. जो अनिश्रित हो कर मधुकरके समान नाना स्थानोंमेंसे अपना भिक्षापिण्ड प्राप्त करते हैं उन्हीं शुद्ध और दान्त भिक्षुओंको साधु कहते हैं।

इस प्रकार, अपने धर्ममें और परधर्ममें भी, निषिद्ध ऐसे कल्पित आहारको त्याग करके हम लोग शुद्ध भोजन ग्रहण करते हैं। धनपाल उनके चरित्रसे चकित होकर चुप हो रहा और उठकर स्नान करने चला गया। स्नानके आरम्भमें ही अचानक भिक्षाचर्याके लिये आये हुए उन दो मुनियोंको देखा। उन्हें एक ब्राह्मणी, रसोई तैयार न होनेके कारण, दही देने लगी। मुनियोंने पूँछा कि दही कितने दिनोंका है? तो धनपाल ने मज़ाक करते हुए कहा 'क्या कोई उसमें कीड़े पड़ गये हैं?' ब्राह्मणीने जवाब दिया कि इसे दो दिन बीत चुके हैं। यह सुनकर दोनों मुनि बोले कि–हाँ कीड़े पड़ गये हैं! यह सुनकर धनपाल उसे देखनेके लिये स्नानसे उठकर वहाँ आया। पात्रमें रखे हुए दहीके पास ही एक महावर (लाख) का ढेला रखा जिस पर उन जीवोंने चढ़कर उसे दहीके समान ही सफ़ेद कर दिया। धनपाल ने यह देखा और सोचा कि जैन धर्ममें जीवरक्षाकी ही प्रधानता है; और उसमें भी जीवोत्पत्ति विषयक ज्ञानका वैदग्ध्य [विशिष्ट प्रकारका] है। जैसा कि कहा है–

८७. मूंग और उड़द इत्यादि द्विदल धान्य जो कच्चे गोरसमें पड़े तो उसमें त्रस (द्वीन्द्रियादि) जीवोंकी उत्पत्ति होती है; और तीन दीनके बाद दहीमें भी जीवोंकी उत्पत्ति हो जाया करती है।

यह बात एक जैन शास्त्रमें ही कही गई है। ऐसा निश्चय करके शोभनमुनिके शुभोपदेशसे सम्यक् विचार पूर्वक उसने सम्यक्त्व (जैन धर्म) ग्रहण किया। [इतने दिनोंके बाद अपने मिथ्यात्वको समझते हुए, शोभनसे ही पूँछा कि मेरे भाईको भी कहीं देखा है? शोभन ने वय, आकृति और गुण आदिमें अपने-ही-से उसकी तुलना की। इसपर उसने अनुमानसे समझा कि यही मेरा भाई है। यह निश्चय करके आनन्दाश्रु त्याग करते हुए उसे आलिंगन करके अपने लड़केको भेज कर उसके गुरुको भी बुलाया।] स्वभावतः ही धनपाल बड़ा बुद्धिमान था अतएव कर्मप्रकृति प्रभृति जैन-विचार-ग्रंथोंमें भी बड़ा प्रवीण हुआ। प्रति दिन सबेरे जिन पूजाके अन्तमें–

८८. अहो ! मैंने इसके पहले मोहवश, कुछ ही नगरोंके स्वामीका, जो शरीर दे देनेपर भी दुर्ग्रहणीय है, मति-दान करते हुए अनुसरण किया । इस समय ऐसे त्रिभुवनपति प्रभु मिल गये हैं जो बुद्धि-ही-से आराध्य हैं और जो अपना पद तक दे देनेवाले हैं । इससे उन प्राचीन दिनोंका बीत जाना खेदकारक हो रहा है ।

८९. हे जिन ! जबतक मैंने तुम्हारा धर्म नहीं जाना था तबतक समझता था कि धर्म सब कहीं है । जिस प्रकार धतूरेके विषसे आतुर रोगीको सब कुछ सोना (पीतवर्ण) ही सोना दिखाई देता है; और कोई सफेद वस्तु नजर नहीं आती ।

[५५] घासके जैसे निःसार ऐसे उन करोडों श्लोकोंको पढ लेनेसे भी क्या होता है—यदि जिससे 'दूसरेको पीडा न पहुँचाना' इतना भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता ।

[५६] देशका मालिक [तुष्ट होनेसे] एक गाँव देता है, गाँवका मालिक एक खेत देता है, खेतका मालिक शिम्बिका (सेम, छीमी) देता है परन्तु सार्व (सर्वज्ञ जिन) तो सन्तुष्ट होकर अपनी सारी सम्पद दे देते हैं !

इत्यादि वाक्योंको पढ़ा करता । एक दिन राजाने धनपालको शिकार खेलनेके लिये साथ ले लिया । राजाने जब बाणसे मृगको विद्ध किया, तो उसके वर्णनके लिये धनपालके मुँहकी ओर देखा । धनपाल बोला—

९०. इस तरहका पौरुष रसातलको चला जाय । यह कुनीति है कि निर्दोष और शरणागतको मारा जाय । बलवान् भी जब दुर्बलको मारते हैं तो यह बडे दुःखकी बात है । जगत् अराजक हो गया ।

उसकी इस निर्भर्त्सनासे क्रुद्ध राजाके यह पूछने पर कि यह क्या बात है—

९१. प्राणान्तके समय यदि तृण भक्षण करना चाहे तो वैरी भी छोड दिया जाता है, तो फिर ये पशु तो सदा तृण ही खाकर जीते रहते हैं, ये क्यों मारे जाते हैं ?

राजाको इस कथनसे अद्भुत कृपा उत्पन्न हुई । उसने धनुष्य बाणके भंगको स्वीकार करके आजीवनके लिये मृगयाका त्याग किया । बादमें नगरकी ओर जब लौट रहा था, तो यज्ञमण्डपके यज्ञस्तंभमें बँधे हुए छाग (बकरे) की दीन वानी सुनकर पूँछा कि यह पशु क्या कह रहा है ? इस पर धनपालने कहा कि सुनिये—

९२. हे साधो, मैं स्वर्गफलको भोगनेके लिये तृषित नहीं हूँ, मैंने [इसके लिये] तुमसे प्रार्थना भी नहीं की । मैं तो केवल तृण खाकर ही सन्तुष्ट हूँ । तुम्हारा यह कार्य उचित नहीं । यदि तुम्हारे द्वारा यज्ञमें मारे हुए प्राणी निश्चय ही स्वर्गगामी होते हैं तो फिर अपने माता-पिता और पुत्रों तथा बाँधवोंका यज्ञ (बलिदान) क्यों नहीं करते ?

उसके इस वाक्यके अनन्तर जब राजाने कहा कि इसका क्या मतलब है ? तो फिर बोला कि—

९३. यूप (यज्ञ) करके, पशु मारकर और खूनका कीचड बना कर यदि स्वर्गमें जाया जाता है तो फिर नरकमें कैसे जाया जाता है ?

९४. सनातन यज्ञ तो उसका नाम है, जिसमें सत्य तो यूप हो, तप ही अग्नि हो और अपने सारे कर्म समिध् (काष्ठ) हो, अहिंसाकी [उसमें] आहुति दी जाय ।

इस प्रकार, शुकसंवादमें कहे हुए वचनोंको उसने राजाके सामने पढ़ा और [ब्राह्मणोंको] जो हिंसाशास्त्रके उपदेशक और हिंस-प्रकृति हैं, ब्रह्मरूपमें राक्षस बताते हुए, राजाको अर्हद्धर्म (जैन धर्म) की ओर प्रवृत्त किया ।

[इस जगह Pb आदर्शमें तो मूल ही में, पर B आदर्शके हाशियेपर निम्नलिखित कथोपकथन अधिक लिखा हुआ पाया जाता है।]

इसके बाद जब राजा गौकी वन्दना करने लगा तो धनपाल भैंसको नमस्कार करता हुआ बोला—

[५७] अपवित्र वस्तु खाती है, विवेक-शून्य है, आसक्त होकर अपने पुत्रसे ही रति करती है, खुरमसे और सींगसे जीवोंको मारती है। हे राजन्! ऐसी यह गौ किस गुणसे वन्दनीय है?।

[५८] दूध देनेके सामर्थ्यसे अगर यह गौ वन्दनीय है तो, भैंस क्यों नहीं है? भैंससे इसमें थोड़ी भी तो विशेषता नहीं दिखाई देती।

[५९] अमेध्य भक्षण करनेवाली गायोंका स्पर्श पापको हरनेवाला है, चेतनाहीन वृक्ष वन्दनीय है, छागका वध करनेसे स्वर्ग मिलता है, ब्राह्मणोंको खिलाया हुआ अन्न पितरोंको स्वर्गमें पहुँचता है, छल-कपटपरायण देवता आप्त पुरुष हैं, अग्निमें हवन किया हुआ हवि देवताओंको प्रीत करता है—इस प्रकारकी स्पष्ट दोषयुक्त और व्यर्थ श्रुतियोंके वचनोंकी लीलाको कौन ठीक मान सकता है?

[६०] जिनका [प्राणी-] वध तो धर्म है, जल तीर्थ है, गौ वन्दनीय है, गृहस्थ गुरु है, अग्नि देवता है, और ब्राह्मण पात्र है उनके साथ परिचय रखनेसे फल ही क्या हो।

एक बार, जिनपूजा करनेमें, दूसरोंसे पंडित (धनपाल) की विशेष एकाग्रता जानकर राजाने फूलकी डाली देते हुए कहा कि देवोंकी पूजा करो। धनपाल शिव आदि देवताओंके स्थानों पर यों ही घूमकर जिन देवकी पूजा करके चला आया। चार पुरुषके मुँहसे राजाने सारा वृत्तान्त जानकर पूजाका हाल पूँछा। उसने कहा कि महाराज! जहाँ [पूजाका उचित] अवसर हुआ वहाँ पूजा की। राजाने पूछा—'अवसर कहाँ नहीं हुआ?' पण्डित बोला—विष्णुके पास एकान्त कलत्र होनेसे; रुद्रके आधे शरीरमें पार्वती रहनेसे; ब्रह्माके यहाँ इस भयसे कि कहीं ध्यानभंग होनेके कारण शाप न दे दें; विनायकके यहाँ इसलिये कि वे थालीभर मोदक खा रहे थे, उनका स्पर्श मैंने रोका; चण्डिकाके यहाँ उनके शूलाग्रसे संत्रस्त महिष मेरे सामने न आ जाय इस भयसे, हनुमानके यहाँ उन्हें कोपपूर्ण देखकर यह भय हुआ कि कहीं चपेटादान न कर बैठें; इस तरह, [इन देवोंके स्थानमें] कहीं भी अवसर नहीं हुआ। और भी [शिवलिङ्गको देखकर तो मनमें विचार आया कि—]

[६१] इसके शिरके बिना पुष्पमाला व्यर्थ है, और जब ललाट ही नहीं है तो पट्टबन्ध कैसे हो? जिसके कान और आँख नहीं हैं उसके लिये गीत और नृत्य कैसे? और जिसके पैर ही नहीं उसको मेरा प्रणाम कैसा?

इत्यादि बातें कहने पर, राजाने कहा—'फिर अवसर हुआ भी कहीं?' तब पंडितने 'प्रशमरसनिमग्नं' और 'नेत्रे सारसुधा' इत्यादि (वचन बोलकर) और इसी प्रकारकी बातें कह कर अन्तमें कहा कि [इस प्रकार] जैनालयमें सदा अवसर रहता है, अतः वहीं मैंने पूजा की।

[६२] इसके बाद—एक दूसरे दिन, शिवमन्दिरके द्वारदेशमें भृंगीगणको देख कर राजाने धनपालसे पूछा कि—यह दुर्बल क्यों है? वह बोला—[भृंगी शिवकी निम्न प्रकारकी विचित्र] लीलायें देखकर सोचता रहता है कि—

[६३] यदि यह (शिव) दिगंबर है तो इसको धनुषसे क्या काम है? अगर धनुष्य है ही तो भस्म क्यों? यदि भस्म भी हुआ तो स्त्री क्यों? और यदि स्त्री है तो फिर कामसे द्वेष क्यों है?—इस प्रकारकी अपने स्वामीकी परस्पर विरुद्ध चेष्टाओंको देखकर [यह भृंगी हैरान हो रहा है और इसी लिये] शिराओंसे गाढ बँधे हुए अस्थि-शेष शरीरको धारण कर रहा है।

. . . . ५८) इसके अनन्तर एक बार राजा सरस्वतीकण्ठाभरण नामक प्रासादमें जा रहा था। उस समय धनपाल पंडितसे, जो सदा सर्वज्ञ-शासन (जैन धर्म) की प्रशंसा किया करता था, पूछा कि 'सर्वज्ञ तो कभी एक बार हुए थे। पर अब भी उस धर्ममें क्या कुछ ज्ञानातिशय है?' उसके ऐसा कहनेपर [धनपाल बोला–] 'अर्हत् विरचित (उपदिष्ट) अर्हन्तश्रीचूडामणि नामक ग्रन्थमें त्रैलोक्यके तीनों कालके वस्तु विषयके स्वरूपका परिज्ञान आज भी वर्तमान है।' उसके ऐसा कहनेपर राजाने पूछा कि 'हम लोग अभी इस तीन दरवाजेके मण्डपमें स्थित हैं। किस रास्ते होकर यहाँसे बहार निकलेंगे?' राजाको इस प्रकार शास्त्रपर कलंक लगानेको उद्यत होते देखकर उसने 'बुद्धि यह तेरहवीं मात्रा है' इस लोकोक्तिको सत्य करते हुए, भोजपत्रपर राजाके प्रश्नका निर्णय लिख कर उसे मिट्टीके गोलेमें रख दिया, और उसे ताम्बूलग्राहकको सौंपकर राजासे बोला कि 'महाराज, पधारिये!' राजाने अपनेको उसकी बुद्धिके जालमें फँसा समझा और सोचा कि इसने तीनमेंसे ही किसीका निर्णय किया होगा, इसलिये बढ़इयोंको बुलाकर मण्डपकी पट्टशिलाको हटवा दिया और उसी मार्गसे बहार निकला। फिर उस मिट्टीके गोलेको तोड़कर उसके लिखित अक्षरोंमें, निकलनेके लिये उसी मार्गके निर्णयको पढ़कर कौतुकसे चित्तमें चकित होता हुआ जैन धर्मकी ही प्रशंसा की।

(यहाँ D पुस्तकमें निम्नलिखित पद्य अधिक पाये जाते हैं–)

[६४] जो चीज़ विष्णु दो आँखोंसे, शिव तीनसे, ब्रह्मा आठसे, कार्तिकेय बारहसे, रावण बीससे, इन्द्र दस सौसे और जनता असंख्य नेत्रोंसे भी नहीं देख पाती, बुद्धिमान पुरुष उसीको एक प्रज्ञा-(बुद्धि) रूपी नेत्रसे स्पष्ट देख लेता है।

(Pb आदर्शमें यहाँ निम्नलिखित एक और कथन अधिक पाया जाता है–)

एक बार जलाशय (तालाब) के अच्छे-बुरे-पनके विषयमें पूछे हुई [तो पण्डितने कहा–]

[६५] सचमुच ही तालाबोंमेंका ठंडा और चंद्रमाकी किरणोंसे श्वेत बना हुआ जल खूब पी करके प्राणियोंकी सारी तृष्णा नष्ट हो जाती है और वे मनमें प्रमुदित होते हैं, परन्तु जब सूर्यकी किरणें उसे सोख लेती है तो [उसमेंके] अनन्त प्राणी विनष्ट हो जाते हैं और इसीलिये मुनि-लोग कुआँ बावड़ी आदिके बननेके विषयमें उदासीन भाव प्रकट करते हैं।

एक बार राजा अपने बनवाये हुए बहुत बड़े नये तालाबके पास गया। वहाँ पण्डितसे पूछा कि यह धर्मस्थान कैसा है। धनपाल बोला–

[६६] तड़ागके बहाने यह आपकी [एक] दानशाला है जिसमें सदा ही मछली आदि जलजन्तु अच्छी तरहकी रसोई है और जिस स्थानपर बक, सारस, चक्रवाक आदि [मत्स्य भोजी दान ग्रहण करनेवाले] पात्र हैं; वहाँ कितना पुण्य होता होगा सो तो हम नहीं जान सकते।

इससे राजा [मनमें] कुपित हुआ। नगरको आते समय बालिकाके साथ एक बुढ़ियाको वृद्धावस्थासे सिर धुनती हुई देखकर राजाने पूछा–'यह सिर क्यों धुन रही है?' तब धनपाल बोला–

[६७] क्या यह नंदी है, या विष्णु? क्या कामदेव है या चंद्रमा? क्या विधाता है अथवा विद्याधर है? क्या इन्द्र है, कि नल है, कि कुबेर है? ना, ना, यह नहीं है, यह भी नहीं है, यह भी नहीं है, बिल्कुल यह नहीं, यह भी नहीं, यह भी नहीं, और यह भी नहीं, यह तो क्रीड़ा करनेमें प्रवृत्त ऐसा हे सखे! स्वयं राजा भोजदेव है।

[इसके सिरके धुननेका यह मतलब है–ऐसा कह कर] इस श्लोकसे रुष्ट राजा को सन्तुष्ट किया।

५९) इसके बाद, धनपालने ऋषभ-पञ्चाशिका स्तुतिकी रचना की। सरस्वतीकण्ठाभरण प्रासाद में उसकी बनाई प्रशस्ति-पट्टिकामें किसी समय राजाने [यह काव्य पढ़ा–]

९५. इसने [अपने जन्ममें] पृथ्वीका उद्धार किया, शत्रुके वक्षःस्थलको विदारण किया, और बलिकी राजलक्ष्मी (विष्णुके पक्षमें बलि नामक राजा और भोजके पक्षमें बलशाली राजा) को आत्मसात् किया। इस प्रकार इस युवकने ये काम एक ही जन्ममें किये जो पुराण पुरुष (विष्णु) ने तीन जन्ममें किये थे।

इस काव्यको पढ़कर उसके पारितोषिकमें एक सोनेका कलश दिया। उस प्रासादसे निकलकर उसीके द्वारके खंभोंपर मूर्तिमान् मदनको, जो रतिके साथ हस्तताल (ताली) दे रहा था, देखकर राजाने धनपालसे उनके हंसनेका कारण पूंछा। इस पर पंडित बोला–

९६. यह है त्रिभुवनमें संयमके लिये विख्यात ऐसा यह शिव, जो इस समय विरहकातर हो कर अपने शरीरमें ही स्त्रीको धारण किये है। इसीने हमें एक समय जीता था! इस प्रकार प्रियाके हाथसे अपने हाथको बजाता हुआ और हंसता हुआ यह मदनदेव जयवान् हो रहा है।

[यहाँ D पुस्तकमें " अवादिषे शिवमन्त्रे० " " दिग्वासा यदि तत्किमस्य धनुषा० " " अमेध्यमश्नाति० " " पयःप्रदान० " " असत्युत्तमाङ्गे " इत्यादि पद्य पाये जाते हैं। पर चूँकि ये यहाँ अप्रासंगिक हैं और Pb आदर्शके अनुसार इसके पहले ही उल्लिखित हो चुके हैं इसलिये फिर उद्धृत नहीं किये गये।]

९७. पाणिग्रहणके समय शिवका जो भूतिभूषित शरीर पुलकित हुआ उसकी जय हो–जिस शरीरमें [पुलकके बहाने] भस्मावशेष मदन मानों फिर अंकुरित हुआ है।

इस प्रकारके तथा इसीतरहके, अन्य अन्य प्रसिद्ध और सिद्ध सारस्वतकवियोंके काव्योंको कह कह कर जब धनपाल राजाको रञ्जित कर रहा था, उसी समय द्वारपालने एक व्यापारीका आना निवेदन किया। सभामें प्रवेश करके, राजाको नमस्कार कर, उसने मोमकी बनी पट्टीपर लिखे हुए कुछ काव्योंको दिखाया। राजाके उसके प्राप्तिस्थानके बोरमें पूछने पर वह बोला कि–' मेरा जहाज अकस्मात् समुद्रमें एक जगह रुक गया, जहाजियोंने खोज करके देखा तो वहाँ एक शिवमन्दिर मिला, जिसके ऊपर चारों ओर जल लहरा रहा है पर भीतर पानीका अभाव है। उन्होंने उसकी एक दीवाल पर अक्षर देखकर उसे जाननेकी इच्छासे उसपर मोमकी पट्टी लगा दी। उसी के उभडे हुए अक्षर इस पट्टीपर हैं। राजाने जब यह सुना तो, उसपर [वैसी ही] मिट्टीकी पट्टी लगवा कर, उसपर पड़े हुए उलटे अक्षरोंको पंडितोंसे पढ़वाया।

९८. ' लड़कपनसे ही, मेरी प्राप्तिके कारण ही यह उन्नतिकी परा कोटिको प्राप्त हुआ है, और इस समय मेरी ही बातसे यह राजाका लड़का लजाता है। ' इस प्रकार खिन्न होकर अपने पुत्ररूपी यशसे अवलंब दिया जाकर वृद्ध ' गुणोंका समूह ' समुद्रके तीरपर तपस्याके लिये चला गया।

९९. जो धनुर्धारी प्रतिद्वंद्वियोंकी स्त्रियोंको वैधव्य व्रत देनेवाला है ऐसे उस राजाके दिग्विजयके लिये उद्यत होनेपर और क्रुद्ध होकर प्रति दिशामें उसके भ्रमण करनेपर, और स्त्रियोंकी तो बात ही क्या स्वयं रति भी मारे डरके अपने पतिको, मदान्ध भ्रमरियोंका नील चोला धारण किये हुए पुष्पधनुष्यको [भी हाथमें] नहीं लेने देती।

१००. चिन्तारूपी गंभीर कूपपर महाशोकरूपी चलती अरघट्ट (घड़ारी) परसे निःश्वास फेंककर अपने बड़ी बड़ी आँखरूपी घटीयंत्रसे छोड़े हुए अश्रुधारको और नासिकाकी वंशप्रणालीके

विषम पथसे गिरते हुए इस बाष्प रूपी पानीयको, हे महाराज, तुम्हारे शत्रुओंकी स्त्रियाँ अविराम भावसे स्तनरूपी दो कलशोंमें ढोया करती हैं।

इस प्रकार काव्योंके पूरा पढ़े जानेपर [आगे यह आधा काव्य मिला–]

१०१. 'अहो! पूर्वकृत कर्मोंका परिणाम प्राणियोंके लिये सचमुच ही बड़ा विषम होता है।'

इस काव्यका उत्तरार्द्ध छित्तप प्रभृति सैकड़ों पंडितोंके पूरा करनेपर भी ठीक नहीं जमता था तब राजाने धनपाल पंडितसे पूछा [तो उसने अपनी प्रतिभाके बलसे यह यथार्थ पाठ कहा]–" हरेहरे! जो सिर शिवके सिर पर विराज रहे थे वे गृध्रोंके पैरोंसे लुण्ठित हो रहे हैं "। ' यही उत्तरार्द्ध ठीक जमता है ' इस प्रकार जब राजाने कहा तो पंडित बोला–'यदि पदबन्ध और अर्थ दोनों ही, श्री रामेश्वर प्रासाद की दीवालपर ये इसीप्रकार न हों तो, इसके बाद आजीवन मैं कविताका त्याग कर दूं।' उसकी इस प्रतिज्ञाके सुननेके साथ ही राजाने जहाजके यात्रियोंको उसी समुद्रमें गोता लगवाकर मंदिरको खोज निकालनेकी आज्ञा दी। ६ महिने बाद उसे ढूंढ निकाला और उसपर फिरसे मोमकी पट्टी लगा कर [लेखकी नकल ली] उसमें यही उत्तरार्द्ध निकला। यह देखकर [राजाने] उसके उपयुक्त पारितोषिक दिया। इस प्रकार, इस खण्ड प्रशस्ति के अनेक काव्य परंपराके अनुसार समझने चाहिये।

६०) एक बार राजाने सेवामें ढील-ढाल होनेका कारण पंडितसे पूंछा। उसने अपनी तिलक मंजरी [नामक कथा] की रचनाको व्यग्रताका कारण बताया। शीतकालकी एक रात्रिके अन्तिम प्रहरमें राजाको कोई विनोद नहीं मिल रहा था। उसने पंडितको बुला कर, स्वयं उसकी उस तिलकमंजरी कथाको पढ़ने लगा और पंडित उसकी व्याख्या करने लगा। राजाने उसके ' रस ' के गिरनेके भयसे उसके नीचे सोनेकी थालीमें कचोलक (कटोरा) रखा और इस तरह [बडे चावके साथ] समाप्त किया। उस अद्भुत काव्यसे चित्तमें चमत्कृत होकर राजाने कहा कि–' यदि मुझे इस काव्यका कथानायक बनाओ और विनीता के स्थानमें अवन्ती का नाम रखो, तथा शक्रावतार तीर्थकी जगह महाकाल को उल्लिखित करो तो जो माँगो वही मैं तुम्हें दूंगा।' राजाके ऐसा कहने पर उसने कहा कि–जिस प्रकार खद्योत और सूर्यमें, सरसों और सुमेरुमें, काच और काञ्चनमें, तथा धतूरे और कल्पवृक्षमें महान् अन्तर है उसी तरह तुममें और उनमें है। ऐसा कहता हुआ–

१०२. हे दो मुँहवाली, निरक्षर, लोहेकी तराजू! तुझे क्या कहूँ? जो तू गुंजाके साथ सोनेको तौलते समय पाताल नहीं चली गई।

इस प्रकार जब पंडित झिड़क रहा था, तो राजाने उस मूल प्रतिको जलती आगमें इन्धन बना दिया। इस प्रकार वह द्विधा निर्वेद * होकर और द्विधा अवाङ्मुख × होकर अपने मकानके पिछले भागमें एक पुराने मञ्चपर जा बैठा और नीसासे डालता हुआ लंबा होकर सो गया। बालपंडिता ऐसी उसकी लड़कीने उसे भक्तिपूर्वक उठाकर स्नान-पान-भोजन आदि कराके, तिलकमञ्जरी की प्रथम प्रतिके लेखनका स्मरण कर करके आधा ग्रंथ लिखा दिया। फिर पण्डितने उत्तरार्द्ध नया लिखकर ग्रंथ संपूर्ण किया।

[यहाँ पर इसके आगे Pb आदर्शमें निम्न लिखित कथन पाया जाता है–]

पंडितने ग्रंथ संपूर्ण किया और फिर रुष्ट होकर नाणा गाँव में चला गया। एक बार भोज की सभामें धर्म नामक वादी आया। उस समय वहाँ ऐसा कोई विद्वान् नहीं था, जो उसके साथ प्रतिवाद करनेका साहस करता।

---

* द्विधा निर्वेदका मतलब दोनों तरहसे निर्वेद हुआ। १ निर्वेद=खिन्न हुआ; २ निर्वेद=वेदशून्य हुआ।

× द्विधा अवाङ्मुख १=नीचा मुखवाला; २=वाणीशून्य मुखवाला।

तब भोजने बहुत मानके साथ धनपालको बुलाया। उसे आते सुन कर ही वह वादी भाग गया। लोगोंने हँसकर कहा—धर्मस्य त्वरिता गतिः=धर्मकी गति शीघ्र होती है। [इस कहावतको उसने चरितार्थ किया] राजाने सम्मान किया....और वहाँपर योगक्षेमके निर्वाह (गुजर) की क्या हालत थी सो पूछी। पंडित बोला—

[६२] हे राजन्, इस समय हमारा और आपका घर समान है, क्योंकि दोनों ही पृथुकार्तस्वरपात्र (१ गंभीर आर्तनादका पात्र, और २ विपुल सुवर्णपात्रवाला) हैं, दोनों ही भूषित निःशेषपरिजन हैं (१ अलंकारहीन परिजनवाला, और २ सारे परिजन जिसमें भूषित हैं, ऐसा) हैं, और दोनों ही विलसत्करेणुगहना (१ धूलिपूर्ण, और २ हथिनियोंसे सुसज्जित) हैं।

(यहाँ P प्रतिमें निम्नलिखित और विशेष पंक्तियाँ पाई जाती हैं—)

एक बार उसने भोजकी सभामें यह काव्य पढ़ा—

[६९] हे धाराके अधीश्वर ! पृथ्वीके राजाओंकी गणनामें कौतूहलवान् होकर इस ब्रह्माने आकाशमें खड़ियामें लकीर खींच खींचकर तुम्हारी ही (अकेलेकी) गणना की। वही रेखायें यह स्वर्गंगा हो गई है और तुम्हारे समान पृथ्वीमें अन्य भूमिपत्र (राजा) का अभाव होनेसे उसने उस खड़ियाको फेंक दिया वही यह हिमालय बना है।

अन्य पंडित इस काव्य [की अयुक्ति] पर हँसे। पर धनपालने कहा—

[७०] वाल्मीकिने वानरोंसे आहृत (मँगवाये गये) पर्वतोंसे समुद्रको बँधवाया और व्यासने अर्जुनके बाणोंसे। तथापि उनकी बातें अयुक्ति नहीं समझी जातीं। हम तो कुछ प्रस्तुत विषय ही कहते हैं, तथापि लोग मुँह फाड़ कर हँसते हैं। इसलिये हे प्रतिष्ठे, तुझे नमस्कार है।

एक बार किसी पण्डितके यह कहनेपर कि—हे राजन्, महाभारतकी कथा सुनिये, उसपर परम आर्हत पंडितने कहा—

[७१] कानीन (कुमारी कन्याके पुत्र=व्यास) मुनि, जो अपनी भ्रातृवधूके वैधव्यका विध्वंस करने वाला है, उसकी रचना, जिसमें गोलक (विधवा पुत्र) के पाँच पुत्र पाण्डव नेता हैं, जो स्वयं कुंड (जीवित पतिका स्त्रीके अन्य उपपतिसे उत्पन्न पुत्र) है। कहा गया है कि ये पाँचो समान जातिके हैं। इनका संकीर्तन करना भी यदि पुण्य-कर और कल्याण-कारक हो तो फिर पापकी दूसरी कौन सी गति होगी ?

६१) शोभन मुनिकी 'शोभन चतुर्विंशतिका स्तुति' प्रसिद्ध ही है।

'इस समय क्या कोई [नया] प्रबंध आदि किया जा रहा है?' राजाके यह पूछनेपर धनपालने कहा—

[७२] गलेमें उतरनेवाली गरम काजीसे, जल जानेकी आशंकाके कारण सरस्वती मेरे मुँहसे निकल कर चली गई है। इसलिये वैरियोंकी लक्ष्मीके केश पकड़नेमें व्यग्र हाथवाले महाराज ! मेरे पास अब कवित्व नहीं रहा।

राजाने [प्रसन्न होकर दूध पीनेके लिए] सौ गायें दिलवाईं। राजाने जब यह पूछा कि 'गायें मिलीं?' तो—

[७३] हे नरवर ! ये भी तो दूध देती नहीं हैं और न ही इन सौमेंसे एकको भी बछड़ा है। इन सौमेंसे बड़ी मुश्किलसे बाँसमा मानी हुई २० गायें घर तक पहुँच सकती हैं।

इस प्रकार धनपालने [उन बूढ़ी और बेकार गायोंकी] बात कही।

[७४] ध न पा ल कविका सरस वचन और मलयगिरिका सरस चन्दन, हृदयमें रखकर कौन निर्वृत (शान्त) नहीं होता।

[इधर शो भ न मु नि स्तुति करनेके ध्यानमें [लीन होनेसे] एक स्त्रीके घर तीन बार [भिक्षा लेने] गया। इससे उस स्त्रीका दृष्टिदोष लगा और वह मर गया। उसने अपने भाईसे अन्त समयमें ९६ स्तुतियोंकी वृत्ति कराके अनशनपूर्वक सौधर्म स्वर्ग प्राप्त किया।]

—इस प्रकार यह धनपाल पंडितका प्रबंध पूर्ण हुआ।

*

६२) कभी, उस नगरका निवासी कोई ब्राह्मण, जिसकी वृत्ति केवल भिक्षा ही थी, एक पर्व दिनमें नगरके सब लोगोंके स्नानमें व्यस्त रहनेके कारण भिक्षा न पाकर खाली ताम्र-पात्रके साथ ही घर लौट आया। इसलिये ब्राह्मणी उसे फटकारने लगी। झगड़ा बढ़ा और ब्राह्मणने उसपर प्रहार किया। आरक्षक पुरुष (नगररक्षक=पुलीस) उसे कैद करके राजमंदिरमें लाये। राजाके पूछने पर उसने यह श्लोक पढ़ा—

१०३. माँ मुझसे सन्तुष्ट नहीं रहती, और अपनी पतोहूसे भी सन्तुष्ट नहीं रहती; वह (बहू) भी न मुझसे और न माँसे [सन्तुष्ट] है। मैं भी न उस (माँ) से और न उस (स्त्री) से [सन्तुष्ट रहता हूँ]। हे राजन्! बताओ इसमें दोष किसका है?

इसका अर्थ पंडितोंके न समझने पर, राजाने अपनी बुद्धिसे उसके अभिप्रायको प्रायः समझ कर, उसे तीन लाख [दानमें] दिलवाये। और श्लोकके अर्थका व्याख्यान करते हुए कहा कि दारिद्र्य ही कलहका मूल है।

सब दर्शनोंसे सत्यमार्गकी पृच्छा।

६३) बादमें, किसी समय, एक बार सब दर्शनोंको एकत्र बुलाकर राजाने मुक्तिका मार्ग पूछा। वे अपने अपने दर्शनका पक्षपात करने लगे। सत्यमार्ग जाननेकी इच्छासे राजाने उन सबको एकमत होनेको कहा। वे सब ६ महीने तक शारदाके आराधनमें लगे रहे। किसी रात्रिके अन्तमें शारदाने यह कहकर कि 'जागते हो?' राजाको उठाया और

१०४. सौगत (बौद्ध) धर्म है सो तो सुनने लायक है (अर्थात् उसके सिद्धान्त सुननेमें अच्छे हैं); और आर्हत (जैन) धर्म है सो करने लायक है। व्यवहारमें वैदिक धर्मका अनुसरण करना योग्य है और परम पदकी प्राप्तिके लिए शिवका ध्यान धरना उचित है।

(अथवा—अक्षय पदका ध्यान करना चाहिए) राजाको तथा दर्शनों (सब मतवाले पण्डितों) को यह श्लोक सुनाकर श्रीभारती तिरोहित हुई।

१०५. 'अहिंसा' जिसका मुख्य लक्षण है वही धर्म है। भारती (सरस्वती) है वही सबकी मान्य देवी है। ध्यानसे मुक्ति प्राप्त होती है यही सब दर्शनोंका मंतव्य है।

इन दो श्लोकोंको बनाकर उन्होंने राजाको मुक्तिका निर्णय बताया।

*

शीता पण्डिताका प्रबन्ध।

६४) बादमें, उस नगरकी निवासिनी शीता नामक रन्धनी (रसोई बनानेवाली) को किसी विदेशी—कार्पटिकने सूर्य पर्वके दिन भोजन बनानेके लिए अन्न दे कर, स्वयं जलाशयमें स्नान करते समय कंगुनीके तेलका पान कर जानेसे, उसके घरपर आते ही, वमन करके मृत्यु प्राप्त हुआ। उसे देखकर, अपनेको द्रव्यके निमित्त मार डालनेका कलंक लगनेकी आशंकासे उस रन्धनीने मरनेके लिए उसी अन्नको खा लिया। वह [उसके पेटमें] टिक गया। और उसके प्रभावसे उसको प्रतिभाका बड़ा विभव प्रादुर्भूत हुआ। तीनों

विद्याओंका कुछ अभ्यास करके विजया नामक अपनी नव युवती कन्याके साथ श्री भोजकी सभाको सुशोभित करती हुई श्री भोज से बोली–

१०६. श्रीमन्महाराज भोजकी शूरताकी सीमा तो शत्रुओंके कुलोंका क्षय करने तक है, यशकी सीमा ठेठ ब्रह्माण्डरूपी भाण्ड तक है, पृथ्वीकी सीमा समुद्रके तट तक है, श्रद्धाकी सीमा पार्वती-पति (शिव) के चरणद्वन्द्वमें प्रणाम करने तक है, लेकिन बाकी जो अन्य गुण हैं उनकी तो कोई सीमा ही नहीं है।

इसके बाद विनोद-प्रिय राजाने कुच-वर्णनके लिए विजयाको आज्ञा दी। वह बोली–

१०७. उस पतले शरीरवाली रमणीके स्तनमण्डलकी यदि, ऊँचाई चिबुक तक है; उत्पत्ति भुजलताके मूल तक है; विस्तार हृदय तक है और संहति कमलिनी सूत्र तक है; वर्णकी सीमा स्वर्णकी कसौटी तक है; और कठिनताकी सीमा हीरेकी खानवाली भूमि तक है; तो उसका लावण्य अस्त समय (जीवनकी समाप्ति) तक है।

उसके इस वर्णनको सुनकर, उस आधे कवि राजाने कहा–

[७५] 'उस कमल-नयनीके दोनों कुचोंका क्या वर्णन किया जाय ?'–इसपर उसने आधा श्लोक यह कहा– सात द्वीपके 'कर' (महसूल) ग्रहण करनेवाले आप जैसे जहाँ 'कर' (हाथ) देते हैं। राजाने एक और आधा काव्य पढा–

[७६] 'आघात किये हुए मुरजके समान गंभीर ध्वनिवाले और भ्रमरोंके समान नील [वर्णवाले] बादलोंसे यह दिशा रुद्ध-सी क्यों हो गई है ?'

इसके उत्तरार्धमें उसने कहा–

['इस लिये कि] प्रथम विरहके खेदसे म्लान बनी हुई बाला, जिसका मुख आँखोंके उगले हुए आँसुओंसे धो गया है, वह वहाँ वास करती है।'

१०८. 'जगत्‌को आनंद देनेवाले उस सुरतको नमस्कार है'–इस प्रकार राजाके कहनेपर [क्यों कि] 'जिसके आनुषंगिक फल हे भोजराज, आप जैसे पुरुष हैं।'

विजयाके इस विजयशाली वाक्यको सुनकर राजाने लज्जित होकर मुँह नीचा कर लिया। तब राजाने उसे [अपनी] भोगिनी बनाई। एक बार उसने जालके भीतरसे आते हुए चन्द्र-कर (किरण) के स्पर्श होनेपर [काव्य] पढा–

[७७] हे कलंकके शृंगारवाले चन्द्र! बस करो इस करस्पर्शनकी लीलाको। तुम तो शिवके निर्माल्य हो, इससे तुम्हारा स्पर्श करना उचित नहीं।

[७८] अनुद्यम परायण (आलसी) राजाओंके समान, क्षणभरमें तारायें क्षीण हो गईं; ग्राम्य जनोंकी सभामें पंडितकी पण्डिताईके समान चन्द्रमाकी कान्ति म्लान हो गई; जैसे मानों पारेने सोना खा लिया हो वैसी प्राची दिशा पिंगलवर्णा हो गई और निर्धन पुरुषोंके गुणकी तरह ये दीपक भी शोभा नहीं प्राप्त करते।

[७९] कलिकालमें सज्जनोंकी भाँति तारायें विरल हो गईं, मुनिके मनकी नाईं आकाश सर्वत्र प्रसन्न हो गया, सज्जनोंके चित्तसे दुर्जनकी तरह अन्धकार दूर हो रहा है और निरुद्यमियोंकी लक्ष्मीकी तरह रात जल्दी जल्दी बीत रही है।

इस प्रकार यहाँ पर बहुत कुछ वक्तव्य (काव्य आदि कहने लायक) है जो परंपरा द्वारा जान लेना चाहिए।

–इस प्रकार सीता पंडिताका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मयूर, बाण और मानतुङ्गाचार्यका प्रबन्ध।

६५) मयूर और बाण नामक दो साला-बहनोई पंडित, अपनी विद्वत्तासे एक दूसरेके साथ स्पर्द्धा करते हुए भोजकी सभामें लब्धप्रतिष्ठ हुए। एक बार बाण पण्डित बहनसे मिलने गया और उसके घर जाकर रातको द्वारपर सो गया। [उस रातको रूठी हुई] उसकी मानवती बहनको बहनोई द्वारा मनाती सुना। [बाणने] उसपर ध्यान दिया तो उसने यह सुना—

१०९. हे तन्वंगी, प्रायः [सारी] रात बीत चली, चन्द्रमा क्षीणसा हो रहा है, यह प्रदीप मानों निद्राके अधीन होकर झूम रहा है, और मानकी सीमा तो प्रणाम करने तक ही होती है, अहो! तो भी तुम क्रोध नहीं छोड़ रही हो?—

[काव्यके] ये तीन पद वारंवार उसे कहते सुनकर [यह चोथा पाद इस प्रकार बोल उठा—]

'हे चण्डि! कुचोंके निकटवर्ती होनेसे तुम्हारा हृदय भी [उनके जैसा] कठिन हो गया है!'

भाईके मुँहसे यह चौथा पाद सुनकर वह लज्जित हो गई और कुपित होकर उसे शाप दिया कि 'तुम कुष्ठी हो!' उस पतिव्रताके व्रतके प्रभावसे उसे उसी समय कुष्ठ रोग उत्पन्न हो गया। प्रातःकाल शालसे शरीर ढककर राजसभामें आया। मयूरने मयूरकी भाँति कोमल वाणीसे उसे 'वरकोढी' यह प्राकृत शब्द कहा। इसपर चतुर चक्रवर्ती राजाने उसकी ओर विस्मयके साथ देखा। प्रसंगान्तर उठनेपर बाणने देवताराधनका विचार किया और लज्जित भावसे वहाँसे उठकर नगरकी सीमापर गया। वहाँ पर एक स्तंभ खडा कर नीचे खदिर काष्ठके अंगारसे भरा हुआ कुंड बनवाया। स्तंभके सिरेपर लटकाए हुए छींकेपर स्वयं बैठ गया। वहा सूर्यदेवकी स्तुति बनाना प्रारम्भ किया। प्रति काव्यके अन्तमें छींकेकी एक एक रस्सी चाकूसे काटने लगा। इस प्रकार पाँच काव्योंके अन्तमें उसने पाँच रस्सिया काट दीं। इसके बाद छींकेके अग्रभागमें लगा रहकर उसने छट्ठे काव्यसे सूर्यदेवको प्रत्यक्ष किया। उसके प्रसादसे तत्काल ही वह तेजवान् काञ्चनकी कान्तिवाला हो गया। दूसरे दिन उत्तम वर्णके चन्दनका शरीरमें लेप करके और दिव्य श्वेत वस्त्र लपेट कर [राजसभामें] गया। उसके शरीरसौन्दर्यको [पूर्ववत्] राजाने देखा तो मयूरने सूर्यके वरका फल बताया। यह सुनकर बाणने बाणकी भाँति इस वाणीसे मयूरका मर्म वेध किया कि 'यदि देवाराधन इतना सरल है तो तुम भी कुछ कोई विचित्र कार्य करके दिखाओ न?' उसके ऐसा कहनेपर मयूरने जवाब दिया कि— 'नीरोग आदमीको वैद्यसे क्या काम? फिर भी तुम्हारी बातको सच कर दिखानेके लिए अपने हाथ-पैर छुरीसे काट देता हूँ और तुमने तो छट्ठे काव्यमें सूर्यको प्रसन्न किया है, परन्तु मैं प्रथम काव्यके छट्ठे अक्षरमें ही भवानी-को प्रसन्न करता हूँ।' यह प्रतिज्ञा कर सुखासनपर बैठकर चण्डिकाके मंदिरके पिछवाडे जाकर बैठ गया। वहाँ '**मा भांक्षीर्विभ्रमम्**' (ऐसे आदि वाक्यवाली चण्डिका-स्तुति प्रारम्भ की) इसके छट्ठे अक्षरपर ही चण्डिका प्रत्यक्ष हुई और उसकी कृपासे उसका शरीरपल्लव प्रत्यग्र तक सुन्दर हो गया। अपने सामने ही उस प्रसादको देखकर राजा और अन्य राजपुरुषोंने सामने आकर उसका जय-जय-कार किया और बड़े समारोह के साथ उसका नगरमें प्रवेश कराया।

'वरकोढी' यह प्राकृत शब्द द्वि-अर्थी है। 'वर कोढी' और 'वरक ओढी' ऐसा इसका पदच्छेद किया जाता है। पहले पदमें वर=अच्छा, कोढी=कुष्ठी अर्थात् अच्छे कुष्ठी (कुष्ठरोगी) बने ऐसा व्यंग्य है। दूसरे पदमें वरक=शाल ओढी=ऊपर डाली अर्थात् 'शाल ओढकर आये हो!' ऐसा आश्चर्यद्योतक वचन है।

६६) इसी अवसर पर, मिथ्यादृष्टि वालोंके धर्मको इस प्रकार विजयी होते देख, सम्यग्दर्शन (जैन) द्वेषी कुछ प्रधान पुरुषोंने राजासे कहा–' यदि जैनधर्ममें भी कोई ऐसा प्रभाव बतलाने वाला हो तो श्वेताम्बर स्वदेशमें रहे, नहीं तो शीघ्र ही निर्वासित कर दिये जायँ । ' इस प्रकार उनके वचनके पश्चात् श्री मा न तुं गा चा र्य को वहाँ बुलाकर राजाने कहा कि अपने देवताओंके कुछ चमत्कार दिखाइये । वे बोले–' हमारे देवता तो मुक्त हैं, उनके चमत्कार क्या हो सकते हैं; तथापि उनके किंकर देवताओंके प्रभावका आविर्भाव देखिये । ' इस प्रकार कहके अपने शरीरको चँवालीस हथकड़ियों और बेड़ियोंसे कसवाकर उस नगरके श्री-युगादि देवके मंदिरके पिछले भागमें बैठ गये । ' भ क्ता म र ' इस आदि वाक्यवाली मंत्रगर्भ नई स्तुति बनाने लगे । इसके प्रति काव्यके अन्तमें एक एक बेड़ी टूटती जाती थी । बेड़ियोंकी संख्याके बराबर काव्य बनाकर स्तव पूरा किया और उस मंदिरको अपने सम्मुख परिवर्तित कर शासनका प्रभाव दिखाया ।

–इस प्रकार श्रीमानतुङ्गाचार्यका प्रबन्ध पूर्ण हुआ ।

*

गूर्जर देशकी विदग्धताका प्रबन्ध ।

६७) बादमें, किसी एक अवसर पर, राजा अपने देशके पंडितोंके पांडित्यकी प्रशंसा करता हुआ गू र्ज र दे श के पण्डितोंको अविदग्ध (असहृदय) कह कर निन्दा करने लगा । इस पर वहांके स्थानीय [गू र्ज र] पुरुषने कहा कि हमारे देशके तो स्त्रियाँ और ग्वाला लोकके साथ भी आपके देशका कोई बड़ा पंडित तक समानता नहीं कर सकता । जब उसने ऐसी बात कही तो राजा उसे मिथ्याभाषी बनानेकी इच्छासे अपना मनोभाव छिपा कर, कुछ दिन तक चुप-चाप रहा । इधर उस स्थान-पुरुषने भी म को यह वृत्तान्त कहलाया । भी म ने स्वदेशकी सीमा पर कुछ रसिक वेश्याओं और कुछ ग्वाल-वेष-धारी पंडितोंको नियुक्त किया । कोई वैसा गोप प्र ता प दे वी नामक वेश्याको साथ लेकर रसिक जनोंके लिये अमृतकी सार-भूत ऐसी धारा नगरी के निकट आया । वहाँ उस वेश्याको सजानेके लिये छोड़कर, सवेरे ही गोप [राजसभाके समीप पहुँचा] राजदौवारिकने उसको राजाके सम्मुख उपस्थित किया । श्री भो ज ने कहा कि ' कुछ कहो ' इस पर–

> ११०. हे भो ज दे व ! यह तुम्हारे गलेमें जो कण्ठा पडा है वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा है । मालूम दे रहा है कि तुम्हारे मुखमें जो सरस्वती और वक्षःस्थलमें लक्ष्मी बस रही है उन दोनोंकी सीमा इसने विभक्त कर दी है ।

इस प्रकार उसकी उक्ति सुनकर विस्मयसे मनमें चकित होकर उसके सामने देख रहा था कि उतनेमें उस उत्तम परिच्छद धारिणी वेश्याको भी देखा । उसके प्रति भो ज ने यह आकस्मिक वचन कहा—' यहाँ क्या ! ' । इसके अनन्तर वह बुद्धि-निधि सुमुखी, जो स्वजाति (स्त्री जाति) की होनेके कारण मानों सरस्वतीकी खास कृपा-पात्र थी और शरीरधारिणी प्रतिमाकी भाँति [दिखाई देती थी], राजाके गंभीर वचनके भी तत्त्वको समझकर उसको [प्राकृत भाषामें] जवाब दिया कि–' पूछते हैं ' उसके इस उचित वचनसे भो ज का मुख-कमल विकसित हो गया । उसको कोशाध्यक्षसे तीन लाख दिलवानेको कहा पर वह (कोशाध्यक्ष) इस तत्त्वको न समझकर तीन बार कहनेपर भी चुप-चाप बैठा रहा । जब वह नहीं देने लगा तो राजा प्रकाश ही बोला, कि देशकी परिस्थिति और स्वभावकी कृपणताके कारण इसे तीन ही लाख दिला रहा हूं, यदि उदारताके साथ दिया जाय तो इतना बड़ा साम्राज्य भी देना कम ही है । इस आदेशको सुनकर समस्त राजलोकने राजासे प्रार्थना की कि उन दो वाक्योंका अन्वय क्या है ? इस पर वह बोला— "इसके कटाक्षोंकी दोनों अंजन रेखाओंको कान तक फैली हुई देखकर मैंने कहा कि ' यहाँ क्या ! ' इसने

जवाब दिया कि–'दोनों नेत्र कान तक फैली हुई अंजन रेखाके बहाने कानोंके पास यह निर्णय करने गये हैं कि क्या यह वही श्री भोज हैं जिनके बारेमें आप लोगोंने पहले सुन रखा है? यही बात ये पूछते हैं।' प्राकृत भाषामें, व्याकरणके नियमसे द्विवचनका प्रयोग बहुवचनसे होता है। इसी बातकी आशंका करके इसने 'पुच्छंति' ऐसा जवाब दिया है। अपनी बुद्धिसे बृहस्पतिकी भी अवज्ञा करनेवाले ऐसे जो पण्डित हैं उनके लिये भी जो अर्थ अविषयीभूत है, उसे सहसा ही कहती हुई यह मानों प्रत्यक्षरूपा भारती ही है। सो इसके पारितोषिकमें तीन लाख क्या चीज है? । इसके बाद तीन बार 'तीन लक्ष' देनेके लिये कहनेके कारण अपने सामने ही उसे नव लाख दिलवाया। इस तरह राजा भोजको गूर्जर जनोंकी चतुरता मालूम हो गई तो उसने कहा–'विवेक तो गूर्जर देश ही में है।' [और तब राजाने 'मालवीय पंडित और गूर्जर गोपाल समान हैं' इस वृद्धजनोंकी वाणीको सत्य मानकर उन्हें विदा किया।]

इस प्रकार यह वेश्या और गोपका प्रबन्ध है।

*

६८) यह राजा लड़कपनसे ही–

१११. मनुष्य यदि मृत्युको सिरपर बैठी हुई देखे तो उसे आहार भी अच्छा न लगे; तो फिर अकृत्य (अनुचित कार्य) करनेकी तो बात ही कहाँ हो।

इस तत्त्वको जाननेके कारण धर्म कार्यमें अप्रमत्त रहता। एक बार [रातको] निद्रा भंगके अनन्तर 'कोई विद्वान् आ कर [कहता है] कि एक तेज घोड़ेपर सवार हो कर तुम्हारे पास प्रेतपति (यमराज) आ रहा है, इस लिए उसके अनुसार धर्म-कर्मके लिए सज्जित हो जाइए' इस वचनको बोलनेके लिए नियुक्त किये हुए पंडितको प्रतिदिन उचित दान देता रहा। एक बार अपराह्नमें राजा सिंहासन पर बैठा हुआ पान देनेवालेके दिये हुए बीड़ेसे पानके पत्तेको पहले ही मुँहमें डाल लिया। जब नीतिविदोंने उसका कारण पूछा तो इस प्रकार कहा–'यमराजके दाँतके भीतर पड़े हुए मनुष्योंके लिये वही वस्तु अपनी है जो या तो दान कर दी गई है, या उपभोगमें ली गई है। और तो संशयवाली है। तथा और भी–

११२. [मनुष्यको] नित्य ही उठ उठ कर विचारना चाहिये कि आज मैंने कौनसा सुकृत किया। [दिनके पूरा होने पर] आयुका एक टुकड़ा ले कर रवि अस्त हो जायगा।

११३. लोग मुझे पूछते रहते हैं कि आपका शरीर तो कुशल है। [लेकिन यह नहीं सोचते कि–] हम लोगोंको कुशल कैसे? आयु तो दिन-प्रतिदिन बीतती ही जा रही है।

११४. [इस लिये] कल जो करना है उसे आज ही कर लेना चाहिये, जो दोपहरके बाद करना है उसे उसके पहले ही कर लेना चाहिये। मृत्यु इसकी प्रतीक्षा नहीं करती कि इसने किया है या नहीं किया।

११५. क्या मृत्युकी मौत हो गई है, बुढ़ापा बूढ़ा हो गया है, विपत्तियाँ विपदामें पड़ गई हैं और व्याधियाँ बीमार हो गई हैं जो ये आदमी दर्प करते रहते हैं?

इस प्रकार अनित्यता संबंधी चार श्लोकोंका यह प्रबंध है।

■

भोजका भीमके पास चार वस्तुयें माँगना।

६९) अन्य किसी दिन भोजने भीम राजाके पास दूतके मुखसे चार चीज़ें माँगीं। एक वस्तु यह 'जो यहाँ है, वहाँ नहीं;' दूसरी 'वहाँ है, यहाँ नहीं;' तीसरी 'जो दोनों जगह है;' और चौथी 'जो

कहीं भी नहीं है। ' विद्वानोंके लिये भी इसका अर्थ समझना सन्दिग्ध होनेसे अ ण हि ल पु र में इसके लिये ढौंडी पिटवाई जा रही थी तब किसी गणिकाने उस ढौंडीको छू कर विज्ञापित किया कि–(१) गणिका, (२) तपस्वी, (३) दानेश्वर और (४) जुआड़ी रूप इन चार चीज़ोंको भेज दीजिये। उसके कहने पर राजाने उस दूतको ये चीजें सौंप दी। ' ऐसा ही होना चाहिये ' यह कह कर दूत चारों चीजें ले कर जैसे आया था वैसे ही वापस चला गया।

इस प्रकार चार वस्तुओंका यह प्रबंध है।

*

७०) एक बार राजा भो ज वीरचर्यामें घूम रहा था। उस समय किसी अभागेकी स्त्रीको–

११६. लोकमें तो ऐसा सुना जाता है कि मनुष्यको [अपनी आयुमें] दश दशायें आती हैं। पर मेरे पतिकी तो एक ही [दरिद्र] दशा [सदा बनी रहती] है, सो मालूम देता है कि बाकीको चोरोंने चुरा लिया है।

यह पढ़ते सुन कर उसकी दुरवस्था पर राजाको दया आई और प्रातःकाल उसके पतिको सभामें बुला कर उसका कुछ भी अच्छा भविष्य सोच कर, दो बिजौरे नीबुओंको, जिनमेंसे प्रत्येकमें एक एक लाखकी कीमतके रत्न गुप्त भावसे रखवा कर, उसे इनाममें दे दिये। उसने भी इस वृत्तान्तको कुछ न समझ कर, कुछ दाम ले कर, साग-भाजीकी दूकान पर जा कर बेच दिये। उस (दूकानदार) ने भी उसका हाल न जान कर उन दोनों नीबुओंको किसीको भेंट दे दिया। उस आदमीने फिर से उन्हें उसी राजा भो ज को भेंट किया।

११७. समुद्रवेलाकी चञ्चल तरंगोंसे घसीटा हुआ यदि कोई रत्न पहाड़ी नदीमें आ भी जाय तो वह फिरसे उसी मार्गसे उसी रत्नाकर (समुद्र) में ही चला जाता है।

इस अनुभवसे राजाने [इस उदाहरणमें] भाग्य ही को तथ्य माना। क्यों कि, कहा भी है कि–

११८. वर्षा कालमें अशेष जगत्के प्रीत होने पर भी चातक तो जलका एक बूंद भी नहीं पाता। सच है, अलभ्य वस्तु कैसे मिल सकती है।

इस प्रकार यह बिजौरे नीबूका प्रबंध है।

*

७१) अन्य किसी एक रातको, राजाने अपने क्रीडा-शुक (तोते) को गुप्त रूपसे ' एक अच्छा नहीं है ' यह बात पढ़ा कर उसे सिखाया कि तुम प्रातःकाल सभामें यही वाक्य उच्चारण करना। बादमें जब उस तोतेने वैसा ही कहा तो राजाने पंडितोंसे उसका मतलब पूछा। वे उसका मतलब न जानते हुए, उसके जाननेके लिये, उन्होंने ६ महीनेकी मुद्दलत माँगी। इसके बाद उनका मुख्य व र रु चि इसका मतलब समझनेके लिये देशान्तरमें भ्रमण करने लगा। वहां किसी पशुपालने उससे कहा कि मैं इसका मतलब आपके स्वामीको बता सकता हूं। पर मैं अपने इस कुत्तेके बच्चेको, बूढा होनेके कारण, न तो ढो सकता हूं,–और बड़ा प्रिय होनेके कारण, ना ही छोड़ सकता हूं। उसके ऐसा कहने पर उसे साथ लेनेकी इच्छासे व र रु चि ने उस कुत्तेको कपड़ेमें लपेट कर अपने कन्धे पर रख लिया और उस पशुपालको साथ ले कर राजाकी सभामें गया। वहाँ उसको उत्तर देनेवाला बताया। इसके बाद, राजाने उस पशुपालसे उसी बातको पूछा। [उसने जवाब दिया–] महाराज, इस जीवलोकमें लोभ ही ' एक अच्छा नहीं है '। राजाने फिर पूछा–' कैसे ? ' वह बोला–इसलिये कि यह

ब्राह्मण इस कुत्तेको, जो यद्यपि अस्पृश्य है, तथापि उसे कन्धे पर ढोता है, वह लोभ ही की लीला है। इसलिये लोभ ही एक अच्छा नहीं है।

इस प्रकार यह 'एक अच्छा नहीं है' प्रबन्ध पूरा हुआ।

*

७२) ‡ अन्य किसी समय, केवल मित्रको साथ ले कर राजा रातमें घूम रहा था, तो उसे बड़े जोरकी प्यास लगी। तब उसने एक वेश्याके घर जा कर मित्रके मुखसे जल माँगा। तब बड़े प्रेमके साथ शंभली नामक दासी बड़ी देर करके, ईखके रससे भरा पात्र, कुछ खेदके साथ ले आई। मित्रने जो खेदका कारण पूछा, तो बोली कि पहले ईखकी एक ही लट्ठीमेंसे, जब वह शूलसे छेदी जाती थी तो, इतना रस निकल आता था कि घड़ेके साथ पुरवा (शकोरा) भी भर जाता था; पर इस समय राजाका मन प्रजाके विरुद्ध हो रहा है, इसलिये बड़ी देरके बाद भी केवल पुरवा ही भर पाया है। यही इस खेदका कारण है। राजाने उसके खेदके कारण को सुन कर विचार किया कि जिस वणिकने शिव मन्दिरमें वह बडा नाटक करवाया है उसको मैंने अपने मन ही मन, लूटनेका विचार किया था; इसलिये इसकी यह बात ठीक ही समझनी चाहिए। बादमें लौट कर अपने स्थान पर आ कर सो गया। दूसरे दिन प्रजा पर वत्सल भाव मनमें रखता हुआ राजा वेश्याके घर गया। उस दिन उसने यह कह कर राजाको सन्तुष्ट किया कि आज राजा प्रजाके प्रति कृपावान् है, क्यों कि आज ईखसे बहुत रस निकला है।

इस प्रकार यह इक्षुरसका प्रबंध पूर्ण हुआ।

*

७३) अन्य किसी एक अवसर पर, धारा नगरीके शाखापुरमें एक गोत्र देवीका मंदिर था जिसमें नमस्कार करनेके लिये [राजा] नित्य आया करता था, उसमें कुछ वेलाका व्यतिक्रम हो गया। इससे यह देवता प्रत्यक्ष हो कर द्वार पर आ कर उस राजाको देखने लगी, जो उस समय बहुत थोड़े नौकरोंके साथ द्वार-देश पर आ पहुंचा था। राजाको देख कर ससंभ्रम वह अपने आसन पर बैठनेकी गड़बड़में, निजका आसन लांघ गई। राजाने प्रणाम करके इस वृत्तान्तको पूछा। देवताने निकट ही शत्रुसेनाका आना बता कर कहा कि शीघ्र जाओ। कुछ ही समयमें राजाने अपनेको गूर्जर सैन्यसे घिरा पाया। वेगवान् घोड़ेपर चढ़कर तेजीसे जाता हुआ वह धारा नगरीके फाटक पर पहुँचा, तो उस समय आछुया और कोछुया नामके दो गुजराती सवारोंने उसके कंठमें धनुष्य फेंके और यह कह कर उसे छोड़ दिया कि 'तुम इतने-ही-से मार डाले जाते।'

११९. जिसके 'गुण'-वान् धनुषने, मानों यह समझ कर ही कि यह भोज 'गुणी' है मागते हुए उस राजाको घोड़ेसे [नीचे] नहीं गिराया।

इस प्रकार यह घुड़सवारोंका प्रबन्ध पूर्ण हुआ।

*

[इसके आगे Pb प्रतिमें निम्नांकित प्रबंध पाया जाता है—]

अन्यदा एक बार रातमें जग कर राजा भोजने अपनी समृद्धिके विस्तारको अपने हृदयमें सोच कर काव्यके ये तीन चरण पढ़े—

---

‡ यह इक्षुरसवाला प्रबन्ध किसी प्रतिमें, विक्रम राजाके सम्बन्धमें लिखा हुआ मिलता है और इसलिये इसके पहले, ऊपर पृष्ठ ९ पर भी यह आया हुआ है, लेकिन यहाँ यह प्रक्षिप्त मालूम देता है।

[८०] मनोहर युवतियाँ, अनुकूल स्वजन, अच्छे बांधव और प्रेममय वचन बोलनेवाले नौकर हैं।
[द्वार पर] हाथियोंके झुंड गरज रहे हैं, और तरल (तेज़) घोड़े [हिनहिना रहे हैं]–

इस प्रकार राजा जब यह बारंबार बोल रहा था और चौथे चरणके लिये अक्षर ढूंढ रहा था, उसी समय कोई वेश्याव्यसनी विद्वान्, जो अपनी वेश्याके वचनसे रानीके दो कुण्डल चुरानेके लिये राजाके महलमें चौर बन कर घुसा था, उसने उन तीन चरणोंको सुना। तब उसने सोचा कि 'जो होना हो सो हो, पर जो चौथा चरण मनमें स्फुरित हो आया है उसे कैसे दबा रखूं?' और वह बोला–

'आंखोंके मींच जाने पर [इनमेंसे फिर] कुछ भी नहीं है।'

राजाने सन्तुष्ट हो कर कुण्डलके साथ उसको मनोवांछित दिया।

७४) अन्य समय, एक बार, वही राजा, राजपाटीसे लौट कर नगरके गोपुरमें [जब आ रहा था तब] एक बिना लगामका घोड़ा दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा, जिसे देख कर लोक आकुल-व्याकुल हो कर इधर उधर भागने लगे। उनमें एक तक्र विक्रय करनेवाली ग्वालिन भी सपाटेमें आ गई और उसके सिरपर जो छाँछसे भरी हुई हंडिया थी वह नीचे गिर पड़ी। उसमेंसे नदीके प्रवाहकी तरह गोरस निकल कर वह चला, जिसे देख कर उसका मुख-कमल खिल उठा। भोज ने यह देख कर पूछा कि विषादके समय भी तुम्हारे इस हर्षका कारण क्या है? राजाके यह पूछने पर वह बोली–

१२०. राजाको मार कर, पतिको सांपसे काटा हुआ देख कर, मैं विधिवश परदेशमें वेश्या हुई। पुत्रको [अपने साथ] वेश्यागामी पा कर मैं चितामें प्रविष्ट हुई। इसके बाद, गोपकी गृहिणी बनी; तो फिर आज मैं इस तक्रके लिये क्या शोच करूं?

[वह इस प्रकार बोली। उस प्रदेशसे एक बड़ी नदी प्रादुर्भूत हुई, जिसका नाम मही पड़ा।]

इस प्रकार गोपगृहिणीका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

७५) एक बार, प्रातःकाल, श्री भोज एक उपशिला (छोटे पत्थर) को लक्ष्य करके आनन्दपूर्वक धनुर्वेदका अभ्यास कर रहा था, उसी समय श्वेताम्बर वेशधारी श्री चंदनाचार्यने अपनी तत्कालोत्पन्न प्रतिभाकी सुन्दरतासे इस उचित पद्यको कहा–

१२१. यह खण्डित शिला चाहे खण्डित हो जाओ, पर हे राजन्! इसके बाद क्रीड़ा करना बस कर दीजिये; और देव! प्रसन्न हो कर पाषाणवेधके व्यसनकी यह रसिकता छोड़िये। क्यों कि अगर यह क्रीड़ा बढ़ी तो बड़े बड़े पर्वतोंको वेध करोगे और यह धरती ध्वस्ताधारा (आधार जिसका ध्वंस हो गया है) हो कर, हे नृपतिलक! पातालके मूलमें चली जायगी।

उनकी इस प्रकारकी कविताके चमत्कारसे चमत्कृत हो कर भी राजाने कुछ सोच कर कहा–'सर्व-शास्त्र-पारंगत हो कर भी आपने जो 'ध्वस्ताधारा' यह पद्य उससे कोई उत्पात सूचित होता है।'

*

भोज और कर्णका संघर्ष।

७६) इधर, डाहल देशके राजाकी देमति नामक रानी महा योगिनी थी। एक बार, जब कि वह आसन्न प्रसवा थी, सदैव ज्योतिषियोंसे यह पूछा करती थी कि 'किस शुभ लग्नमें उत्पन्न पुत्र सार्वभौम (सम्राट) होता है?' इसके बाद, उन्होंने अच्छी तरह विचार कर बताया कि 'जब शुभ ग्रह उच्च राशि, और केन्द्र (प्रथम

चतुर्थ, सप्तम, और दशम) में हों, तथा पाप ग्रह तृतीय, षष्ठ और एकादशमें हों, तो जो पुत्र होगा वह सार्वभौम राजा होगा। यह सुन कर, निश्चित प्रसव समयके बाद, १६ पहर तक, योगकी युक्तिसे गर्भस्तंभ करके ज्योतिषीके निर्णीत लग्नमें कर्ण नामक पुत्रको उसने जन्म दिया। उस गर्भधारणके दोषसे पुत्रप्रसवके अनन्तर आठवें पहरमें वह मर गई। सुलग्नमें जन्म होनेके कारण कर्णने अपने पराक्रमसे दिग्मण्डलको आक्रान्त किया। एक सौ छत्तीस राजाओंके, भौंरेके समान काले-काले केश-कलापसे उसके दोनों विमल चरण-कमल पूजे जाते थे और चारों प्रकारकी राजविद्याओंमें परम प्रवीणता प्राप्त करके, विद्यापति प्रभृति महाकवियोंसे वह स्तुत होता था। जैसे [एक बार कर्पूर कविने कहा-]

१२२. +जिनके मुँहमें तो 'हारावाप्ति'[1] है, आँखोंमें 'कंकणभार'[2] है, नितंबमें 'पत्रावली'[3] है, और दोनों हाथ 'सतिलक'[4] है—हे श्री कर्ण! तुम्हारे शत्रुओंकी स्त्रियोंको, विधिवश, वनमें, इस समय भूषण पहननेकी यह कैसी [विलक्षण] रीति ग्रहण करनी पड़ी है!

ऐसा कहने पर चतुर चक्रवर्ती राजाने कहा-'यदि 'विधिवश' ऐसा हुआ तो फिर वर्णनीय राजाका क्या रहा? दैवने भी जिस बातकी चिन्ता नहीं की वह हो।' अतएव राजाको इसमें कुछ भी चमत्कार नहीं जान पड़ा और उसे बिना कुछ दिये ही विदा कर दिया। घर जाने पर भार्याने पूछा-'क्या दिया राजाने?' उसने कहा-'वही वृत्तस्वरूप!' (अर्थात् श्लोकमें जो वर्णन किया गया है वही स्वरूप) वह बोली- यदि 'विधिवशात्' की जगह 'तव वशात्' कहा गया होता तो वह सब कुछ दिलाता। तब फिर नाचिराज कविने कर्ण नृपकी स्तुति की। जैसे-

[८१] गोपियोंके पीन पयोधरसे विष्णुका हृदय [रूपी कमल] आहत हो गया है इसलिये मैं समझता हूँ कि लक्ष्मी कमलकी आशंकासे तुम्हारे नेत्रोंमें ही अब विश्राम कर रही है। इसलिये हे श्रीमन् कर्ण नरेश! जहाँ तुम्हारी भ्रूलता चलती है वहाँ भयभ्रान्त हो कर दारिद्र्यकी मुद्रा टूट जाती है।

इससे अत्यन्त तुष्ट हो कर राजाने हाथके सांकले इत्यादिके उचित दानसे उसे पुरस्कृत किया। इस प्रकार जब वह मार्गमें आ रहा था, तो कर्पूर कविने स्त्रीसे कहा कि राजाने इसे जो कुछ दिया है उसे, अब मैं अपने घर ले आता हूं। यह कह कर वह उसके सामने गया।

[८२] 'हे कन्ये! तूं कौन है?'-'कर्पूर कवि! क्या तूं मुझे नहीं पहचानता?'-'क्या भारती है?-' 'सच है'-'तूं विधुरा क्यों है?'-'मैं लूट ली गई!'-'माँ किसके द्वारा?'-'दुष्ट विधाताके द्वारा'- 'उसने तुम्हारा क्या ले लिया?'-' मुञ्ज और भोज रूपी दोनों आँख'-'तो जी कैसे रही हो?' -'क्यों कि दीर्घायु श्री नाचिराज कवि अन्धेकी लकड़ी रूप बने होनेसे।'

नाचिराज कविने इस काव्यसे सन्तुष्ट हो कर कर्णराजसे जो कुछ स्वर्ण, दुकूल आदि प्राप्त किया था वह सब कर्पूर कविको दे दिया। कर्ण नरेन्द्रने यह सुना, तो कर्पूरको बुलाके पूछा कि-' हे कवे! भोजके विद्यमान रहते 'मुञ्ज-भोज' यह पद कैसे उदाहृत किया?' वह बोला-' महाराज, जल्दी में 'हर्ष-मुञ्ज' की जगह मुञ्ज-भोज मुँहसे निकल गया।' तब राजाने सोचा कि यह बात भोजका अमंगल सूचित करती है।

[८३] श्रीमत् कर्ण नरेन्द्रने मान और विभवसे सब याचकोंका मनोरथ पूर्ण कर दिया, इसलिये चिन्तामणिके आँगनमें शिखावाली दूर्वायें हमेशा श्यामल हो रही है। कल्पतरुके शून्य तलमें निर्भीक हो कर पशु-पक्षी खेल रहे हैं। और कामधेनु निकट ही स्कंदको बैठा कर आलससे निद्रा ले रही है।

+ इस पद्यमें शब्दोंके श्लेष द्वारा दो भिन्न अर्थ निकाले गये हैं। १ हारावाप्ति=हारकी प्राप्ति और 'हा' ऐसे 'रव' शब्दकी प्राप्ति। २ कंकण=हाथका आभूषण और कं=पानी उसका कण=अश्रुबिंदु। ३ यों तो पत्राली स्तन पर बांधी जाती है, लेकिन इन स्त्रियोंको तो पहननेके लिये पूरे वस्त्र नहीं है इस लिये पत्रावलीसे नितंब प्रदेशको ढांकना पड़ा है। ४ सतिलक तो कपाल होता है लेकिन इन स्त्रियोंके तो अब हाथ ही सतिलक=तिलवाले हैं।

७७) इस प्रकार महाकवि गण उसके नाना यशकी स्तुति करते थे। एक बार उस कर्ण राजाने श्री भोजके प्रति प्रधानोंको भेज कर [यह कहलाया–] 'आपकी नगरीमें आपके बनाये हुए १०४ मन्दिर हैं, इतने ही आपके गीत-प्रबंध और इतने ही बिरुद हैं; इसलिये, या चतुरंग [सेना] की लड़ाईमें, या द्वन्द्व युद्धमें, या चारों विद्याओंका शास्त्रार्थ करनेमें, या त्यागमें मुझे जीत कर एक सौ पांच बिरुदोंके पात्र बनो। नहीं तो मैं तुम्हें जीत कर १३७ राजाओंका स्वामी बनूंगा।' इस प्रकार उसके प्रभावके आविर्भावसे भोजका मुखकमल किंचित् म्लान हो गया। वह काशी नगरीके स्वामीको सब प्रकारसे जीत जाने योग्य समझ कर और अपनेको पराजित मान कर, अनुरोधपूर्वक उसकी अभ्यर्थना करके इस प्रकार उससे स्वीकार कराया कि–'मैं अवन्तीमें, और श्री कर्ण वाणारसीमें एक ही लग्नमें नींव दे कर स्पर्द्धाके साथ ऐसे मंदिर बनवावें जो ५० हाथ ऊंचे हों। जहांके प्रासादमें प्रथम कलश ध्वजारोपणका उत्सव हो उसमें दूसरा राजा छत्र-चामर छोड कर, हाथी पर बैठ कर वहाँ आवे। इस प्रकार भोजके यथा-रुचि अंगीकार करनेकी बात जब कर्णके कानों पहुँची तो वह यद्यपि क्रुद्ध हुआ तथापि भोजको उस तरह भी नीचा दिखानेके लिये [उद्यत हुआ]। एक ही लग्नमें अलग अलग दोनों जगह जब प्रासाद आरंभ किये गये तो, सारी तैयारी करके, सूत्रधारोंसे कर्णने अपने प्रासादको बनाते समय पूछा कि–'बताओ एक दिनमें, सूर्योदय और सूर्यास्तके बीच कितना काम किया जा सकता है?' इसके जवाबमें उन्होंने, चतुर्दशीके अनध्यायके दिन, सात हाथ ऊंचे ग्यारह मन्दिर, सूर्योदयमें आरम्भ करके शामको कलश तक बना कर राजाको दिखा दिये। उस सारी सामग्रीसे राजाने प्रसन्न हो, आलस्य छोड कर, भोजके मन्दिरका जब मुँडेरा बाँधा जा रहा था तभी अपने मंदिर पर कलश स्थापित करा दिया; और ध्वजारोपणका लग्न निर्णय कर, दूत भेज कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनेके लिये श्री भोजको निमंत्रित किया। तब मालवमण्डलका अधिपति भोज अपनी प्रतिज्ञा भंग होनेके भयसे, उस तरह जानेमें असमर्थ हो कर चुप हो रहा। इसके बाद प्रासाद पर ध्वजारोपण हो जानेके बाद, पुरातन कर्णके नवीन अवतारके समान उस कर्ण राजाने उतने ही राजाओंके साथ प्रयाण करके श्री भोजके ऊपर आक्रमण किया। इस अवसर पर श्री भोजके राज्यका आधा हिस्सा देनेकी प्रतिज्ञा करके श्री कर्णने मालवमण्डल पर पूंठ पीछेसे आक्रमण करनेके लिये श्री भीमको आमंत्रित किया। इस तरह उन दो राजाओंसे आक्रान्त होने पर राजा भोजका दर्प, मंत्रसे आक्रान्त सर्पके विषकी भाँति दूर हो गया। अकस्मात् उसी समय भोजका स्वास्थ्य बिगड़ गया जिसको वहाँ वालोंने छुपा रखा, और नियुक्त मनुष्यों द्वारा सभी घाटोंके रास्ते रोक दिये गये तथा अन्यदेशीय पुरुषोंका प्रवेश एकदम अटका दिया गया। तब भीमने अपने सन्धिविग्रहिक दामरको, जो उस समय कर्णके पास था, भोजका वृत्तान्त जाननेके लिये अपने आदमी भेज कर पूछा। उसने भी उस पुरुषको एक गाथा पढ़ा कर भेजा, जिसने श्री भीमकी सभामें आ कर कह सुनाया। यथा–

१२३. आमका फल [अब] पक गया है, वृन्त शिथिल हो गया है, आँधी जोरोंसे चल रही है और शाखा काँपने लगी है। और आगे हम नहीं जानते कि इस कार्यका परिणाम क्या होगा।

इस गाथाके रहस्यको जान कर राजा भीम चुप हो रहा। श्री भोजके परलोक-मार्ग की यात्रा जब निकट आई तो उसने उपयुक्त धर्मकृत्य किया और समस्त राजपुरुषोंको राज्यानुशासन दे कर और यह आदेश दे कर कि मेरे हाथ विमानके बाहर रखना, स्वर्ग गया।

[२४] अरे! पुत्र, कलत्र और पुत्रियोंको क्या कर रहे हो और खेती बाड़ीको भी क्या कर रहे हो! मनुष्यको तो अपने हाथ पग दोनों झाड़कर अकेले ही आना है और अकेले ही जाना है।

भोजके इस वाक्यको वेश्याने लोगोंसे कहा।

*

कर्णसे भीमका आधा भाग लेना।

७८) [इसके बाद, जब वह राजा भोज स्वर्गगामी हुआ] तो उस वृत्तान्तको जान कर कर्णने उसके दुर्गम दुर्गको तोड़ कर भोज की सारी लक्ष्मी हस्तगत की। तब श्री भीमने दामरको आदेश किया कि– 'तुम या तो श्री कर्णसे मेरा प्राप्य आधा राज्य ले आओ या अपना सिर ले आओ।' इस प्रकार राजादेश पालन करनेकी इच्छासे, ३२ पदातियोंके साथ, उसने राजाके तंबूमें घुसकर मध्याह्न कालमें सोये हुए श्री कर्णको बन्दीरूपमें गिरफ्तार किया। इसके बाद उस राजाने राज्य-ऋद्धिके दो विभागोंमेंसे एकमें शिव, शालिग्राम, गणेश इत्यादि देवताओंको रखा और दूसरेमें राज्यकी अन्य सारी वस्तुओंको रखा। 'अपनी इच्छाके अनुसार इन दोमेंसे एक हिस्सा ले लो।' उसके ऐसा कहने पर, वह सोलह प्रहर तक तो वैसे ही पडा रहा, फिर भीमकी आज्ञा [आने पर] देवताओंके भंडारको ले कर ही उन्हें श्री भीमको भेंट किया। इस प्रबन्धका सारा इतिहास इन दो काव्योंमें संग्रहीत है। जैसे–

१२४. पचास हाथ प्रमाणके दो शिवमंदिर एक ही लग्नमें प्रारम्भ किये गये। यह स्थिर हुआ कि जिस राजाके मंदिर पर पहले कलशारोपण होगा, उसके पास दूसरा राजा छत्र और चामर रहित हो कर आयगा। इस संवादमें राजा भोजकी बुद्धि व्ययसे विमुख हो गई और इस प्रकार वह कर्ण देवके द्वारा जीता गया।

१२५. भोज राजाके स्वर्ग जानेके बाद अतिबली कर्णने जो धारापुरीके भंग करनेका उपाय किया तो राजा भीमको सहायक बनाया। उसके भृत्य दामरने बंदी किये हुए कर्णसे गणपतिके सहित नीलकंठेश्वरको सोनेकी पालखीके साथ ग्रहण किया।

१२६. कवियों और कामियोंमें, योगियों और भोगियोंमें, धन देनेवालों और सज्जनोंका उपकार करनेवालोंमें, तथा धनी, धनुर्धर और धार्मिकोंमें भोज जैसा राजा पृथ्वी तलपर नहीं हुआ।

१२७. राजा भोजने अपने त्यागोंके कारण कल्पवृक्षके समान अशेष दुःखोंको प्रासित किया, साक्षात् बृहस्पतिकी नांई शीघ्रतापूर्वक नाना प्रबंधोंकी रचना की। राधा-वेध (मत्स्य-वेध) करने में वह अर्जुनके समान [सिद्ध] था। इसीलिये बहुत दिनोंसे, उसकी कीर्तिसे उत्सुक-चित्त देवताओंके द्वारा निमंत्रित हो कर वह स्वर्ग गया।

इस प्रकार भोजके अनेक प्रबन्ध हैं जो परंपराके अनुसार जानने चाहिये।

*

इस प्रकार श्रीमेरुतुङ्गाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थका 'श्रीभोजराज और श्रीभीमराजके नाना यशोंका वर्णन' नामक यह दूसरा प्रकाश समाप्त हुआ।

---

८. सिद्धराजादि प्रबन्ध ।

मूलराज कुमारकी प्रजावत्सलताका प्रबन्ध ।

७९) इसके बाद, किसी समय, गूर्जर देशमें अनावृष्टिके कारण जब वर्षा नहीं हुई तो विशोपक (?) दण्डाहि देशके ग्रामोंके कुटुम्बी (कुनबी=किसान) जनोंके राजाका कर (भाग) देनेमें असमर्थ हो जाने पर राजनियुक्त व्यापारियों (कर्मचारियों) ने उस देशके सभी लोगोंको, उनके धन और जनके साथ, पत्तनमें ले आकर राजा भीमके सामने निवेदित किया । एक दिन सबेरे श्री मूलराज कुमारने टहलते टहलते देखा कि राज्यके आदमी फसलका दाण (कर) वसूल करनेके लिये सभी लोगोंको व्याकुल कर रहे हैं । अपने निकटके आदमियोंसे उस सारे वृत्तान्तके जानने पर उसकी आँखोंमें करुणाके कुछ आँसू आ गये । बादमें घुड़दौड़के मैदानमें उसने अपनी अनुपम कला दिखा कर राजाको सन्तुष्ट किया । उसपर राजाने आदेश दिया कि ' वर माँगो ' । उसने [राजाको] सूचित किया कि–' यह वरदान अभी भाण्डागार ही में रखा रहे । राजाने जब कहा कि–' अभी क्यों नहीं कुछ माग लेते ? ' तो उसने कहा कि–' प्राप्ति होनेका कोई प्रमाण दिखाई नहीं देता–इसलिये । ' राजाके उसका अनुरोध पूर्वक खुलासा पूछने पर, उन कुटुंबियोंका लगान माफ कर देनेका उसने वर माँगा । तब हर्षके कारण जिसकी आँखें आँसुओंसे गद्गद् हो गई हैं ऐसे उस राजाने ' ऐसा ही हो ' कह कर ' और भी कुछ माँगो ' यह कहा ।

> १२८. केवल अपना ही भरण-पोषण करनेवाले क्षुद्र पुरुष तो हजारों हैं पर जिसका परार्थ ही स्वार्थ है ऐसा सज्जनोंका अगुआ पुरुष तो [हजारोंमें] कोई एक होता है । वाडव अग्नि समुद्रको अपने दुष्पूरणीय पेटको भरनेके लिये पीता है पर बादल तो पीता है ग्रीष्मके तापसे तपे हुए जगतका सन्ताप दूर करनेके लिये ।

इस प्रकार इस काव्यार्थके भावको समझ कर, अधिक लोभका निग्रह करके फिर और कुछ नहीं माँगा । इस तरह मानोन्नत हो कर वह अपने स्थान पर गया । उसके द्वारा, इस तरह बन्धन-विमुक्त बने हुए वे लोग देवताकी भाँति उसकी पूजा और स्तुति करने लगे । दैववशात् तीसरे ही दिन, उनके सन्तोषकी दृष्टिसे स्तुत होता हुआ [यह राजकुमार] मृत्यु प्राप्त कर स्वर्ग लोकको चला गया । राजा, राजपुरुष और बन्धन-विमुक्त वे सब प्रजाजन उस शोकसागरमें डूब गये जिन्हें [अन्यान्य] समझदार लोगोंने, अनेक प्रकारके बोधवचन सुना सुना कर, कितने ही दिनोंके बाद उनको शोक-विमुक्त किया ।

इसके बाद, दूसरे साल, यथेष्ट वृष्टि होनेके कारण खूब फसल पैदा हुई । इससे वे किसान लोग अत्यन्त हर्षित हो कर, उस वर्षका और बीते हुए वर्षका भी, लगान देनेको तत्पर हुए पर राजाने उसे ग्रहण नहीं किया । तब उन्होंने एक उत्तर-सभाका सम्मेलन किया । सभा और सभ्योंका लक्षण यह है–

> १२९. वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों, और वे वृद्ध नहीं जो धर्मका कथन नहीं करते । वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और वह सत्य नहीं है जो कल्पितसे अनुविद्ध हो ।

ऐसा [शास्त्र] निर्णय कर सभ्योंने राजासे गत साल और उस सालका लगान ग्रहण करवाया । राजाने उस द्रव्यसे तथा खजानेमेंसे और कुछ द्रव्य मिला कर मूलराज कुमारके कल्याणार्थ नया त्रिपुरुष प्रासाद [नामक शिवमन्दिर] बनवाया ।

८०) इसने पत्तनमें श्री भीमेश्वरदेव और भट्टारिका (पटरानी) भीरुआणीके [नामसे शिवके] प्रासाद बनवाये। संवत् १०७७ से लेकर ४२ वर्ष १० मास ९ दिन राज्य किया। (B. P. प्रतियोंमें – संवत् १०६५ से आरंभ कर ४२ वर्ष राज्य किया।)

कर्णराजा और मयणल्लादेवीका वृत्तान्त।

८१) उसकी रानीने जिसका नाम उदयमति था [और जो नरवाहनखंगारकी लड़की थी], पत्तनमें एक बहुत बडी नयी वापी (बावडी) बनवाई, जो सहस्रलिंग सरोवरसे भी कहीं अधिक आकर्षक थी।

८२) इसके बाद, सं० ११२० चैत्र वदि ७ सोमवार, हस्त नक्षत्र, मीन लग्नमें श्री कर्णदेवका राज्याभिषेक हुआ।

८३) इधर, शुभकेशी नामक कर्नाट देशका राजा घोड़ेसे [जिसको अपने काबूमें न रख सकनेके कारण] उडाया जा कर किसी घने जंगलमें जा पडा। वहाँ पत्र फलसे भरे किसी वृक्षकी छायाका उसने आश्रय लिया। उसके पास ही दावाग्नि लगी। जिस वृक्षने [अपनी छायामें] विश्राम दे कर उपकार किया था उसे, कृतज्ञताके कारण छोड कर चले जानेकी उसकी इच्छा न हुई। और इसलिये, उसीके साथ दावानलमें उसने अपने प्राणोंकी आहुति दे दी। फिर इसके बाद, मंत्रियोंने उसके पुत्र जयकेशीको राज-पद पर अभिषिक्त किया। क्रमशः उसके एक मयणल्लादेवी नामकी पुत्री पैदा हुई। शिवभक्तोंने उसके सामने [किसी समय] ज्यों ही सोमेश्वरका नाम लिया त्यों ही उसको अपने पूर्व जन्मका स्मरण हो आया कि– 'मैं पूर्व जन्ममें ब्राह्मणी थी। बारहों मासके उपवास करके प्रत्येकके उद्यापनके समय बारह वस्तुओंका दान किया करती थी। [इसके बाद] श्री सोमेश्वरको प्रणाम करनेके लिये प्रस्थान करके बाहुलोड नगरमें आई। वहाँपर कर देनेमें असमर्थ हो [आगे] न जा सकी। उसीके शोकमें, यह प्रतिज्ञा करके कि 'भविष्य जन्ममें मैं इस करको मिटादेने वाली बनूं '–मर कर इस कुलमें पैदा हुई। ऐसी यह उसे पूर्व जन्मकी स्मृति हुई। इसके अनुसार बाहुलोडके करको हटा देनेकी इच्छासे उसने गूर्जर नरेश जैसे श्रेष्ठ वरकी कामना करके अपने पितासे यह सब वृत्तांत कहा। जयकेशी राजाने यह व्यतिकर जान कर अपने प्रधान पुरुषोंके द्वारा, श्री कर्णसे अपनी पुत्री श्री मयणल्लादेवीको [पत्नीरूपमें ग्रहण करनेकी] स्वीकृति माँगी। श्री कर्णने जब उसकी कुरूपताकी बात सुनी तो वह उदासीन हो गया। पर उस कन्याका मन उसीमें लगा देख कर पिताने मयणल्लादेवीको उसके वहाँ, स्वयंवरा रूपमें–जिसने स्वयं अपना वर चुन लिया है–उसीके पास भेज दिया। इधर कर्ण गुप्तरूपसे स्वयं ही उसे कुरूपा देख कर उसके प्रति सर्वथा निरादर हो गया। राजाके इस प्रकार त्यागके कारण अपनी आठ सखियोंके साथ मयणल्लादेवीको प्राणत्याग करनेकी इच्छुक जान कर श्री कर्णकी माता उदयमति रानीने, उनकी यह विपद देखनेमें असमर्थ हो कर, उन्हींके साथ प्राणत्यागका सङ्कल्प किया। क्यों कि–

> १३०. महान् लोग अपनी विपत्तिसे उतने दुःखी नहीं होते जितने दूसरोंकी विपत्तिसे। अपने ऊपर आघात होने पर जो पृथ्वी अचल रहती है वही दूसरोंकी विपद देख कर काँपने लगती है।

इसके बाद महा उपद्रव उपस्थित हुआ जान कर मातृभक्तिवश श्री कर्णने उससे विवाह कर लिया। पर बादमें [बहुत समय तक] उसकी ओर नज़र उठा कर ताका भी नहीं।

८४) एक बार मुञ्जाल मंत्रीको कञ्चुकीसे यह मालूम हुआ कि राजाका मन किसी अधम स्त्रीके प्रति साभिलाष है। [यह जान कर] उसने ऋतुस्नाता मयणल्लादेवीको, उसीका रूप धारण कराके एकान्तमें

उसके पास भेजा। राजाने यह समझकर कि यह वही स्त्री है, उसके साथ सप्रेम उपभोग किया और उससे उसको गर्भाधान हो गया। फिर उसने संकेत बनानेके लिये राजाके हाथसे उसकी नामाङ्कित अँगूठी ले ली और अपनी अँगुलिमें पहन ली। बादमें प्रातःकाल, उस दुर्नियमके कारण राजाको ग्लानि हुई और उस रहस्यमय वास्तविक वृत्तान्तको न जानते हुए उसने प्राणत्याग करनेका संकल्प किया। स्मृतिशास्त्रियोंके, ताँबेकी बनी हुई प्रतप्त मूर्तिके साथ आलिंगन करनेसे इसका प्रायश्चित्त हो जायगा, ऐसा विधान बतलानेसे राजाने उसी प्रकार करनेकी इच्छा की। तब उस मंत्रीने वह सारी बात जैसी बनी थी वैसी कह सुनाई।

(इस जगह P प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक मिलते हैं –)

[८५] [अपने] भारी पराक्रमके कारण तो यह पिता [भीम] के समान हुआ। और रमणीय आकारके कारण यह राजा अपने पुत्र [जयसिंह-सिद्धराज] के समान हुआ।

[८६] पिता कर्ण (राजाके) के स्त्री-नेत्रोंको कहीं भी रति (प्रीति) नहीं प्राप्त होती थी इसी लिये उन (स्त्री-नेत्रों) की प्रवृत्ति कर्ण (कान) तक हुई। (अर्थात् इसी लिये मानों स्त्रियोंके नेत्र कानतक लंबे होने लगे।)

[८७] मानों कर्ण और अर्जुनके उस पुराने वैरको स्मरण करते हुए ही, उस कर्णने [अपने] अर्जुन (रोग) वालेको देशान्तरमें पहुँचा दिया।

सिद्धराज जयसिंहका जन्म।

[८८] जिस प्रकार दशरथके पुत्र मनोहर गुणोंसे युक्त श्री राम हुए उसी प्रकार इस [कर्ण] का जगद्विजयी ऐसा जयसिंह नामक पुत्र हुआ।

८५) अच्छे लग्न (मुहूर्त) में पैदा हुए उस पुत्रका नाम राजाने 'जयसिंह' ऐसा रखा। वह बालक जब तीन वर्षका था उसी समय समवयस्क कुमारोंके साथ खेलता हुआ सिंहासनपर आरूढ हो गया। इस बातको अपशकुन विरुद्ध समझ कर राजाने ज्योतिषियोंसे पूछा। उन्होंने निवेदन किया कि यह [बड़ा] आभ्युदयिक लग्न है। राजाने उसी समय उस पुत्रका राज्याभिषेक करा दिया।

८६) सं० ११५० पौष वदी ३ शनिवार, श्रवण नक्षत्र, वृष लग्नमें, श्री सिद्धराजका पट्टाभिषेक हुआ।

८७) राजा कर्ण, आशापल्ली नामक स्थानके रहनेवाले आशा नामक भीलके ऊपर युद्धके लिये चढ़ाई करके गया। भैरव देवीका शुभ शकुन होने पर, वहीं कोछरबा नामक देवीका मंदिर बनवाया [और वहीं शिबिर-निवेश किया] फिर, एक लाख सहस्रके अधिपति उस भीलको जीतकर और उस प्रासादमें जयन्ती देवीकी प्रतिष्ठा करके, कर्णेश्वर देवताका मन्दिर और कर्णसागर तालाबसे सुशोभित कर्णावती पुरीको बसाकर खुद वहीं राज करने लगा। उस राजाने पत्तन में भी कर्णमेरु नामक प्रासाद बनवाया।

सं० ११२० चैत्र सुदि ७ से लेकर, सं० ११५० पौष वदी २ तक, २९ वर्ष ८ मास २१ दिन इस राजाने राज किया।

सिद्धराजका राज्यवर्णन – लीला वैद्यका प्रबन्ध।

८८) इसके बाद, जब श्री कर्णका स्वर्गवास हो गया तो श्रीमती मयणल्लदेवीका भाई मदनपाल अन्यायसे बर्तने लगा। उसने लीला नामक वैद्यको, – जिसने देवताके प्रसाद पाया था और सार्वजनिक उपकार करके लोक हितकर होकर जिसकी कल्पवृक्ष आदि पूजा द्वारा अभ्यर्थना किया

करते थे—अपने महलमें बुलाया। शरीरमें बनावटी रोग बतला कर नाडी दिखाई। वैद्यने उपयुक्त पथ्यका सेवन करना बतलाया तो [उस मदनपालने कहा] 'यही तो नहीं है।' और इसीलिये मैंने तुम्हें बुलाया है। [किसी और प्रकारका] पथ्य दे कर भूख शान्त करनेके लिये तुम्हें नहीं [बुलाया है]। इसलिये बत्तीस हजार [रुपये] हाजर करो, यह कह कर उसे बंदी कर लिया। उसने वह सब वैसा करके (अर्थात् उसका मांगा हुआ द्रव्य दे-दिला कर) फिर इस तरहका अभिग्रह (नियम) ग्रहण किया कि-'मैं इसके बाद प्रतीकारके लिये राजाका घर छोड़ कर अन्यत्र कहीं नहीं जाऊँगा'। इसके बाद परम आतुर रोगियोंका प्रस्रवण (पैशाब) मात्र देख कर ही वह उनका निदान और चिकित्सा करता रहा। [एक समय] किसी मायावीने, कल्पित रोगकी चिकित्सा कौशलको जाननेकी इच्छासे एक बैलका मूत्र दिखाया। उसने अच्छी तरह उसे देख कर सिर हिलाते हुए कहा-' यह बैल बहुत खानेके कारण फूल गया है। इसलिये शीघ्र ही इसे तेलकी नाली दो। नहीं तो मर जायगा।' ऐसा कह कर उसने उसके चित्तमें चमत्कार उत्पन्न किया।

एक बार राजाने अपनी गर्दनकी पीडाका प्रतीकार पूछा। उसके यह कहने पर कि, दो पल भर कस्तूरीको भिगो कर लेप करनेसे रोग शान्त होगा, वैसा ही किया गया। गर्दन ठीक हो गई। फिर राजाकी पालकी ढोनेवाले किसी गरीब मनुष्यने ग्रीवा (गर्दन) की पीड़ाकी दवा पूछी। उससे कहा कि 'करीरकी जड़ घिस कर उसके रसमें उसी जगहकी मिट्टी मिला कर उसका लेप करो।' तब राजाने पूछा कि यह क्या बात है? इस पर उसने बताया कि 'आयुर्वेदज्ञ लोग देश, काल, बल, शरीर और प्रकृति देख कर चिकित्सा किया करते हैं।'

एक बार, कुछ धूर्त एक मत हो कर दो दोकी संख्यामें पृथक् पृथक् हो गये। पहले दोने बाजारके रास्तेमें पूछा कि 'क्या बात है कि आप शरीरसे खिन्न दिखाई देते हैं।' दूसरे दोने श्रीमुञ्जालस्वामी प्रासादके सोपान पर [यही बात] पूछी। तीसरे दोने राजद्वार पर और चौथे दोने द्वारतोरण पर यही बात पूछी। इस प्रकार बार बार पूछनेसे उसे [अपने स्वास्थ्यके विषयमें बड़ी] शंका उत्पन्न हो गई और तत्काल ही उसे माहेन्द्र ज्वर हो गया। [और उससे] तेरहवें दिन वह वैद्य मर गया।

इस प्रकार यह ठ० लीला वैद्यका प्रबंध समाप्त हुआ।

■

८९) इसके बाद, सान्तू नामक मंत्री, कालकी नाँई अन्यायी उस मदनपालको मारनेकी इच्छासे किसी समय, कर्णके पुत्र-कुमार जयसिंह-को हाथी पर चढ़ा कर राजपाटिकाके बहाने उसके घर ले गया और वहाँ [कुछ तूफान मचवा कर] वीरोंके हाथसे उसको मरवा डाला।

■

उदयन मंत्रीका प्रबन्ध।

९०) इधर, मरु देशका रहनेवाला कोई श्रीमालवंशीय वणिक् जिसका नाम 'उदा' था, अच्छा घी खरीदनेके लिये, वर्षाकालकी अँधेरी रातमें कहीं जा रहा था। वहाँ जंगलमें उसने देखा कि कुछ कर्मचारी किसी खेतमें एक क्यारीसे दूसरी क्यारीमें जल भर रहे हैं। उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो। उन्होंने जब कहा कि 'हम फलाँ आदमीके कामुक (हितचिन्तक) है' तो उसने पूछा कि मेरे भी कहीं हैं? इस पर उनके यह बताने पर कि 'कर्णावतीमें हैं' वह सकुटुंब [उस स्थानको छोड़ कर] वहाँ (कर्णावती) पहुँचा। वहाँ पर वायटीय जिन मन्दिरमें [देवदर्शन करते हुए उसको] किसी 'लाछि' नामक एक छिंपिका श्राविकाने, उसे साधर्मिक जान कर प्रणाम किया। उसके यह पूछने पर कि आप किसके अतिथि हैं? [उदाने कहा कि] 'मैं विदेशी हूँ, आप ही का अतिथि समझिए।' यह सुन कर उसने उसको अपने साथ ले जा कर, किसी वणि-

कूके घर भोजन बनवा कर उसे खिलाया और अपने घरके नीचेके तल्लेमें खाट बिछवा कर रहनेकी जगह दी। कालक्रमसे उसके पास खूब सम्पत्ति हो गई। फिर उसने अपना निजका ईंटोका घर बनवानेकी इच्छा की। उसकी नींव खोदते समय [जमीनमेंसे] अपरिमित धन निकल आया। वह उस स्त्रीको बुला कर उस निधिको जब देने लगा तो उसने अस्वीकार किया। उसी निधिके प्रभावसे, वहाँ पर, वह उदयन मंत्रीके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

९१) [फिर उस धनसे] उसने कर्णावती में अतीत, भविष्य और वर्तमानके चौवीस चौवीस जिनोंसे सुशोभित श्री उदयन विहार [नामक मन्दिर] बनवाया।

९२) उसको भिन्न भिन्न मातासे उत्पन्न ऐसे चार पुत्र हुए, जिनके नाम चाहड, आम्बड, बाहड और सोलाक इस प्रकार थे।

*

सान्तू मंत्रीका प्रबन्ध

९३) एक दूसरे अवसर पर, सान्तू नामक महामंत्री हाथी पर चढ़ कर राजपाटिकामें जा कर लौटा और अपनी ही बनवाई हुई सान्तूयसहिकामें देववन्दन करनेकी इच्छासे उसमें प्रवेश करते हुए, उसने, किसी चैत्यवासी श्वेतांबर यतिको, वार-वेश्याके कंधे पर हाथ रखे हुए देखा। मंत्रीने हाथीसे उतर कर उत्तरासङ्ग करके, पञ्चाङ्ग प्रणामके द्वारा, गौतम मुनिकी भाँति, उसको प्रणाम किया। वहाँ पर क्षणभर ठहर कर, फिर उसे प्रणाम करके, वह चला गया। वह यति तो लाजके मारे मुँह नीचा किये पातालमें गड़ा-सा जाने लगा; और फिर तत्काल सब छोड़-छाड़ कर 'मलधारी श्री हेमसूरिके पास उपसम्पदा ग्रहण करके, संवेग रससे पूर्ण हो शत्रुञ्जय पर्वत पर चला गया और बारह वर्षतक वहाँ तप किया। किसी समय वही मंत्री श्री शत्रुञ्जय पर देवचरणोंकी यात्राके लिये गया तब वहाँ उस मुनिको अपरिचितकी नाँई देख कर, उसके चरित्रसे मनमें चकित हो कर, उसका गुरुकुल आदि पूछा। 'असलमें तो आप ही गुरु हैं'—उसके ऐसा कहने पर कान बंद करके मंत्रीने कहा – नहीं, नहीं, ऐसा मत कहिये।' असल बात न जाननेके कारण ऐसा कहते हुए उस मंत्रीसे उसने कहा—

> १३१. चाहे गृही हो चाहे त्यागी, जो जिसको शुद्ध धर्ममें स्थापित करता है वही उसका धर्मगुरु होता है।

इस प्रकार उसे मूल वृत्तान्त बता कर उसकी धर्ममें दृढ़ता निर्माण की।

इस प्रकार यह मन्त्री सान्तूकी दृढधर्मताका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मयणल्लादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना।

९४) उसके बाद, श्री मयणल्लादेवीने, अपने पूर्व जन्मकी स्मृतिके ज्ञानसे जाना हुआ, पूर्वभवका यह वृत्तांत, जब सिद्धराजसे कह बताया, तो वह श्री सोमनाथके योग्य सवा करोड़ मूल्यकी सुवर्णमयी पूजा-सामग्री साथ ले कर यात्राके लिये माताके साथ चला। वह इस प्रकार, बाहुलोडनगर पहुँची, तो वहां पर, पञ्चकुल – कर वसूल करने वाले राजपुरुष – के द्वारा, कापडी आदि प्रवासी भिक्षुक गण, कर देनेके लिये पीडित किये जा कर, उनकी अवहेलना की गई। वे आँखोंमें, आंसू भर कर पीछे लौटने लगे। मयणल्लादेवीने जो यह बनाव देखा तो उसके दर्पणसे [स्वच्छ] हृदयमें उनकी पीड़ा संक्रान्त हो गई। वह भी [उनके साथ यात्रा किये बिना] पीछे लौटने लगी। तब सिद्धराजने बीचमें पड कर कहा—'स्वामिनि! आपका यह कैसा संभ्रम है! आप क्यों पीछे लौट रहीं हैं!' राजाके ऐसा कहने पर [उसने कहा—] जभी यह कर सर्वथा बन्द कर दिया जायगा तभी मैं सोमेश्वरको प्रणाम करूँगी, अन्यथा नहीं। और तो क्या, इसके बाद भोजन और पानका भी मुझे नियम है।' यह सुन कर राजाने पञ्चकुलको बुलाया और उसका हिसाब पूछा, तो उसमें ७२

लाखकी आमदनी माऌम दी। राजाने उस करके पट्टेको फाड कर, माताके कल्याणार्थ उस करको उठा दिया और अंजलीमें जल ले कर उसकी प्रतिज्ञा की। इसके बाद उस (मयणल्लादेवी) ने सोमेश्वरके पास जा कर उस सुवर्णसे पूजा की; तथा तुलापुरुषदान, गजदान आदि अनेक महादान दिये। रातको वह ऐसे गर्वके साथ कि 'मेरे समान संसारमें न कोई हुई और न कोई होने वाली है' गाढ़ी नींदमें सो गई। तपस्वी वेष धारण करके उसी देव (सोमेश्वर) ने [स्वप्नमें प्रत्यक्ष हो कर के] कहा–' यहीं मेरे देवालयमें एक कार्पटिक स्त्री यात्राके लिये आई है। तुम्हें उसका पुण्य माँगना चाहिये। ऐसा आदेश करके जब वह देवता अन्तर्धान हो गये तो [फिर प्रातःकाल] राजपुरुषोंसे खोज करा कर उस स्त्रीको उसने बुलवाया। उसके पुण्यको माँगने पर भी वह किसी तरह जब देनेको तत्पर न हुई तो उससे पूछा कि 'यात्रामें तुमने क्या [द्रव्य] व्यय किया है?' तो वह बोली कि मैं भीख माँग माँग कर १०० योजन दूरसे, कई देश पार करके, कलके दिन यहाँ देवालयमें आई हूँ। तीर्थोपवास करके, पारणामें किसी सुकृतिके यहाँसे, मैं निर्भागिनी थोडासा पिण्याक (खली) प्राप्त करके, उसके एक टुकडेसे मैंने श्री सोमेश्वरकी पूजा की, एक टुकडा अतिथिको दिया और एक टुकडा स्वयं खा कर उपवासका पारणा किया। आप तो बडी पुण्यवती हैं–जिसके पिता, भाई, पति और पुत्र राजा हैं। आपने यह बाहुलोडकर, जो ७२ लाखका था, उठवा दिया है। सवा करोड मूल्यकी सामग्रीसे देवकी पूजा कर अगणित पुण्य अर्जन किया है। आप मेरे इस क्षुद्र पुण्य पर क्यों लोभ करती हैं! और यदि क्रोध न करें तो कुछ कहूँ। असलमें तुम्हारे पुण्यसे मेरा पुण्य अधिक है। क्यों कि–

१३२. संपत्ति होने पर नियम करना, शक्ति रहते सहन करना, यौवनावस्थामें व्रत लेना और दरिद्रावस्थामें दान देना,–यह सब बहुत थोडा होने पर भी अधिक पुण्यका कारण होता है।

इस प्रकारके युक्ति-युक्त वाक्यसे उसने उसके गर्वका निराकरण किया।

*

९५) इसके बाद, सिद्धराज जब समुद्रके किनारे खडा हो कर उसको देख रहा था तब एक चारणने आ कर इस प्रकार स्तुति की–

१३३. हे चक्रवर्ती नाथ! तुम्हारे चित्तको तो कौन जानता है, लेकिन मैं समझता हूँ कि हे कर्णपुत्र आप शीघ्र ही लंका लेना चाहते हैं और उसीके लिये यहाँ खडे खडे मार्ग देख रहे हैं।

[तब एक] दूसरे चारणने कहा–

१३४. हे जेसल (जयसिंह)! यह समुद्र दौड कर तुम्हारे पैर धो रहा है; इसलिये कि तुमने और तो सब राजाओंको जीत लिया है और सिर्फ एक मेरा विभीषण राजा बाकी रह गया है; सो उसको छोड दीजिए।

*

सिद्धराजका मालवाके साथ संघर्ष।

९६) राजा जब इस प्रकार यात्रामें व्यस्त था, उसी समय मालवाका छलान्वेषी राजा यशोवर्मा गूर्जर देशमें [आ कर] उपद्रव करने लगा। सान्तू मंत्रीने पूछा कि 'भलाँ, आप कैसे इस चढाईसे निवृत्त हो सकते हैं?' उसने कहा कि 'यदि तुम अपने स्वामीकी सोमेश्वर देवकी यात्राका पुण्य मुझे दे दो तो।' ऐसा कहने पर उस मंत्रीने उसके चरण धो कर, उस पुण्यदानके निदानरूप जलको चुल्लूमें ले कर उसके हाथ पर छोड दिया और ऐसा करके उसको [गूर्जर देशसे] वापस लौटाया। [यात्रासे लौट कर] श्री सिद्धराज जब नगरमें आया और मंत्री और मालवनरेशके उस वृत्तान्तको सुना तो वह बडा क्रुद्ध हुआ। मंत्रीने उससे

[शांत करते हुए] यों कहा—' स्वामिन् ! यदि मेरे देनेसे तुम्हारा पुण्य चला जाता है तो मैं उसका तथा अन्य पुण्यदानोंका पुण्य इसी तरह आपको भी दे देता हूँ । और असलमें तो बात यह थी कि जिस-किसी भी उपायसे शत्रुसेनाको स्वदेशमें प्रवेश करनेसे रोकनी जरूर थी ।' ऐसा कह कर उसने नृपतिका अनुनय किया । इसके बाद इसी अमर्षवश उसने मालव मण्डल पर चढ़ाई करनेकी इच्छा की । सहस्रलिंग [सरोवरादि] धर्मस्थानके कार्यका जो आरंभ किया गया था उसकी देखरेखका काम मंत्रियों और शिल्पियों (कारीगरों) को सौंपा। बड़ी शीघ्रताके साथ उसका काम चलने पर राजाने युद्धके लिये प्रयाण किया । वहाँ जय-जयकारके साथ बारह वर्ष तक युद्ध होता रहा । फिर भी जब किसी प्रकार धारा [नगरी] का किला नहीं टूटता दिखाई दिया तो [एक दिन राजाने यह] प्रतिज्ञा की कि धाराके किलेको तोड़े बिना आज अन्न ही न खाऊँगा । सायंकाल हो जाने पर भी ऐसा करनेमें असमर्थ होनेके कारण, सचिवोंने आटेकी बनावटी धारा बनवा कर और वहाँ पर परमार राजपुत्रको अपने सैनिकों द्वारा मरवा कर, उस प्रतिज्ञाका निर्वाह कराया । इस प्रकार प्रपञ्चसे राजाने प्रतिज्ञा तो पूरी की, लेकिन कार्यमें सफलता प्राप्त न होनेसे वापस लौटनेकी अपनी इच्छा मुञ्जाल नामक मंत्रीको बताई । उसने अपने गुप्तचरोंको तीन रास्ते, चौराहे और चबूतरे इत्यादिक स्थानों पर भेज कर, धाराके किलेके भंग होनेकी बातें जाननी चाहीं । लोगोंके परस्पर वार्तालाप करते हुए, धाराके रहने वाले किसी [जानकार] पुरुषने कहा कि ' दक्षिण दिशाके दरवाजेकी ओरसे शत्रुसेना हमला करे तब ही कहीं धाराके किलेका तोड़ना सफल हो सकता है, अन्यथा नहीं।' यह बात सुन कर [उन गुप्त चर लोगोंने] मंत्रीको सूचित किया। उसने इस वृत्तान्तको गुप्तरूपसे राजाको विज्ञापित किया। राजाने भी यह वृत्तान्त जान कर उधर ही से सेनाके साथ आक्रमण किया । तो भी दुर्गको बड़ा दुर्गम समझ कर राजा स्वयं ' यशःपटह ' नामक अपने प्रधान बलवान् पट्ट हाथी पर चढ़ा । उसके पीछे सामल नामक महावत खड़ा रहा । त्रिपोलिया दरवाजेके दोनों किवाड़ोंको, जिनके अंदर लोहेकी जबर्दस्त अर्गला लगी हुई थी, तोड़नेके लिये उस हाथीने अपना सर्व सामर्थ्य खर्च कर दिया । किवाड तो टूट गये लेकिन हाथीकी हड्डी भी साथमें टूट गई । महावतने सिद्धराजको उस परसे उतारा और ज्यों ही वह स्वयं उस पर चढ़नेको उद्यत हुआ त्यों ही वह हाथी पृथ्वी पर गिर पड़ा । वह हाथी बड़ा वीर होनेके कारण मर कर अपने यशसे धवल हो कर वडसर ग्राममें यशोधवल नाम ग्रहण करके विनायक रूपसे अवतीर्ण हुआ।

१३५. सिद्धिके स्तनरूप शैलके तटदेशके आघातके कारण मानों जिसका दूसरा दांत टूट गया है, वह एक दाँत धारण करनेवाला गजानन (विनायक) तुम्हारा श्रेय करे ।

इस तरह उसकी स्तुति [की जाती] है । इस प्रकार दुर्गका भंग करने पर युद्धमें आरूढ यशोवर्माको [सन्धि-विग्रहादि] ६ गुणोंसे बाँध कर, उस जगह पर अपनी जगन्मान्य आज्ञाकी उद्घोषणा करवाई और यशोवर्म [राजाको वन्दि बना कर अपने साथमें ले] पत्तन में आया ।

[तब कवियोंने ऐसी स्तुतियां पढ़ीं—]

[८९] अरे क्षत्रियो, ऐसा न समझो कि इस सिद्धराज के कृपाणने अनेक राजाओंकी सेनाका नाश किया है इसलिये अब इसकी धार कुंठित हो गई है । नहीं नहीं; प्रबल प्रतापरूप अग्निके ऊपर आरूढ हो कर यह सम्प्राप्तधार (=१ जिसने धारा नगरीको प्राप्त किया है, २ जिसने तेज़दार धार पाई है) कृपाण चिरकाल तक मालव रमणियोंका अश्रुजल पी कर और अधिक तेज होगा

[९०] हे महाराज ! आपने शत्रुओंके विजय करनेमें दूधकी धाराके समान जो उज्ज्वल यश प्राप्त किया है उसके कारण आपकी तलवार तो उज्ज्वल ही थी पर इन मालव-नारियोंके काजल [मिश्रित अश्रुजल] पी पी कर, इसने, उसकी महिमा सूचक, यह कालिमा धारण कर ली है । ↓

सिद्धराज और हेमचन्द्राचार्यका मिलन ।

९७) प्रति दिन सब दर्शन [के आचार्यों] को आशीर्वाद और दानके लिये बुलाये जाने पर, यथावसर बुलाये गये श्री हेमचन्द्र प्रभृति जैनाचार्य श्री सिद्धराज के पास गये । राजाके दुकूल आदि दे कर उनका सत्कार करने पर, उन सभी अप्रतिम प्रतिभा पूर्ण पंडितों द्वारा दोनों तरह पुरस्कृत हो कर हेमचन्द्राचार्यने राजाको इस प्रकार आशीर्वाद दिया–

१३६. हे कामधेनु ! तूं अपने गोमयके रससे भूमिका आसेचन कर, हे समुद्रो ! तुम अपने मोतियोंसे स्वस्तिक बनाओ, हे चन्द्र ! तूं पूर्णकुंभ बन जा और हे दिग्गजो ! तुम अपने सरल सूंडोंसे कल्पवृक्षके पत्ते तोड़ कर उनके तोरण सजाओ – क्यों कि संसारका विजय करके सिद्धराज आ रहा है ।

इस प्रकार निष्प्रपंच (सरल) काव्यके विवेचन करने पर उनकी वचन-चातुरीसे चित्तमें चमत्कृत हो कर राजाने [यथेष्ट] प्रशंसा की । इस पर कुछ असहिष्णुओंके – अर्थात् ब्राह्मणोंके – यह कहने पर कि 'हमारे शास्त्रोंके – अर्थात् पाणिन्यादि व्याकरण ग्रंथोंके – अध्ययनके बल पर ही इन (जैनों) की विद्वत्ता है।' राजाने श्री हेमचंद्र आचार्यसे पूछा । [उन्होंने कहा–] प्राचीन कालमें श्री जिनेन्द्र महावीरने अपने शैशव कालमें इन्द्रके सामने जिसकी व्याख्या की थी उसी जैनेन्द्र व्याकरणको हम लोग पढ़ते हैं । उनके ऐसा कहने पर उस पिशुनने कहा कि इन पुरानी बातोंको तो छोड़ दो और हमारे समयके ही किसी तुम्हारे व्याकरण कर्ताका पता बता सकते हो तो बताओ । इस पर वे राजासे बोले कि यदि महाराज श्री सिद्धराज सहायक हों तो, मैं ही स्वयं कुछ दिनोंमें ही पञ्चाङ्ग पूर्ण नूतन व्याकरण तैयार कर सकता हूँ। राजाने कहा– मैंने [साहाय्य करना] स्वीकार किया । आप अपने वचनका निर्वाह करें । ऐसा कह कर उसने सब सूरियोंको विदा किया । वे भी अपने अपने स्थानको गये ।

राजाने [पहले ही यह एक] प्रतिज्ञा कर ली थी कि यशोवर्मा के हाथमें विना म्यानकी छुरी देकर और उसको अपने पीछे बिठा कर हाथी पर सवार होकर हम नगरमें प्रवेश करेंगे । राजाकी इस प्रतिज्ञाको सुन कर मुञ्जाल नामक मंत्री [असंतुष्ट बना और उस] ने प्रधान पद छोड़ दिया । राजाके बार बार कारण पूछने पर

१३७. राजा लोक चाहे सन्धि [करना] न जाने और विग्रह भी [करना] न जाने; पर यदि वे [मंत्रियोंका] आख्यात (कहा हुआ) ही सुनते रहें तो इसीसे वे पण्डित हो सकते हैं ।

इस प्रकारका नीतिशास्त्रका उपदेश है। महाराजने स्वयं अपनी बुद्धिसे जो यह प्रतिज्ञा की है, भविष्यमें वह बिल्कुल ही हितकर न होगी। राजाने प्रतिज्ञाभंग होनेके भयसे भीत हो कर कहा कि 'प्राणोंका त्याग करना अच्छा है । किन्तु विश्वविदित इस प्रतिज्ञाका नहीं ।' इस पर मंत्रीने काठकी छुरी बना कर शालवृक्षके पाण्डुरंगके गोंदसे उसे परिमार्जित कर, पीछेके आसन पर बैठे हुए यशोवर्मा के हाथमें दी । उसके आगेके आसन पर राजा सिद्धराज बैठा और खूब समारोहके साथ उसने अणहिलपुरमें प्रवेश किया ।

प्रावेशिक मंगलकी धूमधाम समाप्त हो जाने पर राजाने व्याकरण वृत्तान्तकी याद दिलाई । इस पर बहुतसे देशोंके तज्ज्ञ पंडितोंके साथ सभी व्याकरणोंको नगरमें मंगवा कर श्री हेमचंद्राचार्यने श्री सिद्धहेम नामक नूतन पञ्चाङ्ग व्याकरण एक वर्षमें तैयार किया । इसका ग्रंथप्रमाण सवालाख श्लोक था । राजाके निजके बैठनेके हाथी पर उस पुस्तकको रख कर उसका जुलूस निकाला गया। उसके ऊपर श्वेतच्छत्र लगवाया गया और दो चामरग्राहिणियां चामर ढालने लगीं । इस प्रकार उस ग्रंथकी महिमा करके उसे कोशागारमें रखा। फिर राजाकी

आज्ञासे अन्य व्याकरणोंको छोड़ कर लोग सब उसीका अध्ययन करने लगे। इस पर किसी मत्सरीने राजासे कहा कि 'इस व्याकरणमें आपके वंशका तो कोई उल्लेख ही नहीं है।' इससे राजाके मनमें क्रोध हुआ। यह बात किसी राजपुरुषसे जान कर श्री हेमाचार्यने [तत्क्षण] बत्तीस श्लोक नूतन निर्माण करके बत्तीस ही सूत्रपादोंके अन्तमें उन्हें संलग्न कर दिया। प्रातःकाल जब राजसभामें व्याकरण बांचा गया तो–

१३८. हरिकी भाँति बलि बंधकर (=१ बलिको बाँधनेवाला, २ बलियोंको बंदी करनेवाला), शिवकी नाँई त्रिशक्तियुक्त, और ब्रह्माकी तरह कमलाश्रय (=१ कमलका आश्रय लेनेवाला, और २ कमला–लक्ष्मीका आश्रय) श्री मूलराज नृपकी जय हो।

इत्यादि, चौलुक्य वंशकी स्तुतिवाले बत्तीस श्लोक बत्तीस सूत्रपादोंके अन्तमें आये सुन कर राजा मनमें प्रमुदित हुआ और उस व्याकरणका उसने खूब प्रचार कराया। इसी प्रकार श्री सिद्धराजके दिग्विजय वर्णनमें [हेमाचार्यने] द्व्याश्रय नामक [काव्य] ग्रंथ बनाया।

[हेमाचार्यके बनाए इस सिद्ध हेम व्याकरणके विषयमें विद्वानोंने ऐसी उक्तियाँ कही हैं–]

१३९. हे भाई! पाणिनिके प्रलापको बंद करो, कातंत्रका चीथड़ा मत फाड़ो शाकटायनके कटु वचनको मत पढ़ो, और क्षुद्र चांद्रव्याकरणसे क्या मतलब है, भलाँ, और कण्ठाभरण आदि व्याकरणोंसे अपने आपको कोई क्यों मुलायेगा, जब कि अर्थमधुर ऐसी श्री सिद्धहेमकी उक्तियाँ सुननेको मिलती हैं।

९८) इसके बाद, श्री सिद्धराजने पत्तनमें यशोवर्मराजाको, त्रिपुरुषप्रभृति सभी राजप्रासादों और सहस्रलिंग प्रभृति धर्मस्थानोंको दिखा कर बताया कि–[हमारे राज्यमें] प्रतिवर्ष देवदायमें एक करोड़ द्रव्य व्यय किया जाता है।। और फिर उससे पूछा कि 'यह सुंदर है या असुंदर?'। वह बोला–मैं तो अठारह लाख संख्यावाले (?) मालवदेशका राजा हूँ, तो भी मैं तुमसे पराजित कैसे हुआ?। पर यह देश तो पहले ही महाकालदेवको अर्पण कर दिया गया है और उसी देवद्रव्यका हम मालवी लोग उपभोग कर रहे हैं; और इसीलिये हमारा उदय और अस्त होता रहता है। आपके वंशवाले राजा भी इतना देवद्रव्य व्यय करनेमें असमर्थ होकर उसका लोप करेंगे और फिर सारा देवदाय बंद हो जानेपर इसी प्रकार वे विपत्तिग्रस्त होकर समूल नष्ट हो जायँगे।

*

सिद्धराजका सिद्धपुरमें रुद्रमहालय बनवाना।

९९) इसके पश्चात्, एक बार श्री सिद्धराजने सिद्धपुरमें रुद्रमहालयका प्रासाद बनवाना चाहा। किसी [प्रसिद्ध] स्थपति (कारीगर) को अपने पास रख कर, प्रासादके प्रारंभ होनेके समय उसकी कैअसिकाको[1]–जो उसने किसी साहुकारके यहाँ एक लाखमें बंधक रखी थी–छुड़ा कर उसको दिलवाई। यह बांसकी कमाचियोंकी बनी हुई थी: उसे देख कर राजाने पूछा कि क्या बात है? इस पर उस स्थपतिने कहा कि मैंने महाराजकी उदारताकी परीक्षाके लिये ऐसा किया है। फिर उस द्रव्यको राजाकी अनिच्छा रहते हुए भी लौटा दिया। फिर क्रमानुसार २३ हाथ ऊँचा सर्वांगपूर्ण प्रासाद बनवाया। उस प्रासादमें अश्वपति, गजपति, नरपति प्रभृति बड़े बड़े राजाओंकी मूर्तियाँ बनवा कर रखीं और उनके सामने हाथ जोड़े हुए अपनी मूर्ति भी बनवाई। [जिसका आशय यह है कि राजा] उनसे वर माँगता है कि देशका भङ्ग करते हुए भी इस प्रासादका कोई भंग न करें। उस मंदिर पर ध्वजारोपका उत्सव करते समय सभी जैन प्रासादोंकी पताकायें उतरवा दी गईं। जैसे मालव देशके महाकालके मंदिरमें जब वैजयंती चढ़ाई जाती है तब जैन प्रासादोंमें ध्वजारोपण नहीं होने पाता।

---

१ यह कम्बासिका नामका कारीगरका कोई औजार है जिसका ठीक अर्थ समझमें नहीं आता।

सिद्धराजका पाटनमें सहस्रलिंग सरोवर बनवाना ।

१००) एक बार, सिद्धराजने मालवक मण्डलके प्रति जाना चाहा तब किसी व्यवहारीने [जो उस काममें नियुक्त अधिकारी था] सहस्रलिंग सरोवरके कारखानेके लिये कुछ द्रव्य और भाग माँगा । राजा उसे कुछ भी दिये विना चला गया । कुछ दिनोंके बाद द्रव्याभावसे उस कामके चलनेमें देरी होते देख, उस व्यवहारी (अधिकारी) ने अपने लडकेसे किसी धनाढ्य पुरुषकी स्त्रीका ताडंक (करन फूल) चुरवा लिया, और फिर स्वयं उसके दण्डस्वरूप तीन लाख द्रव्य दे दिया । उससे वह काम पूरा हो गया । यह बात मालव मण्डलमें, वर्षाकालमें ठहरे हुए राजाने सुनी । सुन कर उसे जो आनन्द हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । इसके बाद वर्षाकालकी घनी वृष्टिसे जब सारी पृथ्वी एक समुद्रकी भाँति जलमय हो गई तो प्रधान पुरुषोंने राजाको बधाई देनेके लिये किसी मरुदेश वासीको भेजा । उसने [जा कर] राजाके सामने विस्तार पूर्वक वर्षाका स्वरूप कहना आरम्भ किया । इसी बीच, उसी समय आया हुआ कोई धूर्त गुजराती जल्दीसे बोल उठा–' महाराज बधाई ! सहस्रलिंग सरोवर [जलसे परिपूर्ण] भर गया है । उसके ऐसा कहनेके साथ ही राजाने उस गुजरातीको अपने शरीरके सारे आभरण दे दिये । वह मरुवासी छींकेसे गिरे हुए मार्जार की भाँति देखता ही रह गया ।

१०१) इसके बाद, वर्षा बीतते ही, राजा वहाँसे लौटा । [रास्तेमें] नगर महास्थान (वडनगर) में डेरा डाला और वहाँ बनवाये गए मंच-मंडपमें राजसभाकी बैठक की गई । नगरके प्रासादोंमें ध्वज लगे हुए देख कर ब्राह्मणोंसे पूछा कि 'ये कौनसे प्रासाद हैं ?' उन्होंने जब वहाँके जिन और ब्रह्माके मंदिरोंका हाल बताया तो क्रुद्ध हो कर राजाने कहा कि ' जब मैंने गूर्जर मंडलमें, जैन मंदिरोंमें पताका लगानेका निषेध किया है, तो फिर आप लोगोंके इस नगरमें इन जैन मंदिरों पर ये पताकायें क्यों उड रही हैं !' उन्होंने कहा कि–' सुनिये, कृतयुगके प्रारंभमें श्रीमन्महादेवने इस महास्थान की स्थापना करते हुए श्री ऋषभनाथ और श्री ब्रह्मदेवके प्रासाद स्वयं बनवाये और उन पर ध्वजायें चढाई । सो इन दोनों प्रासादोंका सुकृतियों द्वारा उद्धार होते रहने पर ये चार युग बीत गये । दूसरी बात यह है कि–पहले यह नगर शत्रुञ्जय महागिरिकी उपत्यका भूमि था । क्योंकि नगर पुराणमें भी कहा है कि–

> १४०. कहा जाता है कि आदिकालमें इस जिनेश्वरके पर्वतकी मूलभूमिका विस्तार पचास योजन था ऊपरकी भूमिका विस्तार दश योजन था और ऊँचाई आठ योजन थी ।

कृतयुगमें आदिदेव श्री ऋषभदेवके पुत्र भरत नामक हुए । उन्हींके नामसे यह 'भरतखण्ड' प्रसिद्ध हुआ ।

> १४१. नाभि और [उनकी पत्नी] मरुदेवीके पुत्र श्री वृषभ (ऋषभ देव) हुए जिन्होंने समदृक् हो कर मुनियोग्य चर्याका आचरण किया । वे स्वच्छ, प्रशान्त अन्तःकरण, समदृक् और सुधी थे । ऋषिगण उनके अर्हत पदको मानते हैं ।
>
> १४२. मरुदेवीके गर्भसे नाभिके (श्री ऋषभदेव) पुत्र हुए जो अष्टम [विष्णुके अवतार स्वरूप] थे और सब आश्रमसे नमस्कृत थे । जिन्होंने धीरोंको अथवा वीरोंको [मोक्षका] मार्ग दिखाया ।
>
> (यहां P प्रतिमें निम्नलिखित–अनुवादवाले–श्लोक अधिक पाये जाते हैं–)
>
> [९१] स्वायंभुव मनुके पुत्र प्रियव्रत नामक हुए; उनके पुत्र हुए अग्नीन्द्र, उनके नाभि और उनके पुत्र ऋषभ ।

[९२] मोक्षधर्मका विधान करनेकी इच्छासे वासुदेव ही अंशरूपसे अवतीर्ण हुए हैं, यह बात उनके विषयमें [मुनियोंने] कही है। उनके सौ पुत्र हुए जो सभी ब्रह्मपारंगत थे।

[९३] उनमें सबसे ज्येष्ठ भरत थे जो नारायणके भक्त थे। जिनके नामसे यह अद्भुत ऐसा भारतवर्ष विख्यात हुआ।

[९४] अर्हन, शिव, भव, विष्णु, सिद्ध, बुध, परमात्मा, और पर—ये सभी शब्द एक ही अर्थके वाचक हैं।

[९५] मनीषियोंने जैन, बौद्ध, ब्राह्म, शैव, कापिल और नास्तिक इन छहोंको दर्शन कहा है।

[९६] उसमें, इन सबके कुलके आदि बीज विमलवाहन हैं। मरुदेव और नाभि ये भरतखंडमें कुल-सत्तम (कुलश्रेष्ठ) हुए।

इत्यादि पुराण वाक्योंको सुना कर, विशेष विश्वासके लिए श्रीवृषभदेवके मन्दिरके भण्डारमेंसे, राजा भरतके नामसे अंकित, पाँच आदमियों द्वारा उठाये जाने लायक काँसेका बड़ा ताळ ले आ कर राजाको ब्राह्मणोंने दिखाया। और इस प्रकार जैनधर्मका आदिधर्म होना उन्होंने सिद्ध किया। इसके बाद खेदसे मनमें खिन्न हो कर राजाने, एक वर्षके बाद, जैन मंदिरों पर पुनः ध्वजारोपण करवाये।

१०२) तदुपरान्त, पत्तनमें पहुँचने पर राजाको जब सरोवरके खर्चका हिसाब बताया गया तो व्यवहारीके उस अपराधी पुत्रसे दण्डस्वरूप तीन लाख लिये जानेकी भी बात सुनी। वह तीन लाख उसके घर भिजवा दिया। इसके बाद वह व्यवहारी राजाके लिये हाथमें भेंट ले कर उसके समीप आया और बोला कि 'यह आपने क्या किया?' तब फिर उस धर्मस्थानके अधिकारी व्यवहारीसे राजाने कहा—'जो व्यवहारी कोटीध्वज है वह ताडङ्कका चोरनेवाला कैसे हो सकता है? तुमने इस धर्मस्थानके बनवानेमें कुछ धर्मभाग मागा था, लेकिन उसके न मिलने पर प्रपञ्चमें चतुर—तथा मुँहसे मृग और भीतरसे व्याघ्रकी वृत्तिवाले, ऊपरसे खूब सरल और अंतरसे शठभाववाले मनुष्यकी तरह—तुम्हींने यह कर्म (ताडङ्कको चोरी) करवाया है।' [इस प्रकारकी और भी कितनी ही बातें कह कर उसे खूब लज्जित किया।]

१४३. जिस सरोवरके भीतर, शिवके मन्दिरके दीपक प्रतिबिंबित हो कर पातालमें सर्पोंके सिरपरके मणियोंकी भाँति शोभा पाते हैं।

१४४. सिद्धराजके इस सरोवरके शोभित रहते, मेरा मन मानसरोवरमें नहीं रमता, पम्पा सर उसक आनंद सम्पादन नहीं करता और अच्छोद सरोवर, जिसका जल बहुत ही अच्छा है, वह भी असार (जान पड़ता) है।

*

एक बार श्री सिद्धराजने रामचन्द्र [कवि] से पूछा 'ग्रीष्म ऋतुमें दिन क्यों बड़े होते हैं?' रामचन्द्रने कहा—

[९७] हे श्री गिरिदुर्गके मल्ल महाराज! आपके दिग्विजयके उत्सवमें दौड़ते हुए वीरोंके घोड़ोंकी टापूसे पृथ्वीमण्डल खोद डाला गया है और हवासे उड़ी हुई उसकी धूलने जा कर आकाशगंगामें मिल कर उसे पंकस्थलीके रूपमें परिणत कर दिया है। इससे उसमें दूर्वा उग गई है और उसे सूर्यके घोड़े चरने लग गये हैं। इसी लिए यह दिन बडा हो गया है।

[९८] मार्गणोंने तुम्हारे शत्रुओंके पास लक्ष (निशाना) पा लिया है और तुम्हारे पास वे विलक्ष (निशानेसे रहित) हो कर रहे हैं। फिर भी हे सिद्धराज! तुम्हारा 'दाता'पनका जो यश है वह ऊपर सिर उठाये रह गया है–बढ़ता चला जाता है!

*

इसके बाद, एक बार राजाने प्रथिलाचार्य जयमङ्गल सूरिसे नगरवर्णन करनेको कहा। उन्होंने कहा–

[९९] माछम होता है कि इस नगरीकी नागरिकाओंके चातुर्यसे निर्जित हो कर सरस्वती देवी है सो हक्की-बक्की-सी हो कर अपनी कच्छपी नामक वीणाको अपने बाहुसे उतार कर यहाँ पर छोड़ दी है और स्वयं पानी वहन करने लगी है। उसकी इस वीणाका यह सहस्रलिंग सरोवर तो मानों तुंबा है और कीर्तिस्तंभ मानों उसका उच्च दण्ड है।

१०३) इसके बाद, जब श्रीपाल कविकी रची हुई सहस्रलिङ्गसरोवरकी प्रशस्ति, पट्टिका पर लिखी गई तो उसके संशोधनके लिये सर्व दर्शनके (आचार्योंके) बुलाये जाने पर श्रीहेमचंद्राचार्यने [अपने प्रधान शिष्य] रामचंद्र पण्डितको यह कह कर भेजा कि 'प्रशस्ति काव्य जो सभी विद्वानोंको अनुमत हो तो उसमें अपना कुछ भी पाण्डित्य मत दिखाना।' फिर उन सब विद्वानोंने प्रशस्ति काव्यको शोधनेकी दृष्टिसे पढा और राजाके अनुरोधसे तथा श्रीपालकविके चतुरतापूर्ण पाण्डित्यसे प्रसन्न हो कर सारे काव्यको मान्य किया। उसमें भी उन सभीने निम्नलिखित काव्यकी विशेष प्रशंसा की–

१४५. " कोशसे युक्त होते हुए भी तथा दल (१ पत्ता, २ सेना) से समृद्ध हो कर भी यह कमल अपने ही कण्टकोंके समूहको उच्छिन्न करनेमें असमर्थ है और इसके अतिरिक्त पुंस्त्व भी नहीं धारण करता। (कमल शब्द पुंलिंग नहीं है) [दूसरी ओर सिद्धराजका जो कृपाण है] वह अकेला ही विना कोश-(म्यान) के भी भूतलको निष्कण्टक कर रहा है, ऐसा समझ कर लक्ष्मीने [अपने उस निवासस्थान रूप] कमलको छोड कर इसके कृपाणका आश्रय लिया है।

इस विषयमें श्रीसिद्धराजने रामचन्द्रसे खास पूछा तो उसने कहा कि 'यह कुछ सदोष है।' उन सभी पंडितोंसे पूछे जाने पर [उसने कहा कि] 'इस काव्यमें सेनाका वाचक 'दल' शब्द और कमल शब्दका 'नित्यक्लीवत्व' ये दो दोष चिन्तनीय हैं। तब उन सभी पंडितोंसे अनुरोध करके राजाने 'दल' शब्दको तो सेनाके अर्थमें प्रमाणित कराया। किन्तु कमल शब्दका 'नित्यक्लीवत्व' जो लिङ्गानुशासनसे असिद्ध है उसे कौन प्रमाणित कर सकता। इसलिये 'पुंस्त्वं च धत्ते न वा' (कभी पुंस्त्व धारण करता है, कभी नहीं) इस प्रकार इस पदमें अक्षरभेद करवाया [जिससे वह अशुद्धि दूर हो गई]। उस समय रामचन्द्रको सिद्धराजका दृष्टिदोष लगा और वह ज्यों ही वसतिमें प्रवेश करने लगा त्यों ही उसकी एक आँख नष्ट हो गई।

*

१ इस श्लोकमें 'मार्गण' और 'लक्ष' शब्द पर श्लेष है। 'मार्गण' का एक अर्थ है बाण और दूसरा अर्थ है मंगन=याचक। 'लक्ष' का एक अर्थ है लाख संख्या परिमित द्रव्य और दूसरा अर्थ है लक्ष्य=निशाना। मार्गणका अर्थ जब बाण ऐसा विवक्षित है तब उसके साथ लक्षका अर्थ निशाना लेना होगा; और जब मंगन=याचक ऐसा अर्थ अपेक्षित होगा तब लक्षका अर्थ लाख द्रव्य लेना होगा। सिद्धराजके मार्गण याने बाण विपक्ष याने शत्रुके पक्षमें लब्धलक्ष्य–निशाना प्राप्त करनेवाले – होते हैं, कभी व्यर्थ नहीं जाते; और वे ही बाण (शत्रुके फेंके हुए) सिद्धराजके पक्षमें विलक्ष–लक्ष्यभ्रष्ट हो कर रह जाते हैं। इससे विपरीत, मार्गण याने याचक लोक हैं वे सिद्धराजके पास लब्धलक्ष याने लाखोंका द्रव्य प्राप्त करते हैं और शत्रु राजाओंके पास विलक्ष याने विगतलक्ष–विनाशी प्राप्तिके रह जाते हैं।

१०४) किसी समय, सान्धिविग्रहिकों द्वारा डाहल देशके राजाका निम्न लिखित श्लोक, जो यमल पत्र (मित्रताका संबंध सूचक पत्र) पर लिखा हुआ था, सुनाया गया–

१४६. आ-युक्त हो कर लोकमें प्राणदान करता है, वि-युक्त हो कर मुनियोंको प्रिय होता है, सं-युक्त हो कर सर्वथा अनिष्ट कारक बनता है और केवल–अकेला होने पर स्त्रियोंका प्रिय बनता है ॥

राजाने पूछा कि 'इसमें क्या बात है?' उन्होंने कहा–'आपके देशमें एक-से-एक प्रधान ऐसे बहुतसे विद्वान् रहते हैं। सो उनसे इस दुर्बोध्य श्लोककी व्याख्या कराइये।' उनकी यह बात सुन कर सभी विद्वान् उसका अर्थ सोचने लगे पर किसीकी समझमें नहीं आया। राजाने आचार्य हेमचन्द्रसे पूछा। उन्होंने इस प्रकार व्याख्या की–'इसमें 'हार' शब्दका अध्याहार है। उसके साथ 'आ' उपसर्गका योग होनेसे 'आहार' बनता है जो सब जीवोंको प्राण देता है। 'वि' उपसर्गके योगसे 'विहार' बन कर दोनों तरहसे यतियोंका प्रिय होता है। 'सं' के योगसे 'संहार' बनता है जो सर्वथा अनिष्ट लगता है और विना किसी उपसर्गके स्त्रियोंका प्रिय आभूषण गलेका 'हार' होता है।'

*

१०५) एक दूसरी बार, सपादलक्ष देशके राजाने

'लगी हुई चन्द्रकला तो गौरीके मुखकमलका अनुहार नहीं कर सकती।'

इस प्रकारकी समस्यावाला आधा दोहा यहाँ पर (पाटनमें) भेजा। अन्यान्य उन कवियोंके उसकी पूर्ति न करने पर

'(और) जो न देखी गई वैसी प्रतिपदाकी चन्द्रकलाकी उपमा दी कैसे जाय।'

इस प्रकारका उत्तरार्द्ध कह कर मुनीन्द्र हेमचन्द्रने उसको पूर्ण किया।

*

सिद्धराजका सौराष्ट्रके राजा खंगारको विजय करना।

१०६) श्रीसिद्धराजने, नवघण नामक आभीर राणाका निग्रह करनेमें, पहले ग्यारह बार अपनी सेनाका पराजित होना जान कर, वर्द्धमान (वढवाण) आदि नगरोंमें बड़े बड़े प्राकार बनवा कर, स्वयम् ही उसके लिये प्रयाण किया। उस (नवघन) के भगिनी पुत्रने [किलेका रहस्य आदि बतलानेवाले] संकेत देते समय यह वचन लिया था कि 'किलेका कब्जा करते समय इस नवघनको सिर्फ द्रव्यमारसे मारना (अर्थात् भारी दण्ड दे कर द्रव्य वसूल करना), लेकिन किसी शस्त्रके मारसे नहीं मारना।' [राजाके किला सर कर लेने पर] उस नवघनको उसकी स्त्रीने कहीं अन्दर छुपा दिया जिसको राजाने उस विशाल महलमेंसे बहार खींच निकाला और धनके भरे हुए बर्तनोंसे उसे पीट पीट कर मार डाला। उसकी स्त्रीको यह कह कर कि 'इसको हमने द्रव्यके मारसे ही मारा है' अपने वचनका पालन बतलाया और उसे शान्त किया।

शोकसे निमग्न उसकी रानी [सूनलदेवी] के ये वाक्य कहे जाते हैं–

१४८. यह राणा स्वघरमें नहीं है। न कोई उसे लाया है, न कोई लावेगा। खंगारके साथ मैं स्वयं अपने प्राण अग्निमें क्यों न होम दूँ।

१४९. और सब राजा तो बनिये हैं और उनमें यह जेसल (जयसिंह) बड़ा सेठ है। हमारे गढके नीचे इसने यह कैसा व्योपार मांड रखा है।

१५०. हे गौरवशाली गिरनार तैंने क्यों मनमें मत्सर धारण कर लिया है? खंगारके मरने पर तैंने अपना एक शिखर भी नहीं गिराया।

[१०१] हे गरवा गिरनार ! तुम पर वारि जाती हूँ । [खंगारके लिये] लंबा बुलावा आया है। इसके जैसा भारक्षम (समर्थ) सज्जन फिर दूसरी बार तुझे नहीं मिलेगा ।

[१०२] मुझको इतने-ही-से संतोष होगा, जो प्रभु (स्वामी) के पगोंमें [मेरा भी शरीर अग्निद्वारा] प्रदीप्त हो । न मुझे रानीपनकी चाहना है, न रोष है। ये दोनों खंगार के साथ चले गये।

[१०३] हे मन ! अब तंबोल मत माँगो, खुले मुँह मत झांको । देउलवाडे के संग्राममें खंगार के साथ वह सब चला गया है।

[१०४] हे जेसल ! मेरी बाँह मत मोडो और वारंवार विरूप भाव न बताओ । नवघनके विना नदीमें नया प्रवाह नहीं आता ।

[१०५] हे वढवाण ! मैं तुझसे क्या कहूं—भूल जाना चाहती हूँ लेकिन भूल नहीं सकती। हे भोगावा (वढवाणके पासकी नदी) तेंने सोनाके समान प्राणोंका भोग लिया।

इस प्रकारके बहुतसे वाक्यं[१] [कहे जाते] हैं। वे यथाप्रसंग जानलेने योग्य हैं।

१०७) इसके बाद, महं० जाम्बके वंशज दण्डाधिपति सज्जन की योग्यता देख कर उसे सुराष्ट्र देश का प्रबन्धक (गवर्नर) नियुक्त किया । उसने स्वामीको विना सूचन किये ही, तीन वर्षके वसूल किये हुए [राजकीय] द्रव्यसे श्री उज्जयन्त (गिरनार) पर्वत पर स्थित नेमिनाथके काठके बने हुए जीर्ण मन्दिरको उखाड कर उसके स्थानमें नया पत्थरका मन्दिर बनवाया । चौथे वर्ष चार सामंतोंको भेज कर राजाने सज्जन दण्डाधिपतिको पत्तनमें बुलवाया । उससे [पिछले] तीन वर्षका वसूल किया हुआ द्रव्य माँगने पर, साथमें लाये हुए उसी देशके व्यवहारियोंसे उतना ही धन ले कर देता हुआ वह बोला—'महाराज ! श्री उज्जयन्तके मंदिरके जीर्णोद्धारका पुण्य अथवा यह धन इन दोनोंमेंसे चाहे सो एक ले लें ।' उसके ऐसा बताने पर उसकी अतुलनीय बुद्धिसे चित्तमें चमत्कृत हो कर सिद्धराजने तीर्थोद्धारका पुण्य लेना ही स्वीकार किया । वह सज्जन फिर उसी देशका अधिकार पा कर, उसने शत्रुंजय और उज्जयन्त इन दोनों तीर्थोंमें उनके बीचके बारह योजन विस्तृत अन्तरके जितना ही लंबा दुकूलका बना हुआ महाध्वज चढाया ।

इस प्रकार यह रैवतकोद्धार प्रबन्ध समाप्त हुआ ।

*

सिद्धराजका शत्रुंजयकी यात्रा करना ।

१०८) इसके बाद, एक बार फिर सोमेश्वरकी यात्रा कर वापस लौटते समय श्री सिद्धराजने, रैवतकगिरिकी उपत्यकामें डेरा डाल कर, अपना कीर्तन (मन्दिरादि धर्मस्थान) देखना चाहा । उसी समय मत्सरपरायण ब्राह्मणोंने यह कह कर पिशुनवाक्योंसे उसे रोका कि 'यह पर्वत सजलाधार लिंगके आकारका है, इसलिये इसे पैरोंसे स्पर्श करना उचित नहीं है ।' राजाने वहाँ पर पूजा भिजवा कर प्रस्थान किया और शत्रुञ्जय महातीर्थके पास आ कर पडाव डाला । वहाँ पर भी उन्हीं निर्दय चुगलखोर ब्राह्मणोंने हाथमें कृपाण ले कर तीर्थ पर जानेका मार्ग रोका । उनके ऐसा करने पर श्री सिद्धराजने सवेरा होनेके पहले ही, कापडीका वेष बना कर, और जिसके दोनों ओर गंगाजलके पात्र रखे हुए हैं ऐसी बहंगी कंधे पर रख कर, खुद इन ब्राह्मणोंके बीचमें हो कर पर्वत पर चढ गया । किसीने उसके स्वरूपको नहीं जाना । [ऊपर जा कर] गंगाजलसे श्री युगादि देव (ऋषभनाथ) को स्नान कराया और पर्वतके पासके बारह गाँवोंका शासन उस

[१] ये जो वाक्य ऊपर अनूदित किये गये हैं, उनमेंका कितनाक कथन अस्पष्ट और अस्फुटार्थक है । जो अर्थ यहा पर दिया गया है वह निर्भ्रान्त है ऐसा नहीं कह सकते ।

देवको दान कर दिया। तीर्थका दर्शन कर वह उन्मुदित-लोचन हुआ और अमृताभिषिक्त होनेकी नाँई खडा रह गया। [पर्वतकी रमणीयता देख कर] सोचने लगा कि 'इस सल्लकी-वन और नदियोंसे परिपूर्ण पर्वत पर, यहीं, [नये] विंध्यवनकी रचना करूँगा' — इस प्रकारकी जो सफल प्रतिज्ञा [पहले की थी और तदनुसार] हाथियोंका झुंड पानेके लिये जो मेरा मन बेहाथ हो गया था, उस मनोरथसे मैंने इस तीर्थकी पवित्रताका ध्वंस करनेवाला मानस पाप किया है और इसलिये मुझ पापीको धिक्कार है।' इस प्रकार श्री देवपादके सामने राजलोक द्वारा निंदित अपने आपकी निंदा करता हुआ वह आनंदके साथ पर्वत पर से नीचे उतरा।

*

वादी श्रीदेवसूरिका चरित्रवर्णन।

१०९) अब यहाँ पर देवसूरिका चरित्र वर्णन करेंगे। — उस अवसर पर कुमुदचंद्र नामक दिगम्बर [विद्वान्] भिन्न भिन्न देशोंके चौरासी वादियोंको वादमें जीत कर, कर्णाटक देशसे गूर्जर देशको जीतनेकी इच्छासे कर्णावती नगरमें आया। वहाँ भट्टारक श्री देवसूरि चतुर्मास करके रहे हुए थे। एक बार श्री अरिष्टनेमिके मंदिरमें जब वे धर्मशास्त्रका व्याख्यान कर रहे थे तो उस दिगंबरके साथी पंडितोंने उनकी वह अनुच्छिष्ट (मौलिक, विशुद्ध) वाणी सुनी। उन्होंने जा कर वह वृत्तान्त कुमुदचन्द्र से कहा तो उसने उनके उपाश्रयमें तृणके साथ जल प्रक्षेप कराया। पर, खण्डन, तर्क आदि प्रमाण शास्त्रोंमें प्रवीण ऐसे उस महर्षि पंडितने जब इस पर कुछ ध्यान न दे कर उसकी अवज्ञा की, तो उस दिगम्बरने श्री देवाचार्य की बहुत तपोधना श्री सुन्दरी को चेटकाधिष्ठित करके, नाच, जलानयन आदि अनेक विडंबनाओंसे उसे विडंबित किया। चेटक (टोना आदि) के दूर होने पर वह जब स्वस्थ हुई तो उस उत्कट पराभवसे दुःखित हो कर वह अपने आचार्यकी खूब भर्त्सना करने लगी। उसे रोक कर आचार्य चिन्तामग्न हो रहे।

(यहाँ पर P प्रतिमें इस विषयके निम्नलिखित पद्य पाये जाते हैं—)

[१०३] हा ! मैं किसके आगे पुकार करूँ ? मेरे प्रभु तो कर्णरहित हैं। इनसे तो वह सुगत (बुद्ध) देव ही अच्छा है जो अपने शासनका तिरस्कार होने पर [उसका प्रतिकार करनेकी इच्छासे] अवतार धारण करता है।

[साध्वीके इस वाक्यको सुन कर आचार्य मनमें सोचने लगे—]

[१०४] आः ! गुरुजनके प्रमाणोंकी व्याख्याका श्रम मेरे पास केवल उनके कंठके सुखा देने भरका पुष्ट फल देनेवाला मात्र हुआ—गुरुओंका मुझे पढ़ानेके लिये किया गया परिश्रम व्यर्थ ही हुआ !—जो मैं उनके शासन (धर्म संप्रदाय) के प्रति की गई इस प्रकारकी विडंबनाओंके डंबरको शान्त मनसे सुन रहता हूँ।

[देवसूरिके द्वारा कही गई यह उक्ति सुन कर उस श्रेष्ठ आर्याने कहा—]

[१०५] दुष्ट वादियोंके निर्दलनमें अंकुश जैसी श्री देवी, जो श्वेताम्बरोंके अभ्युदयके लिये मंगलमयी कोमल दुर्वा जैसी है, गुरुवर श्री देवसूरिके ललाट पट्ट पर प्रथमावतारकी स्थिति लावे।

श्री देवसूरिने [दिगम्बर विद्वान्से] कहा—'वादविद्याविनोद (शास्त्रार्थ-विनोद) के लिये आप पत्तन चलें। वहाँ राज-सभामें आपके साथ वाद करेंगे।' उनके ऐसा आदेश करने पर वह दिगंबर अपने आपको कृतकृत्य मानता हुआ पत्तनको पहुँचा। [उसका आना सुन कर] श्री सिद्धराजने, जिसके मातामहका वह विद्वान् गुरु था, सामने जा कर उसका योग्य सत्कार किया। वह वहीं डेरा डाल कर ठहरा। सिद्धराजने

श्री हे मा चा र्य से वादमें निष्णात ऐसे आचार्यकी बात पूछी। उन्होंने चारों विद्याओंमें परम प्रवीणता प्राप्त, जैन मुनिरूप हाथियोंके यूथपति, श्वेतांबर शासनके लिये वज्रके प्राकार जैसे मानेजानेवाले, राजसभाके शृंगारहार, क र्णा व ती में [चातुर्मास] रहे हुए, वादविद्याके पारगामी, वादिहस्तियोंके लिये सिंहस्वरूप श्री दे वा चा र्य को बताया। इसके बाद उनको बुलानेके लिये, श्री संघके लेखके साथ राजाकी विज्ञप्तिका वहां पहुंची। उसे पा कर दे व सू रि प त्त न में आये और राजाके अनुरोधसे वाग्देवीकी आराधना की। उस देवीने आदेश दिया कि- 'वाद करते समय, वा दि वे ता ली य श्री शा न्ति सू रि विरचित उ त्त रा ध्य य न बृ ह द्वृ त्ति में उल्लिखित दिगंबर वादस्थल विषयक चौरासी विकल्प जालका उपन्यास करके, उसे प्रपंचित करोगे तो दिगंबरके मुखमें मुद्रा लग जायगी।' देवीके इस आदेशके बाद, गुप्त भावसे कु मु द चं द्र के पास पंडितोंको यह जाननेके लिये भेजा कि किस शास्त्रमें इसकी विशेष कुशलता है। उनके द्वारा उसकी यह निम्न लिखित उक्ति सुनी-

१५३. हे देव! आदेश कीजिये मैं सहसा क्या करूं? लंकाको यहीं ले आऊं, या जंबूद्वीपको यहाँसे ले जाऊं?, क्या समुद्रको सुखा दूं, या उस उच्च पर्वतको, जिसकी चोटीका एक पत्थर कैलास है, उसे खेल-ही-में उखाड़ कर समुद्रको बाँध दूँ, कि जिसके प्रक्षेपसे क्षुब्ध हो कर समुद्रका पानी बढ़ जाय।

इस उक्तिको सुन कर, श्री दे वा चा र्य और श्री हे मा चा र्य दोनों उसकी सिद्धान्तविषयक बहुत अल्प कुशलता समझ कर उसे अपने मनमें 'जीत लिया, जीत लिया' ऐसा मान बडे प्रसन्न हुए। इसके बाद दे व सू रि आचार्यका प्रधान शिष्य र त्न प्र भ, प्रथम रात्रिमें गुप्त वेष करके कु मु द चं द्र के डेरेमें गया। उसने (कुमुदचंद्रने) पूछा कि-'तुम कौन हो?'; 'मैं देव हूँ'; 'देव कौन?'; 'मैं'; 'मैं कौन?'; 'तुम कुत्ते'; 'कुत्ता कौन?'; 'तुम'; 'तुम कौन?'; 'मैं देव'; ['तुम कहाँसे आये?'; 'स्वर्गसे' 'स्वर्गमें क्या बात चल रही है?'; 'कुमुदचन्द्रका सिर ९५ पल है'; 'इसमें प्रमाण क्या है?' 'काट कर तौल लो'] इस प्रकारकी उसकी उक्ति-प्रत्युक्तिके बंधनमें जब वह चाककी तरह चक्कर खाने लगा, तो अपनेको देव और दिगम्बरको श्वान बना कर, जैसे गया था वैसे ही लौट आया। [पीछेसे] उस चक्रदोषको ठीक ठीक समझा तो मनमें अतिशय विषण्ण हो कर, इस प्रकारकी उचित कविता बना कर उस मायावी कु मु द च न्द्र ने दे व सू रि के पास भेजी-

१५४. अरे श्वेताम्बरो! इस प्रकारके विकटाटोप वचनोंके द्वारा, संसार वृक्षके अतिविकट कोटरमें, इस मुग्ध जन-समूहको क्यों गिराते हो? यदि तत्त्वातत्त्वके विचारमें आप लोगोंको थोड़ीसी भी कामना हो तो सचमुच ही कु मु द च न्द्र के दोनों चरणोंका रात-दिन ध्यान किया करो।

इसके बाद श्री दे व सू रि के चरणका परम परमाणु (विनीत शिष्य), बुद्धिवैभवसे चा णा क्य का भी उपहास करनेवाले पंडित मा णि क्य ने निम्नलिखित श्लोक उसके पास भेजा-

१५५. अरे! वह कौन है जो सिंहके केसजालको पैरोंसे छूना चाहता है? वह कौन है जो तेज भालेकी नोकसे अपनी आँख खुजालना चाहता है? वह कौन है जो नागराजके सिर परकी मणिको अपनी शोभाके लिये उतारना चाहता है? जो यह करना चाहता है वही वंदनीय ऐसे श्वेतांबर शासनकी निन्दा करना चाहता है।

फिर र त्ना क र पंडितने भी इस श्लोकको कु मु द चं द्र के पास उपहासके सहित भेजा-

१५६. नंगों (दिगम्बरों) ने जो युवतियोंकी मुक्तिका निरोध किया है इसमें क्या तत्त्व है वह तो प्रकट ही है। फिर वृथा ही कर्कश तर्कके लिये यह अनर्थमूलक अभिलाषा क्यों करते हो?

श्री हेमचंद्राचार्यने सुना कि श्री मयणल्ला देवी कुमुदचंद्रकी पक्षपातिनी है और सभाके अपने संपर्कवाले सभ्योंसे उसकी जयके लिये नित्य अनुरोध कर रही है, तो उन्होंने, उन्हीं सभासदोंसे यह वृत्तान्त कहलवाया कि 'वादस्थल पर दिगंबर लोक तो स्त्रीकृत सुकृत्यको अप्रमाणित करेंगे और श्वेताम्बर प्रमाणित करेंगे।' यह सुन कर रानीने व्यवहारबहिर्मुख उस दिगंबर परसे अपना पक्षपात हटा लिया।

इसके बाद, भाषोत्तर (वादका विषय) लिखानेके लिये कुमुदचंद्र तो पालकीमें बैठ कर, और पण्डित रत्नप्रभ पैदल ही चल कर, राजाके अक्षपटल (न्यायविभाग) कार्यालयमें आये। वहांके अधिकारियोंको कुमुदचंद्रने अपनी यह भाषा (वादके विषयमें निजकी प्रतिज्ञा) लिखवाई–

१५७. केवली होने पर [मनुष्य] भोजन नहीं करता, चीवर सहित [मनुष्य] निर्वाण नहीं पाता और स्त्रीजन्ममें मुक्ति नहीं मिलती।

श्वेतांबरोंका इसके विरुद्ध यह उत्तर था–

१५८. केवली होने पर भी [मनुष्य] भोजन करता है, सचीवर [मनुष्य] को भी निर्वाण मिलता है, और स्त्रीजन्ममें भी मुक्ति होती है – यह देवसूरिका मत है।

इस प्रकार भाषा और उत्तर लिख लेनेके अनंतर वादका स्थान और समय निर्णीत हुआ। उसमें सिद्धराजके सभापतित्वमें, षड्दर्शन-प्रमाणको जाननेवाले सभ्यलोग जब उपस्थित हुए तो, तो सुखासन (पालकी) में बैठ कर, सिरपर श्वेत छत्र धारण किये हुए और जयडिंडिम बजाते हुए, वादी कुमुद चन्द्रने सभामें प्रवेश किया। उसके आगे बांसके सिरेपर, उसके प्राप्त किये हुए जयपत्र लटक रहे थे। सिद्धराजने उसके बैठनेके लिये सिंहासन दिलवाया। प्रभु श्री देवसूरिने मुनीन्द्र श्री हेमचंद्रके साथ सभामें एक ही आसनको अलंकृत किया।

फिर, वादी कुमुदचंद्रने, जो अवस्थासे वृद्ध था, श्री हेमचंद्रसे – जिनकी शैशवावस्था कुछ ही समय पहले व्यतीत हुई थी; अर्थात् जो अब भी पूर्ण युवा नहीं हुए थे – कहा कि 'आपके द्वारा तक्र क्या पीत है? अर्थात्–आपने तक्र (छांछ) पी है?'। इस पर श्री हेमचंद्रने उससे कहा –'क्या वृद्धावस्थाके कारण तुम्हारी बुद्धि अस्थिर हो गई है? जो ऐसा अनाप-सनाप बोल रहे हो! तक्र श्वेत होता है, पीत तो हल्दी होती है।' इस वाक्यसे नीचा मुँह हो कर उसने पूछा कि–' आप दोनोंमें वादी कौन है?' श्री सूरिने उसका कुछ तिरस्कार करनेके इरादेसे [अपनेको लक्ष्य कर लेकिन शब्दभेदके साथ] कहा 'यह आपका प्रतिवादी है'। ऐसा कहने पर कुमुदचंद्र [उसके मर्मको ठीक न समझ कर] बोला–' मुझ वृद्धका इस शिशुके साथ क्या वाद हो सकता है?' उसकी यह बात सुन कर [आचार्य हेमचन्द्रने कहा–] 'वृद्ध तो मैं हूँ; और आप तो शिशु ही हैं–जो अब तक भी कंदोरा बान्धना नहीं जानते और वस्त्र नहीं पहनते।' राजाके इन दोनोंकी इस प्रकारकी वितंडाका निषेध करने पर, परस्पर इस प्रकारकी प्रतिज्ञा निश्चित हुई–"**पराजित होने पर श्वेतांबर तो दिगंबर हो जायंगे, और [उसके विरुद्ध] दिगंबर देशत्याग करेंगे।**" प्रतिज्ञा निश्चित हो जाने पर स्वदेशके कलंकसे डरनेवाले देवाचार्यने, सत्यानुवादका परिहार करके और देशानुवादका अनुसरण करके, कुमुदचंद्रसे कहा कि–' पहले आप ही अपना पक्ष स्थापित करें।' उनके ऐसा कहने पर कुमुदचंद्रने राजाको पहले यह आशीर्वाद दिया–

१५९. हे राजन्! आपके यशके स्मरण होने पर सूर्य खद्योतकी चमक जैसा प्रतीत होता है, चन्द्रमा पुराने मकड़ीके जालकी भाँति फीका जान पड़ता है और (हिमाच्छादित) पर्वत मशकसे जान पड़ते हैं। आकाश उसमें भौंरे जैसा हो जाता है और इसके बाद तो वाणी बन्द हो जाती है।

उसके इस अपशब्दको सुन कर कि 'वाणी बंद हो जाती है'– सभ्य लोग उसे अपने ही हाथों बंधा समझ कर बड़े प्रसन्न हुए। इसके बाद देवाचार्यने राजाको, यह आशीर्वाद दिया–

१६०. हे चालुक्य महाराज! तुम्हारा यह राज्य और यह जिनशासन चिरकाल तक प्रवर्तित रहें। (राज्यपक्षमें पहला अर्थ–) जो राज्य शत्रुओंको शान्ति नहीं प्राप्त करने देता है, उज्ज्वल आकाशकी-सी उल्लसित कीर्तिकी प्रभासे जो मनोहर हो रहा है, न्यायमार्गके प्रसारकी पद्धतियोंका जो गृह बना हुआ है और जिसमें परपक्षके हाथियोंका सदैव मद उतारनेवाले ऐसे कौन हाथी बलवान् नहीं है।

(जिनशासनपक्षमें दूसरा अर्थ–) जो जिनशासन नारियों (स्त्रियों) को मुक्तिपद प्रदान करता है, श्वेतवस्त्रोंको धारण करनेवाले यतियोंकी उल्लसित कीर्तिसे मनोहर लग रहा है, नय मार्ग (जैन तत्त्व पद्धति) के विविध प्रस्तार और भङ्गियोंका गृहरूप है और जिसमें अन्य मतवादियोंके गर्वका जय करनेवाले केवलज्ञानी कभी भी भोजन नहीं करते ऐसा विधान नहीं है–वह जिनशासन चिरंजीव रहो।

इसके बाद, वादी कुमुदचंद्रने केवलि-भुक्ति, स्त्री-मुक्ति और चीवर-सिद्धिके निराकरण रूप अपने पक्षके उपन्यासमें, कबूतर पक्षीकी भाँति मन्द मन्द और बार बार स्खलित वाणीसे बोलना शुरू किया। इसे देख कर सभ्यलोग, ऊपरसे तो उसे उत्साहपरक वचन कह रहे थे और अन्दर दिलमें हंस रहे थे। इस प्रकार कितनाक उपन्यास (स्वपक्ष स्थापन) करनेके बाद, अन्तमें [देवाचार्यको लक्ष्य करके कहा कि] 'अब आप बोलिये'। देवाचार्यने प्रलय कालमें उन्मीलित प्रचण्ड पवनसे विक्षुब्ध समुद्रके तरंगाघातके समान गंभीर वाणीसे, उत्तराध्ययन सूत्रकी बृहद्वृत्तिमें कथन किये हुए चौरासी विकल्पोंका उपन्यास करना प्रारंभ किया। इसे देख कर, भास्वत् प्रकाशके प्रसारसे म्लान हो जाने वाले कुमुद–रात्रिविकासी कमल–की भाँति निष्प्रभ हृदय कुमुदचंद्रने भयसे चित्तमें भ्रान्त हो कर, उस बातको समझनेमें असमर्थ बन कर, फिरसे उसी उपन्यासके दुहरानेकी प्रार्थना की। श्रीसिद्धराजके तथा और सभ्योंके निषेध करने पर भी, उन्होंने उसे अप्रमेय प्रमेय लहरियोंके द्वारा प्रमाण-समुद्रमें डुबोना शुरू किया। इस तरह निरंतर वाक्प्रवाह चलने पर, सोलहवें दिन अकस्मात् देवाचार्यका कण्ठ रुद्ध हो गया। तब मंत्रशास्त्रविद् श्रीयशोभद्रसूरिने, जिन्होंने कुरुकुल्लादेवीके मंदिरमें अतुलनीय वर प्राप्त किया हुआ था, उनकी कण्ठनालीसे क्षणभरमें क्षपणक (दिगंबर) के किये गये अभिचारके प्रभावसे पड़ा हुआ केशोंका गुच्छा बाहर निकाल दिया। इस विचित्र व्यापारके निरीक्षणसे चतुर लोगोंने श्रीयशोभद्रसूरिकी भूरि प्रशंसा की और कुमुदचंद्रकी खूब निंदा की। इस प्रकार (पहलेने) प्रमोद और (दूसरेने) विषाद धारण किया। इसके बाद, देवसूरिने पक्षके उपन्यासके उपक्रममें **'कोटाकोटि'** शब्द कहा। कुमुदचंद्रने उस शब्दकी व्युत्पत्ति पूछी। तब काकल पंडितने, जिसके कण्ठमें आठों व्याकरण लोट रहे थे, शाकटायनव्याकरणमें कहे हुए **'टाप् टीप्'** सूत्रसे निष्पन्न **'कोटाकोटिः'** **'कोटीकोटिः'** **'कोटिकोटिः'** इन तीनों सिद्ध शब्दोंका निर्णय सुनाया। पहले-ही-से **'वाचस्ततो मुद्रिता'** इस कहे हुए अपशब्दके प्रभावसे उसका मुख मुद्रित (बन्द) हो गया; और फिर स्वयं ही बोला कि–' मैं श्रीदेवाचार्यसे जीता गया'। श्रीसिद्धराजने उसे पराजित कह कर अपद्वारसे बाहर कर दिया। इस पराभवके कारण उसका सिर फट गया और वह मर गया।

इसके अनन्तर श्रीसिद्धराजने आनन्द उल्लसित मनसे देवाचार्यके प्रभावकी ख्याति करनेकी इच्छा की। उनके सिर पर चार श्वेतच्छत्र धारण करवाये गये, खूब सुंदर चामर ढलवाये गये, शंखोंके युगल

बजवाये गये, डंकोंकी चोटसे मानों आकाशका पेट गुड़गुड़ा रहा था और उत्तम प्रकारकी दुंदुभियोंके नादसे दिगंतराल भरा जा रहा था। राजाने स्वयं अपने हाथका अवलंबन दे कर, 'हे वादि चक्रवर्ती, पधारिये।' ऐसी स्तुतिपूर्वक उन्हें राजसभासे प्रस्थान करवाया। वाहड नामक उपासकने उस समय तीन लाख [द्रम्म] याचकोंको दान किये। इस तरह जगत्के आनंद स्वरूप कन्द (मूल) के कन्दल (अंकुर) समान मंगलके बारंबार उच्चारित होने पर, उसी वाहड द्वारा बनवाये गये श्रीमहावीर देवके प्रासाद (मन्दिर) में, देवको नमस्कार करने बाद, उसीकी वसति (उपाश्रय) में जा कर उन्होंने आश्रय लिया। सूरिकी अनिच्छा होने पर भी राजाने उनको पारितोषिकके रूपमें छाला आदि बारह गांव भेंट दिये। [भिन्न भिन्न समर्थ आचार्यों द्वारा की गई] उनकी स्तुतिके कुछ श्लोक इस प्रकार हैं—

१६१. जिनके प्रमाद-हीका मानों शुभप्रश्नके समय दर्शन (श्वेतांबर संप्रदाय) उच्चारण करता है, उन वस्त्रप्रतिष्ठाचार्य श्रीदेवसूरिको नमस्कार है।—इस प्रकार श्रीप्रभुसाचार्यने कहा।

१६२. यदि सूर्यके समान देवाचार्य, कुमुदचंद्रको न जीत पाते तो कौन श्वेतांबर, संसारमें कटिमें वस्त्र पहनने पाता।—इस प्रकार हेमाचार्यने कहा।

१६३. जिस नग्नने कीर्तिरूपी कंथा उपार्जन करके अपना व्रतभंग किया था, देवसूरिने उस कंथाको छीन कर उसे निर्ग्रंथ (नंगा) कर दिया।—इस प्रकार श्रीउदयप्रभ देवने कहा।

१६४. अभी तक भी जिन्होंने लेप-शालाका त्याग नहीं किया उन देवसूरि (बृहस्पति) के साथ, वादविद्याको जानने वाले प्रभु देवसूरिकी, तुलना कैसे की जाय।—इस प्रकार श्रीमुनिदेवाचार्यने कहा।

१६५. जिनकी प्रतिभाके धाम-तेजसे [ग्रस्त हो कर] कीर्तिरूपी योगवस्त्रका त्याग कर देने वाले [उस] नग्न [दिगंबर] को भारतीने मानों लज्जाके कारण छोड़ दिया, वह देवसूरि तुम्हारा कल्याण करें।

१६६. अशेष केवलियोंकी मुक्ति स्थापन कर जो सत्याकार बने तथा स्त्रियोंकी मुक्तिके युक्त उत्तर द्वारा मोक्ष तीर्थ बने, और नग्नको जीत लेने पर श्वेताम्बरशासनके प्रतिष्ठागुरु बने, उन प्रभु श्रीदेवसूरिकी महिमा, देवता और गुरुकी अपेक्षा भी अपरिमित है।—इस प्रकार दो श्लोक श्रीमेरुतुंगसूरिने कहे।

इस प्रकार यह देवसूरिका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

•

पत्तनके वसाह आभडका वृत्तान्त।

११०) इसके बाद, पत्तनका रहने वाला, जिसका वंश विलुप्त हो गया है ऐसा, आभड नामक एक वणिक्पुत्र कंसारेकी दुकान पर, गागर घिसनेका काम, किये करता था। उसको वहां रोज पाँच विशोपकका उपार्जन होता था। वह अपना सारा दिन उस काममें व्यतीत कर, दोनों शाम प्रभु श्रीहेमसूरिके चरणोंके पास बैठ कर प्रतिक्रमण किये करता था। स्वभाव-हीसे चतुर होनेके कारण उसने आगमय और बौद्ध मत आदिके 'रत्नपरीक्षा' के ग्रंथोंको पढ डाला और रत्नपरीक्षकोंके निकट रह कर उस परीक्षामें दक्ष हो गया। किसी समय, श्रीहेमचन्द्र मुनीन्द्रके निकट उसने, धनाभावके कारण, स्वल्प प्रमाणमें परिग्रह-परिमाण व्रतका नियम लेना चाहा। सामुद्रिक विद्याके जानकार प्रभुने भविष्यमें उसके भाग्य वैभवका खूब प्रसार होना जान कर, तीन लाख द्रम्मसे अधिक द्रव्य न रखनेका उसे नियम कराया। इसके बाद, संतोष पूर्वक वह अपना व्यवहार

करने लगा। किसी अवसर पर, वह किसी गाँवको जा रहा था, तो उसने रास्तेमें बकरियोंका एक झुंड जाते देखा। उसमें एक बकरीके गलेमें पाषाणका एक खण्ड बन्धा देखा, जिसको रत्नपरीक्षक होनेके कारण, परीक्षा करके देखा तो वह सच्चा रत्न मालूम दिया। फिर उस रत्नके लोभसे, मूल्य दे कर उस बकरीको उसने खरीद लिया। मणिकार (मणियारे) के पाससे उस रत्नको सान पर चढवा कर उसे देदीप्यमान बनवाया और फिर श्री सिद्धराज के मुकुट बनानेके अवसर पर, एक लाख मूल्य पर राजा-ही-को दे दिया। उसी मूल धनसे उसने एक बार बिकनेको आये हुए मंजिष्ठाके कई बोरे खरीदे और जब बेचनेके समय उन्हें खोलकर देखा तो समुद्रके चौरोंसे छिपानेके लिए, व्यापारियोंने उनमें सोनेकी पट्टियाँ छिपा रखीं हुई मालूम दीं। फिर उसने सब बोरे खोल कर उनमेंसे वे पट्टियाँ निकला लीं। इस तरह फिर वह सारे नगरमें मुख्य ऐसा सिद्धराज का मान्य (नगर सेठ) और जिन-धर्मकी प्रभावना करने वाला [प्रसिद्ध] श्रावक हुआ। प्रति दिन, प्रति वर्ष, स्वेच्छानुसार जैन मुनियोंको अन्न वस्त्र आदि दिया करता और गुप्तरूपसे स्वदेश और विदेशमें नये नये धर्मस्थान बनवाता तथा पुराने धर्मस्थानोंका जीर्णोद्धार करवाता रहा। पर किसी पर उसने अपनी प्रशस्ति नहीं लिखवाई। [कहा भी है कि]—

१६७. लतासे आच्छन्न वृक्षकी नाईं और मृत्तिकासे आच्छादित बीजकी नाईं प्रच्छन्न (गुप्तरूपसे) किया हुआ सुकृत कर्म प्रायः सैंकड़ों शाखाओंवाला विस्तृत हो जाता है।

इस प्रकार यह वसाह आभडका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजकी तत्त्वजिज्ञासा और सर्वदर्शन प्रति समानदृष्टि।

१११) एक दूसरी बार, श्री सिद्धराज संसार सागरको पार करनेकी इच्छासे, सर्व देशके सर्व दर्शनोंमेंसे, प्रत्येकसे देवतत्त्व, धर्मतत्त्व, और पात्रतत्त्वकी जिज्ञासासे पूछने लगा, तो मालूम हुआ कि, वे प्रत्येक अपनी स्तुति और दूसरेकी निंदा कर रहे हैं। इससे उसका मन [खूब] संदेह-दोलारूढ हो गया। श्री हेमाचार्य को बुला कर उनसे विचारणीय कार्यको पूँछा। आचार्यने चतुर्दश विद्याओंके रहस्यका विचार करके, इस प्रकार एक पौराणिक निर्णय कह सुनाया कि—'पहले ज़मानेमें किसी व्यवहारी [गृहस्थ] ने अपनी पहली परिणीत पत्नीको छोड़ कर किसी रखेलिनको अपना सर्वस्व दे दिया। इससे उसकी पूर्व पत्नी, सर्वदा ही, उसको अपने वशमें करनेके लिये अभिचार (मंत्र-तंत्र आदि) के उपाय पूछा करती। किसी गौड (बंगाल) देशीय [जादुगर] ने बताया कि—"तुम्हारे पतिको मैं ऐसा कर दूँ कि तुम उसे फिर रस्सीमें बाँधे रखो" ऐसा कह कर, उसने कोई एक ऐसी अचिन्त्यवीर्य औषधि ला दी और कहा कि—"इसे भोजनमें खिला देना"। ऐसा कह कर वह चला गया। कुछ दिनोंके बाद जब क्षयाह (श्राद्धका दिन) आया तो उस स्त्रीने वैसा ही किया—पतिको वह औषधि खिला दी। फलस्वरूप वह (पति) साक्षात् बैल हो गया। उसका फिर कोई प्रतीकार न जान कर वह, सारी दुनियाकी झिड़कियाँ सहती हुई, अपने दुश्चरितके ऊपर शोक करने लगी। एक बार [ग्रीष्म कालके] दोपहरके समय, सूर्यके कठोर किरणोंसे खूब संतप्त हो कर भी, किसी शाद्वल भूमिमें वह अपने उस पशुरूप पतिको चरा रही थी और किसी वृक्षके नीचे बैठ कर खूब निर्भर भावसे विलाप कर रही थी। अकस्मात् उसने आकाशमें कुछ आलाप सुना। पशुपति (शिव) भवानीके साथ विमानमें बैठे हुए उस समय वहाँसे निकले। भवानीने उसके दुःखका कारण पूछा। इस पर शिवने वह वृत्तांत ज्यों का त्यों कह सुनाया। फिर भवानीके आग्रह करने पर शिवने यह भी बताया कि, उसी वृक्षकी छाया में, पुरुष बननेकी औषधि है;

और वे अन्तर्धान हो गये। फिर वह स्त्री उस वृक्षकी छायाको रेखांकित करके, उसके भीतर पड़ने वाली [सभी] औषधियोंके अंकुरोंको उखाड़ उखाड़ कर वृषभके मुँहमें डालने लगी। उस अज्ञात स्वरूप औषधिके मुँहमें पड़ते ही वह बैल फिर मनुष्य हो गया। अज्ञात स्वरूप हो कर भी, औषधिने जैसे अभीष्ट कार्य किया, वैसे ही कलियुगमें मोहके कारण, वह पात्र-परिज्ञान तिरोहित होने पर भी, भक्तियुक्त हो कर सब दर्शनोंका आराधन करनेसे, अविदित स्वरूप-ही-से मुक्तिदायक हो जाता है, यह निश्चय है। इस प्रकार श्री हे म चं द्रा चा र्य ने जब सर्व दर्शनके सम्मत होनेका उपदेश दिया तो श्री सि द्ध रा ज ने फिर सब धर्मोंका समान आराधन किया।

इस प्रकार यह सर्व दर्शन मान्यता प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजका प्रजाजनोंके साथ उदार व्यवहार।

११२) एक दूसरी बार रातमें, राजा क र्ण मे रु प्रासादमें नाटक देख रहा था। वहाँ पर कोई चना बेचने वाला एक गरीब बनिया भी चला आया और वह राजाके कन्धे पर हाथ रख कर देखने लगा। राजा उसके इस अभिनय (व्यवहार) से मनमें प्रसन्न हो रहा, और बार बार उसका दिया हुआ कर्पूर मिश्रित पानका बीड़ा आनंदके साथ लेता रहा। नाटकके विसर्जन होने पर, राजाने अनुचरोंके द्वारा उसका घर आदि अच्छी तरह जान लिया और फिर अपने महलमें आ कर सो गया। सवेरे उठ कर प्रातःकृत्य कर लेने बाद, सर्वावसर (राजसभा) के मिलने पर, राजाने सभामंडपको अलंकृत किया और उस चना बेचने वाले बनियेको बुलाया। राजाने उससे [व्यंगमें] कहा कि–' रातमें तुमने जो मेरे कन्धे पर हाथ रखा था उससे मेरी गर्दनमें दर्द हो रहा है'–तो उस तात्कालोत्पन्न मति वाले (हाज़िर जवाब) बनियेने कहा कि–' महाराज! आसमुद्र विस्तृत ऐसी पृथ्वीके भारको कन्धे पर उठा रखनेसे यदि स्वामीके कन्धेमें कोई पीड़ा नहीं होती तो मुझ समान तृण-मात्रसे निर्जीव बनियेके भारसे स्वामीके कन्धोंमें क्या पीड़ा होगी!' उसके इस उचित उत्तरको सुन कर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और बदलेमें उसको इनाम दे कर विदा किया।

इस तरह यह चना बेचनेवाले बनियेका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

लक्षाधिपतिको क्रोडपति बना देना।

११३) एक दूसरी रातको, राजा क र्ण मे रु प्रासादसे नाटक देख कर लौट रहा था, तब [राजमार्गमें] किसी व्यवहारीके घर पर बहुत-से दीपक जलते हुए देख कर पूछा कि–' यह क्या है?' उसने कहा कि ये लक्षप्रदीप हैं। राजाने उसको धन्य कहा और वह अपने महलमें चला गया। रात्रिको व्यतीत कर [अपने नगरमें ऐसे प्रजाजन है इस विचारसे] अपनेको धन्य मानता हुआ, सवेरे उसे राजसभामें बुला कर आदेश किया कि–' इन प्रदीपोंको सदा जलाते रहनेसे तुमको सदा ही अग्निका भय रहता है, तो कहो कि तुमारे पास कितने लाखका धन है'। उत्तरमें उसने निवेदन किया कि–' वर्तमानमें चौरासी लाख है'। इस पर मनमें अनुकंपित हो कर राजाने कृपापूर्वक अपने खज़ानेसे १६ लाख निकाल कर दे दिया और उसके मकान पर [दीपकोंके बदले] क्रोडपति होनेका सूचक कोटिध्वज फहराया गया।

इस तरह यह षोडशलक्षप्रसाद प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिंहपुरके ब्राह्मणोंका कर माफ करना।

११४) एक दूसरी बार, राजाने वालाक देशकी दुर्गभूमि (पहाड़ी जमीन) में सिंहपुर नामका प्रदेश ब्राह्मणोंको रहनेके लिये दे दिया और उसके अधीन १०६ ग्राम दान कर दिये। पर वहां पर सिंहका डर देख कर ब्राह्मणोंने सिद्धराजसे प्रार्थना की कि, उन्हें कहीं देशके भीतर निवास दिया जाय। इस परसे राजाने उनको साभ्रमतीके तीर परका आसांबिली ग्राम दे दिया, और सिंहपुरसे धान्य लानेमें जो आते जाते कर लगता था उसे माफ कर दिया गया।

वाराहीके पटेलोंको बूचाका विरुद देना।

११५) बादमें, राजा सिद्धराजने किसी समय, मालव देशकी यात्राके लिये प्रयाण किया। रास्तेमें वाराही ग्रामके पास जब वह आया तो उस गाँवके पटेलों (मुखियों) को बुला कर, उनकी चतुरताकी परीक्षाके लिये, अपनी एक प्रधान पालकी, उनको अपने पास थातीके रूपमें रखनेके लिये दी। राजाके आगे प्रयाण कर जाने पर उन सभीने मिल कर, उसके एक एक हिस्सेको अलग अलग कर, यथोचित रूपसे सबने अपने अपने घर पर संभालके रखा। यात्रासे लौटते समय राजाने अपनी रखी हुई उस थातीको जब उनसे माँगी, तो उन्होंने अलग अलग किये हुए उसके वे सब टुकडे लाके दिये। यह देख कर राजाने आश्चर्यसे पूछा कि–'यह क्या बात है?' तो उन्होंने विज्ञापना की कि–'महाराज! [हममेंसे] कोई एक आदमी तो इसकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता। कभी चौर और अग्नि आदिका उपद्रव हो जाय तो फिर स्वामीके सामने कौन जवाबदेह हो–यही सोच कर हम लोगोंने यह ऐसा किया है।' तब राजा मनमें खूब आश्चर्यचकित हुआ और उनको 'बूच *' ऐसा बिरुद उसने दिया।

इस प्रकार यह वाराहीय बूच प्रबंध समाप्त हुआ।

*

उञ्झाके ग्रामीणोंसे वार्तालाप।

११६) इसके बाद, एक बार राजा श्री जयसिंह देव, मालव विजय करके लौट रहे थे तब रास्तेमें पडने वाले उञ्झा ग्राममें खीमे डाले गये। वहांके ग्रामीणोंने, जिनको राजा मामा कहा करता था, दूधसे भरे हुए हंडों आदिके उचित सत्कारसे राजाको सन्तुष्ट किया। उसी रातको, राजा गुप्त वेष करके उनके दुख-सुख जाननेकी इच्छासे, किसी ग्रामीणके घर पर चला गया। वह (ग्रामीण) गाय दुहने आदिके कामोंमें व्यस्त होता हुआ भी, उसने पूछा कि–'तुम कौन हो?' [इत्यादि। इसके उत्तरमें उसने] कहा कि–'मैं श्री सोमेश्वरका कार्पटिक (यात्री) हूं; महाराष्ट्र देशका रहने वाला हूं।' उसने फिर उससे महाराष्ट्र देश और उसके राजाके गुण-दोष आदि पूछे। उसने वहांके राजाके ९६ गुणोंकी प्रशंसा करते हुए, उस ग्रामीणसे गूर्जर देशके राजाके गुण-दोष पूछे। इस पर वह श्री सिद्धराजके प्रजा-पालन-दक्षत्व और सेवकों पर अनुपम प्रेम इत्यादि गुणोंका वर्णन करने लगा। तब बीचमें उसने राजाका कोई कृत्रिम दोष बताना चाहा, तो वह आँसू गिराता हुआ बोला कि–'हम लोगोंके मंद भाग्यसे राजाको कोई पुत्र नहीं है और यही उसमें एक दोष है'। इस प्रकार निष्कपट भावसे उसने उससे सब कह कर उसे संतुष्ट किया। फिर प्रभात कालमें सब लोक मिल कर राजाके

---

* यह 'बूच' कोई देश्य शब्द है। हिंदीमें इसके जैसा बूचा शब्द है जिसका अर्थ 'कानकटा हुआ' ऐसा होता है। इन पटेलोंने राजाकी पालकीके अंग-प्रत्यंग काट डाले थे इस लिए इनको 'बूचा' कहा गया प्रतीत होता है। गुजरातीमें बूचाका अर्थ भोला–मुग्ध ऐसा भी होता है। इससे राजाने उनके इस भोलेपनको देख कर उन्हें 'बूचा' ऐसा सम्बोधन किया हो।

दर्शनके लिये उत्कंठित हो कर उसके निवासस्थानमें गये और राजाको प्रणामादि करके उसके अनुपम ऐसे पलंग पर ही बैठ गये। आसन देनेके लिये नियुक्त नोकरोंने उनको अलग आसन पर बैठनेको कहा तो वे लोग अपने हाथोंसे उस पलंगकी कोमल शय्याका स्पर्श करते हुए [भोले भावसे] 'हम लोग यहाँ बड़े आरामसे बैठे हैं'—ऐसा कहते हुए वहीं बैठ रहे। [यह देख कर] राजाका मुख मुस्कुराहटसे कमलकी भाँति खिल उठा।

इस प्रकार उञ्झावासी ग्रामीणोंका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

झाला सामंत माँगूकी शूरताका वर्णन।

११७) किसी समय, झा ला जा ति का मा ङ्गु नामक क्षत्रिय श्री सि द्ध रा ज की सेवाके लिये सभामें आया करता था। वह रोज़ ही दो पराची (लोहेकी भारी कुशी) जमीनमें गाड़ कर बैठता और फिर उन दोनोंको उखाड़ कर ऊठता। उसके भोजनमें घीसे भरा एक कुतुप (कुडवा—घी तैल भरनेका घडेके जैसा चमडेका भाजन) खर्च होता था। घी लगी हुई उसकी दाढ़ीके धोने पर भी उसमें सोलहवाँ हिस्सा घी बच जाता था। किसी समय उसके शरीरमें रोग होने पर, पथ्यके लिये यवागू (जौकी पतली माँड) खानेको वैद्यने कहा तो, वह ५ माणक (करीब ४ शेर कच्चे नाप जितनी) खा गया। इस पर वैद्यने डाँट कर कहा कि आधा भोजन कर लेने पर बीचमें अमृतोदक क्यों नहीं पिया ! ' क्यों कि कहा है कि—

> १६८. जब तक सूर्योदय न हो जाय तब तक एक हजार घड़ा भी पानी पिया जा सकता है, पर जब सूर्योदय हो जाता है तो फिर एक बूँद भी एक घड़ेके बराबर हो जाता है।

रातकी पिछली चार घड़ीमें, सूर्योदय न होने तक, जो जल पिया जाता है—जो जल प्रयोग किया जाता है—उसे वज्रोदक कहते हैं (वह अमृतोदक भी कहाता है)। सूर्योदय हो जाने पर विना अन्न खाये, जो पानी पिया जाता है, वह विष है। इस लिये एक बूँद भी वह पानी सौ घड़ोंके बराबर हो जाता है। आधा भोजन करने पर, बीचमें जो जल पिया जाता है वह अमृत कहलाता है, और भोजनान्तमें तत्काल पिया जाता हुआ जल छत्र या छत्रोदक कहलाता है। उस माँगूने, यह सुन कर कहा कि—'यदि ऐसा है, तो पहले जो अन्न खाया है उसे आधा आहार कल्पना कर लिया जाय, और इस समय अब पानी पी कर फिर उतना ही आहार और कर लूँ।' ऐसा कह कर वह फिर खानेकी तैयारी करने लगा, लेकिन वैद्यने उसे वैसा करनेसे रोक दिया।

किसी समय राजाने उसके निःशस्त्र रहनेका कारण पूछा। उसने कहा कि—'मेरा हथियार तो समयोचित होता है'। फिर एक बार उसके स्नान करते समय, किसी महावत द्वारा चलाये हुए हाथीको अपने ऊपर आता देख, नज़दीकमें रहे हुए कुत्तेको पकड कर उसकी सूंड पर फेंक मारा। मर्मस्थान पर चोट लगनेके कारण निपीडित ऐसे उस हाथीको खींचा, तो उसके अतुल बलसे वह हाथी भीतर-ही-भीतर नसोंमेंसे टूट गया और उस महावतके नीचे उतरने पर, वह जमीन पर गिरते ही प्राणोंसे मुक्त हो गया। गू र्ज र दे श पर आयी हुई म्लेच्छोंकी सेनाको देख कर राजाके पलायन कर जाने पर, वह अपनी इच्छासे उस सेनाका उच्छेद करता हुआ, युद्धमें जिस स्थान पर मारा गया, उस जगहकी, प त्त न में अब भी 'माङ्गुस्थण्डिल' के नामसे प्रसिद्धि चल आ रही है।

इस प्रकार यह माँगू प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजकी सभामें म्लेच्छराजके दूतोंका आगमन।

११८) एक दूसरी वार, म्लेच्छराजके प्रधानोंके आने पर, मध्यदेशसे आये हुए वेषकारोंको बुला कर कुछ रहस्य दिखलानेका आदेश दे कर विसर्जित किया। इसके बाद दूसरे दिन, सायंकाल, प्रलय कालके समान प्रचण्ड पवनके आने पर, राजा सुधर्मा सभाके समान राजसभामें सिंहासन पर बैठ कर जो देखता है, तो अन्तरीक्षसे दो राक्षस उतर रहे हैं—जिनके मस्तक पर सोनेकी दो ईंटें रखी हुई हैं और जो सुवर्ण जैसी कान्ति धारण कर रहे हैं। उन्हें देख कर सारी सभा भयसे भ्रांत हो उठी। इसके बाद, उन्होंने राजाके चरणपीठ पर वह उपहार रख दिया और फिर पृथ्वीतल पर लुठित होते हुए, प्रणाम करके कहा कि—'आज लंका नगरीमें महाराजाधिराज विभीषणने देवपूजा करते समय राज्यस्थापनाचार्य रघुकुल-तिलक श्री रामचन्द्रके उत्तम गुणग्रामोंको स्मरण करते हुए, ज्ञानमय दृष्टिसे जाना कि—आजकल उनके स्वामी (रामचन्द्र) चौलुक्यकुल तिलक श्री सिद्धराजके रूपमें अवतीर्ण हुए हैं। इस लिये उन्होंने यह (सन्देश) कह कर हम दोनोंको भेजा है कि—'मैं प्रभुको प्रणाम करनेके लिये अत्यन्त उत्कण्ठित मनवाला हो रहा हूं, सो क्या मैं ही वहाँ प्रणाम करनेको उपस्थित होऊँ या प्रभु ही यहाँ आ कर मुझे अनुगृहीत करेंगे ?—इसका निर्णय महाराज स्वयं अपने श्रीमुखसे करें।' उनकी यह बात सुन कर, राजाने मन-ही-मन कुछ सोच कर उनसे इस प्रकार कहा—'प्रफुल्ल आनंद लहरीसे प्रेरित हो कर मैं ही खुद अपने अनुकूल समय पर, विभीषणसे मिलने आ जाऊँगा।' ऐसा कह कर, अपने कण्ठका शृंगारभूत ऐसा एकावली हार उनको प्रत्युपहारके रूपमें दे दिया। जाते समय 'प्रभुके अन्य दूत पठानेके अवसर पर, हमें भुला न दें' इस प्रकारकी विशेष विज्ञप्ति करके अन्तरीक्ष मार्गसे वे दोनों राक्षस तिरोहित हो गये। उसी समय वे म्लेच्छोंके प्रधान पुरुष बुलाये गये तो, भयभीत हो कर अपना पौरुष छोड़, राजाके सामने आ कर उपस्थित हुए और भक्तियुक्त वचन कह कर राजाको खुश करने लगे। राजाने फिर उनके राजाके लिये उचित भेट दे कर उनको विदा किया।

इस प्रकार यह म्लेच्छागमनिषेध प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजका कोल्हापुरके राजाको चमत्कारके भ्रममें डालना।

११९) बादमें, किसी समय, कोल्हापुर नगरके राजाकी सभामें बन्दियोंने श्री सिद्धराजकी कीर्तिका गान किया। उस राजाने कहा कि—'सिद्धराजको हम ऐसा तब मानेंगे जब हमें भी कोई वह प्रत्यक्ष चमत्कार दिखायेगा।' राजाके इस कथनसे पराभूत हो कर, उन्होंने सिद्धराजको यह वृत्तांत कह सुनाया। इस पर राजाने जब सभामें नजर फिराई तो उसके मनकी बात समझने वाले किसी सेवकने हाथ जोड़ कर अपना अभिप्राय प्रकट किया। राजाने उसे एकान्तमें बुला कर उसका कारण पूछा। उसने राजाके आशयको कह बतलाया और विशेषमें कहा कि—'तीन लाखके व्ययसे यह काम सिद्ध होने योग्य है।' फिर उसी समय, ज्योतिषीके बताये हुए मुहूर्तमें राजासे तीन लाख ले कर, वह व्यापारी बनिया बन कर सब प्रकारके मालका संग्रह करके, सिद्धके संकेत चिह्न वाली रत्न जड़ी हुई दो सोनेकी खड़ाऊँ, एक अतुलनीय योगदण्ड, दो मणिके बने हुए कुण्डल, उसी प्रकारके योगका सूचक योगपट, तथा सूर्यकी किरणोंके जैसा चमकदार एक चन्द्रातक उसने साथमें लिया, और रास्ता तै करके कुछ दिनोंमें वहाँ (कोल्हापुर) जा कर डेरा डाला। समीपस्थ दीवालीकी रातको, उस नगरके राजाकी रानियाँ महालक्ष्मी देवीकी पूजाके लिए आकुल-व्याकुल हो कर देवीके मन्दिरमें जब आई, तो वह बना हुआ सिद्ध पुरुष, उसी सिद्धवेषसे अलंकृत हो कर और खूब अच्छी तरह कूदना सीखे हुए किसी बर्बर जातिके

मनुष्यको साथ ले कर, अकस्मात् उस देवीके मंदिरमें प्रादुर्भूत हुआ। उसने देवीकी रत्न, सुवर्ण और कर्पूरसे पूजा अर्चा की और उस राजाकी रानियोंको उसी प्रकारके उत्तम पानके बीड़े दिये। फिर श्री सिद्धराज का नामांकित वह सिद्धवेष पूजाके बहाने वहीं रख कर, उसी बर्बरके कंधेपर चढ़कर, उड़ता हुआसा जैसे आया था वैसे ही चला गया। रातके अन्तमें रानियोंने उस विरोधी राजाको वह वृत्तान्त कह सुनाया तो, भयभ्रान्त हो कर उसने, उस उपहारको, अपने प्रधान पुरुषोंके द्वारा सिद्धराजके पास पहुँचा दिया। इधर उस सेवकने अपने मालके क्रय-विक्रयका संकोच करके शीघ्रगामी पुरुषके साथ यह खबर भिजवा दी कि—'जब तक मैं न आऊँ तब तक इन प्रधान पुरुषोंको दर्शन न दीजियेगा।' फिर स्वयं जल्दी जल्दी चल कर कुछ ही दिनोंमें वहाँ पहुँच गया। उसके अपने कियेका पूरा वर्णन करने पर, राजाने उन प्रधानोंका यथोचित स्वागतादि किया।

इस प्रकार यह कोल्हापुर प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कौतुकी सीलणकी वाक्चातुरी।

१२०) श्री सिद्धराज, मालवमंडलसे यशोवर्मा राजाको जब बाँध लाया, तब उसके निमित्त किये जाने वाले उत्सव पर सीलण नामक कौतुकीने कहा कि—'अहो बेडा (नाव) में समुद्र डूब गया।' तब उसके पीछे स्थित किसी गायन (गान करनेवाले) ने 'तुम अपशब्द कह रहे हो'—ऐसा कह कर उसकी तर्जना की। तब उसने अर्थापत्तिसे इस प्रकार विरोधालङ्कारका परिहार करके बताया कि—'बेडाके समान इस गूर्जर भूमिमें समुद्र जैसा यह मालव-नरेश डूब गया।' [इस पर उसने] राजासे सोनेकी जीभ प्राप्त की।

इस प्रकार यह कौतुकी सीलणका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

काशीपति जयचन्द्रकी सभामें सिद्धराजके दूतकी वाक्पटुता

१२१) किसी समय, सिद्धराजके एक वाचाल सान्धिविग्रहिक (दूत) से काशीके राजा जयचंद्रने अणहिलपुरके प्रासाद, प्रपा (बावड़ी) और निपान (कूए) आदिका स्वरूप पूछते समय [उसकी विशेष शोभा सुन कर, ईर्ष्यावश राजाने] यह दोष बताया कि—'सहस्रलिंग सरोवरका जल शिव-निर्माल्य होनेके कारण अस्पृश्य है। उसका सेवन करने वाले दोनों लोकसे विरुद्ध व्यवहार करते हैं। अतः वहाँके लोग, उदित प्रभाव वाले कैसे हों? सिद्धराजने सहस्रलिंग सरोवर बना कर यह अनुचित कार्य किया है।' राजाकी इस बातसे मन-ही-मन कुपित हो कर उसने राजासे पूछा कि—[आपकी] 'इस वाराणसीमें कहाँका जल पिया जाता है?' राजाके 'गंगाजल' ऐसा कहने पर उसने कहा—'क्या गंगाजल शिव निर्माल्य नहीं है तो और क्या है? शिवका सिर ही तो गंगाकी निवास-भूमि है।'

इस प्रकार जयचंद्र राजाके साथ गूर्जरके प्रधानकी उक्तिप्रत्युक्तिका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मयणल्लादेवीके पिताकी मृत्युवार्ता।

१२२) किसी समय, कर्णाट देशसे आये हुए सान्धिविग्रहिकसे मयणल्लादेवीने अपने पिता जयकेशीका कुशल समाचार पूछा तो उसने अश्रुपूर्ण आँखोंसे कहा कि—'स्वामिनि, प्रख्यातनामा महाराज श्री जयकेशी भोजनके समय पिंजरेसे तोतेको बुला रहे थे। उसके 'मार्जार' (बिल्ली) बैठी है, ऐसा कहने पर, राजाने चारों ओर देख कर—किंतु अपने भोजनके पात्रके [चौकीके] नीचे छिपे हुए मार्जारको न देख कर—

प्रतिज्ञा पूर्वक बोल उठे कि–'यदि बिल्लीके हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी तो मैं भी तुम्हारे ही साथ मरूंगा'। वह तोता ज्यों ही पिंजडेसे उड कर उस सोनेके थाल पर आ कर बैठा त्यों ही उस बिल्लीने [लपक कर] भेडिये जैसे दाँतोंसे उसे मार डाला। राजाने उसे मरा देख कर भोजनका ग्रास छोड़ दिया, और उक्ति-प्रत्युक्ति जानने वाले राजपुरुषोंके [बहुत कुछ] निषेध करने पर भी कहा–

१६९. राज्य चला जाय, श्री चली जाय, और क्षणभरमें प्राण भी भले ही चले जाँय, किन्तु जो बात मैंने स्वयं कही है वह शाश्वती वाणी न जाय।

इस प्रकार इष्ट देवताकी भाँति इसी वाणीका जाप करता हुआ, काष्ठकी चिता बनवा कर, उस तोतेको साथ ले, उसमें प्रवेश कर गया। इस वाक्यको सुन कर मयणल्लादेवी शोकसागरमें डूब गई। विद्वज्जनोंने विशेष प्रकारके धर्मोपदेशरूपी हस्तावलंबन दे कर उसका उद्धार किया।

*

पिताके पुण्यार्थ मयणल्लादेवीका सोमेश्वरकी यात्रा करना।

१२३) बादमें, पिताके कल्याणार्थ श्री सोमेश्वरपत्तनकी यात्राको वह गई, और वहाँ उस सतीने किसी त्रिवेदी ब्राह्मणको बुला कर उसे जलांजलि देना चाहा। उसने अंजलिमें जल ले कर कहा कि–'यदि तीन जन्मका पाप देना मंजूर करो तो मैं यह लूँगा, नहीं तो नहीं।' उसकी इस बातसे अत्यन्त सन्तुष्ट हो कर, हाथी, घोड़ा, सोना आदिके दानके साथ, उसे पापघटका दान किया। उसने वह सब अन्य ब्राह्मणोंको दे दिया। देवीके यह पूँछने पर कि 'ऐसा क्यों किया?'; बोला कि–'पूर्व जन्मकी पुण्य-वृद्धिके कारण तो आप इस जन्ममें राजरानी और राजमाता हुई हैं। और फिर इन लोकोत्तर दानोंके पुण्यसे भविष्य जन्म भी श्रेयस्कर ही होगा। यही सोच कर मैंने तीन जन्मका पाप ग्रहण किया है। आपने जो इस पापघटके दानका उपक्रम किया है, इसे तो कोई अधम ब्राह्मण ले कर खुदको और आपको भी भव-सागरमें डूबो दे। मैंने तो पहले ही सब धनका त्याग कर दिया है और फिर इस धनको ले कर भी दान कर दिया है, इस लिये जो मैंने त्याग किया उससे आठ गुना अधिक श्रेयः संग्रह किया है।

इस प्रकार यह पापघटका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सान्तू मंत्रीकी बुद्धिमत्ताका एक प्रसंग।

१२४) किसी समय, मालव मण्डलसे विग्रह करके स्वदेशको लौटते समय सिद्धराजको मालूम हुआ कि [गुजरात और मालवेके मध्यमें बसनेवाले] अनुपम बलशाली भिल्लोंने उसका रास्ता घेर लिया है। सान्तू मंत्रीको [पत्तनमें] इसके समाचार मिले, तो उसने प्रति ग्राम और प्रति नगरसे घोड़े इकट्ठे किये, और प्रत्येक बैलको भी पलानसे सज्ज करके बड़ा भारी दलबल इकट्ठा किया। फिर उस दलके बलसे भिल्लोंको त्रासित कर सिद्धराजको सुखपूर्वक स्वदेशमें ले आया।

इस प्रकार सान्तू मंत्रीकी बुद्धिका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजके एक सेवकके भाग्यका वृत्तांत।

१२५) किसी एक रातको दो बुद्धिमान भृत्य श्री सिद्धराजके पैर दबा रहे थे। उनमेंसे एकने, राजाको नींदके कारण आँखें बंद किया हुआ समझ कर, उसकी प्रशंसा करते कहा कि–'महाराज सिद्धराज कृपा और कोपमें [एकसे] समर्थ, सेवकोंके लिये कल्पवृक्ष और राजोचित सभी गुणोंके आलय हैं। दूसरेने, राजाके इस

महान् राज्यका कारण भी प्राक्तन कर्म को बता कर [कर्म ही की] प्रशंसा की। राजाने इस वृत्तान्तको सुन कर कर्मकी प्रशंसाको विफल करनेके विचारसे, प्रशंसा करनेवाले चाकरको एक दिन, उसे कुछ भी रहस्य न जता कर, यह प्रसाद-लेख दे कर महामंत्री सान्तूके पास भेजा कि–' इस चाकरको एक सौ घोड़ेका सामंत बना दिया जाय '। वह चाकर इस लेखको ले कर जब चंद्रशालाकी सीढ़ियोंसे नीचे उतर रहा था, तब पैर फिसल जानेसे गिर गया और उसका अंग भंग हो गया। उसीके पीछे चले आने वाले दूसरे चाकरने पूछा कि–' यह क्या बात है ? ' तो उसने अपनी बात बताई। वह तो फिर खाटमें बैठ कर अपने घर गया और उस दूसरे [अपने साथी] को वह राजाका लेख दे कर मंत्रीके पास जानेको कहा। मंत्रीने उस लेखमें की गई आज्ञानुसार उस चाकरको सौ घुडसवारों वाला सामंतपद प्रदान किया। यह सब बात सुन कर राजाने भी कर्मको ही बलवान माना।

१७०. न तो आकृति, न कुल, न शील, न विद्या और न मनुष्योंकी की हुई सेवा कुछ फल देती है। पूर्व जन्ममें तपस्यासे संचित किये हुए पुण्य कर्म ही मनुष्यको समय पा कर वृक्षोंकी तरह फल देते हैं।

इस तरह यह षष्ठकर्म प्राधान्य-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धराजकी स्तुतिके कुछ फुटकर पद्य।

१७१. तीन भुवनके बीचमें यह जेसल (जयसिंह-सिद्धराज) राजा [एक बडा] कूट बरुड * है जिसने अनेक राजवंशोंका छेदन कर [अपना] एक छत्र [राज्य] बनाया है। इसकी जय हो।

१७२. महालय, महा-यात्रा महास्थान और महासरोवर,§ जैसे सिद्धराजने किये वैसे किसीने नहीं किये।

१७३. जिगीषु जन (एक अर्थ–गानेकी इच्छा रखने वाले; दूसरा अर्थ–विजयकी इच्छा रखने वाले) एक मात्राका भी अधिक होना सह नहीं सकते, मानों इसी लिये हे धरानाथ (पृथ्वीनाथ)! तुमने धारानाथ (धारानगरीके नाथ)को नष्ट किया है। [क्यों कि ' धरानाथ ' की अपेक्षा ' धारा-नाथ ' में एक मात्रा अधिक है]

१७४. हे सरस्वती, मान छोड़ दो; हे गंगा, तुम भी अपने सोहागकी भंगीको छोड़ो; अरी यमुने, अब तेरी कुटिलता वृथा है; रे रेवा, तूं वेगको छोड़ दे; क्यों कि अब समुद्र, श्री सिद्धराजके कृपाणसे कटे हुए शत्रुस्कंधोंमेंसे उछलने वाली रक्तकी धारासे बनी हुई नदीरूपी नवीन स्त्रीसे रक्त (१ लाल वर्ण, २ अनुरक्त–प्रेमी) हो गया है।

१७५. हे विजयी राजाओंमें सिंह (जयसिंह) महाराज, सचमुच ही तुम्हारे जय-यात्राके समय, हाथियोंके कारण जलाशयोंके सूख जानेकी चिंतासे; वीरोंके घावकी आकांक्षासे; तथा, अपने पतियोंके विनाशकी आशंकासे; क्रमशः मछली रोती है, मक्खी हँसती है, और स्त्रियाँ अशुभका ध्यान करती हैं।

---

* बरुड या बरड उस जातिका नाम है जो बाँसको चीर-छोल कर उससे टोकरी, चरडक और छाता आदि बनाये करते हैं। कहीं कहीं ' गंछ ' भी इनको कहा है। इस पद्यमें, राजवंश और छत्र ये शब्द श्लेषात्मक हैं।

§ इस पद्यमें सिद्धराजके ४ महाकार्य बतलाये गये हैं–जिनमें महालयसे तो सिद्धपुरके रुद्रमहालयका सूचन होता है। महायात्रासे बहुत करके सोमेश्वर तीर्थकी की हुई बडी यात्राका सूचन होता है। किसीके खयालसे सिद्धराजने जो मालवे पर विजय प्राप्त किया था उस विजययात्राका इसमें सूचन किया गया है। महासरोवरसे पाटनके सहस्रलिंग सरोवरका निर्देश किया गया है। ४ थे महास्थानसे किस वस्तुका सूचन होता है यह ठीक ज्ञात नहीं होता। कहते हैं कि सिद्धराजने कई बडे बडे किले भी बनाये थे और कई बडे स्थान भी बसाये थे। संभव है उन्हींमेंसे किसीका कोई सूचन इसमें किया गया हो।

१७६. हे सिद्धराज, नत हो जाने पर तो तुमने आनाक भूपको अनेक लाखोंके साथ सपादलक्ष [जैसा देश] भी दे दिया और इस ऐसे यशोवर्माके पास माळव (माळवा देश; श्लेषार्थ मा=लक्ष्मीका लव=लेशमात्र) का होना भी तुमने सहन नहीं किया ।

इत्यादि बहुतसी स्तुतियां और प्रबंध उसके बारेमें हैं जो [ग्रन्थान्तरोंसे] जानने योग्य हैं ।

सं० ११५० से ले कर [११९९ तक] ४९ वर्ष तक श्रीसिद्धराज जयसिंह देवने राज्य किया।

*

इस प्रकार श्री मेरुतुङ्गाचार्यके बनाये हुए प्रबंध चिन्तामणिमें श्री कर्ण और श्री सिद्धराजका चरित्र वर्णन नामक यह तीसरा प्रकाश समाप्त हुआ ।

यहाँ पर P प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक अधिक पाये जाते हैं । ये श्लोक सोमेश्वरदेव रचित कीर्तिकौमुदीके हैं और इनमें संक्षेपमें सिद्धराजके जीवनके महत्त्वके सभी वीर कार्योंका सूचन किया गया है–

[१०६] जिसने, बालक होते हुए भी, इंद्रकी वीरवृत्तिको भी लांघ जाने वाले अपने कोपके प्रभावसे दुष्ट राजाओंको आज्ञाधीन बनाया ।

[१०७] अपार पौरुषके उद्गारवाले सौराष्ट्रीय खंगारको भी, जिस गुरुमत्सरने युद्धमें इस प्रकार पीस डाला, जैसे सिंह हाथीको पीसता है ।

[१०८] जिसने रामचंद्रकी तरह असंख्य घोड़ोंकी सेना ले कर और अनेक राजाओंको नष्ट करके (रामके पक्षमें–पर्वतोंको उखाड कर) सिन्धुपतिको (सिद्धराजके पक्षमें–सिन्धुराज नामका राजा, रामके पक्षमें सिन्धु=समुद्र) बाँध लिया ।

[१०९] मनमें अमर्ष करके विपक्षीय उर्वीभृत् (एक अर्थ–पर्वत, दूसरा–राजा) के उन्नत होने पर, जिसने अगस्त्य मुनिकी भाँति, शीघ्र ही अर्णोराज (एक अर्थ–समुद्र; दूसरा–शाकंभरीका चाहमान राजा) को शुष्क कर डाला ।

[११०] विष्णुने तो अर्णोराज (समुद्र) की पुत्री ले ली थी, किन्तु इसने तो अर्णोराजको अपनी पुत्री दे दी* । विष्णु और इस सिद्धराजमें एक यही अंतर है ।

[१११] शत्रुओंके कटे हुए सिर देख कर शाकंभरीके ईशने भी शंकित हो कर इसके चरणोंमें अपना सिर झुका दिया ।

[११२] स्वयं अत्यंत लक्ष्मीवान् और अपरमार (दूसरोंको न मारनेवाला) हो कर भी युद्धमें जिसने मालवस्वामी (एक अर्थ–मालव देशका राजा, दूसरा श्लेषार्थ–लक्ष्मीका किंचित् भोक्ता) परमारको मार डाला ।

[११३] जिसने धारा-नरेशको राज-शुककी तरह काष्ठ-पञ्जर (काठके पिंजड़े) में रख कर अपनी कीर्तिरूपी राजहंसीको काष्ठा-पञ्जर (दिक्चक्रवाल) में छोड़ दिया ।

[११४] जिसने नरवर्मा राजाकी तो केवल एक ही नगरी जो धारा थी वह ले ली, पर उसकी वधुओंको [बदलेमें] हजारों अश्रु-धारायें दे दीं ।

---

* शाकंभरी (अजमेर) के चाहमान राजा अर्णोराजको, जिसका देश्य नाम आनाक या आना था, सिद्धराजने युद्ध करके पहले तो अपना आज्ञाधीन राजा बनाया और फिर पीछेसे उसको अपनी पुत्री ब्याह दी थी । इसीका सूचन इस पद्यमें है ।

[११५] धारा-भंगके प्रसंगको देख कर, जिसके समीप आनेकी ही आशंकासे, प्राघूर्णकके बहाने जिसको महोदय राजने दण्ड दिया।

[११६] जिस शत्रुने, अमृतकी भाँति, इसकी पृथ्वीके छेनेकी इच्छा की, उसीको तरवारसे उल्लसित इसके बाहुने राहु बना दिया (अर्थात् राहुके समान उसे सिरकटा बना दिया)।

[११७] लोगोंने तो इसको कुमार (कार्तिकेय) की ही तरह शक्तिमान् अपना स्वामी माना था, लेकिन यह तो ताम्रचूडध्वज * था और वह केकिध्वज * था (यही इनमें अंतर था)।

[११८] ऐसा कोई राजा नहीं था, जिसको विश्वके इस एकमात्र वीरने जीता न हो; और ऐसी कोई दिशा न थी जो इसके यशसे शोभित न हुई हो।

[११९] गणेशकी तरह जिस अग्रपुष्कर[1] और वृषस्थिति[2]को, मोदककी तरह, गौड राजा † आर्य्यसार[3] और करस्थ[4] हो गया।

[१२०] श्मशानमें बर्बर नामक राक्षसेन्द्रको बाँध करके राजाओंकी श्रेणीमें जो राजचंद्र सिद्धराज हो गया।

[१२१] जिसने, लड़ाईसे उठी हुई धूलसे पहले जिस आकाशको मलिन कर दिया था, उसने पीछेसे उसी आकाशको अपनी कीर्तिलहरीसे धो कर उज्ज्वल कर दिया।

[१२२] उस पृथ्वी मंडलके सूर्यके लोकान्तर होने पर चन्द्रसमान श्रीमान् राजा, कुमारपालने प्रजाका रञ्जन किया।

---

* सिद्धराजके ध्वजमें ताम्रचूड याने कुक्कुटका चिह्न था इस लिए वह ताम्रचूडध्वज कहलाता था। कुमार (कार्तिकेय) के ध्वजमें केकी अर्थात् मयूरका चिह्न था। मयूरकी अपेक्षा कुक्कुट अधिक बलवान् होता है, इस लिये कुमारसे भी अधिक सिद्धराजका शक्तिमान् होना इस पद्यमें ध्वनित किया गया है।

१. गणेशके पक्षमें–आगे है हाथीकी सूंड जिसके; राजाके पक्षमें आगे है बाण जिसके। २ गणेशके पक्षमें–मूषकपर है स्थिति जिसकी; राजाके पक्षमें धर्मपर है स्थिति जिसकी। ३ मोदकके अर्थमें आज्य=घृतसारवाला, राजाके अर्थमें=युद्धसार वाला। ४ मोदकके अर्थमें कर=हाथमें रहा हुआ; राजाके अर्थमें कर=दण्ड देनेवाला।

† गौड=बंग देशका राजा सिद्धराजको कर देने वाला बना यह अर्थ इस पद्यमें ध्वनित किया गया है।

९. कुमारपालादि प्रबन्ध।

कुमारपालके पूर्वजादि।

१२६) अब **परम आर्हत** श्री कुमारपालका प्रबंध प्रारंभ किया जाता है – अणहिलपुर नगरमें जब कि महाराज बड़े भीमदेव राज्य-शासन कर रहे थे, उस समय श्री भीमेश्वरके नगरमें (अर्थात् पत्तनमें) बकुलादेवी[1] नामकी एक वेश्या रहती थी जो नगर प्रसिद्ध रूप और गुणकी पात्र थी। कुलवधूओंसे भी उसकी अधिक शीलमर्यादा कही जाती थी। राजाने यह सुना तो उसकी परीक्षा लेनेके विचारसे उसे अपने अनुचरोंके द्वारा सवालाख कीमतकी एक कटारी, अपनी रक्षिता बनानेके इरादेसे, इनामके तौर पर भिजवाई। [कार्यान्तरकी] उत्सुकता वश राजाने उसी रातको बाहर जा कर प्रस्थान (यात्राके) लग्नको सिद्ध किया। विग्रह (युद्ध) के निमित्त दो वर्ष तक उसको मालवदेशमें रहना पड़ा। पर वह बकुलादेवी, उसके भेजे हुए उक्त इनामके अनुसार, अन्य सब पुरुषोंको छोड़ कर शील आचारका पालन करती रही। निस्सीम पराक्रमशाली भीमने तृतीय वर्षमें अपने स्थान पर आ कर जनपरंपरासे उसकी इस प्रवृत्तिको सुन कर उसे अपने अन्तःपुरमें दाखिल कर लिया। उसको एक पुत्र हुआ जिसका नाम हरिपालदेव था। उसका पुत्र त्रिभुवनपालदेव हुआ और उसका पुत्र श्री कुमारपालदेव। वह जब धर्मका जानने वाला न था तब भी कृपालु और परस्त्रियोंका भाई बना हुआ था। सिद्धराजसे सामुद्रिक जानने वालोंने कहा था कि – 'आपके बाद यही राजा होगा'। इससे वह उसे हीन जातीय मान कर, उसके प्रति असहिष्णु बन, सदा उसके विनाशका अवसर खोजा करता। वह कुमारपाल इस बातको कुछ कुछ समझ कर, राजासे मनमें शंकित बना हुआ, तापसवेष धारण कर, नाना प्रकारसे, देशान्तरोंमें भ्रमण करता रहा। कुछ साल इस तरह बिता कर फिर नगरमें आया और किसी मठमें ठहरा।

*

सिद्धराजके भयसे कुमारपालका मारे मारे फिरना।

१२७) इसके अनन्तर, श्री कर्णदेवके श्राद्धके अवसर पर श्रद्धालु सिद्धराजने सब तपस्वियोंको [भोजनके लिये] निमंत्रित किया। उनमेंसे प्रत्येकके पैर धोते समय, कुमारपाल नामक तपस्वीके भी कोमल चरणतलको हाथसे स्पर्श करता हुआ, उसमेंकी ऊर्ध्व रेखा आदि चिन्होंसे उसने जाना कि –' यही यह राजा होने योग्य है' – और इस लिये निश्चल दृष्टिसे उसे देखता रहा। उसकी इस चेष्टासे [अपने प्रति] उसे विरुद्ध समझ कर, उसी समय वेष बदल करके, कौवेकी भाँति, वह अदृश्य हो गया; और आलिग नामक कुम्हारके घरमें जा छिपा। वहां मिट्टीके बर्तन पकानेके लिये आवाँ बनाया जा रहा था, उसीमें कुम्हारने छिपा कर, पीछा करने वाले राजपुरुषोंसे उसे बचाया। फिर वहाँसे धीरे धीरे आगे चला तो, उसने खोजनेके लिये आये हुए राजपुरुषोंको सामने देखा। उससे त्रासित हो कर, नजदीकमें कोई दुर्गम ऐसी छिपने लायक भूमिको न पा कर किसीएक खेतमें जा खड़ा हुआ। वहाँ पर, खेतके रखवालोंने, खेतकी रक्षाके लिये कांटेदार वृक्षोंकी डालियाँ काट कर जो इकट्ठी कर रखी थीं, उन्हींके बीचमें उसे छिपा दिया और वे अपनी जगह पर आ कर बैठ गये।

---

१ इसके नाममें कुछ पाठभेद मिलता है – किसी प्रतिमें 'चउला देवी' ऐसा भी पता आता है – परन्तु वह 'ब' और 'च' के बीचमें लिखने वालोंके भ्रमके कारण हुआ मालूम देता है। 'बकुलादेवी' का अपभ्रंश उच्चार 'बउलादेवी' होता है और 'ब' की जगह 'च' पढनेसे 'चउलादेवी' नाम बन गया मालूम देता है। अधिकतर प्रतियोंमें 'बकुलादेवी' नाम ही मिलता है और यही शुद्ध प्रतीत होता है।

राजाके आदमी पैरोंके चिह्नके अनुसार वहाँ पहुँचे, परन्तु उसका वहाँ पाना असंभव जान कर और भालेकी नोकको उसमें खोंच कर देखने पर भी कुछ न मालूम कर, वे वहाँसे वापस लौट गये। दूसरे दिन खेतवालोंने उस स्थानसे उसे बहार निकाला। वह सवेरे ही वहाँसे आगे चलता हुआ एक वृक्षकी छायामें बैठ कर विश्राम लेने लगा, तो क्या देखता है कि, एक चूहा निभृतभावसे बिलमेंसे चाँदीका सिक्का बाहर ला कर रख रहा है। जब वह इस प्रकार इक्कीस सिक्के निकाल चुका, तो उनमेंसे फिर एक वापस उठा कर वह बिलमें ले गया। उसके बिलमें घुसने पर बाकीके सब सिक्के उठा कर कुमारपालने ले लिये और वह ज्यों ही एकान्तमें जा कर देखता हैं तो वह चूहा बाहर आ कर उन सिक्कोंको न पा कर वहीं छटपटा कर मर गया। कुमारपाल उसके शोकसे मनमें बड़ा व्याकुल हो कर चिरकाल तक परिताप करता रहा। फिर आगे चलते हुए रास्तेमें किसी [धनी पुरुष] की बहूने, जो ससुरालसे पीहर जा रही थी, देखा कि राहखर्चके अभावमें तीन दिनसे भूखे मरते उसका पेट फक पड़ गया है। उसने भाईकी तरह स्नेहसे कर्पूरकीसी सुगंधिवाले चावलके करंबेसे उसको प्रवृत्त किया।

१२८) बादमें, विविध देशान्तरोंका भ्रमण करता हुआ, वह स्तंभतीर्थमें महं० श्री उदयनके पास कुछ मार्गखर्चे माँगनेके लिये आया। यह सुन कर कि वह पौषधशालामें है, तो वह वहाँ आया। उसे देख कर उदयनने हेमचंद्राचार्यसे [उसके बारेमें] पूछा। उन्होंने कहा कि—इसके अंगके लक्षण लोकोत्तर हैं। यह भविष्यमें चक्रवर्ती राजा होगा। आजन्म दरिद्रतासे सताये हुए उस क्षत्रियने जब इस बातको असंभव कहा, तो उन्होंने यह लिख कर एक पत्रक मंत्रीको और एक उसको दिया कि—' यदि सं० ११९९ कार्तिक वदि (B. P सुदि) २ रविवार हस्त नक्षत्रमें, आपका पट्टाभिषेक न हो तो, इसके बाद, मैं शकुन देखना ही त्याग दूँगा।' फिर वह क्षत्रिय उनकी इस कला-कौशल वाली चातुरीसे मनमें चकित हो कर बोला कि—'यदि यह बात सच हुई तो, आप ही राजा रहेंगे और मैं आपका चरणरेणु हो कर रहूँगा'— और इसकी प्रतिज्ञा की। श्री हेमाचार्यने कहा कि—' नरकरूप अन्तिम फल देनेवाली राज्यलिप्सासे हमें कोई मतलब नहीं है। आप कृतज्ञ हो कर यह बात न भूलियेगा और जैन शासनका भक्त हो कर सदा रहियेगा।' इस अनुशासनको सिर माथे रख कर और आज्ञा ले कर फिर मंत्रीके साथ उसके घर गया। वहां स्नान, पान, भोजन आदिसे सत्कृत हो कर और राह-खर्च पा कर, विदा ले मालव देशमें आया। वहाँ कुडङ्गेश्वर प्रासादमें पट्टिका पर

> १७७. संवत् ११९९ का वर्ष पूर्ण होने पर, हे विक्रमादित्य, तुम्हारे ही समान एक कुमारपाल नामक राजा [जैन धर्मका पालन करने वाला] होगा।

इस प्रकारकी गाथा लिखी हुई देख कर मनमें बड़ा विस्मित हुआ। [इस समय] गूर्जराधिपति सिद्धराजका स्वर्गवास सुन कर वहाँसे लौटा। उसका सब खर्च समाप्त हो चुका था। उसी नगरमें, किसी बनियेकी दूकान पर [बिना कुछ दिये] भोजन करनेके बाद उसको बंदी किया गया। वह व्याकुल हो कर रोने लगा तो, फिर नगरके लोगोंके इकट्ठा होने पर दोनोंका मरण होगा यह जान कर उस बनियेने कहा कि—' मेरी बनावटी मूर्च्छा है इसे तुम दूर करनेका प्रयत्न करने लगो ' उसके इस प्रकारके बुद्धिवैभवसे अपनेको प्रत्युज्जीवित मानकर, कुमारपालने वैसा किया और उस उपायसे अपना कष्ट छुटा कर वह अणहिलपुरमें रातके समय पहुँचा। पासमें कुछ न होनेके कारण कंदोईकी दूकान पर जा कर, उसका दिया हुआ कुछ खाया। बादमें अपने बहनोई राजकुल श्री कान्हड़देवके घर गया। जब कान्हड़देव राजमंदिरसे आया तो उसे आगे आगे करके घरके भीतर ले गया। फिर अच्छा खाना आदि खा कर स्वस्थ हो कर सो गया।

*

---

१ यहां पर यह क्या बात कही गई है सो ठीक समझमें नहीं आती। ग्रंथकारका लेख बहुत अस्पष्ट और संक्षिप्त है।

कुमारपालका राजगादीपर बैठना।

१२९) प्रातःकाल वह बहनोई अपना सैन्य तैयार करके, उसके साथ, उसको राजाके महलमें ले आया। अभिषेककी परीक्षाके लिये पहले एक कुमारको पट्टे पर बैठाया। उसको चादरके आँचलोंको भी ठीक सम्हालते न देख फिर एक दूसरेको बैठाया। उसको हाथ जोड़ कर बैठा हुआ देख कर उसे भी अप्रमाणित किया। फिर कान्हडदेव की अनुज्ञासे कुमारपाल, वस्त्र संवरण करके ऊँचेसे श्वास लेता हुआ और हाथमें तलवार कँपाता हुआ, सिंहासन पर जा बैठा। पुरोहितने मंगलाचार किया, नगाड़े बजे। श्रीमान् कान्हडदेवने पंचांगोंसे पृथ्वी चूम कर प्रणाम किया। उस समय उसकी अवस्था पचास वर्षकी हुई थी।

*

कुमारपालने राजद्रोहियोंका उच्छेद किया।

१३०) कुमारपाल स्वयं प्रौढ होनेके कारण, तथा देशान्तर भ्रमणसे विशेष निपुणता प्राप्त करनेके कारण, सब राज्यशासन स्वयं करने लगा। राज-वृद्धोंको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मिल कर उसे मारना चाहा और अन्धकार वाले दरवाजेमें घातकोंको रख दिया। पूर्वजन्मके शुभ कर्मोंसे प्रेरित किसी आप्तने उस वृत्तान्तको बता कर उसे अन्य द्वारसे मकानमें प्रवेश कराया। बादमें उन प्रधानोंको उसने शीघ्र यमपुरीको भेज दिया।

वह भावुक मण्डलेश्वर (कान्हडदेव), राजा अपना साला होनेके कारण, तथा अपने आपको राज-प्रतिष्ठाचार्य समझ कर, राजाकी दुरवस्थाके [उन पिछले] मर्मोंको कहा करता। इस पर किसी समय राजाने कहा—' हे भावुक, तुम्हें इस प्रकार राज-दरबारमें सर्वदा पुरानी दुरवस्थाके मर्मोंका मजाक नहीं करना चाहिये। अबसे ऐसी बातें सभामें न कहना, विजनमें चाहे यथेच्छ कहते रहना। ' राजाके इस प्रकार उपरोध करने पर भी, उत्कट अवज्ञावश हो कर वह बोला कि—' रे अनात्मज्ञ! अभी इतनेहीमें अपने पैर उखाड रहा है?' इस प्रकार बकता हुआ, मानों मौतहीकी इच्छासे, औषधकी भाँति उसके पथ्य वचनको भी उसने ग्रहण नहीं किया। [उस क्षण तो] राजाने अपने भावका संवरण करके अपनी मनोवृत्ति छिपा ली। दूसरे दिन राजाके संकेत प्राप्त मल्लोंने उसका अंग तोड़ मरोड़ कर, दोनों आँखें निकाल लीं और उसे उसके मकान पर भिजवा दिया।

१७८. इस विचारसे कि पहले मैंने ही इसे जलाया है अतः तिरस्कार करने पर भी यह मुझे नहीं जलायेगा, इस भ्रमके वश हो कर दीपककी तरह, राजाको कोई अंगुलिके पोरसे भी न छुए।

यह विचार कर, सामन्त लोग, उस दिनसे अत्यधिक भयचकित चित्त हो कर, प्रतिपद पर उसकी सेवा करने लगे।

■

१३१) राजाने पूर्वमें उपकार करने वाले उदयनके पुत्र वाग्भटदेव को अपना महामात्य बनाया और आलिगको तथा महं० उदयन देवको बड़े (वृद्ध) प्रधान बनाये।

■

कुमारपालका चाहमान राजा आनाकके साथ युद्ध।

१३२) चाहड नामक एक कुमार सिद्धराजका प्रतिपन्न (माना हुआ) पुत्र था। वह कुमारपालदेव की आज्ञा न मान कर सपादलक्षके राजाके पास सैनिक हो कर चला गया। वह श्री कुमारपालके साथ विग्रह करनेकी इच्छासे, वहाँके सभी सामन्त लोगोंको लाँच (रिश्वत) आदिके द्वारा अपने वशमें करके, प्रबल सेनाके साथ सपादलक्षके राजाको ले कर [गूर्जर] देशकी सीमा पर चढ आया। अब, चौलुक्य चक्रवर्ती (कुमारपाल) ने भी, प्रतिशत्रु बन कर, उस सैन्यके सामने अपना सैन्यसमूह जमा किया। जब लड़ाईका दिन ते हुआ और सीमायें निष्कंटक की गई तथा चतुरङ्ग सेना सज्जित की गई, तो उसी समय पट

हस्तीके च उ लि ग नामक महावतने, किसी अपराधमें राजासे फटकार पा कर, क्रोधसे अंकुश-त्याग कर दिया। इसके बाद, अनेक गुणके पात्र ऐसे सा म ल नामक महावतको खूब वस्त्र और धन आदि दे कर उस पद पर नियुक्त किया। उसने 'क ल ह प ञ्चा न न' (युद्धका सिंह) नामक हाथीको सजा करके उसके ऊपर राजाका आसन रखा। ३६ प्रकारके अस्त्रोंको वहां जमा कर, फिर राजाको बैठाया और सब कला-कलापसे पूर्ण ऐसा वह स्वयं भी कलापके[1] पर पैर रख कर हाथी पर चढ़ा।

उस आसन पर बैठ कर चौलुक्य-चक्रवर्ती (कु मा र पा ल) ने देखा, तो मालूम हुआ कि, संग्रामके नायक पुरुषोंसे उठाये जाने पर भी, चा ह ड कु मा र के किये हुए भेदके कारण (फुट जानेसे), सामन्त लोग उसकी आज्ञाको नहीं मान रहे हैं। इस प्रकार सेनामें कुछ विप्लव देख कर उसने महावतको [आगे बढनेका] आदेश किया। सामनेकी सेनामें हाथी परका छत्र देख कर अनुमान किया कि वह स पा द ल क्ष का राजा [आ रहा] है। और यह निश्चय करके कि, सेनाके विघटित (विमुख) हो जाने पर मुझे अकेलेहीको लडना आवश्यक है, उस महावतको, सामनेके हाथीके पास, अपने हाथीको ले चलनेकी आज्ञा दी। पर उसे भी वैसा न करते देख बोला कि—'क्या तू भी फूट गया है?' इस पर उसने कहा—'महाराज! क ल ह प ञ्चा न न हाथी और सा म ल नामक महावत ये दोनों युगान्तमें भी फूटने वाले नहीं है; किन्तु सामनेके हाथी पर जो चा ह ड नामक कुमार चढ़ा हुआ है यह ऐसी गंभीर आवाज़ कर रहा है कि जिसकी हाँकके डरसे हाथी भी भाग छूटते हैं। यह सुन कर राजाने [अपनी बुद्धिमत्तासे सोच कर] हाथीके दोनों कानोंको चादरसे बंद कर दिया और फिर शत्रुके हाथीसे जा भिड़ाया। इधर चा ह ड ने, यह जान कर कि वह च उ लि ग नामक महावत ही—जिसे उसने पहलेहीसे अपने वशमें कर लिया है—राजाके हाथी पर बैठा है, कु मा र पा ल को मारनेकी इच्छासे हाथमें कृपाण ले कर अपने हाथी परसे कूद कर 'कलहपंचानन' हाथीके कुंभस्थल पर पैर रखा। इतनेमें महावतने [बडी चालाकीसे] हाथीको पीछे हटा दिया। इससे वह चा ह ड कु मा र पृथ्वी पर गिर पड़ा और नीचे खडे हुए पैदल सैनिकोंने उसे पकड लिया। इसके बाद चौ लु क्य रा ज ने श्री आ ना क नामक स पा द ल क्ष देशके राजासे कहा कि—'हथियार संभालो!' ऐसा कह कर उसके मुख-कमल पर उचित समझ शिलीमुख (बाण) फेंकने लगा। (उचित इसलिये कि शिलीमुख भौरेका भी नाम है और भौरोंका कमलकी ओर जाना उचित ही है।) 'तुम बड़े प्रधान क्षत्रिय हो न'—इस प्रकार उपहासके साथ प्रशंसा करते हुए, उसे भुलावेमें डाल कर, जो बाण मारा तो उससे घायल हो कर वह हाथीके कुंभस्थलसे गिर गया। 'जीत लिया, जीत लिया' कहते हुए राजाने स्वयं सारी सेनामें अपने हाथीको इधरसे उधर घुमाया और जो सब सामंत थे उनके घोड़ों पर आक्रमण करके उनको कैद किया।

इस प्रकार यह चाहड कुमारका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका उपकारियोंको सत्कृत करना।

१३३) तत्पश्चात्, कृतज्ञ-सम्राट् चौलुक्यराजने आ लि ग कुम्हारको सातसौं गाँववाली विचित्र चि त्र कू ट पट्टिका (चित्तोड, मेवाडकी भूमि) दी। वे अपने वंशके कारण लज्जित हो कर आज भी अपनेको 'सगर' (!) कहते हैं। जिन्होंने कटे हुए बम्बूलकी डालोंमें छिपा कर राजाकी रक्षा की थी वे अंगरक्षकके पदपर रखे गये।

---

१ हाथीपर चढनेके लिये रस्सीका बना हुआ ढींकाला।

धारण कर और काले ही तंबूमें निवास करता हुआ [पत्तन आया] वहाँ पर चौलुक्य भूपाल (कुमारपाल) ने उसे इस ढंगमें देखा तो पूछा कि 'यह किसका सैन्य पड़ा है?' इस पर उसे कहा गया कि 'कौङ्कणसे लौटे हुए पराजित सेनापति आम्बडके सैन्यका यह पड़ाव है।' उसकी ऐसी लज्जाशीलतासे चित्तमें चमत्कृत हो कर, प्रसन्नदृष्टिसे उसे आदरके साथ बुलाया और फिर अन्यान्य बलवान् सामन्तोंके साथ मल्लिकार्जुनको जीतनेके लिये उसीको राजाने फिर भेजा। [वह इस बार कौङ्कण देशमें पहुँच कर] उस नदीको उतर कर उस पर पुल बँधवाया और फिर उस परसे सारे सैन्यको पार करके बडी सावधानीके साथ युद्धकी व्यवस्था की। घमासान युद्ध शुरू होने पर उस सुभट आम्बडने हाथीके कन्धे पर सवार मल्लिकार्जुनको ही लक्षित करके, बडी वीरवृत्तिके साथ उसके हाथीके दाँतरूपी मुसलकी सीढीसे, उसके कुंभस्थल पर चढ बैठा। उद्दाम रण-शौर्यसे मतवाला हो कर बोला कि—'पहले प्रहार करो, या इष्ट देवताका स्मरण करो।' यह कह कर [उसके सम्हलते ही] अपनी धाराल तलवारके प्रहारसे मल्लिकार्जुनको पृथ्वी पर गिरा दिया। उधर सामन्त लोग नगर लूटनेमें संलग्न थे, इधर इसने रोलहीमें, जैसे सिंहशावक हाथीको [मार डालता है] वैसे ही [मल्लिकार्जुनको] मार डाला। फिर उसके मस्तकको सोने [के पतरे]से लपेट कर, उस देशमें चौलुक्य चक्रवर्तीकी आज्ञाकी घोषणा करता हुआ, अणहिलपुर जा कर, बहत्तर सामन्तोंके साथ सभामें बैठे हुए अपने स्वामी कुमारपाल नृपतिके चरणोंकी, उसके सिररूपी कमलसे पूजा की; तथा ये ४ चीजें भेंट की—१ शृंगारकोडी नामक साडी; २ माणिक नामक पिछोडा, ३ पापक्षय नामक हार, और ४ संयोगसिद्धि नामक सिप्रा। इनके सिवा ३२ कुंभ सुवर्ण, ६ मूडा मोती, चार दाँतवाला श्वेत हाथी, १२० पात्र (वारांगना) और १४॥ कोटी सुवर्ण दण्डके रूपमें उपस्थित किया। इससे अति प्रसन्न हो कर राजाने श्री आम्बड नामक महामण्डलेश्वरको श्रीमुखसे [उस मल्लिकार्जुनका धारण किया हुआ यह] 'राजपितामह' बिरुद समर्पण किया।

इस प्रकार यह मंत्री आम्बडका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालके साथ हेमचन्द्राचार्यके समागमका प्रसंग।

१३८) एक बार, अणहिलपुरमें भट्टारक श्री हेमचंद्र सूरिने अपनी पाहिणि नामक माताको, कि जिसने दीक्षा ली हुई थी, परलोक प्राप्तिके समय कोटि नमस्कारके पुण्यका दान किया। मृत्युके बाद [संघजन] जब उसका संस्कार महोत्सव करने जा रहे थे, तब त्रिपुरुष धर्मस्थानके निकट [उसका शवविमान पहुंचा तो] वहाँके तपस्वियोंने स्वाभाविक मत्सरतावश, उस विमानका भंग करके आचार्यका खूब अपमान किया। उसकी उत्तरक्रिया करवा कर, उस अपमानके आघातसे कुपित हो कर उन्होंने [उस समय] मालवेमें स्थित कुमारपाल भूपतिके स्कंधावार (सेनानिवेश) को अलंकृत किया।

> १७९. मनुष्यको [अभीष्ट कार्यसिद्धि प्राप्त करनेके लिये] या तो स्वयं राजा बनना चाहिये या किसी राजाको हाथमें करना चाहिये। [इन दो रास्तोंके सिवा] कामके सिद्ध करनेका तीसरा रास्ता नहीं है।

इस वचनके तत्त्वका विचार कर उन्होंने ऐसा किया। उनके इस तरह आनेका समाचार उदयन मंत्रीने राजाको सुनाया तो कृतज्ञोंके शिरोमणि उस राजाने परम अनुरोधके साथ उन्हें अपने महलमें बुलवाया। राज्य पानेके शकुन ज्ञानको स्मरण करते हुए राजाने अनुरोध करके कहा कि—'आप सर्वदा देवताअर्चनके अवसर पर यहां आया करें।' इस पर सूरिने कहा—

१८०. हम लोग भिक्षा माँग कर तो भोजन करते हैं, जूने-पुराने वस्त्र पहनते हैं और अकेली जमीन पर सो रहते हैं, तब फिर हम लोगोंको राजाओंसे क्या करना है।

उनके ऐसा कहने पर राजाने कहा—

१८१. मित्र एक ही [होना चाहिये], राजा या यति; भार्या एक ही [होनी चाहिये] सुन्दरी रमणी या दरी (कंदरा); शास्त्र एक ही [होना चाहिये], वेद या अध्यात्म; और देवता भी एक ही [होना चाहिये] केशव या जिन।

महाकविके इस कथनके अनुसार मैं परलोककी साधनाके लिये आपकी मित्रता चाहता हूं। 'किसी बातका निषेध न करना उसे स्वीकार कर लेना है'—इस उक्तिके कथनानुसार, सूरिके कुछ न कहने पर उस महर्षिकी चित्तवृत्तिको पहचान लेने वाले उस राजाने, लोगोंके आने जानेमें बाधा देने वाले द्वारपालोंको, श्रीमुखसे आज्ञा दी कि इन महर्षिको किसी भी समय आनेमें बाधा न दी जाय।

*

हेमाचार्यके समागमसे कुमारपालके पुरोहितका विद्वेष।

१३९) बादमें सूरिको वहाँ आते जाते देख और राजाको उनके गुणका गान करते देख, विरोध भावसे पुरोहित आ लि ग ने कहा—

१८२. विश्वामित्र, पराशर आदि तथा अन्य ऋषिगण, जो केवल जल और पत्ता खा कर रहते थे, वे भी स्त्रीके सुंदर मुखकमलको देख कर मोहित हो गये, तो फिर जो मनुष्य घी, दूध और दहीका आहार करते रहते हैं उनका इन्द्रियनिग्रह कैसा हो सकता है। अहो, यह इनका दम्भ तो देखिये।

उसके ऐसा कहने पर हे म चं द्र ने कहा—

१८३. हाथी और सूअरका मांस खाने वाला ऐसा जो बलवान् सिंह है वह, सुना जाता है कि वर्षमें केवल एक ही वक्त रति करता है; पर कर्कश शिलाकणको खाने वाला कबूतर रोज रोज कामी बना रहता है! इसमें क्या कारण है, सो तो बताओ!'

उसका मुँह बंद कर देने वाले इस प्रत्युत्तरके बाद ही किसी [और] मत्सरीने कहा, कि ये श्वेतांबर तो सूर्यको भी नहीं मानते। उसके ऐसा कहने पर—

१८४. लोकको धारण करने वाले सूर्यको [वास्तवमें] हमीं लोग हृदयमें धारण करते हैं। क्यों कि उसको अस्तगमन रूप संकट उपस्थित होने पर [हम तो] अन्न-जल भी छोड़ देते हैं।

इस प्रमाणकी निपुणताके आधार पर, हमीं लोग वस्तुतः सूर्यभक्त हैं, ये नहीं [यह सिद्ध कर दिया]। इससे उसका मुँह बन्द हो गया। फिर एक बार देवतावसर (देवपूजाकी समाप्ति) हो जाने पर, मोहान्धकारको नष्ट करनेमें चंद्रमाके समान श्री हे म चं द्र के आने पर य श श्चं द्र ग णि ने रजोहरणके द्वारा आसन पट्टको साफ कर वहाँ कम्बल बिछाया, तो राजाने [उसका] तत्त्व न समझते हुए पूछा कि 'क्या बात है?' उन्होंने कहा—'कदाचित् यहाँ कोई जन्तु हो, इस लिये उसको हटा देनेके लिये यह प्रयत्न होता है।' राजाने इस पर यह युक्ति-युक्त बात कही कि—'यदि प्रत्यक्ष कोई जन्तु देखा जाय तो ऐसा करना उचित है; न कि यों ही वृथा प्रयास करना ठीक होता है।' इस पर उन सूरिने कहा—'आप क्या [अपनी] हाथी घोड़ेकी सेनाको शत्रु राजाके चढ़ आने पर ही तैय्यार करते हैं, या पहले भी?' जैसे वह राजव्यवहार है वैसे ही यह धर्म व्यवहार है। उनके इस प्रकारके गुणोंसे हृदयमें रंजित हो कर राजा, अपनी पहले की हुई प्रतिज्ञाके

अनुसार, उन्हें अपना राज्य देने लगा, तो उन्होंने सर्व शास्त्रका विरोधहेतु बतलाते हुए उसका अस्वीकार किया। क्यों कि कहा है कि—

१८५. हे युधिष्ठिर, जैसे जले हुए बीजका पुनः उद्गम नहीं होता वैसे राज-प्रतिग्रहसे (राजाके दिये हुए दानसे) दग्ध हुए ब्राह्मणोंका [फिर ब्राह्मण कुलमें] पुनर्जन्म नहीं होता।

यह पुराणमें कहा गया है। उसी प्रकार जैन शास्त्र भी [कहते हैं]—'गृहस्थके वहाँ भिक्षा मिलती हो तो फिर 'राजपिण्ड' (राजाके दान) की इच्छा क्यों करनी चाहिए'।

इस प्रकार [प्रभु हेमचन्द्राचार्यका कहा हुआ सुन कर] उक्त विषयके ज्ञानसे चित्तमें चमत्कृत हुआ और वह पत्तन पहुँचा।

*

कुमारपालका सोमेश्वर तीर्थके जीर्णोद्धारका प्रारंभ करवाना।

१४०) एक बार, राजाने मुनिसे पूछा—'क्या किसी तरह मेरा भी यशका प्रसार कल्पान्त-स्थायी हो सकता है?' उसकी इस बातको सुन कर उन्होंने कहा—'[यह दो तरहसे हो सकता है—] या तो विक्रमादित्यके समान संसारको अनृण करनेसे, या सोमेश्वरका काष्ठमय मंदिर, जो समुद्रके पानीकी छाटोंसे शीर्णप्राय हो गया है, उसका उद्धार करनेसे कीर्ति युगान्त तक स्थायी हो सकती है।' इस प्रकार चन्द्रमाकी चाँदनीकी भाँति श्रीहेमचंद्रकी वाणी सुन कर उल्लसित आनंदके समुद्रसे उस राजाने उसी महर्षिको पिता, गुरु और देवता मानते हुए और विजातीय अन्य ब्राह्मणोंकी निंदा करते हुए, प्रासादके उद्धारके लिये, उसी समय ज्योतिषीसे शुभ लग्न ले कर, पञ्चकुलको वहाँ भेजा और प्रासादके उद्धारका आरंभ कराया।

*

कुमारपालका उदयनसे मंत्री हेमचन्द्राचार्यका जीवनवृत्तान्त पूछना।

१४१) एक दूसरी बार, श्रीहेमचंद्रके लोकोत्तर गुणोंसे हृत-हृदय हो कर राजाने मंत्री उदयनसे पूछा कि—'इस प्रकारका यह पुरुष-रत्न, सकल वंशोंके भूषणरूप ऐसे किस वंशमें, समस्त पुण्यके प्रवेशवाले किस देशमें और सब गुणोंके आकर समान किस नगरमें पैदा हुआ है?' राजाके इस आदेश पर उस मंत्रीने जन्मसे आरंभ करके उनका पवित्र चरित्र इस प्रकार कह सुनाया—'अर्धाष्टम नामक देशके धुन्धुका नामक नगरमें मोढ वंशके चाचिग नामक व्यवहारीकी, सतियोंमें श्रेष्ठ और जैनधर्मकी शासन देवता समान साक्षात् लक्ष्मी जैसी पाहिणि नामक सहधर्मचारिणीके ये पुत्र हैं। चामुण्डा नामक गोत्र देवीके आद्याक्षरके नाम पर चांगदेव इनका नाम रखा गया था। इनकी अवस्था जब आठ वर्षकी थी, उस समय [इनके गुरु] श्रीदेवचन्द्राचार्य पत्तनसे तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान कर धुन्धुक्कक गावमें गये। वहाँ मोढवसहिकामें देवको नमस्कार करने जब गये तो यह लड़का समवयस्क बालकोंके साथ खेलता हुआ, अचानक सिंहासनके पास रखी हुई उन आचार्यकी गद्दी पर जा बैठा। इस बालकके अंग-प्रत्यंगमें संसारसे विलक्षण लक्षणोंको देख कर उन्होंने (देवचन्द्राचार्यने) कहा—'यह यदि क्षत्रिय कुलमें पैदा हुआ है तो सार्वभौम चक्रवर्ती होगा, यदि वणिक् या ब्राह्मण कुलमें पैदा हुआ होगा तो महामंत्री होगा और यदि दर्शन (संप्रदाय = धर्ममत) का स्वीकार करेगा तो युग-प्रधानकी नाईं कलि-कालमें भी सत्ययुग ले आयेगा'। आचार्यने यह सोच कर, उसको प्राप्त करनेकी इच्छासे उस नगरके रहने वाले व्यवहारियोंको साथ ले, वे चाचिगके घर गये। वह उस समय अन्य ग्राममें गया हुआ था। उसकी विवेकवती पत्नीने स्वागत-सत्कारसे उन्हें सन्तुष्ट किया। उनके यह कहने पर कि—श्रीसंघ (गाँवका मुख्य श्रावक समूह) तुम्हारे पुत्रको माँगने यहाँ आया है।' उसने हर्षके आँसू

वहा कर अपनेको रत्नगर्भा माना। तीर्थंकरोंको भी माननीय ऐसा संघ मेरे पुत्रको माँग रहा है, यह वडे हर्षकी बात है, फिर भी मुझे विषाद होता है। क्यों कि इसका पिता नितांत मिथ्या-दृष्टि (जैन धर्ममें अश्रद्धालु) है और वैसा हो कर भी वह इस समय गाँवमें नहीं है। उन व्यवहारियोंने कहा कि [उसका कुछ विचार न कर इस पुत्रको] तुम दे दो। उनके ऐसा कहने पर, माताने अपना दोष उतार देनेकी इच्छासे, दाक्षिण्यके वश हो कर अमात्र-गुणपात्र ऐसे अपने उस पुत्रको उन गुरुको दे दिया। तदनन्तर उस (माँ) ने जाना कि उन (आचार्य) का नाम देवचंद्र सूरि हैं। गुरुने उस बालकसे पूछा कि—'तुम शिष्य बनोगे?' तो उसने 'हाँ' ऐसा कहा और वह लौटते हुए गुरुके साथ चल पड़ा। वहाँसे वे कर्णावती शहरमें आये। वहाँ पर उदयन मंत्रीके पुत्रोंके साथ वह बालक पालकों द्वारा पाला जाने लगा। इतनेमें बाहर गाँवसे आये हुए चाचिगने वह सारा वृत्तान्त सुना तो, जब तक पुत्रका मुँह न देखने मिले तब तक, अन्नका त्याग कर उन गुरुका नाम पूछता हुआ कर्णावती पहुँचा। आचार्यके वसतिस्थानमें जा कर उस कुपित पिताने कुछ थोडासा प्रणाम किया। गुरुने पुत्रके अनुहारेसे उसे पहचान लिया, और फिर विचक्षणताके साथ विविध प्रकारके सत्कारोंसे उसे आवर्जित कर, उदयन मंत्रीको वहाँ बुलाया। धर्मबन्धु कह कर वह उसे अपने भवनमें ले गया और वडे भाईकी तरह भक्तिपूर्वक उसे भोजन कराया। फिर चांगदेव नामक उस लडकेको उसकी गोदमें रख कर पञ्चाङ्ग पुरस्कारके साथ तीन दुकूल (बहुमूल्य वस्त्र) और तीन लाख रोकड द्रव्य भक्तिके साथ भेंट किया। उस (उदयन) से चाचिगने कहा—'एक क्षत्रियके मूल्यमें १ हजार अस्सी, घोड़ेके मूल्यमें १७५०, और अत्यन्त मामूली भी बनियेके मूल्यमें ९९ हाथी, अर्थात् ९९ लाख होते हैं। तुम तो तीन लाख दे कर उदारताके बहाने कृपणता बता रहे हो। पर मेरा पुत्र तो अमूल्य है और उस पर तुम्हारी भक्ति अमूल्यतम है। सो इसके मूल्यमें वह भक्ति ही मुझे बस है। द्रव्यसंचय मेरे लिये शिवनिर्माल्यकी भाँति अस्पृश्य है।' चाचिगके इस प्रकार कहने पर अत्यन्त आनन्दित चित्तसे उत्कंठित हो कर उस मंत्रीने आलिंगन करके उसे धन्यवाद दिया, और फिर बोला कि—'अपने पुत्रको मुझे समर्पित करनेसे तो, यह बालक मदारीके वानरकी नाँई सब लोगोंको नमस्कार करता रहेगा और केवल अपमानका पात्र बनेगा। परंतु, गुरु महाराजको दे देने पर बालचंद्रमाकी भाँति त्रिलोकके नमस्कार योग्य होगा। अतः यथा-उचित विचार करके कहो।' ऐसा आदेश पा कर उसने कहा कि—'आपका जो विचार हो वही मुझे मान्य है।' ऐसा कहने पर उसको वह मंत्री गुरुके पास ले गया और उसने पुत्रको गुरुको समर्पित कर दिया। फिर तो चाचिगने स्वयं उसके प्रव्रजित होनेका उत्सव किया। बादमें [वह बालक] अप्रतिम प्रतिभायुक्त होनेके कारण, अगस्त्यकी नाँई समस्त वाङ्मय रूप समुद्रको चुल्लूमें रख कर पी गया। समस्त विद्यास्थानोंका अभ्यास कर गुरुके दिये हुए 'हेमचंद्र' नामसे प्रसिद्ध हुआ। सकल सिद्धान्त और उपनिषत्का पारगामी और छत्तीस ही सूरिगुणोंसे अलंकृत समझ कर गुरुने उसे सूरि पद पर अभिषिक्त किया।' इस प्रकार उदयन मंत्रीकी कही हुई हेमाचार्यके जन्मादिकी यह प्रवृत्ति सुन कर राजा बडा प्रसन्न हुआ।

कुमारपालका सोमेश्वरके उद्धारकी समाप्तिके निमित्त नियम लेना।

१४२) फिर श्री सोमनाथ देवके प्रासादके आरंभके लिये जब दृढ शिलाका आरोपण हो गया तो राजाने श्री हेमचंद्र गुरुको पंचकुलकी भेजी हुई वर्द्धापना (बधाई) की विज्ञप्ति दिखाते हुए कहा कि—'यह प्रासादारंभ किस प्रकार निर्विघ्नरूपसे समाप्त हो [सो उपाय बताइए]'। राजाके कहने पर श्री गुरुने कुछ विचार कर कहा कि—'इस धर्मकार्यमें कोई विघ्न न उत्पन्न हो उसके लिये दो-मेंसे एक काम करना होगा—

या तो ध्वजारोप हो तब तक शुद्ध भावसे ब्रह्मचर्य पालन करना या मद्य-मांसका नियम लेना (त्याग करना)' ऐसा कहने पर, उनकी बात सुन कर मद्य-मांसके नियमकी अभिलाषा करते हुए, उसने शिवके ऊपर जल छोड़ कर उक्त शपथको ग्रहण किया। दो वर्षके बाद, जब कि, उस मंदिरमें कलश और ध्वजका आरोपण कार्य पूरा हुआ, उसने नियमसे मुक्त होनेकी अनुज्ञा पानेके लिये गुरुसे कहा। उन्होंने कहा कि–' अपने इस समुद्धृत कीर्तन (मन्दिर) के साथ यदि चंद्रचूड (शिव) के दर्शन करनेकी इच्छा हो तो यात्रा करनेके बाद ही नियम छोड़ना उचित होगा।' ऐसा कह कर मुनिवर हेमचंद्र वहांसे चले गये। उनके गुणोंसे नीलीके रंगकी भाँति दृढरूपसे हृदयमें अनुरक्त हो कर वह राजा सभामें केवल उन्हींकी प्रशंसा करने लगा।

*

हेमचन्द्राचार्यका सोमेश्वरकी यात्रा निमित्त कुमारपालके साथ जाना।

तब, निष्कारण वैरी ऐसा कोई परिजन उनके तेजःपुञ्जको न सह कर, इस मसलके अनुसार कि–

१८६. उज्ज्वल गुणवालेको अभ्युदित होता देख कर क्षुद्र मनुष्य किसी तरह उसे नहीं सहन कर सकता। जैसे पतिंगा अपने शरीरको जला कर भी दीप्त दीपशिखाको बुझा देना चाहता है।

पीठका मांस भक्षण करनेके दोषको अंगीकार करके (पीठ पीछे चुगली खा करके) भी उनका अपवाद करने लगा कि–' यह बड़ा चालाक, हां जी हा करने वाला और सेवाधर्म कुशल है, जो केवल महाराजकी मरजीकी ही बात कहता रहता है। यदि ऐसा नहीं है, तो प्रातःकाल आप सोमेश्वरकी यात्रामें साथ चलनेको उससे कहें। आपके ऐसा कहने पर यह परधर्मके तीर्थका परिहार करके किसी कारण वहाँ नहीं आवेगा। और हम लोगोंका मत ही प्रमाणभूत मालूम देगा।' राजाने उसकी बातका स्वीकार करके प्रातःकाल जब, श्री हेमचंद्राचार्य आये तो, सोमेश्वरकी यात्रामें साथ चलनेके लिये उनसे अभ्यर्थना की। इस पर श्री सूरि बोले कि ' बुभुक्षित (भूखे) के लिये निमंत्रणकी क्या [ज़रूरत है] और उत्कंठितके लिये केकारवके श्रवणके कहनेकी क्या आवश्यकता है–इस कहावतके अनुसार उन तपस्वियोंके लिये, जिनका तीर्थयात्रा करना तो एक अधिकारसा धर्म है, उन्हें राजाके आग्रहका क्या प्रयोजन ?' इस तरह जब गुरुने अंगीकार किया, तो राजाने कहा कि– ' आपके लिये पालकी आदि क्या सवारी दी जाय?' गुरुने कहा कि–'हम लोग पावोंसे चल कर ही पुण्य प्राप्त करते हैं। किन्तु हम थोड़े थोड़े चल कर श्री शत्रुंजय, उज्जयंत (गिरनार) आदि तीर्थोंको नमस्कार करते हुए आपसे [सोमनाथ] पत्तनमें प्रवेश करनेके समय आ मिलेंगे।' ऐसा कह कर उन्होंने वैसा ही किया। राजा अपनी सारी राज्यऋद्धिके साथ प्रस्थान कर कुछ पड़ावोंके बाद पत्तनको पहुँचा। वहाँ श्री हेमचन्द्र मुनीन्द्र भी आ मिले जिससे वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ। गण्ड० श्री बृहस्पतिने सम्मुख आ कर अगवानी की और महोत्सवके साथ उनको नगरमें प्रवेश कराया। श्री सोमनाथके प्रासादकी सीढियों पर चढ कर, जमीन पर लेट कर उसे प्रणाम करनेके बाद, चिरकालसे दर्शनकी उत्कट आकांक्षाके कारण सोमेश्वरके लिंगका गाढ आलिंगन किया।

■

हेमाचार्यका शिवकी पूजा-स्तुति करना।

जैनधर्मसे द्वेष रखने वालोंके मुँहसे यह कथन सुन कर कि ' ये जिन देवके अतिरिक्त अन्य देवताओंको नमस्कार नहीं करते ' भ्रान्त चित्त वाले राजाने हेमचन्द्रसे यह बात कही कि–' यदि योग्य मालूम दे तो इन मनोहर उपहारोंसे आप श्री सोमेश्वर देवकी पूजा करें।' ' अच्छी बात है ' ऐसा कह करके उन्होंने शीघ्र ही राजाके कोशसे आये कमनीय अलंकारोंसे अलंकृत हो कर, राजाकी आज्ञासे श्री बृहस्पति द्वारा हाथका सहारा

पा कर [मूल] प्रासादकी चौकट पर चढ़ गये। मनमें कुछ सोच कर प्रकाशमें बोले कि–' इस प्रासादमें साक्षात् कैलासवासी महादेव रहते हैं, इस लिये रोमांचकंटकित शरीरको धारण करते हुए, उपहारको दूना कर दिया जाय ! ' ऐसा आदेश करके शि व पु रा ण में कहे हुए दीक्षा-विधिके अनुसार आह्वान - अवगुंठन - मुद्रा - मंत्रन्यास-विसर्जन आदि स्वरूप, पंचोपचार विधिसे शिवकी पूजा की । अन्तमें इस प्रकार स्तुति की –

१८७. जिस किसी धर्ममतमें, जिस किसी नामसे, तुम जो कोई भी हो, लेकिन दोष और कलुषतासे रहित ऐसे तुम एक ही भगवान् हो और इस लिये हे भगवन् ! तुम्हें नमस्कार है।

१८८. पुनर्जन्मके अंकुरको पैदा करनेवाले राग आदि जिसके नष्ट हो गये हैं वह ब्रह्मा हो, विष्णु हो या शिव हो – उसे हमारा नमस्कार है ।

इत्यादि स्तुतियाँ करते हुए, सब राजपुरुषोंके साथ विस्मययुक्त हो कर राजाके देखते रहने पर, हे मा चा र्य दण्डवत् प्रणाम करके स्थित हुए। फिर बृ ह स्प ति की बतलाई हुई पूजाविधिके अनुसार साभिलाष भावसे राजाने शिवका पूजन किया । इसके अनन्तर धर्मशिलामें बैठ कर तुलापुरुषदान, गजदान आदि महादान दे करके कर्पूरकी आरती उतारी ।

कुमारपालकी तत्त्वजिज्ञासा और हेमाचार्यका शिवको प्रत्यक्ष करना ।

फिर सभी राजपुरुषोंको हटा कर, शिवके गर्भगृहके अन्दर प्रवेश करके राजा बोला कि–' न महादेवके समान देव है, न मेरे समान राजा है और न आपके समान महर्षि। भाग्यवश इन तीनोंका सहज संयोग हुआ है। इस लिये, नाना दर्शनोंके भिन्न भिन्न प्रमाणोंके कारण जिस देवतत्त्वके बारेमें चित्त संदिग्ध हो रहा है, उस मुक्तिदायक सच्चे देवका वास्तविक स्वरूप, इस तीर्थभूमिमें आप सत्य सत्य रूपसे मुझे बताइये । ' यह सुन कर श्री हे म चं द्र ने बुद्धिसे कुछ सोच कर राजासे कहा – ' इन दर्शनोंके पुराने कथनोंको छोड दीजिए । मैं श्री सोमेश्वर देवको ही आपके प्रत्यक्ष कर देता हूँ । उन्हींके मुखसे मुक्तिमार्ग क्या है सो जान लीजिये । ' यह वाक्य सुन कर बोला – ' क्या यह भी संभव है ? ' इस तरह राजाके विस्मित होने पर [सूरिने कहा]– ' निश्चय ही यहाँ पर तिरोहित भावसे दैवत वर्तमान है । और हम दोनों गुरुके कथनके अनुसार इनके निश्चल आराधक हैं । तो फिर इस प्रकार, इस द्वन्द्वके सिद्ध होनेके कारण देवताका प्रादुर्भाव होना सरल है । मैं प्रणिधान (ध्यान) करता हूँ और आप कृष्ण अगुरुका उत्क्षेप (धूप) करें । और वह उत्क्षेप तब बन्द करियेगा, जब प्रत्यक्ष शिव आ कर निषेध करें । ' इसके बाद दोनोंके इस प्रकार करने पर जब गर्भगृह धुंएसे भर कर अन्धकारमय हो गया और नक्षत्रमालाके समान उज्ज्वल प्रदीप्त दीपक जब बुझ गये, तो फिर अकस्मात्, जैसे मानों बारहों सूर्यका तेज फैल रहा हो ऐसा प्रकाश दिखाई देने लगा। उसे देख कर संभ्रमवश राजा अपनी आँखें मलता हुआ देखने लगा तो, जलाधारके ऊपर श्रेष्ठ जंबूनद (सुवर्ण) के समान द्युतिवाले, चक्षुसे दुरालोक्य, अपरूप असंभव स्वरूपवाले एक तपस्वी दिखाई दिये । उसको पैरके अँगूठेसे ले कर जटा-जूट तक स्पर्श करके देवताका अवतार निश्चित किया और पंचाङ्गसे पृथ्वीतल पर लुठित हो कर प्रणाम करके भक्तिसे राजाने विज्ञप्ति की कि–' जगदीश ! आपका दर्शन करके आँखें कृतार्थ हुईं, अब आदेशका प्रसाद कर कर्णयुगलको कृतार्थ करो। ' ऐसा कह कर राजाके चुप हो जाने पर, मोहरात्रिके लिये सूर्य स्वरूप उनके मुखसे, यह दिव्य वाणी प्रकट हुई – ' राजन् ! यह महर्षि सब देवताके अवतार हैं । पूर्ण परब्रह्मके अवलोकनसे, करतलमें रहे हुए मुक्ताफलकी तरह इन्हें त्रिकालका स्वरूप विज्ञात है । इस लिये इनका बताया हुआ मुक्तिमार्ग ही असंदिग्ध मुक्तिमार्ग है । ' ऐसा कह कर शिव जब अन्तर्धान हो गये तो, प्राणायाम पवनका रेचन कर और आसन बंधको शिथिल करके ज्यों ही श्री हे म चं द्र ने ' राजन् ! ' यह शब्द कहा, तो तत्काल इष्ट

देवताके संकेतसे राज्याभिमानको छोड़ कर उसने कहा – 'जीव ! पधारिये !' इस प्रकार विनयसे सिर नंवाता हुआ हाथ जोड़ कर बोला कि 'जो आज्ञा हो सो कहिये।' इसके बाद वहीं पर उसे यावज्जीवन मद्य-मासके त्यागका नियम दिया और वहाँसे लौट कर वे दोनों क्षमापति (मुनि तो क्षमा=क्षान्तिके पति, राजा क्षमा= पृथ्वीके पति) अणहिलपुर आये।

*

कुमारपालका परमार्हत श्रावक बनना ।

१४३) श्री जिनमुखसे निःसृत पवित्र वचनोंके श्रवण द्वारा प्रतिबुद्ध हो कर राजाने 'परमार्हत' बिरुदको धारण किया। उमसे अभ्यर्थित हो कर प्रभु (हेमचंद्र) ने 'त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित' तथा बीस 'वीतराग-स्तुतियों' से युक्त पवित्र 'योगशास्त्र' की रचना की। उनका आदेश पा कर अपने आज्ञानुवर्ती अठारह देशोंमें, चौदह वर्ष तक, सर्व प्रकारकी जीव-हत्याका निवारण किया।

[१२३] सतत आकाशमें विचरण करने वाले सप्तर्षिगण एक मृगीको भी व्याधोंके पाशसे मुक्त नहीं कर सके। परन्तु प्रभु श्री हेमसूरि अकेलेने ही चिरकाल तक पृथ्वी पर जीववध होनेका निषेध कर दिया।

[१२४] [आकाश स्थित] कलाकलाप पूर्ण ऐसे चन्द्रमासे [पृथ्वी स्थित] हेमचन्द्र सूरि अधिक उज्ज्वलकीर्ति हैं। क्यों कि, चन्द्रमाने तो केवल एक ही मृगका [अपनी गोदमें ले कर] रक्षण किया है जब हेमचन्द्रने तो सब ही मृगोंका (सारे पशुगणका) रक्षण किया है।

राजाने उन उन देशोंमें १४४० नये विहार (जैन मन्दिर) बनवाये। सम्यक्त्व मूलक १२ व्रतोंको अंगीकार किया। अदत्तादान-विरमण-स्वरूप तीसरे व्रतकी व्याख्या सुन कर रुदती (रोती हुई विधवा नारियोंके) धनका ग्रहण पापोंका कारण है ऐसा समझ कर, उस कामके अधिकारी पंचकुलों (कर्मचारी गण) को बुला कर उसके आयपट्टको, जिसका [वार्षिक] प्रमाण ७२ लाख था, फाड़ कर, उस करको बन्द कर दिया। उस करके छोड़ देने पर विद्वानोंने इस प्रकार स्तुति की—

१८९. जिस रुदतीवित्तको, कृतयुगमें पैदा होने वाले रघु-नहुष-नाभाग-भरत आदि जैसे राजा लोग भी छोड़ नहीं सके, उसे करुणावश हो कर मुक्त करने वाले कुमारपाल! तुम महापुरुषोंके मुकुट-मणि हो।

प्रभु हेमसूरिने भी इस तरह राजाका अनुमोदन किया कि—

१९०. अपुत्र पुरुषोंका धन ग्रहण करके [अन्य] राजा तो पुत्र होता है। किन्तु सन्तोषपूर्वक उसका त्याग करने वाले तुम तो सचमुच राज-पितामह हो।

*

मंत्री उदयनका सौराष्ट्रके युद्धमें मारा जाना।

१४५) फिर, सुराष्ट्र देशके समर [ठाकुर] से युद्ध करनेके लिये उदयन मंत्रीको दलका नायक बना कर सारी सेनाके साथ भेजा गया। वह वर्द्धमानपुर (आधुनिक वढवाण) में पहुँच कर [नजदीकहीमें रहे हुए शत्रुंजय पहाड़ पर] श्री युगादिदेवको नमस्कार करनेकी इच्छासे, समस्त मंडले-श्वरोंको आगे चलनेकी अभ्यर्थना कर, सुद्ध विमलगिरि (शत्रुंजय) आया। विशुद्ध श्रद्धाके साथ देव-चरणोंकी पूजा करके ज्यों ही विधिपूर्वक चैत्यवंदना करने लगा, त्यों ही एक मूषक (चूहा) नक्षत्रमालाकी प्रदीप दीपमालामेंसे एक दीपवर्तिका (दियेकी जलती हुई बाट) को ले कर काठके बने उस प्रासादके किसी बिलमें प्रवेश करने लगा, तो देवके अंगरक्षकोंने उसे छुड़ाया। इसे देख कर उस मंत्रीका समाधिभंग हो गया

और इस प्रकार उस काष्ठमय देवप्रासादका कभी विध्वंस होना सोच कर उसने उस मंदिरका जीर्णोद्धार करवाना चाहा। इस इच्छासे देवके सामने ही एकभक्त (एकाशन करने) आदिके नियम ग्रहण किये। फिर वहाँसे प्रयाण करके अपने पड़ाव पर आया। उस प्रत्यर्थी (शत्रु) के साथ युद्ध शुरू होने पर शत्रुद्वारा राजाकी सेनाका पराजित होना देख कर उ द य न स्वयं युद्धके लिये उठा। वह प्रहारोंसे जर्जरशरीर हो गया तो फिर निवासमें ले आया गया। [जीवनान्त समीप जान कर वह] सकरुण स्वरसे रोने लगा। स्वजनोंने इसका कारण पूछा, तो उसने कहा कि, मृत्यु निकट आ गया है और श त्रु ञ्ज य और श कु नि का वि हा र के जीर्णोद्धारकी इच्छाका देवऋण पीठ पर लगा रह गया। इस पर उन्होंने कहा—' आपके वा ग्भ ट और आ म्र भ ट नामक दोनों पुत्र अभिग्रह ले कर तीर्थोद्धार करेंगे। हम लोग इसके लिये प्रतिभू (जामीन) बनते हैं।' उनके इस प्रकार अंगीकार करनेसे अपनेको धन्य समझता हुआ वह मंत्री अन्त्याराधनाके लिये किसी चारित्रधारीको खोजने लगा। वहाँ पर कोई चारित्री न मिलनेसे किसी एक नौकरको साधुवेषमें ले आ कर उसको निवेदित करने पर, मंत्री उसके चरणोंको ललाटसे स्पर्श करता हुआ, उसीके सामने दस प्रकारकी आराधना करके यह श्रीमान् उ द य न परलोक प्राप्त हुआ। पीछेसे, चंदन वृक्षके परिमलसे वासित क्षुद्र वृक्षकी नाईं उस वंठ (नौकर)ने अनशन व्रत ले कर रै व त क पर्वत पर अपने जीवनका अन्त कर दिया।

मंत्री बाहडका शत्रुञ्जयतीर्थोद्धार कराना।

१४५) तत्पश्चात्, अ ण हि ल्ल पु र पहुँच कर उन स्वजनोंने यह बात वा ग्भ ट और आ म्र भ ट को सुनाई। उन्होंने वैसा ही नियम ग्रहण करके जीर्णोद्धारका कार्य आरंभ किया। दो वर्षमें श्री श त्रुं ज य का वह प्रासाद बन कर तैयार हुआ और उसकी खबर देनेके लिये आये हुए मनुष्यके वधाई देने बाद ही दूसरा मनुष्य आया जिसने कहा कि ' प्रासाद तो फट गया है! ' तपे हुए सीसेके जैसी उसकी वाणीको कानोंमें सुन कर श्री कु मा र पा ल भूपालसे आज्ञा ले कर मंत्री स्वयं वहां जानेको उद्यत हुआ। श्रीकरणकी जो अपनी मुद्रा (मंत्रीके पदकी मुहर) थी वह म हं क प र्दी को समर्पित की और स्वयं ४ सहस्र घोड़े ले कर श त्रुं ज य की उपत्यकामें पहुँचा। वहाँ अपने नामसे बा ह ड पु र नामका नया नगर बसाया। शिल्पियोंने प्रासादके फट जानेका कारण बताते हुए कहा कि सभ्रम प्रासादमें पवन घुस कर निकलता नहीं, इस लिये मन्दिर फट जाता है; और जो प्रासाद भ्रमहीन बनाया जाय तो बनाने वाला निर्वंश हो जाता है [ऐसा शास्त्रका विधान है]। मंत्रीने यह सुन कर ऐसा विचार किया कि निर्वंश होना अच्छा है। इससे धर्म कार्य ही हमारा वंश होगा और पूर्व कालमें जीर्णोद्धार कराने वाले भ र त आदिकी पंक्तिमें हमारा भी नाम उल्लिखित होगा। इस प्रकार अपनी दीर्घदर्शिनी बुद्धिसे सोच कर उस मंत्रीने भ्रम और दीवालके बीचमें पत्थर भरवा दिये और प्रासादको निर्भ्रम बनवाया। तीन वर्षमें प्रासाद पूरा हुआ। उसके कलश दण्ड आदिकी प्रतिष्ठाके समय प त्त न के संघको निमंत्रित किया और महामहोत्सवके साथ सं० १२११ में मंत्रीने ध्वजारोपण कराया। पाषाणमय बिंब (मूर्ति) का परिकर म म्मा णी की खानमेंके किमती पत्थरका बनवा कर स्थापित किया। श्री बा ह ड पु र में राजाके पिताके नामसे श्री त्रि भु व न पा ल वि हा र बनवा कर उसमें पार्श्वनाथकी स्थापना कराई। तीर्थपूजाके लिये नगरके चारों ओर २४ बागीचे बनवाये, नगरका पक्का कोट बनवाया और देवके पूजारियोंके ग्रास और वास आदिकी व्यवस्था कर, वह सब कार्य पूरा किया। इस तीर्थोद्धारके व्ययमें [यह बात प्रसिद्ध है कि]—

१९१. जिसके, मंदिर बनानेमें १ करोड़ ६० लाख व्यय हुआ है, विद्वान् लोग उस श्री वा ग्भ ट दे व की [पूरी] वर्णना कैसे करें!

इस प्रकार शत्रुञ्जयके उद्धारका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मंत्री आम्रभटका शकुनिका विहारका उद्धार करवाना।

१४६) इसके बाद, समस्त विश्वके एक अद्वितीय ऐसे सुभट आम्रभट ने पिताके कल्याणार्थ भृगुपुर (भरूच) में शकुनिका विहार प्रासादके उद्धारका कार्य प्रारंभ किया। उसके लिये गहरी नींव खोदते समय, नर्मदा नदी के निकट होनेके कारण अकस्मात् वह नींव धंस पड़ी और काम करने वाले मजदूर उसमें दब गये। उसने यह देख, कृपा-परवश हो कर, अपनी अत्यन्त निन्दा करते हुए, उसीमें अपने आपको भी गिरा दिया। इस अनुपम साहसके प्रभावसे वह विघ्न शान्त हो गया (सब लोक बच गये)। इसके बाद, शिलान्यासपूर्वक सारा प्रासाद तीन वर्षमें पूरा हुआ। कलश-दण्डकी प्रतिष्ठाका अवसर आने पर समस्त नगरोंके संघोंको निमंत्रण दे कर बुलाया गया और उन सबको यथोचित वस्त्र और आभरण आदि दे कर सत्कृत किया गया और फिर सबको यथास्थान वापस पहुँचाया गया। लग्न समयके निकट आने पर भट्टारक श्री हेमचंद्र सूरि के नेतृत्वमें राजाके साथ अणहिलपुर के संघको निमंत्रित कर उसे अतुलित वात्सल्यादि तथा भूषण आदि दानों द्वारा सन्तुष्ट करके, ध्वजाधिरोपणके लिये घरसे चला। इस समय अपने सारे घरको मानों याचक-जनोंसे लुटवा दिया। श्री सुव्रतदेवके प्रासादमें महाध्वजके साथ ध्वजारोपण करके, अत्यधिक हर्षके कारण, वह अनालस्य भावसे नाच करता रहा। अन्तमें राजाकी अभ्यर्थना पर, उसने आरती उतारी। अपना घोड़ा द्वारपालको दान कर दिया। राजाने स्वयं उसको तिलक किया। बहत्तर सामन्त चामर और पुष्प वर्षा आदिसे उत्साह बढ़ा रहे थे। उस समय आये हुए बंदीको अपना कंकण दे दिया। अन्तमें राजाने हाथ पकड़ कर जबर्दस्ती उसे बैठाया और आरती और मंगल प्रदीप उतरवाये। श्री सुव्रतदेवके तथा गुरुके चरणमें प्रणाम करके, बन्धुओंको वन्दना आदि करके, राजासे शीघ्र आरती उतरवानेका कारण पूछा। राजाने कहा – 'कि जैसे जुआडि अत्यधिक द्यूत-रसके आवेशमें अपने सिरको भी दाँव पर रख देता है, वैसे ही तुम भी इसके बाद कहीं अर्थियोंके माँगनेसे त्यागके आवेशमें आ कर अपना सिर भी उन्हें न दे डालो'। राजाके इस प्रकार कह चुकने पर, उसके लोकोत्तर चरित्रसे हत-हृदय हो कर श्री हेमाचार्य ने भी, जिन्होंने जन्मकालसे ही किसी मनुष्यकी स्तुति नहीं की थी, कहा –

> १९२. उस कृतयुगसे [हमें] क्या [मतलब] है जिसमें तुम नहीं थे। और जिसमें तुम [विद्यमान] हो वह कलि कैसा। और यदि कलिहीमें तुमारा जन्म होता है तो वह कलि ही सदा रहो – कृतसे क्या मतलब है।

इस प्रकार आम्रभटकी अनुमोदना करके दोनों क्षमापति, जैसे आये थे वैसे ही वापस गये।

*

आम्रभटका शाकिनीग्रस्त होना।

१४७) इसके बाद, जब हेमचंद्र अपने स्थान पर पहुँचे तो उन्हें यह विज्ञप्ति मिली कि आकस्मिक रीतिसे देवी (शाकिनी) के दोषसे ग्रस्त हो कर आम्रभटकी अन्तिम दशा उपस्थित हो गई है और आपको शीघ्र बुलाया गया है। उन्होंने तत्काल ही समझ लिया कि 'वह महात्मा जब प्रासादके शिखर पर नृत्य कर रहा था उसी समय मिथ्यादृष्टि देवियोंका कुछ दोष उसे हुआ है।' यह सोच कर, सायंकाल ही को तपोधन यशश्चन्द्र को साथ ले, आकाशगामिनी शक्तिसे उड़ कर निमेषमात्रमें, भृगुपुरकी प्रान्तभूमिको अलंकृत किया और सैन्धवा देवी का अनुनय करनेके लिये कायोत्सर्ग किया। उस देवीने जीभ निकाल कर उनका अपमान किया। तब उखलमें शालि-चावल डाल कर यशश्चन्द्र गणिने मूशलसे प्रहार करना शुरू किया। पहली बारके प्रहारमें प्रासाद काँपने लगा, दूसरी बार प्रहार देनेपर वह देवी ही अपने स्थानसे उखड़ कर – 'इस वज्र-

पाणिके वज्रप्रहारसे बचाओ–बचाओ ' कहती हुई प्रभुके चरणों पर आ कर गिर गई। इस तरह अपनी अनिन्द्य विद्याके बल पर उस दोषके मूलभूत मिथ्यादृष्टिवाले व्यन्तरों,(भूत पिशाचों) का निग्रह करके श्री सुव्रतदेवके प्रासादमें आये। वहाँ पर–

१९३. संसाररूप समुद्रके लिये सेतु, कल्याण-पथकी यात्राके लिये दीप-शिखा, विश्वके आधारके लिये आलंबन यष्टि, परमतके व्यामोहके लिये केतुका उदय, अथवा हमारे मनरूपी हाथियोंके बन्धनके लिये दृढ आलान रूप लीलाको धारण करने वाले ऐसे श्री सुव्रतस्वामीके चरणोंकी नख-रश्मियाँ [सबकी] रक्षा करें।

इस प्रकारकी स्तुतियोंसे श्री मुनिसुव्रतकी उपासना करके, श्री आम्रभटको उल्लाघ स्नानसे सुस्थ करके, जैसे गये थे वैसे ही [अपने स्थान पर] लौट आये। श्री उदयन चैत्य शकुनिका विहारके घटी गृहमें राजाने कौङ्कण नृपति के [छीने हुए] तीन कलश तीन जगह स्थापित किये।

इस प्रकार यह राज-पितामह श्री आम्रभटका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका विद्याध्ययन करना।

१४८) इसके बाद, एक दूसरी बार, कपर्दी मंत्री का अनुमत कोई विद्वान्, राजा कुमारपाल के भोजन कर लेनेके बाद कामन्दकीय नीतिशास्त्र के इस श्लोकको पढ़ रहा था–

१९४. राजा मेघकी नाईं समस्त भूत-मात्रका आधार है। मेघके विकल होने पर भी जीवन धारण किया जा सकता है पर राजाके विकल होने पर नहीं।

तब, इस वाक्यको सुन कर राजाने कहा कि–' अहो राजाको मेघकी **' ऊपम्या ! '** इस पर सभी सामाजिक लोक राजाका न्युंछन करने लगे। पर उस समय कपर्दी मंत्रीने अपना सिर नीचा कर लिया। यह देख कर राजाने एकान्तमें उससे [कारण] पूछा। उसने कहा – ' महाराजने जो **' ऊपम्या '** शब्दका उच्चारण किया वह सब व्याकरणोंकी दृष्टिसे अपशब्द (अशुद्ध) है; और इस पर भी इन खुशामती अनुवर्तियोंने न्युंछन किया। उनके ऐसा करने पर मेरा तो दोनों प्रकार सिर नीचा करना ही समुचित है। शत्रु राजाओंमें इस प्रकारकी अपकीर्ति फैलती है कि ' अराजक जगत्का होना अच्छा है किन्तु मूर्ख राजाका होना अच्छा नहीं। ' जिस अर्थमें आपने यह शब्द कहा है उस अर्थमें उपमान, उपमेय, औपम्य, उपमा इत्यादि शब्द कहे जाते हैं। उसकी इस बातको [आदरके साथ] हृदयमें ग्रहण करके, अनन्तर, ५० वर्षकी उम्रमें, उस राजाने शब्द व्युत्पत्तिका ज्ञान करनेके लिये किसी उपाध्यायके निकट मात्रिका-पाठसे आरंभ कर (अ आ से लेकर) शास्त्र पढ़ना आरंभ किया और एक वर्षके भीतर [व्याकरणकी] तीनों वृत्ति और तीनों काव्य पढ़ डाले। और फिर पण्डितोंसे 'विचार-चतुर्मुख' यह बिरुद प्राप्त किया।

इस प्रकार विचारचतुर्मुख कुमारपालके अध्ययनका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

बनारसके विश्वेश्वर कविका पत्तनमें आना।

१४९) किसी अवसर पर, विश्वेश्वर नामक कवि वाराणसीसे पत्तनमें आ कर प्रभु श्री हेमसूरिकी सभामें पहुँचा। वहाँ कुमारपाल राजाको विद्यमान देख कर उसने–

१९५. कंबल और दंड वाला यह हेम तुम्हारी रक्षा करें।

इस प्रकार कह कर वह ठहर गया। राजाने उसे क्रोधकी दृष्टिसे देखा। तब फिर–

जो षड्दर्शन रूप पशुओंको जैन-गोचर (चरागाह) में चरा रहे हैं।

यह उत्तरार्द्ध पढ़ा जिसे सुन कर सारी सभा प्रसन्न हुई। फिर कविने रामचन्द्रादि [कवियों] को समस्यायें पूर्ण करनेको दीं। 'व्यापिद्धा नयने०' इस चरणवाली एक समस्याकी पूर्ति महामात्य कपर्दीने इस प्रकार की

१९६. 'इसकी ये सरल (बड़ी बड़ी) आँखें दोनों हथेलियोंसे ढाकी नहीं जा सकतीं, और अपने मुखरूपी चन्द्रमाकी चांदनीके प्रकाशसे यह सब कहीं दिखाई दिया करती है – इस लिये आँख मिचौनीके खेलमें अपनी चारों ओर रही हुई सखियोंके बीचमें बैठी हुई वह बाला [खेलनेसे] रोक दी गई है और इस लिये वह अपने मुख और आँखोंको रो रही है।'

[इस समस्यापूर्तिकी प्रतिभासे प्रसन्न हो कर] उस कविने पचास हजारकी कीमतका अपने गलेका हार निकाल कर कपर्दीके कण्ठमें यह कहते हुए डाल दिया कि 'यह तो श्रीभारतीका पद (स्थान) है।' उसकी सहृदयतासे चमत्कृत हो कर राजा उसे अपने पास रखने लगा, तो वह यह कह कर, राजा द्वारा सत्कृत हो कर, यथास्थान चला गया कि–

१९७. कर्णकी कथा तो अब शेष मात्र रह गई है। काशी नगरी मनुष्योंकी कमीके कारण क्षीणप्राय हो गई है। पूर्व (या उत्तर) दिशामें हम्मीर (म्लेच्छ) के घोडे सहर्ष हिनहिना रहे हैं। इससे यह मेरा हृदय तो अब, सरस्वतीके आलिंगनमें प्रवृत्त क्षारसमुद्रके साथ स्नेहवाले प्रभासक्षेत्रके लिये उत्कण्ठित हो रहा है।

*

हेमचन्द्रसूरिका समस्या पूरण करना।

१५०) किसी समय कुमारविहार देवमन्दिरमें राजा द्वारा आमंत्रित हो कर प्रभु श्री हेमचंद्र, कपर्दी मंत्री द्वारा हाथका सहारा पा कर, जब सोपान पर चढ़ रहे थे [वहां पर नृत्योद्यत] नर्तकीके कञ्चुककी कसनीको तनती हुई देख कर कपर्दीने यह कहा–

१९८. हे सखि तेरा यह कञ्चुक सौभाग्यशाली है इस लिये इसका यह तनना युक्त ही है।

यह कह कर उसे जब आगे बोलनेमें विलंब करते देखा तो प्रभुने उत्तरार्ध इस प्रकार कह दिया–

जिसके गुणका ग्रहण पीठपीछे तरुणीजन करता है।

*

आचार्य और मंत्रीके बीचमें 'हरडइ'का वाग्विलास।

१५१) एक बार, सवेरे कपर्दी मंत्रीने श्री सूरिको प्रणाम करनेके बाद [उसके हाथमें कोई चीज देख कर] उन्होंने पूछा–'यह क्या चीज है?' उसने प्राकृत (देशी) भाषामें कहा–'हरडइ'–अर्थात् 'हर्रे'। प्रभुने कहा–'क्या अब भी?'। तब वह अपनी अनाहत प्रतिभा (प्रखर बुद्धि) के कारण उनके वचनच्छल (व्यंग्य) को समझ कर बोला–'अब तो नहीं'। क्यों कि अन्तिम होने पर भी वह आदिम हो गया और एक मात्रा अधिक भी हो गया। हर्षाश्रु पूर्ण आँखोंसे प्रभुने रामचंद्र आदिके सामने उसकी चतुराईकी प्रशंसा की। उन्होंने (रामचन्द्रादिने) तत्त्व न समझ कर पूछा कि 'बात क्या है?' प्रभुने कहा कि 'हरडइ' इसमें शब्दच्छलसे यह अर्थ व्यक्त करके निकाला गया कि 'ह रडइ' अर्थात् हकार रोता (गुजराती रडता)

है। हमने इस पर कहा कि 'क्या अब भी?' यह कहते ही शब्दतत्त्वको जानने वाले इसने कहा कि 'अब तो नहीं।' क्यों कि पहले मातृका-शास्त्र (वर्णमाला) में हकार सबके अंतमें पढ़ा जाता था, अतएव वह रडता=रोता था; किन्तु अब तो मेरे नाम (हेमचंद्र) में वह पहले आ गया है और एक मात्रा अधिक भी हो गया है।

इस प्रकार यह हरडइ प्रबंध समाप्त हुआ।

*

उर्वशी शब्दकी व्युत्पत्ति।

१५२) एक बार, किसी पंडितने पूछा कि 'उर्वशी' शब्दका शकार तालव्य है या दन्त्य। इस पर प्रभु (हेमचंद्र) कुछ सोच कर कहने जा रहे थे कि कपर्दीने पत्र पर यह लिख कर उनके अंकमें फेंक दिया कि '**उरौ शेते उर्वशी**' अर्थात् जो उरुमें शयन करे वह उर्वशी। इसीको प्रामाण्य समझ कर प्रभुने उस पंडितके आगे तालव्य शकार होनेका निर्णय कह सुनाया।

इस प्रकार यह उर्वशी-शब्द-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सपादलक्षके राजाके नामका अर्थखण्डन।

१५३) अन्य किसी समय, सपादलक्षके राजाका कोई सान्धिविग्रहिक कुमारपाल राजाकी सभामें आया। राजाने पूछा कि 'आपके स्वामी कुशल तो हैं?' अपनेको महापंडित समझने वाला वह मिथ्याभिमानी बोला—'विश्वको जो ले ले वह 'विश्वल' कहलाता है (—यह सपादलक्षके राजाका नाम था) इस लिए उसकी विजयमें क्या सन्देह है?' राजाका इशारा पा कर श्रीमान् कपर्दीमंत्रीने कहा कि—'श्वल-श्वल्ल धातु तो शीघ्र गत्यर्थक है। इसी श्वल धातुसे यह शब्द बना है, अतः इसका अर्थ तो यह हुआ कि—वि अर्थात् पक्षीकी भाँति जो श्वलन करता है—भाग जाता है वह 'विश्वल' है।' इसके बाद, उस प्रधानके द्वारा इस नाममें दोष समझ कर उस राजाने पंडितोंके पास निर्णय कराके 'विग्रहराज' ऐसा दूसरा नाम धारण किया। दूसरे वर्ष उसी प्रधानने कुमारपाल नृपतिके सामने 'विग्रहराज' यह नाम बताया। मंत्री कपर्दीने [यह अर्थ किया]—विग्र=विगतनासिक—नासिकाहीन; ह-राज अर्थात् रुद्र और नारायण। रुद्र और नारायणको जिसने नासिका हीन किया है यह इस 'विग्रहराज' का अर्थ है। तदनन्तर कपर्दी के नामखण्डनके भयसे उस राजाने 'कवि-बान्धव' ऐसा नाम धारण किया।

*

१५४) एक दूसरी बार, कुमारपाल राजाके आगे योगशास्त्रका व्याख्यान हो रहा था उसमें जब पञ्चदश कर्मादानका पाठ पढा जाने लगा तब "**दन्तकेशनखास्थित्वग्रोम्णां ग्रहणमाकरे**" प्रभुके रचे हुए इस मूल पाठमें पंडित उदयचन्द्र बार बार 'रोम्णां ग्रहणम् रोम्णा ग्रहणम्' यह पाठ बोलने लगा। तो प्रभुने पूछा कि—'क्या लिपि-भेद (अशुद्ध पाठ) हो गया है?'। उसने कहा—'**प्राणितुर्याङ्गाणाम्** 'इस व्याकरण सूत्रसे तो एकत्व सिद्ध होता है, [सो यहाँ पर वैसा होना चाहिए]' ऐसे लक्षणविशेषको बता कर, प्रभु द्वारा प्रशंसित हुआ और राजाने न्युंछन करके उसकी संभवाना की।

इस प्रकार पं० उदयचंद्रका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका अभक्ष्यभक्षणके निमित्त प्रायश्चित्त करना।

१५५) इसके बाद, वह राजर्षि एक समय घेवरका भक्षण कर रहा था। उस समय कुछ विचार मनमें आ गया जिससे उसने वह सारा आहार छोड़-छाड़ कर, पवित्र हो कर, प्रभुसे जा कर पूछा कि—'हमें घेवरका भक्षण करना चाहिये या नहीं?' इस पर प्रभुने कहा—'वणिक् और ब्राह्मणको तो इसका भक्षण उचित है किन्तु जिस क्षत्रियने अभक्ष्यभक्षणका नियम किया है उसे नहीं करना चाहिए; क्यों कि उससे मांसाहारका स्मरण हो आता है।' राजाने कहा 'यह बिल्कुल ठीक है' और फिर पूर्व भक्षित अभक्ष्यका प्रायश्चित्त पूछा। [आचार्यने कहा—] ३२ दाँतोंके निमित्त ३२ जैन मंदिर एक पीठस्थान पर बनवा देने चाहिए। राजाने वैसा ही किया।

प्रभुके दिये हुए प्रतिष्ठालग्नमें प्रासादके मूल नायककी प्रतिष्ठा करानेके लिये, वटपद्रकसे कान्हू नामक व्यवहारी पत्तनमें आया। उसने उस नगरके मुख्य प्रासादमें अपने बिंबको रख दिया और उपहारादि ले कर बाहरसे जब वापस आया तो राजाके अंगरक्षकोंने द्वार पर उसे रोक दिया। कुछ समय बाद जब द्वारपाल उठ गये और प्रतिष्ठोत्सव भी समाप्त हो गया, तो वह भीतर प्रवेश करके प्रभु (हेमचन्द्र) के चरण-मूलमें लग कर, उपालंभ पूर्वक, खूब रोने लगा। और किसी तरह उसके दुःखका दूर होना न जान कर वे रंगमंडपसे बाहर आये और नक्षत्र-चार देखने लगे, तो देखा कि उनका दिया हुआ लग्न तो आकाशमें अब उदित हुआ है। खोटी घडीके हिसाबसे ज्योतिषीने जो पहले लग्नमुहूर्त दिया है [वह अशुद्ध है] और उस लग्नमें प्रतिष्ठित मूर्तियोंकी आयु तीन ही वर्षकी है। अब जो इस समय लग्न वर्तमान है उसमें बिंबकी प्रतिष्ठा होगी वह चिरायु होगा। उसने उसी समय अपने बिंबकी प्रतिष्ठा कराई। प्रभुने जैसा कहा था वैसा ही बादमें हुआ।

इस प्रकार अभक्ष्य-भक्षणके प्रायश्चित्तका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका अन्यान्य विहारोंका बनवाना।

१५६) [राजाने यह स्मरण करके कि] मेरे अपहृत धनसे एक चूहा [उस समय] मर गया था। इस लिये उसका प्रायश्चित्त पूछा तो प्रभुने उसके कल्याणार्थ उसीके नामका एक विहार बनवानेको कहा सो उसने वह [मूषकविहार] बनवाया।

१५७) इसी प्रकार, किसी व्यवहारीकी उस वधूने, जिसके जाति, नाम, ग्राम, संबंध कुछ भी उसे नहीं मालूम हुए, रास्तेमें तीन दिन तक बुभुक्षित नृपतिको चावलके करंबेसे सन्तुष्ट कर रक्षा की थी, उसकी कृतज्ञताके निमित्त, उसके पुण्यकी अभिवृद्धिके लिये पत्तनमें राजाने 'करम्बकविहार' बनवाया।

१५८) इसी तरह, यूकाविहार भी इस प्रकार [बना]—सपादलक्ष देशमें कोई अविवेकी धनी था। उसकी प्रियाने केश-संमार्जनके अवसर पर उसकी हथेली पर एक यूका (जूं) पकड कर रखी। उसने उस पीडाकारिणीको तर्जन करके, मसल कर मार डाला। निकटवर्ती अमारिकारी पंचकुल (जीवहिंसा प्रतिबन्धकी देखभाल करनेवाले अधिकारी) ने उसे पकड कर अणहिलपुरमें राजाके सामने ले आ कर निवेदित किया। इसके बाद प्रभुके आदेशसे उसके दण्डस्वरूप उसका सर्वस्व ले कर वहीं पर (उसी गावमें?) यूकाविहार बनवाया।

इस प्रकार यूका विहारका प्रबंध समाप्त हुआ।

■

१५९) इसके बाद, स्तंभतीर्थके सामान्य सालिगवसहिका नामक प्रासादका, जिसमें प्रभुकी दीक्षा हुई थी, रत्नमय बिंबसे अलंकृत कर, अनुपम जीर्णोद्धार कराया।

इस प्रकार सालिगवसहिकाके उद्धारका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मठपति बृहस्पतिका अविनय।

१६०) बादमें, सोमेश्वर पत्तनके कुमार-विहार-प्रासादमें बृहस्पति नामक गण्ड (मठाधिपति), कोई अप्रिय कार्य करनेके कारण, प्रभु (हेमसूरि) की अप्रसन्नताका पात्र हुआ और वह पदभ्रष्ट किया गया। बादमें, अणहिलपुरमें आ कर, षड्विध आवश्यक क्रिया करता हुआ सन्मानका पात्र हो कर प्रभुकी सेवा करने लगा। एक बार चातुर्मासिक पारणके समय प्रभुके चरणोंमें द्वादशावर्त वंदना करके बोला—

१९९. हे नाथ, चार मास तक आपके इस चरणयुगके पास बैठ कर कषाय (राग द्वेष रूप क्लेश) का नाश करनेके लिए विकृतिपरिहार (रसवाले अन्नका त्याग) रूप व्रत मैंने किया है। अब, हे मुनितिलक! आपके चरण कमलने निर्लोठित कर दिया है उद्रेदक कलि जिसका, ऐसे मुझको, पानीसे भीगे हुए अन्न ही की वृत्ति मिला करे।

वह ऐसी विज्ञप्ति कर रहा था कि उसी समय राजा वहाँ आ गया और उसने प्रभुको प्रसन्न देख कर, उसे पुनः अपने पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

इस प्रकार यह बृहस्पति-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मंत्री आलिगकी स्पष्टवादिता।

१६१) एक बार, सर्वावसर (राजसभा) में बैठे हुए राजाने आलिग नामक [वृद्ध] प्रधान पुरुषसे पूछा कि—'मैं [गुणादिमें] सिद्धराजसे हीन हूँ, अधिक हूँ या समान हूँ।' उसने, किसी प्रकारके छल भावका विचार न करनेकी प्रार्थना करके कहा कि—'श्री सिद्धराजमें ९८ तो गुण थे और दो दोष थे; और महाराजमें दो गुण हैं और ९८ दोष हैं।' उसके ऐसा निवेदन करने पर राजा अपने आपको दोषपूर्ण जान कर, अपने जीवन पर विरक्त हो उठा और आँखोंमें छुरी भोंकना (जीवनका अन्त कर देना) चाहा तो उसके आशयको समझ कर उस वृद्धने कहा कि—'श्री सिद्धराजके जो ९८ गुण थे, वे संग्राममें कायरता और स्त्रीलम्पटताके इन दो दोषोंमें छिप जाते थे। आपके जो कृपणता आदि दोष हैं, वे युद्धमें दिखाई देनेवाली शूरता और परस्त्रीके विषयमें रही हुई सहोदरताके इन दो [महान्] गुणोंमें ढंक जाते हैं'—उसके इस वचनसे राजा फिर स्वस्थ हुआ।

इस प्रकार यह आलिगप्रबंध समाप्त हुआ।

*

पं० वामराशिको क्षमा प्रदान करना।

१६२) पहले, सिद्धराजके राज्य समयमें, पांडित्यकी स्पर्द्धामें सामना करने वाला वामराशि नामक ब्राह्मण, प्रभु (हेमचंद) की इस विशिष्ट प्रतिष्ठाको सहन न कर [निंदा करते हुए] बोला कि—

२००. जिसके (शरीर पर) लटकते हुए कम्बलमें करोड़ों यूकाओंकी पंक्ति किलबिला रही है, दाँतोंकी मलमंडलीकी दुर्गंधसे जिसका मुँह भरा हुआ है, जिसके नासा-वंशके निरोधसे पाठकी प्रतिष्ठा गिनगिनाट कर रही है और जिसके सिरकी टाल पिलपिला रही है वह 'हेमड' नामक

सेवड (श्वेताम्बर साधु) आ रहा है।

इस प्रकारका अत्यधिक निंदास्पद कथन सुन कर, अन्तःकुटिल पर बाहरसे सरल दिखाई देनेवाले तिरस्कार पूर्ण वचनसे प्रभुने कहा कि –'अरे पंडित ! तुमने क्या यह भी नहीं पढा कि विशेषणका प्रयोग पहले किया जाना चाहिए। अब से 'सेवड-हेमड' ऐसा कहना (हेमड-सेवड) नहीं। सेवकोंने [यह सुन कर] उसे भालेकी नोंकसे घोडा कर छोड़ दिया। राजा कुमारपालके राज्यमें शस्त्रवध नहीं किया जाता था, इस लिये उसकी वृत्तिका छेद कर दिया गया। इसके बाद, कण-कणकी भीख माँग कर अपना प्राण धारण करता हुआ वह प्रभुकी पोषधशालाके सामने आ कर बैठा। उस समय वहाँ पर अनादि भूपति नामक मठके तपस्वियों द्वारा अधीयमान योगशास्त्रका श्रवण करके, उसने फिर सच्चे हृदयसे यह काव्य कहा कि–

२०१. जिन अकारण दारुण मनुष्योंके मुँहसे आतंकका कारण ऐसा गाली-रूपी गरल (विष) निकला है उन जटा धारण करने वाले फटाधरों (सर्पों) के मंडलका, यह योगशास्त्रका वचनामृत अब उद्धार कर रहा है।

ऐसे अमृतके समान मीठे उसके वचनसे, प्रभुका वह उपताप शान्त हुआ और उसकी वृत्ति फिर दुगुनी कर उसे प्रसादित किया।

इस प्रकार यह वामराशि-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सोरठके दो चारणोंकी कविताविषयक स्पर्द्धा।

१६३) फिर कभी, एक बार, सुराष्ट्र मंडलके रहने वाले दो चारण, परस्पर दूहा-विद्यामें (दोहा छन्दकी रचना करनेमें) स्पर्द्धा करते हुए यह प्रतिज्ञा करके अणहिलपुरमें पहुँचे कि–'हेमचंद्राचार्य जिसके दोहाकी सराहना करेंगे, उसे दूसरा हर्जाना देगा।' फिर उनमेंसे एकने, प्रभुकी सभामें आ कर यह दोहा कहा–

२०२. हे हेमसूरि! मैं तुम्हारे मुँह पर वारी जाऊं। लक्ष्मी और वाणी (सरस्वती) का जो सापत्न्य (वैर) भाव था वह, इसने नष्ट कर दिया। क्यों कि हेमचंद्रसूरिकी सभामें तो जो पण्डित हैं वे ही लक्ष्मीवान् हैं।

ऐसा कह कर, उसके चुप हो जाने पर, फिर श्रीकुमारविहारमें आरतीके अवसर पर राजा जब प्रणाम कर रहा था और प्रभुने उसकी पीठ पर हाथ रखा हुआ था, उसी समय वहाँ प्रवेश करके दूसरे चारणने यह कहा–

२०३. हे हेमसूरि! मैं तुम्हारे इस हाथ पर वारी जाऊं–जिसमें अद्भुत ऋद्धि रही हुई है। नीचे नमे हुए जिस मुख ऊपर यह पडता है उसके ऊपर सिद्धि आ बैठती है।

इस प्रकारके अनुच्छिष्ट (मौलिक) भाववाले उसके वचनसे मनमें चमत्कृत हो कर राजा इसी दोहेको बार बार बुलाने लगा। तीन बार बोलने बाद उसने कहा कि–क्या एक एक बार बोलने पर एक एक लाख दोगे!'–इस पर राजाने उसे ३ लाख दिलाया।

इस प्रकार यह दो चारणोंका प्रबंध समाप्त हुआ।

■

कुमारपालका तीर्थयात्रा करना।

१६४) एक वार, राजा श्री कुमारपालने संघाधिपति हो कर तीर्थयात्राके लिये महोत्सवपूर्वक संघ निकालना निश्चित किया और उसके देवालयका प्रस्थान-मुहूर्त साधित किया। इतनेमें देशान्तरसे आये हुए चर युगलने कहा कि–'डाहल देशका राजा कर्ण आप पर चढ़ाई करके आ रहा है।' [इसको सुन कर] राजाके ललाट देश पर [पसीनेके] स्वेद बिंदु झलकने लगे। संघाधिपत्यके पदको प्राप्तिका मनोरथ नष्ट हो जानेके भयसे वाग्भट मंत्रीके साथ आ कर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा और अपनी निंदा करने लगा। राजाके आगे इस प्रकार महाभयका उपस्थित होना जान कर, प्रभुने कुछ सोच कर कहा कि–'बारह पहरमें ही इस भयकी निवृत्ति हो जायगी [इस लिये कुछ चिन्ता न करो]। राजा विदा हो कर, किं-कर्तव्यविमूढसा बना हुआ ज्यों ही बैठा था त्यों ही निर्णीत समय पर आये हुए दूसरे चरयुगलने समाचार दिया कि–'श्री कर्ण राजका [अकस्मात्] स्वर्गवास हो गया।' राजाने मुँहसे पानका त्याग करते हुए पूछा–'सो कैसे?' उन्होंने कहा–'हाथीके होदे पर बैठ कर राजा कर्ण रातको प्रवास कर रहा था तब उसकी नींदसे आँखें बन्द हो गईं। गलेमें लटकता हुआ सोनेका हार एक बरगदके दरख्तकी डालीमें उलझ गया और उससे खींचा जा कर राजा मर गया। हम दोनों उसके अग्निसंस्कारके अनन्तर वहाँसे चले हैं। उनके ऐसा कहने पर, राजा तत्काल पौषधशालामें आया और सूरिकी अत्यन्त ही प्रशंसा करने लगा जिसको किसी तरह उन्होंने रोका। फिर, ७२ सामंत और संपूर्ण संघके साथ, प्रभुके बताये हुए [धर्म और प्रवासके] दोनों प्रकारके मार्गसे धुन्धुक नगरमें आया। वहाँ पर प्रभुके जन्मस्थानमें स्वयं बनाये हुए १७ हाथ ऊँचे झोलिका विहारमें उत्सवादिका विधान करने पर जातिपिशुन ब्राह्मणोंने विघ्न किया तो, उन्हें देश निकाला दिया गया और फिर शत्रुंजयकी उपासना की। वहाँ 'दुक्खखओ कम्मक्खओ' (दुःखक्षयः, कर्मक्षयः) इस प्रकारके प्रणिधान दण्डक (सूत्रपाठ) का उच्चारण करता हुआ देवके पास विविध प्रार्थना करनेके अवसर पर किसी चारणके मुँहसे यह कथन सुना–

> २०४. अहो यह जिनदेवका कितना भोलापन है! जो एक फूलके बदलेमें मुक्तिका सुख दे देता है।
> इसके साथ किस बातका सोदा किया जाय।

उसके नौ बार इस दोहेके पढ़ने पर, राजाने उसे नौ हजारका दान किया। इसके बाद जब वह उज्जयन्त (गिरनार) के पास आया तो अकस्मात् पर्वतमें कंप हुआ देखा। तब श्री हेमाचार्यने राजासे कहा–'वृद्धोंकी यह परंपरागत बात है कि, एक ही साथ दो पुण्यवन्त पुरुष इस पर चढ़ते हैं तो यह छत्रशिला गिर पड़ती है। यदि यह बात कहीं सत्य हो तो लोकापवाद होगा, क्यों कि हम दोनों ही [एकसे] पुण्यवान् हैं। इस लिये आप ही [पर्वत पर] नमस्कार करने जाँय, हम नहीं।' पर राजाने आग्रह करके प्रभुको ही संघके सहित ऊपर भेजा। स्वयं नहीं गया। श्री वाग्भटदेवको छत्रशिलाके उस रास्तेको छोड़ कर जीर्णप्राकार (जूनागढ)के रास्तेसे नई पद्या (पत्थरकी सीढी) बनवानेके लिये आदेश दिया। पद्याके बनानेमें ६३ लाख दाम लगे।

इस प्रकार तीर्थयात्राप्रबंध समाप्त हुआ।

*

कुमारपालका स्वर्णसिद्धिकी प्राप्तिकी इच्छा करना।

१६५) एक वार, पृथ्वीको अनृण करनेकी इच्छासे, राजाने स्वर्णसिद्धिकी प्राप्तिके लिये श्री हेमचंद्राचार्यके उपदेशसे उनके गुरु श्री देवचन्द्राचार्यको, श्री संघ और राजाकी विज्ञप्ति भिजवा कर वहां बुलवाये। वे

उस समय तीव्र व्रतमें लगे हुए थे तो भी यह समझ कर कि संघका कोई बड़ा कार्य होगा, विधिपूर्वक विहार करते हुए और रास्तेमें किसीसे ज्ञात न हो कर अपनी ही [पुरानी] पौषधशालामें आ कर ठहर गये। राजा तो उनकी अगवानी करनेके लिये सजावट करा रहा था इतनेमें सूरिने उसे सूचित किया तो वह वहाँ पर आया। तब राजा प्रभृति समस्त श्रावकोंके साथ प्रभुने द्वादशावर्त पूर्वक उन गुरुको प्रणाम किया। उन्होंने जो उपदेश-वचन कहे वे उन दोनोंने (राजा और सूरिने) सुने। फिर गुरुने संघका कार्य पूछा। इस पर सभा विसर्जन करके पर्देकी ओटमें श्री हे मा चा र्य और राजाने उनके चरणों पर गिर कर सुवर्ण-सिद्धिके बतानेकी याचना की। श्री हे मा चा र्य ने कहा कि—जब मैं बालक था तब आपने किसी काठ ढोने वालेके पाससे एक वल्ली (लता) ली थी और आपके आदेशसे, अग्निमें जलाए हुए तांबेके टुकड़ेको उसके रसमें भिगोने पर, वह सोना हो गया था। उस लताका नाम और संकेत आदि बतानेकी कृपा कीजिये।' उनके ऐसा कहने पर गुरुने श्री हे म चं द्र को क्रोधसे दूर ठेल दिया और बोले कि 'तू इस योग्य नहीं। पहले मूँगके जूस (मूंगकी दालके पानीके) समान जो [हलकी] विद्या तुझे दी थी उसीसे तुझे [इतना] अजीर्ण हो गया है, तो फिर तुझसे मंदाग्नि रोगीको यह मोदक जैसी [भारी] विद्या कैसे दूं!' इस प्रकार उन्हें निषेध करके, राजासे कहा—'तुम्हारा ऐसा भाग्य नहीं है कि संसारको अनृण करने वाली विद्या सिद्ध हो जाय। और फिर, जीव-हिंसाका निवारना और पृथ्वीको जिनमन्दिरोंसे मंडित करना आदि पुण्यकार्योंसे तुम्हारे दोनों लोक सफल बन गये हैं, अब इससे अधिक और क्या चाहते हो?' यह कह करके, उसी समय वे वहाँसे विहार कर गये।

इस प्रकार सुवर्णसिद्धिके निषेधका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

एक बार राजाके पूछनेपर प्रभुने उसके पूर्व जन्मका सारा वृत्तान्त कहा*।

*

मंत्री चाहडका दानी पना।

(१६६) इसके बाद, किसी समय, राजाने स पा द ल क्ष के राजा पर चढाई ले जानेके लिए सेना सज्जित की। श्री वा ग्भ ट मंत्रीके छोटे भाई चा ह ड मं त्री को, अत्यधिक दान करते रहनेके कारण दोष-युक्त होने पर भी उसे खूब सिखामन दे कर, सेनापति बनाया। वह प्रयाण करके दो-तीन पडाव दूर गया ही था कि बहुतसे याचक इकट्ठे हो कर उसके पास आये तो उसने कोषाध्यक्ष (खजांची) से १ लाख मुद्रायें माँगी। पर राजाकी आज्ञा न होनेसे जब वह नहीं देने लगा, तो सेनापतिने उसे चाबुकके प्रहारोंसे मार कर सेनासे निर्वासित कर दिया और फिर स्वयं यथेच्छ दान दे करके याचकोंको प्रसन्न किया। चौदह सौ साढनियों पर चढे हुए २८०० सुभटोंको साथ ले कर रास्तेमें कुछ ही पडाव करके ब म्बे रा न ग र के किलेको जा घेरा। वहाँ पर नागरिकोंसे यह सुन कर, कि उसी रातको सात सौ कन्याओंके विवाह होने वाले हैं, उस रातको वैसा ही पड़ा रहा। दूसरे दिन किले पर दखल कर लिया। वहाँ पर सात करोडका सोना तथा ग्यारह हज़ार घोड़ियोंकी प्राप्ति हुई जिसकी सूचना शीघ्रगामी आदमियों द्वारा राजाके पास भिजवा दी। स्वयं उस देशमें कु मा र पा ल राजाकी आज्ञा फिरा कर और अपने अधिकारी नियुक्त करके लौट आया। प त न में प्रवेश करके राजमहलमें आ कर राजाको प्रणाम किया। राजाने समुचित आलापके साथ, उसके गुणसे रंजित हो कर भी, इस तरह कहा कि—

* पूर्व जन्मके वृत्तान्तवाला यह प्रबन्ध इस ग्रन्थमें नहीं दिया गया। यह पंक्ति एक ही पुरानी प्रतिमें लिखी हुई मिली है जिसका सूचन शास्त्री दीनानाथने अपनी उस पुरानी आवृत्तिमें किया है। पुरातन प्रबन्धसंग्रह, प्रबन्धकोश, कुमारपालचरित्र संग्रह आदि ग्रन्थोंमें यह प्रबन्ध मिलता है।

'तुममें जो यह स्थूल-लक्ष्यता वाला बडा भारी दोष है वही एक प्रकारसे तुम्हारा रक्षामंत्र है। नहीं तो लोगोंकी नजर लग कर तुम खडे ही खडे फट पडो। तुम जो व्यय करते हो वह तो मैं भी कर सकनेमें समर्थ नहीं हूँ।' राजाकी यह बात सुन कर उसने कहा कि–'महाराजने जो कहा वह यथार्थ ही है। ऐसा व्यय महाराज सचमुच नहीं कर सकते। क्यों कि महाराज पितृपरंपरासे तो राजाके पुत्र हैं नहीं। और मैं तो खुद महाराजका पुत्र हूँ। अतः मैं इतना अधिक अर्थव्यय कर सकता हूँ।' उसकी इस बातसे चाहे राजा खुश हुआ हो या नाराज,–वह तो कसौटी पर कसे हुए सुवर्णकी कान्तिको धारण करता हुआ, अनमोल हो कर, राजासे विदा ले कर अपने स्थान पर पहुँच गया।

इस प्रकार यह राजघरट्ट चाहडका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

१६७) उसी प्रकार उसका छोटा भाई, जिसका नाम सोलाक था, उसने 'मण्डलीक सत्रागार' ऐसा बिरुद धारण किया था।

कुमारपाल द्वारा राणा लवणप्रसादका भविष्य कथन।

१६८) इसके बाद, एक बार, आनाक नामक अपने मौसेरे भाईके सेवागुणसे सन्तुष्ट हो कर राजाने उसे सामान्त-पद प्रदान किया। तो भी वह तो उसी तरह सेवा करता रहा। एक बार, दो पहरके समय, राजा जब चन्द्रशालामें पलँग पर बैठा हुआ था तब वह भी उसके सामने बैठा था। उस समय सहसा किसी नौकरको वहाँ आते देख राजाने पूछा कि–'यह कौन है?'। आनाकने देखा तो वह उसीका नौकर मालूम दिया। उस नौकरका इशारा पा कर वह वहाँसे बाहर निकल कर कुशल समाचार पूछने लगा, तो नौकरने उससे पुत्रजन्मकी बधाई माँगी। इस समाचारसे उसका चेहरा सूर्य जैसा चमक उठा और फिर उसे विदा करके अपने स्थान पर आ बैठा। राजाके यह पूछने पर कि क्या बात है? तो उसने कहा कि–'महाराजके [सेवकके] घर पुत्र हुआ है'। यह सुन, राजा अपने मनमें कुछ सोच कर, प्रकाश भावसे बोला–'पुत्रजन्म निवेदन करनेके लिये यह चाकर जो वेत्रधारियोंकी विना बाधाके ही यहाँ तक आ पहुँचा सो इससे जाना जाता है कि अपने पुण्यके प्रभावसे यह गूर्जर देशका राजा होगा, पर इस नगरमें और इस धवलगृहमें (राजमहलमें) नहीं। क्यों कि तुम्हें इस स्थानसे उठा कर इसने पुत्रोत्पत्तिकी बधाई दी है इस लिये इस नगरका राजा नहीं होगा।'

इस प्रकार विचार चतुर्मुख श्री कुमारपाल देवद्वारा निर्णीत
लवणप्रसाद राणाका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

२०५. अपने आज्ञावर्ती ऐसे अठारह बडे देशोंमें, संपूर्ण चौदह वर्ष तक जीवहत्याका निवारण करके, और अपनी कीर्तिके स्तंभके समान १४ सौ जैन विहारोंका निर्माण करके जैन राजा कुमारपालने अपने सब पापोंको क्षय कर दिया।

[१२५–७] कर्नाटक, गूर्जर, लाट, सौराष्ट्र, कच्छ, सिन्धु, उच्च, भंभेरी, मरुदेश, मालव, कोंकण, कीर, जांगलक, सपादलक्ष, मेवाड, ढीली (दिल्ही) और जालंधर इतने देशोंमें कुमारपाल राजाने प्राणियोंको अभयदान दिया और सातों व्यसनोंका निषेध किया। रुदतीधन (अपुत्र कुटुम्बके धन) का ग्रहण मना किया और न्यायघण्टा बजा कर प्रजाको संतुष्ट किया।

*

हेमचन्द्र सूरिको लूता रोग लगना।

१६९) अब एक बार, कच्छप राज लक्षराज की महासती माताने जो मूलराज को शाप दिया था कि उसके वंशजोंको लूता रोग हो जाया करेगा; तदनुसार, कुमारपालने जब गृहस्थ धर्म (श्रावकपन) के व्रत ग्रहण किये तब उसने अपना राज्य गुरु श्री हेमचन्द्र को समर्पण कर दिया था, इसलिये उसी छिद्रसे (इस राज्यसम्बन्धके छलसे) सूरिको भी वह लूता रोग संक्रामित हुआ। इसे देख सभी राजलोकके साथ राजा दुःखित हुआ, तब प्रभुने प्रणिधानसे अपनी आयु प्रबल समझ कर अष्टाङ्ग योगाभ्यासके द्वारा, लीला (क्रीडा) के साथ उस रोगको नष्ट कर दिया।

१७०) किसी समय, कदली पत्र पर आरूढ किसी योगीको देख कर विस्मित बने हुए राजाको प्रभुने भूमिसे चार अंगुल ऊपर अधर रह कर ब्रह्मरन्ध्रसे निकलता हुआ तेजःपुञ्ज दिखाया।

*

हेमचन्द्रसूरि और कुमारपालका स्वर्गवास।

१७१) चौरासी वर्षकी अवस्थाके अंतमें प्रभुने अपना अंतिम दिन समीप आया समझ कर, अनशन पूर्वक अन्त्याराधन क्रिया प्रारंभ की। उसे देख कर दुःखित हुए राजाको प्रभुने कहा कि – 'तुम्हारी आयु भी अब ६ महीना ही बाकी है। सन्तानाभावके कारण अपने वर्तमान रहते ही अपनी सब उत्तर क्रिया कर-करा लेना।' यह आदेश दे कर दशम द्वारसे उन्होंने अपना प्राणत्याग कर दिया। फिर इसके बाद प्रभुके संस्कार स्थान पर, यह समझ कर कि, उनके देहकी भस्म भी पवित्र है, राजाने तिलक करके नमस्कार किया। इसके बाद सभी सामंत और नागरिक लोगोंने वहाँ की मिट्टी ले ले कर तिलक करना शुरू किया जिससे वहां पर गड्ढा हो गया। वह गड्ढा आज भी 'हेमखड्ड' नामसे प्रसिद्ध है।

१७२) अब फिर, राजा प्रभुके शोकमें विकल हो कर आँखोंमें आँसू भर भर रोने लगा जिस पर मंत्रियोंने उसे वैसा न करनेकी विज्ञप्ति की, तो वह बोला – 'मैं उन प्रभुके लिये शोक नहीं कर रहा हूँ जिन्होंने अपने पुण्यसे उत्तमसे उत्तम लोक अर्जित किया है; मैं तो अपने इस सर्वथा त्याज्य ऐसे सप्ताङ्ग राज्यके लिये शोक कर रहा हूँ, कि राज्यपिण्ड दोषसे दूषित होनेके कारण मेरा पानी भी इन जगद्गुरुके अंगमें नहीं लगा –' इस प्रकार प्रभुके गुणोंको स्मरण करता हुआ चिरकाल तक विलाप करते रहा और अन्तमें प्रभुके कहे हुए दिन पर उन्हींकी उपदिष्ट विधिसे समाधि पूर्वक मर कर उस राजाने स्वर्गलोक अलंकृत किया।

*

यहाँ पर P प्रतिमें निम्नोद्धृत श्लोक अधिक प्राप्त होते हैं–जो सोमेश्वरकी कीर्तिकौमुदीके हैं–

[१२८] पृथु आदि पूर्व राजाओंने स्वर्ग जाते समय जिस राजाके पास अपने गुणरूपी रत्नोंको मानों न्यासके रूपमें रख दिया था।

[१२९] इस राजाने न केवल युद्धक्षेत्रमें अपने बाणोंसे मात्र शत्रुओंको ही जीत लिया था, किंतु अपने लोकप्रीतिकर गुणोंसे इसने पूर्वजोंको भी जीत लिया।

[१३०] राग और रतिसे रहित, ऐसे (अथवा बीतरागमें प्रीतिवाले) इस नृदेवकी, मृतोंके धनको छोड देनेके कारण, देवताकी नाईं अमृतार्थता सिद्ध हुई। (क्यों कि देवता अमृतके अर्थी होते हैं, और यह मृतका अर्थ नहीं लेता था।)

[१३१] इस राजाने तलवारकी धारमें नहाई हुई वीरोंकी श्री (लक्ष्मी) ही ग्रहण की, किंतु आँसूकी धारासे धुली हुई कायरोंकी (और निरपत्य जनोंकी) श्री नहीं ली।

[१४२] इसने जवानीमें तो वीरोंके भी सामने अपने पैर फैलाये, पर उनकी स्त्रियोंके सामने तो यह अपना मुख ही नीचा कर लेता था।

[१४३] हरण (स्वाती) में हुए जिसके बाणसे क्रान्त हो कर, श्री राजाने भी अपना सिर घुमाया ही पर उसकी सहोदरता करने वाले दूसरोंने भी अपना सिर घुमाया।

[१४४] जो कृपण देशका नरेश, जो सारे जन्मोंके अत्यन्त पुण्यकी प्रभावसे गर्वान्वित ऐसे अपने सिरको न नवाना चाहता तो इस राजाने अपने बाणोंसे उसके सिरको टुकडे टुकडे कर दिया।

[१४५] जिस राजाने गुर्जर ... और मल्लिकार्जुन राजाओंके सिरोंको, लक्ष्मीके दोनों कुचोंकी तरह ग्रहण किया।

[१४६] जिस राजाने दक्षिण देशके राजाको जीत कर उससे ... (पानी) ग्रहण किये। मानों वे इस लिये कि उसके ... इस सिरको ... बनायेंगे।

[१४७] शत्रुओंकी पत्नियोंके कुंकुमपत्रको विचार (सिन्दूर) बनाते हुए जिस राजाने ... नाम बनाया।

[१४८] जिसने ... और ... ग्रहण किया।

१७३) सं० ११९९ से [१२३० तक] ३१ वर्ष तक श्री कुमारपालने राज्य किया।

*

अजयपालका राज्याभिषेक।

१७४) सं० १२३० वर्षमें अजयदेव का राज्याभिषेक हुआ। (इस राजाके वर्णनके कुछ विशेष श्लोक भी ... इस प्रकार पाये जाते हैं —)

[१४९] इस [कुमारपाल] के बाद कल्पवृक्षके समान अजयपाल नामक राजा हुआ जिसने बहुतसोंको सोनेसे भर दिया।

[१५०] जिसने श्री ... देश (के राजा) के सिर पर पैर रख कर उससे ... (सोनेकी मण्डपिका) और मत्त हाथी ग्रहण किया।

[१५१] अहो तेजके पुंजकी भी भर्त्सना करने वाले जिस राजाने, परशुरामकी तरह, क्षत्रियोंके ... पृथ्वीको क्षत्रियोंकी ... पात्र बनाया।

[१५२] जिस राजाके तीनों वर्ग (धर्म, अर्थ, काम) निरन्तर देवोंसे, जिस राजाओंको दण्ड देनेसे और जिस स्त्रियोंसे ... हुआ।

[१५३] राजाओंके ... [...] राजराज (इंद्र) [का अभिनय करने वाले इस राजा] के आधे आसन (पर आने) पर इसके पुत्र मूलराजने ... अभिनय किया।

*

अजयपालका ... आज्ञा ...।

१७५) अब अजयदेव ने पूर्वोके बनाये मंदिरोंको गिरवाने ... , राजाके सामने ... , ... हुए ...

देवमंदिर पुत्रोंके हवाले किये और यह कहा कि—'मेरे मरे बाद भक्तिपूर्वक इनकी खूब देख भाल रखना'—ऐसा कह कर ज्यों ही वह अन्तिम दशाकी प्रतीक्षा करता है त्यों ही उसके छोटे लडकेने उन मन्दिरोंको तोड-फोड डाला। तब उसका शब्द सुन कर वह बोला—'अरे पुत्राधम, श्रीमान् अजयदेव ने भी पिताके परलोक जानेके बाद, उनके बनाये धर्मस्थानोंको तुडवाया, और तू तो अभी मेरे जीते ही इन्हें तोड रहा है; इस लिये तू तो अधमसे भी अधम हुआ'। उसका यह प्रसङ्गोचित आलाप सुन कर राजा लज्जित हुआ और उस कुकार्यसे निवृत्त हुआ। उस दिनके बाद बचे हुए श्री कुमारपाल के [कुछ] विहार आज भी दिखाई देते हैं। श्री तारङ्ग दुर्ग में (तारंगा पहाड) के अजितनाथको अजयपालके नामसे अंकित कर धूर्तोंने (!) इस उपायसे बचाया।

*

अजयपालका कपर्दी मंत्रीको मरवा डालना।

१७६) बादमें अजयदेवने कपर्दी मंत्री को महामात्यका पद लेनेके लिये अत्यन्त प्रार्थना की। उसने यह कह कर कि—'प्रातःकाल शकुन देख कर उसकी अनुमतिसे प्रभुके आदेशका पालन करूँगा' वह शकुन गृहमें गया। फिर दुर्गादेवीसे माँगे सप्तविध शकुनको पा कर पुष्प अक्षत आदिसे देवोंकी पूजा की। अपने आपको कृतकृत्य समझ कर जब नगरके दरवाजेके पास आया तो ईशान-कोणमें वृषभको नाद करते देखा। यह देख कर मनमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने निवास स्थान पर आया। भोजन करने बाद, उसके मरुदेशीय वृद्ध अंगरक्षकने शकुनका स्वरूप पूँछा। इस पर कपर्दीने उन शकुनोंका स्वरूप कहा और उनकी प्रशंसा की। तब मरुवृद्धने कहा—

२०६. नदीको उतरते समय, विषम मार्गमें चलते समय, दुर्गमें, आसन्न भयके अवसर पर; स्त्री विषयक कार्यमें, लडाईमें और व्याधिमें शकुनोंकी विपरीतता श्रेष्ठ कही जाती है।

इस प्रमाणसे, आसन्न संकटके कारण मतिभ्रंश हो कर आप प्रतिकूलको भी अनुकूल समझ रहे हैं। वृषभको आपने शुभ मान लिया है, पर वह भी, आपकी मृत्युसे शिव [धर्म] का अभ्युदय होना समझ कर उनका वाहन होनेके कारण गर्जा है। उसकी इस [सत्र] बातकी उसने उपेक्षा की तो वह [खिन्न हो कर] उससे विदा ले कर तीर्थयात्राके लिये चला गया। फिर कपर्दी राजाकी दी हुई [महामात्य पदकी] मुद्रा ग्रहण करके महान् उत्सवके साथ अपने घर आया। राजाने रातको विश्राम करते हुए उसे गिरफ्तार किया और समानप्रतिष्ठा वालोंने उसका अपमान करना शुरू किया।

२०७. जो सिंह कभी हाथीके कुंभस्थल पर पाँव दे कर गजमुक्ताओंका दलन करता था, वही विधिवश आज शृगालोंकी लातोंका अपमान सहता है।

यह सोचता हुआ, [तप्त लोहके] कडाहमें डाले जाने पर वह पंडित इस प्रकार काव्य पढते पढते मार डाला गया—

२०८. याचकोंको करोडोंकी कीमतके, दीपकके समान कपिश वर्णवाले सुवर्णका दान दिया; प्रतिवादियोंकी शास्त्रके अर्थसे गर्भित ऐसी वाणीको शास्त्रार्थोंमें जीत लिया; उखाड कर फिरसे राज्य पर बिठाये हुए राजाओंसे शतरंजकी तरह क्रीडा की—[इस तरह] मैंने अपना कर्तव्य कर लिया है। अब अगर विधिकी [ऐसी] याचना है तो उसके लिये भी हम तैयार हैं।

इस प्रकार यह मंत्री श्री कपर्दीका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

महाकवि रामचन्द्रकी हत्या।

१७७) इसके बाद, सौ प्रबन्धोंका कर्ता [महाकवि] रा म चं द्र उस नीच राजाके द्वारा [मार डालनेके लिये] जलती हुई ताम्रपट्टिका पर बिठाया जाने लगा तो उसी अवस्थामें वह यह कहता हुआ कि–

२०९. जिसने सचराचर पृथ्वीपीठके सिर पर पैर रखा उस सूर्यका अब अस्तगमन होता है तो वह चिरकालके लिये हो।

अपने दाँतोंसे जीभ काट कर मृत्यु प्राप्त हुआ और फिर उस मरे हुएको ही उसने मार डाला।

इस प्रकार रामचंद्रका प्रबन्ध समाप्त हुआ।

*

मंत्री आम्रभटका लडते हुए मरना।

१७८) इसके बाद, रा ज पि ता म ह श्री मान् आ म्र भ ट के तेजको न सह सकने वाले सामन्तोंने अवसर पा कर उसकी निन्दा करते हुए राजाको उससे प्रणाम करवानेके लिये बाधित किया तो उसने यों कहा कि– 'देव-बुद्धिसे श्री वीतराग जिनेंद्रको, गुरु-बुद्धिसे श्री हे मा चा र्य महर्षिको, और स्वामि-बुद्धिसे श्री कु मा र पा ल को ही इस जन्ममें मेरा नमस्कार हो सकता है।' उस [वीरके], जिसके शरीरके सातों धातु जैन धर्मसे वासित थे, ऐसा कहने पर, राजा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि–'लडनेके लिये तैय्यार हो जाओ'। उसकी यह बात सुन कर, मंत्रीने जिनदेवकी पूजा करके [मनमें] अनशन व्रत ग्रहण किया और संग्रामदीक्षाका स्वीकार करके अपने योधाओंके साथ मकानसे बाहर निकला। फिर राजाके आदमियोंको भूसेकी तरह उड़ाता हुआ घटिकागृह (राजद्वार) तक आया और उन पापियोंके संसर्गसे जनित कल्मषको धारातीर्थमें धो कर स्वर्ग लोक सिधार गया। उस समय वहाँ उसको देखनेके लिये आई हुई अप्सरायें 'मैं पहले वरूंगी, मैं पहले'– इस तरह कह रही थीं।

२१०. धन पानेके लिये–भाट होना अच्छा है, रंडीबाज होना अच्छा है, वेश्याचार्य होना अच्छा है और पूरा दगाबाज होना भी अच्छा है, पर दानके समुद्र उ द य न के पुत्र (आ म्र भ ट) की मृत्युके बाद चतुर आदमियोंको भूमण्डल पर किसी तरह भी विद्वान् होना अच्छा नहीं।

२११. मनुष्य अपने अत्युग्र पुण्य और पापका फल, यहीं पर, तीन वर्षमें, तीन मासमें, तीन पक्षमें या तीन दिनमें ही प्राप्त कर लेता है।

इस पुराणके प्रमाणानुसार उस दुष्ट राजाको [एक दिन] व य ज ल दे व नामक प्रतीहारने छुरा भोंक कर मार डाला। वह धर्मस्थानोंको गिराने वाला पापी कीडे मकोडों द्वारा भक्षित हो कर प्रत्यक्ष नरकका अनुभव करके मर गया।

सं० १२३० से ले कर [१२३३ तक] तीन वर्ष इस अ ज य दे व ने राज्य किया।

*

१७९) सं० १२३३ से ले कर [१२३५ तक] २ वर्ष बाल मू ल रा ज ने राज्य किया। इसकी माता ना इ कि दे वी ने, जो परमर्दी राजाकी लडकी थी, गोदमें अपने पुत्र–शिशु राजा–को, ले कर 'गा ड रा र घ ट्ट' नामक घाट पर म्लेच्छ राजासे युद्ध किया और सौभाग्य वश अकालमें ही आकाशमें बादल हो आनेके कारण उसको दैवी सहायता मिल गई जिससे शत्रु पराजित हो गया।

[१४४] समर-भूमिमें रेंकते हुए जिस राजाने मानों बाल्य कालकी चपलतासे ही तुरुष्कराजकी सेनाको छिन्न-भिन्न कर दिया।

[१४५] जिसके काटे हुए म्लेच्छ कंकालके स्तूपकी ऊंचाईको देखता हुआ अर्बुद गिरि अपने पिता प्रालेयगिरि (हिमालय) की याद भूल जाता है।

[१४६] विधाताके, उस कल्पद्रुमके अंकुरको शीघ्र ही नष्ट करनेके बाद, उसका छोटा भाई श्रीभीम नामक [नया] पौधा उगा।

*

१८०) सं० १२३३ से ले कर [१२९६ तक] ६३ वर्ष श्री भीम देव ने राज्य किया।

[१४७] यह भीम राजा, जो राजहंसोंका दमन करने वाला है कदापि उस भीमसेनके समान नहीं कहा जाता जो बकापकारी (बकासुरका नाश करने वाला) था।

यह राजा जब राज्य कर रहा था तो सोहड नामक मालव देश का राजा गूर्जर देश को विध्वंस करनेके लिये सीमान्त पर आया। तब इसके प्रधानने सामने जा कर इस प्रकार कहा—

२१२. हे राजसूर्य (तुम्हारा) प्रताप पूर्व [दिशा] में ही शोभित होता है। पश्चिम दिशामें आने पर तुम्हारा वह प्रताप अस्त हो जाता है *।

इस विरुद्ध वाणीको सुन कर वह वापस लौट गया। इसके बाद उसने अपने लड़केसे, जिसका नाम श्रीमान् अर्जुन देव था, गूर्जर देश का भंग कराया।

*

वीरधवलका प्रादुर्भाव।

१८१) श्री भीम देव के राज्यकी चिन्ता करने वाला (राज्य व्यवस्था संभालने वाला) व्याघ्रपल्लीय नामसे प्रसिद्ध श्रीमान् आनाक का पुत्र लवण प्रसाद चिरकाल तक राज्य करता रहा। साम्राज्यके भारको धारण करने वाला उसका पुत्र हुआ श्री वीर धवल। उसकी माता मदन राज्ञीने, अपनी बहनकी मृत्युके बाद यह सुनकर कि—अपने देवराज नामक पट्टकिल (·पटेल) बहनोई जिसकी बड़ी भारी आमदनी है लेकिन अब जिसका निभाव नहीं हो रहा है, राजा लवणप्रसाद से पूंछ कर अपने शिशुपुत्र वीर धवलको साथ ले कर वहाँ गई। उस बहनोईने उसके गुण और आकृतिको स्पृहणीय देख कर, उसे अपनी ही गृहिणी बना लिया। लवण प्रसाद ने जो यह वृत्तान्त सुना, तो उसे मार डालनेके लिये रातको उसके घरमें घुसा और एकान्तमें छिप कर जब वह अवसर खोज रहा था, तब वह पटेल भोजन करनेके लिये बैठा और [पासमें वीरधवलको न देख कर अपनी गृहिणीसे] यह कहने लगा कि वीर धवल के बिना मैं नहीं खाऊंगा। इस तरह खूब आग्रहके बाद उसे ले आ कर एक ही थालीमें उसके साथ खाने लगा। तब अकस्मात्, साक्षात् कृतान्तकी तरह सामने उपस्थित उस आदमीको देख भयसे उसका मुंह काला हो गया। पर उस (लवणप्रसाद) ने कहा कि—'मत डरो, मैं तुम्हीं को मारने आया था पर इस मेरे वीरधवल लड़के पर, तुम्हारी ऐसी वत्सलता अपनी साक्षात् आँखोंसे देख कर, उस आग्रहको मैंने त्याग दिया है।' ऐसा कह कर उसके द्वारा सत्कृत हो कर जैसे आया था वैसे ही चला गया।

१८२) वीर धवल के उस अपर पिताले उत्पन्न, सांगण, चामुण्डराज आदि धड्डुकवंशीय भाई हुए जो अपने वीर व्रतसे भुवनतलमें विख्यात हुए।

---

* मालवासे गुजरात पश्चिम दिशामें है इस लिये इस श्लोकसे यह सूचित किया गया है कि मालवाका राजा यदि गुजरातमें आक्रमण करे तो उसका तेज नष्ट हो सकता।

१८३) इसके बाद, वह वीरधवल क्षत्रिय, जब कुछ कुछ समझने लायक हुआ तो अपनी माताका यह वृत्तान्त जान कर लज्जित हुआ और अपने ही पिताकी सेवामें आ कर रहा। वह जन्मसे ही उदारता, गंभीरता, स्थिरता, नीति, विनय, औचित्य, दया, दान और चतुरता आदि गुणोंसे युक्त था। उसने अपनी शालीनतासे किसी कंटक ग्रस्त भूमिको अपने अधिकारमें किया और फिर पिताने भी कृपा करके कुछ देश दे दिया। चाहड नामक ब्राह्मणको मंत्री बना कर वह राजकारभार चलाने लगा। वहाँ पर, उस समय, आये हुए प्राग्वाटवंशी पत्तन निवासी मंत्री तेजपाल के साथ उसकी मित्रता हुई।

*

मंत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपालका प्रबन्ध।

१८४) अब इस प्रकरणमें मंत्री तेजपालके जन्म वृत्तान्तका प्रबंध प्रस्तुत किया जाता है। एक बार, पत्तनमें भट्टारक श्री हरिभद्रसूरि का व्याख्यान हो रहा था। वहीं पर मंत्री आशराज बैठा हुआ था। उस समय एक कुमारदेवी नामकी अतीव रूपवती बालविधवा स्त्री वहा पर आई जिसको वे आचार्य बारंबार देखने लगे। इससे आशराजका चित्त उस पर आकर्षित हुआ। व्याख्यानके विसर्जन होनेके अनन्तर मंत्रीकी प्रार्थना पर गुरुने इष्ट देवताके आदेशसे कहा कि–'इसके गर्भसे सूर्य और चंद्रमाके भावी अवतारको देखता हूं, इस लिये इसके सामुद्रिकको बारंबार देख रहा था।' गुरुसे इस तत्त्वको जान कर मंत्रीने उसका अपहरण करके उसे अपनी प्रेयसी (पत्नी) बनाया। क्रमशः उसके पेटसे ज्योतिपेन्द्र (सूर्य और चंद्र) जैसे वस्तुपाल और तेजपाल नामक वे दोनों मंत्री अवतीर्ण हुए।

वीरधवलका तेजपालको अपना मंत्री बनाना।

१८५) किसी समय श्री वीरधवलने अपने राजकीय व्यापारके भारको ग्रहण करनेके लिये उस तेजपालकी अभ्यर्थना की, तो उसने पहले राजाको उसकी पत्नीके साथ अपने मकान पर भोजनके लिये निमंत्रित किया; और उस समय अनुपमाने राजपत्नी जयतलदेवीको कर्पूरके बने हुए अपने दोनों ताडङ्क (कर्णफूल) तथा सोनेके बने हुए और बीच बीचमें मोती और मणियोंसे जडे हुए कर्पूरमय, एकावली हारको उपहार रूपमें दिया। मंत्री जब उपहार देने लगा तो उसका निषेध करके, वीरधवल अपना राज्यकार्यभार उसके हाथोंमें समर्पण करता हुआ बोला कि–'इस समय तुम्हारे पास जो धन है उसे, कुपित होने पर भी, मैं विश्वास पूर्वक कहता हूं कि कभी ग्रहण न करूंगा।' इस प्रकार पत्र पर प्रतिज्ञालेख लिख कर तेजपालको राज्यव्यापार संबंधी पञ्चाङ्ग-प्रसाद प्रदान किया।

> २१२. जो विना करके खजाना बढावे, विना मनुष्य-वध किये देश-रक्षा करे और विना युद्ध किये देशवृद्धि करे वही मंत्री बुद्धिमान् कहलाता है।

मंत्री तेजपालका धर्मभावसम्मुख होना।

१८६) संपूर्ण नीतिशास्त्र और उपनिषत्में बुद्धिको निविष्ट रखने वाला वह मन्त्री अपने स्वामीकी यशोवृद्धि करता हुआ, सूर्योदय कालमें विधिपूर्वक श्री जिनकी पूजा करता, और फिर चंदन और कर्पूरसे गुरुकी पूजा करता। अनन्तर द्वादश आवर्तन करके यथाऽवसर प्रत्याख्यान ले कर रोज गुरुसे एक एक अपूर्व श्लोक पढा करता। राजकार्य करनेके बाद ताजी बनी हुई रसोईका आहार करता। एक बार, मुञ्जाल नामक महोपासक, जो उसका निजी लेखक (गुमास्ता) था, एकान्तमें पूछने लगा कि–'स्वामी सवेरे क्या ठंडी रसोई खाते हैं या ताजी!' उसके ऐसा पूछने पर वह मंत्री समझा कि यह गँवार है। दो तीन बार उसके ऐसा पूछने पर

एक बार बड़े क्रोधसे ' पशुपाल ' कह कर उसे अपमानित किया। वह धैर्य धारण करके बोला –" दोनोंमेंसे कोई एक तो होगा ही। (अर्थात् या तो मैं गँवार हूं या मेरी बातको नहीं समझने- वाले आप गँवार होंगे) उसकी वचनचातुरीसे चित्तमें चमत्कृत हो कर मंत्रीने कहा – ' विज्ञ ! तुम्हारे उपदेशकी ध्वनिको मैं समझ नहीं सका। अब यथार्थ बात बताओ। ' ऐसा आदेश पा कर वह वाग्मी बोला कि – ' जिस रसमयी ताजी रसोईको आप खाते हैं वह पूर्वजन्मके पुण्यका फल है अतएव मैं उसे अत्यन्त शीतल समझता हूं। जो हो, ये तो मैंने गुरुके संदेश वाक्य ही कहे हैं। तत्त्व तो वे ही जानते हैं, अतः वहीं पधारिये। ' उसकी यह बात सुन कर तेजपाल मंत्री अपने कुलगुरु भट्टारक श्री विजयसेन सूरिके पास गया। गुरुसे गृहस्थ धर्मका विधि-विधान पूछा। उन्होंने उपासकदशा नामक सप्तमाङ्गसे जिनकथित देवपूजा, आवश्यक क्रिया, यतिदान आदि गृहस्थ धर्मका उपदेश दिया। तब उसने विशेषतापूर्वक देवपूजा, जैन मुनियोंको दान आदि देनेवाला धर्मकृत्य आरंभ किया। पूजाके समय चढाये हुए तीन वर्षतकके द्रव्यको निकाला तो ३६ हजार हुआ उससे श्री नेमीनाथका प्रासाद बनवाया।

(यहाँ P प्रतिमें, निम्न लिखित, विशेष श्लोक लिखे हुए पाये जाते हैं–)

[१४८] मनुष्योंका अपहरण करने वाले समुद्रप्रवासी जनोंका निषेध करके जिसने पृथ्वी पर अपने धर्मका उदाहरण उपस्थित किया।

[१४९] छुआ-छूतके निवारणके लिये अलग अलग हदवाली वेदी बना कर जिस (मंत्री) ने इस (स्तंभतीर्थ) नगरमें छांछके बेचनेका विप्लव दूर किया।

[१५०] जिसने, जहाँ पर जो कुछ भी न्यून और जो कुछ भी नष्ट था उसे वहाँ पर पूरा किया। क्यों कि उत्तम पुरुषोंका जन्म रिक्त स्थानोंको पूरा करनेके लिये ही तो होता है।

[१५१] देवताओंके लिये जिसने ऐसे अनेक उपवन दान कर दिये थे जहाँ पर कामदेवको शिवके नेत्रोंकी अग्निका ताप स्मरण नहीं होता था।

[१५२] रंभा (१ केला, २ अप्सरा विशेष) से संभावित, वृषसे निषेवित तथा मनोज्ञ (१ सुंदर, २ मनको जाननेवाले) सुमनों (१ फूलों, २ देवताओं) के वर्गसे सुशोभित जिसके वनोंने स्वर्गके सौन्दर्यको ग्रहण किया था।

[१५३] हारीत (१ पक्षी विशेष, २ स्मृतिकार ऋषि विशेष) शुक (१ तोता, २ भागवतका ऋषि) चित्र-शिखण्डी (१ मोर, २ महाभारतका एक वीर) द्वारा संगृहीत जिसके उद्यान धर्मशास्त्रके सधर्मा हो कर सुशोभित हुए।

[१५४] इसने सुमनोभाव (१ सुंदर मनोभाव, २ फूलका भाव) तथा अतुलनीय श्रीमत्ताको दिखाते हुए, स्वबंधुके वनोंको (बन्धुकजातिके पुष्पोंके वनोंको) अपने बन्धुओंकी नाईं कर दिया।

[१५५] जिसके बनाये हुए तालाबोंमेंसे पानी ग्रहण करते हुए कासारगण (भैंस बैल आदि पशु) समुद्रमेंसे पानी लेते हुए बादलकी नाईं शोभा देते थे।

[१५६] जिस क्रियानिष्ठ पुण्यात्माने ऐसी कितनी ही बावडियाँ बनवाईं जिनके मीठे जलोंने अमृतको भी तिरस्कृत कर दिया।

[१५७] उसने पानी पीनेके लिये ऐसे प्याऊ बनवाये कि जिनका जल पी कर पथिकोंके मुख तो तृप्त हो जाते थे किंतु उनकी शोभा देख कर आँखें कभी तृप्त नहीं होती थीं।

[१५८] जिसने यहाँ पर (स्थंभतीर्थमें) भवसागरको पार करनेके लिये नौकारूप ब्रह्मपुरी बनवाई जिसमें पुरुष तो सामगान करते थे और नारियाँ उसका यशोगान करतीं थीं।

[१५९] अपने शुभ्र ऐसे कीर्तिकूट रूप पटसे, दसों दिशाओंका वेष्टन करते हुए स्पष्ट रूपसे, इसने मानों दसों दिशाओंको श्वेतांबर व्रती बनाया।

[१६०] जिस तारिततमाने ऐसी पौषधशालायें बनाई जो भीतरसे तो श्वेतांबरोंसे (श्वेताम्बर यतियोंके निवाससे) और बाहर सुधा (चूनापोती) से विशुद्ध थीं।

[१६१] जिसकी पौषधशालाओंमें स्त्रीविरहित ऐसे यति वास करते हैं जिनको आत्मभू (पुत्रजन्म तथा पुनर्जन्म) की कोई संभावना ही नहीं है।

[१६२] वाग्देवीने प्रसन्नतापूर्वक जिस मंत्रीको ज्ञानकी ऐसी आंख दी थी कि जिससे यह धर्मकी सूक्ष्म गतिको भी नित्य ही देखा करता था।

वस्तुपालकी तीर्थयात्राका वर्णन।

१८७) इसके बाद, सं० १२७७ सालमें सरस्वतीकण्ठाभरण, लघुभोजराज, महाकवि, महाऽमात्य श्री वस्तुपालने महायात्रा प्रारंभ की। गुरुके बताये हुए लग्नमें, उन्हींके द्वारा संघाधिपति रूपसे अभिषिक्त हो कर वह जब देवालयके प्रस्थानका उपक्रम कर रहा था, तब दाहिनी ओरसे दुर्गादेवीका स्वर सुनाई दिया, जिसे स्वयं कुछ समझ कर, शकुन शास्त्रके जानकारसे उसका विचार पूछा। मरुदेशके एक वृद्ध (शाकुनिक) ने कहा कि 'शकुन तो बड़ा भारी हुआ है'। 'शकुनसे भी शब्द बलवान् होता है' यह विचार करके नगरके बाहर आवास (तंबू) में देवालयको स्थापित किया। फिर उससे शकुनका विचार पूछने पर उस वृद्धने बताया कि, मार्गकी विषमतामें विपरीत शकुन श्रेष्ठ कहा जाता है। [वर्तमानमें] राजकीय अन्धाधुन्धीके कारण तीर्थ यात्राका मार्ग विषम हो रहा है। तथा जहां पर वह दुर्गा देख पड़ी थी, वहाँ किसी चतुर पुरुषको भेज कर उस प्रदेशको दिखवाइये। वैसा ही करने पर उस पुरुषने बताया कि–'यह जो वंडी (बाडेकी भींत) नई बनाई जा रही है उसके १३॥ हत्थे थर पर यह दुर्गा बैठी थी।' यह सुन कर उस मरुवृद्धने कहा कि–'देवी आपको साढ़ी तेरह यात्रा करनेकी सूचना करती है।' अन्तिम आधी यात्राका कारण पूछने पर उसने कहा कि–'इस अतुलनीय मंगलके अवसर पर वह कहना ठीक नहीं है। यथा समय सब निवेदन करूँगा।' इस वाक्यके अनन्तर संघके साथ मंत्रीने आगे प्रयाण किया। उस संघकी सब संख्या यों थी–४॥ हजार वाहन, २१ सौ श्वेतांबर, तीन सौ दिगम्बर, संघकी रक्षाके लिये १ हजार घोड़े, सात सौ लाल सांढनियां और संघरक्षाके अधिकारी चार महासामन्त थे। इस प्रकार सारी सामग्रीके साथ मार्ग तै करके, श्रीपादलिप्तपुरके अपने ही बनाये हुए श्रीमन् महावीर देवके चैत्यसे अलंकृत ललिता सरोवरके मैदानमें डेरा दिया। उस तीर्थ पर यथाविधि तीर्थाराधना करके मूल प्रासादमें सोनेका कलश, दो प्रौढ़ जिन मूर्तियाँ, श्री मोढेरपुरावतार श्री महावीर चैत्य तथा उसके आराधक (यक्ष) की मूर्ति और देवकुलिका, मूल मण्डपके दोनों ओर दो दो चौकीकी कतार, शकुनिका विहार तथा सत्यपुरावतार चैत्यके सामने चाँदीके तोरण, श्रीसंघके योग्य कई मठ, सात बहनोंकी ७ देव कुलिकायें, नन्दीश्वरावतार-प्रासाद, इन्द्र मण्डप और उसमें हाथी पर चढ़े हुए लवणप्रसाद और वीरधवलकी मूर्तियाँ, वहीं पर घोड़े पर चढ़ी सात पूर्वजोंकी मूर्तियाँ, सात गुरुमूर्तियाँ, उसीके निकटकी चौकीमें अपने दो बड़े भाई मह० मालदेव और लूणिग की आराधक मूर्तियाँ, प्रतोली, अनुपमा सरोवर, कपर्दि यक्ष-मण्डप और तोरण आदि बहुतसे धर्मस्थान बनवाये। इसी तरह नन्दीश्वरके कलठाने (कारखाने) के लिये कंटेलिया

पाषाणके बने हुए सोलह खंबे पा व क प र्व त परसे जलमार्ग द्वारा मँगाये। जब ये खंबे समुद्रके किनारे उतारे जाने लगे तो उनमेंसे एक स्तंभ इस प्रकार कीचडमें डूब गया कि खोजने पर भी न मिला। उसके बदले अन्य पाषाणका स्तंभ लगा कर वह प्रासाद पूरा किया गया। दूसरे साल समुद्रके पानीकी भरतीके सबबसे वही खंबा कीचडसे बाहर निकल आया। मंत्रीकी आज्ञासे वह खंबा उसकी जगह पर लगाया जाने लगा तो किसी पुरुषने आ कर कहा कि–' प्रासाद फट गया है '। यह निवेदन करनेको आये हुए पुरुषको भी उस मंत्रीने सोनेकी जीभ इनाममें दी। चतुर आदमियोंने पूछा कि 'यह क्या बात है?' इस पर मंत्रीने कहा कि 'इसके बाद अब धर्मस्थान ऐसे दृढ बनवाऊँगा कि युगान्तमें भी उनका पतन नहीं होगा। इसी लिये इसे पारितोषिक दिया गया है।' फिर तीसरी बार मूल समेत उखाड कर यह प्रासाद बनाया गया जो [अब भी] वर्तमान है। श्री पा ली ता णा में भी उसने एक विशाल पौषधशाला बनवाई। फिर श्रीसंघके साथ वह मंत्री उ ज्ज य न्त (गि र ना र) पहुँचा। वहा उसकी उपत्यकामें ते ज ल पु र में स्वयं एक नया वप्र (परकोटा) बनवाया और उसीमें श्रीमद् आ म्र रा ज वि हा र नामका मन्दिर तथा कु मा र दे वी नामका सरोवर भी बनवाया। उस निरुपम सरोवरको देखने बाद, जब नियुक्त पुरुषोंने कहा कि 'धवलगृह (महल) में पधारिये' तो मंत्रीने कहा कि श्री गुरुमहाराजके योग्य पौषधशाला भी है या नहीं?' यह सुन कर कि वह बनाई जा रही है, तो वह विनयके अतिक्रमणमें भीरु गुरुके साथ, बाहर ही दिये गये आवास (डेरे) में ठहरा। प्रातःकाल उ ज्ज य न्त पर आरोहण करके श्री शैवेय (नेमिनाथ) के चरणयुगलकी भली भाँति पूजा कर, स्वयं बनाये हुए श्री श त्रुं-ज या व ता र तीर्थमें खूब प्रभावनायें कर, तथा क ल्या ण त्र य चैत्यमें श्रेष्ठ पूजोपचारसे अर्चना करके वह मंत्री जब नीचे उतरा तो इन दो दिनोंमें वह पौषधशाला तैयार हो चुकी थी। मंत्री गुरुको अपने साथ वहाँ ले आया। उन्होंने उन बनाने वालोंकी प्रशंसा की और पारितोषिक दान दे कर उनको अनुगृहीत किया। श्री प त्त न में प्र भा स क्षे त्र में चन्द्रप्रभ देवको प्रणाम करके प्रभावनाके साथ यथोचित पूजा की। फिर अपने बनाये हुए अष्टापद प्रासाद पर सोनेके कलशका समारोपण करके, देवके पूजारियोंको दान दिया। वहाँके ११५ वर्षकी अवस्था वाले वृद्ध पूजारीके मुँहसे यह सुन कर कि–' यहाँ पर प्रभुश्री हे मा चा र्य ने कु मा र पा ल नृपतिके सामने श्री सोमेश्वर देवको जगद्विदित रूपसे प्रत्यक्ष किया था ' उन (प्रभु) के चरित्रसे मनमें चकित हो कर वहाँसे लौटा। रास्तेमें लिंगधारियोंके असदाचारको देख कर उन्हें अन्न देनेका निषेध किया। यह सुन कर वा य टी य ग च्छ के श्री जि न द त्त सू रि ने इस बातसे उसका अपयश समझ कर, अपने उपासकके पाससे उन्हें अन्नदान दिलाया। यह सुन कर यह मंत्री उनके दर्शन और अनुनयके लिये आया तो उन्होंने उसे उपदेश दिया कि–

२१४. खार जलके समान इन लिंगधारियोंकी परिपूर्णतासे ही तो यह शासन (धर्म) रूप समुद्र गंभीरताको धारण कर रहा है।

२१५. संविग्न साधु भी इन लिंगधारियोंकी अनुवन्दना करते हैं तो फिर धार्मिक और भवभीरु पुरुषको उनकी पूजाकी चर्चा क्यों करनी चाहिए।

२१६. प्रतिमाधारी (श्रावक) भी इनके सामने विषयका त्याग करते हैं इस लिये विषयवाले इन लिंगधारियोंकी पूजाका मना करना तो विरोधवाली बात है।

२१७. जो लोग, लिंगोपजीवियोंकी अवहीलना (तिरस्कार) करते हैं वे दुराग्रह दर्शन (संप्रदाय) के उत्कर्षके पाससे छिन्न होते हैं।

आवश्यक—वंदना निर्युक्तिमें कहा है कि—

२१८. तीर्थंकरोंके गुण उनकी प्रतिमा (मूर्ति) में नहीं हैं, यह निःशंसय जानता हुआ भी यह तीर्थंकर है ऐसा मान कर उसको नमस्कार करने वाला विपुल कर्मनिर्जरा (कर्मका नाश) प्राप्त करता है।

२१९. इसी प्रकार, जिन देवके प्रज्ञापन किये हुए लिंग (वेप) को नमस्कार करना भी विपुल निर्जराका हेतु है। यद्यपि यह गुणहीन होता है तथापि अध्यात्म शुद्धिके लिये उसे वन्दन करना उचित है।

इस प्रकार उनके उपदेशसे अपने सम्यक्त्व रूप दर्पणको मांज कर विशेष रूपसे दर्शन (संप्रदाय) की पूजामें परायण हो, स्वस्थान पर आ कर ठहरा।

मंत्री तेजपालका आबू पर मन्दिर बनवाना।

१८८) ज्येष्ठ भ्राता मं० लूणिग ने परलोक प्रयाणके अवसर पर यह धर्मव्यय माँगा था कि—'अर्बुद गिरि पर विमल वसहिका में मेरे योग्य एक देवकुलिका बनवाना।' उसके मरने पर, वहाँके गोठियों (पुजारियों) से उस मंदिरमें भूमि न पा कर, विमल वसहिका के समीप ही चन्द्रावती के स्वामीसे नई भूमि ले कर वहीं पर तीनों भुवनके चैत्योंमें (मन्दिरोंमें) शलाका (अग्रगण्य) जैसा लूणिग वसहिका प्रासाद बनवाया। उसमें श्री नेमिनाथके बिंबकी स्थापना करके उसकी प्रतिष्ठा कराई। उस मन्दिरके गुण-दोषकी विचारणा करनेके लिये जावालिपुर से श्री यशोवीर मंत्रीको बुला कर मंत्री तेजपाल ने प्रासादके विषयमें अभिप्राय पूछा। उसने प्रासादके बनानेवाले स्थपति (कारीगर) शोभनदेव से कहा—'रंगमण्डपमें शालभंजिका (पुतली) की जोड़ीकी विलास-घटना, तीर्थंकरके प्रासादमें सर्वथा अनुचित और वास्तुशास्त्रसे निषिद्ध है। इसी तरह भीतरी गृहके प्रवेश द्वारमें सिंहोंका यह तोरण देवताकी विशेष पूजाका विनाश करने वाला है। तथा पूर्वज पुरुषोंकी मूर्तियोंसे युक्त हाथियोंके सम्मुख प्रासादका होना, बनाने वालेके भविष्यके विनाशका सूचक होता है। इस विज्ञ कारीगरके हाथसे भी जो इस प्रकारके अप्रतीकार्य ये तीन दोष हो गये, यह भावी कर्मका दोष है।' ऐसा निर्णय करके वह जैसे आया था वैसे ही चला गया। उसकी स्तुतिके ये श्लोक हैं—

२२०. हे यशोवीर, यह जो चंद्रमा है वह तुम्हारे यशरूपी मोतियोंका मानों शिखर है; और इसमें जो लांछन है वह इस यशकी रक्षाके लिये (किसीकी नजर न लग जाय इस लिये) किया गया रक्षा (राख) का 'श्री' कार है।

२२१. हे यशोवीर, शून्य जिनके मध्यमें हैं ऐसे ये बिन्दु यों तो निरर्थक ही हैं; पर तुम रूप एक (अंक) के साथ हो जानेसे ये संख्यावान बन जाते हैं।

२२२. हे यशोवीर, जब विधाताने चंद्रमामें तुम्हारा नाम लिखना आरंभ किया तो उसके पहलेके दो अक्षर (यशः) ही भुवनमें नहीं समा सके।

[१६३] यशोवीरके निकट न कोई [कवि] माघ की प्रशंसा करता है न कोई अभिनंद का अभिनंदन करता है; और कालिदास भी उसके पास कलाहीन (निस्तेज) मालूम देता है।

[१६४] यशोवीर मंत्रीने सज्जनोंके साक्षात् (सम्मुख), मुखमें रही दांतोंकी ज्योतिके बहाने ब्राह्मी (सरस्वती) को और हाथमें रही हुई सोनेकी मुद्राके बहाने श्री (लक्ष्मी) को प्रकाशित किया।

[१६५] इस चौहान नरेन्द्रके मंत्रीने वैसे गुण अर्जन किये जिनसे ब्रह्मा और समुद्रकी पुत्रियों (लक्ष्मी और सरस्वती) को भी नियंत्रित कर दिया।

[१६६] जहाँ लक्ष्मी है वहाँ सरस्वती नहीं है, जहाँ ये दोनों हैं वहाँ विनय नहीं है। पर हे यशोवीर, यह बड़ा आश्चर्य है कि तुममें ये तीनों विद्यमान हैं।

[१६७] वस्तुपाल और यशोवीर ये दोनों सचमुच ही वाग्देवता (सरस्वती) के पुत्र हैं, नहीं तो फिर इन दोनोंका दान करनेमें एक ही जैसा स्वभाव कैसे होता।

इस प्रकार श्री शत्रुंजयादि तीर्थोंकी यात्राका प्रबंध समाप्त हुआ।



वस्तुपालका शंखराजके साथ युद्ध करना।

१८९) स्तंभतीर्थमें, सइद (सय्यद) नामक नौवित्तिक (जहाजी व्यापारी) से श्री वस्तुपाल की लड़ाई होने पर उसने भृगुपुरसे शंख नामक महा-साधनिकको वस्तुपाल के विरुद्ध कालरूप कालको बुलाया। यह समुद्रके किनारे डेरा डाल कर रहा। उसने देखा कि नगरका प्रवेशमार्ग शंकुसे (जन समूहसे) संकीर्ण है और व्यापारियोंके जहाज धनसे भरे हुए हैं। अपने बंदी (दूत) को भेज कर वस्तुपालके साथ लड़ाईके दिनका निश्चय किया। जब उसने चतुरंग सेना सजाई तो वस्तुपालने गुड जातिके भूणपाल नामक सुभटको आगे किया। भूणपालने प्रतिज्ञा की कि—'शंखके सिवा यदि दूसरे पर प्रहार करूं तो मैं उसे कपिला गौपर ही प्रहार करना मानूंगा'। फिर बोला कि 'अरे शंख कौन है?' इस वचनके उत्तरमें प्रतिभट (शत्रुके सैनिक) ने कहा कि 'मैं शंख हूं' तो उसे तलवारकी धारसे मार गिराया; फिर इसी रीतिसे दूसरे और तीसरेको भी गिरा देनेके बाद बोला कि—'समुद्रके नजदीक होनेसे क्या शंखोंकी संख्या बढ़ गई है?' तो महासाधनिक शंखने ही उसकी सुभटताकी प्रशंसा करते हुए बुलाया। उसने फिर भालेके अग्रभागसे उस पर प्रहार करते हुए एक ही प्रहारमें घोड़ेके साथ उसे मार डाला। इसके बाद, समरभूमिके प्रेमी श्री वस्तुपालने, सिंहकिशोर जैसे गजयूथको त्रासित करता है वैसे, शंखके सैन्यको त्रस्त बना कर दसों दिशाओंमें भगा दिया। [पीछे सइद नौवित्तिक भी मार डाला गया।] फिर भूणपाल की मृत्युके स्थान पर मंत्रीने भूणपालेश्वर प्रासाद बनवाया।

(यहाँ P प्रतिमें निम्नलिखित श्लोक अधिक पाये जाते हैं—)

[१६८] धनुषकी प्रत्यञ्चासे काण्डों (बाणों) की तो सन्धि (मुलह और योग) हुई पर उन वीरप्रकाण्डोंमें परस्पर विग्रह हुआ।

[१६९] बाणोंने स्पष्ट ही दुर्जनोंकी सी चेष्टा की। क्यों कि, वे कानमें तो दूसरेके लगते थे और जीवननाश दूसरेका करते थे।

[१७०] तरकसको छोड़ कर बाण वेगसे धनुष पर आ जाते थे। यही तो सुपक्षोंका (१ अपने पक्षवालोंका, २ पक्षसहितों—बाणोंका) चिह्न है कि विपत्कालमें आगे रहते हैं।

[१७१] विपक्षीय वैरियोंके वक्षःस्थलमें लग कर बाण पार निकल गये। [सो ठीक ही है] क्यों कि धीरोंके हृदयमें निर्गुणोंको चिर अवस्थान नहीं प्राप्त होता।

[१७२] मंत्रीशके हाथके संसर्गसे तलवार भी मानों दानके लिये उद्यत हो कर, बद्धमुष्टि होते हुए भी, क्षण भरमें कोश (१ म्यान, २ खजाना) का उत्सर्ग (१ त्याग, २ दान) किया।

[१७३] वीरोंके चरण और हाथ रूपी कमलसे पूजित हो कर रणभूमि भी मानों दूर्वारूपी केशोंके साथ सिररूपी फलोंका दान करने लगी।

(१९०) इसके बाद, एक दूसरे अवसर पर, श्री सो मे श्व र कवि ने यह काव्य कहा —

२२३. हे सचिव ! आपका [बनाया हुआ] तड़ाग जिसमें चक्रवाक पक्षी चल रहे हैं और आति (एक प्रकारके पक्षी जिसको देशभाषामें आड कहते हैं) क्रीडा कर रहे हैं; वह, अत्यन्त प्रशंसित ऐसे हंसोंसे, कमल को छू कर हिलोर्ले लेती हुई तरंगोंसे, अन्तर्गभीर जलोंसे, और चंचल बकोंके ग्रास होने के भयसे छिपे हुए मत्स्योंसे, तथा किनारे पर उगे हुए वृक्षोंके नीचे सुखपूर्वक शयन किये हुई स्त्रियोंके गाये हुए गीतोंसे शोभित हो रहा है।

इसमें प्रयुक्त ' आति ' शब्दके पारितोषिकमें[1] मंत्रीने कविको सोलह हजार द्रम्मका दान दिया।

कभी फिर (किसी समय) मंत्री चिन्तातुर हो कर नीचे जमीनकी ओर देख रहे थे तब सो मे श्व र ने यह यह समयोचित पद्य पढ़ा—

२२४. वाग्देवीके मुखकमलके तिलकसमान हे व स्तु पा ल ! ' तुम्ही एक मात्र भुवनके उपकारक हो '—ऐसी सज्जनोंकी बात सुन कर जो लज्जासे सिर झुका कर तुम पृथ्वीतलकी ओर देख रहे हो, सो मैं मानता हूं कि, अब स्वयं पातालसे बलिका उद्धार करनेके लिये कोई मार्ग ढूंढ रहे हो।

मंत्रीने इस काव्यके पारितोषिकमें आठ हजार दिया। इसी तरह पंडितोंके बार बार इस श्लोकके ये तीन चरण पढ़ने पर कि—

२२५. ' कर्णने दानमें चर्म दिया, शिविने मांस दिया, जीमूतवाहनने जीव और दधीचि ने अस्थि दिये '— इस पर पण्डित ज य दे व ने समस्या पदकी नाईं [चौथा पद] कहा—'और वस्तु पालने वसु (धन) दिया।' ऐसा कहने पर उसने ४ सहस्र पाया।

इसी प्रकार सूरि (अपने धर्मगुरु) के शिष्योंकी प्रतिलाभनाके अवसर पर, किसी दरिद्र ब्राह्मणने याचना की, तो उसके नियुक्त आदमियोंसे उसे एक वस्त्र मिला; जिसे पा कर उसने मंत्रीके आगे यह समयोचित पद्य पढ़ा—

२२६. हे देव ! कहीं रूई, कहीं सूत, और कहीं कपासके बीज लगी हुई यह हमारी पटी (पिछोडी) तुम्हारे शत्रुओंकी स्त्रियोंकी कुटीकी तरह दिखाई दे रही है।

इसके पारितोषिकमें मंत्रीने १५ सो दिया। इसी तरह बा ल चं द्र नामक पंडितने मंत्रीके प्रति यों कहा—

२२७. हे मंत्रीश्वर ! गौरी तुम्हारे ऊपर अनुरागवती है, वृष तुम्हारा आदर करता है, भूतिसे तुम युक्त हो और गुणवान् शुभगण तुम्हारे पास हैं। सो निश्चय ही ईश्वर (शिव) की सभी कलाओंसे युक्त ऐसे तुम्हें अब बालचंद्रको ऊंचा स्थान देना उचित है। तुमसे बढ़ कर समर्थ और कौन है। [गौरी, वृष, भूति, गण, और बालचंद्र—इन शब्दोंके प्रसिद्ध अर्थके अतिरिक्त, गौरी स्त्री, धर्म, वैभव, सेना और बोलने वाला कवि ये क्रमशः श्लेषके अर्थ हैं।]

कविके ऐसा कहने पर मंत्रीने उसके आचार्य पदकी स्थापनाके लिये चार हजार द्रम्म खर्च किया।

मंत्रीका मुसलमान सुलतानके साथ मैत्री संबन्ध बांधना।

१९१) किसी समय म्लेच्छराज (मुसलमान) सुलतानके गुरु मालिम (मौलवी) को मख (मक्का) तीर्थकी यात्राके लिये वहाँ आया हुआ जान कर उसे पकड़नेके इच्छुक श्री ल व ण प्र सा द और वी र ध व ल ने मंत्री ते ज पा ल से सलाह पूछी। उसने इस प्रकार बताया—

[1] यह आति शब्द प्रायः संस्कृत साहित्यमें कहीं नहीं प्रयुक्त हुआ है इसलिये इसका अभिनव प्रयोग किया गया देख कर मंत्रीने यह दान दिया मालूम देता है।

२२८. धर्मछलका प्रयोग करके जो राजलोक ऋद्धि प्राप्त करते हैं, वह मांके शरीरको बेंच कर पैसा कमानेके समान होती है।

इस नीतिशास्त्रके उपदेशद्वारा, उन वृक (भेडियों) जैसोंके मुंहसे उस छाग (बकरे) को छुड़ा कर और पाथेयादिसे सत्कृत कर, तीर्थयात्रा करनेके लिये रवाना किया। कुछ सालके बाद, वह जब वापस लौट कर आया तो मंत्रीने फिर उचित सत्कारसे उसका आदर किया। इससे वह अपने स्थान पर पहुंच कर [अपने सुलतानके सामने] तीर्थयात्राका बखान करनेके बदले श्री वस्तुपालके गुणोंका ही बखान करने लगा। इसके बाद वह सुलतान प्रतिवर्ष मंत्रीके पास यमलकपत्र (सन्धिपत्र) भेज कर अनुरोध करता रहा कि–'हमारे देशके आप ही अध्यक्ष हैं, और हम तो आपके सेवभृत् (सामंत) हैं। सो हमें किसी करणीय कार्यका आदेश दे करके सदा अनुगृहीत किया करें'। मंत्रीने शत्रुंजय तीर्थके भूमिगृहमें रखनेके लिये सुलतानकी अनुज्ञासे, उसके देशमेंकी मम्माणी नामक खानमेंसे, सैंकड़ों प्रयत्न करके युगादि जिनकी एक मूर्ति बनवा कर मंगवाई। सुलतानने अपनेको धन्य मानते हुए वह कार्य करने दिया। वह मूर्ति जब पर्वत पर चढ़ाई जा रही थी तो मूलनायकके अमर्षसे पर्वत पर बिजली गिरी। इसके बाद मंत्रीश्वरको फिर जीवनान्त तक शत्रुंजय देवके दर्शन नहीं हुए।

अनुपमाकी दानशीलता।

१९२) किसी पर्वके अवसर पर, अनुपमा देवी मुनियोंको यथेच्छ निरुपम दान दे रही थी। तब किसी राजकार्यकी उत्सुकताके कारण स्वयं वीरधवलदेव उस समय वहां आ पहुंचा तो उसने देखा कि श्वेतांबर साधु-यतियोंकी भीड़से मकानका दरवाजा मानों डटा हुआ है। तब विस्मयसे मनमें चकित हो कर वह मंत्रीसे बोला– 'हे मंत्री, अभिमत देवताकी भाँति, सदा ही इन साधुओंका इस तरह सत्कार क्यों नहीं किया करते? अगर तुमसे न हो सकता हो तो आधा हिस्सा मेरा रहे। मेरा ही सदा दिया जाय – ऐसा तो इस कारणसे नहीं कहता कि वैसा करने पर तो फिर तुमको यह वृथा ही परिश्रम करने जैसा लगे।' उसके मुखचंद्रसे इस प्रकार वाणीरूप किरणके निकलने पर मंत्रीके मनका संताप दूर हुआ और वह बोला–'स्वामीका आधा हिस्सा क्या? सब कुछ तो आप ही का है।' यह कह कर उसने वस्त्र निछावर किया।

१९३) एक दूसरी वार, यतिदानके अवसर पर, अनेक मुनियोंकी भीड़के कारण नमन करती हुई श्रीमती अनुपमाकी पीठ पर घीसे भरा हुआ एक पात्र गिर पड़ा। यह देख कर मंत्री तेजपाल बड़ा कुपित हुआ। उसे कुपित देख कर अनुपमाने यह कह कर सान्त्वना की कि–'आप जैसे स्वामीके प्रभावसे ही तो मुनिजन द्वारा गिराये गये पात्रके घीसे मेरा यह अभ्यङ्ग (घृतस्नान) हुआ।' इस प्रकार उसकी पूर्णदानकी विधिसे चमत्कृत हो कर, मंत्रीने पञ्चाङ्ग प्रसाद पूर्वक उसकी इस उचित उक्तिसे प्रशंसा की–

२२९. प्रिय वाणीपूर्वक दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमायुक्त शूरता और त्यागसहित धन, ये चार भद्र (भले) कार्य दुर्लभ हैं।

इस प्रकारकी अनेक दानवार्ताओंसे प्रसिद्धी पाने वाली उस देवीकी जैनाचार्योंने इस तरह स्तुति की–

२३०. लक्ष्मी चञ्चला है, शिवा चण्डी (कोपना) है, शची सौतदोषसे दूषित है, गंगा निम्नगामिनी है और सरस्वती वाचाल है। इस लिये अनुपमा तो सब तरहसे अनुपमा ही है।

*

वीरधवलकी रणशूरता।

१९४) एक दूसरी बार, लवणप्रसाद और वीरधवल पंचग्रामके [स्वामीके] साथ संग्राम करने पर तुले। तब थी वीरधवलकी पत्नी जयतलदेवी सन्धिविधानकी इच्छासे अपने पिता प्रतीहारवंशीय श्री

शोभनदेवके पास गई तो उसने कहा कि क्या–' वैधव्यसे डर कर सन्धि कराने आई हो ? ' तब अपने वीरचूडामणि पति वीरधवलको उन्नत बनाती हुई वह बोली–'केवल पितृकुलके विनाशकी आशंकासे मैं बारंबार ऐसा कह रही हूं। जब वह वीर घोड़े पर चढ़ेगा तो ऐसा कौन सुभट है जो उसके सामने खड़ा रहेगा ? ' यह कह कर वह सक्रोध चली गई। लड़ाई छिड़ने पर वीरधवलको [एक सख्त] प्रहार लग गया और उसकी व्यथासे व्याकुल हो कर वह जमीन पर गिर पड़ा। तब सुभटोंका दिल कुछ हिम्मत हारता हुआ देख, लवणप्रसादने अपनी सेनाको यह कह कर उत्साहित किया कि–'अरे! यह तो केवल एक ही सैनिक गिरा है ' ऐसा कह कर समस्त शत्रुसेनाका खेलमें ही समूल ध्वंस कर दिया। सत्त्वगुणसे दीप्त वह वीरधवल [इस प्रकार] रणरसिकताके वश हो कर इक्कीस बार अपने पिताके आगे गिरा था।

वीरधवलकी मृत्यु।

२३१. वह भीम जैसा पराक्रमशाली (वीरधवल) पञ्चग्रामकी समरभूमिमें घावोंके लगने पर घोड़ेकी पीठ परसे गिरा, पर गर्वसे नहीं।

१९५) वीरधवलकी आयुके अन्तमें, प्रतितीर्थ (परलोक) को प्रस्थान करने वालेको दान करनेसे एकका हजार गुणा मिलता है, इस रूढ़िके अनुसार तेजपालने अपने सारे जन्मका पुण्य दान कर दिया। फिर जब वह स्वामी चल बसा तो उसके सौभाग्यके अतिशयसे १२० सेवकोंने सहगमन किया। तब तेजपालने प्रेतवनमें पहरेदारोंको बिठा कर लोगोंको उस आग्रहसे निषिद्ध किया।

२३२. अन्यान्य ऋतु तो आती-जाती रहती हैं पर ये दो ऋतु आ कर फिर नहीं गई। वीरधवल वीरके बिना प्रजाओंकी आंखोंमें वर्षा और हृदयमें ग्रीष्म [सदाके लिये रह गई।]

१९६) इसके बाद, मंत्रीने वीरधवलके पुत्र वीसलदेवको राजपद पर अभिषिक्त किया।

*

अनुपमाकी मृत्यु।

श्रीअनुपमादेवीकी मृत्युके बाद श्रीतेजपालके हृदयमें जो शोककी गांठ बंध गई वह किसी तरह छूटती नहीं जान कर, वहां पर आये हुए श्रीविजयसेनसूरिसम समर्थ पुरुषके द्वारा वह विपत्ति शान्त कराई गई। कुछ चेतना होने पर लज्जित तेजपालसे सूरिने कहा–' हम इस अवसर पर तुम्हारी लीला देखने आये थे। तो वस्तुपालने पूछा कि–' वह क्या ? ' इस पर गुरुने कहा–' हमने शिशु तेजपालको ब्याहनेके लिये जब धरणिगके पाससे उसकी कन्या इस अनुपमाकी मंगनी की थी, तब स्थिरपत्र-दानके पश्चात् एकान्तमें उस कन्याकी विरूपताकी बात सुन कर, इसने उसका संबंध भंग होनेके लिये चन्द्रप्रभके मन्दिरके आहातेमें प्रतिष्ठित क्षेत्राधिपतिको आठ द्रम्म का भोग चढाना माना था। और इस समय उसके वियोगमें पागल हो गये हैं। इन दोनों वृत्तान्तोंमेंसे कौनसी बात सच्ची है ? ' इस प्रकार उस पुराने संकेतसे तेजपालने अपने हृदयको दृढ किया।

वस्तुपालकी मृत्यु।

१९७) फिर दूसरी बार, जब मंत्री वस्तुपाल पूर्णायु हुए तो शत्रुंजयकी यात्राकी इच्छा की। यह जान कर पुरोहित सोमेश्वर देव वहाँ आया। अमूल्य आसन देने पर भी जब वह नहीं बैठना चाहा तो कारण पूछने पर बोला–

२३३. श्री वस्तुपालके अन्न-दान, जल-पान, और धर्मस्थानोंसे तो पृथ्वीतल, और यशसे सारा आकाश-मंडल ढंक गया है। इसलिये स्थानाभावके कारण नहीं बैठ रहा हूं।

उसकी इस वाणीके निमित्त उचित पारितोषिक दे कर, उससे विदा मांग कर, मंत्रीने रास्तेमें प्रस्थान किया। आंकेवाळीया ग्रामकी एक गंवारु झोंपडीमें दाभकी चटाई पर बैठा हुआ, गुरुद्वारा आराधना करता हुआ आहारका त्याग करके, अन्तिम आराधनासे कलिमलका ध्वंस किया और अन्तमें युगादिदेवका ही जाप करता हुआ–

२३४. सज्जनोंके स्मरण करने लायक ऐसा कुछ भी सुकृत नहीं किया। केवल मनोरथ ही करते हुए हमारी यह आयु चली गई।

इस वाक्यके अन्तमें 'नमोऽर्हद्भ्यः नमोऽर्हद्भ्यः' (अर्हतोंको नमस्कार) इन अक्षरोंके उच्चारणके साथ ही सप्तधातुबद्ध इस शरीरका त्याग करके, स्वकृत उत्तम पुण्यफलको भोगनेके लिये, उसने स्वर्ग लोकको अलंकृत किया। उसके संस्कार स्थान पर छोटे भाई तेजपाल और पुत्र जैत्रसिंहने श्री युगादि देवकी दीक्षावस्थाकी मूर्तिसे अलंकृत स्वर्गारोहण प्रासाद बनवाया।

२३५. आज, मेरे पिताकी आशा फलवती हुई, माताके आशीर्वादका अंकुर उगा, जो मैं इस प्रकार अखिन्नभावसे युगादि देवकी यात्रा करनेवाले लोगोंको [अपनी शक्ति-भक्तिसे] संतुष्ट कर रहा हूं।

२३६. जिन लोगोंने राजाकी सेवाके पापसे कुछ भी पुण्यार्जन नहीं किया उन्हें हम धूलिधावक (धूलके ढोहनेवाले) लोगोंसे भी अधमतर समझते हैं।

ये तथा अन्य काव्य स्वयं वस्तुपाल महाकविके रचित हैं।

२३७. स्वामिके गुणोंसे पूर्ण वह वीरधवल एक निस्सीम प्रभु हुआ, विद्वानों द्वारा भोजराजका विरुद प्राप्त करने वाला वस्तुपाल एक अद्वितीय कवि हुआ, प्रधानवर्गमें वह तेजपाल अद्वितीय मंत्रीश्वर हुआ और गुणोंसे अनुपम ऐसी अनुपमा उसकी स्त्री एक साक्षात् लक्ष्मी हुई।

*

इस प्रकार श्री मेरुतुंगाचार्यविरचित प्रबंधचिन्तामणिमें श्री कुमारपाल भूपाल प्रमुख–मंत्रीश्वर वस्तुपाल और तेजःपालतकके महापुरुषोंके यशका वर्णन करनेवाला यह चौथा प्रकाश समाप्त हुआ।

---

११. प्रकीर्णक प्रबन्ध।

अब, यहाँपर पूर्वोक्त महापुरुषोंके चरित्रके वर्णनमें जो रह गये हैं उन तथा [वैसे ही] अन्य चरित्रोंका वर्णन इस प्रकीर्णक-प्रकाशमें प्रारंभ किया जाता है। वे इस प्रकार हैं—

विक्रमादित्यकी पात्रपरीक्षा।

१९८) उस अवन्ती पुरीमें, जिसके निकट ही सिप्रा नदी बह रही है, प्राचीन कालमें श्री विक्रमादित्य राजा राज्य करता था। उसने सुना कि उसके सत्रागारमें विदेशी लोग भोजनके अनन्तर जो सो जाते हैं वे फिर नहीं उठ पाते (अर्थात् मर जाते हैं); इससे विस्मयसे मनमें चकित हो कर राजाने कारण जानना चाहा। उन सभी पथिकोंको दूसरे दिन वस्त्रसे ढँकवा दिया और उस चिरनिद्राकी बातको गुप्त रखनेकी आज्ञा दी। फिर दूसरे दिन आये हुए अन्य पथिकोंको उसी तरह भोजन कराया और सायंकाल उनको उष्ण जल तथा चरणोंमें लगानेके लिये तेल दिया गया। जब वे सब सो गये तो, महानिशामें राजा अपने हाथमें कृपाण ले कर स्वयं एकान्त जगहमें छिप कर खडा रहा। वहाँ कोनेमें पहले धुआँ निकला, फिर आगकी लपट और फिर प्रकाशित फणाकी रत्नप्रभासे अलंकृत सहस्रफण ऐसे नागको निकलते देखा। आश्चर्यसे चमत्कृत हो कर राजा जब सविस्मय उसे देखता है, तो वह फणींद्र उस दिनके सोये हुए प्रत्येक पथिकसे पूछने लगा कि — वह किस चीज़का पात्र है ? उनमेंसे प्रत्येकने, किसीने अपनेको धर्म-पात्र, गुण-पात्र, तपःपात्र, रूप-पात्र, काम-पात्र या कीर्ति-पात्र इत्यादि इत्यादि बताया। अज्ञान और यदृच्छावश उसके शापसे उन्हें मरते देख श्री विक्रमने आगे बढ कर हाथ जोड कर कहा —

> २३८. हे भोगीन्द्र (नागराज), पृथ्वीपर बहुधा गुणके योगसे पात्र हुआ करते हैं। किन्तु शुद्ध श्रद्धासे जो पवित्र बना हुआ मन है वही परम पात्र है।

इस प्रकार नागराजने अपने ही आशयको कहनेवाले विक्रमादित्यके प्रति कहा कि ' वर माँगो '। श्री विक्रमादित्यने कहा कि ' इन पथिकोंको जीवित बनाओ '। इस प्रकारका वरदान माँगने पर उसने फिर विशेष भावसे उसे संतुष्ट किया।

इस प्रकार श्री विक्रमकी पात्रपरीक्षाका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

मरे हुए नंदका पुनर्जीवन।

१९९) एक बार, पाटलीपुत्र नगरमें, अत्यन्त आनन्दपरायण ऐसे नंद राजाकी मृत्यु होनेपर, उसी समय एक कोई ब्राह्मण वहाँ आया और दूसरेके शरीरमें प्रवेश करनेवाली विद्याके द्वारा राजाके शरीरमें प्रवेश कर गया। उसीके संकेतसे एक दूसरा ब्राह्मण राजाके द्वारपर आ कर वेदोच्चार करने लगा, जिससे राजा जी उठा और फिर उसने अपने कोषाध्यक्षोंसे उसको एक लाख स्वर्ण दिलाया। इस वृत्तान्तको जान कर महामंत्रीने सोचा कि यह नंद पहले तो बडा कृपण था और इस समय बडा उदार हो रहा है सो यह बात चिंतनीय है। ऐसा जान कर उस ब्राह्मणको पकड़वा लिया और पर-काय-प्रवेशकारी विदेशीको सर्वत्र ढुँढवाया तो यह माऌम पडा कि, कहीं पर एक मुर्देकी, कोई एक आदमी रखवाली कर रहा है। तो उसे चितापर चढवा कर भस्म करवा दिया। अपने अतुलनीय मतिवैभवसे उस पूर्व नंदको ही अपने महान् साम्राज्यमें फिर निभा लिया।

इस तरह यह नंद प्रबंध समाप्त हुआ।

*

राजा शिलादित्य और मल्लवादी सूरिका प्रबन्ध।

२००) खेडा नामक महास्थानमें, देवादित्य नामक ब्राह्मणकी अति रूपवती बालविधवा सुभगा नामक पुत्री, प्रातःकाल सूर्यको अर्घ्यकी अञ्जलि दान किया करती थी। तब, अज्ञातरूपसे सूर्यसे उसका संयोग हो गया और वह भोगरूप हो कर उससे उसको गर्भ रह गया। माँ बापने किसी तरह इस असमंजस कार्यको जब जाना तो उसे कुछ कह-सुन कर अपने स्वजनोंद्वारा वलभी नगरीके पास छुडवा दिया। वहाँ उसको पुत्र पैदा हुआ, जो क्रमशः बड़ा हो कर, समवयस्क शिशुओंके साथ खेलते समय, इस प्रकार अपमानित किया जाने लगा कि, वह विना बापका है। तब, माँके पास आ कर उसने अपने पिताके बारेमें पूछा तो उसने कहा कि 'मैं कुछ नहीं जानती'। इससे अपने जीवनसे विरक्त हो कर उसने मर जाना चाहा, तो फिर सूर्यने प्रत्यक्ष हो कर हाथमें कंकड दे कर उसकी सान्त्वना की। उन्होंने कहा कि—'तुम्हारी मातासे सम्पर्क करनेवाला मैं सूर्य तुम्हारा पिता हूँ। यह कंकड अगर अपने किसी पराभव-कारीपर फेंकोगे तो शिलारूप हो कर उसको लगेगा; पर किसी निरपराधको मारोगे तो फिर तुम्हारा ही अनर्थ करेगा। यह कह कर सूर्य तिरोधान हो गये। फिर अपने कितने एक पराभवकारियोंको मारता हुआ वह 'शिलादित्य' इस सार्थक नामसे प्रसिद्ध हुआ। उस नगरके राजाने उसकी परीक्षा करनी चाही। तो उसी शिलासे उसे मार कर वह स्वयं राजा बन गया। सूर्य नारायणके प्रसादसे प्राप्त ऐसे अश्वपर चढ कर वह सदैव आकाश-चारीकी नाईं स्वेच्छया विहार करता हुआ अपने पराक्रमसे दिगन्तको आक्रान्त कर रहा। फिर चिर कालतक राज्य करके, जैन मुनियोंके संसर्गसे उसने सम्यक्त्व रत्नको प्राप्त किया और श्री शत्रुंजय तीर्थकी अपरिमित महिमाको जान कर उसका जीर्णोद्धार किया।

बौद्धों और जैनोंमें वाद-विवाद।

२०१) एक बार, उस शिलादित्यके सभापतित्वमें, बौद्धों और [जैन] श्वेताम्बरोंने परस्पर इस शर्तपर शास्त्रार्थ किया कि—जो [पक्ष] पराजित होगा उसको देश-त्याग करना पडेगा। श्वेताम्बरोंके पराजित होनेपर शिलादित्यने उन सबको अपने देशसे निकाल दिया; पर अपरिमित गुणवान् ऐसे उसके भानजे मल्ल नामक क्षुल्लककी उपेक्षा दृष्टिसे देखते हुए बौद्धोंने उसे वहीं रहने दिया। और इस प्रकार अपनेको विजयी मानते हुए वे शत्रुंजय तीर्थपरके श्रीयुगादि देवको बौद्ध रूपसे पूजने लगे। क्षत्रिय कुलमें उत्पन्न होनेके कारण उस मल्लके दिलमें वह वैरभाव बस रहा, और वह उसका प्रतीकार सोचता रहा। जैन दर्शन (आचार्यों) के अभावमें उन्हीके पास वह अध्ययन करने लगा और दिन रात उसीमें चित्त तल्लीन रखने लगा। एक बार, बड़ी गर्मीकी अर्द्ध रात्रिको, जब समस्त नागरिक लोग नींदसे आँखें बंद किये हुए थे, वह दिनमें अभ्यस्त शास्त्रको जोर-जोरसे याद करने लगा। उसी समय आकाशमार्गसे जाती हुई श्री भारती देवीने पूछा कि—'मीठे क्या हैं?' उसने चारों ओर देख कर, बोलनेवालेको न पा कर उत्तर दिया 'वल्ल'। फिर ६ महीनेके बाद उसी समय लौटती हुई वाग्देवीने फिर पूछा 'किसके साथ?'; तब पुरानी बातको स्मरण करके उसने प्रत्युत्तर दिया कि 'घी और गुडके साथ'। उसकी स्मरण रखनेकी इस अद्भुत शक्तिसे चमत्कृत हो कर [भारतीने] आदेश दिया कि 'वर माँगो'। उसने इस आशयकी याचना की कि 'सौगतों (बौद्धों) को पराजित करनेके लिये किसी प्रमाण शास्त्रके देनेकी कृपा करो।' इसपर भारतीने 'नय-चक्र' ग्रन्थ अर्पण करके उसे अनुगृहीत किया। इसके बाद भारतीके प्रसादसे तत्त्व समझ कर शिलादित्यकी अनुज्ञासे, बौद्धोंके मठमें 'तृणोदक' फेंक कर, राजसभामें पूर्वोक्त शर्तके साथ उनसे शास्त्रार्थ किया। जिसके कण्ठपीठमें वाग्देवता अवतीर्ण हुई थी ऐसे उस श्री मल्लने शीघ्र ही उन्हें निरुत्तर कर दिया। बादमें राजाज्ञासे उन सब बौद्धोंको देशमेंसे निकाला गया और जैनाचार्योंको बुलाया गया। इस प्रकार बौद्धोंको जीतनेके बाद वह मल्ल 'वादी' कहलाने लगा और फिर राजाकी प्रार्थनापर

गुरुने उसे सूरिपद दिया । तबसे उनका नाम हुआ श्री मल्लवादी सूरि । गणभृतके समान वे प्रभावक हुए। अतएव श्री संघने, नवाङ्गवृत्तिकार श्री अभयदेव सूरिने जिसको प्रकट किया उस स्तम्भनक तीर्थकी विशेष उन्नतिके लिये, उनको चिन्तायक (व्यवस्थापक) रूपमें नियुक्त किया।

इस प्रकार यह मल्लवादि प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

वलभी नगरीके विनाशकी कथा ।

२०२) मरुमण्डलके पल्लीग्राममें काकू और पातक नामक दो भाई रहते थे । उनमें जो छोटा था वह धनवान् था और जेठा उसीके घर नौकर था । किसी समय, वर्षा ऋतुके निशीथ कालमें, दिनभरमें किये हुए कामसे थक कर काकू सोया हुआ था । छोटेने कहा – 'भैया, अपनी [खेतकी] क्यारियोंमें पानी भर गया है, उनकी मेंड टूट गई है और तुम निश्चिंत बैठे हो ' यह कह कर उसे फटकारा । वह उसी समय, बिछौना छोड कर और कँधेपर कुदाल रख कर, अपने नसीबकी निंदा करता हुआ जब वहाँ पहुँचा, तो देखा कि कई मजदूर टूटी हुई मेंडोंकी मरम्मत कर रहे हैं। उन्हें ऐसा करते देख उसने पूछा कि ' तुम लोग कौन हो ?' उन्होंने कहा कि ' आपके भाईके चाकर हैं । ' इसपर उसने पूछा कि ' भला मेरे भी कोई चाकर कहीं है ? ' तो उन्होंने कहा कि ' वलभी नगरीमें हैं '। वह फिर अवसर पा कर अपने सर्वस्वको गड्डमें बाँध कर, उसे सिरपर उठा कर, वलभीमें आया। वहाँ सदर दरवाज़ेके समीपवर्ती आभीरोंके पास निवास करने लगा । उन्होंने अत्यन्त गरीब समझ कर उसे 'रंक' कहना शुरू किया । रंक घासकी झोंपडी बना कर, और घासहीसे उसे छा कर रहने लगा । उसी समय कोई कार्पटिक (जोगी) कल्प-पुस्तकके आधारसे, रैवत शैलसे एक तुंबेमें सिद्धरस ले कर, मार्ग अतिक्रम करता हुआ [चला आ रहा था । अचानक] उस तुंबेमेंसे ' काकूय तुम्बडी ' (काकूकी तुम्बडी) इस प्रकारकी अशरीरिणी वाणी हुई; जिसे सुन कर वह बड़ा विस्मित हुआ; और फिर डरता हुआ उस छिपे हुए बनियेके घरमें, यह सुन कर कि वह एक रंक है, निश्शङ्क-भावसे उस रसवाले तुंबेको थातीके रूपमें रख दिया । वहाँसे वह सोमेश्वरकी यात्राके लिये चला गया । एक दिन [रंकने] किसी पर्वके अवसरपर देखा कि, पाक करनेके लिये चूल्हेपर चढ़ाई हुई कड़ाहीमें, तुंबेसे निकले हुए रसके गिरनेसे वह सोनेकी हो गई है । इससे उस बनियेने मनमें निर्णय किया कि यह सिद्धरस है । तब उसने उस तुंबेके साथ अपने घरका सब कुछ सामान अन्यत्र पहुँचा कर घरको आग लगा कर भस्म कर दिया । नगरके दूसरे दरवाजेपर बड़ा मकान बनवा कर वहीं रहने लगा । एक बार, किसी घी बेंचनेवालीसे घी खरीद रहा था । खुद ही तौल करते हुए उसने देखा कि उसमेंसे घी खूटता ही नहीं है । नीचे देखा तो घीके पात्रके नीचे कृष्णचित्रक [लता] की कुण्डलिका नजर आई । फिर किसी प्रकार छल करके उसे उठा लिया और इस प्रकार उसे चित्रकसिद्धि प्राप्त हो गई । इसी तरह अगणित पुण्यके प्रभावसे उसे सुवर्णपुरुषकी सिद्धि भी प्राप्त हुई । इस प्रकार तीनों प्रकारकी सिद्धिसे कोटि-कोटि संख्या धन एकत्र करके भी, उसने अत्यन्त कृपणतावश, किसी सत्पात्र या तीर्थमें उदारता पूर्वक उसका खर्च करना तो दूर रहा, बल्कि सब लोगोंके सर्वस्वके हरण करनेकी इच्छासे, उस लक्ष्मीको सकल विश्वके लिये कालरात्रिके समान प्रकट किया ।

२०३) ऐसेमें, राजाने अपनी लड़कीके लिये, उसकी लड़कीकी रत्नखचित सुवर्णकी कंघीको जबर्दस्ती उससे छिनवा ली । इससे विरोधी हो कर वह स्वयं म्लेच्छ मण्डलमें गया और वलभीके राज्यका नाश करानेके लिये, करोडोंका सोना दे कर, वहाँके बलवान राजाको देशपर चढा लाया । उस (रंक) के द्वारा अनुपकृत, उस राजाके एक छत्रधरने, रात्रिके शेष भागमें, जब कि राजा सुप्त-जाग्रत अवस्थामें था, पहलेसे ही ठीक किये हुए,

किसी पुरुषके साथ इस प्रकार बात-चीत करने लगा कि–' हमारे स्वामीको अच्छी सलाह देनेमें कोई चूहा भी नहीं दिखाई देता; जिससे यह अश्वपति महीमहेन्द्र (राजा) एक मामूली बनियेके कहनेसे–जिसका न तो कोई कुल-शील ही मालूम है और न यही मालूम है कि वह कोई अच्छा आदमी है या बुरा; और फिर जो नामसे भी और कर्मसे भी रंक बना हुआ है–सूर्यपुत्र शिलादित्यके प्रति चल पड़े हैं ! ' उसकी इस यथार्थ पथ्य बातको सुन कर, चित्तमें कुछ विचार करके, राजाने उस दिन आगे प्रयाण करनेमें विलंब किया। तब, उस सशंक रंकने, इस बातको निपुणभावसे जान कर, उस छत्रधरको काञ्चन-दान दे कर सन्तुष्ट किया। तब फिर दूसरे दिन [वही छत्रधर बोला] चाहे विचार करके या विना विचारे ही यह राजा प्रयाण करके चल पड़ा हो; पर अब ' सिंहके उठाये हुए पैरकी नाई ' इस कहावतके अनुसार आगे चलनेपर ही इसकी शोभा है। क्यों कि–

२३९. खेल ही में जिसने हाथियोंका दलन किया है उस सिंहको, लोग चाहे मृगेन्द्र कहें चाहे मृगारि, ये दोनों बातें सिंहके लिये तो लज्जाजनक ही हैं।

और फिर इस पराक्रमशालीके सामने ठहर भी कौन सकेगा ? ' उसकी ऐसी बातोंसे उत्साहित हो कर, भेरीके निनादसे पृथ्वी और आकाशके अंतरालको बधिर करते हुए उस म्लेच्छराजने आगे प्रयाण किया। इधर उस अवसरपर वलभीस्थित चन्द्रप्रभका बिंब, अम्बा और क्षेत्रपालके साथ, अधिष्ठायक देवताके बलसे आकाश मार्ग द्वारा शिवपत्तन (सोमनाथ)की भूमिको प्राप्त हुआ। रथपर अधिरूढ श्री वर्धमानकी अनुपम प्रतिमाने, अदृश्य भावसे, अधिष्ठातृ देवताके बलसे रास्तेमें चलते हुए आश्विनी (आश्विन मासकी) पूर्णिमाके दिन श्रीमालपुरको अलंकृत किया। अन्य अतिशयशाली देवमूर्तियोंने भी यथोचित भूभागको अलंकृत किया। उस नगरकी अधिष्ठातृ देवताने श्रीवर्धमान सूरिके साथ, उत्पातज्ञापनके समय [इस तरहकी बातें कीं]–

२४०. ' हे देवीके सदृश सुंदरि, तुम किस कारणसे रो रही हो सो बताओ '; ' हे भगवन्, मैं वलभीपुरका भंग देख रही हूँ। इसका प्रमाण यह है कि आपके साधु लोग भिक्षामें जो दूध पावेंगे वह तब रक्त हो जायगा। [फिर यहाँसे जा कर] मुनियोंको उसी स्थानपर रहना चाहिये जहाँ पानी भी दूध हो जाय '।

इसके बाद, जब वह उत्पात हुआ और नगरीके पास म्लेच्छ सेना आ गई, तो देशभंगके पापपंकमें फसे हुए रंकने धन दे कर, पंच शब्दवाले वाद्योंके बजानेवालोंको अच्छी तरह फोड़ लिया। जब शिलादित्य घोड़े-पर चढने लगा तो उन्होंने ऐसा प्रतिशब्द किया, जिससे वह घोड़ा, गरुडकी भाँति आकाशमें उड़ गया। यह देख कर राजा शिलादित्य किंकर्तव्यमूढ हो रहा और उन म्लेच्छोंने उसे मार डाला। फिर तो म्लेच्छोंने खेल ही में वलभी शहरको तहस-नहस कर दिया।

२४१. विक्रमादित्यके समयसे ३७५ वर्ष बाद, वलभी नगरीका यह भंग हुआ।

इस प्रकार शिलादित्य राजाकी उत्पत्ति, रंककी उत्पत्ति और उसके द्वारा किये गये वलभी-भंगका यह प्रबन्ध समाप्त हुआ।

*

श्रीपुंजराजकी उत्पत्ति।

२०४) श्रीरत्नमाल नगरमें रत्नशेखर नामक राजा हुआ। वह किसी समय, दिग्विजयसंबंधी यात्रासे वापस लौट कर अपने नगरमें आया। प्रवेशके महोत्सवके समयमें, बाजारकी शोभाकी सजावट देखता हुआ जब जा रहा था, तब एक हाटमें काठके पात्र (कठौत) सहित कुदालको रखे हुए देखा। महलमें प्रवेश करनेके बाद जब महाजन लोग उपहार ले कर आये तो उनसे पूछा कि ' आप सब लोग सुखी तो हैं ! ' तो उन्होंने कहा–

' नहीं महाराज, हम लोग सुखी नहीं हैं।' उनके ऐसा कहनेपर विभ्रमसे भ्रान्तचित्त हो कर उनको बिदा किया; और फिर कभी किसी बातकी विचारणाके समय नगरके प्रधान जनोंको बुला कर पूछा कि 'आप लोग क्यों सुखी नहीं हैं?' और साथ ही काठके पात्रके साथ उस कुदालको ऊंचा करके वैसे रखनेका कारण भी पूछा। उन्होंने कहा कि–' जहाँपर स्वामीने काष्ठपात्र आदि देखा है वह धनी, अपने धनकी गिनती न जान कर, कठौतसे ही उसकी नापको जतानेका संकेत करता है। और हम लोग सुखी नहीं हैं सो तो आपके सन्तानाभावसे। यह नगर कोटिध्वजोंसे भरा है। आपने चिर कालतक इसका लालन किया है, पर अब कौन इसे उन्नत बनावेगा?' यह सुन कर राजाने अपने अंतःपुरकी पुरानी रानियोंको वंध्या समझ कर नई रानीके करनेकी इच्छा की। तब उसकी अनुमति पा कर वे लोग, पुष्य नक्षत्रवाले रविवारके दिन, पुष्यार्क योगमें, किसी बडे शकुन शास्त्रज्ञके साथ शकुनागारमें गये। वहाँ पर, एक मात्र लकडीका बोझ उठा कर अपना पेट भरनेवाली ऐसी कंगालिन स्त्रीको देखी जिसके सिरपर दुर्गा बैठी थी और जो आसन्नप्रसववाली स्थितिमें थी। शकुनज्ञने उसकी अक्षतादिसे पूजा की। उन लोगोंने कारण पूछा तो उसने कहा कि–' अगर बृहस्पतिका मंतव्य सच है, तो इसके गर्भमें जो कोई लडका है वही यहाँका भावी राजा होगा'। इस बातको असंभव समझ कर उन्होंने लौट कर मानोन्नत उस राजाको, ज्यों की त्यों, वह सब बात कह सुनाई। राजाने इससे मनमें खिन्न हो कर, अपने निजी मनुष्योंको भेज कर, उस स्त्रीको जमीनमें गाड देनेकी आज्ञा की। उन्होंने जा कर उससे कहा कि 'इष्ट देवताका स्मरण कर लो'। उनके ऐसा कहनेपर वह मरणभयसे व्याकुल हो उठी। इतनेमें संध्याके हो जानेसे उनकी अनुज्ञा ले कर वह शौच जानेके लिये गई, तो वहीं उसको पुत्रका प्रसव हो गया। वह उसे वहीं छोड कर लौट आई। फिर उसको जमीनमें गाड कर उन मनुष्योंने राजाको उसकी सूचना दी। इधर एक हिरनी उस बालकको, नित्य दोनों शाम दूध पिला कर, बडा करने लगी। उस समय, महालक्ष्मी देवीके सामनेकी टंकशालामें जो नया शिक्का पडने लगा उसमें हिरनीके चार पैरके नीचे एक बालककी प्रतिकृति पडती हुई देखी गई, जिसके कारण लोगोंमें यह बात फैलने लगी कि कोई नया राजा उत्पन्न हुआ है। इससे उस रत्नशेखरने पता लगवा कर उस बच्चेको मरवा डालनेके लिये चारों ओर अपने सैनिक भेजे। उन्होंने प्रयत्न करके उस बालकको प्राप्त किया। लेकिन बाल-हत्याके भयसे स्वयं उसे न मार कर, नगरके सदर दरवाजेके रास्तेमें इस तरह रख दिया, कि जिससे सायंकालके समयमें, उस मार्गसे निकलनेवाली गायोंकी खुरीकी चोटोंसे आप ही आप वह मर जाय और लोकमें कोई अपवाद न हो। उसे वहाँ छोड कर, कुछ दूर खडे हुए, वे जब देखने लगे तो उतनेमें वहाँ गायोंका एक झुंड आता उन्हें दिखाई दिया। पर, मानों मूर्तिमंत पुण्यके पुंजकी नाई उस बालकको देख कर वे सब गायें, पैरोंसे स्तंभितकी नाईं, खडी रह गईं। इसके बाद, पीछेसे आगे आ कर एक साँडने, वृषभ जैसे ही तेजस्वी उस बालकको, अपने पैरोंके बीचमें रख कर, सब गायोंको आगे चलनेके लिये प्रेरित किया। बादमें, इस वृत्तान्तको सुन कर, राजा उन सामन्त और नगर लोकोंके द्वारा, उस बालकको मँगा कर, अपने पुत्रकी नाईं उसका पालन करने लगा। 'श्रीपुञ्ज' ऐसा उसका नाम रखा गया।

*

श्रीमाताकी उत्पत्तिका वर्णन।

२०५) इसके बाद, जब वह रत्नशेखर राजा स्वर्गगामी हुआ तो श्रीपुञ्जका अभिषेक हुआ। कुछ दिन राज्य करनेपर उसके एक पुत्री पैदा हुई। यद्यपि वह सर्वांग सुन्दर थी पर मुँह उसका बानरका-सा था। इससे वह विषयविमुख हो कर वैराग्यके साथ रहने लगी और श्रीमाताके नामसे प्रसिद्ध हुई। एक बार उसे अपने पूर्व जन्मका स्मरण हो आया। पिताके सामने उसने उसे निवेदन किया कि–' मैं पूर्व जन्ममें अर्बुद

गिरि पर वानरकी स्त्री थी। वहां पर किसी एक वृक्षकी, एक शाखासे दूसरी शाखापर कूदते हुए, कोई अगम्य शल्यसे तालुमें विद्ध हो कर मैं मर गई। उसीके नीचे कामिक नामक तीर्थका कुण्ड था जिसमें मेरा धड़ गिर पड़ा। उस तीर्थके पुण्य-प्रभावसे मेरा यह शरीर तो मनुष्यका हो गया; किन्तु वह मेरा मस्तक अभी तक वैसे ही पड़ा है इसलिये मैं वानरके मुखवाली हुई हूं। श्रीपुंज ने यह सुन कर अपने विश्वसनीय आदमियोंको [वहाँ भेज कर] उसके शिरको कुण्डमें डाल देनेके लिये आदेश दिया। उन्होंने जा कर चिर कालसे उसी प्रकार पड़े हुए मुखको वैसा ही देखा और फिर उसे कुण्डमें डाला। तब वह श्रीमाता मनुष्यके मुखवाली हो गई। फिर माता-पिताकी अनुज्ञा ले कर अर्बुदजितनी संख्यावाले गुणोंकी धारक वह, उस अर्बुदपर्वत पर जा कर तपस्या करने लगी। एक बार, एक आकाशचारी योगीने उसे देखा तो वह उसके सौन्दर्यसे हत-हृदय हो कर आकाशसे नीचे उतरा और प्रेमालाप-पूर्वक उससे कहने लगा कि 'तुम मुझसे ब्याह क्यों नहीं कर लेती?'। उसके ऐसा पूछनेपर वह बोली कि–' इस समय रात्रिका पहला पहर व्यतीत हुआ है; चौथे पहरमें–जब तक मुर्गा न बोल उठे तब तकमें–अगर किसी विद्याके बलसे तुम बड़ी सुंदर ऐसी बारह पद्या (पत्थरकी सीढ़ियाँ) बनवा दो तो मैं तुमको वर दूँगी'। उसके ऐसा कहनेपर, तुरन्त ही उस कार्यके लिये उसने अपने चेटकोंके झुंडको नियुक्त किया और दो ही पहरमें वे सब पद्यायें बनवा दीं। पर इधर श्रीमाताने उतनेहीमें मुर्गेकी बनावटी आवाज कर दी। उसने आ कर कहा कि [पद्या तैयार है इससे अब] 'विवाहके लिये तैयार हो जाओ' तो इसपर श्रीमाताने कहा कि 'जब वे बन रही थीं तभी मुर्गेकी आवाज़ हो गई थी'। तो उसने कहा 'यह तो तुम्हारी मायाजालके बनाये हुए बनावटी मुर्गेकी ध्वनि थी; सो इसको कौन नहीं जानता'। ऐसा उत्तर देते हुए, नदीके किनारे अपनी बहनके द्वारा विवाहका उपहार उपस्थित कराया। श्रीमाताने ' सब विद्याओंका मूल जो यह त्रिशूल है इसे यहीं छोड़ कर विवाहके लिये तैयार रहो ' ऐसा कह कर उसे वहां बुलाया। प्रेमके वशमें हतचित्त हो कर वह वैसा ही करके उसके समीप आया। श्रीमाताने बनावटी कुत्ते बना कर उसके पैरों पर छोड़ दिये और हृदयमें त्रिशूलका आघात करके उसे मार डाला। इस प्रकार निःसीम शीलके साथ उसने अपनी सारी जिन्दगी बिताई। उस अखण्ड शीलाकी मृत्युके बाद, श्रीपुञ्ज राजाने वहाँपर शिखरके बिनाका एक प्रासाद बनवाया। क्यों कि ६–६ महीनेके बाद, उस पर्वतके अधोभागमें रहनेवाला अर्बुद नाग जब हिलता है तो वह पहाड़ काँपने लगता है। इसलिये यहाँके सभी प्रासाद शिखर रहित [बनाये जाते] हैं।

इस प्रकार श्री पुञ्जराज और उसकी पुत्री श्रीमाताका यह प्रबन्ध समाप्त हुआ।

■

चौडदेशके गोवर्धन राजाकी न्यायप्रियताका उदाहरण।

२०६) चौडदेशमें एक गोवर्धन नामक राजा हुआ। उसके यहाँ, सभामंडपके सामनेके खंभेमें न्याय घंटा बंधी हुई थी जो न्याय करानेके प्रार्थीजनोंके द्वारा बजाई जा कर निनाद किया करती। एकबार उसके इकलौते कुमारके रथारूढ हो कर कहीं जाते समय, रास्तेमें अज्ञातभावसे एक गौका बछड़ा मर गया। उसकी माता गायने, आँखोंसे अजस्र आँसू बर्षाते हुए, अपने पराभवके प्रतीकारार्थ सींगोंसे वह न्याय-घंटा बजाई। अर्जुनके समान कीर्तिवाले उस राजाने, घंटाका झंकार सुन कर, गायका समूल वृत्तान्त जाना और अपने न्यायकी प्रतिष्ठाके लिये, प्रातःकाल रथारूढ हो कर, उस अपने एकमात्र प्रिय पुत्रको, उसी रास्तेमें रख कर, उस धेनुके समक्ष उसपर अपना रथ घुमाया। उस राजाके ऐसे सत्त्व और परम भाग्यसे रथका चक्र (पहिया) ऊपर हो उठा और वह कुमार नहीं मरा।

इस प्रकार यह गोवर्धननृपप्रबंध समाप्त हुआ।

■

पुण्यसार राजाका वृत्तांत।

२०७) कान्तीपुरीमें, प्राचीन कालमें, कोई पुराण नृपति, निरभिमान भावसे राज्य कर रहा था। एक बार वह राजपाटिकामें जानेके लिये निकला, तो उसके पीछे पीछे उसका परम-मित्र मतिसागर नामक महामात्य भी चला। रास्तेमें घोड़ा बिगड़ उठा और वह राजाको दूर ले भगा। साथकी चतुरंग सेना क्रमशः दूर दूर रह जाने लगी। पर अत्यंत वेगवाले घोड़ेपर चढ़ कर वह मंत्री उसके पीछे पीछे बहुत दूर तक चला गया। कितनी ही दूर चले जानेपर, राजा मार्ग लाँघनेके श्रमसे बिल्कुल थक गया और सुकुमारताके कारण रुधिरके दबावसे वहीं मर गया। मंत्रीने उसका अन्तकृत्य करके, उसके घोड़ेको और उसके वेशको साथ ले आ कर सायंकाल नगरमें प्रवेश किया। सीमान्तमें रहे हुए शत्रु राजाओंके भयसे राज्यको निर्विघ्न रखनेकी इच्छासे, उस राजा-ही-की उम्रके और रूपके जैसे एक कुम्हारको राजाका वह पोशाक पहना कर और उसी घोड़ेपर चढ़ा कर महलमें प्रवेश कराया। फिर रानीको सारा हाल बता कर, सचिवने पुण्यसार नाम दे कर उसीको राजा बनाया। इस प्रकार कितनाक काल बीत जानेपर, वह मंत्री सेनाका बड़ा समूह ले कर किसी शत्रु राजाके ऊपर चढ़ाई ले गया और अपने एक खूब विश्वस्त सहायकको राजाकी सेवामें रख गया। बादमें वह राजा निरंकुश हो कर, वेश्यापतिकी तरह, स्वैर विहार करता हुआ समस्त कुम्हारोंको अपने पास बुला और मिट्टीके हाथी, घोड़े, बैल आदि बना कर उनके साथ चिर काल तक खेला करने लगा। ऐसा करनेपर समस्त राजलोक उसकी अवहेलना करने लगे जिसको सुन कर स्कंधावारसे (लड़ाईके मैदानसे) कुछ नौकरोंको साथ ले कर मंत्री वहाँ आया और राजासे इस प्रकार बोला कि—'यदि अपने स्वभावकी चल-विचलताके कारण, तुम उस कुम्हारपनकी बातको न भूल कर किसी मर्यादाको नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें देशसे निकाल कर किसी अन्य कुम्हारके बालकको राजा बना दूँगा'। उसकी इस उक्तिसे क्रुद्ध हो कर राजा बोला—'अरे, कौन है यहाँ!' उसके ऐसा कहते ही वे मिट्टीके पुतले सजीव हो उठे और मंत्रीको चिपट पड़े। इस असंभव जैसे महान् आश्चर्यको देख कर और राजाके प्रकट प्रभावसे विस्मित हो कर मंत्री उसके चरणोंपर गिर पड़ा और अपनेको छुड़ानेकी अभ्यर्थना करने लगा। फिर राजाके वैसा ही करने (छुड़ा देने) पर भक्ति-पूर्वक मंत्रीने कहा—'आपको साम्राज्य देनेमें मैं निमित्त मात्र हूँ। आपके पुण्यप्रभावसे पुतले सचेतन हो कर इस प्रकार आज्ञाकारी हो रहे हैं, सो इसमें पूर्वजन्मके कर्म ही कारण हैं; और इसलिये आपका यह जो पुण्यसार नाम है वह सार्थक है।

इस प्रकार यह पुण्यसारका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कर्मसार राजाका प्रबन्ध।

२०८) प्राचीन कालमें, कुसुमपुर नगरका नंदिवर्धन नामक राजकुमार, देशान्तर भ्रमणके कौतुकसे माता-पितासे बिना पूछे ही अपने छत्रधरके साथ चल पड़ा। यदृच्छासे घूमता हुआ, एक प्रातः कालमें, किसी गाँवमें जा पहुँचा। वहाँ, पुत्रहीन राजा मर गया था, इससे सचिवोंने अभिषिक्त करके पट्टहस्तीको किसी नये राजाकी तलाशमें सारे नगरमें घुमाया। संयोगवश वह वहांपर आया और उस निकटस्थ नृप कुमारको, दुःस्वप्नकी नाई भूल कर,ससंभ्रम उस हाथीने छत्रधरका अभिषेक किया। प्रधानोंने बड़े महोत्सवके साथ उसको नगरमें प्रवेश कराया। उसने राजकुमारको भी वैसे ही ठाठके साथ अपने साथ ले कर महलमें प्रवेश किया। बादमें—'मैं राजलोकका स्वामी हूं; लेकिन तुम मेरे स्वामी हो' इस प्रकारके अन्तरंग वचनोंसे वह उस राजकुमारकी आराधना करता रहा। पर वह राजा राजगुणोंके अयोग्य था और बेहद बेवकूफ था। वर्णाश्रम धर्मके पालनके परिश्रममें अनभिज्ञ और प्रजाका पीड़क हो कर ज्यों ज्यों वह राज्य करता था त्यों त्यों, शंकरके

शिरमें रहे हुए चंद्रमाकी तरह, वह प्रतिदिन क्षीण होता जाता था। उस कुमारको वैसा देख कर, किसी समय राजाने दुर्बलताका कारण पूछा तो उसने कहा कि–' दुर्बुद्धिके कारण तुम जो प्रजाको पीड़ा दे रहे हो यह अत्यन्त अनुचित कर्म है और इस कारण मैं कृश होता जा रहा हूं '।

२४२. जिसे मूर्खोंके बीच वास करना पड़े तथा जिसके स्वामिके कानोंके पास दुर्जनोंकी जीभ लगती हो, उसका यदि जीवन बना रहे तो उसे ही लाभदायक समझना चाहिए; क्षीण होनेमें तो विस्मय ही काहेका।

सो मैंने इस गाथाके अर्थको सत्य कर बताया है। उसके इस कथनके अनन्तर राजाने कहा कि–' इस पापनिरत प्रजाके अपुण्योदयने ही तो, निश्चय करके भविष्यमें इसको पीड़ित करनेके लिये, मुझे राजा बनाया है। यदि विधाता इस प्रजाके भाग्यमें परिपालना लिखता तो उस समय पट्ट हस्ती तुम्हारा ही अभिषेक करता।' उसकी इस उक्ति और युक्ति रूप औषधोंसे उस कुमारका वह रोग दूर हो गया और वह शरीरसे पुष्ट होने लगा।

इस प्रकार यह कर्मसार प्रबंध समाप्त हुआ।

*

राजा लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका प्रबंध।

२०९) **गौडदेशकी** लखणावती नगरीमें लक्ष्मणसेन नामक राजा अपने उमापतिधर नामक सर्वबुद्धिनिधान ऐसे सचिवके साथ, सारी राज्य व्यवस्थाका विचार करते हुए, राज्य करता था। बादमें वह, मानों अनेक मातंग (हाथी) के सैन्यके संगसे मदान्धता धारण करके, किसी वेश्याके संगरूप कलङ्कपंकमें डूब गया। उमापतिधरने यह व्यतिकर जाना तो, प्रकृतिसे क्रूर होनेके कारण स्वामीको बेकाबू समझ कर, प्रकारान्तरसे उसे समझानेके लिये, उसने सभामंडपके भारपट्टपर, गुप्त-भावसे इन कविताओंको लिख दिया –

२४३. हे जल! शीतलता तो तुम्हारा ही गुण है, और फिर तुम्हारी स्वाभाविकी स्वच्छताकी तो बात ही क्या कही जाय–तुम्हारे ही स्पर्शसे अन्य अपवित्र वस्तुयें पवित्र होती हैं। इससे बढ़कर और तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है कि तुम्हीं तो शरीरधारियोंके जीव हो। फिर अगर तुम्हीं नीच पथसे जाते हो तो तुम्हें रोकनेमें कौन समर्थ है?

२४४. हे शिव! तुम अगर छोटे बैल पर चढ़ते हो तो उससे दिग्गजोंकी क्या हानि है? तुम अगर साँपोंका आभूषण पहनते हो तो इससे सोनेका क्या नुकसान है? अगर अपने शिरपर इस जड़ किरण चन्द्रमाको धारण करते हो तो उससे त्रैलोक्यके दीपक सूर्यका क्या बिगड़ता है? तुम जगत्‌के ईश हो तो फिर हम तुम्हें क्या कहें?

२४५. यद्यपि कटे हुए ब्रह्मशिरको वह धारण करता है, यद्यपि प्रेतोंसे उसकी मित्रता है, यद्यपि रक्ताक्ष हो कर मातृकाओंके साथ वह क्रीडा करता है, यद्यपि स्मशानमें वह प्रीति रखता है और यद्यपि सृष्टि करके वह उसका संहार कर देता है, तो भी, मैं उसमें मन लगा कर भक्ति-पूर्वक सेवा करता हूँ। क्यों कि त्रिलोक शून्य है और वह जगतका एक-मात्र ईश्वर है।

२४६. इस महान् प्रदोषकालमें तुम्हीं एक मात्र राजा (चंद्र) हो, और इसी लिये तो क्या कमलोंकी लक्ष्मीको बंद करके कुमुदोंकी श्रीको बढ़ा नहीं रहे हो? पर इसमें जो मधुपका निवास है और पुष्पोंकी पंक्तिमें इसकी जो प्रतिष्ठा है उसको दूर करनेवाले तुम कौन हो? क्यों कि वह तो स्वयं विधाता भी करनेमें समर्थ नहीं है।

२४७. हे हार ! तुम सद्वृत्त, सद्गुण, महार्ह, और अमूल्य हो कर प्रियाके घन ऐसे स्तनतटके उपयुक्त तुम्हारी सुंदर मूर्ति है । किन्तु हाय, पामरीके कठोर कंठमें लग कर टूट जानेसे तुमने अपनी वह गुणिता खो दी है ।

किसी राजासभाके अवसरपर आये हुए राजाने इन कविताओंको देखा और उनका अर्थ समझ कर भीतर ही भीतर मंत्रीसे द्वेष धारण करने लगा । क्यों कि–

२४८. आजकल प्रायः सन्मार्गका उपदेश करना, उसी तरह कोपका कारण होता है, जैसे नकटेको दर्पण दिखाना ।

इस न्यायसे कुपित हो कर राजाने उसे पदभ्रष्ट कर दिया । इसके बाद उस राजाने, एक वार, राजपाटिकासे लौटते हुए रास्तेमें दुर्गतिग्रस्त, निरुपाय और एकाकी ऐसे उस उमापतिधरको देखा, तो क्रोधपूर्वक उसे मार डालनेके लिये, हस्तिपालके द्वारा उस पर हाथी चलवा दिया । तब उसने महावतसे कहा कि–' जब तक, मैं राजाके सामने कुछ कह पाऊँ तब तक, तुम वेगसे हाथीको जरा थाम रखो ' । उसकी बात सुन कर उसने वैसा ही किया; तो फिर वह उमापतिधर बोला–

२४९. जिसको, सज्जन ऐसे गुरु लोग उपदेश नहीं देते उस शिवका कैसा हाल हो रहा है ?–नंगा फिरता है, शरीरमें धूल लगाता है, बैलकी पीठपर चढ़ता है, साँपोंसे खेला करता है, और जिसमेंसे लोहू टपकता है ऐसे हाथीके चमडेको पहन कर नाचता है । इस प्रकारके आचारबाह्य तथा अन्य कई प्रकारके [निंद्य] आचरणोंसे वह प्रेम रखे करता है ।

इस प्रकार उसके विज्ञानरूपी वचनाङ्कुशसे उस राजाका मनरूपी हाथी वश हुआ, और वह अपने चारित्रके विषयमें पश्चात्ताप करता हुआ अपनी खूब निंदा करने लगा । धीरे धीरे उस वासनासे मुक्त हो कर उसने फिरसे उसे अपना प्रधान बनाया ।

इस प्रकार लक्ष्मणसेन और उमापतिधरका यह प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

काशीके जयचन्द्र राजाका प्रबन्ध ।

२१०) काशीनगरीमें जयचन्द्र नामक राजा, महती साम्राज्य लक्ष्मीका पालन करता हुआ, पंगु (लंगड़ा) इस विरुदको धारण करता था । कारण यह था कि बडे भारी सैन्य समूहसे व्याकुलित होनेके कारण, वह गंगा-यमुना नदीरूप लाठीके सहारे विना कहीं आ-जा नहीं सकता था । वहाँ रहनेवाले किसी शालापतिकी सूहव नामक पत्नी, जिसने अपने सौन्दर्यसे तीनों लोकके स्त्रीजनोंको जीत लिया था, किसी समय भयानक ग्रीष्म ऋतुमें जलकेलि करके गंगाके किनारे खडी थी । तब उस खञ्जननयनाने देखा कि एक साँपके शिरपर खंजन पक्षी बैठा है । वहीं पर नहानेके लिए आये हुए किसी ब्राह्मणके पैरों पड़ कर उसने उस असंभव शकुनका विचार पूछा । उस नैमित्तिकने कहा कि–'अगर मेरा सदा आदेश मानना मंजूर करो तो मैं इसका विचार निवेदन करूँ, नहीं तो नहीं ' । उसने वैसा करनेकी प्रतिज्ञा की, तो ब्राह्मणने कहा कि–' आजसे सातवें दिन तुम इस राजाकी पटरानी होंगी '–ऐसा कह-सुन कर वे दोनों यथा-स्थान चले गये । जिस दिनके लिये निमित्तज्ञने निर्णय दिया था उसी दिन राजपाटिकासे लौटते हुए राजाने, किसी एक गल्लीमें अगण्य लावण्यसे सुभग अंगवाली उस शालापतिकी स्त्रीको खड़े देखा । उसे अपने चित्तका सर्वस्व चोरनेवाली

---

१ इस पद्यमें प्रयुक्त सद्वृत्त, सद्गुण और गुणित्व ये शब्द प्रसिद्ध अर्थके अतिरिक्त श्लेषसे हारके पक्षमें इन अर्थोंके वाचक हैं–सद्वृत्त=अच्छी गोलाईवाला; सद्गुण=अच्छे धागेवाला; गुणित्व=धागेकी बनावटवाला ।

समझ कर उसने अपने पास रख लिया और पटरानी बनाया। इसके बाद उस कृतज्ञाने ब्राह्मणके प्रति की हुई अपनी प्रतिज्ञाका स्मरण करके राजासे उस विद्याधर नामक ब्राह्मणको बुलानेके लिये प्रार्थना की। राजाने डुग्गी पिटवा कर विद्याधर नामक ब्राह्मणको बुलवाया तो उस नामके सात सौ ब्राह्मण आ कर उपस्थित हुए। उनमेंसे उस एकको पहिचान कर अलग बैठाया और बाकी सबको यथोचित सत्कारके साथ बिदा किया गया। बादमें उस विपत्तिग्रस्त विद्याधरसे राजाने कहा कि–'जो इच्छा हो माँगो'। राजाके आदेशसे प्रमुदित हो कर उस ब्राह्मणने 'सदैव उसकी अंगसेवा' की प्रार्थना की। राजाने स्वीकार करके, उसके असीम चातुर्यकी पर्यालोचना करते हुए उसे सर्वाधिकारके भारका धारण करनेवाला धुरन्धर पद दिया। वह क्रमशः सम्पत्तिशाली बन गया। अपने अन्तःपुरकी बत्तीस सुंदरियोंके लिये ऊँची जातिके कर्पूरके बने हुए नित्य नये आभरण बनवाता और यह कह कर कि पुराने आभरण निर्माल्य हैं उन्हें एक छोटी कुईमें डलवा देता। इस प्रकार साक्षात् देवतावतारकी नाई दिव्य भोगोंको भोगता हुआ [नित्य] अठारह हजार ब्राह्मणोंको यथेच्छ भोजन दान करनेके पश्चात् स्वयं भोजन करता।

२११) इसके बाद, विदेशी राजाके ऊपर चढ़ाई करनेके लिये राजाकी आज्ञासे, चतुर्दश विद्याओंके ज्ञाता विद्याधरने नाना देशोंमें घूमते हुए, एकबार एक ऐसे देशमें जा कर डेरा दिया जहाँ जलानेके लिये इन्धन (लकड़ी आदि) नहीं था। तब उन ब्राह्मणोंकी रसोईके समय, रसोईयोंके वस्त्र तेलमें भिगो कर उन्हींको इन्धन बना कर नित्यकी भाँति ही उनको भोजन कराया। इस तरह शत्रुओंको जीत कर जब वह लौट कर वापस नगरके समीप आया तो मालूम हुआ कि, पिण्याक (भोजन) के बनानेकी इच्छासे जो दुकूल जलाये गये, उससे राजा कुपित हो गया है। इससे उसने अपने घरको तो याचकोंके द्वारा लुटवा दिया और स्वयं तीर्थयात्राके लिये निकल पड़ा। राजा भी फिर पीछे जा कर उसका अनुनय करने लगा, पर उसने स्वाभिमानवश, अपनी उस (भोजन बनानेकी) इच्छाके कारण राजाका वैसा आशय (क्रोधयुक्त भाव) हो गया था यह बता कर, जैसे तैसे उसकी अनुमति ले कर अपना अन्त साधन किया।

२१२) अनन्तर, सूहवदेवीने राजासे अपने पुत्रके लिये युवराज पदवी माँगी। राजाने कहा कि– 'रखेलिनके लड़केको हमारे वंशमें राज्य नहीं दिया जाता'। इससे उसने राजाको मारनेके लिये म्लेच्छोंको बुलवाया। उस स्थान पर रहनेवाले पुरुषों (राजदूतों) से इस बातका हाल जान कर, राजाने एक दिगंबर भिक्षुकसे, जिसने पद्मावतीसे वर प्राप्त किया हुआ था, आदर निमित्त (कोई मांत्रिक उपाय) पूछा। उसने राजाको विश्वास पूर्वक कहा कि–'पद्मावतीका आदेश म्लेच्छागमनके विरुद्ध है'। इसके अनन्तर कुछ दिनके बाद, यह सुन कर कि म्लेच्छ नजदीक आ गये हैं, राजाने उस दिगम्बरसे फिर पूछा कि यह 'क्या बात है?' तो उसने उसी रातको राजाके सामने ही पद्मावतीको होमादि देना आरम्भ किया। तब उसकी उस उत्तम आकर्षण-विद्याके बलसे, होमकुण्डकी ज्वालाओंमें प्रत्यक्ष हो कर, पद्मावतीने तुरुष्कों (तुर्कों) के आगमनका निषेध ही बताया। तब फिर उस क्रुद्ध दिगम्बरने उसके कान पकड़ कर अत्यन्त क्रोधसे कहा कि–'म्लेच्छ सेनाके निकट आ जानेपर भी तूं ऐसी मिथ्या बात बोल रही है'। इस तरह फटकारी जानेपर उसने कहा कि–'तूं जिस पद्मावतीको अति भक्तिके साथ यह पूछ रहा है वह तो हमारे प्रतापके बलसे कहीं भाग गई है। मैं तो उस म्लेच्छराजकी कुलदेवी हूं। मिथ्या बोल कर लोगोंमें विश्वास पैदा करके, उन्हें म्लेच्छोंके द्वारा विश्वास (प्राण-रहित) कराती रहती हूं'। ऐसा कह कर वह तिरोहित हो गई। बादमें प्रातःकालमें ही म्लेच्छ सेना द्वारा वाणारसी नगरीका घिरा जाना राजाने जान पाया। उनके धनुर्घोंके टंकारोंमें, राजाके चौदह सौ नगाड़ोंकी आवाज कहीं डूब गई और म्लेच्छ सेनाके भयसे

मनमें व्याकुल हो कर उस सूहवदेवीके पुत्रको अपने हाथीपर बैठा कर (उसके साथ) राजा गंगाके जलमें डूब मरा।

इस प्रकार यह जयचन्द्रका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

जगद्देव क्षत्रियका प्रबंध।

२१३) त्रिविध वीरश्रेष्ठत्वको धारण करनेवाला जगद्देव नामक एक क्षत्रिय वीर हुआ। वह श्री **सिद्धराजके** द्वारा खूब सम्मानित होता था। फिर भी उसके गुणरूप मंत्रके वशीभूत हो कर शत्रुमर्दन ऐसे राजा **परमर्दीने** जब उसे आग्रहपूर्वक अपने यहां बुलाया, तो पृथ्वीरूप रमणीके केशकलापके समान उस कुन्तल देशमें वह गया। दरवाजेपर पहुँच कर जब उसने राजाको अपने आनेकी खबर भिजवाई उस समय [राजाके आगे] एक वेश्या, नंगी हो कर 'पुष्पचलन' नृत्य कर रही थी। वह तत्काल ही लज्जित हो कर अपनी चादर ओढ कर वहीं बैठ गई। जब राजाके द्वारपालने जगद्देवको प्रवेश कराया तो राजाने उठकर आलिंगन दिया और प्रिय आलापं आदि किया। इस सम्मानके बाद, फिर उसे प्रधान परिधानदुकूल और लाखोंकी कीमतके अतुलनीय ऐसे दो अन्य वस्त्र भेंट स्वरूप दिये। बादमें जगद्देवके महामूल्यवान आसन पर बैठ जानेपर सभाका संभ्रम जब दूर हुआ, तो राजाने उस वेश्याको नाचनेका आदेश किया। तब उस उचितज्ञा चतुर नारीने कहा कि-'संसारके एकमात्र पुरुष श्री जगद्देव नामक अब यहांपर विद्यमान हैं इसलिये इनके सामने विना वस्त्रके नाचते मैं लजाती हूं। स्त्रियां स्त्रियोंके सामने ही यथेष्ट चेष्टा कर सकती हैं'। उसकी इस लोकोत्तर प्रशंसासे मनमें प्रमुदित हो कर जगद्देवने राजाके दिये हुए उन दोनों वस्त्रोंको उसे दे डाला।

इसके बाद, जब परमर्दीके प्रासादसे जगद्देवको किसी एक देशका आधिपत्य मिला तो उसे सुन-कर उसका ऋणग्रस्त उपाध्याय उससे मिलने आया। उसने यह काव्य भेंट किया-

२५०. हम दो आदमीके पुण्यको मानते हैं-एक तो अक्षत्रिय विधिसे वालिको मारनेवाले किसी भगवान् (रामचंद्र) के, और दूसरे संगीतमें आसक्त कुन्तलपतिके। इनमेंसे एक (रामचंद्र) ने तो मरुत्तनय (हनुमान्) की दोनों सुंदर भुजाओं रूप कामधेनुका दोहन किया और दूसरे (कुन्तलपति) ने, हे प्रतिपक्ष (शत्रु) के लिये प्रत्यक्ष परशुराम, आप जैसे चिन्तामणिको प्राप्त किया।

इस काव्यके पारितोपिकमें उस स्थूललक्ष (लक्षण-सम्पन्न) ने आधा लाख दिया।

२५१. चकवेने पांथ (मुसाफिर) से पूछा कि 'हे मित्र! बताओ पृथ्वीमें बसने लायक वह कौनसा देश है जहाँपर चिर कालतक रात्रि नहीं होती?' (इसपर पांथने कहा कि) 'श्री जगद्देव नामक पुरुष जो सुवर्णदान कर रहा है उससे थोडे ही दिनोंमें मेरु पर्वत समाप्त हो जायगा। और फिर सूर्यका छिपना बंद हो कर एक मात्र अद्वैत ऐसा (विना रात्रिका) दिन ही बना रहेगा।

२५२. पृथ्वीकी रक्षा करनेमें दक्ष ऐसे दाहिना हाथवाले, दाक्षिण्यकी शिक्षा देनेमें गुरुके समान, कल्याणके स्थान और धन्यजन्म ऐसे जगद्दाता जगद्देवके विद्यमान होनेपर, विद्वानोंके घर भी ऐसे बन गये हैं कि जिनमें प्रतिदिन, मतवाले हाथी और घोड़ोंके बांधने योग्य वृक्षोंकी रस्सियां टूट जानेके कारण, नौकर लोग व्याकुल बने रहते हैं।

२५३. तुम्हारे जीवित रहते बलि, कर्ण और दधीचि जीते हैं और हमारे जीवित रहते दारिद्र्य जीता है।

२५४. हे जगदेव! हम नहीं जानते कि किसका हाथ थक जायगा—दरिद्रोंको रचते रचते ब्रह्माका या उन्हें कृतार्थ करते करते तुम्हारा।

२५५. हे जगदेव! इस जगद्रूप देवमंदिरमें प्रतिष्ठित तुम्हारे यशरूपी शिवलिंगके ऊपर [आकाशके] नक्षत्रोंने अक्षतका रूप धारण किया है।

[१७४] हे जगदेव! चारों समुद्रोंमें डुबकी मारनेके कारण तुम्हारी कीर्ति मानों ठंडीसे जकड गई है, इसलिये अब ताप लेनेके निमित्त वह सूर्य-मण्डलको चली है।

[१७५] क्षत्रियदेव श्री जगदेव भूपालका कल्याण हो! जिसके यशरूपी कमलमें आकाशने भ्रमरका रूप धारण किया।

[१७६] पृथ्वीमण्डलपर सुवर्ण वितरण करनेवाला तो एकमात्र जगदेव ही है और उसके मागनेवालोंकी संख्या हजारोंकी है—ऐसा सोच कर, ऐ मेरे मन विषाद मत करो! सूर्य कितने हैं और प्रबल अन्धकारराशिमें डूबते हुए जन-समूहको प्राणरक्षाके लिये यात्रामें प्रवृत्त उनके घोडोंके खुरसे खुदा हुआ यह दिङ्मण्डल कितना विस्तृत है!

जगदेवकी दी हुई 'न नवम्' (नया नहीं है) इस समस्याकी पूर्ति एक पंडितने इस प्रकार की—

२५६. समुद्र अगाध है, पृथ्वीमण्डल विशाल है, आकाश विभु है, मेरु पर्वत ऊँचा है, विष्णु प्रथित-महिमा है, कल्पवृक्ष उदार है, गंगा पवित्र है, चंद्रमा अमृतवर्षी है और जगदेव वीर है—ये सब (विशेषण-युक्त विशेष्य) नये नहीं हैं।

[१७७] तुझ समान जगद्दाता जगदेवके विद्यमान होनेपर, अब लोक साहसांक राजाके चरितके आश्चर्योंमें भी मन्दादर हो गये हैं तो फिर पार्थकी उस सच्ची कथाका कहना तो वृथा ही है। यह पृथ्वीमें बलि है, यह भूचर शक्र है। कृष्णको किसीने देखा नहीं, पृथ्वीमंडल कल्पवृक्षसे शून्य है। कामदेवका शोच न करना चाहिए। (—इस पद्यका भाव कुछ स्पष्ट नहीं ज्ञात होता.)

[१७८] हे जगदेव! तुम्हारा यशोरूप दुर्वार चंद्रमा जब निरंतर ही अपनी किरणश्रेणीको दसों दिशाओंमें विकीर्ण करने लगा, तब सारे भुवनको राकाके लिये भयका स्थान समझ कर, 'कुहू' शब्द है सो एक मात्र कोकिलके कंठका शरणभूत हो कर रहा। ('कुहू' का एक अर्थ अमावस्याकी रात्रि है, और दूसरा कोकिलका शब्द है। जगदेवके यशरूपी चंद्रमाका निरंतर प्रकाश बना रहनेसे अमावस्याका अभाव हो गया, इसलिये कुहू शब्दका व्यवहार केवल, कोकिलके शब्दमें रह गया।)

[१७९] हे प्रभु जगदेव! तुम्हारे रूपमें मुग्ध हो कर, वातायन पर स्थित सुभ्रू (सुंदर भ्रुवों वाली) रमणियोंकी कमलदलसे द्रोह करनेवाली नाचती हुई आँखें सभय, सालस, सगर्व, सार्द्र, तिरछी, चकित, भ्रान्त और आर्त की नाईं, कहा नहीं पड़तीं हैं।

इस प्रकारके बहुतसे काव्य हैं जो यथाश्रुत जानने चाहिये।

राजा श्री परमर्दी राजकी पट्टदेवीको जगदेवने अपनी भगिनी माना था। एक बार, राजाने सीमान्त भूपालको हरानेके लिए श्री जगदेवको भेजा। वह, वहाँ जब देवार्चन कर रहा था उसी समय छल करके आघात करनेवाले शत्रुने उसकी सेनामें उपद्रव मचाया। इसका हाल सुन कर भी वह जगदेव उस देवपूजासे बाहर नहीं निकला। प्रणिधि पुरुषोंके मुँहसे राजाने जगदेवका पराजय हुआ सुना तो यह अश्रुतपूर्व बात सुन कर

अपनी रानीसे परमर्दीने [व्यंग्य करते हुए] कहा कि–' तुम्हारा भाई समरवीरताका तो बडा अहंकार धारण करता है लेकिन शत्रुओं द्वारा आक्रान्त हो कर वह वहाँसे भाग भी नहीं सका '। राजाकी इस मर्मभेदिनी परिहास वाणीको सुन कर रानीने प्रातःकालमें पश्चिमकी ओर देखा। राजाने पूछा ' क्या देखती हो ? ' इस पर रानीने कहा कि ' सूर्योदय '। तब राजाने कहा ' पगली, क्या कभी पश्चिम दिशामें भी सूर्योदय होता है ? ' इसपर वह बोली – 'पश्चिममें सूर्योदयका होना असंभव हो कर भी, कभी विधिके विधानके विरुद्धका होना संभव है; पर क्षत्रियोंमें देव जैसे जगदेवका पराजय होना तो संभव ही नहीं'। इस प्रकार उस दम्पतीका प्रिय आलाप हो रहा था। इधर, देवपूजाके बाद जगदेवने ५०० सुभटोंके साथ उठ कर, उस शत्रु राजाकी सेनाका क्रीडामात्र-ही-में इस तरह दलन कर डाला, जिस तरह सूर्य अन्धकारके समूहका, सिंह-शाव गजयूथका और प्रचण्ड अन्धड़ घनघोर मेघमालाका दलन करता है।

२१४) वह परमर्दी राजा, जगतमें एक उदाहरणभूत ऐसे परम ऐश्वर्यका अनुभव करता हुआ, एक निद्राके अवसरको छोड कर, दिनरात अपने ओजके प्रकाशका करनेवाला छुरिका-अभ्यास (छुरी चलानेकी कलाका परिश्रम) किये करता था। भोजनके अवसर पर रसोई परोसनेमें व्यस्त ऐसे एक एक रसोईयेको नित्य ही निर्दय भावसे उस छुरिकासे काट डालता था। इस प्रकार सालमें ३६० रसोईयोंका वह संहार करता हुआ ' कोप-कालानल 'के बिरुदसे प्रसिद्ध हो गया।

> २५७. हे आकाश, तुम फैल जाओ; दिशाओ, तुम आगे बढ़ो; हे पृथ्वी, तुम और भी चौडी हो जाओ; आदिकालके राजाओंके यशका उज्जृंभण तो तुम लोगोंने प्रत्यक्ष किया ही है; अब परमर्दी राजाके यशोराशिका विकाश होनेसे देखो कि यह ब्रह्माण्ड, प्रस्फुटित बीजोंके कारण, फटे हुए दाडिमकी दशाको प्राप्त हो रहा है।

इत्यादि स्तुतियोंसे स्तुत हो कर वह राजा चिर कालतक साम्राज्यके सुखका अनुभव करता रहा।

२१५) उसका, सपादलक्षके राजा पृथ्वीराजके साथ युद्ध हुआ और संग्रामाङ्गणमें वह अपने सैन्यके पराजित होने पर, दिग्विमूढ हो कर, किसी एक दिशासे भागता हुआ अपनी राजधानीमें आया। उस परमर्दी राजाके द्वारा पूर्वमें अपमानित कोई सेवक, देश निकालेकी सजा पा कर पृथ्वीराजकी सभामें आया। उसके प्रणाम करनेके बाद राजाने उससे पूछा कि–' परमर्दीके नगरमें सुकृती लोग विशेष करके किस देवताकी पूजा करते रहते हैं ? ' इस प्रकार स्वामिके पूछनेपर उसने शीघ्र ही यह तत्कालोचित पद्य पढा–

> २५८. शिवकी पूजा करनेमें वह मंद है, कृष्णार्चन करनेकी उसे कोई तृष्णा नहीं है, दुर्गाको प्रणाम करनेमें वह स्तब्ध रहता है, विधाता रूपी ग्रह [उसके यहाँ पूजा न पानेसे] व्यग्र रहता है। ' हमारा स्वामी परमर्दी इसीको मुंहमें रख कर पृथ्वीराज नरपतिसे रक्षा पा सका है ' इस वातको सोच कर वहाँकी प्रजा तृण ही की पूजा किये करती है।

इस स्तुतिसे प्रसन्न हो कर राजाने उसे यथेष्ट पारितोषिक दे कर अनुगृहीत किया। उसने (पृथ्वीराज) इक्कीस बार म्लेच्छराजाको हराया था। तब बाईसवीं बार वही म्लेच्छराज अपनी दुर्धर सेनाके साथ चढ कर पृथ्वीराजकी राजधानीके पास आ कर ठहरा। मक्खीकी तरह वारवार उड़ा देनेपर भी, इस प्रकार, शत्रुको फिर फिर आते देख उसकी तरफ राजाकी उपेक्षाका होना जाना, तो स्वामीकी असीम कृपाका पात्र और उसके दूसरे शरीरके जैसा वह तुंग नामक क्षात्रतेजधारी वीरश्रेष्ठ, अपनी छायाके जैसे पुत्रके साथ म्लेच्छ-राजकी सेनामें जा घुसा। रातके समय उसने देखा कि उस शत्रुके तंबूके चारों ओर एक खाई खुदी हुई है जिसमें खेरकी लकड़ीकी आग धधक रही है। यह देख वह अपने पुत्रसे बोला–' मैं इस खाईमें कूद पड़ता हूं;

तुम मेरी पीठपर पैर रख कर जा कर म्लेच्छराजको मार डालो'। पिताके ऐसा आदेश करनेपर उसने कहा कि– 'यह काम मेरे लिये साध्य नहीं है कि अपने जीवनकी आकांक्षासे मैं पिताकी मृत्यु देखूं !; सो मैं ही इसमें पड़ता हूं और आप ही मेरी पीठपर पैर रख कर उसका अन्त कर डालें'। उसके वैसा करनेपर, स्वामीके कार्यको सिद्ध-प्राय हुआ मान कर आसानीसे उसने शत्रुको मार डाला और फिर जैसे आया था वैसे ही घर लौट गया। जब प्रभात होनेको आया तो अपने स्वामीको मरा देख कर वह म्लेच्छ सेना दीन हो कर भाग गई। गंभीरप्रकृति होनेके कारण उस तुंग सुभटने राजाको वह कुछ भी हाल नहीं बताया। किसी समय, राजमान्य होनेके कारण अत्यंत परिचित ऐसी उस तुंग सुभटकी पुत्रवधूको मंगलदर्शक हस्तकंकणसे रहित देख कर, राजाने संभ्रमभावसे उसका कारण पूछा। समुद्रकी नाई गंभीर होनेके कारण, मौनमर्यादाके साथ प्रथम तो उसने कुछ भी नहीं बताया। तब राजाने अपनी शपथ दे कर पूछा। इस पर उसने यह कह कर कि–' यद्यपि अपना गुण कथन करना मेरे लिये दुष्कर कार्य है तथापि आज्ञा होने निवेदन करना पड़ता है' ऐसा कह कर प्रत्युपकारभीरु हो कर उसने वह वृत्तान्त जैसा घटा था वैसा ही निवेदन किया।

२५९. उच्च बुद्धिवाले मनुष्योंके चित्तकी यह कोई बडी ही अलौकिक कठोरता है कि किसीका उपकार करके फिर वे दूसरेसे प्रत्युपकार पानेके भयसे उनसे निःस्पृह हो रहते हैं।

इस प्रकार यह तुंगसुभट प्रबंध समाप्त हुआ।

■

पृथ्वीराजका म्लेच्छोंके हाथ मारा जाना।

२१६) इसके अनन्तर, फिर कभी, उस म्लेच्छराजका पुत्र पिताका वैर स्मरण करके सपादलक्षके राजा पृथ्वीराजके साथ युद्ध करनेकी इच्छासे बडी तैयारीके सहित चढ कर आया। पृथ्वीराजकी सेनाके वीर धनुर्धरोंके, वर्षाकालकी मूसलधार झडिकी नाई बरसते हुए, बाणोंकी मारसे वह सत्सैन्य भगा दिया गया और फिर पृथ्वीराजने उसका पीछा किया। इस समय भोजन-विभागके अधिकारी पञ्चकुलने कहा कि– 'सात सौ सांढनियां जो भोजनकी सामग्री ढोती हैं वे पर्याप्त नहीं हैं, इसलिये महाराज कुछ और सांढनियां देनेकी कृपा करें'। राजा यह सुन कर बोला कि – 'म्लेच्छराजको मार कर उसके ऊँटोंका झुंड कब्जे किया जायगा, और फिर तुम्हें माँगी हुई सांढनियां देनेका प्रबन्ध किया जायगा'। ऐसा कह कर उसे समझा दिया और फिर जब आगे प्रयाण करने लगा तो सोमेश्वर नामक प्रधानने वारंवार निषेध किया। राजाने इस भ्रमसे कि वह उस (म्लेच्छ) के पक्षमें है, उसके कान काट लिये। इस अत्यन्त पराभवके कारण, वह अपने स्वामीसे कुपित हो कर उस म्लेच्छपतिके पास चला गया। उसको अपना पराभव-वृत्तान्त कह कर, उसके मनमें विश्वास बिठाया और उसको पृथ्वीराजके पड़ावके पास ले आया। पृथ्वीराज एकादशीके पारणाके पश्चात् जब सोया हुआ था तो उसकी सेनाके बीरोंके साथ म्लेच्छोंकी लडाई छिड़ गई। राजा गाढी नींदमें सो रहा था। उसी अवसरमें तुर्कोंने उसे कैद कर लिया और वे अपने स्थानमें ले गये। फिर दूसरी एकादशीके पारणाके अवसरपर, जब वह राजा [कैदीकी हालतमें] देव-पूजा कर रहा था, उस समय म्लेच्छराजने रँधा हुआ मांस, दरके पात्रमें (दोनेमें) रखवा कर उसके तंबूमें भिजवाया। उसके देवपूजामें व्यस्त होनेके कारण, एक कुत्ता आ कर उस मांसको उठा ले गया। तब पहरेदारोंने कहा कि 'इसकी रक्षा क्यों नहीं करते!' इसपर राजाने कहा कि –' मेरी नित्य भोजनसामग्रीको कभी सात सौ सांढनियां भी ठीक तरह नहीं ढो सकती थीं, उसी भोजनकी आज यह दुर्दशा है–इस बातको मैं अनाकुल हो कर कौतुकसे देख रहा हूं'। उन्होंने कहा कि– 'क्या तुममें अब भी कुछ उत्साह शक्ति बाकी है?' तो उसने कहा 'यदि मैं अपने स्थानपर जा पहुँचूं

तो अपनी शारीरिक ताकात कैसी है सो दिखा दूं '। पहरेदारोंने यह बात उस म्लेच्छराजको जा कर कही तो वह उसके साहसको देखनेकी इच्छासे, उसे उसकी राजधानीमें ले आया और राज-भवनमें ले जा कर उसको गादीपर बिठाया। बादमें ज्यों ही उन्होंने देखा तो उसके महलकी चित्रशालामें ऐसे चित्र बने हुए नजर आये जिनमें सूअर म्लेच्छोंको मार रहे हैं। यह दृश्य देख वह तुर्कोंका राजा अपने मनमें अत्यन्त पीड़ित हुआ और वहीं पर उसने कुठार द्वारा पृथ्वीराजका सिर काट कर उसका संहार कर डाला।

इस प्रकार नृपति परमर्दी, जगदेव और पृथ्वीराज इन तीनोंका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कौंकण देशकी उत्पत्ति कैसे हुई।

२१७) जहाँ समुद्र ही जिसकी परिखा (खाई) है ऐसे शतानन्दपुरमें महानंद नामक राजा हुआ। उसकी रानीका नाम था मदनरेखा। अन्तःपुर [में स्त्रियों] की प्रचुरता होनेसे राजा उसके प्रति विरक्त रहता था। इसलिये पतिको वशीभूत करनेकी इच्छासे वह नानाविध विदेशी जनों और कलाविदोंसे इस बारेमें पूछा करती। तब एक यथार्थवादी विश्वसनीय तान्त्रिकने उसे कुछ सिद्धयोग बताया। उसके प्रयोग करनेके अवसरपर उसे इस वाक्यका अनुस्मरण हो आया कि 'मंत्रमूलके बलपर की हुई प्रीतिको पतिद्रोह कहते हैं'। तो उस योगचूर्णको समुद्रमें फेंक दिया। कहा है कि 'मंत्र और औषधिका प्रभाव अचिन्त्य होता है'–इस लिये औषधके माहात्म्यसे वशीभूत हुआ समुद्र ही उसका वशवर्ती हो कर, मूर्तरूप (मनुष्यस्वरूप) बना कर उसके साथ रातमें आ कर रतिरमण करने लगा। इससे वह गर्भवती हो गई। तब उसके ऐसे चिन्होंको देख कर राजा कुपित हो कर उसे किसी प्रवास आदिका दण्ड देनेकी तदबीर सोचने लगा। इससे उसकी मृत्यु निकट समझ कर समुद्रदेव प्रत्यक्ष हुआ और अपना परिचय देते हुए बोला कि–' मैं समुद्रका अधिष्ठाता देव हूँ, इसलिये डरना मत '। फिर वह राजासे बोला –

> २६०. शीलवती कुलीन कन्याको, विवाह करके, जो सम-दृष्टिसे नहीं देखता, वह बड़ा भारी पापिष्ठ कहा गया है।

इसलिये इस स्त्रीकी अवज्ञा करनेवाले ऐसे तुझको मैं अन्तःपुर और परिवारके साथ अगाध जलमें डुबो दूँगा '। यह सुन कर वह भयभ्रान्ता रानी उसका अनुनय करने लगी। इस पर समुद्रने यह कह कर कि–' यह मेरा ही लड़का होगा और इसलिये मैं ही कहीं कहींका जल हटा कर इसे साम्राज्यके योग्य नई भूमि दूँगा '–ऐसा कह कर फिर उसने कहीं कहींसे जल हटा कर अन्तरीप (बेट) बना दिये जो लोगोंमें सब ' कौंकण ' नामसे प्रसिद्ध हुए।

इस प्रकार यह कौंकण-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

ज्योतिषी वराहमिहिरका प्रबन्ध।

२१८) पाटलीपुत्र नगरमें वराह नामक एक ब्राह्मणका लड़का था जो जन्मसे ही शकुन ज्ञानमें श्रद्धालु था। गरीब होनेके कारण पशु चरा कर अपना निर्वाह किये करता था। एक दिन [जंगलमें] किसी एक पत्थर पर लग्न लिख कर उसे बिना मिटाये ही घर लौट आया। यथासमय उचित कृत्य कर लेनेके बाद रातमें भोजन करनेको बैठा तो उस लग्नके विसर्जन न करनेका स्मरण हो आया। तब उसी समय निर्भय भावसे वहाँ गया तो देखा कि उसपर एक सिंह बैठा है। उसने इसकी भी परवा न की और उसके पेटके नीचे

हाथ डाल कर छग्न मिटाने लगा। तब इसके अनन्तर वह सिंहका रूप त्याग करके सूर्यरूपमें प्रत्यक्ष हुआ और कहने लगा 'वर माँगो'। तब उसने माँगा कि—'मुझे समस्त नक्षत्र ग्रह-मंडलको [प्रत्यक्ष] दिखा दो'। यह सुन सूर्य उसे अपने विमानपर चढ़ा कर ले गया और [सारा ग्रहचार बता कर] एक वर्ष बाद वहीं ले आ कर छोड़ गया। इस तरह वह ग्रहोंके वक्र, अतिचार, उदय, अस्त आदिकी प्रत्यक्ष परीक्षा करके पुनः अपने स्थानमें आया। मिहिर (सूर्य) का प्रसाद प्राप्त होनेसे वराहमिहिर इस नामसे प्रसिद्ध हो कर वह श्रीनन्द नामक नृपतिका परम मान्य हुआ और उसने 'वाराहीसंहिता' नामक एक नया ज्योतिषशास्त्र बनाया।

२१९) एक बार, अपने पुत्र जन्मके अवसरपर, उसने अपने घरमें घटिका रख कर उससे जन्मकालका शुद्ध लग्न ले कर जातक ग्रंथके प्रमाणसे ज्योतिष (जन्मपत्र) बनाया। स्वयं प्रत्यक्ष किये हुए ग्रहचक्रके ज्ञानके बलपर उस पुत्रकी आयु एक सौ वर्षकी निर्णीत की। उस महोत्सवमें, श्री भद्रबाहु नामक एक जैनाचार्य—जो उसके छोटे भाई थे—को छोड़ कर, राजासे ले कर रंक तक कोई ऐसा नहीं रहा था जो कुछ उपहार हाथमें ले कर उसके यहां नहीं गया हो। तब उस नैमित्तिकने जिनभक्त शकटाल मंत्रीके आगे, उन सूरिके न आनेके बारेमें उलाहनेके तौरपर कहा। तब उस मंत्रीने, उन महात्माको, जो संपूर्ण शास्त्रके ज्ञाता थे और त्रिकालके भावोंको हथेलीपर रखे हुए आँवलेके फलकी तरह जानते थे, यह बात कह सुनाई। तो उन्होंने कहा कि—'आजसे बीसवें दिन उस लड़केकी, बिल्लीके निमित्तसे, मृत्यु होगी इसलिये यह समझ कर हम नहीं आये'। उनकी यह उपदेश-वाणी वराहमिहिरसे कही गई। तब उसने अपने कुटुंबको, उस बालककी भावी विपदसे आवश्यक रक्षा करनेके लिये कहा और बिल्लीसे बचा रखनेके लिये सौ सौ उपाय करने लगा। फिर भी निर्णीत दिनकी रातको उस बालकके सिरपर अर्गला (दरवाजेको बंद करनेके लिये लकडी या लोहेकी बनी हुई एक पट्टी) गिर जानेसे अचानक वह मर गया। फिर उस शोकशंकुसे उसका उद्धार करनेकी इच्छासे श्री भद्रबाहु उसके घर आये। वहाँ उन्होंने देखा कि उसके घरके आँगनमें ज्योतिषकी सभी पुस्तकें इकट्ठी करके जलानेके लिये रखी पड़ी हैं। तब उन्होंने पूछा कि 'यह क्या बात है?' तो उस साँवत्सर (ज्योतिषी) ने बड़े दुःखके साथ, उन जैनमुनिको उपालंभ देते हुए कहा—'ये पुस्तकें बड़े भारी मोहान्धकारको उत्पन्न करनेवाली हैं इसलिये अब निश्चय ही इन्हें जला दूँगा; क्यों कि इन्होंने मुझे धोखेमें डाला है'। उसके ऐसा कहनेपर अपने शास्त्रज्ञानके बलसे बालकका जन्मलग्न ठीक तरह निकाल कर उन्होंने सूक्ष्म दृष्टिसे उसका ग्रह-बल बताया तो वह बीस ही दिनका आया। इस प्रकार उसकी शास्त्रविरक्ति जब दूर की गई तो वह ज्योतिषी बोला कि '—आपने जो बिडालसे मृत्यु बताई वह तो ठीक नहीं साबीत हुई'। तब उन्होंने उस अर्गलाको वहाँ मँगवाई, जिसके गिरनेसे मृत्यु हुई थी, तो उसमें बिड़ालकी आकृति खुदी हुई पाई गई। 'क्या भवितव्यतामें भी कभी कुछ परिवर्तन हो सकता है!' ऐसे उस महर्षिने कहते हुए कहा कि—

२६१. किस बातके लिये रोया जाय? यह शरीर क्या चीज़ है? ये परमाणु तो अविनाशी हैं। यदि संस्थान-विशेषके लिये ही शोक करना है, तब तो कभी भी प्रसन्न ही नहीं होना चाहिये।

२६२. यह सब भाव (अस्तित्व) अभावोत्पन्न है और मायाके विभवसे संभावित है। इसका अंत भी अभाव ही में संस्थित है। इस बातके ज्ञानसे सज्जनोंको भ्रम नहीं पैदा होता।

—इस प्रकारकी युक्तिपूर्वक उक्तिसे उसे समझा कर वे महर्षि अपने स्थानपर आये। इस तरह समझाये जानेपर भी वह, मिथ्यात्व रूप धतूरके प्रभावसे सच्चे सुवर्णमें भ्रान्तिवाला हो कर, उनके प्रति द्वेषभाव धारण कर रहा। अतः [ईर्ष्यावश] अभिचार कर्मसे, उनके भक्तों और उपासकोंमेंसे किसीको कष्ट पहुंचाने लगा और

किसीको मारने लगा। अपने प्रौढ ज्ञानके द्वारा इन लोगोंका यह वृत्तान्त जान कर उन्होंने विघ्नकी शान्तिकेलिये '**उवसग्गहरं पासं**' इस नूतन स्तोत्रकी रचना की।

इस तरह यह वराहमिहिर-प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सिद्धयोगी नागार्जुनका वृत्तान्त।

२२०) ढंक नामक पर्वत पर रहनेवाले रणसिंह नामक राजपूतको एक भूपल नामकी पुत्री थी जिसने अपने सौन्दर्यसे नागलोककी बालाओंको भी जीत लिया था। उसे देख कर वासुकि नागका उस पर अनुराग हो गया। उसने उसके साथ संभोग किया और उससे नागार्जुन नामक पुत्र पैदा हुआ। उस पातालपाल (नाग) ने पुत्रस्नेहसे मोहित हो कर उसे सभी औषधियोंके फल, मूल और पत्रोंका भक्षण कराया। इन औषधियोंके प्रभावसे वह महासिद्धियोंसे अलङ्कृत हुआ। सिद्धपुरुष होनेके कारण पृथ्वी-पर्यटन करता हुआ वह शातवाहन नृपतिके पास गया, जहाँ उसे राजाके कलागुरु होनेकी भारी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। तो भी वह गगन-गामिनी विद्याका अध्ययन करनेकेलिये श्री पादलिप्ताचार्यके पास पादलिप्तपुर गया। निरभिमान हो कर उनकी सेवा करने लगा। भोजनके समय, पादलेपके द्वारा आकाशमें उड कर अष्टापद आदि तीर्थोंको नमस्कार करके वे आचार्य वापस आये, तो उनके चरण धो कर रस, वर्ण और गन्धकी परीक्षासे उसमें १०७ महौषधियोंका होना उसने जाना। बादमें गुरुकी आज्ञाकी परवा न करके उसने स्वयं वैसा ही पादलेप किया। इससे मुर्गे और मोरकी नाई कुछ कुछ उड़ता हुआ वह एक खड्डेमें गिर पडा और चोट लगनेसे उसका सारा शरीर जर्जरित हो गया। तब गुरुने पूछा कि 'यह क्या बात है?' तो फिर उसने वह सब वृत्तान्त यथावत् निवेदन किया। उसकी इस चतुरतासे चकित हो कर उसके सिरपर अपना करकमल रखते हुए उन्होंने कहा कि-'साठी चावलके पानीमें उन औषधोंको मिलाकर पादलेप करो और इस तरह आकाश गामी बनो'। इस तरह उनके अनुग्रहसे उसे वह सिद्धि प्राप्त हुई। उन्हींके मुंहसे यह भी सुना कि श्री पार्श्वनाथकी मूर्तिके सामने समस्त-स्त्रीलक्षणयुक्त पतिव्रताके हाथसे विमर्दित हो कर जो रस सिद्ध किया जाता है वह कोटिवेधी होता है। [उसने उस मूर्तिकी गवेषणा करते हुए जाना कि-] पूर्व कालमें समुद्रविजय दशार्ह (यादव) ने त्रिकालवेदी श्री नेमिनाथके मुखसे सुन कर, महातिशायी श्री पार्श्वनाथका एक रत्नमय बिंब निर्माण करके द्वारावतीके प्रासादमें स्थापित किया था। द्वारावतीके जलनेके बाद, जबसे वह पुरी समुद्रमें डूब गई तबसे, वह बिंब समुद्रमें वैसे ही विद्यमान रहा। बादमें देवताके प्रभावसे धनपति नामक जहाजी व्यापारीका जहाज टकराया। 'यहाँ पर एक जिनबिंब है' ऐसी देवताकी वाणी सुन कर धनपतिने वहाँ नाविकोंको उसे निकालनेको कहा। उन्होंने सात कच्चे धागोंसे बांध कर उसे बाहर निकाला और उसके प्रभावसे चिन्तितसे भी अधिक लाभ प्राप्त हुआ जान, उसे अपनी नगरीमें ले आ कर अपने बनाये हुए प्रासादमें स्थापित किया। नागार्जुनने उस सर्वातिशायी बिंबको, अपने सिद्धरसकी सिद्धिके लिये चुरा कर, सेढी नदीके किनारे ला कर रखा। उस बिंबके सामने, श्री शातवाहन राजाकी एक मात्र पत्नी चंद्रलेखाको, सिद्धव्यन्तरके द्वारा उडवा कर रोज उससे रसमर्दन करवाता। इस प्रकार वहाँ बारंबार आने-जानेके कारण उसके साथ घनिष्ठ बंधुभाव पैदा हो गया। इससे उसने नागार्जुनसे इस रस-मर्दनका हेतु पूछा। उसने भी अपनी कल्पनासे कोटिवेध रसका वह यथावत् वृत्तान्त कहा और वर्णनातीत रूपसे उसका सम्मान करके उसके प्रति अनन्यसामान्य सौजन्य बताया। इसके बाद एक दिन उसने अपने पुत्रोंसे यह वृत्तान्त कहा। वे दोनों इसके लोभी हो कर राज्य त्याग करके नागार्जुन द्वारा अलंकृत उस भूमिमें आ कर गुप्त वेश बना कर रहे। उस रसके ग्रहण करनेकी इच्छासे, जिसके वहाँ नागार्जुन भोजन किये करता था, उसे अर्थदान करके अपने

वशमें कर, उसकी बात पूछने लगे। वह भी इस बातके जाननेकी इच्छासे, ना गा र्जु न के लिये नमक ज्यादा दे कर रसोई बनाती। इस तरह ६ महीना बीत जानेपर रसोईमें खारापनका अनुभव करते हुए नागार्जुनने उसका दोष निकाला। तब उसने इशारेसे उन्हें सूचित किया कि अब रस सिद्ध हो गया है। भानजे बने हुए इन लड़कोंने उस रसको उड़ा लेनेकी लालसासे,–परम्परा द्वारा यह जान कर कि वासुकिने इसका मृत्यु कुशके शस्त्रसे होना बताया है, उसी शस्त्रसे उसे मार डाला। पर वह रस तो सुप्रतिष्ठ देवताधिष्ठित होनेके कारण तिरोहित हो गया। जहाँ वह रस स्तंभित किया गया था वहीं पर स्तं भ न क नामक श्री पार्श्वनाथका तीर्थ प्रसिद्ध हुआ, जो रसको भी मात करनेवाला, सकल लोकका अभिलषित फलदाता है। बादमें कुछ कालके व्यतीत होनेपर वह मूर्ति, मुखमात्र जितने भागको छोड कर बाकी भूमिके अंदर दब गई।

स्तंभनक पार्श्वनाथका प्रादुर्भाव।

२२१) इसके अनन्तर, श्री अ भ य दे व सू रि ने शासन देवताके आदेशसे, ६ महीनेतक माया रहित हो कर आचाम्लका व्रत करके, खड़िया (पट्टीपर लिखनेकी धोली मिट्टीकी डलिया) के प्रयोगसे जब नवाङ्ग वृत्तिकी रचना समाप्त की तो उनके शरीरमें भारी कुष्ठ रोग प्रादुर्भूत हो गया। तब पातालका पालक धरणेन्द्र नामक नागराज सफेद सर्पका रूप बना कर आया और उनके शरीरको जीभसे चाट कर उन्हें नीरोग किया। फिर श्रीमान् अ भ य दे व सू रि को उस तीर्थकी यात्राका उपदेश दिया। उन्होंने श्रीसंघके साथ वहाँ आ कर गोपाल बालकोंके द्वारा उस भूमिका पता लगाया, जहाँ एक गाय रोज दूधकी धारा छोडे करती थी। वहाँ जा कर एक उत्तम ऐसे नये द्वात्रिंशतिका स्तवनकी रचना की। उसके ३३ वें पद्यकी रचना होनेपर श्री पार्श्वनाथका वह बिंब प्रकट हुआ। फिर देवताके कथनसे उन्होंने उस पद्यको गुप्त रखा।

> २६३. जो स्वामी, अपने जन्मके चार सहस्र वर्ष पूर्व ही इंद्र, वासुदेव और वरुणके द्वारा अपने खास स्थानपर पूजे गये, इसके बाद का न्ती के धनिक ध ने श्व र द्वारा तथा फिर महान् ना गा र्जु न द्वारा जिनकी पूजा की गई, वे स्तं भ न क पु र में स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन तुम्हारी रक्षा करें।

इस प्रकार नागार्जुनकी उत्पत्ति तथा स्तंभनक तीर्थके अवतारका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

कवि भर्तृहरिकी उत्पत्तिका वर्णन।

२२२) प्राचीन कालमें, अ व न्ति पु री में कोई ब्राह्मण पा णि नि व्या क र ण के अध्यापनका कार्य करता था। वह नियमसे नित्य सि प्रा न दी के तटपर स्थित चिन्तामणि गणेशको प्रणाम किये करता था। किसी समय विद्यार्थियोंने फक्किका-व्याख्यान आदिके प्रश्नोंसे उसे उद्विग्न कर दिया था, इसलिये वर्षाकालमें जब वह नदी भर कर बह रही थी तो वह उसमें कूद पड़ा। दैवयोगसे एक उखड़े हुए वृक्षका मूल उसके हाथमें आ गया जिसका सहारा पा कर वह तीरपर पहुँच गया। वहाँपर साक्षात् परशुरामको देख कर प्रणाम किया। वे उसके उत्साहके ऐसे अनुष्ठानसे प्रसन्न हो कर बोले कि 'इच्छा हो सो मांगो'। उसने पा णि नि के व्या क र ण का संपूर्ण रहस्यज्ञान मागा। उन्होंने उसका देना स्वीकार किया और उसे 'खड़िया' प्रदान की। उससे उसने प्रतिदिन व्याकरणकी व्याख्या बनानी शुरू की जो छह महिनेके अंतमें समाप्त हुई। फिर शीघ्र ही गणेशकी अनुज्ञा ले कर, उस प्रथम आदर्शके साथ, वह पुरीमें प्रविष्ट हुआ। [रातको] नगरके किसी एक महोलेके चौकमें बैठा ही बैठा सो गया। तब सबेरे उसे वहाँ उस तरह पड़ा देख किसी एक वेश्याकी दासियोंने, वेश्यासे उसका हाल कहा। उसने उन्हींसे उसे मँगवा कर अपने हिंडोलेकी खाटपर रखवाया। तीन दिन और रातके बाद जब उसकी नींद कुछ कुछ खुली तो उस चित्रशालाकी आश्चर्यजनक चित्रकारीको देख कर वह अपनेको स्वर्गलोकमें उत्पन्न हुआ समझा। तब उस

वेश्याने सब वृन्तान्त कहा और स्थान-पान-भोजन आदिसे उसे सन्तुष्ट किया। फिर वह राजसभामें गया। वहां पर पाणिनि व्याकरणकी यथावस्थित व्याख्या कर बतानेपर राजा तथा अन्य पंडितोंने उसका बड़ा सत्कार किया। वहाँ जो कुछ पुरस्कार रूपमें उसे मिला वह सब उसने उस वेश्याको समर्पण कर दिया।

२२३) फिर उसके क्रमशः चारों वर्णोंकी चार स्त्रियाँ हुईं। इनमेंसे क्षत्रियाणीके गर्भसे विक्रमादित्य तथा शूद्राके गर्भसे भर्तृहरि पुत्र हुआ। हीनजातिका होनेके कारण भर्तृहरिको रज्जुके संकेतसे भूमिगृहमें बैठा कर गुप्त वृत्तिसे पढ़ाया जाता था। अन्य तीनों लड़कोंको प्रत्यक्ष (पासमें बैठा कर) पढ़ाया जाता था। उन्हें इस तरह पढाते हुए–

२६४. दान भोग और नाश–द्रव्यकी ये तीन गति हैं। [और जो न देता है न भोग करता है उसके द्रव्यकी तीसरी ही गति (नाश) होती है।]

यह जब पढ़ाया गया तो भर्तृहरिने रज्जुका संकेत नहीं किया और उन तीनों प्रत्यक्ष छात्रोंने आगेके उत्तरार्धका पाठ पूछा। तब कुपित होकर उस उपाध्यायने कहा–'अरे वेश्यापुत्र, अभी तक रस्सीको क्यों नहीं हिलाता ?' तब वह प्रत्यक्ष आ कर कुद्ध कर शास्त्रकी निंदा करता हुआ कहने लगा–

२६५. सौ सौ प्रयास करके प्राप्त किये हुए और प्राणोंसे भी अधिक मूल्यवान् ऐसे धनकी एक दान ही गति हो सकती है। अन्य तो [गति नहीं] विपत्ति है।

इस पाठसे [उन सबने] वित्तकी फिर एक ही गति मानी। उस भर्तृहरिने **वैराग्यशतक** आदि अनेक प्रबंध बनाये।

इस प्रकार भर्तृहरिकी उत्पत्तिका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

वाग्भट वैद्यका प्रबंध।

२२४) धारानगरीमें, मालवमण्डलके भूषणरूप श्रीभोजराजका एक आयुर्वेदज्ञ वैद्य वाग्भट नामक था। उसने आयुर्वेदोक्त कुपथ्य करके, उसके प्रभावसे पहले रोग उत्पन्न किया और फिर सुश्रुत कथित पथ्य औषधोंसे उसका निग्रह किया। पानीके विना कितने समय तक जिया जा सकता है इस बातकी परीक्षाके लिये जल छोड़ दिया। तीन दिनके बाद प्याससे तालु और ओठ सूख गये। तब उसने इस प्रकार कहा–

२६६. कहीं गर्म, कहीं ठंडा, कहीं गर्म करके ठंडा किया हुआ और कहीं औषधके साथ [इस प्रकार पानी सब हालतमें दिया जाता है] पानी कहीं भी मना नहीं किया गया है।

इस प्रकार पानीके सत्कारका उसने यह वाक्य पढ़ा। उसने अपना अनुभूत '**वाग्भट**' नामक ग्रंथ बनाया। उसका जामाता जो लघु वाहड कहलाता था वह भी एक समय, अपने श्वसुर ऐसे उस वृद्ध वाहडके साथ राजमंदिरमें गया। सबेरे ही श्रीभोजराजके शरीरको देख भाल कर वृद्ध वाहड (वाग्भट) ने कहा कि–'आज आपका शरीर नीरोग है'। तो यह सुन कर लघु वाहडने मुंह मरोडा। तब श्रीभोजके उसका कारण पूछनेपर उसने कहा कि–'आज स्वामीके शरीरमें, रात्रिके शेषमें राजयक्ष्माका प्रवेश हुआ है, जो कृष्णच्छायासे सूचित होता है'। इस प्रकार देवताके आदेशसे अतीन्द्रिय भाव बतला देनेके कारण राजा उसके कला-कलापसे चमत्कृत हुआ और व्याधिका उससे प्रतीकार पूछा। तब उसने तीन लाखके मूल्यसे बननेवाले रसायनका प्रयोग बताया। ६ महीनेके बाद उतना द्रव्य व्यय करके वह रसायन सिद्ध किया गया और सायंकाल काचकी कुप्पीमें भर कर उस रसायनको राजाके बिस्तरके पास रख दिया। सबेरे देवतार्चनके बाद राजाने जब वह रसायन खाना चाहा तो उस रसायनकी पूजा-पुरस्कार आदि सब सामग्री तैयार की गई।

पर उस लघु वैद्यने, किसी कारणवश, उस काचकी कुप्पीको भूमिपर पटक कर तोड़ दिया। राजाके यह कहनेपर कि 'अः यह क्या किया?' उसने कहा—'रसायनकी सुगंधिसे ही व्याधि भाग गई है। अब व्याधिके अभावमें इस धातुक्षयकारी औषधका रखना व्यर्थ है। आज रात्रिके अंतमें वह कृष्णच्छाया महाराजके शरीरको छोड कर कहीं दूर चली गई दिखाई दी है और इसमें खुद आप ही प्रमाण हैं'। उसके इस प्रत्यय (विश्वास) से सन्तुष्ट हो कर राजाने दरिद्रताको दूर करने वाला [भारी] पारितोषिक उसे दिया।

२२५) इसके बाद, उन सभी व्याधियोंको उस वैद्यने भूतलसे नष्ट कर दिया। तब उन्होंने जा कर स्वर्ग लोकके वैद्य अश्विनी-कुमारोंसे अपना यह पराभव वृत्तान्त कहा। वे दोनों इस वृत्तान्तसे मनमें आश्चर्य-चकित हो कर नीलवर्णके पक्षीका रूप बना कर, व्याधियोंके लिये प्रतिभट जैसे लघु वाग्भटके धवलगृह (मकान) की खिड़कीके नीचे वलभी (टांडे) पर बैठ कर 'कोऽरुक्?' (कौन नीरोग है?) ऐसा शब्द बोले। उस आयुर्वेदज्ञने अपने समीपहीमें सुने जानेवाले इस शब्दको साभिप्राय समझ कर चिर कालतक उसका विचार करके कहा—

२६७. अल्प शाक खानेवाला, चावलके साथ घी लेनेवाला, दूधके रसोंका व्यवहार करनेवाला, पानी ज्यादह नहीं पीनेवाला, प्रकृतिके विरुद्ध—वातकारक और विदाही (ज्वलन पैदा करनेवाले) पदार्थोंको न खानेवाला, अस्थिर भावसे न खानेवाला, खायें हुएके जीर्ण होने (पच जाने) पर खानेवाला और अल्प भोजन करनेवाला 'अरुक्' अर्थात् नीरोग होता है।

ऐसा सुन कर मनमें कुछ चकित हो कर वे चले गये। फिर दूसरे दिन, दूसरी वेलामें, उसी प्रकारका पक्षीका रूप बना कर, वैसा ही पुराना शब्द करते हुए, वे वैद्यके घर पर आये। फिर उनकी बातके उत्तरमें वैद्यने कहा—

२६८. वर्षामें जो स्थिर रहता है (अर्थात् यात्रा नहीं करता), शरत्कालमें पेय पदार्थोंका सेवन करता है, हेमन्त और शिशिरमें खूब भोजन करता है, वसन्तमें मदमस्त बनता है और ग्रीष्ममें [दिनको] शयन करता है, हे पक्षी, वही पुरुष नीरोग होता है।

ऐसा कहनेपर वे फिर चले गये। तीसरे दीन, योगीका रूप बना कर उसके घर गये और वे बोले—

२६९. हे वैद्य, वह कौनसी ऐसी औषधि है जो न पृथ्वीमें उत्पन्न होती है, न आकाशमें; न बाजारमें मिलती है, न पानीमें पैदा होती है; और फिर सर्व शास्त्रोंको सम्मत है।

इसपर वैद्यने कहा—

२७०. पृथ्वी या आकाशमें न होनेवाली, पथ्य तथा रसवर्जित ऐसी महौषधि पूर्वाचार्यों द्वारा बताई हुई लंघन (उपवास) रूप है।

इस प्रकार अपने अभिप्रायके ठीक अनुकूल प्रत्युत्तर पा कर वे दोनों वैद्य चमत्कृत हुए और फिर प्रत्यक्ष हो कर यथाभिमत वर प्रदान कर अपने स्थानपर चले गये।

इस प्रकार वैद्य वाग्भटका यह प्रबंध समाप्त हुआ।

*

गिरनार तीर्थके निमित्त श्वेताम्बर—दिगम्बरमें लड़ाई।

२२६) धामणउलि ग्राममें बसनेवाला धारा नामक कोई नैगम (व्यवहारी), जो अपनी लक्ष्मीसे वैश्रवण देवकी भी स्पर्द्धा करनेवाला था, संघाधिपति हो कर, प्रचुर द्रव्यका व्यय करके जीवलोकको जिलाता हुआ, अपने पाँच पुत्रोंके साथ, श्रीरैवतक गिरिकी उपत्यका (तलहट्टी) में जा कर निवास किया। दिगंबर संप्रदायके भक्त ऐसे गिरिनगरके राजाने, उसे श्वेतांबर भक्त समझ कर यात्रासे अटकाना

चाहा। इस पर दोनोंके सैनिकोंमें लड़ाई छिड़ गई। असीम युद्धसे जूझते हुए, अतिप्रिय ऐसी देवभक्तिसे उत्साहित हो कर उसके पाँचों पुत्र, वहां मारे गये और वे मर कर पाँच क्षेत्रपाल हुए। उनके क्रमशः ये नाम हुए — १ कालमेघ, २ मेघनाद, ३ भैरव, ४ एकपद, और ५ त्रैलोक्यपाद। तीर्थके विरोधियोंको मृत्युके मुँह पहुँचाते हुए वे पाँचों विजयी हो कर पर्वतके चारों ओर वर्तमान हैं।

२२७) फिर उनका **धारा** नामक पिता जो अकेला ही बच रहा था, उसने कान्यकुब्ज देशमें जा कर श्री बप्पभट्टसूरिके व्याख्यानके अवसरपर श्री संघकी आन दे कर यह कहा कि–'रैवतक तीर्थमें दिगंबरोंने अपनी वसति बना ली है और श्वेताम्बरोंको पाखंडी कह कर पर्वतपर चढ़ने नहीं देते हैं। इस लिये उनको जीतकर उस तीर्थका उद्धार कीजिये और अपने दर्शनकी प्रतिष्ठा करके तब फिर ये व्याख्यान दीजिए'। उसके ऐसे वचन रूप इंधनसे जिनकी क्रोधरूप अग्नि प्रज्वलित हो उठी वैसे वे आचार्य उस आम राजाको साथ ले कर, उसी श्रेष्ठीके साथ, पर्वतकी उपत्यकामें पहुँचे। सात दिनोंमें, वादस्थानमें दिगंबरोंको पराजित करके संघके सामने श्री अम्बिकाको प्रत्यक्ष किया। **'इक्कोवि नमुक्कारो'** और **'उज्जिन्तसेलसिहरे'** ये दो गाथायें अम्बिकाके मुखसे सुन कर सितांबर दर्शनकी प्रतिष्ठा सिद्ध हुई और फिर वे पराजित दिगंबर 'बलानक मंडपसे' झम्पापात करके नीचे गिर पड़े।

इस प्रकार यह क्षेत्राधिपोत्पत्तिका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

सोमेश्वरका अपने भक्तोंकी परीक्षा करना।

२२८) एक बार, भवानीने शिवसे पूछा कि–'तुम कितने कार्पटिकोंको राज्य देते रहते हो?'–उसके ऐसा पूछनेपर [शिवने कहा–] 'इन लाखों यात्रियोंमें जो कोई एक पूरा भक्ति-परायण होता है उसीको मैं राज्य देता हूं'। इस बातकी परीक्षाके लिये, गौरी (पार्वती)को पंकमग्न बूढ़ी गाय बना कर और स्वयं मनुष्यरूप धारण कर, शिवजी तटस्थ खड़े रहे और कीचड़मेंसे गायका उद्धार करनेके लिये पथिकोंको बुलाने लगे। वे सब लोक तो सोमेश्वर नजदीक होनेसे उसके दर्शनके लिये बडे उत्कंठित थे, इसलिये उन्होंने उसका उपहास किया। पर पथिकोंका कोई एक दल कृपालु हो कर उसके उद्धारका प्रयत्न करने लगा तो शिवजी सिंहरूप धारण करके उन्हें डराने लगे। तब उनमेंसे एक ही ऐसा पथिक निकला जो मृत्युकी भी परवा न करके उस गायके समीप पहुँचा। उसीको अलग बतला करके शिवने पार्वतीको बताया कि वही एक राज्यके योग्य है।

इस प्रकार यह वासनाका प्रबंध समाप्त हुआ।

*

पूर्वजन्मका किया भोगना।

२२९) सोमेश्वरकी यात्राको जाता हुआ एक कार्पटिक रास्तेमें किसी लोहारके घर सोया। उस लोहारकी स्त्रीने अपने पतिको मार कर कृपाणिकाको उस कार्पटिकके सिरहाने रख दी और फिर चिल्लाने लगी। आरक्षक (राज्यके सिपाही) ने वहां आ कर उस अपराधीके हाथ काट डाले। इससे वह सदैव उस देवको उपालंभन दिया करता। एक रातको देव प्रत्यक्ष हो कर बोला–'तुम अपने पूर्व-जन्मकी बात सुनो। एक बार दो भाइयोंमेंसे एकने एक बकरीके दोनों हाथोंसे कान पकड़े और दूसरेने उसे मार डाला। उसके बाद वह बकरी मर कर यह स्त्री हुई। जिसने इसे मारा था वह इस समय इसका पति हुआ। तुमने जो इसके कान पकड़े थे, इससे तुम्हारा समागम होनेपर, तुम्हारे हाथ काटे गये। सो इसमें मुझे क्यों उपालंभ देते हो?'

इस प्रकार यह कृपाणिका-प्रबंध समाप्त हुआ।

जिनपूजाका माहात्म्य ।

२३०) प्राचीन कालमें, शं ख पु र नामक नगरमें शं ख नामका राजा था। वहाँ पर, नाम और कर्म दोनोंहीसे 'ध न द' (धन देने वाला) नामका एक सेठ था । उसने एक बार सोचा कि लक्ष्मी हाथीके समान चंचल है, अतः वह हाथमें उपहार ले कर राजाके पास आया और उसे संतुष्ट किया । राजाकी दी हुई भूमिमें, अपने चार पुत्रोंके साथ सलाह करके, शुभलग्नमें उसने एक जिनमंदिर बनवाया। उसमें, प्रतिष्ठित बिंबोंकी स्थापना करके उस प्रासादके व्यय-निर्वाहके लिये आमदनीके अनेक मद कायम किये। उसकी पूजाके लिये अनेक पुष्प, वृक्ष, लता आदिसे अलंकृत एक सुंदर बागीचा बनवा दिया और उसके कार्यचिन्तक गोष्ठिक नियुक्त किये । इसके अनन्तर, पूर्वकृत दुष्कर्मके फलके उदयसे क्रमशः उसकी लक्ष्मी घट गई और वह कर्ज़दार हो गया । मान-प्रतिष्ठाके म्लान हो जानेके कारण वह किसी गाँवमें जा कर रहने लगा। नगरमें जा-आ कर लड़के जो कुछ पैदा करते उसीपर गुज़र करता हुआ वह काल व्यतीत करने लगा । एक बार, जब चातुर्मासिक पर्व निकट आया तो वहाँ जानेवाले पुत्रोंके साथ वह ध न द भी शं ख पु र पहुँचा । वहाँ अपने बनाये हुए प्रासादकी सीढियों पर चढते, उसके उद्यानकी पुष्प चुननेवाली (मालिन) ने उसे फूलोंकी डाली भेंट की । परमानंद निर्भर हो कर उसीसे उसने जिनेंद्रकी पूजा की । रातमें गुरुके सामने अपनी दुरवस्थाकी बड़ी निंदा करने लगा । तब उन्होंने उसे कपर्दी यक्षका आराधन करनेके लिये मंत्र दिया । फिर एक कृष्ण चतुर्दशीकी रातको उस मंत्रकी आराधना करके कपर्दी यक्षको प्रत्यक्ष किया । गुरुके उपदेशानुसार उससे, चातुर्मासिक दिनके अवसर पर जो पुष्प-चतुःसरिका (फूलकी चौसरी लड़ी) से जिनेशकी पूजा की थी उसके पुण्यफलकी याचना की । उसने कहा कि–'एक फूलकी पूजाका पुण्यफल भी, बिना सर्वज्ञके, मैं देनेमें असमर्थ हूं' । फिर भी उस कपर्दी यक्षने, उस साधर्मिकके प्रति अतुल्य वात्सल्यभाव धारण करके, उसके घरके चारों कोनोंमें, सुवर्णपूर्ण चार कलश निधिरूपमें रख दिये, और वह तिरोहित हो गया । प्रातःकाल वह अपने घर आया और धर्मकी निंदा करनेवाले उन पुत्रोंको वह धन समर्पण किया । वे भी आग्रहके साथ पितासे उस धनलाभका कारण पूछने लगे । इसपर, उनके हृदयमें धर्मके प्रभावका आविर्भाव करनेके लिये, जिनपूजाके प्रभावसे संतुष्ट हुए कपर्दी यक्ष द्वारा, इस संपत्तिके प्राप्त होनेकी बात कह सुनाई । वे भी सम्पत्ति पा कर फिर उसी जन्मस्थानमें जा कर रहे और अपने धर्मस्थानोंका व्ययनिर्वाह करने लगे । फिर विविध भाँति जिन शासनकी प्रभावना करते हुए वे विधर्मियोंके मनोंमें भी जैन धर्मके प्रभावको स्थापित करते रहे ।

इस प्रकार जिनपूजा संबंधी यह धनदका प्रबंध समाप्त हुआ ।

*

श्री मेरुतुंगाचार्य विरचित प्रबंधचिन्तामणिमें,
विक्रमादित्यके कहे हुए पात्रविवेचनसे ले कर जिनपूजासंबंधी धनदके प्रबंध तकका वर्णनवाला,
यह प्र की र्ण ना म क पाँचवाँ प्रकाश समर्थित हुआ ।

[इस प्रकाशकी ग्रंथसंख्या ७७४ है । समग्र ग्रंथकी श्लोक संख्या ३१५० है]

———•———

ग्रन्थकारकी प्रशस्ति ।

बहुश्रुत और गुणवान् ऐसे वृद्ध जनोंकी प्राप्ति प्रायः दुर्लभ हो रही है और शिष्योंमें भी प्रतिभाका वैसा योग न होनेसे शास्त्र प्रायः नष्ट हो रहे हैं। इस कारणसे, तथा भावी बुद्धिमानोंको उपकारक हो ऐसी परम इच्छासे, सुधासत्रके जैसा, सत्पुरुषोंके प्रबन्धोंका संघटनरूप यह ग्रन्थ मैंने बनाया है ॥ १ ॥

यह, प्रबन्धसंग्रहका चिन्तामणि, चिरकाल तक हाथपर रहनेसे स्यमन्तक मणिका भ्रम पैदा करता है और हृदयमें स्थापन करनेपर प्रशंसनीय ऐसे विमल कौस्तुभ मणिकी कलाका सृजन करता है। सो इस ग्रन्थके अध्ययनसे विद्वान् लोग श्रीपति (विष्णु) की नाईं शोभित होते हैं ॥ २ ॥

मन्दबुद्धि हो कर भी, मैंने जैसा सुना वैसा ही, प्रबन्धोंका संकलन करके यह ग्रन्थ बनाया है। पण्डित लोग मत्सरताका त्याग करके, अपनी प्रज्ञाके उन्मेषसे इसकी उन्नति ही करें ॥ ३ ॥

ग्रहों रूपी कोड़ियोंसे जब तक द्युलोकमें सूर्य और चन्द्रमा, जुआड़ीकी तरह क्रीड़ा करते रहें तब तक आचार्यों द्वारा उपदिष्ट होता हुआ यह ग्रन्थ विद्यमान रहो ॥ ४ ॥

विक्रमादित्य संवत्के १३६१ वर्ष बीतनेपर, वैशाख मासकी पूर्णिमाके दिन यह ग्रन्थ समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

[गद्यमें फिर यही कथन] राजा श्री विक्रमके समयसे १३६१ वर्ष बीतनेपर वैशाख सुदि १५ रवि वारको, आज यहाँ श्री वर्द्धमान (काठियावाडके आधुनिक वढवान नगर) में यह प्रबन्धचिन्तामणि ग्रन्थ समाप्त किया गया।

परिशिष्ट

कुमारपाल राजाका अहिंसाके साथ विवाह-संबन्धका रूपकात्मक प्रबन्ध*

श्रीमान् हेमचन्द्रके समान तो गुरु और श्रीमान् कुमारपालके समान जिनभक्त राजा न तो हुआ और न [अब कभी] होगा ॥ १ ॥

प्रभु श्री **हेमाचार्य**के पास ज्ञान-दान प्राप्त करके उसके पश्चात् श्री चौलुक्यचक्रवर्ती **कुमारपालने** जो हिंसाका निवारण किया था उसका [रूपकात्मक] प्रबन्ध इस प्रकार है—एक अवसर पर, **अणहिल्लपुरमें**, श्री **कुमारपाल** नामक राजाने, घुड़दौड़की क्रीड़ा करनेके लिये जाते समय, एक ऐसी बालिकाको देखा जिसने अपने सौन्दर्यसे सुरसुन्दरियोंको भी मात कर दिया था और जिसका मुख बाल-चन्द्रमाके समान मनोहर था। यद्यपि वह

* टिप्पणी—यह परिशिष्टात्मक प्रबन्ध, इस ग्रन्थकी बहुसंख्यक पोथियोंमें लिखा हुआ मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार मेरुतुङ्ग सूरिने ही इसकी रचना की है–पर ऐतिहासिक न हो कर यह एक रूपकात्मक प्रबन्ध है इसलिये इसको परिशिष्टके रूपमें ग्रन्थके अन्तमें जोड़ दिया मालूम देता है। कुमारपालने अपने धर्मगुरु आचार्य हेमचन्द्रसूरिके पास जैनधर्मकी गृहस्थ दीक्षा (श्रावकधर्मव्रत) स्वीकार करते समय, सबसे पहले जब अहिंसा व्रतका स्वीकार किया, उस समयको लक्ष्य करके इस रूपकात्मक प्रबन्धका प्रणयन किया गया है। इसमें अहिंसाको एक राजकन्या बनाई है जो आचार्य हेमचन्द्रके आश्रममें पलकर बड़ी उम्रवाली—वृद्धकुमारी हो गई है। अन्यान्य राजाओंके अधार्मिक आचरण देख कर वह किसीके साथ विवाह करना नहीं चाहती; किन्तु, कुमारपाल जो आचार्य हेमचन्द्रका शिष्य बना है उसके धर्मभावसे मुग्ध हो कर, आचार्यके आदेशसे वह उसका पाणिग्रहण कर लेती है—बस यही इस प्रबन्धका तात्पर्य है।

सदाचार-प्रसरण-शीला थी फिर भी धीमी चालसे चलनेवाली थी। वह मुनियोंके साथ क्रीड़ा किया करती थी। अपनी सुकोमल वाणीके प्रपञ्चसे उसने त्रैलोक्यको चमत्कृत कर दिया था, और उसकी आकृति मन्द मुसकानसे खूब मधुर हो रही थी। इस बालिकाको देख कर उसके रूपसे हृत-चित्त हो कर राजाने किसी निकटस्थ प्रसन्नचित्त (साधुजन) से पूंछा कि–'भला यह लड़की कौन है?' उसने कहा कि–'अपार ऐसे शास्त्र-सागरके पारको देख लेनेके कारण जिन्होंने 'कलिकाल सर्वज्ञ' की प्रसिद्धि प्राप्त की है; द्वादश भेदोंवाली तपस्याकी आराधनाके द्वारा, अष्ट महासिद्धियोंको जिन्होंने वशमें कर लिया है; समग्र भूपालोंके शिरःप्रदेशकी मणियोंने जिनके चरणोंका चुंबन किया है; उन्ही महर्षि भगवान् आचार्य श्री हेमचंद्रके आश्रममें रहनेवाली यह अहिंसा नामक कन्या है। इसके यथार्थ रूपका निरूपण करनेमें स्मृति और पुराणके वचन तो पर्याप्त नहीं है; किन्तु समस्त जंतुओंके पितृ-स्वरूप श्री जिनेन्द्र देवके उपदिष्ट स्पष्ट सिद्धान्तों और उपनिषदों द्वारा आवासित हृदयवाले किसी मुनिश्रेष्ठने इसकी स्थितिकी रीतिका पूरा निरूपण किया है–अन्य किसीने वैसा नहीं किया। यह वचन सुन कर राजा अपने आवासमें लौट आया। पर उस कन्याका स्वरूप जान कर, उसका अंगीकार करनेके लिये परम उत्सुक वह राजा, उसके पाणिग्रहणके द्वारा अपनी भाग्य-सम्पद् आदिको कृतार्थ करनेकी कामनासे, अपने 'विवेक' नामक परम मित्रके बताये हुए मार्गसे उन मुनियोंके आश्रममें जा पहुंचा। उस कन्याके सामने उसीका 'सदाचार' नामक भाई खेल रहा था। उसीने जा कर सम-चित्तवृत्तिवाले महर्षि श्री हेमचंद्र सूरिको राजाके आगमनका वृत्तान्त बतलाया। राजाने पृथ्वीतलपर मस्तक टेक कर, उन्हें भक्ति और हर्षके साथ, प्रणाम किया और फिर उस कन्याका स्वरूप पूंछा। इस पर वे बोले–'हे नरपुंगव! सुनो, त्रैलोक्यके एकमात्र सम्राट् श्री अर्हद्धर्मकी पट्ट महादेवी श्रीमती अनुकंपा देवीके कुक्षि-सरोवरकी राजहंसी जैसी, निःसीम सुन्दरी यह 'अहिंसा' नामक कन्या है। जिस लग्नमें यह कन्या पैदा हुई थी उस लग्नके प्रबलको इसके सर्वज्ञ पिताने इस प्रकार निर्दिष्ट किया था–'यह अतीव पुण्यवती, सुदतियोंकी शिरोमणि कन्या है। पुत्रजन्मोत्सवसे भी अधिक प्रशंसनीय इसका जन्म है। क्यों कि–

> लक्ष्मी [रूप कन्यासे] समुद्रको और वाग्देवी [रूप कन्यासे] ब्रह्माको विश्रुत देख कर, कुपुत्रके दुःखसे सूर्य और चन्द्रमा ताप और कलंकका त्याग नहीं करते हैं॥ २॥

इस लिये क्रमशः बढ़ती हुई यह कन्या अपने अनुरूप वर न पानेके कारण वृद्ध-कुमारी हो जाने पर किसी अनुरूप राजासे साग्रह विवाहित होगी। इस प्रकार सतियोंमें श्रेष्ठ यह कन्या अपने पति और पिता दोनोंको उन्नतिकी पराकाष्ठापर पहुँचा देगी। और इससे विवाह करनेवाला वह पुरुष भी खेलहीमें महा-मोह नामक राजाको जीत कर परमानन्दका भाजन बनेगा।' यह सुन कर राजा बोला–'प्रभो! यह अर्हद्धर्मकी पुत्री इस समय आपके ही चरण कमलोंकी उपासना करती है, अतः इसका विवाह आपहीके कहनेसे होगा, अन्य किसीसे नहीं। सो पूज्य-पाद मुझपर प्रसन्न हों, विषादगण विपण्ण हों, महामोहका विजय करना प्रारंभ हो, और [उससे] मैं परमानन्द प्राप्त करूं।' उसके इस कथनके बाद गुरु बोले–'यह वृद्धा कुमारी है, इसका संकल्प दुष्पूरणीय है। वह संकल्प इसीके मुँहसे सुन कर विवाह करना चाहिये, अन्यथा नहीं।' इस प्रकार उनकी अमृतकी जैसी वह वाणी सुन कर, उसने कन्याके पास सुबुद्धि नामक दासी भेज कर उसे बुलवाया। वह दासी उस कन्याके पास जा कर भक्ति-पूर्वक प्रणाम करके बोली–'स्वामिनि, राजकन्ये, [आज] तुम धन्यतमा हो, जो तुम्हें, अठारह देशोंके सम्राट्, और समस्त सामन्तोंके मस्तक-मणियोंकी किरण-मालासे जिनका चरण अलंकृत है वह चौलुक्य-चक्रवर्ती तुम्हारे साथ विवाह करना चाहते हैं।' उसकी इस बातसे कुछ मुँह बना कर, उपहासके उल्लासके साथ, उसने कहा–'सखि, जिस महान् साम्राज्यका अन्त नरक है उसके लोभकी बातका विस्तार

करना रहने दे ! मैं तो अनुकूल प्रेमीको चाहती हूँ। पुरुष प्रायः परुष आशयवाले, और नाना प्रकारके अनुरागवाले होते हैं; उनसे मेरा क्या काम है। क्यों कि–

रूप यौवन सम्पन्ना कन्याका अविवाहित भी रहना वरन् अच्छा है, किन्तु कलाहीन, अननुकूल, कु-पतिसे विडंवित होना [अच्छा] नहीं ॥ ३ ॥

पर सुनो,–अगर दरिद्र हो कर भी पति जो प्रियकारी हो तो उससे विवाहित स्त्रीको जैसा सुख होता है वैसा सुख ईश्वर (बड़े धनसंपन्न) से भी नहीं प्राप्त होता। [देखो न] भागीरथी (गंगा) को शिव तो शिरपर धारण करते हैं, पर लक्ष्मीके पति (विष्णु) उसे पैरसे भी नहीं छूते !

सो मुझे वरण करनेकी अभिलाषा तो वृथा ही समझो। क्यों कि मेरी प्रतिज्ञाका किसी महाराजासे भी पूरा होना कठिन है।' ऐसा कहनेवाली उस युवतीसे वह (दासी) बोली–'सखि ! मैं तुम्हारी प्रियकारिणी सखी हूँ, कुछ अपलाप तो करनेकी नहीं; सो तुम अपना अभिमत मुझे स्पष्ट कह बताओ। मेरा भी नाम सुबुद्धि है, मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा उस कुमारपाल राजासे पूरी कराऊंगी।' ऐसा कहनेपर वह बोली–

सत्यवक्ता, परलक्ष्मीका त्यागी, समस्त जीवोंको अभय-दाता, और सदा अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट, [ऐसा जो पुरुष होगा] वही मेरा पति होगा ॥ ५ ॥

दुर्गतिके बन्धु जैसे दूत स्वभाववाले सात पुरुषों (अर्थात्, सात व्यसनों) को जो अपने चित्तसे दूर निकाल फेंक देगा वही मेरा पति होगा ॥ ६ ॥

मेरे सहोदर भाई सदाचारको अपने हृदयासनपर बैठा कर एक चित्तसे जो उसकी सेवा करेगा वही मेरा पति होगा ॥ ७ ॥

उसकी इस बातको सुन कर वह बोली–'ऐ सुलोचने ! सुनो, मैं यथार्थनामा (सुबुद्धि) तब हूँगी जब तुम्हारी प्रतिज्ञाको पूरा करनेके लिये, श्री हेमसूरिको आगे कर, समस्त लोकके सामने, तुम्हारे इन प्रतिज्ञात अर्थोंका समर्थन करा कर, तुम्हें परिणीत कराऊँगी। और तभी, तुम मुझे अपनी चतुर सखी मानना, नहीं तो तिनकेसे भी गयी बीति समझना।' यह कह कर, फिर राजाकी सभामें जा कर उसने उसकी वह कठिन प्रतिज्ञा कह सुनाई। उसकी इस अवज्ञाभरी प्रतिज्ञाके कठोर भावसे हृदयमें सन्तप्त हो कर राजा बडी बेचेनी धारण करने लगा। तब सुबुद्धिने कहा–'हे श्रीनिधे ! धीरज धरो, पौरुष-शालियोंको दुष्कर क्या है ! और इस बाधाके दूर करनेके उपाय भी तो हैं। महर्षि हेमचन्द्रका अनुसरण करो और उनका उपदेश सुनो।' इस प्रकार उसकी बात सुन कर विनयका सहारा पा कर वह राजा सूरिके पास गया। उनके पद-पद्मोंमें प्रणाम कर उनको कन्याकी उस प्रतिज्ञाका वृत्तान्त कहा। [सूरि बोले–] 'वत्स ! यदि परिणयनकी चाह है तो फिर उसकी प्रतिज्ञा पूरी करो। यह कन्या अपने पतिकी निःसीम उन्नतिके लिये होगी। क्यों कि–

उत्तम वंशोत्पन्न, धन्य और गुणाधिका सती कन्यासे विवाह करके कौन प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त करता ! लक्ष्मी और पार्वतीके साथ विवाह कर गोप (कृष्ण) और उग्र (शिव) ने जिस तरह [प्रतिष्ठा] पाई थी। ॥ ८ ॥

उनकी यह बात सुन कर, दुरित समूहको दूर कर देनेवाली ऐसी हस्ताञ्जली किये हुए उस राजाने, अनेक प्रकारके अभिग्रह धारण करके, उस कन्याका वाग्दान प्राप्त किया और वह बड़ा प्रमुदित हुआ। सं० १२१६ मार्गशीर्ष सुदि द्वितीयाको, बलवान् लग्नमें, संवेग नामक हाथीपर आरूढ हो, रत्नत्रयसे अलंकृत, शुभमनरूप वस्त्र धारण करके, दक्षिण हस्तमें कंकण बाँध कर, वह [हेमसूरिकी] पौषधशालाके द्वारपर आया। उस समय श्वेतच्छत्र द्वारा उसका आतप निवारण किया जा रहा था; श्रद्धा नामक बहन उसकी लवण-आरती उतार रही थी;

गुरुभक्ति, देशविरति, समिति, गुप्ति आदि सखियाँ वरातिन बन कर मंगल गान कर रहीं थीं; अमारि-घोषणाके पटह बज रहे थे; परिग्रह-परिमाणरूप व्रतके मिषसे याचक जनोंको यथेष्ट दान दिया जा रहा था; पापरूप कचरेको दूर हटाया जा रहा था; सद्बोध पुष्पोंसे सन्न्यायकी राजवीथियाँ सुगंधित की जा रहीं थीं; तब कन्याकी माँ अनुकंपा महादेवी ने श्रीअर्हन के साक्षी रहते प्रोक्षण किया। इस प्रकार उस राजाने अहिंसाका पाणिग्रहण किया। उस समय, तारामेलक पर्वमें परमानन्द हुआ। इसके बाद, नवागवेदी महोत्सवके स्थानमें, ३६ हजार श्लोक ग्रन्थपरिमाण, हेमसूरिकृत **त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र** नामक शास्त्र स्थापित किया गया। वेदीके पात्र-स्थापन और पाँच कपर्दक (कोडियों) के स्थापनकी जगह; वीस-संख्यक **वीतरागस्तव** स्थापित किये गये। शमी काष्ठके स्थानपर द्वादश प्रकाशात्मक **योगशास्त्र** ग्रन्थ स्थापित किया गया। उसके परिकरके रूपमें, हेमसूरिके अन्यान्य लक्षण, साहित्य, तर्क और इतिहास प्रमुख शास्त्रोंकी रचना हुई। मूलगुण और उत्तर गुणोंसे इस वेदिकाको दृढ करके, उसमें ज्ञानरूप अग्नि जलाई गई, और ' चत्तारिमंगल ' रूप इस मांगलिक सूत्रके उच्चारणसे मंगल किया गया। उस समय उस कन्याके मुखमण्डनके लिये, राजाने ७२ लाख रुपयोंकी आमदनीवाला **' रुदती कर '** (अर्थात् निःसन्तान विधवा स्त्रियोंके राज्यग्राह्य धन) का त्याग करने रूप दान किया। उसी समय उसका पट्टबन्ध किया गया (–उसे पट्ट महादेवी बनाया गया), और उसके पिताके निवास-योग्य १४४४ विहार बनवाये गये। फिर हिंसा (जो राजाकी पूर्वपत्नी थी) अपनी सौत अहिंसाकी इस प्रकारकी उन्नतिको देख कर, अपना पराभव निवेदन करनेके लिये, अपने पिता विधाताके पास गई। बहुत दिन बाद देखनेके कारण तथा पराभवके दुःखसे विरूपसी बनी हुई उसको न पहचान, पिताने उससे पूछा कि—

> ' सुंदरी ! तुम कौन हो ? '–' हे तात विधाता ! मैं तुम्हारी प्रिय पुत्री हिंसा हूं ! '–' तूं ऐसी दीनकी तरह क्यों है ? '–' पराभवके कारण। '–' वह (पराभव) किससे हुआ ? '–' क्या बताऊं ! ' कहो न '–' हेमाचार्यके कहनेसे, उस परम गुणवान् कुमारपाल नृपतिने मुझे अपने हृदय, मुंह, हाथ और उदरसे उतार कर, पृथ्वीतलसे निकाल दिया ॥ ९ ॥

उसकी यह बात सुन कर ब्रह्मा बोले कि–'सत्यप्रतिज्ञ ऐसा कुमारपाल देव जो पहले तुझमें अनुरक्त हो कर भी, उस भेषधारी साधुके कथनको सुन कर, अब विरक्त हो गया है; तो फिर मैं अब तेरे लिये कोई ऐसा अच्छा पति ढूंढ निकालूँगा जो तेरा ही एकच्छत्र राज्य कर देगा। इसलिये तुम धीर धरो '–यह कह कर उसे अपने समीप रखा। अहिंसा देवीके साथ श्री कुमारपाल नृपति अपने इस जीवन-ही-में अतुलित महानन्दका अनुभव करता हुआ, चौदह वर्ष तक, सुख पूर्वक राज्य करता रहा। इसके बाद उसकी एक पहली प्रिया जो कीर्ति थी उसको देशान्तरमें पठा कर, जब उसने स्वर्गको अलंकृत किया, तो उसी समय उसके प्रेमकी प्रसादपूर्ण क्रीडाओंका स्मरण करती हुई वह अहिंसा देवी भी, कलिमलिन जनोंके पापस्पर्शका परिहार करनेकी इच्छासे, उसके साथ ' सहगमन ' कर गई।

इस प्रकार श्री कुमारपालका अहिंसाके साथ विवाह-संबन्ध बतानेवाला यह परिशिष्टात्मक प्रबन्ध समाप्त हुआ।

——:o:——

तं सव्वमणुगंतूण पुण्णामसममादिसे । एत्तो पुण्णामिकं धण्णं कित्तयिस्सामऽतो परं ॥ १८२ ॥
साली वीही तिलो य त्ति कोद्दवा वेरक त्ति या । उरालका चीण-मुग्गा णिप्फावा जव-गोधुमा ॥१८३॥
मासा मूढत्थ-चणका कुलत्थ त्ति सण त्ति या । एवं पुण्णामिका सद्दा वोच्छं धणमतो परं ॥ १८४ ॥
सुवण्णमासको य त्ति [ ] वेंद्दा रययमासओ । दीणारमासको य त्ति [ ] तधोणाणं च मासको ॥१८५॥
काँहापणो खत्तपको पुराणो त्ति य जो वदे । सतेरको त्ति वं सव्वं पुण्णामसममादिसे ॥ १८६ ॥
एवमेवऽत्थतो दिट्ठं पुण्णामं पि य लक्खणं । सव्वमेवाणुगंतूणं पुण्णामसममादिसे ॥ १८७ ॥
पुण्णामधेये णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । रुक्खे पुप्फ-फले देसे णगरे गाम-गिहे तधा ॥ १८८ ॥
पुरिसे चउप्पदे या वि पक्खिसम्मि उदके चरे । कीडे किमिद्दके वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १८९ ॥
पाणे य भोयणे चेव तधा आभरणेसु य । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ १९० ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्व-धण्ण-धणेसु य ॥ १९१ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतको ॥ १९२ ॥

॥ पुण्णामाणि सम्मत्ताणि । द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ छ ॥

[२ पण्णत्तरिं थीणामा]

पण्णत्तरिं तु थीणामा मणिम्मि परिकित्तिया । छगली सिहा य गंडा य उभयो कण्णचूलिगा ॥ १९३ ॥
भुमका अक्खिगुलिका तारका अक्खिवत्तिणी । णासिका कण्णपाळीओ थूणा सीवा य वालुका ॥ १९४ ॥
दाढाओ दंतवेढीओ वट्टी जिब्भा हणू तधा । अवहू-ककाडिको गीवा कडि पट्ठी फिज्जा गुदा ॥ १९५ ॥
पओट्ठा बाहुणाळीओ चुंचुका थणपाळीओ । णाभी य लोमवासी य जंघाओ थूरका तधा ॥ १९६ ॥
कंडरा पण्हिका लंका सोळसंगुलिओ तधा । लेहा छिरा य धमणी य वलीओ सिव्वणी तधा ॥ १९७ ॥
सरीरे जाणि वऽण्णाणि थीणामाणि भवंति हि । ताणि थीणामधेज्जेसु णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ १९८ ॥
थेज्जं वद्धिं जयं लाभं पुच्छे एताणि आमसं । थीणिमित्तं ति तं बूया इतरं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १९९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अवण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया थीणामं पुण णिद्दिसे ॥ २०० ॥
अप्पभागो य भवति अप्पसेसे किलेसेवं । पावो य आढ्लो णिच्चं भोगे दुक्खेण भुंजति ॥ २०१ ॥
इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज अवण्णा दूभग त्ति य । अप्पसेसा असिद्धत्था कुडुंबस्स अणिस्सरी ॥ २०२ ॥
असामिणी य अत्थाणं आणा जस्स ण वट्टति । आइला धडुमंतक्खा पतिं च ण जयिस्सति ॥ २०३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज तिस्से सव्वत्थमादिसे । अज्झावक फलं सव्वं ण लद्धुं पुण णिग्गमे ॥ २०४ ॥
अप्पसेसा थैमागा य कुडुंबस्स य णीहणी । णिच्चं पतिस्स वस्साय अविधेयो पती य से ॥ २०५ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी तु किलेसेण दारिकं तु पजाहिति ॥ २०६ ॥
णिच्चं अपचयमणं पुच्छे कण्णास्स ठावरा । दारकाऽस्स ण जायंति जाताणं मच्चुवो भयं ॥ २०७ ॥
पुरुसो जति पुच्छेज्ज थीणिमित्तं समागमं । भविस्सति त्ति तं बूया थीया णत्थि समागमो ॥ २०८ ॥
विज्जाभिगमणं सिप्पं कम्मारंभं परिग्गहं । ववहारं च लाभं वा मित्त-णातिसमागमो ॥ २०९ ॥

१ °ण्णामकं हं० त० विना ॥ २ °स्सामितो हं० त० विना ॥ ३ चकर त्ति सं ३ पु० ॥ ४ हस्तचिह्नमध्यवर्ती पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ काहपको हं० त० विना ॥ ६ °त्थ उद्दिट्ठं हं० त० ॥ ७ दंतचेटीयो वद्दी जि° हं० त० ॥ ८ अवचक° सं ३ पु० । अवभूक° सि० ॥ ९ °का मीवा सप्र० ॥ १० चुचुका हं० त० ॥ ११ °ओ पूरका हं० त० । °ओ दरका सि० ॥ १२ अत्थं च निजयं सि० ॥ १३ °सया हं० त० ॥ १४ °स्सरा हं० त० विना ॥ १५ अमग्गा हं० त० ॥ १६ अविधेया सप्र० ॥ १७ णिट्ठं अपचयमणं हं० त० ॥ १८ मो० पु० विनाऽन्यत्र-°स्स ठायरा सं० ली० । °स्स थावरा हं० त० । °स्स यावरा सि० ॥ १९ सीया हं० त० ॥

रायप्पसातं अधिगारं थीणामे ण पसस्सते । थीसंपयोगो थीलामो थियाणं तु पसस्सते ॥ २१० ॥
कामिगं कामिगा खंसं सदिकं केसवाणियं । अब्भाकारियं लद्धमवलद्धं वा वि णिद्दिसे ॥ २११ ॥
देविकोडुंविकं वा वि महाणसिकमेव य । णाडकायरियं वा वि तधा णट्टोसकं पि वा ॥ २१२ ॥
थीसेवकपेसणकं गणिकापविचारकं । थीअलंकारगं चेव थीणं य दव्वसाधकं ॥ २१३ ॥
पवासे पुच्छिते णत्थि पउत्थो य णिरत्थकं । थीसंपउत्तं आगमणं पउत्थस्स वियागरे ॥ २१४ ॥ 5
वंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि वंधो त्ति णिद्दिसे । वद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ २१५ ॥
वद्धस्स वा वि पुच्छेज्ज पुरिसस्स पवासणं । पुच्छिते णिद्दिसे तस्स भविस्सति पवासणं ॥ २१६ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं वियागरे ॥ २१७ ॥
संधिं वा परिपुच्छेज्ज विग्गहं तस्स णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज विवादं तस्स णिद्दिसे ॥ २१८ ॥
विवादे वा जयं पुच्छे णत्थि त्तेवं पवेदये । अरोगं पडिपुच्छेज्जा णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २१९ ॥ 10
कोवं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज मरणं तत्थ णिद्दिसे ॥ २२० ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिति त्ति वं ॥ २२१ ॥
णिव्वाणं परिपुच्छेज्ज अणेव्वाणिं पवेदये । संपत्तिं परिपुच्छेज्ज असंपत्तिं पवेदये ॥ २२२ ॥
उस्सवभूतं जं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । दीणं सोकं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २२३ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वरसारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ २२४ ॥ 15
अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । कदा वासं ति वा वूया काले वासं ति णिद्दिसे ॥ २२५ ॥
दिवा रत्तिं ति वा वूया रत्तिं ति य वियागरे । सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि त्तवं वियागरे ॥ २२६ ॥
सस्सस्स संपयं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । सतिं च जति पुच्छेज्ज सई तत्थ पवेदये ॥ २२७ ॥
थीणामधेयं जं चऽण्णं पभूतमिति णिद्दिसे । णट्ठं ति परिपुच्छेज्ज णत्थी णट्ठं ति णिद्दिसे ॥ २२८ ॥
णट्ठमाधारइत्ताणं थीणाममिति णिद्दिसे । णट्ठस्स लाभं पुच्छेज्ज णत्थि लाभो त्ति णिद्दिसे ॥ २२९ ॥ 20
[................................. ।] पत्तावसंगमं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २३० ॥
⊲ णिर्यौणं णिधितं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । ⊳ णिर्यौगलंभं पुच्छेज्ज णत्थि [४]लंभो त्ति णिद्दिसे ॥ २३१ ॥
सेवाणिमित्तं पुच्छेज्ज णत्थि सेव त्ति णिद्दिसे । रायप्पसादं पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २३२ ॥
रायतो णिव्वुतिं पुच्छे वल्लमत्तं च पुच्छति । भोगलंभं तधा[ऽ]ण्णं वा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ २३३ ॥
तधाऽधिकरणे सिद्धिं लाभं पुच्छति कम्मिको । तधा पतिट्ठं छायं वा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ २३४ ॥ 25
मणिं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो पावकम्मिको । कुलं मणिं णिमित्तं च अवसिद्धेण संसितो ॥ २३५ ॥
अच्छादणं च पुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अच्छादणनिमित्तं च कुलस्साऽऽयासमादिसे ॥ २३६ ॥
भूसणं परिपुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अप्पसत्थं च तं वूया कुलस्साऽऽयासकारणं ॥ २३७ ॥
घरप्पवेसं पुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अणिव्वुतिकरं पावं फलं णेव पसस्सते ॥ २३८ ॥
णिचयं भंडलाभं च दव्वस्स य स णिव्वुतिं । याधिं लंभं च एतेसु णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २३९ ॥ 30
दासकम्मकरं पुच्छे अधण्णं पावकं वदे । आएमकारकं णिच्चं उगतं ण य काहिति ॥ २४० ॥
पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ २४१ ॥

---

१ °कारिफलदं य दलं वा वि हं० त० विना ॥ २ णट्टोसकं हं० त० विना ॥ ३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नमध्यगतं पूर्वार्द्धं हं० त० नास्ति ॥ ४ णिहाणलामं हं० त० सि० ॥ ५ लामो हं० त० ॥ ६ मघणो हं० त० ॥ ७ दव्वस्स य सणिधिं । याधिं सं ३ पु० । दव्वसेव य सणिधिं । याधिं सि० ॥

पुरिसो णपुंसको इत्थी इत्थि त्ति [य] वियागरे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज सव्वं मज्झिमगं वदे ॥ २४२ ॥
जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ २४३ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे (समे) सद्दे य जाणेज्ज थीणामा जे भवंति य ॥२४४॥
अहोमहिल त्ति वा बूया महिला सुमहिल त्ति वा । अहोइत्थि त्ति वा बूया सुइत्थी इत्थिमेव य ॥२४५॥
5 दारिया [1]बालिया व त्ति सिंगिका पिल्लिक त्ति वा । वच्छिका तण्णिका य [2]त्ति पोतिक त्ति व जो वदे ॥२४६॥
कण्ण त्ति वा कुमारि [3]त्ति धिज्जा [4]वत्ति वधु त्ति वा । वधू उपवधू व त्ति इत्थिया पमद त्ति वा ॥ २४७ ॥
अंगणा महिला णारी पोट्ट्टी जुवति त्ति वा । जोसिता [5]धणिता य त्ति विलक त्ति विलासिणी ॥ २४८ ॥
इट्ठा कंता [6]पियाँ य त्ती मणामा हितइच्छिता । इस्सरी सामिणी व त्ति तधा वल्लभिक त्ति वा ॥ २४९ ॥
पज्जिया अज्जिया य त्ति ◁ [7]णौनिका मह ▷ मातुया । माता वा [8]चुल्लमाता वा माउस्सिय पितुस्सिया ॥२५०॥
10 भज्जा जारि सही व त्ति धूता णत्ति पणत्तिणी । [9]रेमा त सुण्ह सावत्ती सहिका मेधुण त्ति वा ॥ २५१ ॥
भातुज्जाय त्ति वा बूया सगोत्ता [10]भगिणि त्ति वा । भागिणेज्जि त्ति भज्ज त्ति तधा कोडुंबिणि त्ति वा ॥२५२॥
पितुस्सद्दा माउस्सद्दा वा जधा णेयातुका[11]सद्दा । एतासं कि[12]त्तणेणं ता थीणामं सव्वमादिसे ॥ २५३ ॥
इत्थीरयणं ति वा बूया महादेवि त्ति वा पुणो । रायपत्ति त्ति वा बूया रायग्गमहिसि त्ति वा ॥ २५४ ॥
रायोपज्जायपत्ति त्ति [13]सेणायपतिणि त्ति वा । भोयणी तलवरी व त्ति रट्ठिणी गामिणि त्ति वा ॥ २५५ ॥
15 अमच्ची [14]दुल्लभी व त्ति पडिहारि त्ति वा पुणो । तधिरसरिगिणी य त्ति तधा भोइणिगि त्ति वा ॥ २५६ ॥
छायाकरणठाणेण ठाविता [15]जे सऽधिरसरा । [16]जे यत्थाणजाते पुरिसा माता भज्जा वि सिं तधा ॥ २५७ ॥
घरिणी सत्थवाहि त्ति इब्भी वा भोगसित्ति वा । भडी णडी कारगिणी तधा सहिगिणी त्ति वा ॥ २५८ ॥
लाडी [वा] जोणिका य त्ति चि[18]लाती बब्बरि त्ति वा । सबरि त्ति पुलिंदि त्ति अंधी दिमिलि त्ति वा २५९
जाति-रस-देस-कम्माणं विज्जा-सिप्पकमेण वा । ये यत्थाणजाते पुरिसा ताओ वि य तधेय सिं ॥ २६० ॥
20 जं जो समाचरे कम्मं जंजातीको व्व जो भवे । तेसिं भज्जा वि णातव्वा तेणेवाभिजणेण तु ॥ २६१ ॥
गणणामा लाजिका य त्ति उवधाइणि त्ति वा । दासी [20]कम्मकरी व त्ति पेसि त्ति [21]नत्तिक त्ति वा ॥ २६२ ॥
पयावति त्ति वा बूया [22]अंणे भोति त्ति वा पुणो । भोति त्ति माणिणी य त्ति [23]मातुस्स त्ति व जो वदे ॥२६३॥
बंभणी खत्तियाणि त्ति वेस्सी सुद्दि त्ति वा पुणो । चातुव्वण्णविधाणेण णामतो जं जधुद्दिते ॥ २६४ ॥
ओवाविक त्ति वा बूया सामोयात त्ति वा पुणो । [24]कोलस्साम त्ति ◁ [25]सौम त्ति ▷ कालक त्ति य जो वदे ॥२६५॥
25 दिग्घा मडहिया व त्ति चतुरस्स त्ति वा पुणो । चतुरस्सा वाऽऽयता व त्ति खुज्जा मडहिक त्ति वा ॥ २६६ ॥
थूल त्ति तणुकी व त्ति तधा मज्झिमक त्ति वा । सरला असरला य त्ति [26]कोण त्ति सद्दु त्ति वा ॥ २६७ ॥
तघंतेपुरिका व त्ति [27]अंभोगाकरिणि त्ति वा । तधा सयणपालि त्ति भंडाकारिकिणि त्ति वा ॥ २६८ ॥
[28]जं चऽण्णं एवमादीयं थीकल्लाकम्मगं ति वा । तासं संकित्तणासद्दा थीणामसमलक्खणा ॥ २६९ ॥

---

१ वासिया हं० त० विना ॥ २ त्ति पत्तिक त्ति हं० त० ॥ ३ त्ति विज्जा सप्र० ॥ ४ पत्ति दधु त्ति हं० त० ॥ ५ धणिता सप्र० ॥ ६ पिया पत्ती सि० विना ॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति । नामिका सप्र० ॥ ८ चुण्णमाता सप्र० ॥ ९ रमते सुण्ह सप्र० ॥ १० भगणि हं० त० विना ॥ ११ °सघा हं० त० विना ॥ १२ °त्तणेणत्ता सप्र० ॥ १३ सण्णाय° हं० त० सि० ॥ १४ पल्लभी हं० त० ॥ १५ जे जह तिस्सरा हं० त० । जे तु धिस्सरा सि० ॥ १६ जित्था° हं० त० विना ॥ १७ 'यत्थाणजाते' यत्स्थानजाता इत्यर्थः ॥ १८ चिलाते सप्र० ॥ १९ °जाप पु° हं० त० ॥ २० दस्सकरी स ३ पु० ॥ २१ ओतिक त्ति सं ३ पु० । उत्तिक त्ति सि० ॥ २२ आणे हं० त० विना ॥ २३ माउस्सेति घ हं० त० ॥ २४ फालेस्साम सं ३ पु० । कलिस्साम सि० ॥ २५ ◁ ▷ एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २६ कोण त्ति हं० त० विना ॥ २७ आमागाकिरिणि हं० त० ॥ २८ जं चऽण्णं पवत्थिकाला कम्मिणधत्ति । तासं सं ३ पु० । जं चऽण्णं पवत्थिकाला कम्मण घ त्ति । तासं हं० त० । जं चण्णे पयमादीये त्थिकाला कम्मिण च त्ति । तासं सि० ॥

थीणामा माणुसा सद्दा इच्चेते परिकित्तिता । एत्तो अमाणुसे सद्दे कित्तयिस्सं अतो परं ॥ २७० ॥
असुरी असुरभज्जा वा असुरकण्ण त्ति वा पुणो । णागी [वा] णागकण्णा वा जा वऽण्णा भवणालया ॥२७१॥
गंधव्वी रक्खसी व त्ति जक्खी किन्नरक त्ति वा । वणप्फति दिसा व त्ति तारक त्ति व जो वदे ॥ २७२ ॥

हिरी सिरि त्ति लच्छि त्ति किंचि मेघा सति त्ति य ।
धिती ◁धि[1] त्ति तु▷ बुद्धि त्ति इला सीत त्ति वा पुणो ॥ २७३ ॥ 5

विज्जा वा विज्जता व त्ति चंदलेह त्ति वा पुणो । ◁उक्कोससत्ति वा बूया अब्भराय त्ति वा पुणो ॥ २७४ ॥
अहोदेवि त्ति वा बूया देवी वा देवत त्ति वा । देवकण्ण त्ति वा बूया असुरकण्ण त्ति वा पुणो ॥ २७५ ॥▷
इंदग्गमहिसी[3] व त्ति असुरग्गमहिसि त्ति वा । तथा अइरिका[4] व त्ति तधा भगवति त्ति वा ॥ २७६ ॥
अलंबुसा मिस्सकेसी मीणका मियदंसणा[5] । अचला[6] अणादिता व त्ति अइराणि त्ति वा वदे ॥ २७७ ॥
रंभ त्ति मिस्सकेसि त्ति तिधिणी[7] सालिमालिणी । तिलोत्तिमा चित्तधा चित्तलेह त्ति उव्वसी ॥ २७८ ॥ 10
जा वऽण्णा एवमादीया अच्छरायि वि सूयते । णामसंकित्तणे तासिं थीणामं सव्वमादिसे ॥ २७९ ॥
अमाणुसाणि एताणि थीणामाणि वियाणिया । चतुप्पदेसु कित्तिस्सं थीणामाणि अतो परं ॥ २८० ॥
कणेरु हत्थिणी व त्ति गावि त्ति महिसि त्ति वा । वडव त्ति किसोरि त्ति घोडिक त्ति अजाऽविला ॥२८१॥
कण्हेरी[9] रोहिती व त्ति एणिका पसति त्ति वा । कुरंगि त्ति मिगी व त्ति भल्लुकी सुणहि त्ति वा ॥ २८२ ॥
सीही वग्घी [10]विकी व त्ति अच्छभल्लि त्ति वा पुणो। मज्जारी [11]मुंगसी व त्ति उण्हाली अडिल त्ति वा ॥२८३॥ 15
मूसिका [12]छुंछिका व त्ति ओवुलीक त्ति उंदुरी । वाराही सुवरी कोली खारका घरकोइला ॥ २८४ ॥
जं वऽण्णं एवमादीयं थीणामं तु चतुप्पदं । णामसंकित्तणे सद्दे थीणामं सव्वमादिसे ॥ २८५ ॥
चतुप्पदाणि एताणि थीणामाणि भवंतिह । थीणामधेये पक्खीओ[13] कित्तयिस्समतो परं ॥ २८६ ॥
विहेरी[14] रायहंसि त्ति कलहंसि त्ति वा पुणो । [15]कोकि त्ति सालिया[16] व त्ति पूतणा[17] सकुणि त्ति वा ॥२८७॥
गिद्धी सेणि त्ति काकि त्ति घूकी वा वंतुक त्ति वा । उलुकी मालुका व त्ति सेणी[18] सीपिंजुल त्ति वा ॥ २८८ ॥ 20
कीरी मदणसलाग त्ति सालाका कोकिल त्ति वा । पिरिली कुडपूरि त्ति भारद्दाइ त्ति वा पुणो ॥ २८९ ॥
लीविका[19] वट्टिका व त्ति सेण्ही वा कुकुडि त्ति वा । पेलाडीक[20] त्ति पोटाकी सउणीग त्ति वा पुणो ॥ २९० ॥
आडा टिट्टिभिका व त्ति णडिकुकुडिक त्ति वा । सडिक त्ति वलाक त्ति चक्कायि त्ति वा पुणो ॥ २९१ ॥
एवं थीनामका पक्खी समासेण तु कित्तिया । परिसप्पगते वोच्छं थीणामेण अतो परं ॥ २९२ ॥
मेलुंडी[21] अहिणूक त्ति जलूका अहिणि त्ति वा । योमीक त्ति सिकुवाली कुलीरा[22] कच्छभि त्ति वा ॥२९३॥ 25
वत्तणासी सिगिला य सिकुंथी[23] वरड त्ति वा । ओवातिक त्ति मंडुकी सुंसुमारि असालिका[24] ॥ २९४ ॥
एवमादी समासेण थीणामा जे जलचरा । णामतो समुदीरंति थीणामसमका हि ते ॥ २९५ ॥
गोधा गोमि त्ति वा बूया तथा मंडलिकारिका[25] । भिंगारी अरका[26] व त्ति[27] वचाई इंदगोविगी ॥ २९६ ॥

---

१ ◁ ▷ एतचिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ ◁ ▷ एतचिह्नमध्यगतः सार्धश्लोकः हं० त० नास्ति ॥ ३ इंदग्गमहिसी व त्ति असुर त्ति मह त्ति वा हं० त० ॥ ४ अइरका हं० त० ॥ ५ वियदंसणा हं० त० विना ॥ ६ अप(य)ला हं० त० विना ॥ ७ तिधणि हं० त० विना ॥ ८ °राति वि हं० त० ॥ ९ कण्हेणा रो° हं० त० विना ॥ १० घकी हं० त० ॥ ११ अंगुली व त्ति हं० त० ॥ १२ छुंछुका व त्ति उंमुलीक हं० त० ॥ १३ पक्खीतु हं० त० विना ॥ १४ किण्णरी हं० त० सि० ॥ १५ जाजि त्ति हं० त० ॥ १६ सालिमा व सप्र० ॥ १७ पूयणा सकुज्झि त्ति हं० त० ॥ १८ मेणा सीपिंजलि त्ति हं० त० ॥ १९ लीहिका वहिका व त्ति सण्ही वा कुखुडि हं० त० ॥ २० पोलाडिक त्ति पोतासी हं० त० ॥ २१ मर्लुडी हं० त० ॥ २२ कुलरी हं० त० ॥ २३ सिकुण्डी सि० । लिकुडी हं० त० ॥ २४ असासिका हं० त० विना ॥ २५ °कारिमा सं ३ पु० ॥ २६ अरचा कति वचाई हं० त० विना ॥ २७ त्ति घंघवाई इंदुगोधिगा हं० त० ॥

तूंका लिक्खा फुसी व त्ति तधा सुम्मुलक त्ति वा । जाला लुव त्ति वा बूया भिउडी किणिहि त्तधा ॥२९७॥
तला कमेइका व त्ति उण्हणाभि त्ति वा पुणो । कोणटिट्टि त्ति वा बूया मयंसल-किपिल्लिका ॥ २९८ ॥
जा वऽण्णा किमिजातीणं सुहुमा वादरा इ या । थीणामा य उदीरेंति थीणामसमका हि ते ॥ २९९ ॥
इच्चेते पाणजोणीयं थीणामा जे पवेदिता । मूलजोणिगता सव्वा थीणामसमका इमे ॥ ३०० ॥ तत्थ–

5 रुक्खजोणि[ग]ए रुक्खे थीणामे परिकित्तिये । थीणामधेज्जेहिं समा ते वि सव्वा विधीयते ॥ ३०१ ॥
पिप्पली वेडसी जंबू तधा ते परिकित्तिता । तधा अंबिलिका व त्ति वदे चिंचिणिक त्ति वा ॥ ३०२ ॥
तधा मंडि त्ति सीवण्णि कज्जूरी केतभि त्ति वा । कंदूकीका विंवुरुकी धकंटिवेल्लरितेरणिं ॥ ३०३ ॥
अरलुसाऽऽमली सेवपूति लंवा(चा)पलि त्ति वा । सीकवल्लोकि लिंगिच्छी हिंछाघोड त्ति वा पुणो ॥ ३०४ ॥
टक्कारी वेजयंति त्ति कंगूका सीसवत्तिया । अप्फोतिका घवासि त्ति सिंदीवासि त्ति वा पुणो ॥ ३०५ ॥
10 तधा समुद्दवल्लि त्ति कप्पासी रुचिक त्ति वा । उंगुणी मातुलिंगि त्ति णीहू वा ओफकि त्ति वा ॥ ३०६ ॥
तधाऽऽंजरवल्लि त्ति उदगवल्लि त्ति वा पुणो । कूभंडी वबुसी व त्ति भवे पह्मालुक त्ति वा ॥ ३०७ ॥
तुंबी कालिंगी वालुंकी [तधा] कक्खारुणि त्ति वा । नलिणी पउमिणी व त्ति तधा कमलिणि त्ति वा ॥ ३०८ ॥
उप्पलिणी [........................ । ....] पिंडालुकि त्ति वा ॥ ३०९ ॥
घोसाडकि त्ति वा बूया ससविंदुकिणि त्ति वा । तधा भंजुलिका व त्ति कसकी कारिअल्लिका ॥ ३१० ॥
15 णीलि त्ति कालिका व त्ति अंजणकेसक त्ति वा । लता लट्ठि त्ति वा बूया छमिणी काणवि त्ति वा ॥ ३११ ॥
दुम-गुम्म-लता व त्ति लोए थीणामिका व ये । भवंति एवमादीणि थीणामसमकाणि ते ॥ ३१२ ॥
लता-वल्लि-दुमाणं च लोए गुम्माणमेव य । पुप्फाणि य पवक्खामि थीणामाणि अतो परं ॥ ३१३ ॥
जाति चंपयजाति त्ति महाजाति त्ति वा पुणो । सुवण्णजूधिगा व त्ति जूधिक त्ति व जो वदे ॥ ३१४ ॥
तंकुली तलुसी व त्ति वासंती वासुल त्ति वा । वइंदवुंदि काल त्ति जयसमण त्ति वा पुणो ॥ ३१५ ॥
20 णवमल्लिका मल्लिक त्ति णितण्णिक त्ति वा पुणो । तिगिंच्छि पीतिका व त्ति तधेव म[ग]यंतिका ॥ ३१६ ॥
पियंगुक त्ति वा बूया कंगुक त्ति व जो वदे । कुरुडूक त्ति व वदे वेणति त्ति व जो वदे ॥ ३१७ ॥
सधंवमंजरी व त्ति जा वऽण्णा पुप्फमंजरी । पुप्फपिंडिया बूया पुप्फगोच्छि त्ति वा पुणो ॥ ३१८ ॥
इच्चेते पुप्फजोणीयं थीणामा परिकित्तिता । थीणामं पुप्फसंजोगं कित्तयिस्सं अतो परं ॥ ३१९ ॥
धंदा तीसालिका व त्ति पारिहत्थि त्ति वा पुणो । धुंभिधि धम्मि जागि त्ति तधेव य विलिंजरं ॥३२०॥
25 पोट्टालिका वेजयंति तधा मज्जणमालिका । जंगमाल त्ति वा बूया तधा खोलकमालिका ॥ ३२१ ॥
पुप्फजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । थीणामाणि फलाणि तु कित्तयिस्समतो परं ॥ ३२२ ॥
मुंदिका घलिका चेव तधेव य कसेरुका । भुणालिक त्ति वा बूया तधा विधित्तिक त्ति वा ॥ ३२३ ॥

---

१ लूका हं० त० ॥ २ मुम्मुलिक हं० त० ॥ ३ किणिदित्तहा हं० त० ॥ ४ कमेदका व त्ति उंटेणाभि हं० त० ॥ ५ काणो टिट्टि त्ति हं० त० ॥ ६ वदे चिंचिणिकं ति वा सं ३ पु० सि० । वदे चिंचिलिकं ति वा हं० त० ॥ ७ कदकीका तियरुकी धकंटिवल्लरिपरर्लि हं० त० ॥ ८ सेलूपूति लंवापति त्ति हं० त० ॥ ९ अप्फोति° हं० त० ॥ १० सिंदी वा सिण्णि वा पुणो हं० त० ॥ ११ आद(ट) कि हं० त० ॥ १२ °कसिक हं० त० ॥ १३ °मकं च ये सं ३ पु० सि० । मकं च यं हं० त० ॥ १४ °का हि ते सप्र० ॥ १५ जाति चप जाति त्ति सं ३ पु० सि० । जोइयपजाति त्ति हं० त० ॥ १६ तकुली हं० त० ॥ १७ °वुंदि कालाणि जय° सि० विना ॥ १८ णयमालिका मल्लिक त्ति तिणितित्तिक त्ति वा हं० त० विना ॥ १९ धमधि सि हं० त० ॥ २० °जोणीया हं० त० ॥ २१ धुमिधियधम्मिजाग हं० त० ॥ २२ तयेयं विलिजरं हं० त० ॥ २३ पादालिका हं० त० ॥ २४ मुदिका विचलिका हं० त० विना ॥

तथा [1]लोमंसिका व त्ति अक्खोल त्ति व जो वदे । तथा कुक्कुडिगा व त्ति तथा संगलिक त्ति वा ॥ ३२४ ॥
फलपिंडि त्ति वा बूया फलगोच्छो त्ति या पुणो । फला फलिक त्ति वा बूया फलमाल त्ति वा पुणो ॥३२५॥
तधेव फल[2]मिंजोसु फलाणं पेसिकासु वा । एवमादीसु सव्वेसु थीणाममभिणिद्दिसे ॥ ३२६ ॥
फलजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । थीणामधेये आहारे कित्तयिस्सं अतो परं ॥ ३२७ ॥

[3]दुंदुण्हिक त्ति वा बूया तधेव उदक(कु)ण्हिका । [4]सँमगुण्हिक त्ति वा बूया जागु त्ति कसरि त्ति वा ॥३२८॥ 5
अवेलि त्ति व जो बूया पत्तवेल्लि [त्ति] वा पुणो । वोलकल्लि त्ति वा बूया [6]तंकुलि त्ति व जो वदे ॥ ३२९ ॥
तथा [7]कुंम्मासपिंडि त्ति सत्तुपिंडि त्ति वा पुणो । तथा तप्पणपिंडि त्ति इतिपिंडि त्ति वा पुणो ॥ ३३० ॥
तथा ओदणपिंडि त्ति तिलपिंडि त्ति वा पुणो । [8]पीढपिंड त्ति वा बूया रच्छाभि(भ)त्तिं व जो वदे ॥ ३३१ ॥
रसाल त्ति व जो बूया पढमट्ठं ति वा पुणो । [9]चोरालि त्ति व जो बूया [10]अंबपिंडि त्ति वा पुणो ॥ ३३२ ॥
तथा [11]अंबकधूवि त्ति तथा उल्लूरधूविता । अंबाडगधूवि त्ति[12] जा यऽण्णा धूपिता भवे ॥ ३३३ ॥ 10
चतुव्विहम्मि आहारे जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तस्स थीणामससमादिसे ॥ ३३४ ॥
थीणामधेज्जा आहारा इच्चेते परिकित्तिया । अच्छादणं तु थीणामं कित्तयिस्समतो परं ॥ ३३५ ॥

[13]पउण्ण त्ति पयणि त्ति यण्णा सोमित्तिकि त्ति या । अद्धकोसेज्जिका व त्ति तथा कोसेज्जिका पि वा ॥३३६॥
पसरादि त्ति वा बूया पिगाणादियवंतरा । लेख त्ति पाउकोंणि त्ति तथा वेलविक त्ति वा ॥ ३३७ ॥
[15]◄ वेंबा ► परत्तिका व त्ति भवे माहिसिक त्ति वा । 15
[16]☞ ईली कदुतरी व त्ति तथा जामिलिक त्ति वा ☜ ॥ ३३८ ॥
सण्हा थूल त्ति वा बूया सुवुता दुव्वुत त्ति वा । अप्पग्घा वा महग्घा वा [17]अँहता धोतिक त्ति वा ॥ ३३९ ॥
जं यऽण्णं एवमादीयं लोए थीणामकं भवे । वत्थसंकित्तणे तासं थीणामससमादिसे ॥ ३४० ॥
अच्छादणं तु थीणामं इच्चेतं परिकित्तितं । भूसणाणि तु कित्तेस्सं थीणामाणि अतो प्परं ॥ ३४१ ॥

सिरीसमालिका व त्ति तधा णलियमालिका । तथा मकरिका व त्ति ओराणि त्ति वा पुणो ॥ ३४२ ॥ 20
पुप्फितिक त्ति वा बूया [18]मँकण्णी लकड त्ति वा । वालिका कण्णवल्लीका कण्णिका कुंडमालिका ॥ ३४३ ॥
सिद्धत्थिक त्ति वा बूया तथा अंगुलि[19]मुंद्दिका । तवऽक्खमालिका व त्ति तथा वा संघमालिका ॥ ३४४ ॥
[20]पेंयुका णितारिंगि त्ति तथा कंटकमालिका । घणपिच्छिलिका व त्ति तथा वा वि विकालिका ॥ ३४५ ॥
एकावलिका व त्ति तथा पिप्पलमालिका । हारावलि त्ति वा बूया [21]अँघा मुत्तावलि त्ति वा ॥ ३४६ ॥
कंची व रसणा व त्ति जंबूका मेखल त्ति वा । [22]कंटिक त्ति व जो बूया तथा संपडिक त्ति वा ॥ ३४७ ॥ 25
[23]पाँमुद्दिक त्ति वा बूया वम्मिका [24]पाअसूंचिका । तथा [25]पाँघट्टिका व त्ति तथा खिंखिणिक त्ति वा ॥ ३४८ ॥
जं यऽण्णं एवमादीयं थीणामं भूसणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामं सव्वमादिसे ॥ ३४९ ॥
भूसणाणि तु सव्वाणि थीणामाणि [26]समासँत । सयणा-ऽऽसणाणि जाणाणि कित्तयिस्समतो परं ॥ ३५० ॥

---

१ नामसिका हं० त० ॥ २ °मिजेसु हं० त० ॥ ३ दुद्धण्हि° हं० त० ॥ ४ सम्मिगुम्मिक हं० त० ॥ ५ ताल° हं० त० ॥ ६ तकुलि हं० त० ॥ ७ कम्मास° सप्र० ॥ ८ पिंडपिंड हं० त० विना ॥ ९ चारालि हं० त० विना ॥ १० अंधपिंडि हं० त० ॥ ११ अंधकधूवि हं० त० ॥ १२ त्तिगा आ हं० त० ॥ १३ पत्तुण्ण त्ति पपण त्ति हं० त० विना ॥ १४ °कारण त्ति हं० त० विना ॥ १५ ◄ ► एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १७ आचया धोत्तिक हं० त० ॥ १८ मकणी लकुड हं० त० विना ॥ १९ °मुद्दिका हं० त० ॥ २० पेयुका णितिरिंगि हं० त० ॥ २१ अघ हं० त० ॥ २२ कंटक हं० त० विना ॥ २३ जामुद्दि° हं० त० ॥ २४ °सूरिका हं० त० विना ॥ २५ पार्घटिका पु० ॥ २६ °सओ हं० त० ॥

सेज्जा खट्टा भिसी व त्ति आसंदी पेढिक त्ति वा । मढिसादा सिला व त्ति फलकी ईट्टक त्ति वा ॥३५१॥
सकडि त्ति व जो बूया सकडीक त्ति वा पुणो । थिंल्ली गिल्लि त्ति वा बूया सिविका संदमाणिका ॥ ३५२ ॥
सयणा-ऽऽसण-जाणाणि थीणामाणि समासत । कित्तियाणि पवक्खामि भायणाणि समासत ॥ ३५३ ॥
करोडी कंसपत्ति त्ति पालिका सरिक त्ति वा । भिंगारिका कंचणिका तधा कवचिक त्ति वा ॥ ३५४ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं थीणामं भायणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामसममादिसे ॥ ३५५ ॥
भायणाणि तु वुत्ताणि थीणामाणि समासत । थीणामाणि पवक्खामि भंडोवगरणाणि तु ॥ ३५६ ॥
अलिंदिक त्ति पत्ति त्ति उक्खली थालिक त्ति वा । कालंची कँकी व त्ति कुठारीक त्ति वा पुणो ॥३५७॥
थाली मंडी घडी दव्वी केलों उट्टिक-माणिका । णिसका आयमणी चुल्ली फूमणाली समंछणी ॥ ३५८ ॥
मंजूसिका मुद्दिका य सलाकंजणि पेल्लिका । धूतुल्लिक त्ति [...] व त्ति पिंच्छोला फणिका पि वा ॥ ३५९ ॥
दोणी उक्कुलिणी पाणि अमिल त्ति थुध त्ति वा । तधा पडालिका व त्ति तवि वत्थरिक त्ति य ॥ ३६० ॥
जं चऽण्णमवि थीणामं भंडोवगरणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामं सव्वमादिसे ॥ ३६१ ॥
भंडोवगरणं एतं थीणामं परिकित्तियं । आयुधाणि पवक्खामि थीणामाणि अतो परं ॥ ३६२ ॥
कुँद्दालि त्ति कुठारि त्ति वासि त्ति छुरिक त्ति य । दव्वी तध कवल्ली य दीविक त्ति कडच्छकी ॥३६३॥
जं चऽण्णमपि थीणामं दव्वं लोहमयं भवे । णामसंकित्तणे तासं थीणामसममादिसे ॥ ३६४ ॥
मणीसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । जं जं थीणामकं भवति तं तं थीलक्खणं भवे ॥ ३६५ ॥
सुवण्णकाकणी य त्ति तधा मासककाकणी । तधा सुवण्णगुंज त्ति दीणारि त्ति य जो वदे ॥ ३६६ ॥
हिरण्णम्मि तु सव्वम्मि जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तासं थीणामसमलक्खणं ॥ ३६७ ॥
तधा सव्वेसु धन्नेसु जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तेसं सव्वं थीणामकं भवे ॥ ३६८ ॥
एवमेतेसु सव्वेसु परिकित्तिसु यधक्कमं । जं जं थीणामकं भवति सव्वं तं समलक्खणं ॥ ३६९ ॥
थीणामधेज्जे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि वा । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गामे गिहे पि वा ॥ ३७० ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगोचरे । कीडे किविल्लके वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ३७१ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि तधेवाऽऽभरणेसु य । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ३७२ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणि[सु] वा वि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ३७३ ॥
[एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य ।] सव्वमेयाणुगंतूणं ततो बूया अंगचिंतको ॥ ३७४ ॥

॥ थीणामाणि सम्मत्ताणि ॥ २ ॥ छ ॥

[३ अट्ठावण्णं णपुंसका]

अट्ठावण्णं तु णातव्वा पुरिसंगे णपुंसका । थणंतरभागा य जंघोरूगं पं जे भवे ॥ ३७५ ॥
अक्खिगंड्डंडंमकूडाणि कुक्खंतर- मुहंतरं । अंगुली अंतराणि च अंगे णिण्णाणि जाणि य ॥ ३७६ ॥
केस-मंसु-णहं लोमं अंगाणि मज्झिमाणि य । एते अंगम्मि णातव्वा अट्ठावण्णं णपुंसका ॥ ३७७ ॥
णपुंसकाणि जाणंगे अण्णाणि वि भवंतिह । णपुंसकेहिं ताणि पि णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ३७८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ३७९ ॥

---

१ इट्टक हं० त० ॥ २ थाली गिल्लि त्ति हं० त० । थाली गिल्लि त्ति सं ३ पु० सि० ॥ ३ अलिंदक सि० ॥ ४ कल्वी हं० त० ॥ ५ केला उट्टिक माणिया हं० त० ॥ ६ मजूसिका मुद्दिका य सला कंजणि पेलिका हं० त० विना ॥ ७ एयं हं० त० ॥ ८ कुद्दालि हं० त० विना ॥ ९ त्ति य दुच्छकी हं० त० ॥ १० चतुरस्रकोष्ठकगतं पूर्वार्धमिदं प्रतिषु नास्ति ॥ ११ थ जं भवे हं० त० विना ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया एतेसामुपवेसणे ॥ ३८० ॥
असेसो आइलो चेव वयोगतमणो णरो । परिकिलेसाभिगते भोगे अप्पे तु भुंजति ॥ ३८१ ॥
इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्था असेसा य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ३८२ ॥
अणीसरी कुडुंबस्स ण य कस्सति सामिणी । आइला सपरिकेसा भोगे भुंजे जेवेच्छया ॥ ३८३ ॥
अविधेयो य से भत्ता सा य भत्तु वसे भवे । बहुरोगा अप्परोगा बहुपच्चत्थिका भवे ॥ ३८४ ॥　5
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्था असेसा य विज्ञते अचिरेण य ॥ ३८५ ॥
तं पंढगं समासेण पंडगस्स वियाणिया । विज्जसति त्ति तं बूया सेवितम्मि णपुंसके ॥ ३८६ ॥
गब्भं पुच्छे ण भविस्सति त्ति जाणे णपुंसकं च तं । इत्थी वा पुरिसो वा वि एगमेगसमागमं ॥ ३८७ ॥
णत्थि त्ति तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ । रहे संजोगपुच्छायं थीपुमंसेण पसस्सते ॥ ३८८ ॥
दव्वाभिगमणं णत्थि ववहारो णिरत्थको । पंडकस्स य कम्माणि जाणि तस्स परस्स वा ॥ ३८९ ॥　10
कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं वदे । पवासो पुच्छिते णत्थि पउत्थो य णिरत्थकं ॥ ३९० ॥
विवादे वा जयं पुच्छे जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्जा णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ३९१ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्जा अत्थि त्तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्जा अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ३९२ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्जा णत्थि त्तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्जा ण समुट्ठिहिति त्ति सो ॥ ३९३ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज जहण्णो त्ति वियागरे ॥ ३९४ ॥　15
अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मोहं मेहं वियागरे ॥ ३९५ ॥
☞ सस्सस्स संपयं पुच्छे जहण्णा सस्ससंपया । ☜ सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ३९६ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्जा णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारए तं च णिरत्थं णट्ठमादिसे ॥ ३९७ ॥
पुरुसो णपुंसको इत्थी णपुंसो त्ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा अधण्णं ति वियागरे ॥ ३९८ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ।　20
☞ जं किंचि अप्पसत्थं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ३९९ ॥ ☜
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे सद्दे य जाणेज्जा जे भवंति णपुंसका ॥ ४०० ॥
णपुंसको अपुरुसो [1]चिल्लिको सीतलो त्ति वा । पंडको वातिको वा वि किलिमो वा संकरो त्ति वा ॥ ४०१ ॥
कुंभीकपंडकं जाणे इस्सापंडकमेव य । पक्खापक्खि व विक्खो य संढो वा वि णरेतरो ॥ ४०२ ॥
एते णपुंसका सद्दा णक्खत्ताणंतरे तधा । णक्खत्तदेवंतरए कीलेयेयंतरे तधा ॥ ४०३ ॥　25
भायणंतरते या वि वत्थमाभरणंतरे । उवकरणमंतरे चेव धण्ण-धण्णंतरे तधा ॥ ४०४ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतव्वं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ४०५ ॥
॥ णपुंसकाणि सम्मत्ताणि ॥ ३ ॥ छ ॥

[४ सत्तरस दक्खिणाणि]

सत्तरस दक्खिणाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । सीसस्स दक्खिणो भागो १ कण्णो यो वा वि दक्खिणो २ ॥ ४०६　30
अक्खी ३ भमू ४ हणू वा वि ५ गंडो जो यावि दक्खिणो ६ ।
गीवा ७ अंसो य ८ बाहू य ९ थणो १० हत्थो य दक्खिणो ११ ॥ ४०७ ॥
पस्सं १२ वसणो १३ ऊरू य १४ जाणू १५ जंघा य दक्खिणा १६ ।
पादो य दक्खिणो णेयो १७ एवं सत्तरसाऽऽहिया ॥ ४०८ ॥

१ जयिच्छया हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतं पूर्वार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ४ चिण्णको हं० त० ॥ ५ °संवरो हं० त० ॥ ६ मंतणे चेव हं० त० ॥ ७ जतू य हं० त० ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । पसत्थं जत्तियं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४०९ ॥
पुरुसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । [1]दाहिणाचारभागी य पुरुसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ४१० ॥
इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । दक्खिणाचारभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ४११ ॥
पुरुसस्सऽट्ठविधं पुच्छे बूया तं तु पदक्खिणं । थियो अट्ठविधं पुच्छे आदितो तं पयक्खिणं ॥ ४१२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य ण खिप्पं तु गमिस्सति ॥ ४१३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं पजाहिति ॥ ४१४ ॥
पुत्तलाभं च पुच्छेज्ज दक्खिणो य भविस्सति । [3]कम्मं च परिपुच्छेज्ज रायमब्भंतरं भवे ॥ ४१५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज पवासो [4]सफलो भवे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं स एहिति ॥ ४१६ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥ ४१७ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४१८ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज ☞ अत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ४१९॥
[6]पसत्थं परिपुच्छेज्ज ☜ अत्थि अत्थि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४२० ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज णीरोगो त्ति वियागरे ॥ ४२१ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४२२ ॥
⊲ [7]जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ⊳ । असमाहिं परिपुच्छेज्ज समुट्ठाणं समुद्दिसे ॥ ४२३ ॥
धणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ४२४ ॥
अपातवं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अणुपुव्विं वियागरे ॥ ४२५ ॥
कदा वासं ति वा बूया इमं पक्खं ति णिद्दिसे । दिवा रत्तिं ति वा बूया दिवा वासं विणिद्दिसे ॥ ४२६ ॥
☞ सस्सस्स सं(वा)पयं पुच्छे णत्थि ति त्ति वियागरे । ☜ सस्सस्स संपयं पुच्छे उत्तमा सस्ससंपया ॥४२७॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स विणिद्दिसे । णट्ठमावाराए तं च दक्खिणं सव्वमादिसे ॥ ४२८ ॥
[8]कदा णट्ठं ति वा बूया इमं पक्खं ति णिद्दिसे । कदा [11]दिस्सिहिति तं च इमं पक्खं ति णिद्दिसे ॥ ४२९ ॥
[9][10]ग्रामं च दक्खिणं य त्ति दक्खिणं ति वियागरे । धण्णं धणं [12]पि पुच्छेज्ज [13]धण्णं ति [य] वियागरे ॥ ४३० ॥
जं च किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि ण तं अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४३१ ॥
सव्वमाभिजण्णं कम्मं आयारं च विसेसतो । सद्दे पदक्खिणे सव्वं जं चऽण्णमवि एरिसं ॥ ४३२ ॥
सव्वकालं पसत्थं तु सव्वत्थेसु य पूतियं । पुण्णामधेये हि मलं दक्खिणाणं पि णिद्दिसे ॥ ४३३ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे सद्दे य जाणेज्जा दक्खिणा जे भवंति ह ॥ ४३४ ॥
अतिदक्खिणं दक्खिणतो भवे यावि पुव्वदक्खिणं । अतिदक्खिणं सण्णति तधेव उत्तादक्खिणं (उत्तदक्खिणं) ॥४३५॥
[..................] दक्खिणं ति य जो वदे । पदक्खिणं ति वा बूया जं चऽण्णं दक्खिणं भवे ॥४३६॥
णक्खत्ते [14]दक्खिणदारे देवते पणिधिम्मि वा । पुप्फे फले य देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ४३७ ॥
पुरुसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । [15]कीडे किमिहिके वा वि परिसप्पगते तधा ॥ ४३८ ॥

---

१ दक्खिणा° हं० त० ॥ २ टिया अत्थ° हं० त० विना ॥ ३ रायगब्भं हं० ॥ ४ सहलो हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । इति पाठः स्यात् ॥ ७ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नमध्यवर्ति पूर्वार्द्धं हं० त० नास्ति ॥ ८ °माहितं परि° हं० त० विना ॥ ९ °ट्ठाणं णिद्दिसे हं० त० विना ॥ १० हस्तचिह्नगतं पूर्वार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ११ दिस्सहि एतं च हं० त० ॥ १२ ति पु° हं० त० विना ॥ १३ धण्णं ति हं० त० ॥ १४ दक्खिणे दारे हं० त० विना ॥ १५ कीडे केमि° हं० त० विना ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ४३९ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ४४० ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ४४१ ॥

॥ दक्खिणाणि सम्मत्ताणि ॥ ४ ॥ छ ॥

[५ सत्तरस वामाणि]

सत्तरस वामाणंगे कित्तयिस्समणुपुव्वसो । सीसरस वामगो भागो १ कण्णो जो यावि वामको २ ॥ ४४२ ॥
अक्खि ३ भुमा ४ हणू वा वि ५ गंडो यो यावि वामको ६ ।
गीवा ७ अंसो य ८ बाहू य ९ थणो १० हत्थो य वामको ११ ॥ ४४३ ॥
पस्सं १२ वसण १३ ऊरू य १४ जाणू १५ जंघा य वामिका १६ ।
वामगो य तधा पाओ १७ एवं सत्तरसाऽऽहिता ॥ ४४४ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि वि पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४४५ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । वामाचारभागी य पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ४४६ ॥
इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । वामाचारभागी य इयमित्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४४७ ॥
पुरिसऽट्ठविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे । इत्थऽट्ठविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे ॥ ४४८ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया खिप्पं विजेहिति त्ति य ॥ ४४९ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ४५० ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज किच्छवित्ति भविस्सति । मित्ताणं च पडिकूलो सव्वत्थेहि य बाहिरो ॥ ४५१ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णिरत्थो त्ति वियागरे । महंतो य आवद्धंसो खिप्पमेव भविस्सति ॥ ४५२ ॥
पउत्थं ◁ परिपुच्छेज्ज ▷ चिरेणाऽऽगमणं भवे । णिरत्थकं पवासं च पउत्थस्स वियागरे ॥ ४५३ ॥
बंधं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ४५४ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४५५ ॥
सम्माणं संपयोगं वा णिव्वाणं मोक्खमेव य । भोगलाभं सुहिस्सरियं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४५६ ॥
भयं [च] परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज ☞ णत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ४५७ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज ☜ णत्थि त्तेवं वियागरे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४५८ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४५९ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४६० ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । आँबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिति त्ति सो ॥ ४६१ ॥
अणावुट्ठिं ति पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वॅस्सारत्तं च पुच्छेज्ज पावको त्ति वियागरे ॥ ४६२ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज कटुकं ति विआगरे ॥ ४६३ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे णिकिट्ठा सस्ससंपया ॥ ४६४ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारइत्ता य वामपक्खस्स णिद्दिसे ॥ ४६५ ॥
वामं च दक्खिणं व त्ति वामं चेव वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिद्दिसे ॥ ४६६ ॥

---

१ जत्तू य हं॰ त॰ ॥ २ ◁ ▷ एतच्चिह्नगतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ३ हस्तचिह्नगतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ४ आयाविद्धं च परिपुच्छेज्ज हं॰ त॰ ॥ ५ वासारत्तं हं॰ त॰ ॥

जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे। अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥४६७॥
सत्तमाभिजणं जातिं आयारं [1]विणयकम्मं। असुभं अप्पसत्थं च वाममागेसु णिद्दिसे ॥ ४६८ ॥
जधा थीणामधेयाणं फलं वुत्तं सुभा-ऽसुभं। [2]तधेव सव्वं वामाणं फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ४६९ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे। समे सद्दे य जाणेज्जा वामे जे मणिके मया ॥ ४७० ॥
उत्तरं ति व वामं ति वामावट्टो त्ति वा पुणो। वामसीलो त्ति वा बूया वामायारो त्ति वा पुणो ॥ ४७१ ॥
वामपक्खं ति वा बूया [वामदेसं ति वा] पुणो। वामभागं ति वा बूया वामतो त्ति व-जो वदे ॥ ४७२ ॥
[3]अपवामं ति वा बूया [4]अपसव्वं ति वा वदे। अवसव्वं ति वा बूया अप्पग्घं ति वा पुणो ॥ ४७३ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं समासेण य वासतो। ये यऽण्णे वामतो सद्दा वामतो मणिके मता ॥ ४७४ ॥
णक्खत्ते उत्तरद्दारे देवते पणिधिम्मि य। पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम-गिहे वि वा ॥ ४७५ ॥
पुरुसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे। कीडे किपिल्लके वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ४७६ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा। आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ४७७ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेसु य। मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ४७८ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य। सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ४७९ ॥

॥ वामाणि सम्मत्ताणि ॥ ५ ॥ छ ॥

[६ सत्तरस मज्झिमाणि]

सत्तरस मज्झिमाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो। मत्थको पढमं वुत्तो १ ततो सीमंतको भवे २ ॥ ४८० ॥
ललाडं ३ भूमकंतरवंसो ४ तधा णासाय पुत्तको ५। णासा ६ ओट्ठा य ८ भवे चरो ९ जधुत्तरं तधा १० ॥४८१॥
हिदयं ११ थणंतरं १२ णाणी १३ लोमवासी १४ तधोदरं १५।
मेहणं १६ वत्थिसीसं च १७ मज्झिमाणाऽऽभवंतिह ॥ ४८२ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा। जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४८३ ॥
पुरिसं परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य। धण्णो य सुहभागी य भातीणं मज्झिमो भवे ॥ ४८४ ॥
रायमंती भवे सो य णातीणं मज्झिमो भवे। मज्झत्थसीलमायारो सव्वत्थेसु भवे णरो ॥ ४८५ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था अपराजिता। धण्णा य सुहभागी य भगिणीसु य मज्झिमा ॥ ४८६ ॥
णातीसु मज्झिमं लभते भत्तारम्मि य वल्लभा। मज्झत्थसीलमायारा सव्वत्थेसु य सा भवे ॥ ४८७ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे। [थिया अत्थविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥ ४८८ ॥]
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य। धण्णा य सुहभागी य ण य खिप्पं निग्गमिस्सति ॥ ४८९ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे। गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज खिप्पं सा पयाहिति ॥ ४९० ॥
कता पयाहिती य त्ति पक्खसंधिम्मि णिद्दिसे। कम्मं च परिपुच्छेज्ज रायमब्भंतरं वदे ॥ ४९१ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे। पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ४९२ ॥
सवि पावासिकं पुच्छे कता सो आगमिस्सति। अंगवी आगमं तस्स पक्खसंधिम्मि णिद्दिसे ॥ ४९३ ॥
⊲ [5]बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे। ⊳ बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥४९४॥
कता मुच्चिहिती य त्ति जो णरो परिपुच्छति। अंगवी तस्स मोक्खं तु पक्खसंधिम्मि णिद्दिसे ॥ ४९५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेवं वियागरे। पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेवं वियागरे ॥ ४९६ ॥
पतिट्ठं णिव्वुतिं पीतिं संजोगं च [6]समागमं। जं इट्ठं परिपुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४९७ ॥

---

१ °यकम्मं हं॰ त॰ विना ॥ २ तं चेय सव्ववामा° हं॰ त॰ ॥ ३ अपव्वामं हं॰ त॰ विना ॥ ४ अयसव्वं हं॰ त॰ विना ॥
५ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नगतं पूर्वार्द्धं हं॰ त॰ नास्ति ॥ ६ सनामकं हं॰ त॰ ॥

संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ४९८ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज समुट्ठाणऽस्स णिद्दिसे ॥ ४९९ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ५०० ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ५०१ ॥
कता वासं ति वा बूया पक्खसंधिम्मि णिद्दिसे । दिवा रत्तिं ति वा बूया संझाकाले विणिद्दिसे ॥ ५०२ ॥ 5
सस्सस्स वा[प]दं पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छेज्ज मज्झिमा सस्ससंपदा ॥ ५०३ ॥
लाभं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं लाभमादिसे । णट्ठं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं तं च लब्भति ॥ ५०४ ॥
वाम-दक्खिण[1]मज्झम्मि मज्झिमं ति वियागरे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ५०५ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि से[2]व्वं नत्थि त्ति णिद्दिसे ॥५०६॥
तधा खेत्तं तधा व[3]त्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जा मज्झिमा जे भवंतिह ॥ ५०७ ॥ 10
मज्झि मँ[4]ज्झंतिको मज्झो मज्झिमो त्ति व यो वदे । पुर-देस-भागमज्झो गोट्ठी-सेणागमस्स वा ॥ ५०८ ॥
वयस्स मज्झो सुहमज्झो सयणमज्झं ति वा वदे । घरमज्झ गाममज्झो अरण्णस्साऽडवीय वा ॥ ५०९ ॥
णीयसं[5]वेरिमज्झम्मि मित्तमज्झो त्ति वा वदे । अ[6]मित्तमज्झो गोमज्झो णातिमज्झो त्ति वा वदे ॥ ५१० ॥
सुमज्झो तणुमज्झो त्ति चोरमज्झो त्ति वा वदे । जवमज्झो कीडमज्झो लद्धमज्झो त्ति वा वदे ॥ ५११ ॥
समुद्दस्स य मँ[7]ज्झं ति अब्भमज्झं ति वा वदे । उदगस्स व मज्झो त्ति अग्गिमज्झो त्ति वा पुणो ॥ ५१२ ॥ 15
चउप्पदाणं सव्वेसिं विपदाणं तधेव य । अंगोवंगेसु सव्वेसु मज्झस्स उ उदीरणा ॥ ५१३ ॥
भँ[8]तीणं मज्झिमं च त्ति ⊲ मँ[9]ज्झिमं भयणीण ⊳ वा । मज्झागतं ति वा बूया मज्झसारं ति वा वदे ॥५१४॥
मज्झं सारं ति वा बूया तधा उद्धममज्झिमं । उक्कट्ठमज्झिमं व त्ति तधा सम्मज्झिँ[10]मं ति वा ॥ ५१५ ॥
कित्तियंति य जे[11] सद्दा जं चऽण्णं मज्झिमं भवे । एते उत्ता समा सद्दा मज्झिमा जे भवंति य ॥ ५१६ ॥
सद्द-रूव-रसे गंधे फासे मज्झिमकम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ५१७ ॥ 20
पुरुसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगोचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ५१८ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ५१९ ॥
आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य । लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य ॥ ५२० ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्द-रूव-रसे तधा । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ५२१ ॥

॥ मज्झिमाणि सम्मत्ताणि ॥ ६ ॥ छ ॥ 25

[७ अट्ठावीसं दढाणि]

अट्ठावीसं दढाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । सिरं १ णिडालं २ जतूणि ४ उरो ५ पस्साणि वे भवे ७ ॥ ५२२ ॥
वे[11] बाहुणालिमज्झाणि ९ बाहुमज्झा य वे भवे ११ । जंघोरूणं च मज्झाणि १५ तधेव पादपट्ठिओ १७ ॥५२३॥
दंता १९ संखा य २१ गंडा य २३ करमज्झो तधेव य २५ ।
संधो [य] २६ जं[12]तुमज्झो य २८ दढाणेताणि णिद्दिसे ॥ ५२४ ॥ 30
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५२५ ॥

---

१ °ण मज्झं ति म° हं० त० विना ॥ २ सव्वमत्थि हं० त० ॥ ३ वत्थं हं० त० विना ॥ ४ मज्झंमिको हं० त० ॥ ५ °संबंधे मज्झं ति मित्त° हं० त० विना ॥ ६ अचित्त° हं० त० ॥ ७ मज्झम्मि अ° हं० त० सि० ॥ ८ भावाणं हं० । भावीणं त० ॥ ९ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० °मं तहा हं० त० ॥ ११ जे या° हं० त० ॥ १२ जत्तुमज्झो हं० त० ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य दढो य बलवं ति य ॥ ५२६ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य दढा य बलिका ति य ॥ ५२७ ॥
पुरिसस्सऽट्ठविवं पुच्छे दढमिंचेव णिद्दिसे । वियां अट्ठविधिं पुच्छे दढमिचेव णिद्दिसे ॥ ५२८ ॥
कैण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी यें ण तु खिप्पं गमिस्सति ॥ ५२९ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गॅब्भिणिं परिपुच्छेज्जा चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ५३० ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज दढं कम्मं तु णिद्दिसे । पवासं परिपुच्छेज्ज सफलमिति णिद्दिसे ॥ ५३१ ॥
पउत्थं परिपुच्छेज्ज सॅधणो आगमिस्सति । दढो त्ति य वियाणेज्जा पुच्छितो अंगचिंतको ॥ ५३२ ॥
बंधं च परिपुच्छेर्ज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ५३३ ॥
पवासं परिपुच्छेर्ज्ज णत्थि एवं वियागरे । ☞ पैदट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५३४ ॥ ☜
समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । जं जं पसत्थं पुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५३५ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ५३६ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५३७ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ५३८ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगं ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५३९ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणऽस्स णिद्दिसे ॥ ५४० ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज सोभणो त्ति वियागरे ॥ ५४१ ॥
अपातवं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज पभूतमिति णिद्दिसे ॥ ५४२ ॥
सस्सस्स संपयं पुच्छे सोभणा सस्ससंपदा । सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५४३ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज अत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारये तं च दढमिचेव णिद्दिसे ॥ ५४४ ॥
सज्जीवं वा वि णिज्जीवं णट्ठमाधारये जति । सज्जीवमिति तं बूया एवं तु दढ-दुब्बले ॥ ५४५ ॥
दढं वा दुब्बलं वा वि दढमिर्त्तेवं णिद्दिसे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज धणं चेव वियागरे ॥ ५४६ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सॅव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५४७ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु अत्थो सव्वो सुभा-ऽसुभो । एवं दढेसु सव्वेसु पुण्णामसमकाऽऽहिते ॥ ५४८ ॥
तधा खेत्तं तधा वॅत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे सारे य जाणेज्जा दढा जे मणिके मता ॥ ५४९ ॥
अचलं धुवं तधा ठाणं सॅस्सतं भरिलं ति वा । अजरामरं ति वा बूया णियतं ति अॅवत्थितं ॥ ५५० ॥
हिमवंतो त्ति वा बूया महाहिमवंतो त्ति वा । णिसॅढो अथवा रुप्पी मेरू वा मंदरो त्ति वा ॥ ५५१ ॥
णेलवंतो त्ति केलासो तधा वरमधरो त्ति वा । वेयड्ढो अच्छदंतो त्ति सज्झो विंझो त्ति वा ⊲ वदे ⊳ ॥ ५५२ ॥
[17]मंतो त्ति मलयो य त्ति पारियॅत्तो त्ति वा पुणो । महिंदो चित्तकूटो त्ति वदे अंबासगो त्ति वा ॥ ५५३ ॥
णगो त्ति पव्वतो य त्ति गिरिमेरुवरो त्ति वा । सेलो सिलोचयो य त्ति पव्वतो सिहरि त्ति वा ॥ ५५४ ॥
पासाणो पत्थरो य त्ति उपलो त्ति मणि त्ति वा । सिलापट्टो त्ति वा बूया गंडसेलो त्ति वा पुणो ॥ ५५५ ॥
णामनो गिरिको य त्ति तहा पव्वतको त्ति वा । सेलो वट्टो त्ति वा बूया भेम्को मरुभूविको ॥ ५५६ ॥

---

१ °मित्थेय हं॰ त॰ सि॰ ॥ २ इत्थियया वि अट्ठविधं पुच्छे दढामि° हं॰ त॰ ॥ ३ कहं च हं॰ त॰ ॥ ४ य णेतु हं॰ त॰ ॥ ५ गब्भिणी परिपुच्छेज्ज हं॰ त॰ ॥ ६ स्सधण्णो हं॰ त॰ ॥ ७ °ज्ज अत्थि हं॰ त॰ विना ॥ ८ °ज्ज अत्थि त्तेवं हं॰ त॰ ॥ ९ हस्तचिह्नमध्यगतः हं॰ त॰ सि॰ एव वर्तते ॥ १० °मित्थेय हं॰ त॰ ॥ ११ सव्वमत्थि हं॰ त॰ ॥ १२ वत्थं हं॰ त॰ विना ॥ १३ °स्सतं भ° हं॰ त॰ विना ॥ १४ अपच्छितं हं॰ त॰ ॥ १५ °सभो अहवा हं॰ त॰ सि॰ ॥ १६ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नमध्यगतं पदं हं॰ त॰ नास्ति ॥ १७ मंचो त्ति हं॰ त॰ सि॰ ॥ १८ °रियत्तो हं॰ त॰ ॥

धुवको अचलितो व त्ति तधा थावरको त्ति वा । सिवणामो गुत्तणामो भवो[1] त्ति अभवो त्ति वा ॥ ५५७ ॥
थितो[2] त्ति सुत्थितो य त्ति तधा ठाणट्ठितो त्ति वा । अकंपो णिप्पकंपो त्ति णिव्वरो सुहते[3] त्ति वा ॥ ५५८ ॥
अण्णे वेवंविधा सद्दा जे अण्णे अचला भवे । एते उत्ता समा सद्दा दढा जे मणिके मता ॥ ५५९ ॥
थावरम्मि य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि त । पुप्फे फले य देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ५६० ॥
पुरुसे चउप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किपिल्लगे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ५६१ ॥ 5
पाणे य भोयणे यावि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ५६२ ॥
सव्वेसु यावि लोहेसु सव्वेसु रतणेसु य । मणी[सु] यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ५६३ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ५६४ ॥

॥ दढाणि सम्मत्ताणि ॥ ७ ॥ छ ॥

[८ अट्ठावीसं चलाणि] 10

अट्ठावीसं चलाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । कण्णासंधी सुमासंधी [.................... ॥ ५६५ ॥
.... । .... ॥ ५६६ ॥
.... । ......] कमतलाणं च अट्ठावीसं चलाणि तु ॥ ५६७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५६८ ॥
पुरिसं परिपुच्छेज्ज अधण्णो[4] दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया एतेसिं उपसेवणे[5] ॥ ५६९ ॥ 15
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा[6] दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया एतेसमुपसेवणे ॥ ५७० ॥
पुरिसंरसऽत्थविधं पुच्छे चलमिचेव णिद्दिसे । अत्थविधं इत्थीसु य चलमिचेव णिद्दिसे ॥ ५७१ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया खिप्पं विज्जेहिति त्ति य ॥ ५७२ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पजाहिति ॥ ५७३ ॥
गब्भिणी चलमामासं पुच्छे गब्भो सो चलो भवे । चले वितियमालद्धे गब्भो हणति मातरं ॥ ५७४ ॥ 20
छित्ते चलम्मि तिक्खुत्तो गब्भो तु पितरं हणे । चउखुत्तो चले छित्ते भातरं तु वधिस्सति ॥ ५७५ ॥
पंचखुत्तो चले[7] छित्ते कुलं सो तु वधिस्सति । गब्भिणी य परामासे इच्चेवमुवधारये ॥ ५७६ ॥
पडिहारकं च दूतं च जंघावाणियकं पि वा । दिसावाणियगं वा वि छत्तंसासणहारगं ॥ ५७७ ॥
तधा पेसणियं जाणे तधा आदिट्ठभूमियं । तधा णिज्जामकं जाणे तधा वा कुक्खिधारकं ॥ ५७८ ॥
तधेव णाविकं जाणे तधा डुपकहारकं । तधा पग्गाहकं जाणे तधा कंतिकवाहकं ॥ ५७९ ॥ 25
तंबाधावकं जाणे अंब्भाकारिकमेव य । कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं वदे ॥ ५८० ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णिरत्थं ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज परओ[9] सो गमिस्सति ॥ ५८१ ॥
वंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि वंधो त्ति णिद्दिसे । वंद्धस्स[10] मोक्खं पुच्छेज्ज खिप्पं मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥ ५८२ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । ◁ पतिट्ठं[11] परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५८३ ॥
पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८४ ॥ 30
विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । भयं च परिपुच्छेज्ज भयमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८५ ॥
खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं ति णिद्दिसे । जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८६ ॥
आरोग्गं[12] परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे ॥ ५८७ ॥

---

१ भव्वो त्ति अभव्वो त्ति हं० त० ॥ २ ठिओ त्ति सुट्ठिओ व त्ति हं० त० ॥ ३ सहिति त्ति हं० त० ॥ ४ °धणो दू° हं० त० ॥ ५ पतेसं तु पवेसणे हं० त० ॥ ६ अधणा हं० त० ॥ ७ चले खित्ते कुल सो उ व° हं० त० ॥ ८ अज्झाका° हं० त० ॥ ९ परितो हं० त० विना ॥ १० वंधस्स हं० त० ॥ ११ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ आरोगं हं० त० ॥

मरणं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५८८ ॥
आमाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिति त्ति सो । अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५८९ ॥
वासं च परिपुच्छेज्ज हीणमेव वियागरे । अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ५९० ॥
☞ वासं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । ☜ वासं तु परिपुच्छेज्ज अप्पवासं तु णिद्दिसे ॥ ५९१ ॥
5 ☞ संससस्स यापदं पुच्छे अत्थि त्तेवं वियागरे । ☜ सस्ससस्स संपयं पुच्छे जहण्णा सस्ससंपदा ॥ ५९२ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्जा णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारये तं च चिरणट्ठं वियागरे ॥ ५९३ ॥
सज्जीवं या वि णिज्जीवं णट्ठमाधारए जति । अज्जीवमिति तं बूया एवं अदढदुब्बले ॥ ५९४ ॥
दढं चलं ति या बूया चलमित्थेव णिद्दिसे । धण्णं धणं ति या बूया अधण्णं ति वियागरे ॥ ५९५ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९६ ॥
10 समागमं संपयोगं याणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९७ ॥
रोगं या मरणं या वि अप्पविट्ठमणिव्वुतिं । विवादं विप्पयोगं या सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९८ ॥
चलाणेवाणि वुत्ताणि जम्मि अत्थे णपुंसको । णपुंसकविभागेणं चलाणि वि वियागरे ॥ ५९९ ॥

तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । चले सद्दे य जाणेज्जो चला ये भणिके मया ॥ ६०० ॥
चलितं विचलितं या वि चलं ति चलियं ति या । तथा च चलजाति त्ति धावति त्ति य जो वदे ॥ ६०१ ॥
15 पधावति ☞ त्ति[1] या बूया संधावति ☜[2] विधावति । परिधावति त्ति या बूया तथा णिद्धावति त्ति या ६०२
ओधावति त्ति या बूया अद्दिधावति णोहति । वियोलेते त्ति या बूया अथवा विप्पयोलति ॥ ६०३ ॥
परिचेट्ठति त्ति या बूया तथा विप्परिचेट्ठते । परिघत्तते त्ति या बूया तथा विप्परिवत्तते ॥ ६०४ ॥
विचले अधुवे व त्ति ओधुते संधुते त्ति या । ◁ अधुवे त्ति गए व त्ति ▷ आधुते त्ति धुवे त्ति वा ॥६०५॥
गलियं ति य जो बूया तथा पगलियं ति या । गलियं विगलितं व त्ति तथा पगलियं ति या ॥ ६०६ ॥
20 तथा णिक्खित्त विक्खित्तं णिक्खित्तं विसलाइतं । पकिण्णं विप्पकिण्णं ति छड्डितं परिसाडियं ॥ ६०७ ॥
फुलितं दालितं दलियं छड्डितं परिसाडितं । भग्गं ति वाकुलं च त्ति छहिलग्गं ति या पुणो ॥ ६०८ ॥
अंदोलति त्ति या बूया तथा इंदोलको त्ति या । घुमति त्ति परिघुमति भमते य परिब्भमे ॥ ६०९ ॥
णिट्ठुधति त्ति या बूया णिकड्ढति विकड्ढति । उक्कड्ढति त्ति या बूया कड्ढति त्ति य जो वदे ॥ ६१० ॥
अण्णे चेवंविधा सद्दा जं चऽण्णं पि चलं भवे । एते वुत्ता समा सद्दा चला जे भणिके मया ॥ ६११ ॥
25 चले खिप्पे य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे व णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६१२ ॥
पुरिसे चउप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लिगे यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ६१३ ॥
पाणे य भोयणे या वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६१४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ६१५ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेताणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतको ॥ ६१६ ॥

30 ॥ चलाणि सम्मत्ताणि ॥ ८ ॥ छ ॥

१-२ हस्तचिह्नमध्यगतं पूर्वार्धयुगलं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ एतत् श्लोकपूर्वार्धमेव सि० नास्ति ॥ ४ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ वियोलए अडजए अधया हं० त० सि० । वयोलते अडजए मयधा स ३ पु० ॥ ६ परिधावति त्ति सप्र० ॥ ७-८ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं चरणं हं० त० नास्ति ॥ ८ घुम्मति हं० त० विना ॥

[९ सोलस अतिवत्ताणि]

सोलसेवऽतिवत्ताणि पवक्खामऽणुपुव्वसो । सीसस्स पच्छिमो भागो गीवा पट्ठी य पच्छिमा ॥ ६१७ ॥
बाहुणाली-उवत्थाणं फिजोरूणं च पच्छिमं । जंघाणं पण्हिकाणं च अतिवत्ताणि सोलस ॥ ६१८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६१९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२० ॥ 5
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज अधन्ना दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२१ ॥
पुरिसत्थविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे । इत्थिअत्थविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे ॥ ६२२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया खिप्पं विज्ञिहिते त्ति य ॥ ६२३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ६२४ ॥
उक्खित्त¹तुंबिकं वा वि तधा बाहिरं²तुंबियं । पक्खच्छयकं य जाणीया कं³बुद्धं आसणहारकं ॥ ६२५ ॥ 10
भागहारकमेवावि मधवा साधिगक्खरं । कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं ⁴वदे ॥ ६२६ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अफलो त्ति वियागरे । पा(पवा)सितं परिपुच्छेज्ज ⁵परतो सो गमिस्सति ॥ ६२७ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ ६२८ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६२९ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ६३० ॥ 15
संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६३१ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६३२ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६३३ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिति त्ति सो ॥ ६३४ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज णिकिट्ठो त्ति वियागरे ॥ ६३५ ॥ 20
अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अप्पं वासं वियागरे ॥ ६३६ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपदं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६३७ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारतित्ता णं चिरणट्ठं वियागरे ॥ ६३८ ॥
संपता-ऽणागता-ऽतीतं अतीतं ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे ॥ ६३९ ॥
समागमं संपयोगं ठाणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४० ॥ 25
रोगं च मरणं वाधिं अप्पतिट्ठमणिव्वुतिं । विप्पओगं विवादं वा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४१ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६४२ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जा अतिवत्ता भवंति⁶ जे ॥ ६४३ ॥
अतिवत्तमतिक्कंतं गतं ति य विणिग्गतं । विणियत्तं पुराणं ति जुण्णं ओपुप्फ णिप्फलं ॥ ६४४ ॥
सुक्खं मलितं विसिण्णं ति उवउत्तं झीणमेव य । रद्दतं पितं ति वा मुत्तं णिट्ठितं ति कतं ति वा ॥ ६४५ ॥ 30
सम्मद्दितं अतीतं ति समतिच्छियमतिच्छियं । ⁷ओहिज्जितं ओहसितं पहीणं वि ⁸पहिज्जते ॥ ६४६ ॥
ण्हातं व मज्जियं वा वि ओलोलित पलोलियं । पलोट्ठितं ति वा बूया तधा सम्मज्जितं ति वा ॥ ६४७ ॥
णचितं वाइयं गीयं लासितं पढितं ति वा । वेलंबितं ति वा बूया तधा वत्तुरसयं ति वा ॥ ६४८ ॥

---

१ °त्तुंठिकं हं० त० विना ॥ २ °त्तुंडियं हं० त० विना ॥ ३ कबुद्धं हं० त० विना ॥ ४ मने हं० त० ॥ ५ परितो हं० त० विना ॥ ६ °तिमे हं० त० विना ॥ ७ ओहिज्झियं ओह° हं० त० ॥ ८ पडिझप हं० त० ॥

णियतं भूतपुव्वं ति कतपुव्वं ति या पुणो । तधा रयितपुव्वं ति अणुभूतं ति या पुणो ॥ ६४९ ॥
गतपुव्वं ति या वूया रयपुव्वं ति या पुणो । तधा भाणितपुव्वं ति यत्तपुव्वं ति या पुणो ॥ ६५० ॥
गतगंधा गतरसा तधा गतवयो त्ति या । एते उत्ता समा सद्दा अतिवत्ता भवंति जे ॥ ६५१ ॥
अतिवत्तम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६५२ ॥
5 पाणे य भोयणे या वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६५३ ॥
पुरुसे चतुप्पदे या वि पक्खिम्मि उदगोचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ६५४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्व-धण्ण-धणेसु य ॥ ६५५ ॥
एतम्मि पेक्खियाभासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ६५६ ॥

॥ अतिवत्ताणि सम्मत्ताणि ॥ ९ ॥ छ ॥

10

[१० सोलस वत्तमाणाणि]

वत्तमाणाणि वक्खामि सोलसंगे जधा तधा । वे चेव सीसपस्साणि २ कण्णा ४ गंडा तधेव य ६ ॥ ६५७ ॥
वे बाहुणालिपस्साणि ८ बाहुपस्साणि वे तधा १० ।
जंघो १२ रु १४ पादपस्साणि १६ वत्तमाणाणि सोलस ॥ ६५८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६५९ ॥
15 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य पुरुसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ६६० ॥
इत्थिं या परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ६६१ ॥
पुरिसत्थविधं पुच्छे वत्तमाणं वियागरे । ◁ इत्थिसत्थविधं पुच्छे वत्तमाणं वियागरे ॥ ६६२ ॥ ▷
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागा य खिप्पं विज्जिहिति त्ति य ॥ ६६३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज खिप्पं सा पयाहिति ॥ ६६४ ॥
20 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सद्दे रूवेहिं णिद्दिसे । वत्तमाणं पसत्थं च सुभं लाभं च णिद्दिसे ॥ ६६५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सफलो पंथि वत्तते ॥ ६६६ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज खिप्पं मोक्खं वियागरे ॥ ६६७ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६६८ ॥
समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । इट्ठं च परिपुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६६९ ॥
25 अपमाणमसक्कारं णिराहारमणिव्वुतिं । विप्पयोगं विवादं च सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६७० ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६७१ ॥
संधिं या परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छिज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६७२ ॥
जयं वा परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ६७३ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ६७४ ॥
30 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । असमाधिं च पुच्छेज्ज समुद्धाणंऽस णिद्दिसे ॥ ६७५ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज ण सो पढमकप्पितो ॥ ६७६ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज वासमासेवमादिसे ॥ ६७७ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे ण सो पढमकप्पितो ॥ ६७८ ॥

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नमध्यगतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ २ पवित्तुत्तयो हं० त० । 'पंथि' पथि मार्गे इत्यर्थः ॥ ३ °सतवादिसे हं० त० विना ॥

संपता-ऽणागता-ऽतीतं वत्तमाणं वियागरे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज्ञा तं तु मज्झगतं वदे ॥ ६७९ ॥
वत्तमाणं पसत्थं च सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ६८० ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जो वत्तमाणा भवंति जे ॥ ६८१ ॥
वत्तते त्ति य जो बूया वत्तमाणं ति वा पुणो । णिव्वत्तते त्ति वा बूया तधा संपतिवत्तते ॥ ६८२ ॥
संजायते संभवति तधा संचिट्ठते त्ति वा । आसते सयते व त्ति बुज्झते पडिबुज्झते ॥ ६८३ ॥ 5
उप्पज्जते त्ति वा बूया दिस्सते सूयते त्ति वा । अग्घायते त्ति वा बूया अस्साएति त्ति वा पुणो ॥ ६८४ ॥
फरिसायते त्ति वा बूया सुहं वेदयते त्ति वा । दलायते त्ति वा बूया सुहं वा दायते त्ति वा ॥ ६८५ ॥
तधा चिंतेति मंतेति गायते हसते त्ति वा । तधा पढति पाढेति वेलंवेति त्ति णच्चति ॥ ६८६ ॥
मज्जति त्ति व जो बूया आहिंचति विलिंपति । भरेति कुसुमाणीति आवंधति वासितं ॥ ६८७ ॥
अलंकारेति अप्पाणं पसायति त्ति वा पुणो । पाउणेति निवेसेति तधा ओचक्खति त्ति वा ॥ ६८८ ॥ 10
भुंजति त्ति व जो बूया तधा पिबति भेदति । आहारेति त्ति वा बूया कल्लाणं पावति त्ति वा ॥ ६८९ ॥
आचिक्खति कधेति त्ति जंपति भणति त्ति वा । विजाणेति त्ति वा बूया तधा संजाणति त्ति वा ॥ ६९० ॥
आणेति व देति व उवणामेति त्ति वा पुणो । एवमादी य जे केयि वत्तमाणा भवंति ते ॥ ६९१ ॥
वत्तमाणम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६९२ ॥
पुरुसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ६९३ ॥ 15
पाणे व भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६९४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु त । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ६९५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ६९६ ॥

॥ वत्तमाणाणि सम्मत्ताणि ॥ १० ॥ छ ॥

[११ सोलस अणागताणि] 20

अणागताणि वक्खामि सोलसंगे जधा तधा। मुहं १ णिडालं २ कंठो य ३ हिदयं ४ जंतुवरं ६ तधा ॥६९७॥
उरस्स ७ बाहुणालीणं ९ वत्थी १० सीसो ११ दरस्स य १२ ।
जंघो १४ रूणं च १६ पुरिमाणि सोलसंगे अणागता ॥ ६९८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं बूया अणागतं ॥ ६९९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य एससकल्लाणो पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ७०० ॥ 25
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य एससकल्लाणा इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ७०१ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे भविस्सति अणागतं । थिया अत्थविधं पुच्छे वदे तं पि अणागतं ॥ ७०२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य एससकल्लाणा विज्जिस्सति चिरेण तु ॥ ७०३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज दारकं सा पयाहिति ॥ ७०४ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज जं कम्मं स समाचरे । तं तं कालंतरेणेव अणागतफलं भवे ॥ ७०५ ॥ 30
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ७०६ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥ ७०७ ॥

---

१ सव्वमत्थि हं० त० विना ॥ २ वत्तमण्णं ति सं ३ पु० सि० । वत्तं मण्णं ति हं० त० ॥ ३ पाउणाति हं० त० ॥ ४ उचक्खति हं० त० ॥ ५ हिदय यंतुतरं सं ३ पु० सि० । हिदयं जं उत्तरं हं० त० ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि चेयं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थिं त्ति णिद्दिसे ॥ ७०८ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेयं वियागरे ॥ ७०९ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिद्दिसे ॥ ७१० ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं परिपुच्छेज्ज णत्थि चेयं वियागरे ॥ ७११ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि चेयं वियागरे । आबाधितं परिपुच्छेज्ज समुट्ठाणं[1]ऽस णिद्दिसे ॥ ७१२ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि चेयं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज सोभगो त्ति भविस्सति ॥ ७१३ ॥
अपसारं च पुच्छेज्ज णत्थि चेयं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज चिरं वासं वियागरे ॥ ७१४ ॥
सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि चेयं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे सोभगो त्ति वियागरे ॥ ७१५ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज अत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारवित्ता णं पुरिमपक्खं ति णिद्दिसे ॥ ७१६ ॥
संपता-ऽणागता-ऽतीतं ओगामि[2] त्ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धेणं चेयं वियागरे ॥ ७१७ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७१८ ॥
तथा चेवं तथा वत्थुं सव्वं भूया अणागतं । समे सद्दे य जाणेज्जो जे भवंति अणागता ॥ ७१९ ॥
अणागतं पेट्ठिहिति[3] [illegible] ईसपजिहिति [illegible] होस्सति । भविस्सते आगहिति तथा आगच्छते त्ति वा ॥७२०॥
पहिती[4] य त्ति वा भूया तथा दाहिति काहिति । भुंजिस्सति[5] त्ति वा भूया तथा खाहिति पाहिति ॥ ७२१ ॥
तथा सिक्खिहिते[6] य त्ति आगमेहिति पेच्छति । ण्हाधिति त्ति वा भूया दक्खिणं दाहिति त्ति वा ॥ ७२२ ॥
तथा अच्चिहिते[7] य त्ति तथा दिस्सहिति त्ति वा । अग्घाहिति[8] त्ति वा भूया अस्सादेहिति य त्ति वा ॥७२३॥
फरिसाहिति त्ति वा भूया तथा चिंतेहिति त्ति वा । मंतेहिति त्ति वा भूया णिच्छयं णाहिति त्ति वा ॥७२४॥
पंजिहिते गिज्झिहिते धावेहिति[9] धाहिति । ण्हासेहिति त्ति वा भूया तथा पदिहिति त्ति वा ॥ ७२५ ॥
ण्हाहिते त्ति विलिंपिहिति ण्हाणं ओहेच्छिति[10] त्ति वा । सिरं भरेहते य त्ति आविंधिहिति वासितं ॥ ७२६ ॥
णियसिहिति वत्थाणि तथा पांगुहिति त्ति वा । पसाधेहिति त्ति वत्थे भूसणाणि [11]विणेच्छिति ॥ ७२७ ॥
अलंकारेहिते य त्ति पडिकम्मं काहिति त्ति वा । माणेहिति त्ति वा पच्छा तथा [12]सोभिहिते त्ति वा ॥७२८॥
आलिंगिहिति त्ति वा भूया समेहिति[13] रमेहिति । एते वुत्ता समा सद्दा जे भवंति अणागता ॥ ७२९ ॥
अणागतम्मि णक्खत्ते देवते पतिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गाम णिहे वि वा ॥ ७३० ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव परिसप्पे जलगोचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ७३१ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ७३२ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु गव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ७३३ ॥
एतम्मि पेक्खितव्वाभासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेयाणुगंतूणं ततो भूयांगचिंतओ ॥ ७३४ ॥

॥ अणागताणि सम्मत्ताणि ॥ ११ ॥ छ ॥

[१२ पण्णासं अब्भंतराणि]

अब्भंतराणि पण्णासं पवक्खामऽणुपुव्वसो । सरीरत्थाणि चागंगे सरीरबाहिराणि य ॥ ७३५ ॥
चार-मंतिपवत्तं च अंतेउरब्भंतराणि य । बखार-उक्किर-पवसनाणं च णामीय मेहणाग य ॥ ७३६ ॥

---

१ °ले तिरिं° हं० त० ॥ २ आगामि सं० ॥ ३ धण्णं चेयं हं० त० ॥ ४ पहिहिते हं० त० ॥ ५ °ति मोक्खति विहुतिस्सति । भवि° सि० ॥ ६ [illegible] हं० त० एव वर्त्ते ॥ ७ अगघहिते हं० त० विना ॥ ८ अग्घाहिते हं० त० ॥ ९ वदिहिए णवितहिए धावे हं० त० ॥ १० धाविहिति हं० त० विना ॥ ११ आढेहिति त्ति वा । पिरं मरेहिते हं० त० ॥ १२ तिणिस्सति हं० त० विना ॥ १३ रओमहिते हं० त० विना ॥

हितयस्सावि समूहस्स कण्णाणं णासिकाय य । बाहुणालीय हत्थाणं सोणीआ व गुदाय यं ॥ ७३७ ॥
मत्थकस्स णिडालस्स गीवा-गंडाणमेव य । भुमगाणं चेव जंतूणं उरस्स उदरस्स य ॥ ७३८ ॥
[........................... । .... ॥]
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि वि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७३९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य ◁ धण्णो य सुहभागीय अब्भंतरको त्ति य ॥ ७४० ॥ 5
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । ▷ धण्णा य सुहभागी य अब्भंतरयभारिया ॥ ७४१ ॥
पुरिसस्स विधं पुच्छे बूया अब्भंतरं ति य । पमदाय विधं पुच्छे तं पि अब्भंतरं वदे ॥ ७४२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । रायब्भंतरकस्सायं कण्णा विजिहिते लहुं ॥ ७४३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ७४४ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज राजपोर्टसमादिसे । रण्णो य अब्भंतरको भवे सव्वरहस्सिको ॥ ७४५ ॥ 10
पवासं परिपुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति । [पउत्थं परिपुच्छेज्ज ....] ॥ ७४६ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७४७ ॥
संधिं या परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ७४८ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ७४९ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि मरणं ति णिद्दिसे ॥ ७५० ॥ 15
जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणंऽस णिद्दिसे ॥ ७५१ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ७५२ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज महामेह उवट्ठितो ॥ ७५३ ॥
सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे उत्तमा सस्ससंपदा ॥ ७५४ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारइत्ताणं तकं अब्भंतरं भवे ॥ ७५५ ॥ 20
बाहिरऽब्भंतरं पुच्छे अब्भंतरगमादिसे । ◁ धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धण्णं ति य वियागरे ▷ ॥ ७५६ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७५७ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं तधा दंडं तधा मणिं । विपदं चतुप्पदं सव्वं धण्णमत्थि त्ति यं वदे ॥ ७५८ ॥
वत्थमाभरणं भंडं अंतेपुरवरं जणं । सुवण्ण-रुप्प-मणि-र्रत्तं विरमब्भंतरं वदे ॥ ७५९ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । तधा सुभा-ऽसुभं सव्वं वदे अब्भंतरेसु वि ॥ ७६० ॥ 25
अब्भंतरे य जाणेज्जो समा सदा भवंति जे । अब्भंतरं ति वा बूया तधा अंतेपुरं ति वा ॥ ७६१ ॥
अब्भंतरं वा गामे त्ति पुरे अब्भंतरं ति वा । अब्भंतरं वा खेडे त्ति घरं अब्भिंतरं ति वा ॥ ७६२ ॥
अंतोगामे त्ति वा बूया वधंतोणगरे त्ति वा । अंतोखेडे त्ति वा बूया वधंतोघरे त्ति वा ॥ ७६३ ॥
अब्भितरं देवकुले अंतोदेवकुले त्ति वा । अब्भंतरे मुद्दे य त्ति वधंतोमुद्दे त्ति वा ॥ ७६४ ॥
अब्भंतरं तु वारीय अंतोवारीय वा पुणो । अब्भंतरं कोत्थलगे अंतोकोत्थलके त्ति वा ॥ ७६५ ॥ 30
जम्मि कम्मियि भंडम्मि अंतो अब्भंतरं ति वा । एते उत्ता समा सदा जे तु अब्भंतरा भवे ॥ ७६६ ॥
अब्भंतरम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे य णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ७६७ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लिगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ७६८ ॥

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्धे हं० त० न स्तः ॥ २ °पोट्टसमा हं० त० ॥ ३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ ४ 'रत्तं' रत्नमित्यर्थः ॥

पाणे य मोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । ☞ आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ७६९ ॥ ☜
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ७७० ॥
एतम्मि पेक्खितयामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ७७१ ॥...

॥ अब्भंतरं सम्मत्तं ॥ १२ ॥ छ ॥

[१३ पण्णासं अब्भंतरब्भंतराणि]

अब्भंतरं तु जे वुत्ता ते उम्मट्ठे वियाणिया । अब्भंतरअब्भंतरके फलं तेत्थ वदे सुभं ॥ ७७२ ॥
अत्थविद्धिं जयं लाभं जं चऽण्णं पि सुभं भवे । एताणि आमसं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे ॥ ७७३ ॥
पुरिसं परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो णिच्चं सुही भवे ॥ ७७४ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । रायब्भंतरकस्सायं भज्जा तु भविस्सति ॥ ७७५ ॥
पुरुसट्ठविधं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे । थिए अत्थविधं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे ॥ ७७६ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो होहिति सेवगो ॥ ७७७ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज रायवल्लभको भवे । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो सव्वरहस्सितो ॥ ७७८ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सयणो खिप्पमेहिति ॥ ७७९ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ७८० ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७८१ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ७८२ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ७८३ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । मरणं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ७८४ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज सुदीहं उत्तमं भवे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणंऽसे णिद्दिसे ॥ ७८५ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वरसारत्तं च पुच्छेज्ज णिद्दिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८६ ॥
अपावयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं वासमादिसे ॥ ७८७ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे णिद्दिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८८ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारये तं च अब्भंतरतरं वदे ॥ ७८९ ॥
बाहिरब्भंतरं व त्ति अब्भंतरब्भंतरं वदे । धण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णं तेण वियागरे ॥ ७९० ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । [अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७९१ ॥]
वत्थमाभरणं भंडं अंतेपुरवरं जणो । सुवण्ण-रुप्प-मणि-मुत्तं अब्भंतरतरं थिरं ॥ ७९२ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सग्गं दंढं तधेव य । सव्वं सजीव-णिज्जीवं धण्णमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७९३ ॥
अब्भंतरतरं एतं विभावेतूण अंगवी । पुण्णामधेये हि फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ ७९४ ॥
एवमेतं जधा वुत्तं विभत्तीसु वियागरे । सभे सद्दे य जाणेज्जो अब्भंतरतरा हि जे ॥ ७९५ ॥
अब्भंतरब्भंतरतो अंतो अंतो त्ति वा पुणो । तधा आहारमाहारे अब्भंतरतरं वि वा ॥ ७९६ ॥
पविट्ठो त्ति य यो बूया तधा अविग्गतो त्ति वा । तधाऽविसरितो व त्ति तधा लीणो त्ति वा पुणो ॥ ७९७ ॥
तधा उक्कट्ठमोकट्ठो अव्वोकट्ठ त्ति वा पुणो । तधा ओगूढमुवगूढो तधा वल्लभवल्लभो ॥ ७९८ ॥

---

१ इत्यविहगतोऽयं पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ वऽत्थ हं० त० विना ॥ ३ सि हं० त० ॥ ४ एतदुत्तरार्धं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ ५ तधा उक्कट्ठमोक्कट्ठो अवोकिट्ठे त्ति हं० त० ॥

अतिदूरे पविट्ठो त्ति अतिगतो त्ति व दूरत । दूरातिसरितो व त्ति दूरोगाढो त्ति वा पुणो ॥ ७९९ ॥
तधा अणुपविट्ठो त्ति तधा अतिगतो त्ति वा । तधा गाढोपगूढे त्ति गाढलीणं ति वा वदे ॥ ८०० ॥
तधा अल्लीणमल्लीणो अचल्लीणो त्ति वा वदे । अब्भंतरब्भंतरगो एवे सदा समा भवे ॥ ८०१ ॥
अक्कप्पविट्ठे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ८०२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लगे चेव परिसप्पे तधेव य ॥ ८०३ ॥ 5
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ८०४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ८०५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८०६ ॥

॥ अब्भंतरब्भंतराणि सम्मत्ताणि ॥ १३ ॥ छ ॥

[२४ पण्णासं बाहिरब्भंतराणि] 10

अब्भंतरा तु निम्मट्ठा बाहिरब्भंतरा तु ते । अब्भंतराणंतरिया अध वुत्ता सुभा-ऽसुभा ॥ ८०७ ॥
अत्थलाभं जयं वद्धिं जं च ऽण्णं सुभं भवे । एताणि आमसं पुच्छे बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८०८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरं भवे । इत्थिं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरा भवे ॥ ८०९ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे बाहिरब्भंतरं भवे । थिया अत्थविधं पुच्छे बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८१० ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरस्स तु । खिप्पं विज्जिहिति कण्णा एवं बूयांगचिंतको ॥ ८११ ॥ 15
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज खिप्पं पुत्तं पयाहिति ॥ ८१२ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरं वदे । पडिहारं संधिपालं वा तधा अत्थोपणायकं ॥ ८१३ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलोऽयमिति णिद्दिसे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ८१४ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ ८१५ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८१६ ॥ 20
संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ८१७ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ८१८ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च जति पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ८१९ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणंऽस णिद्दिसे ॥ ८२० ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ८२१ ॥ 25
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं वासमादिसे ॥ ८२२ ॥
कधा वासं ति वा बूया संधीदिवसेसु णिद्दिसे । दिवा रत्तिं ति वा बूया संझाकाले त्ति णिद्दिसे ॥ ८२३ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे मज्झिमा सस्ससंपदा ॥ ८२४ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारयित्ता य बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८२५ ॥
अब्भंतरं ति वज्झं ति बाहिरब्भंतरं वदे । वग्गं वण्णं ति पुच्छेज्ज मज्झिमं ति वियागरे ॥ ८२६ ॥ 30
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८२७ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं रागं दंढं मणिं तधा । सव्वं सज्जीव-णिज्जीवं मज्झागतमत्थि य ॥ ८२८ ॥

वत्थमाभरणं भंडं अंतेपुरवरं जणं । रूप्पं मणिं रयणं मज्झागममत्थि य ॥ ८२९ ॥
एवमेवं विभावित्ता णिद्दिसे अंगचिंतओ । समे सद्दे य जाणेज्जा बाहिरब्भंतरा हि जे ॥ ८३० ॥
बाहिरब्भंतरा सद्दा समुदीरंति मिस्सका । अब्भंतरा बहुला बाहिरब्भंतरा तु ते ॥ ८३१ ॥
णक्खत्ते देवते यावि तथा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ८३२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८३३ ॥
पाणे वा भोयणे या वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ८३४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ८३५ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८३६ ॥

॥ बाहिरब्भंतराणि ॥ १४ ॥ छ ॥

[१५ पण्णासं अब्भंतरबाहिराणि]

अब्भंतराणि सेवित्ता बाहिराणि णिसेवति । अब्भंतरवज्झा ते सव्वत्थे ण पसस्सते ॥ ८३७ ॥
[1]एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८३८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया अब्भंतरबाहिरो ॥ ८३९ ॥
इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया अब्भिंतरबाहिरा ॥ ८४० ॥
पुरिसत्थविधं पुच्छे वदे अब्भिंतरबाहिरं । थिया अत्थविधं पुच्छे अब्भिंतरबाहिरं वदे ॥ ८४१ ॥
कण्णामवि असिद्धत्था अधण्णा दूभग त्ति य । ☞ अब्भंतरवज्झस्स खिप्पं विजहिए त्ति य ॥८४२॥ ☜
कम्मं च परिपुच्छेज्ज अब्भिंतरबाहिरं वदे । पडिहारिं संधिपालं वा अब्भागारिगमेव य ॥ ८४३ ॥
पवासे पुच्छिते अत्थि पोसिते य णिरत्थगो । बंधो य पुच्छिते णत्थि बद्धो खिप्पं मुच्चति ॥ ८४४ ॥
भयं अत्थि त्ति वा बूया णत्थि खेमं ति पुच्छिते । संधिं पुच्छे ण[2] भवति विग्गहो य णिरत्थगो ॥ ८४५ ॥
[3]आरोगो य ऽत्थ ण भवे रोगं मरणं च णिद्दिसे । णत्थि त्ति जीवियं बूया ण समुट्ठेति आतुरो ॥ ८४६ ॥
अपावयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । णत्थि त्ति णिद्दिसे सव्वं णट्ठं तत्थ ण दीसति ॥ ८४७ ॥
वस्सारत्तं च वासं च णट्ठस्स य ण दंसणं । तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८४८ ॥
अब्भंतरं ति वज्झं ति अब्भिंतरबाहिरं वदे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिद्दिसे ॥ ८४९ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८५० ॥
अब्भंतरबाहिरका सद्दा [4]सूतंति मिस्सगा । अब्भंतरड्ढिका ते तु अब्भंतरबाहिरा भवे ॥ ८५१ ॥
आदिच्चे चेव णक्खत्ते वामिस्से देवतेसु य । [5]तित्थे पुप्फ फले देसे णगरे गाम गिहेसु य ॥ ८५२ ॥
पुरुसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लए यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८५३ ॥
पाणे वा भोयणे या वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ८५४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ८५५ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८५६ ॥

॥ अब्भिंतरबाहिराइं सम्मत्ताइं ॥ १५ ॥ छ ॥

---

१ इत्थिविसयमुत्तरार्धं हं० त० एवास्ति ॥ २ ण या बूया विग्गहो सि० । ण [.........] विग्गहो सं ३ पु० ॥ ३ अरोगो हं० त० ॥ ४ भूतंति हं० त० ॥ ५ तिथि पुण्फ हं० त० विना ॥

[१६ पण्णासं बाहिराणि]

एतेसामेव सव्वेसिं पडिपक्खे बाहिराणि तु । सेयमाणो जया पुच्छे पसत्थं णाभिनिद्दिसे ॥ ८५७ ॥
एतेसं सेवणे जं तु कम्मपुच्छं वियागरे । वणकम्मिकं व णाविकम्मं बाहिरं कट्ठहारकं ॥ ८५८ ॥
आरामपालकं जाणे उज्जाणस्स वणस्स या । पुप्फचागं फलुचागं वत्तणीपालकं तहा ॥ ८५९ ॥
पुरिसं इत्थिं च अत्थं च गब्भं पोसितमागमं । तधा खेमं च संधिं वा जयाऽऽरोग्गं च जीवितं ॥ ८६० ॥   5
वरसारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं । खेत्त वत्थु धणं धण्णं मेत्ती संजोगमेव य ॥ ८६१ ॥
खग्गं धम्मं च धम्मं च दंडं अच्छादणं मणिं । जं किंचि पसत्थं सो सव्वं नत्थि त्ति णिद्दिसे ॥८६२॥
पवासं णिग्गमं मोक्खं गब्भिणीय पजायणं । कण्णापवाहणं वा वि भयं बद्धस्स मोक्खणं ॥ ८६३ ॥
विग्गहं मरणं रोगं अणावुट्ठिं अपातयं । सस्सस्स वापदिं णासं अप्पतिट्ठमणिव्वुतिं ॥ ८६४ ॥
अपमाणमसक्कारं णिराकारं पराजयं । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८६५ ॥   10
अब्भंतरं ति वज्झं ति बाहिरं ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे ॥ ८६६ ॥
पसत्थं णत्थि तं सव्वं अप्पसत्थं च अत्थि तं । समे सद्दे य जाणेज्जो बाहिरा जे भवंतिह ॥ ८६७ ॥
बाहिरं ति व जो बूया परिबाहिरकं ति या । अंते वज्झं ति या बूया अंतपालो त्ति या पुणो ॥ ८६८ ॥
गामस्स वज्झतो य त्ति वज्झतो णगरस्स या । खेडस्स वज्झतो य त्ति वज्झतो या घरस्स तु ॥ ८६९ ॥
पच्चंतो त्ति या बूया पच्चंतवसति त्ति या । तधा पच्चंतपालो त्ति एकतो त्ति य यं वदे ॥ ८७० ॥   15
बाहिंबाहिं ति या बूया बाहिरेणं ति या पुणो । एते उत्ता समा सद्दा बाहिरा जे भवंतिह ॥ ८७१ ॥
णक्खत्ते पच्छिमद्दारे देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ८७२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८७३ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ८७४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ८७५ ॥   20
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंततो ॥ ८७६ ॥

॥ बाहिराणि ॥ १६ ॥ छ ॥

[१७ पण्णासं बाहिरबाहिराणि]

णिम्मट्ठे बाहिरे बूया सव्वबाहिरबाहिरे । ते सेयमाणो पुच्छेज्ज बाहिरत्थं वियागरे ॥ ८७७ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधणो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया बाहिरो त्ति य णिद्दिसे ॥ ८७८ ॥   25
इत्थी य परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया बाहिर त्ति य णिद्दिसे ॥ ८७९ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे बाहिर त्ति वियागरे । थिया अत्थविधं पुच्छे बाहिर त्ति वियागरे ॥ ८८० ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया खिप्पं विज्झिहिति त्ति य ॥ ८८१ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज मतं सा जणयिस्सति ॥ ८८२ ॥

---

१ एएसिमेव हं० त० ॥ २ सेवमाणो य पुच्छेज्ज पसत्थं णत्थि तं भवे हं० त० विना ॥ ३ पुव्वं हं० त० विना ॥ ४ आरामसालं जाणेज्ज सस्सवण्णस्स वा पि वा हं० त० ॥ ५ तं हं० त० ॥ ६ वापतिं हं० त० ॥ ७ अप्पमाणथिरसक्कारं सं ३ पु० सि० । अप्पमायमसक्कारं हं० त० ॥ ८ 'कारं च अववयं हं० त० ॥ ९ ति मग्गं ति हं० त० ॥ १० अघण्णं ति हं० त० विना ॥ ११ पकंतो त्ति य जो वदे हं० त० ॥ १२ चेव हं० त० ॥ १३ अघणो हं० त० ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज वत्तणीपालमग्गियं । ¹तुंबरस मग्गिनं या वि तथा बाहिरेतुंबियं ॥ ८८३ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज अफलो त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज पैरओ सो गमिस्सति ॥ ८८४ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णिरत्थं बंधमादिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खो तस्स पवासणे ॥ ८८५ ॥
भयं पुच्छे भयं भवति खेमं पुच्छे ण होहिति । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गहो य णिरत्थगो ॥ ८८६ ॥
5　जयं पुच्छे ण भवति आरोगो वि ण होहिति । रोगं च मरणं चेव अत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ८८७ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । आवाधितं च पुच्छेज्ज भतप्पाओ भतो त्ति या ॥ ८८८ ॥
अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८८९ ॥
वस्सारत्तं च वासं च सव्वं णट्ठस्स दंसणं । तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८९० ॥
धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णं ति वियागरे । समे सद्दे तु जाणेज्जो जे तु बाहिरबाहिरा ॥ ८९१ ॥
10　तधा णिच्छुद्धणिच्छुद्धं तधा णिग्गतणिग्गतं । तधा णीहारणीहारे तधा गतगते त्ति वा ॥ ८९२ ॥
[तधा] वेणंवणं य त्ति अडवीअडवि त्ति या । परतो-परतो व त्ति परंपरगतो त्ति वा ॥ ८९३ ॥
वज्झंवज्झं ति या बूया तथा बाहिरबाहिरं । एते उत्ता समा सद्दा जे तु बाहिरबाहिरा ॥ ८९४ ॥
वज्झमंडलचारिम्मि णक्खत्ते देवते तथा । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ८९५ ॥
पुरिसे चतुप्पदे या वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे या वि परिसप्पे तधेव य ॥ ८९६ ॥
15　पाणे या भोयणे या वि वत्थमाभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ८९७ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ८९८ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८९९ ॥

॥ बाहिरबाहिराणि सम्मत्ताणि ॥ १७ छ ॥

[१८ पण्णासं ओवाताणि]

20　ओवाताणि पण्णासं पवक्खामऽणुपुव्वसो । अब्भंतराणि सव्वाणि उमट्ठाणि जता भवे ॥ ९०० ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९०१ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुद्दभागी य पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ९०२ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभगा त्ति य । धण्णा य सुद्दभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ९०३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभगा त्ति य । ओवातकस्स पुरिसस्स कण्णा विज्जिहिति त्ति य ॥ ९०४ ॥
25　जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९०५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुद्धकम्मं वियागरे । ⁵उज्झायको वंसिको या सुद्धाकारी य होक्खति ॥ ९०६ ॥
⁶धामयं ति या बूया ओवातो त्ति सँसि त्ति या । सेतं ति पंडरं व त्ति विमलं णिम्मलं ति वा ॥ ९०७ ॥
सुद्धं ति वाऽतिविसुद्धं ति तधा वितिमिरं ति वा । सप्पभं सुचिभं ति त्ति पितवण्णं ति पीतकं ॥ ९०८ ॥
पउमकेसरवण्णं ति तिगिंच्छसरिसं ति वा । कोरेंटं चंपको व त्ति कणिकार असितं ति वा ॥ ९०९ ॥
30　जं चऽण्णं पीतकं णिद्धं जं या वि रजतप्पभं । तेसं संकित्तणासद्दा ओवातेहिं समा भवे ॥ ९१० ॥
जधा अब्भंतरे सुत्तं सव्वं दिट्ठं सुभा-ऽसुभं । तधोवातेसु सव्वेसु फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ९११ ॥
तधोवातम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे ति वा ९१२ ॥

---

१ गुंटस्स हं० त० विना ॥　२ रगुंठितं हं० त० विना ॥　३ परितो स ३ पु० ॥　४ घण्णं धण्णं व हं० त० ॥　५ उज्झायको हं० त० विना ॥ ६ आवागयं हं० त० ॥ ७ समि त्ति हं० त० ॥ ८ पियमण्णं हं० त० ॥ ९ अतिगं हं० त० ॥

पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लके यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९१३ ॥
पाणे वा भोयणे वा [वि] वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९१४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु त । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९१५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ९१६ ॥

॥ ओवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १८ ॥ छ ॥　　5

[१९ पण्णासं सामोवाताणि]

सामोवाताणि पण्णासं जाणि अब्भंतराणि तु । अवत्थिताणि सव्वाणि सव्वत्थेसु पसत्थते ॥ ९१७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९१८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ९१९ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ९२० ॥　　10
कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामोवातं वियागरे ॥ ९२१ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९२२ ॥
अब्भंतरेसु सव्वेसु जधा दिट्ठं सुभा-ऽसुभं । सामोवातेसु वि तहा फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ९२३ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज तत्थ अब्भंतरं वदे । दीविकाधारकं वा वि .... ॥ ९२४ ॥
उज्जालकं वा जाणेज्जा जं चऽण्णं एरिसं भवे । कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं वदे ॥ ९२५ ॥　　15
सुद्धंसुतसामं आमं अरुणाभमरुणं ति वा । अरुणस्स देसकालो त्ति अरुणे उन्नते त्ति वा ॥ ९२६ ॥
अरुणोदये त्ति वा बूया अरुणो उदितो त्ति वा । एते उत्ता समा सदा सामोवाता भवंति जे ॥ ९२७ ॥
सामोवातम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गाम-गिहेसु वा ॥ ९२८ ॥
पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९२९ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९३० ॥　　20
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९३१
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंततो ॥ ९३२ ॥

॥ स(सा)मोवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १९ ॥ छ ॥

[२० पण्णासं सामाणि]

बाहिरब्भंतरा सव्वे **साम** चेवं वियागरे । तेसु अत्थं च वद्धिं च सुहं लाभं च णिद्दिसे ॥ ९३३ ॥　　25
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य ॥ ९३४ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामा तत्थ वियागरे ॥ ९३५ ॥
दीविकाहारिका णावा तधा पादीविकं पि वा । उज्जालकं कावकरं गितकारिं च णिद्दिसे ॥ ९३६ ॥
ताणि धम्मवणट्ठाणि सव्वाणेव करिस्सति । सव्वभंडेसु कुसलो णट्टको वा वि होक्खति ॥ ९३७ ॥
अग्गिको जाणको वा वि आजीवणिको तधा । कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं वदे ॥ ९३८ ॥　　30
सामं गीतं ति वा बूया अधवा गीत-वाइतं । गाअको गाणकं व त्ति गीतकं मधुरं ति वा ९३९ ॥
हुतासिणा सिहा य त्ति तधा अग्गिसिह त्ति वा । तधा दीवसिहा य त्ति ओदीवसिह त्ति वा ॥ ९४० ॥

---

१ धन्नं च हं॰ त॰ विना ॥ २ सण्णाविज्जि विया॰ हं॰ त॰ विना ॥ ३ भवे हं॰ त॰ ॥ ४ सुद्दसुयसामं अ॰ हं॰ त॰ ॥ ५ उदत्ते त्ति हं॰ त॰ ॥ ६ 'कावकरं' काव्यकरमिति अर्थः सम्भाव्यते ॥ ७ भवे हं॰ त॰ ॥ ८ हुयासणा हं॰ त॰ ॥

दीविगाय सिहा व त्ति चुडिलीय सिहि त्ति वा । एते उत्ता समा सद्दा मज्झं एतेसु णिद्दिसे ॥ ९४१ ॥
तधा सामम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम-गिहेसु वा ॥ ९४२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लके यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९४३ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९४४ ॥
5 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९४५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ९४६ ॥

॥ सामाणि समत्ताणि ॥ २० ॥ छ ॥

[२१–२२ पण्णासं सामकण्हाणि कण्हाणि य]

पण्णासं सामकण्हाणि बाहिराणि वियागरे । समप्फलाणि वज्झेहिं पसत्थेण प्पसस्सति ॥ ९४७ ॥
10 जाणेव वज्झवज्झाणि ताणि कण्हाणि णिद्दिसे । अप्पसत्थाणि सव्वाणि सव्वत्थेसु वियागरे ॥ ९४८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । इत्थिं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य ॥ ९४९ ॥
कण्णामवि य सिद्धत्था अधण्णा दूभग त्ति य । वण्णं च परिपुच्छेज्ज कालको त्ति वियागरे ॥ ९५० ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज इमं कम्मं वियागरे । णीलीकारकं वा वि तधा इंगालकारकं ॥ ९५१ ॥
णीलहारककम्मं वा तधा इंगालहारकं । णीलवाणियकं वा वि तधा इंगालवाणियं ॥ ९५२ ॥
15 अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । जं किंचि पसत्थं तं सेव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९५३ ॥
जधा तु वज्झवज्झेसु सव्वं दिट्ठं सुभासुभं । तधेव कण्हेसु वदे फलं सव्वं सुभासुभं ॥ ९५४ ॥
कण्हं णीलं ति वा बूया कालकं असितं ति वा । असितं किसिणं व त्ति हरितं ति व जो वदे ॥ ९५५ ॥
अंजणं कज्जलं व त्ति रिंगणं[1] भंगमुत्तमं । खंजणं भिंगिपत्तं[2] ति गवलं ति व जो वदे ॥ ९५६ ॥
सुगर त्ति कोकिला व त्ति गोपेच्छेलको[3] त्ति वा । भमरो मोरकंठो त्ति वायसो त्ति व जो वदे ॥ ९५७ ॥
20 मातंगो त्ति भिंतिगो[4] त्ति गयो त्ति महिसो त्ति वा । वलाहको त्ति मेघो त्ति तधा जलहरो त्ति वा ॥ ९५८ ॥
तधा कण्हकरालो त्ति कण्हतुलसि त्ति वा पुण । बाणं णीलुप्पलं व त्ति पामेच्छा णेलकंठको[5] ॥ ९५९ ॥
मसी आरिट्ठको व त्ति कण्हालो कण्हमोयको । जे वऽण्णे एवमादीया सद्दा कण्हसमा भवे ॥ ९६० ॥
णक्खत्ते देवते यावि तधा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ९६१ ॥
पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९६२ ॥
25 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९६३ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९६४ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ९६५ ॥

॥ सामकण्हाणि ⊲ कण्हाणि ⊳ [य] ॥ २१ ॥ २२ ॥ छ ॥

["पण्णासं अज्झोआताणि २३ पण्णासं अतिकण्हाणि २४" इति द्वारद्वयव्याख्यानं सर्वास्वपि प्रतिषु नास्ति ।]

---

१ रज्जेहिं हं० त० ॥ २ सव्वमत्थि हं० त० विना ॥ ३ मगणं हं० त० विना ॥ ४ भिंगणवत्ति ति हं० त० ॥ ५ गोपेच्छेलगो त्ति हं० त० ॥ ६ मुत्तिगो हं० त० ॥ ७ °कंटको सं ३ पु० ॥ ८ सामकण्हाणि सम्मत्ताणि सि० ॥ ९ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

[२५ वीसतिं उत्तमाणि]

वीसतिं उत्तमाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । मत्थको १ सीस २ संखा य ४ णिडालं ५ कण्णपुत्तका ७ ॥ ९६६ ॥
कण्णा ९ गंडो ११ इ १३ दंता य १४ णासा १५ णासपुडा तथा १६ ।
कणवीरका १८ अपंगा य २० वीसतिं होंति उत्तमा ॥ ९६७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा उत्तमं ति वियागरे ॥ ९६८ ॥ 5
पुरुसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ९६९ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य उत्तम त्ति वियागरे ॥ ९७० ॥
[पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे] । धिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७१ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । पुरिसस्स जुत्तामासायं कण्णा विज्जिहिते त्ति य ॥ ९७२ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज उत्तमं पुत्तमादिसे ॥ ९७३ ॥ 10
कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । राया वा रायमच्चो वा वित्तीतोसं करिस्सति ॥ ९७४ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ९७५ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं थाणं च णिद्दिसे ॥ ९७६ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं खेममादिसे ॥ ९७७ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि त्तेवं वियागरे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ ९७८ ॥ 15
जयं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं जयमादिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७९ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । पुच्छिते उत्तमं जीयं अकालस्स य उग्गमं ॥ ९८० ॥
अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९८१ ॥
वरसारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं । खेत्तं वत्थुं धणं धण्णं पसत्थं सव्वमेत्थि य ॥ ९८२ ॥
धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धण्णं ति य वियागरे । समे सद्दे य जाणेज्जो उत्तमा जे भवंतिह ॥ ९८३ ॥ 20
उत्तमं ति व जो बूया तधुत्तमतरं ति वा । तधुत्तिमुत्तमं वा वि उत्तमा उत्तमं ति वा ॥ ९८४ ॥
पवरं ति य जो बूया तधा पवरतरं ति वा । पवराणं पवरं य त्ति पवरातिपवरं ति वा ॥ ९८५ ॥
विसिट्ठं ति व जो बूया विसिट्ठतरकं ति वा । तं विसिट्ठविसिट्ठं ति विसिट्ठतरकं ति वा ॥ ९८६ ॥
वरिट्ठं ति व जो बूया वरिट्ठतरकं ति वा । तं वरिट्ठवरिट्ठं ति वरिट्ठतरकं ति वा ॥ ९८७ ॥
उदारं ति व जो बूया उदारतरकं ति वा । तधुदारमुदारं ति उदारपवरं ति वा ॥ ९८८ ॥ 25
पधाणं ति व जो बूया पधाणतरकं ति वा । तं पधाणपधाणं ति पधाणपवरं ति वा ॥ ९८९ ॥
जेट्ठं ति व जो बूया तधा जेट्ठतरं ति वा । तधा जेट्ठातिजेट्ठं वा जेट्ठाणं जेट्ठकं ति वा ॥ ९९० ॥
उक्कुट्ठं ति व जो बूया उक्कुट्ठतरकं ति वा । तधा उक्कुट्ठमुकुट्ठं समा सद्दा उ उत्तमा ॥ ९९१ ॥
उत्तमम्मि य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले वा देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ९९२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगोचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९९३ ॥ 30
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९९४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९९५ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ९९६ ॥

॥ उत्तमाणि ॥ २५ ॥ छ ॥

१-२ सुभमागी हं० त० ॥ ३ एतत् पूर्वार्द्धं प्रतिषु नास्ति ॥ ४ गीयं हं० त० ॥ ५ °मादि य हं० त० ॥ ६-७ विसिट्ठतरकं हं० त० विना ॥ ८-९ वरिट्ठतरकं हं० त० विना ॥ १० पधाणंतरकं हं० त० विना ॥ ११ जेट्ठतरं हं० त० विना ॥ १२ उक्कुट्ठतरकं हं० त० विना ॥

[२६ चोद्दस मज्झिमाणि]

मज्झिमाणि पवक्खिस्सं चोद्दसंगे जधा तधा । जत्तु १ थणंतर २ हिययं ३ उदरं वा वि जाणिया ४ ॥ ९९७ ॥
अंसा ६ बाहू ८ पबाहू य १० हत्था १२ हत्थतला तधा १४ । चोद्दसेताणि जाणीया मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ ९९८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा मज्झिमत्थं वियागरे ॥ ९९९ ॥
5 पुरिसं इत्थिं च अत्थं च कण्णं गब्भं च गब्भिणिं । कम्मं पवासं पावासिं बंधं मोक्खं भया-ऽभयं ॥ १००० ॥
संधिं जयमारोग्गं जीवितं आतुरं खमं । वासारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं ॥ १००१ ॥
खेत्तं वत्थुं मणिं दंडं छत्तं खग्गं तथेव य । जं किंचि पसत्थं सा मज्झिमं ति वियागरे ॥ १००२ ॥
अपातपमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १००३ ॥
धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा मज्झिमं ति वियागरे । समे सद्दे य जाणेज्जो मज्झिमा जे भवंतिह ॥ १००४ ॥
10 [1]बंधित्ता मज्झिमा अंगे जे सद्दा तेसु कित्तिया । एतेसु वि तधा चेव मज्झिमेसु वियागरे ॥ १००५ ॥
णक्खत्ते मज्झजोगम्मि देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १००६ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लये वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १००७ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १००८ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १००९ ॥
15 एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०१० ॥

॥ मज्झिमाणि ॥ २६ ॥ छ ॥

[२७ चोद्दस मज्झिमाणंतराणि]

मज्झिमाणं तु पडिवक्खा मज्झिमाणंतराणिह । उत्तमे अप्पसत्थाणि मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १०११ ॥
कडी कडियपस्साणि वत्थी सीसं समेहणं ।
20 वसणा ऊरू य जंघा य मज्झिमाणंतराणिह ॥ १०१२ ॥
मज्झिमेसु जधा दिट्ठो अत्थो तत्तो अणंतरं । मज्झिमाणंतराणं पि फलं बूया सुभासुभं ॥ १०१३ ॥
जे सद्दा मज्झिमा उत्ता तेसिं साराणुमायिकं । मज्झिमाणंतराणं पि समे सद्दे तु कप्पये ॥ १०१४ ॥

॥ मज्झिमाणंतराणि ॥ २७ ॥ छ ॥

[२८ दस जहण्णाणि]

25 अंगुट्ठा २ पादपण्हीओ ४ जंघा ६ गुप्फा तधेव य ८ । दसेताणि जहण्णाणि पादाणि ९ हितयाणि वा १० १०१५
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा जहण्णं सव्वमादिसे ॥ १०१६ ॥
पुरिसं इत्थिं च अत्थं च कण्णं गब्भं च गब्भिणिं । कम्मं पवासं पावासिं बंध-मोक्खं भया-ऽभयं ॥ १०१७ ॥
संधिं च निग्गहं चेव पेसं जय-पराजयं । रोगा-ऽरोगं च मरणं च जीवितं बाधितं तधा ॥ १०१८ ॥
वस्सारत्तमणावुट्ठिं वासं वा वि अपातयं । सस्सस्स वापदिं संपदिं च णट्ठस्स दंसणं ॥ १०१९ ॥
30 खेत्तं वत्थुं मणिं दंडं खग्गं चम्मं सवम्मगं । धणं धण्णं ति छायं च जं चऽण्णं सव्वमादिसे ॥ १०२० ॥
जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १०२१ ॥

---

१ परित्ता मज्झिमा अण्णे जे हं० त० ॥ २ पादाणा (णी) हि° सि० विना ॥ ३ खग्गधम्मस्सयस्सगं सं ३ पु० । खग्गचम्मस्सचम्मगं हं० त० । खग्गधम्मसयम्मगं सि० ॥ ४ च जातं च सं ३ पु० ॥

धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज [1]अधणं ति वियागरे । समे सद्दे य जाणेज्जो जहण्णा जे भवंतिह ॥ १०२२ ॥
जहण्णं ति चेव जे बूया जहण्णतरकं ति वा । जहण्णं ति जहण्णं ति जहण्णं कुच्छितं ति वा ॥१०२३॥
अधमं ति व जो बूया तधा अधमतरं ति वा । अधमाधमं ति वा बूया अधमाणं अधमं ति वा ॥ १०२४ ॥
अपमतं ति व जो बूया तधा अपमतरं ति वा । अपमयापमयं ति वा बूया [2]अपमाणतरं ति वा ॥ १०२५ ॥
हीण ति व जो बूया तधा ही[3]णंतरं ति वा । हीणहीणं ति वा बूया हीणही[4]णंतरं ति वा ॥ १०२६ ॥
[5]थोवं ति व जो बूया तधा थोवं[6]तरं ति वा । [7]थोवथोवं ति वा बूया थो[8]वंथोवतरं ति वा ॥ १०२७ ॥
णिकट्ठं ति व जो बूया णि[10]कट्ठतरकं ति वा । णिकट्ठातिणिकट्ठं ति तधा णिकट्ठणिकट्ठगं ॥ १०२८ ॥
मंगुलं ति व जो बूया तं मंगुलतरं ति वा । अतिमंगुलं ति वा बूया तधा मंगुलमंगुलं ॥ १०२९ ॥
पावकं ति व जो बूया तधा पावतरं ति वा । अतिपावकं ति वा बूया तधा पावकपावकं ॥ १०३० ॥
दुगुंछितं ति वा बूया दुगुंछिततरं ति वा । तधा पच्चवरं व त्ति अतिपच्चवरं ति वा ॥ १०३१ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं जहण्णं परिकित्तितं । तेसं संकित्तणा सदा जधण्णसम[11]काऽऽहिया ॥ १०३२ ॥
[12]अप्पावसेसे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०३३ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे या वि परिसप्पे तघेव य ॥ १०३४ ॥
पाणे या भोयणे या वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १०३५ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १०३६ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तघेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०३७ ॥

॥ जहण्णाणि ॥ २८ ॥ छ ॥

[२९ दुवे उत्तिममज्झिमसाधारणाणि]

मज्झिमाणुत्तमाणं च मज्झे साधारणाणि तु । [13]जंतूणि चे वियाणीया उत्तमत्थे पसस्सते ॥ १०३८ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १०३९ ॥
पुरिसं च इत्थिं अत्थं च धणं धण्णं तघेव य । कण्णं च परिपुच्छेज्ज सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४० ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्जा अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज जमलाणि प्पयाहिति ॥ १०४१ ॥
कम्मं साधारणं बूया बंधं णत्थि त्ति णिद्दिसे । चिराय मुच्चते बद्धो भयं खेमं च मिस्सकं ॥ १०४२ ॥
संधिं अत्थि त्ति जाणीया विग्गहो णत्थि दारुणो । जया-ऽऽरोगं च रोगं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४३॥
[14]☞ मरणं च अणावुट्ठिं आयवं सस्सवापदं । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १०४४ ॥
जीवितं बंध-मोक्खं च वस्सारत्तं सवासकं । सस्सं च नट्ठलाभं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४५ ॥
खेत्तं वत्थुं धणं धण्णं [15]रोगं चम्मं सचम्मकं । छत्तं दंडं मणिं वत्थं सव्वं साहारणं वदे ॥ १०४६ ॥ ☜
जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १०४७ ॥
धणं धण्णं ति पुच्छेज्जा सव्वं साधारणं वदे । समे सद्दे य जाणीया अंगे साधारणा तु जे ॥ १०४८ ॥
जे सदा उत्तमा वुत्ता मज्झिमा जे उदाहिता । ते यामिस्सा उदीरंता साधारणसमा भवे ॥ १०४९ ॥

---

१ अधण्णं हं० त० विना ॥ २ अप्पमाणंतरं हं० त० ॥ ३-४ हीणंतरं हं० त० ॥ ५ थोवंतरं ति सप्र० ॥ ६ थोवंतरं हं० त० विना ॥ ७ थोवत्थोकं ति हं० त० विना ॥ ८ थोवत्थोवतरं हं० त० विना ॥ ९ थोवथोवं ति जो सं ३ पु० । थोवथोवंतरं जो हं० त० । थोवंतरं ति जो सि० ॥ १० णिकट्ठंतरकं सप्र० ॥ ११ °मका द्दि से हं० त० विना ॥ १२ अप्पवसेसे सप्र० ॥ १३ जंतूणि प्पक्खिउयाणीसो उत्त° हं० त० ॥ १४ हस्तचिह्नान्तर्गतं श्लोकत्रितयं हं० त० एव वर्तते ॥ १५ सग्गं धम्मं च धम्मकं हं० त० ॥

साधारणम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०५० ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लये वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १०५१ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १०५२ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १०५३ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०५४ ॥

॥ उत्तममज्झिमसाधारणाणि ॥ २९ ॥ छ ॥

[३० दुवे मज्झिममज्झिमसाधारणाणि]

साधारणा तु अंगम्मि मज्झे मज्झाणमेव तु । ठाणा दुवे पसस्संते सोभणं तेसु णिद्दिसे ॥ १०५५ ॥
मज्झिमाणुत्तमाणं च फलं साधारणं सुभं । मज्झे साधारणाणं पि तमेव फलमादिसे ॥ १०५६ ॥
जे सदा मज्झिमा वुत्ता उत्तमाणंतरा य जे । ते वामिस्सा उदीरंता मज्झसाधारणे समा ॥ १०५७ ॥
साधारणम्मि णक्खत्ते जं चेतेसं समुत्तरं । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०५८ ॥

॥ मज्झिममज्झिमसाधारणाणि ॥ ३० ॥ छ ॥

[३१ दुवे मज्झिमाणंतरमज्झिमसाधारणाणि]

मज्झिमाणंतराणं च मज्झिमाणं चे यक्खगा । मज्झे साधारणा वुत्ता मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १०५९ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १०६० ॥
पुरिसं इत्थिं च अत्थं वा कण्णं गब्भं च गब्भिणिं । कम्मं पवासं पावासिं बंधं मोक्खं भया-ऽभयं ॥१०६१॥
रोगा-ऽऽरोग्गं च मरणं च जीविता वाधिकं तधा । वासारत्तमणावुट्ठिं वासं वा वि अपातवं ॥ १०६२ ॥
सस्सवापत्ति-संपत्तिं णट्ठं णट्ठस्स दंसणं । खेत्तं वत्थुं धणं धण्णं रज्जं धम्मं सधम्मकं ॥ १०६३ ॥
जेंधुरिट्ठम्मि एतम्मि पसत्थं जत्तियं भवे । मज्झिमाणंतरं सव्वं अप्पसत्थं हि णत्थि य ॥ १०६४ ॥
जे सदा मज्झिमा वुत्ता मज्झिमाणंतरा य जे । ते वामिस्सा उदीरंता मज्झिमाणंतरे समा ॥ १०६५ ॥
साधारणम्मि णक्खत्ते जं चेतेसं समुत्तरं । तं सव्वमणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०६६ ॥

॥ मज्झिमाणंतरमज्झिमसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३१ ॥ छ ॥

[३२ दुवे मज्झिमाणंतरजहण्णसाधारणाणि]

मज्झिमाणंतराणं च जहण्णाणं च अंतरा । मज्झे साधारणा वुत्ता गोप्फा तेसु ण सोभणं ॥ १०६७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा जहण्णं सव्वमादिसे ॥ १०६८ ॥
पुरिमादीकाणि वत्थूणि पविचाणि तु जाणिह । ताणि खेत्तप्पधाणाणि जहण्णाणि वियागरे ॥ १०६९ ॥
मज्झिमाणंतरा सदा जहन्ना जे य कित्तिया । ते वामिस्सा उदीरंता जघन्ना समका भवे ॥ १०७० ॥
साधारणम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । [पुंप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥१०७१॥]
साधारणम्मि णक्खत्ते जं चेतेसं समुत्तरं । तं सव्वमणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०७२ ॥

॥ मज्झिमाणंतरजहण्णसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३२ ॥ छ ॥

---

१ °रणा तहा हं० त० ॥ २ च चक्खुणा हं० त० ॥ ३ सचम्मकं सं० ॥ ४ जधोदिट्ठंसि एयम्मि हं० त० ॥ ५ जं एत्तो से समु° सं ३ पु० सि० । जं वुत्ता से समु° हं० त० ॥ ६ एतताणि हं० त० विना ॥ ७ उत्तरार्धं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥

[३३ दस वालेयाणि]

पादंगुट्ठं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंघा ८ पादतलाणि य १० । एते वाला पसस्संते वाला थीणामगेसु य ॥१०७३॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १०७४ ॥
गंब्भं पुच्छे वदे अत्थि पुण्णामेसु य दारकं ।दारिगं इत्थिणामेसु वालेयेसु वियागरे ॥ १०७५ ॥
जं वालसंसितं चऽण्णं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जो वाला ये समा भवे ॥ १०७६ ॥ 5
वालको दारको व त्ति [सिंगको पिल्लको त्ति वा ।] वच्छको तंण्णको व त्ति ◁ पोतंको कलभो त्ति वा ▷ १०७७
वालको त्ति व जो बूया ☞ तंहा वालतरो त्ति वा । अतिवालको त्ति वा बूया ☜ तधा वालगवालगो ॥१०७८॥
दारको त्ति व जो बूया तधा दारगदारगो । अतिदारको त्ति वा बूया दारगस्स य दारगो ॥ १०७९ ॥
सिंगको त्ति व जो बूया तधा सिंगकसिंगको । अतिसिंगको त्ति वा बूया सिंगकस्स व सिंगको ॥ १०८० ॥
पिल्लको त्ति व जो बूया तधा पिल्लतरो त्ति वा । अतिपिल्लको त्ति वा बूया पिल्लकस्स व पिल्लको ॥ १०८१ ॥ 10
वच्छको त्ति व जो बूया तधा वच्छकवच्छको । अतिवच्छको त्ति वा बूया वच्छकस्स व वच्छको ॥१०८२॥
तण्णको त्ति व जो बूया तधा तण्णकतण्णको । अतितण्णको त्ति वा बूया तण्णकस्स व तण्णको ॥ १०८३ ॥
पोतको त्ति व जो बूया तधा पोतंकपोतको । अतिपोतको त्ति वा बूया पोतकस्स व पोतको ॥ १०८४ ॥
[कंलभो त्ति व जो बूया तधा कलभकलभको । अतिकलभो त्ति वा बूया कलभस्स व कलभको ॥१०८५॥]
वालकं जाणकं व त्ति तधा ठियपडिय त्ति वा । तधा पंचमिका व त्ति तधा सत्तमिक त्ति वा ॥१०८६॥ 15
उट्ठाणकं ति वा बूया मासपूरणकं ति वा । ंपिंडे वद्धणकं व त्ति उवणिग्गमणं ति वा ॥ १०८७ ॥
पोदपेसणकं व त्ति परंगेणकमेव वा । पदक्कमणकं व त्ति पयाहरणकं ति वा ॥ १०८८ ॥
चोलकं ति व जो बूया उपणयणं ति वा पुणो । लेहणिक्खिवणं व त्ति गंणितापढपणकं ति वा ॥ १०८९ ॥
वालेयोपक्खराणं च वालोवकरणस्स य । तेसं संकित्तणे सद्दा वालेयसममादिसे ॥ १०९० ॥
वालजम्मणणक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । वाले पुप्फफले देसे णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०९१ ॥ 20
वाले चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ १०९२ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । ☞ आसणे सयणे जाणे भंडोवकरणे तधा ॥ १०९३ ॥ ☜
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १०९४ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १०९५ ॥

॥ वालेयाणि ॥ ३३ ॥ छ ॥ 25

[३४ चोद्दस जोव्वणत्थाणि]

उदरं १ कडी य २ णामी य ३ कडीपस्साणि वे तधा ५ ।
पट्ठिपस्साणि[11] ७ मज्झो य ८ लोमवासी तधेव य ९ ॥ १०९६ ॥
मेहणं १० वत्थि ११ सीसं च १२ फलं वे वि य जाणिया १४ ।
जोव्वणत्थेसु एतेसु जोव्वणत्थं विजाणिया ॥ १०९७ ॥ 30

---

१ चतुरस्रकोष्ठकगतं चरणं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ २ मल्लको हं० त० ॥ ३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ बूया पोतकस्स य पोतको हं० त० विना ॥ ६ पोत्तिकपोतको हं० त० विना ॥ ७ चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतं पद्यं सर्वासु प्रतिषु नास्ति, किन्तु सम्बन्धानुसारेणानुसंधितमस्ति ॥ ८ पंडयद्ध° हं० त० ॥ ९ पादापे° हं० त० विना ॥ १० गतिताप° सं ३ पु० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० एव वर्तते ॥ १२ °णि ७ सह्रोय हं० त० ॥ १३ वियागरे हं० त० ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १०९८॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । सद्दत्थकारी दच्छो य सव्वत्थेसु पुमं भवे ॥ १०९९ ॥
इत्थीं वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । ☞ सद्दत्थकारी दच्छा य सव्वत्थेसु पदक्खिणा ॥ ११००॥
पुरिसत्थविद्दं पुच्छे सिग्घमत्थो भविस्सति । थिया अत्थविद्दं पुच्छे खिप्पमत्थो भविस्सति ॥ ११०१ ॥
5 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । ☜ धण्णा य सुद्धभागी य खिप्पं विज्जिहिते त्ति य ॥११०२॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज खिप्पं पुत्तं पयाहिति ॥ ११०३ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज खिप्पं कम्मं वियागरे । परिस्समेण अप्पेण खिप्पं अत्थं लभिस्सति ॥ ११०४ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो त्ति वियागरे । पवत्थं परिपुच्छेज्ज सफलो खिप्पमेहिति ॥ ११०५ ॥
विवादं विग्गहं बंधं रोगं मरणमेव य । अपावयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य ॥ ११०६ ॥
10 णट्ठस्स विप्पणासं च पलाणस्स अणागमं । धणक्खयं वियोगं च सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ११०७ ॥
बद्धस्स मोयणं खिप्पं संधिं संपीतिमेव य । अयाऽऽरोगं च आयुं च उत्थाणं वाधितस्स य ॥ ११०८ ॥
वस्सारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं । हितस्स पडिलाभं च पलातस्स य आगमं ॥ ११०९ ॥
समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । धणलाभं कम्मसिद्धिं वा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १११० ॥
वयं च परिपुच्छेज्जा जोव्वणत्थो त्ति णिद्दिसे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धणं ☞ तेवं वियागरे ॥ ११११ ॥
15 जहा पुण्णामधेएसु सव्वं दिट्ठं सुभा-ऽसुभं । [................................] ॥ ११११२ ॥
तहा खित्तं तहा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । सभे सद्दे य जाणेज्जो जोव्वणत्था भवंति जे ॥ १११३ ॥
जोव्वणं ति व जो बूया तहा जोव्वणकं ति वा । जोव्वणत्थे त्ति जो बूया जुवाणो त्ति व जो वदे ॥१११४॥
तरुणं ति व जो बूया तहा तरुणतरं ति वा । तरुणो त्ति व जो बूया तरुणा तरुणको त्ति वा ॥ १११५ ॥
दहरो त्ति व जो ☜ बूया वयत्थो त्ति व जो वदे । पयत्तो त्ति उदग्गो त्ति पोअंडो त्ति व जो वदे ॥१११६॥
20 गुलभक्खगं ति वा बूया बाढकारो त्ति वा पुणो । समासेयणकं व त्ति णियो वा सुण्णिक त्ति वा ॥ १११७॥
उपमाणकं ति वा बूया वत्थ गोसग्गण्हाणकं । पडिवज्जकं ति वा बूया तथा णिव्वहणं ति वा ॥ १११८ ॥
अधिक्कमणकं य त्ति ओप्पारुभणाति वा । पतिज्जं ति य यो बूया णैवणं पंचमेजणं ॥ १११९ ॥
वारेज्जं ति य जो बूया अण्णोण्णं ति य जो वदे । तथा जामातुकीयं ति दसमीण्हाणकं ति वा ॥ ११२० ॥
उस्सउ त्ति समास त्ति तथा उण्णजणे त्ति वा । तथा अब्भुदयो य त्ति भोज्जं मज्जणकं ति वा ॥ ११२१ ॥
25 जं चऽण्णं एवमादीयं जोव्वणस्स य संसितं । तस्सुदाहरणं सव्वं जोव्वणत्थिसमं भवे ॥ ११२२ ॥
णक्खत्ते जोगे संपुण्णे देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ११२३॥
पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ११२४ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ११२५ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ११२६ ॥
30 एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ११२७ ॥

॥ जोव्वणत्थाणि ॥ ३४ ॥ छ ॥

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ २ खिप्पं सिज्झिहिए ति या हं० त० ॥ ३ पडिलंभं हं० त० मि० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ पोभंडो हं० त० ॥ ६ पतिज्ज ति हं० त० विना ॥ ७ णवणं हं० त० ॥ ८ अण्णोण्णं हं० त० विना ॥ ९ तहा तेमाउकीयं हं० त० ॥ १० उज्झउ त्ति समाउ त्ति तधा अण्णछणे हं० त० विना ॥ ११ तस्सापहरणं हं० त० ॥

[३५ चोद्दस मज्झिमवयाणि]

बाहाओ २ बाहुणालीओ ४ हत्थमंगुलिकोदरो ५ । हत्थमंगुट्ठका ७ हत्था ९ अंसवीकाणिए तधा १० ॥११२८॥
जैन्तूणि १२ थणावुभये १४ एते मज्झिमये वये । सव्वमज्झिमकं अत्थं लाभं चऽत्थ वियागरे ॥ ११२९ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो सारतो भवे । मज्झिमो आउतो चेव भातूणं वा वि मज्झिमो ॥ ११३० ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमा सारतो भवे । मज्झिमा आउतो या वि भगिणीणं च मज्झिमा ॥ ११३१ ॥　5
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । ☞ थिर्या अत्थविहं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥११३२॥☜
कण्णं च परिपुच्छेज्ज मज्झकल्लाणसोभणा । भातूणं मज्झिमा सा वि खिप्पं विज्जिहिति त्ति य ॥ ११३३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज संसयेण पजाहिति ॥ ११३४ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज कम्मं मज्झगतं वदे । लाभं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं लाभमादिसे ॥ ११३५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज मज्झिमं फलमादिसे । पोसितो मज्झकालेण मज्झलाभेण एहिति ॥ ११३६ ॥　10
बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो मुच्चिहिति त्ति य । भयं खेमं च संधिं वा विग्गहो वा वि मज्झिमो ॥ ११३७ ॥
रोगं च मरणं चेव अणावुट्ठिं अपातयं । सस्सस्स य वापत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ११३८ ॥
जयं जीवितमारोग्गं उत्थाणं वाधितस्स य । वस्सारत्तं च वासं च वदे सस्सं च मज्झिमं ॥ ११३९ ॥
वयं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे । धण्णं धणं च पुच्छेज्ज मज्झिमं ति वियागरे ॥ ११४० ॥
पवत्ता मज्झिमा जे तु फलं जं तेसु कित्तितं । तधेव य फलं सव्वं बूया मज्झयेसु वि ॥ ११४१ ॥　15
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जो मज्झिमा जे भवंतिह ॥ ११४२ ॥
मज्झिमेसु य जे सद्दा मज्झसारेसु आहिता । ते चेव मज्झिमवये णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ११४३ ॥
मज्झणक्खत्तजोगम्मि देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे या णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ११४४ ॥
पुरिसे चउप्पये यावि पक्खिणम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ११४५ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ११४६ ॥　20
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ११४७ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ११४८ ॥

॥ मज्झिमाणि (मज्झिमवयाणि) ॥ ३५ ॥ छ ॥

[३६ वीसं महव्वयाणि]

गीवा हणू य दंतोट्ठं णासा णासपुडावुभो । गंडा कवोला य तधा भुमकाणं अंतरं च जं ॥ ११४९ ॥　25
णिडालं च सिरं चेव एवमेताणि वीसतिं । महव्वताणि जाणीया अंगविज्जाविसारतो ॥ ११५० ॥
एताणि आमसं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । जयं लाभं पसत्थं च एतं णातिचिरं भवे ॥ ११५१ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज णरं बूया महव्वतं । इत्थिं वा परिपुच्छेज्ज बूया तं पि महव्वयं ॥ ११५२ ॥
पुरिसत्थविधं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । थिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमत्थं वियागरे ॥ ११५३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज कण्णं बूया महव्वयं । महव्वयस्स पुरिसस्स चिरं विज्जिहिते त्ति या ॥ ११५४ ॥　30
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज मतं सा जणयिस्सति ॥ ११५५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज वुड्ढकम्म वियागरे । अप्पप्फलं बहुक्लेसं तं च कम्मं दुगुंछितं ॥ ११५६ ॥
पवासो पुच्छिते णत्थि णाऽऽगच्छति पवासितो । बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुच्चिहि ॥ ११५७ ॥

---

१ °लिकाउरो हं० त० विना ॥　२ °काणि ये तधा हं० त० विना ॥　३ जंतूणि हं० त० ॥　४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥　५ अंतरं थलं हं० त० ॥　६ महयं हं० त० ॥　७ वुड्ढकम्मि हं० त० ॥　८ बहुखेमं तं हं० त० ॥　९ पवसिमो हं० त० ॥

खेमं पुच्छे ण भवति भयमत्थि त्ति णिद्दिसे । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गहो य णिरत्थगो ॥ ११५८ ॥
रोगं मरणमणावुट्ठिं आतवं सरसवापदं । अत्थहाणिं वियोगं च सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ११५९ ॥
जयारोग्गं च आयुं वा उत्थाणं आतुरस्स य । णट्ठस्स दंसणं चेव सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ११६० ॥
वयं च परिपुच्छेज्ज ततो बूया महव्वतं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णं ति वियागरे ॥ ११६१ ॥
जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । ☞ [1]अपसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ☜ ॥ ११६२ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । महव्वयसमे या वि इमे सद्दे विभावये ॥ ११६३ ॥
[2]मेहव्वयो त्ति वा बूया तधा जुण्णवयो त्ति वा । तधा तीतवयो व त्ति तधा गतवयो त्ति वा ॥ ११६४ ॥
थेरो जुण्णो त्ति वा बूया वुड्ढो परिणतो त्ति वा । जरातुरो त्ति वा बूया खीणवंसो त्ति जो वदे ॥ ११६५ ॥
[3]वैत्तुरसयो त्ति वा बूया णिव्वत्त त्ति य यो वदे । [4]उँववुत्तं ति वा बूया झीणं वा [5]णिट्ठितं ति वा ॥ ११६६ ॥
यातं ति मलितं व त्ति तधा परिमलितं ति वा । मिलाणं परिसुक्खं ति तधा परिसडितं ति वा ॥ ११६७ ॥
तुच्छं ति रित्तकं व त्ति असारं [6]झुँसिरं ति वा । [7]वैधुद्धिततरं व त्ति गतगंध-रसं ति वा ॥ ११६८ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं जिण्णातीतवयस्सियं । तस्स संकित्तणासद्दा महावयसमा भवे ॥ ११६९ ॥
अप्पावसेसे णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे [8]गाम गिहे वि वा ॥ ११७० ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिजम्मि उदगोचरे । कीडे किविल्लये या वि परिसप्पे तधेव य ॥[9] ११७१ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ११७२ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ११७३ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ११७४ ॥

॥ महव्वयाणि ॥ ३६ ॥ छ ॥

[३७–३९ वयसाधारणा]

[३७ दुवे बालजोव्वणत्थसाधारणाणि]

उम्मट्ठेसु वियाणीया दुवे णेये ये वक्खणे । बालजोव्वणसामण्णे तं चेव य फलं धुवं ॥ ११७५ ॥
बालेयजोव्वणत्थाणं ☞ [10]जे सद्दा पुव्वकित्तिता । बालेयजोव्वणत्थाणं ☜ [11]तम्मिस्से समके वदे ॥ ११७६ ॥

[३८ दुवे जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि]

तारुण्णमज्झिमाणंगे वयसाधारणा यणा । उम्मट्ठा य पसत्थंते तं चेव य फलं वदे ॥ ११७७ ॥
तारुण्णमज्झि[12]माणम्मि जे सद्दा पुव्वकित्तिता । तारुण्णमज्झिमाणंगे मिस्से साधारणे वदे ॥ ११७८ ॥

[३९ दुवे मज्झिमवयमहव्वयसाधारणाणि]

मज्झिममहव्वयाणं मज्झे साधारणा भवे । उम्मट्ठा [13]जंतुणो तेसु पुव्वुत्तं फलमादिसे ॥ ११७९ ॥
मज्झिममहव्वताणं पि जे सद्दा पुव्वकित्तिता । ते यामिस्सा उदीरंता साधारणसमा भवे ॥ ११८० ॥

॥ वयसाधारणा ॥ ३७–३८–३९ ॥ छ ॥

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ महावयो हं० त० ॥ ३ लिपिभेदानुसारेण चेदत्र चत्तुस्सयो इति पाठः कियेत तदपि सम्यगेव पाठः ॥ ४ उयगुत्तं सि० । उयगुत्तं सं ३ पु० ॥ ५ णित्थियं हं० त० ॥ ६ सुसिरं हं० त० ॥ ७ नवुड्ढिततरं हं० त० ॥ ८ गाम-गिहेसु वा हं० त० ॥ ९ च थसरुणा हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गत पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ते मिस्से हं० त० सि० ॥ १२ °माणं वि जे हं० त० विना ॥ १३ जंतुणो हं० त० । जसुणो सि० ॥

[४० वीसं वंभेयाणि]

दंतो १ ट्ठं ३ कण्णं ५ गंडा य ७ कवोल ९ऽक्खि ११ भुमाणि य १३ ।
णासा १४ णिडॉलं १५ संखा य १७ सिरं १८ वे वाहु २० वीसति ॥ ११८१ ॥

वंभेयोवक्खरे चेव वंभणोपकरणेसु य । वंभणो त्ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ ११८२ ॥
पितामहो त्ति वा बूया तधा वंभं ति वा पुणो । सयंभु त्ति व जो बूया तवेव य मयाचतिं ॥ ११८३ ॥ 5
वंभणो त्ति वियाणीया तधा वंभरिसि त्ति वा । वंभवत्थो त्ति वा बूया वंभण्णू पिअवंभणो ॥ ११८४ ॥
दिजाति त्ति व जो बूया दिजातीवसभो त्ति वा । दिजातीपुंगवो व त्ति दिजाईपवरो त्ति वा ॥ ११८५ ॥
विप्पो व त्ति व जो बूया तधा विप्परिसि त्ति वा । तधा विप्पगुणोवेओ विप्पाणं पवरो त्ति वा ॥ ११८६ ॥
जण्णो कतो त्ति वा बूया जण्णकारि त्ति वा पुणो । जैट्ठो पढमजण्णो त्ति जण्णमुंडो त्ति वा पुणो ॥ ११८७ ॥
सोमो त्ति व जो बूया सोमपाइ त्ति वा पुणो । सोमपा इत्ति वा बूया सोमणामं च वाहरे ॥ ११८८ ॥ 10
अग्गिहोत्तं ति वा बूया आहितग्गि त्ति वा पुणो । अग्गिहोत्तरती व त्ति अग्गिहोत्तं हुतं ति वा ॥ ११८९ ॥
वेदो त्ति व जो बूया वेदज्झाइ त्ति वा पुणो । वेदाणं पारको व त्ति चतुवेदो त्ति वा पुणो ॥ ११९० ॥
वारिसं पुव्वमासं ति चतुस्मासं ति वा पुणो । जूवो चिति त्ति वा बूया अग्गीणं चयणि त्ति वा ॥ ११९१ ॥
करणे कमंडलू य त्ति दब्भा सज्जा भिसि त्ति वा । दंडं कट्ठं ति वा बूया जण्णोपइतकं ति वा ॥ ११९२ ॥
यऽण्णे एवमादीया सद्दा दिजवरस्सिता । णामसंकित्तणे तेसिं वंभेयसममादिसे ॥ ११९३ ॥ 15

॥ वंभेयाणि ॥ ४० ॥ छ ॥

[४१ चोद्दस खत्तेयाणि]

खंधं २ ऽंसपीढ ३ बाहू य ५ जत्तुं ७ उर ८ थणा तधा १० ।
हिययं ११ पस्साणि १३ पट्टी य १४ खत्तेयाणि वियागरे ॥ ११९४ ॥

खत्तेयोवक्खरे चेव खत्तिओयकरणेसु य । खत्तिओ त्ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ ११९५ ॥ 20
इंदो त्ति व जो बूया तधा इंदमहो त्ति य । इंदकेउ त्ति वा बूया इंदणामं च वाहरे ॥ ११९६ ॥
[2]दवड्डइसद्देणं इंदोवकरणं ति वा । इंदसयणं ति वा बूया जं चऽण्णं इंदसंतियं ॥ ११९७ ॥
खत्तिओ त्ति व जो बूया तधा खत्तियसंतिओ । तधा खत्तियराय त्ति खत्तियाधिपति त्ति वा ॥ ११९८ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा खत्तियसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं खत्तेयसममादिसे ॥ ११९९ ॥

॥ खत्तेयाइं समत्ताइं ॥ ४१ ॥ छ ॥ 25

[४२ चोद्दस वेस्सेयाणि]

कुक्खीपस्सा २ कडीपस्सा ४ उदरो ५ रु ७ मेढ्ढ ८ चक्खणा १० ।
वत्थि ११ सीसं १२ फले चेव १४ वेस्सेयाणि वियागरे ॥ १२०० ॥

वेस्सेयोवक्खरे चेव वेस्सोवकरणेसु य । वेस्सो त्ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२०१ ॥
वेस्सो त्ति य जो बूया तधा वेस्सकुलं ति वा । वेस्सॅप्पकतिओ व त्ति वेस्सो सो जीवति त्ति वा ॥ १२०२ ॥ 30
जातो वेस्सकुले व त्ति ञाती य वित्ति सो त्ति वा । वेस्समित्तं ति वा बूया वेस्सोपकरणं ति वा ॥ १२०३ ॥

---

१ °ण्ण ५ दंता य हं० त० विना ॥ २ णिलाड साहा य हं० त० ॥ ३ जिट्ठो पढमकण्णो हं० त० ॥ ४ °याई सम्मत्ताणि हं० त० ॥ ५ °स्सपाकत्तिओ° हं० त० ॥ ६ जातीया येत्ति हं० त० विना ॥

वेस्सकम्मं ति वा बूया वेस्सारंभो त्ति वा पुणो । वेस्साणं धणकं व त्ति वेस्साणं उस्सओ त्ति वा ॥ १२०४ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा ये वेस्ससंसिया । णामसंकित्तणे तेसिं वेसेज्जसममादिसे ॥ १२०५ ॥

॥ वेस्सेयाणि ॥ ४२ ॥ छ ॥

[४३ दस सुद्देयाणि]

5 पादंगुट्टं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंघा ८ पादतलाणि य १० ।
दसेताणि विजाणीया सुद्देयाणि वियागरे ॥ १२०६ ॥

सुद्देयोवक्खरे चेव सुद्दोवकरणेसु य । सुद्दो त्ति विजाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२०७ ॥
सुद्दो त्ति य जो बूया सुद्दलोगो त्ति वा पुणो । तधा सुद्दकुलं व त्ति सुद्दजाति त्ति वा पुणो ॥ १२०८ ॥
जातो सुद्दकुले व त्ति सुद्दजोणि त्ति वा पुणो । सुद्दमित्तं ति वा बूया सुद्दवित्तिकरो त्ति वा ॥ १२०९ ॥
10 सुद्दकम्मं ति वा बूया सुद्दारंभो त्ति वा पुणो । सुद्देहिं ववहारो त्ति सुद्देहि त्ति य जीवति ॥ १२१० ॥
जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा सुद्देयसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं सुद्देयसममादिसे ॥ १२११ ॥

॥ सुद्देयाणि ॥ ४३ ॥ छ ॥

[४४–४५–४६ चातुव्वण्णविधाणं]

[४४ दुवे बंभेज्जखत्तेज्जाणि]

15 बंभेयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । बंभणो त्ति य जाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२१२ ॥
बंभेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । बंभखत्ते त्ति जाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२१३ ॥
खत्तेयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । खत्तबंभं वियाणीया पुच्छितो अंगचिंतओ ॥ १२१४ ॥
बंभेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेयाणि णिसेवति । बंभवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२१५ ॥
वेस्सेयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । वेस्सबंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२१६ ॥
20 बंभेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । बंभसुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२१७ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । सुद्दबंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२१८ ॥
⊲ खत्तेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । खत्तिको त्ति विजाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२१९ ॥ ⊳
खत्तेयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । खत्तबंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२२० ॥
बंभेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । बंभखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२२१ ॥

[४५ दुवे खत्तेज्जवेस्सेज्जाणि]

25 खत्तेयाणि णिसेवित्ता विस्सेयाणि णिसेवति । खत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतको ॥ १२२२ ॥
वेस्सेज्जाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंततो ॥ १२२३ ॥
खत्तेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । खत्तसुद्दं वियाणीया पुच्छितो अंगचिंतओ ॥ १२२४ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । सुद्दखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२२५ ॥
30 वेस्सेज्जाणि णिसेवित्ता विस्सेयाणि णिसेवति । वेस्सं तं तु वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२२६ ॥
वेसेज्जाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । वेस्सबंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२२७ ॥

१ धणकं हं० त० ॥ २ उस्सुतो त्ति हं० त० विना ॥ ३ सुद्दयक्खेवकं हं० त० ॥ ४ सुद्दो लोगो हं० त० ॥
५ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकः हं० त० नास्ति ॥

वंभेयाणि णिसेवित्ता वेसेज्जाणि णिसेवति । वंभविस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंततो ॥ १२२८ ॥
विस्सेज्जाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२२९ ॥
खत्तेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेयाणि णिसेवति । खत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२३० ॥

[४६ दुवे वेसेज्जसुद्देज्जाणि]

विस्सेयाणि णिसेवित्ता सुद्देज्जाणि णिसेवति । विस्ससुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२३१ ॥　5
सुद्देयाणि णिसेवित्ता विस्सेयाणि णिसेवति । सुद्दवेसं वियाणीया पुच्छितो अंगचिंतओ ॥ १२३२ ॥
सुद्देयाणिं णिसेवित्ता सुद्देयाणिं णिसेवति । सुद्दं तं तु वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२३३ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता वंभेयाणि णिसेवति । सुद्दवंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२३४ ॥
वंभेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । वंभसुद्दं वियाणीया पुच्छितो अंगचिंतओ ॥ १२३५ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । सुद्दखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२३६ ॥　10
खत्तेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । खत्तसुद्दं वियाणीया पुच्छितो अंगचिंततो ॥ १२३७ ॥
सुद्देयाणि णिसेवित्ता वेस्सेज्जाणि णिसेवति । सुद्दवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंततो ॥ १२३८ ॥
[वेसेज्जाणि* णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । वेस्ससुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचिंतओ ॥ १२३९ ॥छ॥]
यं घाऽऽज्जमामसित्ताणं आमसे वितियं पुणो । तेण तम्मिस्सकं वण्णं णिद्दिसे अंगचिंततो ॥ १२४० ॥
चातुव्वण्णं च इच्चेतं सम्ममामसजोणिया । जधा तमणुगंतूणं ततो यूयांगचिंतओ ॥ १२४१ ॥　15

॥ चातुव्वण्णविधाणं ॥ ४४-४५-४६ ॥ छ ॥

[४७–५३ आयुप्पमाणणिद्देसो–चत्तालीसतिमं पडलं]

आयुप्पमाणणिद्देसो उत्तमेसु सयं भवे । पण्णत्तरिं च वरसाणि मज्झिमेसु वियागरे ॥ १२४२ ॥
पण्णासं तु णातव्वा मज्झिमाणंतरेसु य । जहण्णे पण्णवीसा तु आयुवरसाणि णिद्दिसे ॥ १२४३ ॥
साधारणेसु सव्वेसु गोप्फ-जाणु-थणेसु य । जंतूसु यावि वग्गाणं तं तु साधारणं वदे ॥ १२४४ ॥　20
आयुप्पमाणमिच्चेतं सुसाधारणमंगवी । असम्मूढो विभावेत्ता जधुत्तममिणिद्दिसे ॥ १२४५ ॥

॥ आयुप्पमाणणिद्देसो सम्मत्तो ॥ ४७-५३ ॥ छ ॥
॥ पडलं चत्तालीसतिमं ॥ ४० ॥ छ ॥

[५४ वावत्तरिं सुक्कवण्णपडीभागा]

उम्मट्ठा तु दढा सव्वे २८ पुरिमंगाणि ४४ णखाणि य ६४ ।　25
हितयं ६५ थण ६७ दंता य ६८ गीवा ६९ खंधो ७० ऽक्खिमेव य ७२ ॥ १२४६ ॥
एते सुक्कपडीभागा अंगे वावत्तरिं मता । अपीलिता तु उम्मट्ठा सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ १२४७ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १२४८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुद्दभागी य ⌐ सुद्धभावी य ⌐ सो भवे ॥१२४९॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुद्दभागी य सुद्धभागि त्ति यं वदे ॥ १२५० ॥　30
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुद्दभागी य खिप्पं विज्जिहिते त्ति य ॥ १२५१ ॥

---

* चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतः श्लोकः सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ १ चउव्वण्णं हं० त० ॥ २ तु मुणेतव्वा सि० ॥ ३ आयव' हं० त० ॥ ४ जतूसु हं० त० ॥ ५ ⌐ ⌐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

वण्णं च परिपुच्छेज्ज सुक्किलो त्ति वियागरे । तधा आभिजणं पुच्छे सुक्कमाभिजणं वदे ॥ १२५२ ॥
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १२५३ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । तधा सुक्केसु णातव्वं विसिट्ठतरकं फलं ॥ १२५४ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुक्कं कम्मस्स णिद्दिसे । संखिकं संखवाणियकं तधा वलयवाणियं ॥ १२५५ ॥
5 मणि-मुत्तवाणियं वा वि जं चऽण्णं सुक्किलं भवे । कम्मपुच्छाय णिद्देसे एवमादि फलं वदे ॥ १२५६ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे सद्दे य जाणेज्जो सुक्किला जे भवंतिह ॥ १२५७ ॥
सुक्को बहस्सती य त्ति चंदो य त्ति सणिंचरो । बलाका बलदेवो त्ति सुकण्णंदवणं ति वा ॥ १२५८ ॥
संखो संखवलयं ति संखणाभि त्ति वा पुणो । तधा संखमलो व त्ति संखचुण्णं ति वा पुणो ॥ १२५९ ॥
छुहा सेडि त्ति वा बूया चुण्णको त्ति पलेवगो । कडसक्कर त्ति वा बूया तधा णेलकितं ति वा ॥ १२६० ॥
10 दंतो सेडकधवीरो वा वासंति वासुल त्ति वा । वेइल्लपुप्फिका जाती लाणी जूयिक त्ति वा ॥ १२६१ ॥
णवमालिका मल्लिका य त्ति चंपकालि त्ति वा पुणो । तेणसोल्लिक त्ति वा बूया सेड्डकफलिक त्ति वा ॥ १२६२ ॥
पुंडरीक त्ति वा बूया सेडगद्दभकं ति वा । तधा सेडककंदो त्ति सिंधुवारो त्ति वा पुणो ॥ १२६३ ॥
दुद्धं दधिं वा बूया तधा दधिसरो त्ति वा । णवणीतं ति वा बूया सतधोतं घतं ति वा ॥ १२६४ ॥
धोतकं मधुसित्थं ति जोण्हा धवलपडो त्ति वा । दंतो त्ति दंतचुण्णो त्ति रयतं मुत्तिकं ति वा ॥ १२६५ ॥
15 जं चऽण्णं एवमादीयं सज्जीव-ऽज्जीवकं भवे । सुक्किलं ति सुंए सद्दे सुक्किलस्स तु तं समं ॥ ११६६ ॥
तधा सुक्कपडीभागे णक्खत्त देवते तधा । पुप्फे फले वा देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १२६७ ॥
पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लये यावि परिसप्पे तधेव य ॥ १२६८ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि आसणे सयणे तधा । वत्थे आभरणे यावि भंडोवगरणे तधा ॥ १२६९ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १२७० ॥
20 एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १२७१ ॥

॥ सुक्कवण्णपडीभागा ॥ ५४ ॥ छ ॥

[५५–६२ वण्णपडीभागपडलं]

अब्भंतरं अवंगे उ अक्खीणं[10] चे विणिद्दिसे । एते पंडुपडीभागे[11] अब्भंतरफले वदे ॥ १२७२ ॥
तधा णीलपडीभागा[12] अप्पसत्थे वियागरे । दढाणं पडिपक्खा जे णपुंसकफला उ ते ॥ १२७३ ॥
25 एस कण्हपडीभागे[13] णिम्मट्ठेसु वियागरे । बालेयेसु सव्वेसु पुच्छिते ण प्पसस्सते ॥ १२७४ ॥

॥ वण्णपडीभागा ॥ ५५-६२ ॥ छ ॥

[६३–७३ ठियामासवण्णजोणीपडलं]

सव्वे ज्जाव ठियामासा बाहिरप्पडिरूविगा । जो जस्स वण्णपडिरूवो वण्णं तं तेण णिद्दिसे ॥ १२७५ ॥
कण्हेण कण्हं जाणीया णीलकं णीलकेण य । रत्तेण रत्तं जाणीया पीतकेण य पीतकं ॥ १२७६ ॥
30 सेतेण सेतं जाणीया पंडुमेव य पंडुणा । मेचकं मेचकेणेव ठियामासं वियागरे ॥ १२७७ ॥

---

१ भवे हं० त० विना ॥ २ मकणं° हं० त० ॥ ३ पइल्ल° सप्र० ॥ ४ जाती णाली जू° सि० ॥ ५ घण° हं० त० ॥ ६ धातकं हं० त० विना ॥ ७ सते हं० त० विना ॥ ८ सुक्कलप° हं० त० ॥ ९ अत्रेदमवधेयम्–एतद् वण्णपडीभागपडलं अग्रेतनं च ठियामासवण्णजोणीपडलं कथचित् समानविषयकमिति मिश्रीभावेन तद्यावर्णनमत्र दृश्यते । अत एवात्र पटलद्वये द्वारसाङ्कर्यमपि वर्तते । कतिचिद्द्वारापरामर्शस्त्वत्र सुगमत्वात् सम्भाव्यते । द्वारक्रमभङ्गः पुनर्ग्रन्थकृदिच्छामनुसरति इति ॥ १० °णं चेव णि° हं० त० ॥ ११ °भागं अब्भंतरफलं हं० त० विना ॥ १२ °भागो हं० त० विना ॥ १३ °भागा हं० त० विना ॥

गयतालुकवण्णं च तव्वण्णेण वियागरे । काकंडकवण्णं च तधा गोमुत्तकं विदु ॥ १२७८ ॥
सूरेण सूरुग्गमिकं पदुमाभेण पदुमकं । मणोसिलाय य तधा मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२७९ ॥
हरितालेण जाणेज्जो हरितालसमप्पभं । तधा हिंगुलके यावि बूया हिंगुलकप्पभं ॥ १२८० ॥
णिद्धं णिद्धेण जाणेज्जो लुक्खं लुक्खेण णिद्दिसे । मिस्सकं मिस्सकेणेव चित्तवण्णं च चित्तले ॥ १२८१ ॥
एवमादी ठियामासे सवण्णेहिं वियाणिया । बाहिरप्पडिरूवेहिं णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ १२८२ ॥ 5
बाहिरंगगता एते ठियामासा विआहिता । एते चेव पुणो सव्वे अंगामासेहि णिद्दिसे ॥ १२८३ ॥
वक्खणा गोप्फणा जाणू य कण्णा य हरिता भवे । गीवा पीता तधा पंडू अपंगे वे तधोदरं ॥ १२८४ ॥
जिब्भोट्ठ-तालुका रत्ता बंभवण्णगा तधऽक्खिणो । सुक्का दंत-णहा असिता वज्झतं केस-लोमय ॥ १२८५ ॥
अब्भंतरा[1] य अच्छीण भागा गीवा य पीतिका[2] । सम्मद्दिया य हरिता णिम्मट्ठा होंति पंडुणो ॥ १२८६ ॥
कणवीरका अवंगा य पाद-पाणितला तधा । जिब्भोट्ठ-तालु-कंठोट्ठा दंतमंसं तधेव य ॥ १२८७ ॥ 10
रत्तवण्णपडीभागा विण्णेया दस पंच य । जधुत्तमणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १२८८ ॥
रत्त-सेतसमामासे णिद्दिसे गयतालुकं । सेत-रत्तसमामासे बंभरागं वियागरे ॥ १२८९ ॥
रत्त-पीतसमामासे वण्णं सुज्जुग्गमं वदे । पीत-रत्तसमामासे ☞ मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२९० ॥
कण्ह-सेयसमामासे ☜ मेचकं वण्णमादिसे । सेत-कण्हसमामासे कोरेंटकणिभं वदे ॥ १२९१ ॥
णिद्ध-लुक्खसमामासे णिद्धलुक्खं तु णिद्दिसे । लुक्ख-णिद्धसमामासे लुक्खणिद्धाणि णिद्दिसे ॥ १२९२ ॥ 15
पुप्फाणि च फलाणि च तधा पत्ताणिमेव य । णिज्जासा चेव सारा य मूलजोणिगतस्स य ॥ १२९३ ॥
वालाणं अंगलोमाणं चम्माणं च पिधप्पिधं । मासाणं रुधिराणं च पित्तस्स य कफस्स य ॥ १२९४ ॥
मुत्ताणं च पुरीसाणं सुक्क-मेद-वसाय य । अट्ठीणं अट्ठिमिंजाय णेहाणं पाणजोणिया ॥ १२९५ ॥
जे यऽण्णे धातुजोणीया वण्णरागा पिधप्पिधं । तेसिं संकित्तणासद्दा विभावेऊण अंगवी ॥ १२९६ ॥
सुक्कादयो सव्ववण्णा ये एते परिकित्तिया । तज्जोणीवण्णसद्देहिं ते पत्तेगं वियागरे ॥ १२९७ ॥ 20

॥ ठियामासकता वण्णजोणी ॥ ६३-७३ छ ॥

[७४-७९ णिद्धलूहपडलं]

[७४ दस णिद्धाणि]

मुद्दं १ णासापुडा ३ कण्णा ५ मेड्ढ ६ मऽक्खी ८ थणावुभो १० ।
एताणि दस णिद्धाणि उम्मट्ठाणि पसस्सते ॥ १२९८ ॥ 25

जधा पुण्णामधेज्जेसु आदेसा परिकित्तिता । तधा णिद्धेसु सव्वेसु विसिट्ठतरकं फलं ॥ १२९९ ॥
एताणि आमसंती य गब्भिणी जति पुच्छति । इमो तस्सा भवे अण्णो विसेसो उत्तरुत्तरो ॥ १३०० ॥
उदग्गमाणसा हट्ठा सव्वकामसमण्णिता । सुहेण सुलता पुत्तं धण्णं णारी पयाहिति ॥ १३०१ ॥
बंभणो जति पुच्छेज्जा उदिण्णे वेदपारतो । अभिरूवो सुहिनो णिच्च भवे य धण-धण्णया ॥ १३०२ ॥
वेस्सो जति पुच्छेज्जा सिद्धऽच्छादण-भोयणो । अड्ढो य सुहभागी य वसुमंतो य सो भवे ॥ १३०३ ॥ छ ॥ 30

---

१ °तरो ये अच्छीणं भागा सं ३ पु० । °तरो य अच्छीणं भागी हं० त० ॥ २ पीयिका हं० त० ॥ ३ °लुकंमेला हं० त० विना ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ५ °द्धमणिद्धाणि लुक्ख° सप्र० ॥ ६ सुव° हं० त० ॥ ७ तिजोणी° हं० त० ॥ ८ °ज्जा मिच्छच्छा° सं ३ पु० सि० ॥

[७५ दस णिद्धणिद्धाणि]

एताणि चेव णिद्धाणि णिद्धणिद्धाणि णिद्दिसे । [1]दूरम्मट्ठाणि सव्वाणि [2]विसिट्ठफलदाणि य ॥ १३०४ ॥
मक्खितं ति व जो बूया तं मक्खिततरं ति वा । [[3]अतिमक्खितं ति वा बूया मक्खितमक्खितं ति वा ॥१३०५॥
णिद्धं ति व जो बूया तं णिद्धतरकं ति वा ।] अतिणिद्धं ति वा बूया णिद्धणिद्धं ति वा पुणो ॥ १३०६ ॥
किलिण्णं ति य जो बूया किलिण्णतरकं ति वा । तधा अतिकिलिण्णं ति किलिण्णकिलिण्णं ति वा ॥ १३०७ ॥
णेहितं ति व जो बूया तं णेहिततरं ति वा । अतिणेहितं ति वा [4]बूया णेहितणेहितं ति वा ॥ १३०८ ॥
णेहुकडं ति वा बूया णेहुकडतरं ति वा । [5]अतिणेहुकडं व त्ति बहुणेहुकडं ति वा ॥ १३०९ ॥
णेहुत्तरं ति वा बूया णेहुत्तरतरं ति वा । अतिणेहुत्तरं ☞ [6]वँ त्ति बूया बहुणेहुत्तरं ☜ ति वा ॥ १३१० ॥
णेहागाढं ति वा बूया णेहागाढतरं ति वा । अतिणेहागाढं ति तधा बहुणेहागाढतरं ति वा ॥ १३११ ॥
दुद्धं दधिं सरो णवणीतं घयं ति वा । तेल्लं मधुं ति वा बूया वसा मज्जं ति वा पुणो ॥ १३१२ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं दव्वं णेहोवकं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा सव्वे णेहसमा भवे ॥ १३१३ ॥ छ ॥

[७६ दस लुक्खाणि]

णिम्मट्ठाणि य णिद्धाणि दस लुक्खाणि णिद्दिसे । जधा णपुंसका अंगे विण्णेया फलतो तधा ॥ १३१४ ॥ छ ॥

[७७ दस लुक्खलुक्खाणि]

एताणि चेव लुक्खाणि दूरं णिम्मज्जिताणि तु । लुक्खलुक्खाणि जाणीया फलं पावतरं च से ॥ १३१५ ॥
लूहं ति व जो बूया तधा लूहतरं ति वा । अतिलूहं ति वा बूया लूहालूहतरं ति वा ॥ १३१६ ॥
फुट्टं ति व जो बूया तधा फुट्टतरं ति वा । ☞ [7]अतिफुट्टं ति वा बूया फुट्टफुट्टतरं ति वा ॥ १३१७ ॥ ☜
फरुसं ति व जो बूया तधा फरुसतरं ति वा । तधाऽतिफरुसं व त्ति फरुसातिफरुसं ति वा ॥ १३१८ ॥
कयारो त्ति व जो बूया पंसुको त्ति व जो वदे । धूली रयो त्ति रेणु त्ति सरो सुक्को त्ति वा पुणो ॥ १३१९ ॥
इंगालछारिगा व त्ति भूती भस्सो त्ति वा पुणो । तुस त्ति गुलिकं व त्ति चुण्णं रोट्टो त्ति वा पुणो ॥ १३२० ॥
गोव्वरो त्ति करीसो त्ति सुक्कं वा छगणं पुणो । तण-कट्ठ-पलालं ति सुक्खपुप्फ-फलं ति वा ॥ १३२१ ॥
सुक्खपत्तं ति वा बूया तधा सुक्खफलं ति वा । तुस त्ति कोंटको व त्ति [8]कक्कुसो तप्पणो त्ति वा ॥ १३२२ ॥
लूढं ति लूहितं ती वा विलूहितविलूहितं । उल्लोहितं उव्वलितं तधा [9]उच्छाडितं ति वा ॥ १३२३ ॥
णिब्भामितं णिग्गलितं [10]अब्भुकढितं ति वा । णिण्णेहकं अणेहं वा फुट्टं ति फरुसं ति वा ॥ १३२४ ॥
सफुट्टं ति व जो बूया सपड्डापाडणं ति वा । [11]णिच्छोडणं णिव्वलकं तधा णिल्लिक्खणं ति वा ॥ १३२५ ॥
तधा पलिदिद्दं व त्ति [12]णिद्धोतं ति व जो वदे । पोल ति झुसिरं व त्ति सधूलीक सरेणुकं ॥ १३२६ ॥
जं चऽण्णं एवमादीय लोए [13]लुक्खोपकं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा सव्वे लूहसमा भवे ॥ १३२७ ॥ छ ॥

[७८ दस लुक्खणिद्धा ७९ दस णिद्धलूहा य]

लुक्खणिद्धा य पत्तेयं णिद्धा सम्मज्जिता भवे । [14]साधारणं तेसु वदे अत्थलाभं सुभा-ऽसुभं ॥ १३२८ ॥

---

१ दूरम° हं॰ त॰ ॥ २ विसुद्धफ° हं॰ त॰ ॥ ३ चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतोऽयं खण्डितपाठः सम्बन्धानुसारेण पूरितोऽस्ति ॥ ४ बूया बहुणेहुकडं ति वा सप्र॰ ॥ ५ अतिणेहितं ति वा बूया बहुणेहुकडं ति वा सप्र॰ ॥ ६ हस्तचिह्नगतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ८ फुक्कसो हं॰ त॰ ॥ ९ उग्घाडियं हं॰ त॰ ॥ १० अब्भुकंदितं हं॰ त॰ विना ॥ ११ णिग्घोडणं हं॰ त॰ ॥ १२ णिद्दायम्मि य जो हं॰ त॰ ॥ १३ लुक्खे चरं भवे हं॰ त॰ ॥ १४ साहारणं एसु वदे सव्वं अत्थं सुभा-ऽसुभं हं॰ त॰ ॥

णिद्धा लूहा उ एतेवं संविमट्टा जता भवे । साधारणं तेसु वदे अत्थं सव्वं सुभासुभं ॥ १३२९ ॥
लूहणिद्धं व जं अंगे णिद्धलूहं व जं भवे । तेसिं वामिस्ससद्देहिं साधारणगुणं वदे ॥ १३३० ॥

॥ णिद्धलूहाणि ॥ ७४-७९ ॥ छ ॥

[८० दस आहारा]

चक्खु १ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिब्भया ५ ।
हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ बाहूहिं ९ भमुहाहि य १० ॥ १३३१ ॥
आहारं कुरुते चेव उवयोगेहि जेहि तु । तधा य होति आहारे दसेताणुवधारये ॥ १३३२ ॥
सुणेती १ पेक्खती यावि २ गंधं वा केवि घायति ३ ।
ओट्ठसंदंसणे चेव ४ णिम्मिण्णाऽऽसाइतम्मि य ५ ॥ १३३३ ॥
अतिहारे य जिब्भायं ओट्ठाणं परिलेहणे ६ । तधेव सुद्धिकरणे अंगुलीपेंडणेसु य ७ ॥ १३३४ ॥
हत्थपादोवसंहारे ८ सिरेण ९ भुमकाहि य १० । आहारे णीहिते यावि सव्वं आहारमादिसे ॥ १३३५ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयति । आहारेसु वि एमेव फलं बूया सुभाऽसुभं ॥ १३३६ ॥
आहारे त्ति य जो बूया खज्जाखज्जं (खज्ज-पेज्जं) ति वा पुणो ।
आहारेति आहारेंति तधा अतिहरंति वा ॥ १३३७ ॥
समाहरंति त्ति वा बूया ⊲ पप्पा वाहरति त्ति वा ।
एति वा [आ]गतो व त्ति तधा अतिगतो त्ति वा ॥ १३३८ ॥
पवेसितो पविट्ठो त्ति आणीयं ति [व] आणितो ।
सु[ण]ते त्ति णिसामेति आगण्णेति त्ति वा पुणो ॥ १३३९ ॥
पेक्खते पेच्छते व त्ति णिज्झायति [व] पेक्खति । णियक्खेति त्ति वा बूया णिरिक्खति णिलिक्खति ॥१३४०
अग्घायते त्ति वा बूया उवग्घाय त्ति वा पुणो । आचिक्खति त्ति वा बूया ⊳ तधा उचंपति त्ति वा ॥ १३४१ ॥
रसायते त्ति वा बूया अस्सायेति त्ति वा पुणो । तधा विगिलिते य त्ति तधा आतिअ[ति] त्ति वा ॥ १३४२ ॥
जेमेति भुंजते य त्ति आहारं कुरुते त्ति य । अण्हेते य त्ति वा बूया भक्खते खाति वप्फति ॥ १३४३ ॥
फरिसायते त्ति वा बूया उवप्फरिसते त्ति वा । सुहफरिसं ति वा बूया फस्सं वेदयति त्ति वा ॥ १३४४ ॥
अंगारेति त्ति वा बूया तधा वाहरति त्ति वा । एते त्ति य जो बूया तधा एमि वा पुणो ॥ १३४५ ॥
जे वऽण्णे एवमादीया सद्दा आहारसंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा आहारसममादिसे ॥ १३४६ ॥
अब्भंतरेसु जे सद्दा अब्भंतरतरेसु य । ते वि आहारसद्देहिं तुल्लत्थे उवधारए ॥ १३४७ ॥

॥ आहारसम्मत्ति ॥ ८० ॥ छ ॥

[८१-८५ णीहारपडलं]

[८१ दस णीहारा]

चक्खु १ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिब्भया ५ ।
हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ बाहूहिं ९ भमुहाहि य १० ॥ १३४८ ॥
णीहारं कुरुते चेव उवयोगेहिं जेहि तु । जधा य होति णीहारो दसेताणुवधारए ॥ १३४९ ॥

---

१ केति हं॰ त॰ ॥ २ °संधारे हं॰ त॰ ॥ ३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ४ तहाऽतिगि° हं॰ त॰ ॥ ५ सुहफ° हं॰ त॰ ॥ ६ अंगा° सं ३ पु॰ सि॰ । अगा° हं॰ त॰ ॥ ७ चिक्खसो° हं॰ त॰ विना ॥

दिस्सते सद्दरूवेण णिस्संचति पुणो पुणो । विणिट्ठुते णिस्ससति ओट्ठं णिवोल्लए तधा ॥ १३५० ॥
[1]णिल्लिलेउ जिब्भं तु मुट्ठिं वा वि पमुचति । विक्खिवे अंगुलीओ य दंताणं च विसोधइ ॥ १३५१ ॥
हत्थ-पादं पसारेति सिरेण भुमकाहि य । आकारेण विसज्जेति णीहारमिति णिद्दिसे ॥ १३५२ ॥
चलाणं बाहिराणं च वज्झवज्झाणमेव य । सुभा-ऽसुभफलं जं जं णीहारेसु वि तं वदे ॥ १३५३ ॥
5 णीहारेति णीहरति त्ति अवकड्ढति णिकड्ढति । णिसारेति [णिसरति] णिक्खुरसति विकड्ढति ॥ १३५४ ॥
णिच्छुद्धे णिग्गते छुद्धे उकड्ढिय विकड्ढिते । अवकड्ढिते पराहूते पराजित परम्मुहे ॥ १३५५ ॥
णिस्सारिते णिरसरिते अवचत पसारिते । विप्पसारित वाविद्धे उव्वेल्लिव पसारिते ॥ १३५६ ॥
तधा विक्खिण्ण णिक्खिण्णे विप्पकिण्णे विणासिते । अवकिण्णे परिसीते अवमाणित विमाणिते ॥ १३५७ ॥
चल-वज्झ-बाहिरा [चि]र ये सद्दा पुव्वकित्तिता । ते विमे य उदीरंता णीहारसमका भवे ॥ १३५८ ॥ छ ॥

10 ## [८२-८५ दस आहाराहारा आहारणीहारा णीहाराहाराइ]

आहारियम्मि आहारे आहारो जति जायति । एतं आहारमाहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३५९ ॥
आहारियम्मि आहारे णीहारो जति जायति । एतं आहारणीहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३६० ॥
आहारितम्मि णीहारे आहारो जति जायति । एतं णीहारआहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३६१ ॥
आहारियम्मि णीहारे णीहारो जति जायति । एतं णीहारणीहारं वियाणे अंगचिंतओ ॥ १३६२ ॥
15 बहुधो आहार-णीहारा मिस्सका जति जायति । तमाहारं जहित्ता णं अण्णमाधारए पुणो ॥ १३६३ ॥
पुरिमेण पुरिमं जाणे पच्छिमेण य पच्छिमं । वत्तमाणम्मि आहारे वत्तमाणं वियागरे ॥ १३६४ ॥
पुण्णामम्मि य आहारे पुरिसत्थं वियागरे । थीणामे य थिया अत्थं णपुंसं च णपुंसके ॥ १३६५ ॥
उत्तमम्मि य आहारे उत्तमत्थं वियागरे । मज्झिमे मज्झिमं अत्थं हीणे हीणत्थमादिसे ॥ १३६६ ॥
आहारम्मि य आहारे पसत्थं अत्थमादिसे । णीहारम्मि य आहारे अत्थं पुव्वं वियागरे ॥ १३६७ ॥
20 ॥ णीहारपडलं सम्मत्तं ॥ ८१-८५ ॥ छ ॥

[८६-९५ दिसापडलं]

[८६ सोळस पुरत्थिमाणि]

पुरत्थिमाणि वक्खामि सोलसंगे जधा तधा । अणागताणि [10]जाणेव पसत्थं तत्थऽणागतं ॥ १३६८
अत्थलाभं जयं वर्द्धिं पुच्छे एताणि आमसं । पुरत्थिमं आगमिस्सं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३६९ ॥
25 आगामिमद्दं पुरिसं एस्सकल्लाणमादिसे । [11] तहाऽऽगमेसमद्दं च पयमाणं पि णिद्दिसे ॥ १३७० ॥
पुरिसस्सऽत्थविद्धं पुच्छे बूया तं पुरत्थिमं । थिआ अत्थविद्धं पुच्छे तं पि बूया पुरत्थिमं ॥ १३७१ ॥
तहाऽऽगमेऽमद्दा य गब्भिणीणं पुरत्थिमा । पुरत्थिमं व भातूगं कण्णा तु लभते वरं ॥ १३७२ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज गब्भमागामिमादिसे । [11] गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ १३७३ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । फलं तस्स य कम्मस्स आगामी लभते णरो ॥ १३७४ ॥
30 पवासं परिपुच्छेज्ज चिरा तु गमणं वदे । पोमित्तस्स सग्गमस्स चिरेणाऽऽगमणं वदे ॥ १३७५ ॥
वंभं वपं वापि मधुं अणावुट्ठिं अपातवं । सस्सस्स वा वि वापत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३७६ ॥

---

१ °णिट्ठुमे णि° हं० त० ॥ २ णिल्लेणेतु जि° हं० त० विना ॥ ३ विक्खेरे हं० त० विना ॥ ४ णिरास्सति हं० त० ॥ ५ णिच्छुद्धे णिग्गते छुद्धे हं० त० विना ॥ ६ णिस्सरति हं० त० सि० ॥ ७ विक्खित्त णिक्खित्ते हं० त० विना ॥ ८-९ वियारे हं० त० विना ॥ १० जाणि य हं० त० विना ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गत. पयसन्दर्भ. हं० त० एव वर्तते ॥

वद्धस्स मोक्खं खेमं च संधिं च जयमेव य । आरोगं [1]जीवितं व त्ति वस्सारत्तो य उत्तमो ॥ १३७७ ॥
वस्सारत्तं च पुच्छेज वूया वासमणागतं । पुरत्थिमे महामेहा महावासं करिस्सति ॥ १३७८ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्जा अत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारइत्ता य वूया णट्ठं पुरत्यतो ॥ १३७९ ॥
[2]कतिमिं दिसं ति वा वूया पुरिमं ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धण्णं तेवं वियागरे ॥ १३८० ॥
जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । [[3]जं किंचि अप्पसत्थं च सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३८१ ॥] 5
उवातं णिद्दिसे धण्णं दिसं वूया पुरत्थिमं । साधारणं वदे अत्थं थी-पुमंसस्सऽणागतं ॥ १३८२ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । एवमेतेसु पुरिमेसु सव्वं वूया अणागतं ॥ १३८३ ॥
अणागतेसु सदा जे पुव्वं संपरिकित्तिता । ते चेव सदा पुरिमाणं जाणे तुल्ले फलेण तु ॥ १३८४ ॥

॥ पुरत्थिमाणि समत्ताणि ॥ ८६ ॥ छ ॥

[८७ सोलस पच्छिमाणि] 10

सोलस पच्छिमाणंगे अतिवत्ताणि जाणि तु । ताणि साधारणे अत्थे अतीते णर-णारिणं ॥ १३८५ ॥
अत्थलाभं जयं वा वि वद्धिं वा जति पुच्छति । पच्छतो य समत्थि त्ति सेसं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३८६ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज भातूणं पच्छिमो भवे । इत्थिं च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे ॥ १३८७ ॥
[4]पुरिसत्थविधं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे । थियाँ अत्थविद्धं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे ॥१३८८॥
कण्णं च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे । पच्छिमं चेव भातूणं खिप्पं च लभते वरं ॥ १३८९ ॥ 15
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज वियाणं पच्छिमं वदे ॥ १३९० ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज पच्छा कम्मं वियागरे । अप्पफलं बहुकेसं णराणं कम्ममादिसे ॥ १३९१ ॥
पवासो[5] पुच्छिते णत्थि पोसितो [6]पच्छओ गओ । णिरत्थकं च तं वूया चिराया‍ऽऽगमणं वदे ॥ १३९२ ॥
बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुचति । भयं खेमं च संधिं वा विग्गहो य णिरत्थको ॥ १३९३ ॥
रोगं मरणमणावुट्ठिं आतयं सस्सवापदं । विप्पयोगं विवादं च सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९४ ॥ 20
जीवितं जयमारोग्गं वस्सारत्तं सवासकं । णद्धिकं सस्ससंपत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९५ ॥
कतमिं दिसं ति वा वूया पच्छिमं ति वियागरे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णं ति वियागरे ॥ १३९६ ॥
अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९७ ॥
वण्णतो कालगं वूया पच्छिमं दिसमादिसे । अप्पसत्थं वदे अत्थं अतीतं णर-णारिणं ॥ १३९८ ॥
अतिवत्तेसु आदेसो जधा दिट्ठो सुभा-ऽसुभो । पच्छिमेसु वि एमेव फलं वूया सुभा-ऽसुभं ॥ १३९९ ॥ 25
अतिवत्तेसु जे सदा पुव्वं तु परिकित्तिता । [7]पच्छिमेसु वि एमेव तुल्लत्थे फलतो वदे ॥ १४०० ॥

॥ पच्छिमाणि ॥ ८७ ॥ छ ॥

[८८ सत्तरस दक्खिणा]

जाणेय दक्खिणाणंगे वाणेव [8]दक्खिणाणि तु । पुरिसत्थे पसत्थानि णिद्दिसे दस सत्त य ॥ १४०१ ॥
सामोयातं वदे [9]वण्णं दक्खिणं दिसमादिसे । पचमाणं सुभं अत्थं पुरिसाणं पवेदये ॥ १४०२ ॥ 30
दक्खिणेसु जधा दिट्ठो सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । दक्खिणेसु वि एमेव फलं वूया सुभा-ऽसुभं ॥१४०३॥छ॥

---

१ जीवितं अत्थि वस्सा° हं० त० ॥ २ कतिमे हं० त० ॥ ३ चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतः पाठः ग्रन्थानुसारेणानुसन्धितोऽस्ति ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्त्तते ॥ ५ °सो पच्छिमे णत्थि हं० त० ॥ ६ पच्छितो गतो हं० त० विना ॥ ७ पच्छिमेय तु एमेय सप्र० ॥ ८ दक्खिणेण तु से ३ पु० ॥ ९ घण्णं हं० त० ॥

[८९ सत्तरस उत्तरा]

जाणेव होंति वामाणि ताणेव उत्तराणि तु । थीणं कल्लाणभागीणं णराणं ण प्पसस्सते ॥ १४०४ ॥
सामं कालं वदे वण्णं उत्तरं णिद्दिसे दिसं । वत्तमाणं सुमं अत्थं पमदाणं पवेदये ॥ १४०५ ॥
जधा वामेसु सव्वेसु अत्थो ⊲ दिट्ठो सुभा-ऽसुभो ⊳ । उत्तरेसु वि एमेव फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४०६ ॥
वामभागेसु जे सद्दा पुव्वमेव तु कित्तिया । उत्तरेसु वि ते चेव सद्दे तुल्लफले वदे ॥ १४०७ ॥ छ ॥

[९० सत्तरस दक्खिणपुरच्छिमा]

पुरिमाणं दक्खिणाणं च मज्झे अंगाणि जाणि तु । पुव्वदक्खिणभागाणि पसत्थाणि वियागरे ॥ १४०८ ॥
अत्थलाभं जयं वा वि वद्धिं च परिपुच्छति । साधारणं वदे अत्थं फलतो पुरिमदक्खिणं ॥ १४०९ ॥
पुरिसं इत्थिं च अत्थं च पुच्छे एताणि आमसं । पुरिमाणं दक्खिणाणं च फलं वामिस्समादिसे ॥ १४१० ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य खिप्पं विज्जेहिते त्ति य ॥ १४११ ॥
गब्भमत्थि त्ति जाणीया गब्भिणी दारकम्मि य । खिप्पं पजायते णारी कम्मं साधारणं वदे ॥ १४१२ ॥
पवासो पुच्छिते सफलो पउत्थं पुव्वदक्खिणं । दिसं गतो त्ति जाणीया सधणो खिप्पमेहिति ॥ १४१३ ॥
बंधं भयं विग्गहं रोगं मरणं आतवं तधा । अवुट्ठिं सस्सवापत्ती सस्सं(सव्वं) णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४१४ ॥
बंद्धस्स मोक्खं खेमं च संधिं च जयमेव य । आरोग्गं जीवितं चेव उग्गाहं वाधितस्स य ॥ १४१५ ॥
वस्सारत्तं च वासं च [१] सेव्वं नट्ठस्स दंसणं । जहा सित्तं सद्दा पत्थुं [२] सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४१६ ॥
कतमं दिसं ति वा बूया वदे पुरिमदक्खिणं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा वदे उक्कट्ठमज्झिमं ॥ १४१७ ॥
जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४१८ ॥
उगतं णिद्दिसे वण्णं दिसं पुरिमदक्खिणं । अत्थं अणागतं सव्वं पसत्थं णिद्दिसे सता ॥ १४१९ ॥
अणागतेसु जे सद्दा जे सद्दा दक्खिणेसु यं । पुव्वदक्खिणसद्दाणं ते सद्दे णिद्दिसे समे ॥ १४२० ॥ छ ॥

[९१ सत्तरस दक्खिणपच्चत्थिमा]

दक्खिणाणं च सव्वेसिं पच्छिमाण य अंतरा । अंगा ण प्पसस्संते जधा अत्थो णपुंसको ॥ १४२१ ॥
अत्थलाभं जयं वद्धिं एताणि जति पुच्छति । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४२२ ॥
अधण्णं दूभगं वा वि अणवज्जं णरं वदे । एवमेव य णारीणं णिरत्थं अत्थमादिसे ॥ १४२३ ॥
गब्भं पुच्छे ण भवति गब्भिणी अणये भतं । कम्मपुच्छाय णिद्देसे णिरत्थं कम्ममादिसे ॥ १४२४ ॥
णिरत्थकं पवासं च पोसियं च णिरत्थकं । गतं अवरदक्खिणतो चिरकाले य णिद्दिसे ॥ १४२५ ॥
बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुच्चति । बद्धस्स यावि मुत्तस्स पवासो खिप्पमेव उ ॥ १४२६ ॥
खेमं पुच्छे ण भवति भयं पुच्छे भविस्सति । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गहो बहुसो भवे ॥ १४२७ ॥
जीवितं जयमारोग्गं उग्गाहं आतुरस्स य । वस्सारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं ॥ १४२८ ॥
रत्तं पत्थुं धणं धण्णं थाणमिस्सरियं जसं । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४२९ ॥
पराजयमणावुट्ठिं रोगं मरणमातवं । सस्सस्स वा वि आवत्ति णत्थि त्तेवं वियागरे ॥ १४३० ॥
कतमं दिसं ति वा बूया वदे अवरदक्खिणं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा अधण्णं ति वियागरे ॥ १४३१ ॥
सामोदातं वदे वण्णं दिसं अवरदक्खिणं । अप्पमत्थं वदे अत्थं अतीतं पारणारिणं ॥ १४३२ ॥
दक्खिणेसु य जे सद्दा अतीतेसु य जे भवे । दक्खिणापरसद्दाणं ते सद्दे णिद्दिसे समे ॥ १४३३ ॥ छ ॥

१ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गत पाठ. हं० त० नास्ति ॥ २ परमदक्खिणं हं० त० ॥ ३ च वय° सप्र० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ धण्णं हं० त० ॥ ६ य त्ति अ° हं० त० ॥

[९२ सत्तरस उत्तरपच्चत्थिमा]

पच्छिमाणं च सव्वेसिं उत्तराणं च अंतरा । अप्पसत्था भवंतेते जधा अत्थे णपुंसके ॥ १४३४ ॥
आदेसो तु जधा दिट्ठो [पुव्वं] दक्खिणपच्छिमे । तधेव सव्वमादेसं बूया **उत्तरपच्छिमे** ॥ १४३५ ॥
वण्णतो कालतं बूया दिसं च अवरोत्तरं । अप्पसत्थं च णारीणं अत्थं बूया अतिच्छियं ॥ १४३६ ॥ छ ॥

[९३ सत्तरस उत्तरपुरत्थिमा]

5

उत्तराणं च जे अंगा **पुरिमाणं** च अंतरा । थीणामत्थे पसत्था तु विण्णेया दस सत्त य ॥ १४३७ ॥
पुव्वदक्खिणतो दिट्ठो जधा अत्थो सुभा-ऽसुभो । तधेव पुव्वुत्तरत्तो सव्वं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४३८ ॥
सामकालं वदे वण्णं दिसं च पुरिमुत्तरं । अणागवं सुभं अत्थं णारीणं[1] तं पवेदये ॥ १४३९ ॥
अणागता य जे सद्दा जे य थामेसु कित्तिता । **पुरिमुत्तरसद्दाणं** एते सद्दे समे वदे ॥ १४४० ॥ छ ॥

[९४ दुवालस उड्ढभागा]

10

पुरिमेण उच्चं जाणेज्जो पच्छिमे[2] ह्रस्समादिसे । वामदक्खिणतो वा वि चतुरस्सं वियागरे ॥ १४४१ ॥
पुरिमेण थूलं जाणेज्जो पच्छिमेण किसं वदे । समोवयितगत्तं च वामदक्खिणतो वदे ॥ १४४२ ॥
उल्लोकितम्मि सव्वम्मि आमट्ठम्मि सिरम्मि य । उम्मज्जिताभिमट्ठे य दूरुम्मट्ठे तधेव य ॥ १४४३ ॥
उट्ठिते ऊसिसिते यावि उक्खित्तुव्वरितम्मि य । उैण्णते उण्णमंते य सद्दे आकासकम्मि य ॥ १४४४ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं आकासपडिरूवितं । एतम्मि सद्दरूवम्मि दिसं उड्ढं वियागरे ॥ १४४५ ॥ छ ॥

15

[९५ तेरस अधोभागा]

ओलोकिते य सव्वम्मि अवमट्ठा-ऽपमज्जिते । णिम्मज्जिते य णिम्मट्ठे सव्वमोसारितम्मि य ॥ १४४६ ॥
णिक्खित्ते णिहिते यावि ओतिण्णोतारितम्मि य । उम्मट्ठे ये णिवुड्ढे य सव्वभूमिगतम्मि य ॥ १४४७ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं अधोभागं विधीयते । एतम्मि सद्दरूवम्मि दिसं बूया तु **हेट्ठिमं** ॥ १४४८ ॥
॥ दिसापडलं ॥ ८८–९५ ॥ छ ॥

20

[९६–९९ पसण्णा-ऽपसण्णपडलं]

[९६ पण्णासं पसण्णा]

अब्भंतरे य उम्मट्ठे **पसण्णते** वियागरे । अब्भंतरत्थेण वदे विसिट्ठतरकं फलं ॥ १४४९ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४५० ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुद्धभागी य सोमोईवहुलो भवे ॥ १४५१ ॥

25

इत्थिं च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुद्धभागी य सम्मोईवहुला भवे ॥ १४५२ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे सम्मोईसु भविस्सइ । ☞ थियां अत्थविहं पुच्छे सम्मोई य भविस्सइ ॥ १४५३ ॥ ☜
कण्णं च परिपुच्छेज्जा धण्णा विज्जिहिते लहुं । रण्णो य अब्भंतरगं भत्तारं सा लभिस्सति ॥ १४५४ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्जा जणये पुत्तमुत्तमं ॥ १४५५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्जा रण्णो अब्भंतरं वदे । महाजणस्स णिद्देसं करिस्सति य कम्मणा ॥ १४५६ ॥

30

पवासं परिपुच्छेज्जा सफलो त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्जा संघणो खिप्पमेहिति ॥ १४५७ ॥

१ °णं च प° हं॰ त॰ ॥ २ °मेरस्स° हं॰ त॰ ॥ ३ ओणते हं॰ त॰ ॥ ४ °सजम्मि हं॰ त॰ ॥ ५ या णिवुड्ढे य हं॰ त॰ ॥ ६ सद्दत्थूयम्मि हं॰ त॰ ॥ ७ सोमाई° सं ३ पु॰ ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ९ संघण्णो हं॰ त॰ विना ॥

वंधं भयं विग्गहं [च] रोगं मचु य वासकं । अपातयं सरसवापत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४५८ ॥
बद्धस्स मोक्ख णासं विजयाऽऽरोग्गं च जीवितं । आतुरस्स समुट्ठाणं वस्सारत्तं सवासकं ॥ १४५९ ॥
णट्ठस्स दंसणं वा वि सरससंपत्तिमुत्तमं । मित्ति सम्मोइ संपीति सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १४६० ॥
जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥१४६१॥
5 सव्वमब्भंतरत्थं च पुण्णामत्थो य जो भवे । जधुत्तमणुगंतूणं पसण्णेसु वि[1] तं वदे ॥ १४६२ ॥ छ ॥

[९७ पण्णासं अप्पसण्णा]

अब्भंतरे य णिम्मट्ठे अप्पसण्णो वियागरे । अत्थहाणिं विणासं च सव्वं च असुभं वदे ॥ १४६३ ॥

णमो अरहंताणं, णमो आयरियाणं, णमो [2]ऋरिवसुत्ताणं, जे एकपदं द्विपदं बहुपदं वा विज्जामंतपयं धारयंति तेसिं णमोकारइत्ता इमं विज्जा पजोजयिस्सं, सा मे विज्जा सनिज्झतु, णमो अरहतो वद्धमाणस्स, जधा भगवती अंगदेवी
10 सहस्सपरिवारा समणं भगवंतं महावीरं पुव्विं सच्चपतिट्ठिए लोए तेणं सच्चवयणेणं सा मं अंगदेवी उवत्थातु, जधा दक्खिणस्स अद्धलोगस्स मघवं देवाणं इंदे आधिपच्चं पोरेपच्चं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी उवत्थायतु, उत्तरस्स अद्धलोगस्स ईसाणे महाराया आधिपच्चं पोरेपच्चं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी उवत्थायतु, तधेव देविंदस्स चत्तारि लोगपाला देवा य वयणेणमुपगता एतेण सच्चवयणेण अमुको अत्थो सिज्झतु त्ति । मणम्मि सिक्खिते पढितव्वा । छट्ठग्गहणी एस विज्जा ॥

15 णपुंसकाणं जो अत्थो बाहिरत्थो य जो भवे । तं सव्वं अप्पसण्णेसु तधेव फलमादिसे ॥ १४६४ ॥ छ ॥

[९८-९९ पण्णासं अप्पसण्णपसण्णा पसण्णअप्पसण्णाणि य]

अप्पसन्ने पसन्ने य पण्णासं चेव णिद्दिसे । अब्भंतरा संविमट्ठा ण ते पढमकप्पिता ॥ १४६५ ॥
पसन्ने अप्पसन्ने य पण्णासं चेव णिद्दिसे । अब्भंतरा तु अपमट्ठा अप्पसन्ना भवंति ते ॥ १४६६ ॥
अब्भंतरा तु पण्णासं आमट्ठा जे अवत्थिता । पैसत्थे ते वियाणेज्जा पसन्नतरका हि ते ॥ १४६७ ॥
20 अब्भंतरा य पण्णासं विमट्ठा जे पुणो पुणो । अप्पसत्थे वियाणीया अप्पसॅण्णतरा[5] हि ते ॥ १४६८ ॥
॥ पसण्ण-अप्पसण्णाणि ९६-९९ ॥ छ ॥

[१००-३ वामपडलं]

[१००-१०३ सोलस वामा पाणहरा इच्चाइ]

अच्छीणि कन्ना संखा य हितयं णाभी कडी तधा । पस्सं संधितला सव्वे वामा पाणहरा भवे ॥ १४६९ ॥
25 हियय १ बाहुसंधी य ३ कक्खा ५ हत्था ७ ककाडिका ८ ।
गोप्फा १० अक्खीणिकण्णा य १२ संखा १४ पादा य १६ सोलस ॥ १४७० ॥
एते तु पीलिता सव्वे वामा धणहरा भवे । अपीलिता य उम्मट्ठा सोलसेव धणाहरा ॥ १४७१ ॥
णपुंसका तु णिम्मट्ठा वामा सोवद्दवा मता । णपुंसके हि पावतरं फलं तेहि वियागरे ॥ १४७२ ॥ छ ॥
अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० वाला ३० णिम्मज्जिता तधा । तीसं तु साहा वामे अंगे एते वियागरे ॥ १४७३ ॥
30 संखावामेसु एतेसु धीणा चूया उवद्दवं । बहुसाधारणं अत्थं एतप्पचयमादिसे ॥ १४७४ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज बहुसाधारणं वदे । महाजणं च पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७५ ॥
इत्थिं च परिपुच्छेज्ज बहुसाधारणं वदे । महाजणं वा पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७६ ॥
पुरिसमज्झत्थविधं पुच्छे तं साधारणमादिसे । थिया अत्थविधं पुच्छे तं पि साधारणं वदे ॥ १४७७ ॥

---

१ °त्थं जयं भवे हं० त० ॥ २ वि यं वदे हं० त० ॥ ३ इरिकमुत्ताणं सं ३ पु० । इरिकपुत्ताणं सि० ॥ ४ पसण्णो य पिया° हं० त० ॥ ५ °सण्णतरा हं० त० विना ॥ ६ अत्र अक्खिणी कण्णा च इति भिन्नपदविधाने अष्टादशाङ्गसंख्या भवति, अनिष्टा चेयं, अतः 'अक्खिणी कण्णा' इत्येवं सम्भाव्य अक्खीणिकण्णा इति एकपदत्वेन स्थापितमस्ति, अत्रार्थे तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिग्घं अभिवरा भवे । महाणपेसंकं वा वि समिद्धं लंभते वरं ॥ १४७८ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्जा बहुसो तु पजायति । गब्भिणीं परिपुच्छेज्जा वामणं जणयिस्सति ॥ १४७९ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्जा बहुसाधारणं वदे । महप्फलेण कम्मेण तोसेहिति महाजणं ॥ १४८० ॥
पवासं परिपुच्छेज्जा भविस्सति बहुप्फलो । पोसितं परिपुच्छेज्जा लभिस्सति बहुं धणं ॥ १४८१ ॥
वंधं च परिपुच्छेज्जा बहुसो बज्झति त्ति य । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्जा खिप्पं मुचिस्सते त्ति य ॥ १४८२ ॥ 5
भयं च परिपुच्छेज्जा बहुसो त्ति वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्जा चिरं खेमं भविस्सति ॥ १४८३ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्जा साधारणमादिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज महाणेण तु विग्गहो ॥ १४८४ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयिस्सति महाजणं । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गं सउवद्दवं ॥ १४८५ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज बहुरोगो भविस्सति । मरणं च परिपुच्छेज्ज परिकिट्ठो मरिस्सति ॥ १४८६ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज सरोगं जीवितं चिरं । आबाधितं च पुच्छेज्जा समुट्ठाणं चिरा भवे ॥ १४८७ ॥ 10
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्जा णत्थि त्तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्जा बहुमेघं वियागरे ॥ १४८८ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि त्तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज चिरं वासं तु णिद्दिसे ॥ १४८९ ॥
☞ सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि त्तेवं वियागरे । ☜ सस्सस्स संपयं पुच्छे विचित्ता सस्ससंपया ॥१४९०॥
अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १४९१ ॥
तधा खेत्तं तधा वत्थुं सव्वं साधारणं वदे । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा तं पि साधारणं वदे ॥ १४९२ ॥ 15
साधारणम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले य देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १४९३ ॥
पुरिसे चतुप्पदे या वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १४९४ ॥
पाणे या भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १४९५ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ १४९६ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ १४९७ ॥ 20

॥ यामा सम्मत्ता ॥ १००–१०३ ॥ छ ॥

[१०४ एकारस सिवा]

णिडालं १ दस णिद्धाणि ११ रुम्मट्ठाणि जया भवे । एकारस सिवा एते पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १४९८ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । विसिट्ठतरगं अत्थं तधा बूया सिवेसु वि ॥ १४९९ ॥ छ ॥

[१०५ एकारस थूला] 25

उंभो ऊरु २ बरो ३ पट्ठी ४ सिरं ५ गंडा ७ थणा ९ फिओ ११ ।
एते थुला पसस्संते थुलं वऽत्थं वियागरे ॥ १५०० ॥
एतम्मि आमसं पुच्छे पुरिसं थीं णपुंसकं । उदगेचर परीसप्पं मच्छ पक्खि चतुप्पदं ॥ १५०१ ॥
कीडं किविल्लगं वा वि जं चऽण्णं जंगलं भवे । सव्वथुलं वियाणीया थुलं वऽत्थं वियागरे ॥ १५०२ ॥
सजीवं जीवमाधारे सजीवमिति णिद्दिसे । थुलो किसो त्ति वा बूया थुलो त्तेवं वियागरे ॥ १५०३ ॥ 30
अप्पं बहुं ति आहारे बहु त्तेवं वियागरे । समे सद्दे य जाणेज्जा थुला जे मणिते मता ॥ १५०४ ॥

---

१ °पेसिकं हं० त० ॥ २ महाफलेण हं० त० ॥ ३ च बहुपु° हं० त० ॥ ४ सिग्घं हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतं पूर्वार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ६ °रणम्मि य हं० त० ॥ ७ उभो हुंरुदरो हं० त० ॥ ८ °ह्लो पदं हं० त० ॥

थूलं वेट्टं यरढं ति परिवूढं ति या पुणो । पीणं उवचितं व त्ति पीवरं मांसलं ति वा पुणो ॥ १५०५ ॥
महासारं महाकायं अतिकायं ति या पुणो । ²मंढं ति वहलं व त्ति पुत्थव्वा मेदितं ति [वा] ॥ १५०६ ॥
रूढं ति समतुवं ति रद्धमातं ति या पुणो । ³सम्मत्तं अतिपुण्णं ति अव्वंगं ति व जो वदे ॥ १५०७ ॥
जे यऽन्ने एवमादीया पज्जया थुल्लसंसिता । तस्स संकित्तणासद्दा ⁵तं थुल्लसममादिसे ॥ १५०८ ॥ छ ॥

5 [१०६ णव उवथूला]

जंघा २ सिरो ३ ऽधरा ५ बाहू ७ हत्थपादा तधेव य ९ । उवथूलाणि एताणि उम्मट्ठाणि पसस्सते ॥ १५०९ ॥ छ ॥

[१०७ पणुवीसं जुत्तोपचया]

अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० णिडालं २१ चिबुकोट्ठयो २४ ।
णासा य २५ जुत्तोपचया जधुत्तेणं वियागरे ॥ १५१० ॥ छ ॥

10 [१०८–१०९ वीसं अप्पोवचया वीसं णातिकिसा य]

ते चेव अप्पोवचया ते य णातिकिसा मता । अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० जधुत्तेण वियागरे ॥ १५११ ॥ छ ॥

[११० सत्तरस किसा]

गोप्फा २ ⁶जण्णुगसंधी य ४ मणिबंधा ६ उवत्थगा ७ ।
[......] संधी ९ भुमासंधी ११ संखा १३ पट्टी य १४ कुकुदा १५ ॥ १५१२ ॥

15 अवट्टू १७ सत्तरसा उत्ता किसे एते वियाणिया । चलं वन्नं मुदं यत्थं ⁷कसं जत्तं वियागरे ॥ १५१३ ॥
सुद्धं ⁸किसं ति या बूया ⁹कसं वेयं वियागरे । सब्वे सद्दे य जाणेज्जो ¹⁰किसा ये सणिके मता ॥ १५१४ ॥
¹¹कसं परिकसं य त्ति अणुं ति अणुकं ति या । दुब्बलो त्ति किसो व त्ति वहुत्तो ति¹² य जो वदे ॥ १५१५ ॥
णिम्मंसको त्ति या बूया तधा अट्ठिकलेवरं । अट्ठिकं ¹³धम्मणद्धं ति तधा अट्ठिकसंकला ॥ १५१६ ॥
¹⁴सुक्को त्ति य जो बूया णिस्सुको त्ति य जो वदे । ¹⁵ओझीणं परिझीणं ति मातं ति ¹⁶मलितं ति या ॥ १५१७ ॥

20 जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया किससंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं किसेहिं सममादिसे ॥ १५१८ ॥ छ ॥

[१११ एक्कारस परंपरकिसा]

परंपरकिसा उत्ता ¹⁷सेल्लका २ जाणुक ४ ढेङ्किका ६ ।
कोप्परा ८ केसे ९ रोम(रोम) १० इणं ११ अप्पसत्था भवंति ते ॥ १५१९ ॥

थूलेसु थूलमत्थं उवथूले ¹⁸अणुत्तरं । जुत्तोपचये जुत्तत्था ततो बूया ¹⁹अणुत्तरं ॥ १५२० ॥ छ ॥

25 [११२ छव्वीसं दिग्घा]

बाहू २ पबाहू ४ जंघो ६ रु ८ सोलसंगुलिओ २४ तधा ।
केसे २५ पट्टी य २६ जाणीया दीहाणेवाणि अंगवी ॥ १५२१ ॥
दीहाणेताणि छव्वीसं उम्मट्ठाणि जता भवे । पुच्छितम्मि पसस्संते ²¹दीहेणममिणिद्दिसे ॥ १५२२ ॥

---

१ यद्दं यरद्दं ति परिरुट्टं हं० त० ॥ २ मंदं ति बहुलं य त्ति पुच्छया मे° हं० त० ॥ ३ संसत्तं सप्र० ॥ ४ °पुत्थं ति हं० ॥ ५ तं थुल्लं सम° सं ३ लि० । तं थूलं सम° हं० त० ॥ ६ जत्तुग° हं० त० विना ॥ ७ कस्सं जंते वि° हं० त० । कंसं जंतं वि° सि० ॥ ८ किसं हं० त० विना ॥ ९ कसा हं० त० ॥ १० कस परिकस ब्व सप्र० ॥ ११ अण्णं ति अणकं ति हं० त० ॥ १२ त्ति दिया मो वदे हं० त० ॥ १३ धम्मणिट्ठं सं ३ पु० । धम्मणट्ठं हं० त० ॥ १४ सुक्खलो त्ति य जो बूया णिस्सुक्खो त्ति हं० त० विना ॥ १५ ओरीणं हं० त० । ओढीणं सि० ॥ १६ मलिन त्ति हं० त० ॥ १७ सुल्लका हं० त० विना ॥ १८ कोसलोगहणं हं० त० ॥ १९–२० अणंतरं हं० त० विना ॥ २१ दुच्छेण हं० त० विना ॥

दीहो पंथो दीहमायुं दीहकालं च णिद्दिसे । दीहं थीपुमंसव्वमेत्ती पेम्मं च स णिद्दिसे ॥ १५२३॥
दीहं च पीतिसंजोगं संधी जोगं च णिद्दिसे । समे सद्दे य जाणेज्जा दीहा जे मणिके मता ॥ १५२४ ॥
दीहँसुचं महंतं ति रज्जूको रण्हको त्ति वा । केऔ अंछणिका व त्ति वत्त त्ति अहि त्ति वा ॥ १५२५ ॥
वंसो खलु धयो व त्ति जुगमत्यो त्ति या पुणो । मुसलं दंडको लट्ठी णारायो तोमरो त्ति वा ॥ १५२६ ॥
चाप त्ति हडिका व त्ति कोंतं कंडं ति वा पुणो । असिलट्ठी तरवच त्ति धेणुभाग त्ति वा पुणो ॥ १५२७ ॥ 5
जे यऽण्णे एवमादीया पायया (पज्जया) दिग्घसंसिठा । तेसिं संकित्तणासद्दा ते दिग्घसमका भवे ॥ १५२८ ॥

॥ दिग्घा[णि] सम्मत्ताणि ॥ ११२ ॥ छ ॥

[११३ छव्वीसं जुत्तप्पमाणदिग्घा]

भुम २ ऽक्खि ४ णासा ६ जत्तुणि ८ मेंढ ९ त्थविका ११ सिरो १२ ऽधरा १४ ।
जिब्भं १५ गुट्ठग १९ लोमाणि २० पाणिलेहा २६ तवेव य ॥ १५२९ ॥ 10
जुत्तप्पमाणदीहा तु एते छव्वीसमाहिता । अपीलिता अणुम्मट्ठा पुच्छितम्मि पसस्सवे ॥ १५३० ॥ छ ॥

[११४ सोलस हूस्सा किंचि दिग्घा]

हूस्साँ य किंचि दिग्घा य सोलसंगे वियाहिया । पुरिमा किंचि उम्मट्ठा पुच्छितम्मि पंसस्सते ॥ १५३१ ॥ छ ॥

[११५ सोलस हूस्सा]

हूस्सा य सोलसंगम्मि णिम्मट्ठा तु पुरत्थिमा । पुच्छिते ण प्पसस्संते हूस्सं चऽत्थ वियागरे ॥ १५३२ ॥ 15
दीहेसु जं फलं वुत्तं हूस्सं हूस्सेसु तं वदे । समे सद्दे य जाणेज्जो हूस्सा जे मणिके मता ॥ १५३३ ॥
रहस्सं मडहकं यत्ति संखित्तं खुड्डितं ति वा । रुद्धं ति सण्णिरुद्धं ति संपीलितं ण पीलितं ॥ १५३४ ॥
संपिंडितं पेंडितं ति सन्नद्धं सन्निकासियं । अप्पं थोवं ति किंचि त्ति अतिथोवं ति वा पुणो ॥ १५३५ ॥
ओकुंडितं संहितं ति तधा संवेलितं ति वा । ओसारितं ति णिम्मट्ठं अवमट्ठाऽपमज्जियं ॥ १५३६ ॥
जे यऽन्ने एवमादीया पायया(पज्जया) हूस्ससंसिता । 20
तेसिं संकित्तणासद्दा ते हूस्ससमका भवे ॥ १५३७ ॥ छ ॥

[११६ दस परिमंडला]

मत्थगो १ थाहुसीसाणि ३ जाणूसिरसाणि ते तथा ५ ।
थणा ७ णाभी ८ फिओ चेव १० दसेते परिमंडला ॥ १५३८ ॥
सिरं १ ललाट २ गंडा य ४ संखे ६ कन्ने य ८ करतले १० । केयि एते वयसंति दसेव परिमंडले ॥ १५३९ ॥ 25
एते सव्वे पसस्संति उम्मट्ठा परिमंडला । परिमंडलसद्दे य तुल्लत्थे चवधारए ॥ १५४० ॥
मंडलं ति व जो बूया परिमंडलमेव वा । अद्दागमंडलं व त्ति अधवा मंडलस्सति ॥ १५४१ ॥
णक्खत्तमंडलं च त्ति ☞ अधवा जोइसमंडलं । आदिच्चमंडलं य त्ति ☜ अधवा चक्कमंडलं ॥ १५४२ ॥
सभयमंडलं य त्ति तवेव रिसिमंडलं । जं मंडलं ति वा बूया अधवा चक्कमंडलं ॥ १५४३ ॥

---

१ °मायं हं० त० विना ॥ २ संधं योगं हं० त० विना ॥ ३ दीहं मुधं महत्तं ति सप्र० ॥ ४ रज्जको हं० त० ॥ ५ केसा अं° हं० त० ॥ ६ ययो सप्र० ॥ ७ °मच्छो त्ति हं० त० विना ॥ ८ त्ति कायकं ति हं० त० ॥ ९ धर्मभाग हं० त० ॥ १० अण्णे हं० त० ॥ ११ पाडोया हं० त० ॥ १२ °गुट्ठंगरोमाणि हं० त० ॥ १३ रस्सा य यीयि हं० त० ॥ १४ अकुंडितं हं० त० ॥ १५ ओसारितं सं ३ पु० ॥ १६ हुस्स हं० त० ॥ १७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

[1]संक्खमंडलके य त्ति तधा मंडलेको त्ति वा । णापुण्णमंडलं व त्ति अधवा अट्ठमंडेलं ॥ १५४४ ॥
मंडलासं ति वा बूया अधवा छेत्तमंडलं । उवलेवमंडलं व त्ति किमिमंडलिकारिका ॥ १५४५ ॥
पंचमंडलिको य त्ति तवेयापंचमंडलं । माकण्णीकण्णिकं व त्ति लक उद्धलक त्ति वा ॥ १५४६ ॥
तलकण्णिक त्ति वा बूया वद्धको[7] तलपत्तकं । परिहेरकं ति वलमं ति कण्णवलयकं ति वा ॥ १५४७ ॥
खेड्डकं मुंदिका य त्ति वेढको कण्णपालिको । णीपुरं ति व जो बूया कण्णुप्पलकं ति वा ॥ १५४८ ॥
पेण्णेलिक त्ति वा बूया तधा सक्कडपट्टको । तधा पल्लत्थिकापट्टो तधा अकरपट्टको ॥ १५४९ ॥
तधऽस्समंडलं य त्ति लोममंडलकं ति वा । बाहुमंडलकं व त्ति हत्थमंडलकं ति वा ॥ १५५० ॥
तधा चक्कमंडलं य त्ति वातचक्कमंडलं । झल्लरीमंडलं य त्ति लेट्टपट्टिकमंडलं ॥ १५५१ ॥
जे यऽन्ने एवमादीया लोए मंडलपज्जया । णामसंकित्तणे तेसिं परिमंडलसमं भवे ॥ १५५२ ॥ छ ॥

[११७ चोद्दस करणमंडला]

करणोपसंहिता यऽण्णे भवंति परिमंडला । [15]ते जधा होंति णायव्वा कित्तयिस्सामि तं विधिं ॥ १५५३ ॥
दक्खिणस्स य बाहुस्स मंडले १ वामकस्स य २ । एताणि[14] वे ततियं च बाहुसंघातमंडलं ३ ॥ १५५४ ॥
पत्तो चउत्थं विण्णेयं सत्थिसंघातमंडलं ४ । करे करे य चत्तारि अंगुलीमंडलाणि य १२ ॥ १५५५ ॥
हत्थाणं च दोण्हं पि अंगुट्ठेहंगुलीहि य । संघायमंडलाइं दो आलेक्खकरणेण य १४ ॥ १५५६ ॥
परिमंडलेसु पुव्वुत्तं सम्मट्ठेसु तु जं फलं । फलं अणंतरं तत्तो बूया करणमंडले ॥ १५५७ ॥
॥ परिमंडलाणि करणमंडलाणि ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ छ ॥

[११८ वीसं वट्टा]

हत्थ-पादंगुलीपेव्वा २० वीसं वट्टे वियागरे । अभिसुद्दा पसत्थंते अप्पसत्था परम्मुहा ॥ १५५८ ॥
वट्टं ति य जो बूया तधा वट्टतरं ति वा । अतिवट्टं ति वा बूया अहोवट्टं ति वा पुणो ॥ १५५९ ॥
[16]पेसाधगरुवट्टो त्ति वट्टसेलगको त्ति वा । [17]वट्टखुरो त्ति वा बूया तधा वट्टमुहो त्ति वा ॥ १५६० ॥
[......................... ।] वट्टसीसो त्ति वा बूया वट्टमत्थो त्ति वा पुणो ॥ १५६१ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं वट्टोदाहरणं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा ते वट्टसमका भवे ॥ १५६२ ॥
वट्टज्झायो ॥ ११८ ॥ छ ॥

[११९ बारस पुधूणि]

उरो १ ललाटं २ पट्टी य ३ पाद-पाणितलाणि य ७ ।
कण्णपीढाणि ९ गंडा य ११ जिब्भा य १२ पिधुलाणि तु ॥ १५६३ ॥
पुधूणि बारसेताणि सम्मट्ठाणि पसस्सते । समे सरे य जाणेज्जो जे पुधू मणिके मता ॥ १५६४ ॥
पुधुं ति पुधुलं य त्ति सेत्तं वत्युं ति वा पुणो । तंसं ति आयतं य त्ति चतुरस्सं ति वा पुणो ॥ १५६५ ॥
तरसायतं ति वा बूया चतुरंसायतं ति वा । पत्थुतं पत्थुतं य त्ति संथितं संवढियं ति वा ॥ १५६६ ॥

---

१ सक्खत° सि० । सक्खत° हं० त० ॥ २ °कसो त्ति हं० त० ॥ ३-४ °मंडला हं० त० विना ॥ ५ तथे वा हं० त० ॥ ६ °चनिर्के य त्ति लक उद्धलकड त्ति हं० त० ॥ ७ °यो तल° हं० त० विना ॥ ८ परिदेरिकं विवलमं हं० त० ॥ ९ दोगुर्क हं० त० विना ॥ १० मुदिका हं० त० ॥ ११ कण्णपालिको हं० त० ॥ १२ पण्णालिकण्णि वा सि० । पण्णालिक त्ति वा हं० त० ॥ १३ पदुधा हं० त० ॥ १४ °णि चेवततियं हं० त० ॥ १५ परंशब्देनात्र अवमागाः समाप्यन्ते ॥ १६ पसायणरुद्दयो त्ति वट्टसेल° हं० त० ॥ १७ वट्टखरो हं० त० ॥

विरित्थिन्नं वित्थतं व त्ति वत्थितं ति य जो वदे । वितते वियाणकं व त्ति तधा पत्थरियं ति वा ॥ १५६७ ॥
ये यऽण्णे एवमादीया पज्जया पुधुसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं पुधूहिं सममादिसे ॥ १५६८ ॥

॥ पुधूणि ॥ ११९ ॥ छ ॥

[१२० एकतालीसं चउरंसा]

णिडालं १ णिडालपस्साणि ३ पाद-पाणितलाणि ७ य ।
पण्हीतला ९ कडीय तला ११ तीसं मव्वंतरंगुला ४१ ॥ १५६९ ॥
चउरंसा उंकतालीसं उम्मट्ठभंतरा जधा । पुच्छितम्मि पसस्संते चतुरस्सं च णिद्दिसे ॥ १५७० ॥

॥ चतुरस्साणि ॥ १२० ॥ छ ॥

[१२१ वे तंसा]

वत्थी १ सीसं २ भवे तंसं तंसाकारो य जोऽवरो । सुज्झंगे पक्खपेहं ति वं पि तंसं वियागरे ॥ १५७१ ॥ छ ॥

[१२२ पंच काया]

थूला चेव वधूमट्ठा कायवंतो भवंतिह १ । तधा मज्झिमकाया तु उवथूला भवंतिह २ ॥ १५७२ ॥
मज्झिमाणंतरा काया जुत्तोपचया भवंतिह ३ । तधा जधण्णकाया य कसेहिं अभिणिदिसे ॥ १५७३ ॥
जधण्णतरका काया परंपरकिसा भवे ५ । एवं पंचविधे काए वियाणेज्जंगचिंतओ ॥ १५७४ ॥
थाणमिस्सरियं दव्वं लाभमायुं सुहाणि य । कालं चंऽगम्मि वि भवे कायेहेतेहिं पंचहिं ॥ १५७५ ॥
थूलेसु धूया वकठं उवथूले अणंतरं । एवं सेसेसु कायेसु धूया कच्छंतरेण तु ॥ १५७६ ॥

॥ थूलाणि (काया) ॥ १२२ ॥ छ ॥

[१२३ सत्तावीसं तणू १२४ एगवीसं परमतणू य]

पाद-पाणितला ४ कण्णा ६ जिब्भा चेव ७ णहाणि य २७ । सत्तावीसं तणू उत्ता थीणामत्थे पसस्सते ॥ १५७७ ॥
अग्गणहाणि सव्वाणि २० अग्गकेसा तवेव य २१ । एगवीसं परमतणू पुच्छिते ण प्पसस्सते ॥ १५७८ ॥
तणुकं ति व जो बूया तधा तणुकतरं ति वा । तधाऽतितणुकं व त्ति तणुकातितणुकं ति वा ॥ १५७९ ॥
पयणू ति य जो बूया तहा पयणुतरं ति वा । तधाऽति[प]तणुकं व त्ति पतणुं पतणुं ति वा ॥ १५८० ॥
तणुत्तयो तणुणहो तणुलोमो त्ति वा पुणो । तणुमज्झं ति वा बूया तधाऽतितणुको त्ति वा ॥ १५८१ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया तणुसंसिता । तेसिं संकित्तणे सदा ते तणूहिं समे वदे ॥ १५८२ ॥

॥ तणूणि ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ छ ॥

[१२५ वे अणूणि १२६ एक्के परमाणू य]

केस-लोम-णहा मंसा वे अणूणि वियीयते । पुच्छिते ण पसस्संते अणुं ति य वियागरे ॥ १५८३ ॥
अग्गकेसऽग्गलोमाणि णिम्मट्ठाणि यदा भवे । परमाणू वियाणीया पुच्छितेण प्पसस्सते ॥ १५८४ ॥
परमाणू एक्को उत्तो थूला णिम्मट्ठसंजुता । अवसेसा जे भवंतंगे ते मज्झत्थे वियागरे ॥ १५८५ ॥ छ ॥

---

१ उकतालीसं वि० । उकतीलासं सं ३ पु० ॥ २ जो णरो हं० त० ॥ ३ कण्णा..................णि य सं ३ पु० कण्णा जिब्भा ओट्ठा य अंगुली वि० ॥ ४ मूलादेसु पक्कवीसं परंपरतणू १२४ इति नाम दृश्यते ॥

[१२७ पंच हितयाणि]

पाद-पाणितलाणं च हितयाणि ४ हितयं च जं ५ । पंच एताणि हितयाणि पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १५८६ ॥
हितिकं ति व जो बूया तधा हितिकतरं ति वा । तधाऽतिहितिकं व त्ति हितिकं हितिकं ति वा ॥ १५८७ ॥
सुहितं ति व जो बूया तधा सुहिततरं ति वा । तधाऽतिसुहितं व त्ति सोहितं सोहितं ति वा ॥ १५८८ ॥
5 हितयं ति व जो बूया हितयत्थं ति वा पुणो । हितयस्स पिवा व त्ति हितयाकूतं ति वा पुणो ॥ १५८९ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया पादवा हितयसंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा हितयस्स समा भवे ॥ १५९० ॥ छ ॥

[१२८ पंच गहणाणि]

केस १ मंसु २ अधोमंसु ४ उभो कक्खा ५ तधेव य । गहणाणि पंच जाणीया जधुत्तं च वियागरे ॥ १५९१ ॥
किलेसबहुलं अत्थं गहणेसु वियाणिया । वाधि-सोगपरिक्केसं गहणं च वं णिद्दिसे ॥ १५९२ ॥
10 गहणं ति य जो बूया तधा गहणतरं ति वा । तहाऽतिगहणं व त्ति गहणं गहणं ति वा ॥ १५९३ ॥
विरूढं ति य जो बूया विरूढतरकं ति वा । तधा अतिविरूढं ति विरूढं विरूढं ति वा ॥ १५९४ ॥
रूढं ति य जो बूया तधा रूढतरं ति वा । अतिरूढं ति वा बूया रूढं रूढं ति वा पुणो ॥ १५९५ ॥
घणकेडतं ति वा बूया अतिघणकेडतं ति वा । तधा संझडितं य त्ति अतिसंझडितं ति वा ॥ १५९६ ॥
गहणं वणं ति वा बूया रन्नं व गहणं ति वा । गहणा अडवी य त्ति णदी गहणं ति य ॥ १५९७ ॥
15 जे यऽन्ने एवमादीया पादवा गहणस्सिता । तेसिं संकित्तणे सद्दा ते गहणसमा भवे ॥ १५९८ ॥ छ ॥

[१२९ पंच उपगहणाणि]

सुमा वे २ अक्खिपम्हाणि ४ लोमवासि ५ तधेव य । पंचोपगहणे जाणे जधुत्तं च वियागरे ॥ १५९९ ॥
गहणेसु जधा दिट्ठो सव्वो अत्थो सुभाऽसुभो । तधोपगहणेसु फलं णिद्दिसे तु अणंतरं ॥ १६०० ॥ छ ॥

[१३० छप्पण्णं रमणिज्जाणि]

20 ओट्ठा २ दंता ४ णिडालु ५ पाद-पाणितला ९ उरो १० । वीसमंगुलिपोट्टाणि ३० वीसतिं च णहाणि तु ५० ॥ १६०१ ॥
णासा ५१ णासपुडो ५२ नेत्र सोणी ५३ कण्णा ५५ समेहणा ५६ ।
छप्पण्णं रमणिज्जाणि यधुत्तेण वियागरे ॥ १६०२ ॥
अब्भंतरत्थो य जधा आगासत्थो य जो भवे । रमणीयविसिट्ठतरो एवमादि फलं वदे ॥ १६०३ ॥
रम्मं ति व जो बूया तधा रम्मतरं ति वा । अतिरम्मं ति वा बूया रम्मरम्मं ति वा पुणो ॥ १६०४ ॥
25 रमणीयं ति वा बूया रमणीयतरं ति वा । तधाऽतिरमणीयं ति रमणीयमहो त्ति वा ॥ १६०५ ॥
अभिरामं ति वा बूया अभिरामतरं ति वा । अतीव अभिरामं ति अभिरामं अहो त्ति वा ॥ १६०६ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं रमणीयस्सितं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा रमणीयतरं वदे ॥ १६०७ ॥ छ ॥

[१३१ दुवालस आकासाणि]

णिडालं १ अंसपीढाणि ३ जाणूइं ५ जाणुपच्छिमं ७ ।
30 पाद-पाणितला ११ पट्ठी १२ आकासाणि दुवालस ॥ १६०८ ॥
आगासं ति य जो बूया आकासतरकं ति वा । तवेव अतिआकासं आकासं अहो त्ति वा ॥ १६०९
आगासको त्ति वा बूया आकासं गमो त्ति वा । तधेव आकासचरो तधा आगाससंसितो ॥ १६१० ॥

---

१ °परिक्केसं हं० त० विना ॥ २-२ °वहितं हं० त० ॥ ४ °तिरमणीय° सं ३ पु० ॥ ५ अभिरम्मं ति सप्र० ॥

आगासं पंडरिकं ति आकासवियडं ति या । आकासं विमलं व त्ति आकासं सोभति त्ति वा ॥ १६११ ॥
ये वऽण्णा एवमादीया कहा आकाससंसिता । तिस्से कहिज्जमाणीय आकाससममादिसे ॥ १६१२ ॥ छ ॥

[१३२ छप्पण्णं दहरचला १३३ छप्पण्णं दहरथावरेज्जा]

हत्थ-पादंगुली पव्वा दहरचला भवंति ते । तेसिं पव्वंतरा सव्वे दहरत्थावरा हि ते ॥ १६१३ ॥
एते चेव तु णिम्मट्ठा दहरचला भवंतिह । जधुत्तं पुव्वमत्थं तु तं सव्वं चलमादिसे ॥ १६१४ ॥   5
जंघोरु-बाहुमज्झे य पट्ठी पस्से कर-क्कमे । दहरे थावरे अंगे एते इच्छंति केयि तु ॥ १६१५ ॥
थिरमत्थं वियाणीया सव्वमेय अणागतं । एवमेतेसु सव्वेसु दहरत्थावरेसु तु ॥ १६१६ ॥
डहरो त्ति व जो बूया तधा डहरतरो त्ति वा । तधाऽतिडहरो व त्ति डहरातिडहरो त्ति वा ॥ १६१७ ॥
डहराको त्ति वा बूया डहराकतरको त्ति वा । अतिडहराको व त्ति डहराको अहो त्ति वा ॥ १६१८ ॥
अहोडहरो त्ति वा बूया अतीवडहरो त्ति वा । किहं ता डहराको त्ति जो एस डहरो त्ति वा ॥ १६१९ ॥   10
जे यऽण्णे एवमादीया पादपा (पज्जया) डहरस्सिता । तेसिं संकित्तणे सद्दे डहरत्थावरे समा ॥ १६२० ॥
एते य एवमादीया जे सद्दा चलसंसिता । विभावेतूण ते सम्मं डहरचलसमे वदे ॥ १६२१ ॥
एते य एवमादीया जे सद्दा थावरस्सिता । विभावेतूण विण्णेया डहरा थावरे समा ॥ १६२२ ॥

[१३४ दस इस्सरा १३५ दस अणिस्सरा य]

[1]सिरोऽधरा य ओट्ठं (पओट्ठं) तु भवंति दस इस्सरा । णामतो ते पवक्खामि दस चेव अणिस्सरे ॥ १६२३ ॥ 15
णिडालं १ मत्थको २ सीसं ३ कण्णा ४ गंडा ५ मुमंतरं ६ ।
दंतो ७ ट्ठ ८ णासा ९ जिब्भा य १० उम्मट्ठा दस ईसरा ॥ १६२४ ॥
एते सव्वे पसस्संते उम्मट्ठा दस ईस्सरा । अणिस्सरे य णिम्मट्ठे एते चेव वियागरे ॥ १६२५ ॥
सव्वमत्थं पसत्थं तु इस्सरेसु वियागरे । थाणमिस्सरियं यद्धिं भोग-लाभ-सुहाणि य ॥ १६२६ ॥
इस्सरोपक्खरे चेव इस्सरोवकरणेसु य । इस्सरो त्ति वियाणीया वत्सदोदीरणेसु य ॥ १६२७ ॥   20
इस्सराणं च आमासे ईसराणं च आगमे । इस्सराणं च सद्देसु इस्सराणं च कित्तणे ॥ १६२८ ॥
वधिस्सरगवीणं च सद्द-रूवकतेसु य । वधिस्सरोवकरणाणं सद्द-रूवकतेसु य ॥ १६२९ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं लोए इस्सरलक्खणं । तस्सद्द-रूवसंलावे ते इस्सरसमे वदे ॥ १६३० ॥ छ ॥

[१३६ चोद्दस इस्सरभूता]

एत्तो इस्सरभूते तु उड्ढं णामीय णिद्दिसे । ते उम्मट्ठे वियाणीया इस्सरत्थम्मि अंगवी ॥ १६३१ ॥ छ ॥   25

[१३७ पण्णासं पेस्सेज्जा १३८ पण्णासं पेस्सभूया]

पादंगुली १० पादणहा २० पादमंगुलिंपोट्टिया ३० ।
तला ३२ पण्ही ३४ सुला ३६ गोप्फा ३८ कंडरा ४२ जंघ ४४ पेंडिया ४६ ॥ १६३२ ॥
जाणूणि य ४८ फिओ ५० चेव पेस्सेज्जाणि वियागरे । पेसमेतेहि जाणीया पेरसोपकरणेहि य ॥ १६३३ ॥
अब्भंतरे तु णिम्मट्ठे पेस्सेए ति वियागरे । ☞ ते चेव किंचि णिम्मट्ठे पेस्सभूए वियागरे ॥ १६३४ ॥ ☜ 30
उड्ढं जाणूहि णाभि त्ति पेस्सभूते वियागरे । अधे जाणूहि पाद त्ति पेस्सभूते वियागरे ॥ १६३५ ॥

---

१ आगाससोभिते त्ति सं ३ पु० सि० ॥ २ ये यऽण्णा एवमादीया जधा आ° हं० त० विना ॥ ३ आद हं० त० विना ॥ ४ किध ती डह° हं० त० विना ॥ ५ सरोधरायउत्थं तु हं० त० विना ॥ ६–७ ईसरा हं० त० ॥ ८ पसस्सं तु हं० त० ॥ ९ °णेण य हं० त० ॥ १० °कमेसु हं० त० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतपाठः हं० त० एव वर्तते ॥

पवासं निग्गमं कम्मं पेस्सोदकरणाणि य । पेस्सलाभं च पेस्सेसु एवमादि फलं वदे ॥ १६३६ ॥

पेस्सो त्ति य जो बूया तधा पेस्सतरो त्ति वा । अतिपेस्सो त्ति वा बूया पेस्सपेस्सो त्ति वा पुणो ॥१६३७॥

तधा पेस्सणिको य त्ति पेस्सणीकतरो त्ति वा । अतिपेसणिको य त्ति अहोपेसणिकि त्ति वा ॥ १६३८ ॥

पडिचारको त्ति वा बूया पडिचारकतरो त्ति वा । अतिपडिचारको य त्ति अहोपडिचारको त्ति वा ॥ १६३९ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया पेस्ससंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा पेस्सेयसमका भवे ॥ १६४० ॥

॥ पेस्सेयाणि ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ छ ॥

[१३९ छव्वीसं पिया १४० छव्वीसं वेस्सा य]

णिडालं १ मत्थको २ सीसं ३ संखा ५ कण्ण ७ऽविरा ९ णासिका १० ।

दंतो १२ ह १४ जिब्भ १५ गंडा य १७ उरो १८ थणक २० थणंतरं २१ ॥ १६४१ ॥

हत्थंयंगुट्ठका २३ हत्था २५ णाभि २६ ओमज्जिता पिता । वेस्सा णिम्मज्जिया एते ठियामट्ठा अपीलिता ॥ १६४२॥

तधा पिउ त्ति वा बूया तधा पिअतरो त्ति वा । तधा अतिप्पिओ य त्ति तधा पिअप्पिओ त्ति वा ॥ १६४३ ॥

इट्ठो त्ति य जो बूया तधा इट्ठतरो त्ति वा । अतिइट्ठो त्ति वा बूया इट्ठा इट्ठो त्ति वा पुणो ॥ १६४४ ॥

दइतो त्ति य जो बूया तधा दइतरो त्ति वा । अतिदइतो त्ति वा बूया दइवातिदइतो त्ति वा ॥ १६४५ ॥

अभिप्पेतो त्ति वा बूया अभिप्पेततरो त्ति वा । तधा अतिअभिप्पेतो अभिप्पेतो अति त्ति वा ॥ १६४६ ॥

मणामो त्ति य जो बूया छलिको (छंदको) त्ति य जो वदे ।

पियदंसणो त्ति वा बूया तधा भावरसिओ त्ति वा ॥ १६४७ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया पेम्मसंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा ते पिएहिं समे वदे ॥ १६४८ ॥

वेस्सो त्ति य जो बूया तधा वेस्सतरो त्ति वा । अतिवेस्सो त्ति वा बूया अधोवेस्सो त्ति वा पुणो ॥ १६४९ ॥

अणिट्ठो त्ति य जो बूया अणिट्ठतरको त्ति वा । तधा अतिअणिट्ठो त्ति अहो अणिट्ठो त्ति वा पुणो ॥ १६५० ॥

अणभिप्पेतो त्ति वा बूया अणभिप्पेततरो त्ति वा । अतीव अणभिप्पेओ अणभिप्पेतो अहो त्ति वा ॥ १६५१ ॥

पडिकूलो त्ति वा बूया पडिकूलतरो त्ति वा । तधा अतिपडिकूलो पडिकूलो अहो त्ति वा ॥ १६५२ ॥

अप्पिओ त्ति य जो बूया अप्पिअतरको त्ति वा । अतिअप्पिओ त्ति वा बूया अप्पियाणऽप्पिओ त्ति वा ॥ १६५३ ॥

अकंतो त्ति य जो बूया अकंततरको त्ति वा । अति चेव पस्सुआकंतो अकंतो तु अहो त्ति वा ॥ १६५४ ॥

अमणामो त्ति वा बूया अछंदिको त्ति वा पुणो । अप्पिओ दंसणे य त्ति विदिट्ठो दंसणे त्ति वा ॥ १६५५ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया वेस्ससंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा वेस्सेहिं समका भवे ॥ १६५६ ॥ छ ॥

[१४१ छव्वीसं मज्झत्थाणि]

गुमंतरं य १ वंसो य २ मत्थको ३ णासिका ४ मुहं ५ ।

सरो ६ थणंतरं ७ हितयं ८ [........................ ॥ १६५७ ॥

.... । ....] मज्झत्थाणि वियागरे ॥ १६५८ ॥

मज्झत्थो त्ति य जो बूया मज्झत्थतरको त्ति वा । तधेव अतिमज्झत्थो मज्झत्थो पलिकं ति वा ॥ १६५९ ॥

अपत्थितो त्ति वा बूया अपत्थितनरो त्ति वा । तेधाऽपत्थितो य त्ति अतीव य अपत्थितो ॥ १६६० ॥

निव्विकारो त्ति वा बूया निव्विकारतरो त्ति वा । तधाऽतिनिव्विकारो त्ति निव्विकारो अहो त्ति य ॥ १६६१ ॥

---

१ [illegible] हं० त० एव पाठः ॥ २ °त्थणंगु° हं० त० ॥ ३ णाभि गुमज्जिता (उम्मज्जिता) हं० त० विना ॥ ४ निम्मज्जिया हं० त० विना ॥ ५ तहा दइयतरो हं० त० ॥ ६ अहोदइओ हं० त० ॥ ७ [illegible] छव्वीसं अपत्थिया १४१ [illegible] छव्वीसं अपत्थिया [illegible] ॥ ८ तथा पाठः° [illegible] ॥

मज्झत्थमुदाहरणा जे यऽन्ने एवमादीया। तेसिं संकित्तणासद्दा मज्झत्थसममादिसे ॥ १६६२ ॥ छ ॥

[१४२–१४६ बारस पुढविकाइकाईणि]

पुधूसु पुधविं जाणे दगं णिद्धेसु णिद्दिसे। अग्गेये सप्पभे उण्हे अग्गिमो(मे)तेसु णिद्दिसे ॥ १६६३ ॥
वायुणेयेसु सव्वेसु वातं वातमणेसु य। वणप्फती तु णातव्वा गहणोपगहणेसु य ॥ १६६४ ॥ छ ॥

[१४७ वीसं जंगमाणि]　　5

चले १ अस्सास २ पस्सासे ३ आउंटण ४ पसारणे ५ ।
उवेट्ठु ६ ट्ठित ७ संचिट्ठे ८ गमणा ९ ऽऽगमणेसु य १० ॥ १६६५ ॥
[1]फंदिते ११ चलिते १२ यावि णिविलु १३ म्मिल्लितम्मि १४ य ।
तसकायोवलद्धीयं २० जंगमं ति वियागरे ॥ १६६६ ॥

[१४८ तेत्तीसं आतिमूलिकाणि]　　10

पादंगुट्ठा य २ पादा य ४ गोप्फा ६ जंघो ८ रु १० जाणुका १२ ।
अंसा १४ बाहू १६ पबाहू य १८ बाहुसंधी २० तधेव य ॥ १६६७ ॥
उदरं २१ कडी २२ कडीपस्सा २४ लोमवासी २५ तधेव य ।
उरो २६ सिरा २७ ऽधरा २९ जंतुं ३० मुहं ३१ सीसं ३२ तला ३३ तधा ॥ १६६८ ॥

एते सव्वे जता होंति उम्मट्ठा तु अपीलिता। तेत्तीसं आतिमूलीया सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ १६६९ ॥　　15
जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते। एवं एतेसु सव्वेसु आतिमूलेसु णिद्दिसे ॥ १६७० ॥ छ ॥

[१४९ तेत्तीसं मज्झविगाढाणि]

एते चेव समामट्ठा जवा होंति अपीलिता। मज्झे विगाढा तेत्तीसं पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १६७१ ॥
तधा मज्झे विगाढेसु तेत्तीसायं पि अंगवी। पुण्णामधेयेहि फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १६७२ ॥ छ ॥

[१५० तेत्तीसं अंता]　　20

अंगुली २० केस २१ लोमग्गं २२ कन्न २४ णासग्गमेव २६ य ।
कोप्परा २८ पण्हिक ३० फिजा ३२ वहेय य ककाडिका ३३ ॥ १६७३ ॥

एते तेत्तीसतिं अंता णिम्मट्ठा य जया भवे। पसत्थे ण पसस्संते णिरत्थेसु पसस्सते ॥ १६७४ ॥ छ ॥

[१५१ पण्णासं मुदिता १५२ पण्णासं दीणा य]

अब्भिंतरंगा मुदिता बाहिरंगा य पीलिता। पुणो अब्भिंतरा चेव [6]संविमट्ठा तु दीणगा ॥ १६७५ ॥　　25
मुदिते [वा] पमोदं वा हासं पीतिं च णिद्दिसे। जण्णं छणुस्सयं सव्वं जं वाऽभुदइकं भवे ॥ १६७६ ॥
[7]दीणेसु वाधि सोगं च परिकेसं च णिद्दिसे। जधा णपुंसकाअत्थे एवमेसु फलं वदे ॥ १६७७ ॥
मुदितो त्ति य जो बूया तधा पमुदितो त्ति वा। हट्ठो तुट्ठो पहट्ठो त्ति उदत्तो सुमणो त्ति वा ॥ १६७८ ॥
णिव्वुते सुहिते य त्ति आरोगो पीणितो त्ति वा। कतत्थो कतकज्जो त्ति संवत्तमणोरधो त्ति वा ॥ १६७९ ॥
उस्सयो त्ति समासो त्ति[9] विहि जण्णो छणो त्ति वा। बालोपणयणं वाधुज्जं अधिकमणकं ति वा ॥ १६८० ॥　　30
जं चऽण्णं उस्सयचरं सव्वन्भुदइकं च जं। तस्स संकित्तणासद्दा मुदितेहि सममादिसे ॥ १६८१ ॥

दीणो त्ति दुम्मणो च त्ति परितंतो त्ति वा पुणो। [10]उव्वट्ठितो त्ति सोकत्तो चिंता-झाणपरो त्ति वा ॥ १६८२ ॥
अणिव्वुतो आतुरो त्ति [11]परायितणिरागतो। अकतत्थो असिद्धत्थो अहमो णियमसकतो ॥ १६८३ ॥
गंठितो पढितो य त्ति भिण्णो मंतुलितो त्ति वा। पिवासितो परिस्संतो छातो तण्हाइतो त्ति वा ॥ १६८४ ॥

---

१ अत्रेदं चिन्त्यम्—वायुणेयाः किल द्वादश, वातमणाः पुनश्चत्वार इति संख्याव्यवस्थाविरोध इति ॥ २ फंदिए चिलिए वा चि णिच्चुलु° हं० त० ॥ ३ जंतु हं० त० ॥ ४ जता तुप्पा° नास० ॥ ५ समा सद्दा जदा होंति हं० त० ॥ ६ संधिमट्ठा हं० त० विना ॥ ७ पाणेसु यावि(धि)योगं च हं० त० ॥ ८ °मेयसु वि फलं हं० त० ॥ ९ त्ति तिपे जण्णो हं० त० विना ॥ १० उधट्ठितो हं० त० विना ॥ ११ परायत° हं० त० ॥

अलद्धलाभो द्रव्वातो असंपत्तमणोरधो । विहलो विपडंतो त्ति विहतो त्ति विचेयणो ॥ १६८५ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया पज्जया दीणसंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा दीणेहि समका भवे ॥ १६८६ ॥ छ ॥

[१५३ वीसं तिक्खा]

तिक्खग्गदंतणोहणा अग्गदंता तु सूयिता । समे सद्दे य जाणेज्जो तिक्खा जे मणिके मता ॥ १६८७ ॥
तिक्खं ति व जो बूया तधा तिक्खतरं ति वा । अतितिक्खं ति वा बूया तिक्खतिक्खं ति वा पुणो ॥१६८८॥
5 तिक्खलोहं ति वा बूया तिक्खं आयुधं ति वा । सत्थकं अतितिक्खं ति जं चऽण्णं तिक्खणामकं ॥ १६८९ ॥
आउधाणं च सव्वेसिं सत्थकाणं च सव्वसो । लोहोपकरणाणं च सव्वेसिं तिक्खणाक्खणे ॥ १६९० ॥
जे यऽन्ने एवमादीया पदे वा तिक्खसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं तं तिक्खसममादिसे ॥ १६९१ ॥ छ ॥

[१५४ पण्णत्तरिं उवहुता १५५ पण्णत्तरिं वापण्णा य]

10 पुण्णामा पीलिता सव्वे एते होंति उवहुता । उवत्ता य विछिन्ना य वापन्न त्ति वियागरे ॥ १६९२॥
वापण्णा य णिग्गहिता वापण्णा होंति पावका । एतेसिं च वग्गाणं तिण्हं पि फलमादिसे ॥ १६९३ ॥
जधा दीणे आदेसो अप्पसत्थो पवेदितो । उवहुतेसु वि तधा सव्वं असुभमादिसे ॥ १६९४ ॥
वापण्णेसु विणासं च सरीरं वापदं तधा । सव्वत्थाणं च वापत्तिं दुब्भिक्खं वा वियागरे ॥ १६९५ ॥ छ ॥

[१५६ दुवे दुग्गंधा १५७ दुवे सुगंधा य]

15 दुग्गंधेसु परीतावं आयासं च वियागरे । सयणा दुकुंछं च अयमाणं च णिद्दिसे ॥ १६९६ ॥
णासापुडा य पिहिता दुग्गंधा वे ण पूयिता । अयंगुता सुगंधा य पुच्छितम्मि य पूयिता ॥ १६९७ ॥ छ ॥

[१५८ णव वुद्धीरमणा १५९ चत्तारि अवुद्धीरमणा य]

हत्थ २ पाद ४ भूम ६ ऽक्खि ८ मुहं ९ वुद्धीरमण त्ति णिद्दिसे ।
पस्सो २ दरं ३ च पट्टी य ४ अवुद्धीरमणा भवे ॥ १६९८ ॥
20 णाणं वुद्धीरमणेसु मतिं मेधं च णिद्दिसे । अवुद्धीरमणेसु वदे मोहं मुक्खत्तमेव य ॥ १६९९ ॥
वुद्धीमंतो त्ति वा बूया वुद्धिमंततरो त्ति वा । अतीव वुद्धिमंतो त्ति वुद्धिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०० ॥
मतिमंतो त्ति वा बूया मतिमंततरो त्ति वा । अतीव मतिमंतो त्ति मतिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०१ ॥
सुवुद्धिको त्ति वा बूया सुवुद्धिमंतो त्ति वा पुणो । तधा पसण्णवुद्धि त्ति चित्तवुद्धि त्ति वा पुणो ॥ १७०२ ॥
जे यऽण्णे एवमादीया पदे वा वुद्धिसंसिता । तेसिं संकित्तणे सद्दा ते वुद्धिरमणे समा ॥ १७०३ ॥ छ ॥

[१६० एक्कारस महापरिग्गहा १६१ चत्तारि अप्पपरिग्गहा य]

25 उदरं १ हत्थं ३ पादं च ५ कण्णा ७ णासं ८ ऽक्खिणो १० मुहं ११ ।
महापरिग्गहा एते सामिद्धिं चऽत्थ णिद्दिसे ॥ १७०४ ॥ छ ॥
केस १ लोम २ णहं ३ मंसुं ४ एते अप्पपरिग्गहा । पुच्छिते ण प्पसत्थंते दारिद्दं चऽत्थ णिद्दिसे ॥१७०५॥छ॥

[१६२ एकूणवीसं पद्धा १६३ सत्तावीसं मोक्खा य]

30 हत्थ पादं सिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि बंधति । बद्धेसु यावि सव्वेसु एते बंधे वियागरे ॥ १७०६ ॥ छ ॥
हत्थ पादं सिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि मुंचति । मुक्केसु यावि सव्वेसु एत्थ मोक्खं वियागरे ॥१७०७॥ छ ॥

---

१ °मणोरमे हं० त० ॥ २ °ग्गणहा अग्ग° सि० विना ॥ ३ वा पुणो । सत्थ° हं० त० विना ॥ ४ °क्खणे खणे हं० त० ॥ ५ उवहुया हं० त० ॥ ६ उवउत्ता सि० ॥ ७ °त्तु द्धि तधा हं० त० ॥ ८ °त्तु द्धि सव्वे य हं० त० ॥ ९ हिं चित्तबुद्धि हं० त० ॥ १० पायसा पुण्णसं° हं० त० ॥

[१६४ पण्णासं सका १६५ पण्णासं परका १६६ पण्णासं सकपरका य]

दढा वंधा चला मोक्खा सका अब्भंतरा भवे। परका बाहिरा मिस्सा बाहिरऽभंतरा भवे ॥१७०८॥

[१६७-१७२ दुवे सद्देया दुवे रूवेया इच्चाइ]

सद्देया कण्णसोता वे २ णयणा दंसणिया दुवे २। णासापुडा २ य गंधेयं रसेयं जिब्भमादिसे १ ॥१७०९॥
तयं च १ पोरिसं २ चेव फासेयाणि वियागरे। मणेयं हितयं १ जाणे अंगविज्जाविसारओ ॥ १७१० ॥ 5
सद्देयेसु पिओ लोए इट्ठे सद्दे सुणेति य। विस्सुतो य महाणम्मि महं च लभते जसं ॥ १७११ ॥
दंसणीयेसु कंतो य सव्वस्स पिअदंसणो। गुणप्पगासो लोगम्मि पियाणि पि य पावति ॥ १७१२ ॥
गंधेयेसु यसभागी इट्ठे गंधे य पावति। सम्मतो यावि लोकस्स णारीसु सुभगो वि य ॥ १७१३ ॥
रसेयेसु मणुण्णाणि भोयणाणि तु भुंजति। गहितवक्को य सद्धेयो सव्वत्थ य विसारदो ॥ १७१४ ॥
सयणा-ऽऽसण-जाणाणि वाहणाणि य पावति। थिओ य भूसणाइं च फासेयम्मि णिसेवति ॥ १७१५ ॥ 10
मणेयम्मि हियामट्ठे सव्वविज्जाविसारतो। पंडितं बुद्धिमंतं च णिद्दिसे सुबहुस्सुतं ॥ १७१६ ॥ छ ॥

[१७३ चत्तारि वातमणा १७४ दुवे सद्दमणा १७५ दस व्रण्णेया य]

मुहं १ णासग्ग २ कण्णा य ४ एते वातमणा भवे। गुदो य १ मेहणं चेव २ एते सद्दमणा भवे ॥ १७१७ ॥
केसमंसु १ उरो २ पट्ठी ३ जंघा ५ कक्खा उभो ७ तधा।
वत्थिसीसं च ८ संखा य १० वण्णेयाणि वियागरे ॥ १७१८ ॥ 15
जो पुव्वमुत्तो आदेसो गहणेसु विधीयते। वण्णेयेसु वि एमेव आदेसं संपकप्पते ॥ १७१९ ॥ छ ॥

[१७६ दस अग्गेया]

गुह्म १ ऽच्छी ३ उरो ४ हितयं ५ तले ७ जिब्भं ८ तिके १० वि तु।
एते अग्गेययं णेया इत्थेस दुविधो गमो ॥ १७२० ॥
अक्खीणि २ णासिका ३ कण्णा ५ णिडालं ६ मुहं ७ मत्थगो ८। 20
कण्णुप्परिका य ९ सिरस १० अग्गेया दस पूयिता ॥ १७२१ ॥
गणेस्सरिकलाभेसु अग्गेये अग्गिकम्मसु। पुण्णामधेयेसु फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १७२२ ॥ छ ॥

[१७७ दस जण्णेया]

सिरोमुहस्सयामासे अग्गेया थ भवंति जे। जण्णेया दस वक्खाता पसत्था तत्थ पुच्छिते ॥ १७२३ ॥ छ ॥

[१७८ दुवे दंसणीयाणि १७९ दुवे अदंसणीयाणि य] 25

दंसणीयाणि वे चक्खुं १ सोणी य २ पसस्सते। अदंसणीया य दुवे उक्कूणिय १ विकूणिता २ ॥१७२४॥छ॥

[१८० दस थलाणि]

मत्थको य १ णिडालं च २ गंडा य ४ हितयं ५ उरो ६।
कर-कमतला १० चेव थलाणि दस णिद्दिसे ॥ १७२५ ॥ छ ॥

[१८१ वारस णिण्णाणि] 30

णिण्णाणि[5] चक्खणा २ कक्खा ४ अक्खिकूडाणि वे तथा ६।
अंतो य कण्णसोताणि ८ जं च गीवा य हेट्ठतो १० ॥ १७२६ ॥
कुकुंदरो ११ य णाभी य १२ एवं णिण्णाणि बारस।
पुच्छिते ण प्पसस्संते णिण्णं चऽत्थ वियागरे ॥ १७२७ ॥ छ ॥

१ मूलग्रन्थेषु दुवे रूवेया १६८ इति नाम वर्तते ॥ २ मूलग्रन्थेषु दस जण्णेया १७६ इति नाम वर्तते ॥ ३ °लारोमुपगो° हं० त० ॥ ४ °त्था सप्पपु° हं० त० विना ॥ ५ °णि चक्खुणा हं० त० ॥

[१८२ णव गंभीरा १८३ णव परिणिण्णगंभीरा]

गंभीरे तु मुहं १ णासं ३ कण्णे ५ थीहुं ९ च णिद्दिसे । ते चेव णिण्णगंभीरे अंतिमट्ठे वियागरे ॥ १७२८॥

[१८४–१८९ पण्णरस विसमा चोद्दस उण्णता इच्चाइ]

णासं १ ऽसपीढा ३ सवसणा ५ फिओ ७ कोप्पर ९ जत्तुंगा ११ ।
खलुका १३ मणिबंधा य १५ विसमा पण्णरसाऽऽहिया ॥ १७२९ ॥

मत्थको सीसकूडाणि विसमा जे य कित्तिया । णासावंसो य एगूणं उण्णत त्ति वियागरे ॥ १७३० ॥
जे पुधू ते समा होंति अग्गेया उसिणा भवे । जे णिद्धा ते भवे सीता सीतला औवुजोणिया ॥१७३१॥
जधा णिद्धेसु सव्वेसु आदेसो तु विधीयते । तधाऽऽपुणेएसु फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १७३२ ॥ छ ॥

[१९० चउरासीतिं पुण्णा १९१ पण्णत्तारिं तुच्छा य]

गंडा २ थणो ४ दरं ५ आसं ६ अंजली ८ मुहमेव ९ य ।
पुण्णामा ८४ तं तओम्मट्ठा एते पुण्ण त्ति णिद्दिसे ॥ १७३३ ॥

णपुंसकाणि सव्वाणि परंपरकिसा य जे । तुच्छाणेताणि जाणीया अप्पसत्थाणि णिद्दिसे ॥ १७३४ ॥छ॥

[१९२–२३८ एकूणवीसं विवरा इच्चाइ]

मुहं १ पालुं च २ मेढ्ढं च ३ अंगुलीअंतराणि य १९ । एकूणवीसं विवरे वियाणे अंगचिंतओ ॥१७३५॥ १९२॥
एते चेव जधुत्ता तु संपेडितसंपुडा । अंगे अपी(वि)वरा होंति ते वियाणेज्ज अंगवी ॥ १७३६ ॥ १९३ ॥

अक्खीणि २ हत्थ ४ पादं च ६ गुंदो ७ मेढ्ढं ८ तधेव य ।
अट्ठेय एते जाणेज्जो अंगे विअडसंवुडे ॥ १७३७ ॥ १९४ ॥
जिब्भा १ अक्खीणि ३ ऊरू य ५ पालू ६ मेहणमेव य ७ ।
सुकुमालाणि सत्तेव वियाणे अंगचिंतओ ॥ १७३८ ॥ १९५ ॥

अधुत्तीरमणा अंगे जे पुव्वं परिकित्तिता । ते चेव दारुणे जाणे सव्वेए अंगचिंतओ ॥ १७३९ ॥ १९६ ॥

जिब्भा १ ओट्ठा ३ थणा ५ गंडा ७ सत्तेव मदुका भवे ।
जधुत्तमणुगंतूणं ततो धुयंगचिंतओ ॥ १७४० ॥ १९७ ॥

दारुणाणि य चत्तारि पुव्वुत्ताणि तु याणिह । पत्थीणाणि तु ताणेव वियाणे अंगचिंतओ ॥ १७४१ ॥ १९८ ॥
रमणीया जे तु अंगम्मि पुव्वं तु परिकित्तिया । ते चेव सण्हा णातव्वा जधुत्तं च वियागरे ॥ १७४२ ॥१९९॥

सव्वे णहसिहाओ य २० कोप्परा २२ जण्णुकाणि य २४ ।
चतुव्वीसं खरा एते वियाणे अंगचिंतओ ॥ १७४३ ॥ २०० ॥
पादाणं अंगुलीओ य १० कुडिल त्ति वियागरे २०१ ।
हत्थाणं अंगुलीओ य १० उज्जुकं ति वियागरे ॥ १७४४ ॥ २०२ ॥
णिडालं १ अगाकण्णा य ३ भुमो ५ हा ७ दंतसेढिका ८ ।
संखा चे १० कण्णपालीओ १२ अंगुट्ठंगुलिभिस्सह ३२ ॥ १७४५ ॥
फक्सा ३४ णासापुडा चेव ३६ एते चंडाणता भवे ।
छत्तीसं तु णातव्वा जधुत्तं च वियागरे ॥ १७४६ ॥ २०३ ॥

---

१ पालुं च हं० त० विना ॥ २ अंति° हं० त० विना ॥ ३ तुण्णगा हं० त० ॥ ४ पसूणं हं० त० विना ॥ ५ आउजो° हं० त० ॥ ६ तधा पुण्णेएसु सप्र० ॥ ७ त पधुम्म° हं० त० विना ॥ ८ गुदो मेढुत्तरेय य हं० त० ॥ ९ मत्थीणाणि हं० त० ॥ १० छव्वीसं हं० त० ॥

जंघो २ रु ४ बाहु ५ एताणि आयताणि वियागरे । २०४ ।
जंघा २ [फि]यो य ४ णातव्वा आयता मुद्दियाणि तु ॥ १७४७ ॥ २०५ ॥
उत्तमाणि तु जाणंगे ताणि दिव्वाणि णिद्दिसे ॥ २०६ ॥
जाणेव मज्झिमाणंगे ताणि माणुस्सकाणि तु ॥ १७४८ ॥ २०७ ॥
तिरिच्छजोणिया अंगे मज्झिमाणंतराणि तु । २०८ । 5
जधण्णाणि तु जाणंगे ताणि णेरइकाणि तु ॥ १७४९ ॥ २०९ ॥
णहसेढी-दंतसेढीओ णहा दंतसिहा य जा ।
उवहुता य ७५ तिक्खा य ९५ एते रुद्दे वियागरे ॥ १७५० ॥ २१० ॥
पीती १ णिज्झाइतं या वि २ दुवे सोम्मे वियाणिया ।
पुच्छितम्मि पसस्संते सोतव्वं चऽत्थ णिद्दिसे ॥ १७५१ ॥ २११ ॥ 10
ओट्ठं २ गुट्ठं ६ गुलीओ य २२ मिदुभागे वियाणिया ।
जधुत्तमणुगंतूणं ततो धूयांगचिंतओ ॥ १७५२ ॥ २१२ ॥
अंगुट्ठा २ होंति पुत्तेया २१३ कण्णा होंति कणिट्ठिका २ । २१४ ।
अणामिका २ मज्झिमियो ४ थिया होंति ण संसयो ॥ १७५३ ॥ २१५ ॥
पदेसिणीहि २ विण्णेया जुवतीयो ण संसयो । 15
थिया तु तिविधा एवं अंगुलीहिं विभावये ॥ १७५४ ॥ २१६ ॥
णिम्मज्जिताणि दीहाणि णिग्गहीताणि ताणि तु । दुग्गट्ठाणाणि एताणि जधुत्तेणं वियागरे ॥ १७५५ ॥ २१७ ॥
पाद-पाणितला ४ ओट्ठा ६ अवंगा ८ जिब्भ ९ तालुका १० ।
कणवीरका १२ तधंगुट्ठा १४ तंबाणेताणि चोद्दस ॥ १७५६ ॥ २१८ ॥
केस १ लोम २ णहं ३ मंसुं ४ एते रोगमणा[2] भवे । पुच्छिते ण प्पसस्संति बहुरोगं[3] च णिद्दिसे ॥ १७५७ ॥२१९॥ 20
कक्खा २ वसणंतरं ४ चेव अधिट्ठाणं ५ समेहणं ६ । एताणि पूतीणि भवे जधुत्तेण वियागरे ॥ १७५८ ॥ २२० ॥
उभो हत्था २ उभो पादा ४ उभो य णयणाणि तु ६ । एताणि छ व्वियाणीया चवलाणंगचिंतओ ॥ १७५९ ॥२२१॥
सिरं १ ललाडं २ पट्ठी य ३ पसाणि ५ उदरं ६ उरो ७ ।
एते अचवले सत्त जधुत्तेण वियागरे ॥ १७६० ॥ २२२ ॥
गोज्झाणि मेहणं १ पालुं २ वसणे य ४ वियागरे । 25
रहोसंजोगपुच्छायं थी-पुमंसे पसस्सते ॥ १७६१ ॥ २२३ ॥
हत्था २ मुहं च ३ अक्खीणि ५ उत्ताणुम्मत्थकाणि तु । जधुत्तमणुगंतूणं णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥१७६२॥२२४॥
कण्णसक्कुलिओ २ कण्णा ४ फिओ ६ जंघो ८ रु १० मेंढिका १२ ।
तताणेताणि जाणीया जधुत्तं च वियागरे ॥ १७६३ ॥ २२५ ॥
जाणि लुक्खाणि १० ताणेय दूरं णिम्मज्जिताणि तु । 30
मताणेताणि जाणीया अप्पसत्थं च णिद्दिसे ॥ १७६४ ॥ २२६ ॥
थूले चेव तधुम्मट्ठे महंताणि वियागरे । महंतकं इस्सरियं अत्थं भोगे य णिद्दिसे ॥ १७६५ ॥ २२७ ॥

---

१ आणालिका हं० त० ॥ २ रोममणा सं ३ पु० ॥ ३ °रोमं च सं ३ पु० ॥

दंढाणुम्मज्जियाणिं तु सुचिकाणि वियागरे । पुच्छितम्मि पसत्थंते सोयव्वं चऽत्थ णिद्दिसे ॥ १७६६ ॥ २२८ ॥

पूतीणि जाणि अंगम्मि ६ केस ७ लोम ८ णहं च जं १० ।
संविमट्ठाणि[1] चऽंगम्मि विढिट्ठाणि वियागरे ॥ १७६७ ॥ २२९ ॥

अंगे पुण्णामधेयाणि वराणि पवराणि य । तम्मि सव्वम्मि अत्थं तु पसत्थं संपवेदये ॥ १७६८ ॥ २३० ॥

ताणि चेव णिमित्तस्स णायकाणि विधीयते । वीणऽविट्ठाणभूयाणि आदेसस्स सुभाणि तु ॥ १७६९ ॥ २३१ ॥

णिमित्ते सव्ववत्थूणं सव्वणीया णपुंसका । तेण इट्ठेहिं अत्थेहिं सव्वकालं विवज्जिया ॥ १७७० ॥ २३२ ॥

जाणेय वज्झवज्झाणि ताणि अणायकाणि तु ॥ २३३ ॥
अणुं च परमाणुं च णिरत्थे त्ति वियागरे ॥ १७७१ ॥ २३४ ॥
ओण्णेयाणि तु अंगम्मि पुण्णामाणि तु णिद्दिसे ।
जेसु पुण्णो सुभो अत्थो ण कोति पतिसिज्झति ॥ १७७२ ॥ २३५ ॥

भुजोरुमंगुलीणं च अंतराणंतराणि तु । जधा गुज्झेसु आदेसो अंतरेसु वि तं वदे ॥ १७७३ ॥ २३६ ॥

दंत १ हत्थणहाणिं ११ च एते सूर त्ति णिद्दिसे ॥ २३७ ॥
अच्छीणि २ हितयं चेव ३ तयो भीरु वियागरे ॥ १७७४ ॥ २३८ ॥

[२३९ पण्णासं एक्ककाणि]

एक्कसिं चेव आमट्ठे एगं भेऽंगुलीय य । एगाभरणेकधारीसु एगोपकरणम्मि य ॥ १७७५ ॥ छ ॥

[२४० पणुवीसं विकाणि]

मिधुणे विअंगुलीगहणे एक्केकेसु य बीसु तु । जमलाभरणे चेव जमलोवकरणे विकं ॥ १७७६ ॥ छ ॥

[२४१ दस तिकाणि]

तिंगुलिग्गहणे चेव एकेकेसु तिसु तधा । तिसिके य तिकोडीके तंसेसु य तिकेसु य ॥ १७७७ ॥
भुमसंगयचूलायं णासायं च तिकम्मि य । पोरुसे य सणालम्मि विकण्णम्मि च तिण्णि तु ॥ १७७८ ॥ छ ॥

[२४२ अट्ठ चतुक्काणि]

चतुरस्सेसु सव्वेसु चउप्पयगतेसु य । चउक्केसु य सव्वेसु चउग्गुण चतु वदे ॥ १७७९ ॥
चउसंगुलीसु चत्तारि चउसु एकेकेसु य । तधा करतले चेव तधा पादतलम्मि य ॥ १७८० ॥ छ ॥

[२४३ छ पंचकाणि]

फिजंसपीढे दो चेव समुड्ढिकरणे थणे । पंचंगुलीणं गहणे सणरे सैयणासणे ॥ १७८१ ॥
पंच तस्से पंच काये एकेकेसु य पंचसु । सव्वपंचकसंजोगे पमाणं पंचकं वदे ॥ १७८२ ॥ छ ॥

[२४४ छक्कए ठिआमासे]

चउक्के विगसंजुत्ते वेसुं चेव तिकेसु तु । तिसु विकेसु छक्के य पंचके चेकसंजुते ॥ १७८३ ॥
मणिबंधण गोप्फे य विणरे सयणाऽऽसणे । सव्वछक्कगते चेव अंगवी छक्कमादिसे ॥ १७८४ ॥ छ ॥

[२४५ सत्तए ठिआमासे]

पस्से य सोणि कण्णे य जंधायं वाहुणालीयं । कुक्खिम्मि सत्तके चेव चतुक्कसहिते तिगे ॥ १७८५ ॥
सयणाऽऽसणे सपुरिसे विगाढे वा चतुप्पदे । सव्वसत्तकसंजोगे पमाणं सत्तकं तिगं ॥ १७८६ ॥ छ ॥

---

१ दव्वाणु° सं ३ पु० ॥ २ °णि रंगम्मि सं ३ पु० । °णि घातम्मि हं० त० ॥ ३ ताणि वि ठाण° हं० त० ॥ ४ °यतणाणि तु सप्र० ॥ ५ मूलादर्शेषु पण्णासं अण्णजणाइं २३५ इति नाम दृश्यते ॥ ६ सूरित्ति हं० त० विना ॥ ७ सजणा° सप्र० ॥ ८ सव्वछक्कगए चेव हं० त० विना ॥ ९ सत्थके हं० त० विना ॥

[२४६ अट्ठए ठिआमासे]

हितये ऊरू य मज्झे य णाभी पाणितलम्मि य । णिडाले चेव कण्णे य विचउक्के य पिंडिते ॥ १७८७ ॥
सयणासणे य जमले जमले य चतुप्पदे । सव्वमट्ठकसंजोगे पुच्छं अट्ठाहमादिसे ॥ १७८८ ॥
अट्ठंगुलमदंसे तधऽट्ठाकारणम्मि य । बूया अट्ठाहिकं पुच्छं वीसु पादवलेसु य ॥ १७८९ ॥ छ ॥

[२४७ णवए ठिआमासे]

णवसंगुलीसु णवके य णवसेक्कसु य । णवंसि णवभिंडीसु णवणक्खसिहासु य ॥ १७९० ॥
अट्ठगे एगसहिते सचतुक्के य पंचगे । छक्के तिगसंजुत्ते णवाहं तिरियपेक्खिते ॥ १७९१ ॥ छ ॥

[२४८ दसए ठिआमासे]

पिंडिलेसु य पादेसु उवाहणा-पादुकासु य । तधंजलिकच्छभके विहत्थी उवणामिते ॥ १७९२ ॥
विपंचके वा सहिते अट्ठके विकसंजुते । सत्तगे तिगसंजुत्ते दसाहो उज्जुपेक्खिते ॥ १७९३ ॥ छ ॥

[२४९–२७० वे पण्णरसवग्गा जाव एगे अपरिमिते]

तिपंचके य सहिते दसक्खे य सपंचके । तधेव पादजंघे य बूया पण्णरसेव तु ॥ १७९४ ॥ छ ॥
वीसं तु अंसफलके जण्णुके कोप्परेसु य । वेसु चेव दसक्खेसु चउक्केसु य पंचसु ॥ १७९५ ॥ छ ॥
जण्णूसु वीसं मज्झे य ऊरू वे पणुवीसका । तीसं कडीय पणतीसं णिदिसे अंतरोदरे ॥ १७९६ ॥
चत्तालीसं च णाभीयं णाभीय उवरिं पुणो । पणतालीसं ति या बूया पंचासं हितयम्मि य ॥ १७९७ ॥
थणंतरे पंचवण्णा उरे सट्ठिं वियागरे । जत्तूसु पंचसट्ठिं [························] ॥ १७९८ ॥
अंसे य सत्तरिं बूया गीवायं पंचसत्तरिं । हणुकायं सहोट्ठाय, असीतिं पुणमादिसे ॥ १७९९ ॥
णासायं पंचासीतिं णवती भूमकासु य । णिडाले पंचणउतिं सिरम्मि सतमादिसे ॥ १८०० ॥
एवं एतेसु ठाणेसु पंच पंच समारभे । पिट्ठोदरे सपिट्ठंते सहस्सं याहु-ताळुके ॥ १८०१ ॥
पुण्णं सतसहस्सं तु संवुतम्मि मुहे भवे । अवंगुते मुहे कोडी विप्पेतविजिंभिते ॥ १८०२ ॥
तधा छिद्देसु सव्वेसु तं अपरिमितं वदे । जधण्णेसु य सव्वेसु हणुकायं तधेव य ॥ १८०३ ॥
केसमंसूसु लोमेसु भिण्णं तु सतमादिसे । भिण्णं सहस्सं जाणीया मज्झिमाणंतरेसु य ॥ १८०४ ॥
सहस्साणं पमाणं तु मज्झिमेसु वियाणिया । तधा सतसहस्साणि कायवंतेसु णिद्दिसे ॥ १८०५ ॥
एतं चतुसु कायेसु पमाणं उवलक्खये । संहारे कायवंताणं कोडिं बूयांगचिंतओ ॥ १८०६ ॥
कायवंते य उम्मट्ठे दढे य अमितं धणं । अब्भंतरे दढे णिद्धे पुण्णे पुण्णामसुक्किले ॥ १८०७ ॥
[························ ।] समेसु यावि सव्वेसु समं बूयांगचिंतओ ॥ १८०८ ॥
भिन्ने दसक्खमाधारे वे या चत्तारि अट्ठ वा । आधारिते सवे यावि अट्ठ चत्तारि वा वदे ॥ १८०९ ॥
अणुमाणेण सव्वेण सहस्साणि वियागरे । तधा सतसहस्साणि कोडिं वा अंगवी वदे ॥ १८१० ॥
एते[हिं] चेव सव्वेहिं अंगवीजपदेहि तु । णिउणं संपधारेंतो बूया अपरिमितं विधिं ॥ १८११ ॥
एत्तो तिविधमाहारं जघन्नं मज्झिमुत्तमं । वुत्तं तदुभयामासे लक्खये तु इमं गमं ॥ १८१२ ॥
उत्तमं अयड्ढं गीवं हितयं पट्ठीं च मज्झिमं । कडि-चक्खणे जधण्णे तु एवेस तिविधो गमो ॥ १८१३ ॥
एवं भिण्णसतादीयं गमेणेतेण अंगवी । समे य विसमे चेव विण्णातूण वियागरे ॥ १८१४ ॥ छ ॥

---

१ णिम्मूले हं॰ त॰ ॥ २ °गुलिमदंसे हं॰ त॰ विना ॥ ३ °भिंडीसु हं॰ त॰ ॥ ४ जतुसु हं॰ त॰ ॥ ५ °सट्ठियं एयं ठाणसुणुकम्मे ॥ सि॰ ॥ ६ पंचणिवुतिं सं ३ पु॰ ॥ ७ एवं हं॰ त॰ ॥ ८ कायवंतेसु उम्मट्टे सं ३ पु॰ ॥ ९ अट्ठधा सप्र॰ ॥

दक्खिणाणि तु सव्वाणि सव्वाणेवं दढाणि तु । अणागताणि सव्वाणि तधा अब्भंतराणि य ॥ १८१५ ॥
अब्भंतरंतराणि वा अव्वोयताणि याणि य । एयातणुत्तमाणि च उत्तमाणंतराणि य ॥ १८१६ ॥
जाणि च जोव्वणत्थाणि वंभेज्जाणि य सव्वसो । मुक्खण्डुपडीमागा णिद्धणिद्धतराणि य ॥ १८१७ ॥
ओहाराणि य सव्वाणि आहारतरकाणि य । तधा पुरत्थिमाणि या पुव्वदक्खिणकाणि य ॥ १८१८ ॥
सव्वाणि [य] पसन्नाणि पसण्णतरकाणि य । जे य यामद्धणाहारा [........................॥ १८१९ ॥]
सियाणि तध थूलाणि दीहाणुम्मज्जिताणि य । परिमंडला य उम्मट्ठा वट्टा चेव अभिमुहा ॥ १८२० ॥
चतुरस्सा य उम्मट्ठा उम्मट्ठा पुधुला य जे । कायवंतो य ओमट्ठा हितयाणुम्मज्जिताणि य ॥ १८२१ ॥
रमणीया य उम्मट्ठा दढा थावराणि य । इस्सराणि य सव्वाणि पियाणि य विसेसतो ॥ १८२२ ॥
तवेव आतिमूलीया मज्झगाढा तवेव य । सुदिताणि सुगंधाणि सेवुद्धिरमणाणि य ॥ १८२३ ॥
महापरिग्गहाणि च सकाणि च तवेव य । सद्देया दंसणीया य गंवेया उ तवेव य ॥ १८२४ ॥
फासेया य रसेया य उम्मट्ठा तु जया भवे । तधा अग्गेयया पेया थलाणि य तवेव य ॥ १८२५ ॥
आवुणेयाणि पुण्णाणि उज्जुकाणि तवेव य । दिव्वाणि तध सव्वाणि सोमाणि य मितूणि य ॥ १८२६ ॥
पुत्तेयाणि य वंवाणि उत्ताणाणि सूयाणि य । वराणि णायकाणि च आणेयाणि महाणि य ॥ १८२७ ॥
जधा पुण्णामधेयेसु सव्वं दिट्ठं सुभासुभं । तधा एतेसु सव्वेसु सव्वं बूया सुभासुभं ॥ १८२८ ॥ छ ॥

मज्झिमाणि य सव्वाणि मज्झभागाणि जाणि य । बहिरब्भंतराणि च अब्भंतरबाहिराणि य ॥ १८२९ ॥
सामोनावाणि सोमाणि कण्हा मज्झिमकाणि य । मज्झिमाणंतराणि च समचेस्साणि जाणि य ॥ १८३० ॥
विणा य कण्हणीलेहिं पडिमागा तु सेसगा । सव्वे चेव टियामासा कण्हलुक्खेहिं जे विणा ॥ १८३१ ॥
णिद्धलुक्खाणि सव्वाणि लुक्खणिद्धाणि जाणि य । तधा आहारणीहारा णीहाराहारसंजुता ॥ १८३२ ॥
पुरिमुत्तराणि सव्वाणि पसण्णा मिस्सका य जे । उवयूढाणि जाणंगे जुत्तोडवचयाणि य ॥ १८३३ ॥
जुत्तप्पमाणदीहाणि दीहजुत्ताणि जाणि य । परिमंडलाणि जाणंगे भवे करणोवसंहिता ॥ १८३४ ॥
तधा मज्झिमकाया य मज्झिमाणंतरा य जे । आकासाणि य सव्वाणि ईस्सराणंतराणि य ॥ १८३५ ॥
थोमिस्स-सक-परवाणि सीउण्हाणि समाणि य । सुकुमाले य अंगम्मि तधा वियडसंवुडे ॥ १८३६ ॥
सण्हाणि मडुकाणि च [उज्जुकाणि च] जाणि तु । माणुस्सकाणि सव्वाणि कण्णेयाणि य जाणि [तु] ॥ १८३७ ॥
जुवतेयाणि सव्वाणि थीमागाणि जाणि तु । तधा अचचलाइं च तधा गोज्झाणि जाणि य ॥ १८३८ ॥
जधा थीणामधेज्जेसु सव्वं वुत्तं सुभा-ऽसुभं । तधा एतेसु सव्वेसु फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १८३९ ॥ छ ॥

वामाइं च चलाइं च अतिणिच्चाणि जाणि य । बाहिराणि य सव्वाणि बज्झबज्झंतराणि य ॥ १८४० ॥
कण्हाणि अतिकण्हाणि जघण्णाणि य जाणि तु । मइच्चयाणि सव्वाणि आदेयाणि तवेव य ॥ १८४१ ॥
कण्हणीलपडीमागा टियामासा तवेव य । लुक्खाणि लुक्खलुक्खाणि णीहारा जे य कित्तिता ॥ १८४२ ॥
तधा णीहारणीहारा तधा पच्छिमदक्खिणा । तवेव पच्छिमाइं च तवेव पच्छिमुत्तरा ॥ १८४३ ॥
अप्पसण्णाणि जाणंगे अप्पसण्णतरा य जे । जे य पाण्डरा यामा वामा पण्डरा य जे ॥ १८४४ ॥
मंथावम्माणि जाणंगे अंगे(अग्गे)याणि किम्माणि य । परंपरकिम्माइं च तधा हुस्साणि जाणि य ॥ १८४५ ॥
तंमा जहण्णकाया य जघण्णतरका य जे । तणू परंपरतणू परमाणू अणू य जे ॥ १८४६ ॥

---

१ अन्नोन्नयाणि हं० त० ॥ २ °माणुत्तरा° हं० त० ॥ ३ आहारी णेयसव्वाणि पियाणि य विसेसतो । तधा पुर° हं० त० विना ॥ ४ उम्मट्ठा सि० ॥ ५ सुबुद्धि° हं० त० ॥ ६ कच्छा मच्छिमकाणि य सप्र० ॥ ७ परिमुत्ताणि स ३ पु० सि० ॥ ८ इस्सराणितराणि हं० त० ॥ ९ वामिस्सं सको प्पर° सप्र० ॥ १० सण्णाणि मडुकाणि च जाणित्तु अंगचितओ सि० ॥

गहणोपगहणा जे य तधा डहरचलाणि य । अणिस्सरा य पेस्सा य पेस्सभूया य अप्पिया ॥ १८४७ ॥
अंता दीणा य तिण्हा य वापण्णोपहुता य जे । अबुद्धिरमणा दुग्गंधा तधा अप्पपरिग्गहा ॥ १८४८ ॥
बंध-मोक्खा परक्का य सद्द-वातमणा य जे । अदंसणीया णिण्णा य गंभीरा दुविधा य जे ॥ १८४९ ॥
विसमाणि य तुच्छाणि विवरा दारुणा य जे । पत्थीणाई खराई च कुडिला चंडाणता य जे ॥ १८५० ॥
आयता सुद्दियाणिं च तिज्जजोणिगताणि य । [1]दुग्गट्ठाणाणि रुट्ठाणि तधा रोगमणाणि य ॥१८५१॥ 5
पयलाइताणि चंडंगम्मि तधा ओमत्थकाणि य । मताणि जाणि चंडंगम्मि तधा पूतीणि जाणि य ॥ १८५२ ॥
किलिट्ठाणि य जाणिं तु तधा णीयाणि जाणि य । तधा अण्णजणाणिं वा णिरत्थाणंतराणि य ॥ १८५३ ॥
जधा णपुंसकाणं तु फलं दिट्ठं सुभासुभं । तधा एतेसु सव्वेसु फलं बूया सुभासुभं ॥ १८५४ ॥ छ ॥

एवं समुचिता एते मणिणो तिण्णि रासयो । पुण्णाम-त्थी-णपुंसेहि [2]णिद्दिट्ठं च जहक्कमं ॥ १८५५ ॥
तत्थ जो दक्खिणा दीगो रासी अंगम्मि कित्तितो । सो तु सव्वो जधुद्दिट्ठो पुण्णामेहि समप्फलो ॥१८५६॥ 10
बितियो मज्झिमादीयो रासी पुव्वं पकित्तितो । सो वि सव्वो जधुद्दिट्ठो थीणामेहिं समप्फलो ॥ १८५७ ॥
ततितो [3]वामभागो तु जो रासी पुव्वकित्तितो । सो वि सव्वो जधुद्दिट्ठो णपुंसकसमप्फलो ॥ १८५८ ॥

एवमेते जधुद्दिट्ठा तिधा तिण्णि जधक्कमं । पुण्णाम-त्थी-णपुंसेहिं विण्णातव्वा समप्फला ॥ १८५९ ॥
मणीसमुच्चयो णाम अज्झायो तिविहप्फलो । सतसाहो सहस्सक्खो दारसवसहस्सिओ ॥ १८६० ॥
[.............................] महापुरिसदिण्णाए समक्खातो महामणी ॥ १८६१ ॥ 15
केवलं अंगविज्जाए मणिओ अत्थि दीवणो । अंग-स्सरविणिव्वत्तो अंगस्स रयणं मणि ॥ १८६२ ॥
मणिओ अंगहियं णिमित्तहियं तधा । ततियलोकहितयं तस्स णामं विधीयति ॥ १८६३ ॥
तं णियसज्झायरओ णियमाधारए णरो । अणण्णमतिमं दच्छो तरे वागरणोदधिं ॥ १८६४ ॥
णागतण्णुमसिरसं य णापुत्तं णासहस्सतं । ण अणातभूतं यायेज्जो भगवंतं महामणिं ॥ १८६५ ॥
एतमासज्ज हि णरो अणंतमतिचक्खुमं । अजिणो जिणसंकासो पचक्खं देवतं भवे ॥ १८६६ ॥ 20
हिता-ऽहिताण अत्थाणं दिव्वमाणुसकाण य । संपया-ऽणागता-ऽतीताण विण्णाया भवतंगवी ॥ १८६७ ॥
धियाधारो सूयी सूरो दच्छो सुप्पतिमाणवं । आमास-सद्द-रूवण्णू जिणो विय वियागरे ॥ १८६८ ॥

॥ णमो अरहंताणं । णमो सव्वसिद्धाणं । णमो भगवतीए महापुरिसदिण्णाय
अंगविज्जाय समुद्देसो भणिसव्वकारणणिद्देसो मणी णाम
नवमो अज्झाओ सम्मत्तो ॥ ९ ॥ छ ॥ 25

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं है० त० एव वर्तते ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः है० त० एव वर्तते ॥ ३ °भागी तु है० त० विना ॥
४ °तसति° है० त० विना ॥

[दसमो आगमणज्झाओ]

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णा
अंगविज्जाय आगमणणामाज्झायो। [तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामि]। तं जहा—तत्थ पंचविधं आगमणं जाणितव्वं
भवति। तं जधा—णिरत्थयं १ दंसणट्ठयाय २ विण्णासणट्ठयाय ३ ⊲ आयरणट्ठयाय ४ ⊳ अत्थत्थिकत्थताय चेति ५।

5 तत्थ वज्झामासे चलामासे तुच्छामासे कण्हामासे णिम्मज्जिते णिल्लिखिते कासिते खुधिते छुचिते पम्हुट्ठे
पपुट्ठे पंमुते अधोमुहे अवलोकिते अवसरिते ओलोकिते ओसारिते सव्वअसक्कारिते सव्वअसारगते तुच्छके रित्तके वा
कुंक्कयणायं वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णिरत्थकं आगतो सि त्ति बूया १। तत्थ हितयामासे णयणामासे मुमंतामासे
माता-पितु-भाउ-भगिणि-सोदेरी-मित्त-संबंधिगते सव्वमित्तगते सव्वदेवगते सव्वपेच्छागते सव्वरंगोवचरगते सव्वविचित्तगए
सव्वरूवगए सव्वबुद्धवण्णरागगते सव्वदंसणीयगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे दंसणट्ठयाय आगतो सि त्ति बूया २।
10 तत्थ संमुखुक्खेवणे अच्छिणि कासिते अंतोमुहे हसिते दरकडायं वा विज्जायं दरकडे वा सिप्पे दरकडे वा
उवकरणे दरसंलाविते वा सव्वदरकडे वा जूते वा अणवाए वा वादसंलावे वा सव्वमायागते सव्वउवधिगते वा सव्व-
चित्तविज्जागते वा सव्वपुच्छणत्थगते वा सव्वगहणगते वा सव्वअतिसंधणागते वा एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे विण्णा-
सणट्ठताय आगतो सि त्ति बूया ३। तत्थ पडिलोमेसु गतेसु विकूणिते ओट्ठणिकुंजणे सीसविकंपणे सव्ववालगते सव्व-
संबाधगते सव्वरोधगते सव्वविवादकडे ☞ सव्वविग्गहकडे ☜ कूडमासके कूडणाणके कूडलेक्खे कूडपाउब्भावे
15 वा पण्णे पुप्फे फले वा मल्ले वा भोयणे वा वत्थालंकारे वा सव्वकीड-किविल्लकपादुब्भावे वा एवंविहसद्द-रूव-
पादुब्भावे आयरणट्ठताय आगतो सि त्ति बूया ४। तत्थ अब्भंतरामासे ⊲ दंढामासे ⊳ णिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णा-
मासे पुण्णामधेज्जा ⊲ मासे ⊳ मुदितामासे सव्वआहारगते ... मल्ले वा भूसणे वा उज्जोगिते अभिहट्ठे अभिमहे
अब्भाइते पाउते परिहिते अणुलित्ते अलंकिते सेसग्गहणे जण्णबलिहरणे पुण्णामपहट्ठ-पसत्थ-परघ-मधुरगतपुप्फे वा
फले वा मल्ले वा भूसणे वा सव्वअत्थगते सव्वअत्थोपयारगते सव्वअत्थ... सव्ववहारगते सव्वसामिद्धिगते
20 सव्वअत्थभोयणगते एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे अत्थत्थिगताय आगतो सि त्ति बूया

तत्थ अत्थे पुच्छाधारिते सव्वमत्थं दुविधमाधारए—सज्जीवं १ अज्जीवं चेव २।
दढामासे अब्भंतरामासे णिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे मुदितामासे, तत्थ सव्वं सव्वचलामासे
पादुब्भावे सव्वसज्जीवपरामासे ⊲ सव्वसज्जीवसद्दगते ⊳ सव्वसज्जीवउवकरणपादुब्भावे सव्वसज्जीवगते सव्वसज्जीव-
सव्वसज्जीवउवकरणसद्दगते सव्वसज्जीवउवकरणणामधेज्जोदीरणे अंकुर-परोहगते पत्तुदग-पुप्फसज्जीवउवकरणपरामासे
25 पादुब्भावे सज्जीवं अत्थं बूया १। तत्थ पच्छामासे कण्हामासे लुक्खामासे मतामासे सव्व... गते एवंविधसद्द-रूव-
पगतगते सव्वअज्जीवपाउब्भावे सव्वअज्जीवपरामासे सव्वअज्जीवणामधेज्जोदीरणे सव्वपातंकुर-... जीवगते सव्वअज्जी-
पवालगते सव्वोसि रित्तपुप्फगते सव्वसरीरमायणगते धाउगए एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अज्जीवत्थं ... -पुप्फ फल-तय-
तत्थ सज्जीवे अत्थे पुच्छाधारिते सज्जीवमत्थं दुविधमाधारये—मणुस्सजोणिगतं चेव १ तिरियजो... बूया २।
तत्थ उद्धभागामासे मणुस्से उद्धमायगते सव्वमणुस्सपाउब्भावे सव्वमणुस्सपरामासे सव्वमणुस्ससद्दगते ...गतं चेव २। मणुस्सजाण-

१ ⊲ ⊳ एतदन्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ २ पम्मुते सं ३ पु०॥ ३ पाकं° हं० त० सि०॥ ४ °दरीए। —सि०॥ ५ °रंगोच° हं० त० सि०॥ ६ तस्सपुट्ठं पदायण्ण° हं० त० सि०॥ ७ °गुप्फगुप्फदो° हं० त० विना॥ ८ अ° हं० त० पु०॥ ९ °तिगुंज° हं० त० सि०॥ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ११ ⊲ ⊳ एतच्चिह्न° हं० त० नास्ति॥ १२ मुद्धा° हं० त०॥ १३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नगतो पाठो हं० त० नास्ति॥ १४ अप्पछायए पु° हं० त०॥ १५ तत्थ अत्थे पुच्छाधारे दो सज्जीवे हं० त०॥ १६ ⊲ ⊳ एतदन्तर्गतः पाठः हं० त० ... नास्ति॥ १७ पच्छामासे हं० त० सि०॥

धेज्जोदीरणे सव्वमणुस्सरूवागितिपादुब्भावे सव्वमणुस्सरूवागितिपरामासे ◁ [1]सव्वमणुस्सरूवागितिसद्दगते वा ▷ सव्वमणुस्सरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे मणुस्सं बूया १ । तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियविलोक्किते सव्वतिरिक्खजोणिपादुब्भावे सव्वतिरिक्खजोणीकपरामासे सव्वतिरिक्खजोणिकसद्दगते सव्वतिरिक्खजोणिकणामधेज्जोदीरणे सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिपाउब्भावे सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिपरामासे वा सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिसद्दगते वा सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणपादुब्भावे वा सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणपरामासे वा सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणसद्दगते वा सव्वतिरिक्खजोणियउवकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वतिरिक्खजोणिकथी-पुरिसणामधेज्जोदीरणे वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणिं बूया २ ।

तत्थ मणुस्से पुव्वाधारिते [2]अज्जो १ पेस्सो २ त्ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ ☞ [3]उद्धं णामीय गत्तेसु ☜ उद्धं णामीय गत्तोवकरणे सव्वअज्जसमाचारगते सव्वअज्ज[4]गते सव्वअज्जपादुब्भावे सव्वअज्जपरामासे सव्वअज्जसद्दगते [[5]सव्वअज्जणामधेज्जोदीरणे सव्वअज्जरूवागितिपादुब्भावे] सव्वअज्जरूवागितिपरामासे वा [6]सव्वअज्जरूवागितिसद्दगते सव्वअज्ज रूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा ☞ [7]सव्वअज्जउवगरणपाउब्भावे ☜ सव्वअज्जउवकरणपरामासे सव्वअज्जउवकरणसद्दगते सव्वअज्जउवकरणणामधेज्जोदीरणे वा सव्वअज्जथीपुरिसणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे अज्जं मणुस्सं बूया १ । तत्थ अधोणामीगत्तामासे अधोणाभीगत्तोपकरणे ☞ [8]सव्वपेस्सगते सव्वपेस्सोपयारगए ☜ सव्वपेस्सपादुब्भावे सव्वपेस्सपरामासे सव्वपेस्ससद्दगते सव्वपेस्सणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सरूवागितिपादुब्भावे सव्वपेस्सरूवागितिपरामासे सव्वपेस्सरूवागितिसद्दगते सव्वपेस्सरूवागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सउवकरणपादुब्भावे सव्वपेस्सउवकरणपरामासे सव्वपेस्सउवकरणसद्दगते सव्वपेस्सउवकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सथी-पुरिसणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे पेस्सं मणुस्सं बूया २ ।

तत्थ अज्जो पेस्से त्ति पुव्वमुपधारिते इत्थी १ पुरिसो २ त्ति पुणरविआधारयितव्वं भवति । तत्थ दाहिणामासे पुण्णामधेज्जगत्तामासे पुरिसपाउब्भावे पुरिसपरामासे पुरिससद्दगते पुरिसणामधेज्जोदीरणे पुरिसरूवागितिपाउब्भावे पुरिसरूवागितिपरामासे पुरिसरूवागितिसद्दगते पुरिसरूवागितिणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जोवकरणपाउब्भावे ☞ [9]पुरिसणामधेज्जोवकरणपरामासे ☜ पुरिसणामधेज्जोवकरणसद्दगते पुरिसणामधेज्जाउवकरणणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगतपादुब्भावे वा ☞ [10]पुरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगयपरामासे ☜ पुरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगतसद्दगते पुरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगतणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतपादुब्भावे पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतपरामासे पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतसद्दगते पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतणामधेज्जोदीरणे ☞ [11]पुरिसनामधेज्जधाउजोणिगयपाउब्भावे पुरिसनामधेज्जधाउजोणिगयपरामासे पुरिसनामधेज्जधाउजोणिगयसद्दगए ☜ पुरिसणामधेज्जधातुजोणिगतणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतपाउब्भावे ◁ [12]पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतपरामासे ▷ पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतसद्दगते पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतणामधेज्जोदीरणे सव्वपुरिसोवकरणे वा सव्वपुरिसोवचारगते वा पुण्णामधेज्जे पुप्फे वा फले वा भूसणे वा भायणे वा एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे पुरिसं बूया १ । तत्थ वामामासे थीणामधेज्जगत्तामासे थीपाउब्भावे थीपरामासे थीसद्दगते थीणामधेज्जोदीरणे थीरूवागितिपादुब्भावे ☞ [13]थीरूवागितिपरामासे ☜ ◁ [14]थीरूवागितिसद्दगते ▷ थीरूवागितिणामधेज्जोदीरणे थीरूवागितिउवकरणपाउब्भावे थीरूवागितिउवकरणपरामासे थीरूवागितिउवकरणसद्दगते थीरूवागितिउवकरणणामधेज्जोदीरणे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतपादुब्भावे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतपरामासे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतसद्दगते थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतणामधेज्जोदीरणे थीणामधेज्जधातुजोणिगतपादुब्भावे थीणा-

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ अस्सो पेस्से त्ति पुण हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ °गते चेव सव्व° हं० त० ॥ ५ चतुरस्रकोष्ठकगतः पाठः सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ ६ सव्वअज्जरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा सव्वमज्जरूवागिति सद्दगते इत्येवं व्यत्यासेन सर्वासु प्रतिषु पाठो वर्तते ॥ ७-८-९-१०-११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

मघेज्जधातुजोणिगतपरामासे ◁ [1]थीणामवेज्जधातुजोणिगतसद्दगते ▷ थीणामवेज्जधातुजोणिगतणामवेज्जोदीरणे ☞ [2]थीणामवेज्जपाणजोणिगयपाउब्भावे ☜ थीणामवेज्जपाणजोणिगतपरामासे थीणामवेज्जपाणजोणिगतसद्दगते थीणामवेज्जपाणजोणिगतणामवेज्जोदीरणे ☞ [3]थीणासवेज्जमूलजोणिगयपाउब्भावे ☜ थीणामवेज्जमूलजोणिगतपरामासे थीणामवेज्जमूलजोणिगतसद्दगते थीणामवेज्जमूलजोणिगतउपकरणणामवेज्जोदीरणे सव्वइत्थिसमायारगते इत्थीवेसगते इत्थीणामे
5 पुप्फे फले वा भूसणे वा भायणे वा एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे इत्थी बूया २ । इति सज्जीरा समणुगता ।

तत्थ दिव्वजोणिगते दिव्वत्थी-पुरिसपाउब्भावे वा परामासे [वा] सद्दगते वा णामवेज्जोदीरणे वा उपकरणगते वा दिव्वत्थी-पुरिसे एवंगतं जं भवति इति सज्जीवो अत्थि दिव्व-माणुसको थी-पुरिसगतो विण्णायव्वो भवति ।

तत्थ सज्जीवे अत्थे पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणिगते तिरिक्खजोणिगतं अत्थं तिविधमाधारये । तं जधा—चतुप्पदगतं १ पक्खिगतं २ परिसप्पगतं ३ चेति । तत्थ चउप्पदेसु चतुरस्सेसु चउक्केसु सव्वचउप्पयगते सव्वचउप्पयपादुब्भावे सव्व-
10 चउप्पयपरामासे सव्वचउप्पयसद्दगते सव्वचउप्पयणामवेज्जोदीरणे सव्वचउप्पयरूवागितिपादुब्भावे सव्वचउप्पदरूवागितिपरामासे सव्वचउप्पदरूवागितिसद्दगते सव्वचतुप्पदरूवागितिणामवेज्जोदीरणे सव्वचतुप्पदउपकरणपाउब्भावे सव्वचउप्पयउपकरणपरामासे सव्वचउप्पयउपकरणसद्दगते सव्वचउप्पयउपकरणणामवेज्जोदीरणे सव्वचउप्पय ☞ [4]थी-पुमंस ☜ णामवेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे चउप्पयगतं अत्थं संचिंतियं ति बूया १ । तत्थ उद्धं गीवाय सिरोमुहामासे उद्धं गीवा-सिरो-मुहोयकरणउज्जोगिते उस्सिते उच्चारिते उद्धंभागे सव्वपक्खिपाउब्भावे सव्वपक्खिपरामासे सव्वपक्खि-
15 सद्दगते सव्वपक्खिणामवेज्जोदीरणे सव्वपक्खिरूवागितिपाउब्भावे सव्वपक्खिरूवागितिपरामासे सव्वपक्खिरूवागितिसद्दगए सव्वपक्खिरूवागितिणामवेज्जोदीरणे सव्वपक्खिउवकरणपाउब्भावे सव्व[पक्खि]उपकरणपरामासे सव्वपक्खिउपकरणसद्दगए सव्वपक्खिउवकरणणामवेज्जोदीरणे ☞ [7]सव्वपक्खिणामवेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे पक्खिगयं सज्जीवं अत्थं बूया २ । तत्थ दीहेसु सव्वपरिसप्पपाउब्भावे सव्वपरिसप्प ☜ परामासे सव्वपरिसप्पसद्दगते सव्वपरिसप्पणामवेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्परूवागितिपाउब्भावे सव्वपरिसप्परूवागितिपरामासे सव्वपरिसप्प-
20 रूवागितिसद्दगते सव्वपरिसप्परूवागितिणामवेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्पउवगरणपाउब्भावे सव्वपरिसप्पउवगरणपरामासे सव्वपरिसप्पउवगरणसद्दगते सव्वपरिसप्पउवगरणणामवेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्पत्थि-पुरिसणामवेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे परिसप्पकतं सज्जीवं अत्थं बूया ३ ।

तत्थ तिरिक्खजोणिकते [अत्थे] पुव्वमाधारिते तिरिक्खजोणिकतं ☞ तिरिक्खं ☜ दुविधमाधारये—पुरिसो तिरिक्खजोणी १ इत्थी तिरिक्खजोणी २ । तत्थ दक्खिणामासे पुण्णामवेज्जामासे पुरिसपादुब्भावे पुरिसपरामासे पुरिससद्दगते
25 पुरिसणामवेज्जोदीरणे पुरिसरूवागितिपाउब्भावे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे पुरिसं तिरिक्खजोणिगतं बूया १ । तत्थ वामामासे सरीरत्थीणामवेज्जामासे सरीरत्थीणामवेज्जोदीरणे ◁ [8]इत्थीपादुब्भावे ▷ इत्थीपरामासे इत्थिसद्दगते इत्थीणामवेज्जोदीरणे इत्थिरूवागितिपादुब्भावे इत्थिसमायारगते इत्थीवेसगते एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे इत्थीतिरिक्खजोणिगतं बूया २ । जधा मणुस्सेसु थी-पुरिस-णपुंसकप्पविभागो तधा तिरिक्खजोणीयं पि आमास-सद्द-रूवपविभागेहिं [9]पुव्वुदिट्ठेहिं णातव्वं भवति । इति सज्जीवो अत्थो विण्णेयो ।

30 तत्थ अज्जीवे अत्थे पुव्वमाधारिते अज्जीवमत्थं तिविधमाधारये । तं जहा—पाणजोणिगतं १ मूलजोणिगतं २ धातुजोणिगतं ३ चेति । तत्थ चलामासे ◁ [10]सव्वपाणजोणिपरामासे ▷ सव्वपाणजोणिपादुब्भावे सव्वपाणजोणिगतपरामासे सव्वपाणजोणिगतसद्दगते सव्वपाणजोणिगतणामवेज्जोदीरणे सव्वपाणजोणिथी-पुरिसगते पाणजोणिमयं अज्जीवं बूया

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २-३-४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गत-पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ °णिगए हं० त० ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ८ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ पुंवुदिट्ठे° सं ३ पु० ॥ १० ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० सि० नास्ति ॥

१। तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणिगते सव्वधातुजोणिपाउब्भावे सव्वधातुजोणिगतपरामासे ☞ सव्वधातुजोणिगयसद्दगए ☜ सव्वधातुजोणिगतणामधेज्जोदीरणे सव्वधातुमये वा उवकरणे सव्वधातुजोणीथी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे धातुजोणिगतं अज्जीवमत्थं बूया २। तत्थ गहणेसु केस-मंसु लोमगते सव्वमूलजोणिपादुब्भावे सव्वमूलजोणिपरामासे सव्वमूलजोणिसद्दगते ◁ सव्वमूलजोणिणामधेज्जोदीरणे ▷ सव्वमूलजोणिमए उवकरणे सव्वमूलजोणिगए णामधेज्जे उवकरणे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे थी-पुरिसगयं अत्थं अज्जीवं बूया ३। ◁ तत्थ पाणजोणिगतणामधेज्ज-उवकरणे * एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे णपुंसकगतं * अत्थं अज्जीवं बूया। ▷

तत्थ पाणजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतं अत्थं दुविधमाधारए—आहारगतं उवकरणगतं चेव १ मूलजोणिगतं उवगरणगतं चेव २। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आहार-मुह-गीवाय दंतोट्ठे गंडे कवोल-जिब्भ-तालुके परसपदे सहितय-कुक्खि-उदरपरामासे उंद्धित्ते परिलीढे णिग्गिण्णे अस्साविते संस्साविते सव्वभोयणगते सव्वपाणगते सव्वपाण-भोयणभायणगते सव्वआहारगते पुप्फ-फले पत्त-पवाले भक्खपक्खिसचतुप्पदे परिसप्पगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे पाणजोणिगतं अंज्जीवआहारगतं अत्थं बूया। तत्थ सव्वउवगरणगते सव्वकारुकगते सव्वसिप्पिगते सव्वअंण्णाहारगते पाणजोणिगतं अज्जीवउवकरणगतं अत्थं बूया १। तत्थ पाणजोणिमये आहारगते अज्जीवमत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतो अज्जीवो आहारगतो अत्थो दुद्धं दधिं णवणीतं तक्कं घंतं मांसं वसा मज्जमिति, इति पाणजोणिगतो अत्थो आहारगतो त्ति बूया। तत्थ पाणजोणिगते अज्जीवे उवकरणगते अत्थे पुव्वमाधारिते अज्जीवो पाणजोणिगतो उवकरणगतो अत्थो अंट्ठिगतो दंतगओ सिंगगतो चम्मगतो ण्हायुगतो लोमगतो वालगतो तंतुगतो सोणियगतो चेति, इति पाणजोणिगतो उवकरणगतो अज्जीवो अत्थो २।

तत्थ धातुजोणिगते अत्थे ☞ पुंव्वमाधारिए धातुजोणिगयं अत्थं दुविहमाहारए—अग्गेयं १ अणग्गेयं २ चेति। तत्थ सव्वअग्गेयेसु उण्हेसु सव्वअग्गिपाउब्भावे सव्वअग्गिपरामासे सव्वअग्गिसद्दगए सव्वअग्गिणामधिज्जोदीरणे सव्वरत्तेसु सव्वअग्गिजीवणेसु सव्वअग्गिजीवणोपकरणेसु य अग्गेयं बूया १। तत्थ सव्वअणग्गेएसु सव्वसीयलेसु सव्वउवकतरेसु (सव्वउवकरणेसु) सव्वअणग्गिजीवणेसु अणग्गेयोवजीवणोवकरणेसु य अणग्गेयं धाउजोणिगयं अत्थं बूया २। तत्थ अग्गेये धाउजोणिगए अत्थे पुव्वमाहारिए सव्वलोहाणि खारलोहाणि अग्गेयं च मणिधाउकयं बूया। ☜ तत्थ अणग्गेये धातुजोणिगते अत्थे पुव्वाधारिते अणग्गेयं धातुजोणिगतं वण्णधातुगतं कढिणधातुगतं अत्थं पुढविधातुगतं अणग्गेयं च मणिधातुगतं रसधातुगतं बूया। इति धातुजोणिगतो अणग्गेयो ◁ अंग्गेयो ▷ यें दुविधो अत्थो भवति।

तत्थ मूलजोणिगते अत्थे पुव्वाधारिते मूलजोणिगतं अत्थं तिविधमाधारये—मूलगतं १ खंधगतं २ अग्गगतं ३ चेति। तत्थ अधोभागेसु अधेणामीय उवकरणे सव्वमूलजोणिपाउब्भावे सव्वमूलजोणिपरामासे सव्वमूलजोणिसद्दगते सव्वमूलजोणीणामधेज्जोदीरणे सव्वमूलजोणिउवकरणपादुब्भावे सव्वमूलजोणिउवकरणपरामासे सव्वमूलजोणिउवगरणसद्दगते सव्वमूलजोणिउवकरणणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे मूलगतं अत्थं बूया १। तत्थ सव्वसमाणे सव्व-

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ २-३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ ४ * * पुष्पान्तर्गतः पाठः सि० एव वर्त्तते। सं ३ पु० प्रतिषु रिक्तं स्थानं वर्त्तते॥ ५ उट्ठक्खिप परि° हं० त०॥ ६ संसाविते हं० त० विना॥ ७ अज्जीवं आहा° हं० त०। अज्जीवमाहा° सि०॥ ८ °यणाहार° हं० त० विना॥ ९ °णिगते आहा° हं० त०॥ १० घतमासवमांसमधुमिति हं० विना॥ ११ उत्थिगतो हं० त०॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते। सं ३ पु० सि० प्रतिषु पुनरेतत्स्थाने पुव्वमाधारिते धातुजोणिगणेसु य अणग्गेयं धातुजोणिगतं अत्थं बूया। तत्थ अग्गेये धातुजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते सव्वलोहाणि खारलोहाणि खारलोणादि अग्गेयं च मणिधातुकं बूया। तत्थ अणग्गेये इति रूपः पाठो वर्त्तते॥ १३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति॥ १४ य सव्वदुविओ अत्थो हं० त०॥

समाणोपकरणेसु सव्वसमभागोपलद्धीयं सव्वसंधगते सव्वसंधपाउब्भावे सव्वसंधपरामासे सव्वसंधसद्दगते सव्वसंधणामधेज्जोदीरणे सव्वसंधईक्खासोवलद्धीयं सव्वसमभागोवलद्धीयं सव्वसंधमये उवकरणे सव्वसंधोवकरणे एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे संधगयं बूया २ । तत्थ उद्धंभागेसु उद्धंगत्तोपकरणे सव्वपुप्फ-फल-[पत्त]पादुब्भावे सव्वपुप्फ-फल-पत्तपरामासे सव्वपुप्फ-फल-पत्तसद्दगते सव्वपुप्फ-फल-पत्तणामधेज्जोदीरणे सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणपाउब्भावे सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणपरामासे ☞ सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणसद्दगए ☜ सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अग्गगतं मूलजोणिगतं अत्थं बूया ३ । इति मूलजोणिगतो तिविधो अत्थो भवति ।

तत्थ चलेसु णट्ठं वा पावासिकं वा आतुरं वा बूया—तत्थ अब्भंतरे चलेसु णट्ठं बूया, बाहिरेसु चलेसु पावासिकं बूया, विमॅज्झेसु चलेसु आतुरं बूया । बद्धेसु बद्धं बूया । मोक्खेसु मोक्खं बूया । तत्थ हियय-कुक्खि-णाभि-उदर-उच्छंग-पोरुस-अंगुट्ठक-कणेट्ठिकापरामासे पयं पयं अंतरेण पुच्छिंतुं आगतो सि त्ति बूया । पुण्णामोपलद्धीयं पुत्तं बूया । थीणामोवलद्धीयं दारिकं बूया । पुण्णामधेज्जेसु पुरिसं अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । थीणामधेज्जेसु इत्थीमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । दढेसु सारिकोपकरणमंतरेण [पुच्छिउं] आगओ सि त्ति बूया । कण्हेसु सारिकोपकरणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । संचेसु रत्तोपलद्धीयं च सुवण्णकं बूया । सुक्केसु सारवंतेसु य मज्झकं बूया । सव्वधणोपलद्धीयं धणं बूया । गिरत्थकेसु गिरत्थकं बूया । तत्थ णिद्धेसु कूवं वा णदिं वा समुद्दं वा पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया—तत्थ उव्विद्धेसु कूवं बूया, दीहेसु णदिं बूया, महापरिग्गहेसु परिक्खेवेसु य समुद्दं बूया । तत्थ कसेसु सुत्तं वा अच्छादणं वा कसं वा थी-पुरिसं अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । तत्थ कसेसु अज्जवेसु केस-मंसु-लोमगते सुत्तं वा तंतुं वा वितत्तं वा बूया । तत्थ वत्थे वित्थते परिहिते पाउते वेट्ठणे वा अच्छादणं बूया । तत्थ सज्जीवेसु पुण्णामेसु पुरिसं बूया । थीणामेसु सज्जीवेसु इत्थिकं बूया । णपुंसके णपुंसकं बूया । तत्थ थलेसु उण्णतेसु पव्वयं वा पासायं वा उण्णतं बूया । तत्थ गहणेसु रण्णं बूया । उवग्गहणेसु आरामं बूया वणरासिं वा बूया । परिमंडलेसु भायणं बूया । पुधूसु य पुधविं वा निलंजं वा बूया । जण्णेयेसु य जण्णं वा वाधेज्जं वा बूया । अग्गेयेसु अग्गी बूया । णिद्धेसु उदगं वा तुट्ठिं वा आहारं वा बूया—उवरिट्ठिमेसु णिद्धेसु वासं बूया, समभागेसु णिद्धेसु आहारं बूया, अधेभागेसु णिद्धेसु उदगं बूया । चतुरस्सेसु चउप्पयं वा खेत्तं वा बूया । वेंज्झेसु पावासिकं बूया । बज्झेसु परस्स अत्थाय पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । पुरिमेसु अप्पणो अत्थाय पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । बज्झंतरेसु अप्पणो य परस्स य अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । पुरिमेसु अणागतं बूया । पच्छिमेसु अतियत्तं बूया । वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणं बूया । मतेसु मतं वा मतकप्पं वा बूया । लुक्खेसु चारिकमंतरेणं पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । सेतेसु णिद्धेसु य रुप्पं बूया । चउरंसेसु णिद्धेसु चित्तेसु दढेसु य कादावणं बूया । किण्हेसु अंसकोवकरणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । सामेसु आभरणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । दीहेसु दवियमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । हस्सेसु पुप्फ-फलमंतरेण पुच्छिउं आगओ सि त्ति बूया । रमणीयेसु ईरिणं वा भट्ठं वा रमणिज्जं वा देसं बूया । मुदितेसु उस्सयं वा समायं वा अंतरेणं पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । दीणेसु उवसग्गसलद्धं अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । पुण्णेसु पसण्णेसु उस्सयं वा वारेज्जं वा बूया । उद्धंभागेसु दिव्वजोणिगतं बूया । कण्णपट्टे सव्ववादणगते चतुप्पदगतं वा अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । तिक्खेसु जोग-क्खेमं बूया । तत्थ केस-मंसु-लोमगते मूलजोणिगतं अत्थमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । अणूसु सव्वधन्नगतं बूया । सामेसु संपयोगेसु मेधुणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । वंभेयेसु वंभणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया ।

---

१ °संधगते हं० त० विना ॥ २ °इक्खासो स ३ पु० ॥ ३ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ४ °सु णिद्धं पा° हं० त० विना ॥ ५ विमहिसु सप्र० ॥ ६ °च्छितुज्जे आ° सप्र० ॥ ७ पण्णेसु या पाया° हं० त० ॥ ८ ईरिणं हं० त० ॥

☞ खत्तेयेसु खत्तियमंतरेण पुच्छिउं, आगतो सि त्ति बूया। ☜ वेस्सेज्जेसु वेस्समंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। सुद्देज्जेसु सुद्दमंतरेणं पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। बालेयेसु बालमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। जोव्वणत्थेसु जोव्वणमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। मज्झिमवयेसु मज्झिमवयमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। महव्वयेसु महव्वयमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। उत्तमेसु उत्तमं बूया। उत्तमसाधारणेसु उत्तम-साधारणं बूया। मज्झिमेसु मज्झिमं बूया। मज्झिमसाधारणेसु मज्झिमसाधारणं बूया। जघण्णेसु जघण्णं बूया। 5 जघण्णसाधारणेसु जघण्णसाधारणं बूया। पुरत्थिमेसु अभिकंखितं बूया। पच्छिमेसु उवभुत्तं बूया। वामदक्खिणेसु उवभुज्जमाणं अत्थं अंतरेण अत्थं पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया। एवं सव्वेसु आमासेसु अंतरंगे बाहिरंगे य अधापडिरूवेण सद्द-रूव-गंध-फास-रसगतेण सव्वं समणुगंतव्वं भवति ॥

॥ आगमणो नामऽज्झायो दसमो सम्मत्तो ॥ १० ॥ छ ॥

[एकादसमो पुच्छितज्झाओ] 10

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पुच्छितं णामाज्झातं। तं खलु भो! तमणुवक्खयिस्सामि। तं जहा—अप्पाणं ताव दसधा परिक्खेज्ज। तं जधा—दिट्ठतं १ दीणतं २ आतुरतं ३ आरोग्गतं ४ कुद्धतं ५ पसण्णतं ६ छाततं ७ पीणियततं ८ एकग्गमणतं ९ विखित्तमणतं १० चेति।

तत्थ हिट्ठे अप्पणि पहिट्ठमत्थं यागरे। दीणे अप्पणि दीणमत्थं अणेव्वाणिं च वियागरे। कुद्धे अप्पणि वाधिं 15 कलहं च वियागरे। पसण्णे अप्पणि सम्मोई संपीतिं च वियागरे। आतुरे अप्पणि आतुरं उवहुतं च वियागरे। आरोग्गे अप्पणि आरोग्गं वियागरे। छाते अप्पणि दुब्भिक्खं तत्थ णिद्दिसे। पीणिते अप्पणि धातकं अण्णलाभं च वियागरे। एकग्गमणसे अप्पणि मणोणिव्वुतिं मणोतुट्ठिं च वियागरे। विक्खित्तचित्ते अप्पणि विक्खित्तचित्तभावं अप्पसण्णभावं अत्थहाणिं च वियागरे॥ छ ॥

अतो परं परस्स पुच्छितं वक्खाइस्सामो। तं जधा—गच्छंतो वा पुच्छेज्ज, ☞ ठिओ वा पुच्छेज्ज, कुडुको वा 20 पुच्छेज्ज, परिसक्कंतो वा पुच्छेज्ज, ☜ उवेसंतो वा पुच्छेज्ज, णिवण्णो वा पुच्छेज्ज, अप्पत्थद्धो वा पुच्छेज्ज, ☞ अण-वत्थद्धो वा पुच्छेज्ज, ☜ उच्चासणगतो वा पुच्छेज्ज, णीयासणगतो वा पुच्छेज्ज, पुरतो वा पुच्छेज्ज, पच्छतो वा पुच्छेज्ज, वामतो वा पुच्छेज्ज, दक्खिणतो वा पुच्छेज्ज, अभिमुहो वा पुच्छेज्ज, परम्मुहो वा पुच्छेज्जा, उवसक्कंतो वा पुच्छेज्ज, ☞ अवसक्कंतो वा पुच्छेज्ज, ☜ संहरंतो वा गत्ताणि पुच्छेज्ज, विसियंतो वा गत्ताणि पुच्छेज्ज, उट्ठिंतो वा पुच्छेज्ज, ओणमंतो वा पुच्छेज्ज, उण्णमंतो वा पुच्छेज्ज, उत्तरंतो वा पुच्छेज्ज, आरुहंतो वा पुच्छेज्ज, विणमंतो वा पुच्छेज्ज, णीहरंतो 25 वा पुच्छेज्ज, पल्लत्थीकाकतो वा पुच्छेज्ज, पक्खपेंडकतो वा पुच्छेज्ज, कासमाणो वा पुच्छेज्ज, छीयमाणो वा पुच्छेज्ज, पयलायमाणो वा पुच्छेज्ज, णिस्सिंघेमाणो वा पुच्छेज्ज, णिट्ठुभंतो वा पुच्छेज्ज, णिस्ससंतो वा पुच्छेज्ज, जंभायमाणो वा पुच्छेज्ज, छेलंतो वा पुच्छेज्ज, पवहंतो वा पुच्छेज्ज, रोदंतो वा पुच्छेज्ज, हसंतो वा पुच्छेज्ज, आहारेमाणो वा पुच्छेज्ज, छड्डेमाणो वा पुच्छेज्ज, सक्कारेमाणो वा पुच्छेज्ज, असक्कारेण वा पुच्छेज्ज, भिउडीय वा पुच्छेज्ज, मुट्ठिं

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥ २ आगमणोऽज्झाओ ॥ छ ॥ हं॰ त॰ विना ॥ ३ दिट्ठयं दीणयं आउरयं आरोग्गयं कुद्धयं पसण्णयं छायय़ं पीणियं एकग्गमणयं विक्खित्तमणयं चेति हं॰ त॰ ॥ ४ °ग्गं णिरुयद्दयं वियागरे। छाते अप्पणि विच्छायं दुब्भि° सि॰ ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥ ८ पलायमाणो हं॰ त॰ विना ॥ ९ छलयंतो हं॰ त॰ विना ॥ १० छड्डेमाणो हं॰ त॰ विना ॥

वा करेमाणो पुच्छेज्ज, मुत्तं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, पुरीसं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, वातं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, पवंतो वा पुच्छेज्ज, सव्वेसु वा जाण-वाहणेसु संतो पुच्छेज्ज, कोट्ठके वा संतो पुच्छेज्ज, अंगणे वा संतो पुच्छेज्ज, असंजरमूले वा पुच्छेज्ज, गब्भगिहे वा पुच्छेज्ज, अब्भंतरगिहे वा पुच्छेज्ज, भत्तगिहे वा पुच्छेज्ज, वच्चगिहे वा पुच्छेज्ज, णकूडे वा पुच्छेज्ज, उदगगिहे वा पुच्छेज्ज, अग्गिगिहे वा पुच्छेज्ज, रुक्खमूले वा पुच्छेज्ज, भूमिगिहे वा पुच्छेज्ज, विमाणे वा पुच्छेज्ज, गगगतो वा पुच्छेज्ज, चत्वरे वा पुच्छेज्ज, संवीसु वा पुच्छेज्ज, समरे वा पुच्छेज्ज, फलिहतोरणे वा पुच्छेज्ज, पागारे वा पुच्छेज्ज, चरिकासु वा पुच्छेज्ज, वेतीसु वा पुच्छेज्ज, गयवारीसु वा पुच्छेज्ज, संकमेसु वा पुच्छेज्ज, ☞ संयणेसु वा पुच्छेज्ज, ☜ वलभीसु वा पुच्छेज्ज, ☞ रासीसु वा पुच्छेज्ज, ☜ पंसुसु वा पुच्छेज्ज, गिहमणेसु वा पुच्छेज्ज, णिकूडेसु वा पुच्छेज्ज, फलिहायं वा पुच्छेज्ज, पावीरे वा पुच्छेज्ज, पेढिकासु वा पुच्छेज्ज, मोहणगिहे[3] वा पुच्छेज्ज, ओसरे वा पुच्छेज्ज, संकमे[4] वा पुच्छेज्ज, सोमाणत्थगतो वा पुच्छेज्ज, अब्भंतरपरियरणे[5] वा पुच्छेज्ज, वाहिरायं दुवारसालायं वा पुच्छेज्ज, बाहिरायं वा गिहदुवारवाहायं पुच्छेज्ज, उवट्ठाणजालगिहे वा पुच्छेज्ज, अच्छणके वा पुच्छेज्ज, सिप्पगिहे वा पुच्छेज्ज, कम्मगिहे वा पुच्छेज्ज, रयतगिहे वा पुच्छेज्ज, [6]ओधिगिहे वा पुच्छेज्ज, ⊲ उप्पल(उपल)गिहे वा पुच्छेज्ज, ⊳ हिमगिहे वा पुच्छेज्ज, आदंसगिहे वा पुच्छेज्ज, तलगिहे वा पुच्छेज्ज, [8]आगमगिहे वा पुच्छेज्ज, चतुक्कगिहे वा पुच्छेज्ज, रच्छागिहे वा पुच्छेज्ज, दंतगिहे वा पुच्छेज्ज, कंसगिहे वा पुच्छेज्ज, पडिकम्मगिहे वा पुच्छेज्ज, कंकसालायं वा पुच्छेज्ज, आवसगिहे वा पुच्छेज्ज, पणियगिहे वा पुच्छेज्ज, आसणगिहे वा पुच्छेज्ज, भोयणगिहे वा पुच्छेज्ज, रसोवागिहे वा पुच्छेज्ज, हयगिहे वा पुच्छेज्ज, रथगिहे वा पुच्छेज्ज, गयगिहे वा पुच्छेज्ज, पुप्फगिहे वा पुच्छेज्ज, जूतगिहे वा पुच्छेज्ज, पाणयगिहे वा पुच्छेज्ज, मलिणगिहे वा पुच्छेज्ज, वंजणगिहे वा पुच्छेज्ज, ☞ जाणगिहे वा पुच्छेज्ज, ☜ जाणगिहे वा संतो पुच्छेज्ज ॥ ८ ॥

अभिमुहो वा पुच्छेज्ज अभिमुहमप्पणीयकं अणागतं अत्थं चिंतेसि त्ति बूया । परम्मुहो पुच्छेज्ज अप्पणीयकं अत्थं परम्मुहं अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । उन्नमंतो पुच्छेज्ज अत्थो खिप्पं भविस्सति त्ति बूया । अवसक्कंतो पुच्छेज्ज अत्थो खिप्पं ण भविस्सति त्ति बूया । अवणमंतो पुच्छेज्ज अत्थो खिप्पं विणस्सिहिति त्ति बूया । संहरमाणो अंगाणि पुच्छेज्ज संजोगं वा समागमं वा अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । विक्खिवमाणो अंगाणि पुच्छेज्ज विप्पयोगमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । उट्ठेंतो पुच्छेज्ज चलमत्थमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । निसेमंतो पुच्छेज्ज धुवत्थावरमत्थमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । उण्णमंतो पुच्छेज्ज विवद्धीमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । ओणमंतो पुच्छेज्ज हाणीमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । आकमंतो पुच्छेज्ज आगमेस्सो अत्थो भविस्सति त्ति बूया । उत्तरंतो पुच्छेज्ज आयायमंतरेणं पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । विणामेंतो अंगाणि पुच्छेज्ज दुक्खा अत्थो भविस्सति त्ति बूया । णीहरेंतो अंगाणि पुच्छेज्ज निग्गमलंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । पहरियफासंपउत्तो पुच्छेज्ज बंधं वा पवासममंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । पवग्गेहाय पुच्छेज्ज अत्थहाणीमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । निट्ठुभमाणो पुच्छेज्ज अनिसममंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । खीमसंतो पुच्छेज्ज आयाममंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । जंभायमाणो पुच्छेज्ज खंडयमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पचलायमाणो पुच्छेज्ज अत्थं दुक्खं अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पसवेंतो पुच्छेज्ज अत्थविणासमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । रोवंतो पुच्छेज्ज पियं पावं अंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया ।

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ °गिहेसु वा हं० त० ॥ ४ संकामे वा मो० पु०। संकडे वा सि० ॥ ५ °परियरणे हं० त० ॥ ६ उयगिहे हं० त० ॥ ७ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ आगमगिहे हं० त० सि० ॥ ९ वंजणगिहे हं० त० सि० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

हसंतो पुच्छेज्ज रतीसंपयुत्तं अत्थमंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । आहारेमाणो पुच्छेज्ज ☞ [1]भागविवद्धिमंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । छदेमाणो पुच्छेज्ज हाणीसंपयुत्तं अत्थं पुच्छसि त्ति बूया । सक्कारेण पुच्छेज्ज खिप्पं सुहेण अत्थं पाविहिसि त्ति बूया । असक्कारेण पुच्छेज्ज दुक्खेणं अत्थं ण पाविहिसि त्ति बूया । भिउडी करेमाणो पुच्छेज्ज कोवमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । सुद्धिं करेमाणो पुच्छेज्ज संजोगमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । ☜ मुत्तं करेमाणो पुच्छेज्ज पयाअपायमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पुरीसं करेमाणो पुच्छेज्ज अत्थावायमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । वातं करेमाणो पुच्छेज्ज मतं वा मतकप्पं वा अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । वंदंतो पुच्छेज्ज इस्सरियं वा उवचयं वा अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । कोट्ठए पुच्छेज्ज णिग्गमं अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । अंगणे पुच्छेज्ज महाजणमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । णिकूडे पुच्छेज्ज अरहस्ससंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । ◁[2] उदरगिहे पुच्छेज्ज आरोग्ग-हास-सिणेहसंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । गब्भगिहे पुच्छेज्ज णिव्वुती-रतीसंपउत्तमत्थमंतरेण त्ति बूया । भग्गगिहे पुच्छेज्ज अणिव्वुतिमंतरेणं ति बूया । [3]अग्गिगिहे पुच्छेज्ज सरीरपरितावणमंतरेणं ति बूया । ▷ रुक्खमूले पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेण पसत्थमत्थमंतरेण य त्ति बूया । भूमिगिहे पुच्छेज्ज अरहस्स[4]मत्थमंतरेणं ति बूया । विमाणे पुच्छमाणो सुहमत्थमंतरेणं ति बूया । गगणे संतो पुच्छेज्ज अव्वत्तमत्थमंतरेणं ति बूया । उवलगिहे पुच्छेज्ज णिसुं[5]हमंतरेणं ति बूया । णरविवुद्धवाहणे पुच्छेज्ज इस्सरियमंतरेणं ति बूया । सयणासणगतो पुच्छेज्ज सोक्खमंतरेणं ति बूया । रासीसु विपुलइस्सरिय-आधिपच्चकारणलाभायं पुच्छसि त्ति पाविहिसि त्ति बूया । वियडप्पकासे पुच्छेज्ज दुरुववण्णमत्थं ति बूया । रायपधे पुच्छेज्ज चलं महाजणसाधारणं[6] रायत्थमंतरेणं ति बूया । सिंघाडग-चच्चरेसु पुच्छेज्ज चतुप्पदरूवचारी[7]मंतरेणं ति बूया । दुवारे पुच्छेज्ज पुरिसस्स णिग्गमणमंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । खेत्ते पुच्छेज्ज पच्छण्णं पलायमंतरेणं ति बूया । अट्टालए पुच्छेज्ज भयमंतरेणं ति बूया । [8]गयवारीय पुच्छेज्ज सत्तुभयमंतरेणं ति बूया । संधिसमरेसु पुच्छेज्ज ◁ देसंतो ▷[9] देसंतरगमणमंतरेणं ति बूया । सयणे संतो पुच्छेज्ज भज्जामंतरेणं ति बूया । वलभीसु दंसणीयरतिविहारसंपयुत्तं अत्थमंतरेणं ति बूया । उदगपधेसु अमणुण्णणिरासससंपयुत्तमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पयेसु पुच्छेज्ज दुप्पावणीयं रायत्थं पुरिससंपयुत्तं ति बूया । रासीसु पुच्छेज्ज सरीरअभिवद्धिमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । वप्पेसु सुभिक्खमंतरेणं ति बूया । णिद्धमणेसु पुच्छेज्ज अमणुण्णमत्थमंतरेणं ति बूया । फलिहासु पुच्छेज्ज रायमंतरेणं ति बूया । पउलीसु पुच्छेज्ज सिद्धदुवारमंतरेणं ति बूया । कोट्ठके पुच्छेज्ज णीहारपावासिकणिग्गमणमंतरेणं ति बूया । अरसमोहणके पुच्छेज्ज मोहणमंतरेणं ति बूया । ओसरकेसु पुच्छेज्ज बाहिरसाधारणं ति बूया । मंचिकासु पुच्छेज्ज वेस्समंतरेणं ति बूया । सोवाणेसु पुच्छेज्ज अद्धाणमंतरेणं ति बूया । ☞ [10]खंभेसु पुच्छेज्ज थावरमंतरेणं ति बूया । ☜ अब्भंतरदुवारे पुच्छेज्ज आगमणसंरोध[मंतरे]णं ति बूया । बाहिरदुवारे पुच्छेज्ज णिग्गमणमंतरेणं ति बूया । दुवारसालाय बाहिराय पुच्छेज्ज पुरुसअब्भंतरघरप्पवासागमणपतिपुत्तलाभं च त्ति बूया । अब्भितरे विरहे णिग्गमणं, बाहिरे ◁ [11]दुवारे ▷ दुवारबाहायं खिप्पं पवासागमणं, गब्भिणीय य पजायणं ति बूया । अब्भितरगिहे पुच्छेज्ज गोज्झरतिसंपयोगमंतरेणं ति बूया । चतुरस्सके पुच्छेज्ज पाणरतिविहारसंपयुत्तं ति बूया । जलगिहे [12]हासमुहविहारमंतरेणं पुच्छसि त्ति बूया । महाणसगिहे पुच्छेज्ज वि[13]प्पवंचणासंपयुत्तं ति बूया । अच्छणके पुच्छेज्ज कम्मणि[14]च्छेदणं बूया । सिप्पगिहे पुच्छेज्ज विज्जालाभमंतरेणं ति बूया । कम्मगिहे पुच्छेज्ज[15] कम्मारंभमंतरेणं ति बूया । रयणगिहे पुच्छेज्ज रज्जाभिसेकछायाभिगमणमंतरेणं ति बूया । भंडगिहे पुच्छेज्ज संचयमंतरेणं ति बूया । ओसधगिहे पुच्छेज्ज सरीरसंजावमंतरेणं ति बूया । उपलगिहे पुच्छेज्ज गुरुचलसंसितं अत्थमंतरेण ति बूया । हिमगिहे पुच्छेज्ज णेव्वाणिसंसितं अत्थमंतरेणं ति बूया । चित्तगिहे मणोवितक्कामंतरेणं ति पुच्छसि

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ २ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ३ भग्गगिहे सं ३ पु० । अभिगिगहे सि० ॥ ४ °स्समंत° हं० त० ॥ ५ णिमुदुमंत° हं० त० ॥ ६ °जणसाधा° हं० त० सि० ॥ ७ °रूवधारी° हं० त० ॥ ८ गयचारीय हं० त० ॥ ९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १२ हासमुह° हं० त० विना ॥ १३ विप्पवंचणा° हं० त० ॥ १४ °णिच्छेदणं हं० त० विना ॥ १५ °ज्ज महप्पभावमंत° हं० त० विना ॥

त्ति बूया। आदंसगिहे पुच्छेज्ज महप्पभावमंतरेणं ति बूया। छतागिहे पुच्छेज्ज थीरतीसंपयोगमंतरेणं ति बूया। आगम्मगिहे पुच्छेज्ज भयसरतिसंपयुत्तं ति बूया। घतुकगिहे पुच्छेज्ज असारसंतावमंतरेणं ति बूया। जाणगिहे पुच्छेज्ज रायत्थविवद्धिमंतरेणं ति बूया। दगकोट्ठगे पुच्छेज्ज उत्तममहाजणसुहसंपयोगमंतरेणं ति बूया। कोसगिहे पुच्छेज्ज अत्थयघासमंतरेणं ति बूया। पडिकम्मगिहे पुच्छेज्ज तरुणसंपयोगमंतरेणं ति बूया। कंकसालायं पुच्छेज्ज सरीरविसुद्धिमंतरेणं ति 5 बूया। आतवगिहे पुच्छेज्ज विजयं वा हासदुक्खपरिमोक्खं व त्ति बूया। पणियगिहे पुच्छेज्ज पाणधारणं आयुप्पमाणं व त्ति बूया। पाणगिहे पुच्छेज्ज पमादं वा विब्भमं व त्ति बूया। आसणगिहे पुच्छेज्ज ठाणमंतरेणं ति बूया। भोयणगिहे पुच्छेज्ज बलविवद्धिं आरोग्गं च अंतरेणं ति बूया। सयणगिहे पुच्छेज्ज सरीरोवचयमंतरेणं ति बूया। हयगिहे पुच्छेज्ज पंथगमणनिस्सरियसाधारणं ति बूया। गयसालायं पुच्छेज्ज संगामविजयसाधारणं रायमंतरेणं ति बूया। वत्थगिहे पुच्छेज्ज सोभग्गमंतरेणं ति बूया। रधसालायं पुच्छेज्ज संगामविजय-रतिविहारमंतरेणं ति बूया। पुप्फगिहे पुच्छेज्ज 10 आभरणालंका[रमंत]रेणं ति बूया। जूतसालायं पुच्छेज्ज उयधि-णिकडिपीलामंतरेणं ति बूया। पाणवगिहे पुच्छेज्ज धयदारमंतरेणं ति बूया। लेवणगिहे पुच्छेज्ज फलमंतरेणं ति बूया। सलगिहे पुच्छेज्ज उवदेस-गुरुसंजोगमंतरेणं ति बूया। सेवणगिहे पुच्छेज्ज वीधुज्जसंरोधमंतरेणं ति बूया। उज्जाणगिहे पुच्छेज्ज कामरतिसहाससंपयुत्तं ति बूया। जाणसालाय पुच्छेज्ज भयसंरोधमंतरेणं ति बूया। आपसणे पुच्छेज्ज सरीरस्स कम्मलाभमंतरेणं ति बूया। मंडवे पुच्छेज्ज दारिद्दमंतरेणं ति बूया। लेवणगिहे पुच्छेज्ज महाजणसाधारणपरिरक्खणायं ति बूया। वेसगिहे पुच्छेज्ज 15 वयकम्मवंचणयाय त्ति बूया। कोट्ठाकारे पुच्छेज्ज धण-धण्णमंतरेणं ति बूया। पवासु पुच्छेज्ज दाणविसग्गमंतरेणं ति बूया। सेतुकम्मेसु पुच्छेज्ज परलोगगमणमंतरेणं ति बूया। जणके पुच्छेज्ज दाससंखरणामंतरेणं ति बूया। ण्हाणगिहे पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेणं ति बूया। वचगिहे पुच्छेज्ज अमणुण्णसंजोगमंतरेणं ति बूया। अंगणगिहे पुच्छेज्ज अंगणगतं सम्मोदप्पयुत्तं ति बूया। आतुरगिहे पुच्छेज्ज वाधिपरिमोक्खमंतरेणं ति बूया। संसरणगिहे पुच्छेज्ज रायत्थविवादं व त्ति बूया। सुंकसालायं पुच्छेज्ज अत्थचिंतमंतरेणं ति बूया। करणसालायं पुच्छेज्ज आयुधेयमंतरेणं ति बूया। 20 पणितगिहे पुच्छेज्ज कुडुंबवद्धीमंतरेणं ति बूया। परोहडे पुच्छेज्ज संपेसणमंतरेणं ति बूया ॥ छ ॥

सेसाणि गिहाणि पडिरूवपडिपोग्गलेहिं णातव्वाणि भवंति, तं जधा—आसणाणि पल्लत्थिकाओ आमासद्दसतं अपस्सयाणि ठिताणि पुच्छिताणि वंदिताणि आगताणि संलाविताणि चुंबिताणि आलिंगिताणि उवहासिताणि णिवण्णाणि सेविताणि। जधा एताणि सव्वाणि आमास-सद्द-रूव-इंगितागारभावेहिं आधारयित्ता विण्णातव्वाणि भवंति, एवं पुच्छितवज्झायो(ये) एतेहिं जेव सामास-सद्द-रूवपादुब्भावेहि आधारयित्ता विण्णातव्वाणि भवति ॥

25 ॥ पुच्छितनामऽज्झायो एकादसमो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ छ ॥

[बारसमो जोणीअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए जोणी णामऽज्झायो। तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामि। [तं जहा—] तत्थ सव्वअपरिग्गहेसु सव्वपासंडगते सव्वपासंडोवकरणे सव्वधम्मपयुत्तगते सव्वधम्मोपगरणे य धम्मजोणी बूया। तत्थ सव्वमहापरिग्गहेसु सव्वअत्थ-गते सव्वत्थ ◁ ▷ वत्तमाणेसु थी-पुरिसेसु सव्वत्थसव्वागते य 30 अत्थजोणी बूया। तत्थ सव्वसामेसु सव्वारामगते सव्वसामोयिगते सव्वकामोचारगते य गंध-मल्ल-ण्हाणा-ऽणुलेवण-आ-

१ °कारेति बूया सं ३ पु° ॥ २ संघण° हं० त० विना ॥ ३ वावज्ज° हं० त० ॥ ४ ह्रवण° हं० त० ॥ ५ °म्मविवण्णया° हं० त० ॥ ६ °ज्ज धघणमंत° हं० त० ॥ ७ °म्मे पु° हं० त० ॥ ८ °चा णातधं भवति हं० त० ॥ ९ पुच्छितऽज्झाओ ॥ छ ॥ हं० त० विना ॥ १० °क्खयिस्सामि हं० त० ॥ ११ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ °वण्णमा° हं० त० विना ॥ १३ °त्थगसव्वगए हं० त० ॥ १४ °रामिगते हं० त० विना ॥ १५ सव्वसम्मोईगते हं० त० ॥

भरणगते य कामजोणिं बूया । तत्थ पुण्णेसु उद्धभागे य विवद्धमाणेसु य थी-पुरिसेसु सव्वविवद्धीयं जुत्तेसु विवद्धिं बूया । तत्थ तुच्छेसु अधेभागेसु हायमाणेसु य थी-पुरिसेसु सव्वहाणिसंपयुत्तेसु य हाणिं बूया । तत्थ समागतेसु गत्तेसु य मल्लाभरणगतेसु य मेल्लोपकरणेसु य मिधुणचरेसु य सत्तेसु सव्वसंगमगतेसु य संगमजोणिं बूया । तत्थ एकंगेसु गत्तेसु विखित्तेसु य एकाभरणे एकचारिसु गत्तेसु विखिप्पमाणेसु सव्वविप्पयोगेसु विप्पयोगजोणिं बूया । तत्थ पसण्णेसु गत्तेसु सव्वपसण्णगतेसु य सव्वमित्तगए य सव्वसम्मोयीगते य मित्तजोणिं बूया । तत्थ अप्पसण्णेसु गत्तेसु सव्वअप्पसण्णगते 5 य [सव्वअमित्तगए य सव्वअत्थगए य] सव्वजोधगते य सव्वसंगामणामधेज्जोदीरणे उण्हससुक्कागउल्लगगते अहि-णउलगगते विवादजोणिं बूया । तत्थ णीहारेसु चलेसु गाम-णगर-णिगम-जाणपय-पट्टण-णिवेस-सेण्णाखंधावार-अडवि-पव्वयदेस-संजाण-जाणगते दूत-संधिपाल-पावासिकगते उदाहिते पावासिकजोणिं बूया । एतेसामेव ठितसाधारणेसु पवुत्थजोणिं बूया । एतेसामेव आहारोदीरणे आगमणजोणिं बूया । तत्थ णीहारिसु मुदितेसु कण्हेसु णिग्गमजोणिं बूया । तत्थ आहारेसु मुदितेसु आगमजोणिं बूया । तत्थ उत्तमेसु रायोवकरणेसु रायजोणिं बूया । तत्थ उत्तमेसु रायाणुपाय- 10 जोणिं बूया । इस्सरेसु रायपुरिसागतेसु य रायपुरिसजोणिं बूया । तत्थ दढेसु सव्ववणियगतेसु य वणियप्पधजोणिं बूया तत्थ चलेसु सव्वकारुगगते य सव्वकारुकोपकरणे कारुकाजोणिं बूया । तत्थ सव्वअणूसु सव्वकसेसु सव्वकासिकोपकरणे सव्वत्थीगगते य अणुयोगजोणिं बूया । तत्थ उद्धं णाभिउवकरणगते य सव्वअज्जगते य सव्वअज्जोपचये अज्जजोणिं बूया । तत्थ अधेणाभिगते उद्धं जाणुगते सिरसजोणिं बूया । तत्थ पाद-जंघा-पेरस-पव्वपेरसगते य पेरसजोणिं बूया । तत्थ सोत्तपडिपिधाणे णेत्तपडिप्पिधाणे मुहपडिप्पिहाणे अप्पाणपडिप्पिहाणे से पडिप्पिधाणे सव्वबंधेसु य बंधणजोणिं 15 बूया । तत्थ एतेसु सव्वेसु आहारसंपयुत्तेसु बंधणजोणिं बूया । तत्थ एतेसु चेव णीहारेसु य जुत्तेसु य चलेसु सव्वमोक्खेसु य मोक्खजोणिं बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वसाधारणेसु य आरोग्गपवत्तिं बूया । तत्थ उत्तमेसु आहारसंपउत्तेसु मुदितजोणिं बूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारेसु उवहुतेसु पीडिते साधारणे आतुरजोणिं बूया । तत्थ पच्छिमेसु णिम्मट्ठेसु अधोभागेसु य मरणजोणिं बूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारसंपयुत्तेसु य सयितव्वसाधारणेसु य सयितव्वजोणिं बूया । तत्थ सव्वत्थगते छेदणेसु य छिण्णजोणिं बूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधाणे णेत्तपडिप्पिधाणे मुहपडिप्पिधाणे अप्पाणपडिप्पिधाणे 20 णिधाणपडिप्पिधाणे णिक्खित्त-पम्हुट्ठगते य णट्ठजोणिं बूया । तत्थ सव्वत्थ आहारगते विणयजोणिं बूया । तत्थ सव्वधंभेज्जेसु बंभचारिगजोणिं बूया । तत्थ सव्वबंभणेसु सव्वबंभणोपकरणे य बंभणजोणिं बूया । तत्थ सव्वखत्तेयेसु आयुधभंडे य खत्तियजोणिं बूया । तत्थ सव्ववेस्सेज्जेसु वेस्सजोणिं बूया । तत्थ [सव्व]सुद्देज्जेसु सुद्दजोणिं बूया । तत्थ सव्वबालेयेसु बालजोणिं बूया । तत्थ सव्वजोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थजोणिं बूया । तत्थ सव्ववुड्ढेसु वुड्ढजोणिं बूया । तत्थ सव्वमज्झिमेसु मज्झिमजोणिं बूया । तत्थ सव्वउत्तमेसु उत्तमजोणिं बूया । तत्थ सव्वपच्चवरेसु पच्चवरजोणिं 25 बूया । तत्थ सव्वअब्भंतरेसु अब्भंतरजोणिं बूया । तत्थ सव्वबाहिरेसु बाहिरजोणिं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सकपरपक्खसाधारणेसु साधारणजोणिं बूया । तत्थ णपुंसकेसु णपुंसकजोणिं बूया । तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामजोणिं बूया । थीणामेसु थीणामजोणिं बूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गत्तेसु अणागतेसु य सद्देसु अणागतजोणिं बूया । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु अतियत्तेसु य सद्देसु अतिकंतजोणिं बूया । [तत्थ] वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु य सद्देसु वत्तमाणजोणिं बूया तत्थ पुरत्थिमेसु [गत्तेसु] पुरत्थिमजोणिं बूया । तत्थ उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरजोणिं बूया । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छि- 30 मजोणिं बूया । तत्थ दक्खिणेसु गत्तेसु दक्खिणजोणिं बूया । तत्थ दक्खिणपच्छिमेसु गत्तेसु दक्खिणपच्छिमजोणिं बूया । तत्थ पच्छिमुत्तरेसु गत्तेसु पच्छिमुत्तरजोणिं बूया । तत्थ पुव्वुत्तरेसु गत्तेसु पुव्वुत्तरजोणिं बूया । तत्थ पुव्व-

---

१ जुद्देसु सप्र० ॥ २ मलोप° हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ °रणे अण्हसमुक्काकडल्लगगते° हं० त० ॥ ५ °सुण्णा° हं० त० ॥ ६ सव्वकेसेसु हं० त० ॥ ७ °जाणगते सि० विना ॥ ८ तं पाद° सप्र० ॥ ९ पस्सगते या थेयससजो° हं० त० विना ॥ १० °धाणे घाणपडिप्पिधाणे मुह° हं० त० सि० ॥ ११ पप्पडिहाणे हं० त० ॥ १२ सव्वसोस्सेसु य सोस्स° हं० त० विना ॥ १३ °सु अत्थेसु अणा हं० त० विना ॥

दक्खिणेसु गत्तेसु पुव्वदक्खिणजोणिं बूया । [तत्थ] उपरिट्ठिमेसु उपरिट्ठिमजोणिं बूया । तत्थ हेट्ठिमेसु हेट्ठिमजोणिं बूया । तत्थ आहारेसु आहारजोणिं बूया । [तत्थ] णीहारेसु णीहारजोणिं बूया । तत्थ आहारणीहारेसु आहारणीहारजोणिं बूया । तत्थ णीहाराहारेसु णीहाराहारजोणिं बूया । तत्थ पाणजोणियं पाणजोणिं बूया । तत्थ धातुजोणीयं धातुजोणीं बूया । तत्थ मूलजोणियं मूलजोणिं बूया । तत्थ सव्वसामेसु आभरणजोणिं बूया । तत्थ अणूसु धण्णजोणिं बूया । तत्थ तणूसु वत्थजोणिं बूया । तत्थ गहणेसु रण्णजोणिं[1] बूया । तत्थ उपग्गहणेसु आरामजोणिं बूया । तत्थ उत्तमेसु उत्तमजोणिं बूया । तत्थ अधमेसु[2] अधमजोणिं बूया । तत्थ उण्णतेसु उण्णतजोणिं बूया । तत्थ णिण्णेसु णिण्णजोणिं बूया । तत्थ रसेसु रसजोणिं बूया । तत्थ वण्णेसु वण्णजोणिं बूया । [तत्थ] गंधेसु गंधजोणिं बूया । ☞ [3]तत्थ उडूहिं उडूहिं उडुजोणिं बूया । ☜ तत्थ अब्भंतरामासे ◁ [4]सव्वम्मि ▷ सव्वमत्थि त्ति बूया । तत्थ बाहिरामासे सव्वम्मि सव्वं णत्थि त्ति बूया । तत्थ सव्वेहिं इंदियेहिं इंदियत्था विण्णातव्वा भवंतीति ॥

॥ जोणी णामऽज्झायो बारसमो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमो जोणिलक्खणवागरणज्झायो]

णमो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जोणिलक्खणवागरणो णामऽज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि । तं जधा–तत्थ तिविधा जोणी सज्जीवा १ णिज्जीवा २ सज्जीवणिज्जीवा ३ चेति । तिविधं लक्खणं–दीणोदत्तं १ दीणं २ उदत्तं ३ चेति । तत्थ इमाणि उदत्ताणि–उत्तमाणि पुण्णामाणि दढाणि दक्खिणाणि सुकाणि आहारीणि [5]दीहाणि थूलाणि पुधूणि [6]मधंताणि मंडलाणि लोहिताणि परिमंडलाणि थलाणि मोक्खाणि पसण्णाणि दव्वाणि पुण्णाणि आयुजोणीयाणि वट्टाणि अग्गेयाणि हिदयाणि पत्तेयाणि दंसणीयाणि, उदत्तलक्खणाणि वक्खाताणि १ । तत्थ इमाणि दीणलक्खणाणि–णपुंसकाणि चलाणि लुक्खाणि णीहारीणि ह्रस्साणि किसाणि तिक्खाणि दहरचलाणि मताणि णिण्णाणि वट्टाणि अप्पसण्णाणि तुच्छाणि अणूणि वाउजोणीकाणि मताणि अदंसणीयाणि इति दीणाणि २ । तत्थ इमाणि दीणोदत्ताणि–थीणामाणि समाणि दहरत्थावरेज्जाणि गहणाणि उपग्गहणाणि तणूणि अंताणि अंतिमदीणोदत्ता सद्द-रस-गंध-फासा चेति दीणोदत्ताणि भवंति ३ ।

तत्थ चउव्विधा पुच्छणट्ठा भवंति–अत्थाणुगता १ [कामाणुगता २] धम्माणुगता ३ वीमंसाणुगता ४ चेति । दीणोदत्ता सेवते सततसद्दाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणोदत्तो वा सेवते घायते गंधाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, उदत्तो वा दीणो वा दीणो उदत्तो वा सेवते चक्खुतो रूवाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणो वा उदत्तो वा सेवते तयतो फासाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा । दीणो वा उदत्तो वा दीणोदत्तो [7]वा सेवते यं तत्थ पढमं भवति जत्थ भावोऽणुरज्जति तेण तं णिद्दिसे । पढमं च से पडिपोग्गलो तत्थ वेत्तगइंदियत्थेसु य इंदियपण्णाय उवधारयित्ता ततो बूयांगचिंतओ । उदत्तो उदत्तागारो विण्णातव्वो, दीणोदत्तागारो विण्णातव्वो, ◁ [8]उदत्तो दीणागारो विण्णातव्वो ▷ । तत्थ पण्णापरं बालो बालधिप्पायो विण्णातव्वो, बालो तरुणाधिप्पायो विण्णातव्वो । तत्थ सव्वत्थो दुविधो पुच्छणट्ठो दीणोदत्तो चेति । तत्थ इमाणि उदत्तस्स णिव्वत्तिकारणाणि भवंति–तुट्ठं मं पुच्छति, पसण्णं मं पुच्छति, पीणितं मं पुच्छति, आरोग्गं मं पुच्छति, अविकिरत्तं मं पुच्छति, उदत्तं मं पुच्छति, सहरिसं मं ◁ [9]वंदति, पट्ठुम ▷ [10]तं ति मं उदत्तवत्थाभरणो उदत्तमल्लाणुलेवणो उदत्तवेसालंकारो,

---

१ रसजोणिं हं० त० विना ॥ २ अधमेसु अधम° हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ दीणाणि हं० त० ॥ ६ महंताणि हं० त० ॥ ७ वा सेवंते वा सेवते सं ३ पु० ॥ ८ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ पेयच्छति हं० त० ॥ १० ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

उदत्तसयणासणो दक्खिणायतं णिविट्ठो उज्जुमुंहो[1] पेक्खति, उज्जुमुक्खो उल्लोकेति, चतुरक्खं वंदति, पूयंतो वा पुच्छति, अवत्थितं अब्भुप्पयति[2] उम्मज्जति अब्भुत्तिट्ठति, उदत्ते वेसे उदत्ते गंधे जण्णे वा छणे वा उस्सये वा उदत्ते समाये वा उदत्ते पडिपोग्गले वा उदत्ते सद्द-रूवम्मि रस-गंध-फासे णिमंतणम्मि य आगमे भक्ख-भोज्जआमंतणम्मि य । तत्थ इमाणि आहारलक्खणाणि भवंति, तं जधा—पवासागमणं कण्णाय अभिवहणं अत्थस्स विविधस्स लाभं धणस्स लाभं कामलाभो विविधविज्जालाभो जं च अण्णं पसत्थं परसेज्ज तस्स सव्वस्स लाभो भविस्सति त्ति बूया । तत्थ उदत्तस्स 5 पुच्छणट्ठो भवति—एक्कसिरीयं लाभो त्ति पुरिसस्स लाभो, पुरिसस्स इत्थीलाभो[3] हिरण्णस्स लाभो वत्थलाभो ⊲ अण्णलाभो ⊳[4] पाणलाभो धातगलाभो इस्सरितलाभो उत्तमजोणीयं आमासो आहारम्मि य उत्तमे ।

पुण्णामधेज्जे सुक्के [य] ददे णिद्धे य लोहिते । उदत्तेसु असणलाभे य वत्थे आभरणेसु य ॥ १ ॥
गंध-मल्लेसु फासे य सद्द-रूवे य बाहिरे । एरिसे उत्तमे दित्ते इस्सरियलाभं वियागरे ॥ २ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्द-रूवम्मि इस्सरिये चलणं धुवं ॥ ३ ॥ 10
[........................... । मणुण्णे सद्द-रूवम्मि] रस-गंधे य उत्तमे ॥ ४ ॥
उत्तमेसु य फासेसु तज्जातपडिपोग्गले । धुवो भूमीय लाभो तधा चेव उ पेसणे ॥ ५ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे य आगमे । णिद्धुते य किलिट्ठे [य] भूमीय चलणं धुवं ॥ ६ ॥
कण्णा गंडा उरं ओट्ठा दंता अंगुट्ठके तधा । बाहूदरे य पादे य पुरिसणामं च जं भवे ॥ ७ ॥
एतेसु सद्द-रूवेसु आहारेसु य कित्तिते । हसिते णट्टे य गीये य वादिते कामसंसिते ॥ ८ ॥ 15
मधुरे आलाप-संलावे आसिते मदणे अय । सुगंधे ण्हाण-मल्लम्मि गंधम्मि असुगंधिगे[5] ॥ ९ ॥
⊲ असुगंधि ⊳[6] अणुलेवणे सव्वाभरणे (?) । अतिमासे य सव्वत्थ गोज्झस्स चेव दंसणे ॥ १० ॥
पाणिणा पाणलाभम्मि सिचकतरस मुंचणे । एरिसे सद्द-रूवम्मि पुरिसलाभो थिया भवे ॥ ११ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्द-रूवम्मि धुवो से असमागमो ॥ १२ ॥
कण्णपाली भुमा णासा जिब्भा गीया तयंगुली[7] । सोणी णाभी य कुक्खी य अरहस्साणि[8] य आमसे ॥ १३ ॥ 20
अतिमासे य सव्वम्मि वियागरे वेसकम्मि य । अलंकारे य सव्वम्मि सव्वेसाऽऽभरणेसु य ॥ १४ ॥
ण्हाण-मल्लेसु गंधेसु सुगंधे अणुलेवणे । कामुके कामसंलावे उम्मिते गीत-वादिते ॥ १५ ॥
पारावत-चक्कवाया य हंस-कागं च किण्णरा । विपदा चउप्पदा या वि जे वऽण्णे मिधुणचारिणो ॥ १६ ॥
मधुरे आलावसंलावे कामरस अणुलोमके । आलिंगिते चुंबिते य सामग्गीय समागमे ॥ १७ ॥
वधुज्जभंडकपरिकित्तणाय तलियं ति वियण्णके वा । मणुण्णे सद्द-रूवम्मि रस-गंधे य उत्तमे ॥ १८ ॥ 25
फासे य मणुण्णम्मि आहारे य अणुमते । पडिपोग्गलेसु एतेसु थिया लाभो त्ति णिद्दिसे ॥ १९ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिद्धुते लित्ते ण थिया य समागमो ॥ २० ॥
पासाणं सक्करं लोणं [तधा] रयतमंजणं । दंतसिप्पिपडलं............अट्ठिअक्खते (?) ॥ २१ ॥
मणिरूवालिका लोहं हिरण्णपडिपोग्गले । आमासे य मणुण्णाणं[9] [.......................॥ २२ ॥]
उत्तमम्मि य आमासे [................ ।] उदत्तम्मि य पुच्छंते हिरण्णलाभं धुवं वदे ॥ २३ ॥ 30
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे[10] आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिद्धुते चलिते णासो होति हिरण्णके ॥ २४ ॥
लक्खा हरिद्दा मंजिट्ठा हरिताल मणस्सिला । कोरेंटकं[11] सिरियकं मणोज्ज णुत्तमालकं ॥ २५ ॥

---

१ °मुह पेक्खति सप्र० ॥ २ अब्भप्पध उम्म° हं० त० विना ॥ ३ इत्थीहिर° हं० त० ॥ ४ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ असुगंधिम्मि हं० त० विना ॥ ६ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ गीया य अंगुली हं० त० ॥ ८ अहरस्साणि हं० त० ॥ ९ मणुस्साणं सप्र० ॥ १० अमणुण्णम्मि य आगमे हं० त० ॥ ११ °टकेसरियकं सि० ॥

अग्गेयाणि य अग्गी य जिब्भाणिद्धं च सप्पभं । णिद्ध-लोहितके दव्वे सुवण्णपडिपोग्गले ॥ २६ ॥
एतेसु सद्द-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते धुवो लाभो सुवण्णके ॥ २७ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते धुवो णासो सुवण्णके ॥ २८ ॥
धण्णं पुरिसो गेण्हित्ता गोमयं उदकमट्टिका । पुण्णे णिद्धे मुहामासे आहारे उत्तमम्मि य ॥ २९ ॥
5 [............................ ।] तिण-तुस-करीसाणि मुद्दं च परिमद्दति ॥ ३० ॥
आहारम्मि य सव्वम्मि तज्जातपडिपोग्गले । रसाणं दंसणे उदिते पीणियरस यं सुंछणे ॥ ३१ ॥
एतेसु सद्द-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । धातकं अण्णलाभं च एवरस दंसणे धुवो ॥ ३२ ॥
अण्ण-पाणे विसंजुत्ते बहुखित्तपिपासिते । जायमाणे अलाभम्मि परिविट्ठं भाइतं ति वा ॥ ३३ ॥
अण्ण-पाणरस णीहारे अमणुन्ने आगमम्मि य । छातकं अण्ण-पाणं च धुवं णत्थि वियागरे ॥ ३४ ॥
10 दारकम्मि गिहीतम्मि अक्खितम्मि अंजितम्मि य । दारकाणं च कीलणके दारकाभरणे तधा ॥ ३५ ॥
वच्छके पुत्तके चेति पोतके पिल्लके सधा । सिंगके [तण्णके य त्ति] घत-दुद्धदरिसणे ॥ ३६ ॥
पुप्फे पवाले तरुणे विरूढे सरगंकुरे । जोणिवोलिकं दिट्ठा पुत्तामेसु बालको ॥ ३७ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च दरिसणे । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते पुत्तणासं वियागरे ॥ ३८ ॥
चतुप्पदं णामे दुप्पदे चतुप्पयं उवकरणे चतुप्पददरिसणे वा गहणे चेव वाहिते जोइतम्मि य ॥
15 एतेसु सद्दरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते धुवो लाभो चतुप्पदे ॥ ३९ ॥
एतेसु चेव णीहारेसु अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते धुवो णासो चतुप्पदे ॥ ४० ॥
चलाणि मुसलं सुप्पं पीढकं पेंढाका झयो । पाद-ऽच्छि-पाणि-पटको केसा सोपाणपादुका ॥ ४१ ॥
पादपुंछणं उवाणहा आभरणं सव्वपादोवकं च यं । उरुणी चलोढो वणिसया......उक्खली (?) ॥ ४२ ॥
[................................ ।] उत्तमम्मि य पुच्छंते पेस्सलाभं धुवं वदे ॥ ४३ ॥
20 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे य आगमे । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते पेस्सणासं धुवं वदे ॥ ४४ ॥
पासाण मट्टिया लेट्ठुं काठयालं पिधुला सिला । सव्वलोद्दे य पुधुले खेत्त-वत्थुपरिग्गहे ॥ ४५ ॥
[.......................... । ....] अत्थुते पुधुले दढे ॥ ४६ ॥
उदग्गम्मि य आमासे सद्द-रूवे य उत्तमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थुलाभं वियागरे ॥ ४७ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते वत्थुणासं वियागरे ॥ ४८ ॥
25 णवधम्मपत्ताणि वक्कला कुसुमालिका । चीरं च वासगं चेव पत्तुण्णा वालकाणि वा ॥ ४९ ॥
उण्णरूवं च कप्पासं तिरं अवरेसु य । वेल्लिका वक्कमंडं च वित्तम्मि अणूसु य ॥ ५० ॥
एएसु सद्द-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थलाभं वियागरे ॥ ५१ ॥
एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिहुते चलिते वत्थहाणिं च णिद्दिसे ॥ ५२ ॥

अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे सव्वपणितगते सव्वसिप्पिया-
30 तगुणे सव्वभंडगते सव्वसिप्पोवकरणे सव्वसिप्पिगदंसणे कारुकसंलावम्मि किट्टिते सुंगयपडिच्छते उद्दसासि-
णिरामासदरिसणे ।

---

१ य मुद्दणं सं ३ पु० ॥ २ बायक: हं० त० ॥ ३ 'जिधालिकं दिट्ठा हं० त० विना ॥ ४ पढको झयो हं० त० विना ॥ ५ उरुणी वालो दोयणि° हं० ॥ ६ णिहुते णिहुते चलिते सं ३ पु० सि० त० । णिहुए चलिए चलिए हं० एव ॥ ७ 'धासाणि हं० त० ॥ ८ °णगादं ॥ ४५ ॥ आगुत्ते पुधुले चेव दढे य उदग्गम्मि य । आमासे सद्द-रूवे य उत्तमे य विसेसओ । उदत्तम्मि य पुच्छंते । सि० ॥ ९ अगुत्ते थावरे पुधुले दढे हं० त० ॥ १० इत्यधिकान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ °म्मि कट्टिते सि० । १२ सुरपडिच्छते सि० ॥ सुरपडिसुते सं ३ पु० ॥

एतेसु सद्दपडिरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे—

उदत्तम्मि य पुच्छंते आहारम्मि य पुच्छिते । एतेसु सद्द-रूवेसु कम्मलाभं वियाणिया ॥ ५३ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णम्मि य आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते कम्मणासं वियागरे ॥ ५४ ॥

अब्भंतरामासे णिद्धामासे पुण्णामासे [पुण्णामवेज्झामासे] दक्खिणामासे अवत्थित-गंभीर-थिमिते आयगिते अदीणसत्तसव्वणाणगकित्तणे [1]लोक-वेय-सामयिके आभिरामिके [2]अभिधम्मीयसुत्तणाणाणुकित्तणे लिपि-गणित-रूप-रायविज्जा- 5 परिकित्तणे अंग-सर[3] लक्खण-वंजण-सुविण भोमुप्पात-अंतलिक्खअणुकित्तणे ।

एतेसु सद्दरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे ।

उदत्तम्मि य आहारे पुच्छंते उदत्तम्मि य । विज्जालाभं वियाणीया उत्तमं जीविकारणं ॥ ५५ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते विज्जाणासं वियागरे ॥ ५६ ॥

अब्भंतरामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामवेज्झामासे दक्खिणामासे पुप्फ-फलसद्द-उवभोगसद्द-ओसधीपडिपो- 10 गलेसु उदत्ते भक्ख-भोज्जे य पेज्ज-लेज्झकित्तणे य ।

एतेसु सद्द-रूवेसु आगमे उत्तमम्मि य । [4]धातकं [धण्णलाभं च] अत्थलाभं च णिद्दिसे ॥ ५७ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते छायकं तत्थ णिद्दिसे ॥ ५८ ॥

अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे दढामासे पुण्णामासे पुण्णामवेज्झामासे उदत्तथी-पुरिसदंसणपादुब्भावे जण्णे वा छणे वा उस्सये वा समाये वा वाधुज्जे वा चोलके वा उपणये वा पसत्थ-विसत्थ-विमुत्तसुखासणभावे रतिहासे 15 पडिरूवेण णिद्दिसे ।

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं वा आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते भयं तत्थ वियागरे ॥ ५९ ॥

तत्थ इमाणि दी[5]णसत्थस्स णिव्वत्तीकारणाणि भवंति । तं जधा—दीणं मं पुच्छति, अगडं मं पुच्छति, छातकं मं पुच्छति, विखित्तं मं पुच्छति, दीणं मं उवसं[6]कंति, दीणं पेक्खति, दीणमधीतं [7]पुच्छति, दविणं बहुमन्नते, किलिट्ठं वत्था-ऽऽभरणं किलिट्ठमल्ला-ऽणुलेवणो अणज्जवेसा-ऽलंकारो अणु[8]दत्तसयणा-ऽऽसणो वा उत्तराभिमुहासणाभिग्गहो वा 20 समुज्जतो णिवेट्ठो तिरियम्मु[9]हो ओलोकेंतो तिरिय[10]म्मुहो पेक्खति, णीयम्मुखो णिज्झायति, हेट्ठामुहो वंदति[11], खिसतो अणव-त्थितं पुच्छति, परावत्तो णि[12]म्मिज्जति ओणमति, अपसक्कंतो [13]ओमासिज्जते अणुदत्ते दीणपडिपोग्गले दीणे सद्द-रूवे रस-गंध-फासे अणुलेपणे सरे य सव्वम्मि दीणे अणुदत्ते किलिट्ठे दीणमाणसे । तत्थ इमाणि दीणलक्खणाणि भवंति । तं जधा—

अपसक्किते १ अपगते २ अपणामिते ३ णिम्मट्ठे ४ णिहिते ५ ।

णिट्ठितम्मि य आहारे अमणुण्णाणं च आगमे ॥ ६० ॥ 25

णीहारे सद्द-रूवाणं फासे गंधे रसम्मि य । पवासागमणे चेव कण्णाणिव्वहणं च जं ॥ ६१ ॥

विविधो य अत्थपचयधम्मस्स कामुकस्स रओ सव्वेसिं चेव अत्थाणं अलाभो त्ति, तत्थ इमं दिसं पुच्छगट्ठा भवंति । जधा—[14]अप्पसत्थस्स अत्थस्स अलाभो विणासो विद्दवो विप्पयोगो आतंको आतुरो मरणं छविच्छेयो बंधो पवासगमणं प[15]रोजयो धणापचयो अणावुट्ठी अकम्मं सोभा छातकं पतिभयं चेति । जं किंचि अप्पसत्थं सव्वं एतं दीणस्स पुच्छमाणेसु पयुट्ठेसु पसुसु य णेके[16]सुं जुद्धाय परिते भवे पडिते आहृतम्मि य मुट्ठिणा मिउडीयं च वग्गणे अतिपातिते 30 विवादे विग्गहे त्ति य कलहं तत्थ वियागरे । उक्कंपिते झपिते खित्ते ओवाधितम्मि य संरुद्धे उपधावंते य रोदंते [17]कलहं धुवं ।

---

१ लोकवेसाम° सं० ३ सि० पु० । लोकपसाम° हं० त० ॥ २ आभिध° हं० त० ॥ ३ °सरक्खण° हं० त० विना ॥ ४ धातकं पुत्तलाभं च अत्थ° सि० ॥ ५ दीणमत्थ° हं० त० विना ॥ ६ °कमंति हं० त० ॥ ७ पुच्छा वंदति पं वहु° हं० त० विना ॥ ८ °दत्तसमगो वा उत्त° सं ३ पु० ॥ ९ यामपुजुत्तो हं० त० ॥ १० तीरियम्मुखो हं० त० ॥ ११ °ति खित्तो अण° हं० त० ॥ १२ णिमज्जति हं० त० ॥ १३ आसासिज्जते हं० त० ॥ १४ अप्पसत्थस्स लाभो सि० ॥ १५ पराजणोपचयो सं ३ पु० ॥ १६ °सु यद्धाय परिप हं० त० ॥ १७ कलहो हं० त० ॥

वाचियाकेचिको कलहो तालिते पैह्रेहि य । सत्थम्मि रुधिरुप्पाया छइच्छेदं वियागरे ॥ ६२ ॥
संगामे जुद्धसद्देसु अँब्भातलपलाइते । सन्नाहे जुद्धसंरागे [रा]यविज्जाभये भयं ॥ ६३ ॥
जंघापादे य छत्तचोपादधिकाणि य । जुत्तं च जाणवासं च पंथं च पडिपोग्गैलं ॥ ६४ ॥
पवासगमणे सज्जे कंतार[ग]हणासु य । संपत्थिते पदग्गाहे मंडउग्गाईणासु य ॥ ६५ ॥
5 लोहेसु पव्वतग्गहँणे तं तिरिययसितियं वा पत्थिताणं य दंसणे कोसहुपुण्णपाते य पवासा आगतो चेति पसत्थपवासागामी य परातं च णिहिते ।
एतेसु सद्द-रूवेसु पवासा आगमम्मि य । आहारेसु य सव्वेसु पवासा आगमं वदे ॥ ६६ ॥
थिते साधारणे चेव पर्यंत्तं तत्थ णिद्दिसे । णीहारे य णिवट्टेति णट्ठं तत्थ विणिद्दिसे ॥ ६७ ॥
णीहारे य मणुण्णे य कण्णाणिव्वहणं वदे । आहारे य मणुण्णे य कण्णायावहणं वदे ॥ ६८ ॥
10 णीहारे चेव णीहारे दीगंसि मुदिते वि वा । पडिरूवेण पस्सित्ता ततो सम्मं वियागरे ॥ ६९ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जोणीलक्खणवागरणो णामऽज्झायो तेरसमो सम्मत्तो ॥ १३ ॥ छ ॥

[चोद्दसमो लाभद्दारज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लाभद्दारं णामऽज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि। 15 तं जधा—अत्थद्दारं १ समागमद्दारं २ पयाद्दारं ३ आरोग्गद्दारं ४ जीवितद्दारं ५ कामद्दारं ६ वुद्धिद्दारं ७ विजयद्दारमिति ८ । अतो अत्थद्दारं । तं जधा—अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामवेज्जामासे दक्खिणामासे आहारे उत्तमे पुप्फगते फलगते हरितगते परग्घयत्था-ऽऽभरण-मणि-मुत्त-कंचण-प्पवाल-भायण-सयण-भक्ख-भोयणगते परग्घउयकरणगते ण्हाणा-ऽणुलेवण-विभूसिय-पहट्ठणर-णारिपादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा वाहिरे पादुब्भावे सद्द-रूवे पुच्छेज्ज अँत्थलाभं वा खेमं वा पुत्तं वा णिचयं वा जाणं वा जुग्गं वा 20 सयणं वा आसणं वा भो(भा)यणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज लाभमंतरेण ऍवमेवं भविस्सति त्ति वत्तव्वं । एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा वाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज अत्थहाणिं वा रायं वा विणासं वा किलेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण भविस्सति त्ति बूया । एताणि चेव अकमंतो पुच्छेज्ज लाभमंतरेण ण भविस्सतीति बूया । एताणि चेव अकमंतो पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण सव्वं भविस्सति त्ति बूया । एताणि चेव छिंदंतो वा भिंदंतो वा ◁ फेलेंतो वा ▷ 25 विराहेंतो वा णिक्केंरांतो वा पुच्छेज्ज अत्थहाणिं वा रायं वा विणासं वा किलेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज अँलाभमंतरेण तिउणो अवायो भविस्सतीति वत्तव्वं । एताणि चेव उवकड्ढंतो पुच्छेज्ज अत्थलाभं वा खेमं वा पुत्तं वा णिचयं वा जाणं वा जुग्गं वा सयणं वा आसणं वा भायणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज लाभमंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति तिगुणो लाभो बूया । एताणि चेव उपकड्ढंतो पुच्छेज्ज अत्थहाणिं वा रायं वा विणासं वा किलेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति बूया । एताणि अपकड्ढंतो पुच्छेज्ज एव- 30 मादीणं लाभो ण भविस्सतीति बूया, जं च पुच्छेज्ज तस्स तिगुणो अपायो भविस्सतीति बूया । एताणि चेव अपकड्ढंतो

---

१ पहरेट्टिया हं० त० । परिहरेहिं य सि० ॥ २ संगामजुद्धे सद्देसु हं० त० ॥ ३ अम्भालतप° सं० ३ पु० सि० ॥ ४ छत्तायापाद° सि० ॥ ५ °पोग्गला हं० त० ॥ ६ °हणेसु य हं० त० विना ॥ ७ °हणेतु तंतरियय° हं० त० ॥ ८ पत्थियणाण दंसणे हं० त० ॥ ९ सिते हं० त० ॥ १० पयुत्तं हं० त० ॥ ११ अत्थं वा लाभं हं० त० सि० ॥ १२ वा जोग्गं सि० विना ॥ १३ एवमेयं भ° हं० त० ॥ १४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १५ णिक्खंतो वा हं० त० ॥ १६ अत्थलाभ° हं० त० ॥ १७ दिणासणं वा हं० त० ॥

पुच्छेज्ज एवमादीणं लाभो ण भविस्सतीति बूया। एताणि चेव उपकड्ढित्ता अपकड्ढेज्जा ततो पुच्छेज्ज एवमादीणं पुव्वं लाभो [1] भवित्ता पच्छा अलाभो [1] भविस्सतीति बूया। एवमादीणि च्चेव अपकड्ढेत्ता उपकड्ढेज्जा ततो पुच्छेज्ज पुव्वं अलाभो भविस्सति पच्छा लाभो भविस्सतीति बूया॥

॥ इति लाभद्दारं ॥ १४ ॥ छ ॥

[पन्नरसमो समागमद्दारज्झाओ]

समागमद्दारं वक्खस्सामो। तं जधा—हंस-कुरर-चक्कवाक-कारंडव-कादंब-काकाक-मेज्जुकामिधुणचतुरेसु[2] सत्तेसु मेधुणं समाचरंतेसु तेसु आलिंगितं चुंबितं हसितं गीत-वादित-सद्दग्गहणे वधू-वरसंदंसणे सयणा-ऽऽसण-सव्वसगुण-तिरिक्खजोणीउपचारे सकुणे णिद्दिसे[3] चच्चर-मधापध-सव्वदारसमयतित्थोदुपाणआभोगपणितगते तेसं परिकित्तणासु सागर-णदी-पट्टण-गोत्तमेसु समागते सव्वसमागमागमगते[4] य सव्वसंजोगगते सव्वहरिसपादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज समागमं वा सम्मोइं वा संपीतिं वा मित्तसंगमं वा वीवाहं वा जं च किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज समागममंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया॥

॥ समागमद्दारं ॥ १५ ॥ छ ॥

[सोलसमो पयादारज्झाओ]

अध पयादारं वक्खस्सामो। तं जधा—दारकपादुब्भावे कीलणके दारकाण अभिणव्वे पुप्फ-फल-पवाल-परोहगते सप्पक-सीहक-वच्छवच्छके तरुणपादपके अण्णं वा यं किंचि बालकं बालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज पयामंतरेण पुच्छसीति वत्तव्वं, भज्जा ते भविस्सतीति बूया। एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे वा पुच्छेज्ज पयाविप्पयोगो ण भविस्सतीति बूया। उदरपडणं वा पुत्तमरणं वा जं किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज पयावि-प्पयोगो ण भविस्सतीति बूया[5]॥

॥ पयादारं सम्मत्तं ॥ १६ ॥ छ ॥

[सत्तरसमो आरोग्गदारज्झाओ]

आरोग्गदारं वक्खस्सामो—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे उत्तमामासे पहट्ठपुप्फ-फलामासे परग्घवत्था-ऽऽभरणे भूसणगते अब्भुत्थिते उवविट्ठे हसिते भणिते गीते वादिते अप्फालिते पेक्खिते[6] गज्जिते मुदिते णारीगणसमुदिते पसु-पक्खिसंदंसणे उदग्गवत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसणगते एवंविहसद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज आरोग्गं वा पमोदं वा सोमणस्सं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज आरोग्गमंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया। एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूव-पादुब्भावे पुच्छेज्ज रोगं वा विणासं वा मरणं वा जं च किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज रोगमंतरेणं ण भविस्सतीति बूया॥

॥ आरोग्गदारं सम्मत्तं ॥ १७ ॥ छ ॥

[अट्ठारसमो जीवितदारज्झाओ]

जीवितद्दारं वक्खस्सामो। तं जधा—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामधेज्जामासे अणुपहुतामासे आहारे उत्तमे सुपसण्णे सूरे उदग्गे उत्तमे उपविट्ठे उक्कोकित्ते हसिते उक्कट्ठे[7] गज्जिते अप्फालिते पच्छेलिए[8]

---

१ [1] एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ °मेज्जका° हं० त० ॥ ३ सकुणणिद्दे चच्चरमहापध° हं० त० ॥ ४ °समागमगते हं० त० ॥ ५ पयामंतरेणं ण भवि° हं० त० पयाविप्पयोगेण भवि° सि० ॥ ६ पेसिते हं० त० ॥ ७ उक्कट्ठिए गज्जिए हं० त० ॥ ८ अप्फाडिते पच्छलिए सं ३ पु० ॥

गीते वादिते तल-ताल-फाससमुदिते णर-णारिपादुब्भावे सव्वत्थपरग्घगते सव्वणिच्च-धुवपादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज मरणं वा णिव्वाणं [वा] वहं [वा] बाहं वा जं किंचि अप्पसत्थं मरणमंतरेणं पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति बूया ।

॥ जीवितदारं सम्मत्तं ॥ १८ ॥ छ ॥

5

[एगूणवीसइमो कम्मदारज्झाओ]

कम्मदारं णाम वक्खस्सामो । तं जधा—रायोपजीवीसु कारुकोपक्खरोपकरणेसु य उदग्गपुप्फ-फलगते पच्छेलिते मुदितणारि-णरगते यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज पणियमंतरेण एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि च्चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज कम्महाणिं वा कम्मणासं वा पणियविणासं वा जं किंचि अप्पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज कम्ममंतरेणं ण भविस्सतीति बूया ॥

10 ॥ कम्मदारं सम्मत्तं ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसइमो वुट्ठिदारज्झाओ]

वुट्ठिदारं णाम वक्खस्सामो । तत्थ णिद्धामासे जलामासे णिद्दुद्धे णिस्संधिते मुत्त-वच्चकरणे सेदपरामासे उदगदंसणे उदगचरसत्तपादुब्भावे णावा-कोट्टिव-डआलुए पदुमुप्पल-जलय-पुप्फ-फल-कंद-मूलसंदंसणे सव्वजलोवकरणे सव्वजलोपजीविसंदंसणे सव्वजलपादुब्भावे तेल्ल-घत-दुद्ध-मधुपाणगते वुट्ठि-थणित-मेहगज्जित-विज्जुतपादुब्भावे णदी-15 समुद्द-कूप-तलाक-विकिरण-पस्सवणोपलंभे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा ◁ आमसमाणो वा ▷ एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज वुट्ठिं वा वासारत्तं वा उदकं वा सस्सणिप्फत्तिं सस्स[संप]दं वा एवमादी यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज वुट्ठीमंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि च्चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज दुवुट्ठिं वा अवग्गहं वा सस्सविणासं वा सस्सवापत्तिं वा जं च किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज सस्समंतरेणं वासारत्तमंतरेण वा भविस्सतीति बूया ॥

20 ॥ वुट्ठिदारं ॥ २० ॥ छ ॥

[एगवीसइमो विजयदारज्झाओ]

तत्थ **विजयदारं** णाम वक्खस्सामो । तं जधा—तालवेंट-भिंगार-वेजयंति-जयविजय-पुरसमाणव-सिविका-रथ-पादुब्भावे परग्घवत्थ-मह्लाभरणपादुब्भावे परग्घवत्थ-मह्ला-ऽऽभरणअप्पडिहयसंख-भेरि-दुंदुभि-परसद्द-रूव-रस-गंध-फासपा-दुब्भावे सेणालंभे अडवी-परट्ठ-खंधावारणिज्जातलद्धअधिगते पमुदिते पादुब्भावे पुण्ण-सुद्ध-णिद्ध-दढ-अब्भंतर-पुण्णा-25 मवेज्जामासे अपराजितसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे पुच्छेज्ज विजयं वा पररट्ठमद्दणं वा सत्तुपराजयं वा जं च किंचि पसत्थमप्पसत्थं वा पुच्छेज्ज विजयमंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि च्चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं च्चेव बाहिरे सद्द-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज रायमरणं वा रायहाणिं वा रायविप्पलोवं वा रायभंगं वा संगामपराजयं वा जं किंचि अप्पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज पराजयमंतरेण ण भविस्सतीति बूया । जधा पढमं पडलं परिवारितं तधा सव्वाणि पडलाणि परिवारेतव्वाणि ॥

30 ॥ विजयदारं णामं ॥ २१ ॥ छ ॥

[बावीसइमो पसत्थज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय **पसत्थं णामाज्झायं** । तं खलु भो ! वक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ कय-विक्कय-लाभसंपदाय कम्मागतलाभसंपदाय कित्ति-वंदण-माणण-पूयणासु उक्किट्ठपहट्ठसद्दपादुब्भावे केस-

१ णिव्वाणं वा बाधं वा जं हं० त० विना ॥ २ °रेण भवि° हं० त० विना ॥ ३ णिदुद्धे णिस्सं° हं० त० ॥ ४ °कोट्टिमुआलुए हं० त० विना ॥ ५ °दुद्धमुद्धपाण° हं० त० विना ॥ ६ °विकरपस्स° हं० त० विना ॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ खलु हो वक्ख° हं० त० ॥ ९ °पदा-किंचि° हं० त० विना ॥

मोलिकरणे केसामिवद्धणे कण्णाकण्णविवाहे अक्खलियसव्वविज्जापयोगसिद्धिसु खत्तियसोत्तिउपयोगे [1]खितिउवचयसद्द-
-पाउब्भावे इक्खुवणे-सस्स-फल-हरियक-सस्साणं च दंसणे खेत्तसुभिक्ख-महावंधुजणसमागम-वंदणेसु गेज्जकव्व-[2]पाद[3]वंधपट्ट-
कव्वसंपूयणासु गोणा-वलक्ख-मिग-णर-णारि-सयण-रक्खासु गंध-मल्ल-भायण-भूसणसंजोयणासु घण-विज्जुत-वच्छ-गोच्छक-
-[6]जाणा-ऽऽसण-सयणे सव्वमिधुणचर-कमलवण-भमर-विहग-[7]दुमसमागमेसु घात-वध-वंध-रोध-परिरोध-हासभाव-पेतपरिमोय-
-[8]ण-दंसणेसु घिंसुम-हेमंत-वसंत-सरद-पाउस-[10]वासारत्तयतरासपूयणासु [9]ओघट्टपरक्कमोसोपकमच्छदंसणे अग्घेयमणप्पसादणेसु 5
घोडदाढिकरवंधणेसु घंटिक-चक्किक-सत्थिक-वेतालिक-मंगलवायणेसु यस्सकसामिद्धसासकगहणे अच्चापचच्चणगंध-मल्ला-
ऽगरुभरणे चिरप्पवासगतसिद्धयत्तसंवंधिसमागमेसु [11] भूताधिपच्चपुणोप्पत्तीसु चेतियमहामहिकतुरियसद्द[12]सुती-दंसणेसु चोरहित-
वभट्ठ-णट्ठ-पतिलाभणेसु चिंध[13]ट्ठयकण[14]कंचीणकरघणोदीरणेसु[15] छत्तोपाहण-भिंगारसं[16]पदाणेसु रच्छाहसंपदाहस्समुप्पत्तीसु छिंदति
मासातिमासे [17]इच्छूपपन्नहाससमुप्पत्तीसु छेगसमावयण-संपूयणा-ऽभिवं[18]दणासु अच्छोदकउप्पण्णभो[19]पतिभंगदंसणासु छंद-
मणोरहसकपसत्थं[20]कमुपपत्तीसु जलभायणे[21]जलासयपूरणेसु जातकम्मादिपसत्थजलणपज्जालणेसु जीवित-[22]धण-कण-कणग- 10
रयण-भायण-भूसण-परिधाण-भवण-सुहसरणसंपदासु [23]उज्जूअज्जवसाधुसंपूयणासु जेट्ठाणुजेट्ठसंथाणथावणासु जोति-जलण-
विज्जु-वज्ज-मणि-रतणतप्पणासणेसु जम्मणपरिवंद[24]णवालमंडलेसु अज्जजण-सम्माणण-पूयणासु झाणसमाराधणसमारंभेसु
झीण-परिक्खीण-विणट्ठ-पुणलाभ-पुराणणवीकरणेसु अज्झप्पगतिज्जखिप्पसंदंसणे आज्झेयणीयसामिसामिद्धयागपच्चयदाणा[25]सु
झणितणीवारदंसणे झंझणितभूसणणिस्सणसद्दे सतो पच्चयदाणे तणिते तिरिणे तुच्छापूरिते तेसं तेसं च भावाणं
पसत्थाणं दंसणेसु अंतोमुहचुंवणे [26]अंतद्विणा रंगसमापेण थलज-जलजपुप्फ-फल-हरित-कंद-मूल-सरसयतारणेसु थलपंथ- 15
सलिलपंथभंडावतारणेसु थिताथितसद्द-सिद्धसाधुभुत्त-गय-तुरय-वसभ-मुदितणर-णारी-णट्ट-गीत-वादित-लंभूस[27]सद्दुप्पत्ती-
सु थुति-संथव-सिद्धकम्माणुकित्तणेसु अत्थेस्सरियभोगवद्धणेसु थोकाभिवद्धणे थंभासण-सयण-पुरिस-दुमसंसयेसु दहुम्मणे वा
पिज्ज[28]मोदीविगुणसंपयोगसिद्धीसु दुम-भवण-तुरंग-पव्वतारोहणेसु उद्देस-देस-पुर-गाम[29]वद्धणेसु संदेहधीवेसणेसु घदंसक-मुकुड-
कुंडला-ऽऽभरणविविधपिणंधणे[30] वरतालघणे उद्धविते अधिज्जमाणे ⊲ [31] उक्कुज्जमाणे ⊳ उद्धे कते अणुमते धातदाणसंप-
दाणेण व कते मंडिते णिवेसिते अणुचारिते अणंगजणसतपहिट्ठसमागमे अण्णोण्णसंपदाणेण आणंदितदंसणे पच्चग्गरूव- 20
जोव्वण-फल-हरितदंसणे याहिरउक्कट्ठपहट्ठसद्दपादुब्भावे पीतिकरविहकसंकीलणेसु पुण्णभोयणेसु दंसणे पंडिज्जमाणधण-रयण-
पुप्फ-फलदंसणे घोधणे रुद्दोपघातकरजलजलणविचय-सव्वभयमोक्खणदंसणेसु पंचरस-वण्ण-फासोपपण्णघाणसुहमणुव्वे-
गदंसणेसु फलसंपदासु फासितसुत्तत्थपतिग्गहे फीतसव्वकित्तणदंसणेसु फुल्लंतकमलुप्पलदंसणे उड्डसंभमावक्कमेसु
अट्टोदितहिट्ठसद्दसमुब्भवेसु अप्पंसितपरिक्कमसिद्धीसु वलि-मंगल[32]-यागहरण-सेसापादुब्भावे वालालंकित्तं[33]वलवलरूवाहण-
दंसणेसु पिव[34]कंतिसरिसरिसकम्मसंपयुत्तेसु वुज्झंतकमलवणवरखगमिगणरणारिदंसणेसु वेरसप्पसादकरणे वोधिज्ज[35]माणणरदेव- 25
तुरियणि[36]यणिस्सणेसु वंधणागारमोक्खणेसु आभरणपिणिंधणेसु भावपादुब्भावे अभिमुहपदक्खिणासणणिव्वसप्पतासु णिरि-
क्खणेसु भसु[हु]क्खेपणे उब्भेदसमुब्भावे भोयणोकारणिस्सणे भंडकरंडगे[37]पतिपूरणदंसणे मत्तमातंगदंसणे णिस्सणे माणि-

---

१ खत्तिउव° हं॰ त॰ ॥ २ °कच्छपा° सप्र॰ ॥ ३ °पायवंचपव्वकट्टसंपू° हं॰ त॰ ॥ ४ °पट्टकव्वसं° सं ३ पु॰ ॥ ५ °सु णाणाचल° हं॰ त॰ ॥ ६ °जाणसयणासणे हं॰ त॰ ॥ ७ °दुगसमा° सं ३ पु॰ । दुग्गसमा° सि॰ ॥ ८ °सणासु सं ३ पु॰ ॥ ९ उग्घट्टपरक्कमोसाप° सं ३ पु॰ । उग्घुट्टपरक्कमासोप° सि॰ ॥ १० °वासागयासिद्ध° हं॰ त॰ ॥ ११ °सु धुवाधि° हं॰ त॰ ॥ १२ °सुवीदंस° हं॰ त॰ विना ॥ १३ चिंतठय° सं ३ पु॰ ॥ १४ °कवीणयकर° हं॰ त॰ ॥ १५ °गुत्त-त्थोपहाण° सि॰ ॥ १६ °संपादणेसु हं॰ त॰ ॥ १७ इच्छूपप° हं॰ त॰ ॥ १८ °चंदणेसु हं॰ त॰ ॥ १९ °पत्तिभंग° हं॰ त॰ विना ॥ २० °त्थसमुप° सि॰ ॥ २१ °णजलाजलस° हं॰ त॰ विना ॥ २२ °धणकणग° सं ३ पु॰ सि॰ ॥ २३ °उज्जअज्जव° हं॰ त॰ ॥ २४ °णकालमंडणेसु हं॰ त॰ ॥ २५ °सु ज्झासियणी° हं॰ त॰ ॥ २६ अंतद्दिणा हं॰ त॰ ॥ २७ °सायसद्दु° हं॰ त॰ ॥ २८ °माणे दीवि° हं॰ त॰ ॥ २९ °वद्धाणे° हं॰ त॰ ॥ ३० °णे घर° हं॰ त॰ ॥ ३१ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नगन्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ३२ °लयाह° हं॰ त॰ विना ॥ ३३ °तचलचलयफयाहाण° हं॰ त॰ ॥ ३४ °कतिम-रिसकम्म° हं॰ त॰ ॥ ३५ °ज्जमाणे णर° हं॰ त॰ ॥ ३६ °यणिम्मट्टेसु हं॰ त॰ ॥ ३७ °गस्स पति° हं॰ त॰ ॥

ज्जमाणे मिधुणसमागमे मुदितणट्ट-गीत-वाइयसंदंसणे अमेज्झपक्खालियसुद्धदंसणे अमोघविचेट्ठिते मंचातिमंचकरणेऽधिरोहणे जलधरमधुरगयमत्तजयघोसणिग्घोसे यत्ताणुयत्तणिद्देसपतिछंदे वइर-मणि-प्पवाल-मुत्तासंजोयणे जूव-चिति-सेतुबंधणमायतणकिरियासु जे य पसत्था सकंसि देहंसि फंदरेदे योगियोगसिद्धिसु यण्णेज्जामासे यण्णदंसणे हस्सवद्धणे रासिवद्धणे रिपुद्दडपधाणयणे रहविरुद्धदंसणे रोयितपुरभावणप्पवेसणे सुरोरूवलणरिंदसत्थसंसिद्धसमुप्पयाणेसु रम्मुज्जाण-सलिलयत्तागमणप्पवेसणेसु अलसदंसणे उज्जालिते आलिंगिते लुलितप्पसादिते उहंहिते उल्लोकिते उल्लंघिते यरयधूकित्तणे यारमोक्खाधिकारसंदंसणे विलंघिते वूहिते उव्वेहासिते वोसट्टमाणे भायणपूरणे वंदितसत्थवरहसंथवे उरससिते आसासणे उस्सिंघिते सुद्धमज्ज-यत्थोदण-वलिकम्मगहण-दंसणे सेवलिकायत्तकट्ठकित्तणा-गति-दंसणेसु सोवच्चसप्पण्णफासुकाहारसंपदासु संघायसम्मोदणासु हँसितोपहसिते आहारे गतेहित-समीहितसंपयासु हुतहुतासणच्चिसंभवे हेम-मणि-मुत्त-प्पवालसज्जोयणेसु अहोणिसा-मास-पक्ख-[उ]दु-यासादिसु हंस-कुरर-चक्कवाक-सरभोतुककालपयागमोपसमादिसु ।

यं लोके पूयितं किंचि मणो यत्थ य रज्जति । यमिंदियाणमिट्ठं च पसत्थं तम्मि णिद्दिसे ॥ १ ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय० पसत्थो णामऽज्झायो बावीसइमो सम्मत्तो ॥ २२ ॥ छ ॥

[तेवीसइमो अप्पसत्थऽज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय० उप्पातिकमप्पसत्थमज्झायं यक्खस्सामि। तं जधा—तत्थ मे हाणी पुरेक्खडा णं पुंछा अलाभेसु सुहे जीविते वद्धीयं जसे विज्जायं समागमे जये इति उप्पाया अप्पसत्था भवंति। तं जधा—कट्ठिते फासिते किलेसिते उकूणिते केसणिम्मज्जणे अकोडिते उफंदिते खलिते अक्खारिते रिंसिते खुधिते खुसिते खोटिते खंडिते उग्गहिते गालिते गिद्ध-सिगालदंसणे गूहिते गोययोरसभुज-चरण-मुखाणे गोचिते गंदिते ओघट्टिते उग्घाडिते घिंघिणोपिते घुण्णिते घेयअमेज्झपादुब्भावे घोरमहब्भयदंसणे घंसिते चलिते चालिते चित्तविब्भमे चुच्छदड्डे चेतिविणासणे घोरभयोदीरणे चंदप्पभोपयातिते पच्छादिते पच्छादाणछिन्ने छुन्ने छेलितछादिते छंदाभिलासअसंपत्तीय अज्जरिते जालिकरे जीवितसंसये जुगुच्छितअणिट्ठोपसद्दंसणे जेयहितसद्दपादुब्भावे जोतिसोपणासणे जंभिते झुपिते झामिते झीणे झुझुरायिते अज्झेणणासिते झोसिते उज्झंते तमूभावे तासिते णिक्खिते तुच्छिते तेणिते तोमरविद्धे तंडिते उत्थते थाणपयायणे थितोपवेसणे णिट्ठुते थेव्विद्धे थंभिते उद्दविते दालिते दीणमुहामासे उद्दुते देसपपतणे दोभग्गे दंड-कसा-लेट्ठुघाते धमिते धाविते धिक्कारकरणे धुते ओधुते धेणववच्छघातणे अधोपाणे धंसिते णट्ठे ओणामिते णिहिते णूणे णामपतणे अक्कोसकिते णंदीउवघाते अणंतसोके पब्भट्ठे पातिते पीलिते पूतिवापण्णदंसणे पेंडितविच्छोभणे पोकत्तदुरंतपादुब्भावे पंडकदंसणे फल-पुप्फणासणे फालिते फियावाहिरकपरामासे फुडिते फोडिते बधिरंध-मूय-जलमत्तपादुब्भावे धाधायविंमूविणासणे बुद्धिउपघाते वेरसदंसणे ओरालिते बंधुजणविप्पयोगे भट्ठे भामिते भिन्ने भुक्खिते भेदिते भोयण-पाण-भक्खवापहासुभंते मलिते उम्मज्जिते ओणिपीलिते उम्मुके उम्महिते मोघविलंढिते उम्मत्थिते यतिविणासेयगविणासे-यिट्ठविअसधारे जंगभंगे अये पडिसेधिते अयोग्गेयं तस्स य हाणिसु रतिविघाते रायपराजये ओरिके ओरूढे रेचिते ओरेचिते रंधिते ललितोपघाते अलातक्खोभणे गुंलरिते लुचिते पघातणे ओलकिते ओलंबिते उवहिते ओवारिते विणासिते वूहभेदणे वेसाणरविज्झापणे वोकसिते संचिते ससिते ओसारिते ओसुद्धे सेदणिम्मज्जणे सोणितपादुब्भावे संसरिते ओहते हारिते हिसेते हुंडिते हेडिते अहोणिसाधिकरे हंस-चक्कवाकसव्वमिहुणविप्पयोगे चेति एवंविधसह-

१ °रणोधि° सप्र० ॥ २ °दंसणे हस्सवद्धणे रिपुहडपधाणयणे रहविरुद्धदंसणे हस्सवद्धणे रासि° इतिरूपो द्विरावृत्तः पाठः सर्वास्वपि प्रतिषु वर्तते ॥ ३ समुप्पयारेसु ह० त० । समुप्पायणेसु सि० ॥ ४ हसतो° सप्र० ॥ ५ णामाज्झा° ह० त० ॥ ६ ण पुच्छा सि० ॥ ७ खोडते सि० विना ॥ ८ पच्छादणे छिण्णे घुण्णे छेलिते छंदाभिलासे असं° सि० ॥ ९ °तिसापुणासणे जंपिते ह० । °तिसणासणे जंपिते त० ॥ १० मासि° त० एव ॥ ११ णिच्छुद्धे थेचित्ते थंभिए उद्दसिते त० एव ॥ १२ °विहवि° त० एव ॥ १३ °विचेट्ठिए उम्मच्छिए तिणासेयागविणासे पेट्ठअस° ह० त० ॥ १४ ओरोचिते° ह० त० विना ॥ १५ गुलिरित्ते ह० त० विना ॥

रूवपादुब्भावे अप्पणा आधारिते परेण वा पुच्छिते पसत्थे अत्थे णत्थि वेत्तव्वं, अप्पसत्थे पुच्छिते खिप्पं भविस्सतीति वत्तव्वं । भवंति चऽत्थ सिलोगा—

अमुयीणं च सव्वेसिं किलिट्ठाणं च दंसणे । असुभेसु य सद्देसु हीणमत्थं वियागरे ॥ १ ॥

तंरूवेण य तंरूवं तण्णिभेण य तण्णिभं । णिभं च णिभमत्तेण तण्णिभोपणिभेण य ॥ २ ॥

पसत्थमप्पसत्थं च उप्पातं समुपेक्खिया । वियागरेज्ज णेमित्ती तज्जातपडिपोग्गला ॥ ३ ॥ 5

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय अप्पसत्थऽज्झायो तेवीसइमो सम्मत्तो ॥२३॥छ॥

[चउवीसइमो जातीविजयज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय जातीविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि। तं जधा—तत्थ अज्जो मिलक्खु त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे अज्जो त्ति बूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे मिलक्खु त्ति बूया । तत्थ अज्जे 10 पुव्वमाधारिते अज्जं तिविधमाधारये, तं जधा-बंभणं १ खत्तियं २ वेस्समिति ३। तत्थ बंभेज्जेसु सुक्केसु य बंभणा विन्नेया १ । तत्थ खत्तेज्जेसु रत्तेसु य खत्तिया विन्नेया २ । तत्थ वेस्सेज्जेसु पीतेसु य वेस्सा विन्नेया ३। तत्थ सुद्देयेसु कण्हेसु य सुद्दा सव्वमिलक्खू य विन्नेया ।

तत्थ अज्जेसु मिलक्खूसु वा अणंतरेसु वा पुव्वमाधारितेसु सुक्कामासे सुद्धवण्णा विन्नेया । सामेसु सामामासे सामा विण्णेया । तत्थ कालामासे कालका विण्णेया । महाकायेसु महाकाया विन्नेया । मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया 15 विन्नेया भवंति। पच्चंवरकायेसु पच्चंवरकाया विन्नेया । तत्थ चलेसु सव्ववयहारगते य ववहारोपजीवी विन्नेया। तिक्खेसु [१]सव्वसत्थगते य सत्थोपजीवी विन्नेया । तत्थ पुधूसु खेत्तोपजीवी विन्नेया । णिक्खुडेसु णिक्खुडवासिणो विण्णेया । दढेसु चन्नतेसु य पव्व[त]वासिणो विण्णेया । तत्थ णिद्धेसु आपुणेयेसु य दीववासिणो विन्नेया । तत्थ [२]रमणेसु जणपदवासिणो विण्णेया । गहणेसु रण्णवासिणो विन्नेया । चलेसु चक्कचरा विण्णेया । परिमंडलेसु य चउरस्सेसु य णगरवासिणो विन्नेया । तत्थ सव्ववण्णपरिवद्धणेसु य सव्वपाणपतिवद्धणेसु य चेट्टितका विण्णेया । मूळजोणिगते 20 आपेलचिंधा विण्णेया । गहणेसु कण्हा विण्णेया । संवुते कंचुकचिंधा विण्णेया । उपगहणेसु सामा विण्णेया । सुक्कामासेसु रमणीयेसु ओवाता विण्णेया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमदेसीया विण्णेया । दक्खिणेसु दक्खिणदेसीया विण्णेया । पच्छिमेसु पच्छिमदेसीया विण्णेया । ◁[४] वामेसु उत्तरदेसीया विण्णेया । ▷ गम्मेसु अज्जदेसणिस्सिते बूया। गम्माणंतरेसु अज्जदेसंतरेसु बूया । णिक्खुडेसु णिक्खुडदेसिज्जे अम(ण)ज्जदेसिज्जा विण्णेया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जातीविजयो नामऽज्झायो चउवीसइमो सम्मत्तो ॥ २४॥ छ॥ 25

[पणुवीसइमो गोत्तज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय गोत्तनाम अज्झायं । तमणुवक्खस्सामो । तं जधा— तत्थ गोत्तं दुविधं, गहपतिकगोत्तं चेव १ दिजातीगोत्तं चेव २ ।

तत्थ माढ-गोल-हारित-चंडक-सकित-(कसित)-वासुल-वच्छ-कोच्छ-कोसिक-कुंडो चेति गहपतिकगोत्ताणि १ । तत्थ थूलेसु माढा विन्नेया । सव्वसगुणगते य चतुरस्सेसु गोला विण्णेया । सव्वचतुप्पयगते य णिद्धेसु हाला 30 विण्णेया । सव्वमदगते चेव परिमंडलेसु चांडिका विन्नेया । सव्वदंसणीयेसु चेव कसेसु कसिता विण्णेया । सव्वबीजगते चेव पुण्णेसु वासुला विण्णेया । सव्वपुप्फ-फलगते चेव दढेसु वच्छा विण्णेया। सव्वधातुगते चेव चले कोच्छा विन्नेया। सव्वपाणजोणीगते चेव दीहेसु कोसिका विन्नेया । सव्वपरिसप्पगते य हस्सेसु [५]कोंडा विन्नेया । सव्वमूळजोणिगते

१ वत्तव्वे अप्प° सप्र० ॥ २ सव्वगते य पसत्थो° हं० त० । सव्वत्थगते य सत्थो चं १ पु० सि० ॥ ३ रमणिज्जेसु हं० त० ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ °कुंडा सप्र० ॥

तत्थ एतेसिं गोत्ताणं जं गोत्तं इत्थी पुरिसो वा भवति तं गोत्तं विण्णातव्वं भवति। तत्थ बंभणगोत्ताणि चतुव्विधाणि भवंति। तं जधा—सगोत्ता १ सकविगंतगोत्ता २ बंभचारिका ३ पवरा ४ चेति। तत्थ अब्भंतरेसु सकगोत्ता विण्णेया। वंकेसु सगवि[ग]तगोत्ता विन्नेया। उद्धेसु बंभचारिका विण्णेया। उत्तमेसु पवरा विण्णेया।

उद्धंभागेसु मंडवा विन्नेया। समभागेसु पुधूसु वा सेट्ठिणो। ह्रस्सेसु वासिट्ठा। डहरचलेसु संडिल्ला। डहरथाव-
5 रेसु कुंभा। उण्णतेसु माढकी। तिरियंभागेसु करमवा। अधोभागेसु गोतमा। अग्गेयेसु अग्गिरसा। दढेसु भगवा। चलेसु भागवत्ता। दीहेसु दढेसु सद्दया। णिद्धेसु ओयमा। णीहारेसु हारिता। तणूसु लोकक्खिणो। उपद्दुतेसु कचक्खी। सुकेसु चारायणा विन्नेया। परिमंडलेसु पारायणा विन्नेया। जण्णेज्जेसु अग्गिवेस्सा विन्नेया। ह्रस्सेसु मोग्गल्ला विन्नेया। अब्भंतरअब्भंतरेसु अट्ठिसेणा। बाहिरबाहिरेसु गहणेसु पूरिमंसा। फरुसेसु गद्दभा। उपग्गहणेसु वराहा। कण्हेसु टोहला। णिक्खुडेसु कंडूसी। तिरिच्छाणेसु मागवाती। उत्ताणेसु काकुरुडी। णिकुज्जेसु कण्णा।
10 मज्झिमेसु मज्झंदीणा। वामेसु वरका। कायवंतेसु मूलगोत्ता। संसासु संसागोत्तं, केस-मंसु-णह-लोमगते पसन्नेसु य भेदाणुजोगगोत्तं बूया। दारुणेसु कढा। किन्नेसु कलवा। चतुरस्सेसु वालंबा। सेतेसु सेतस्सतरा। आतिमूलिकेसु तेत्तिरिका। मज्झविगाढेसु मज्झरसा। अंतेसु वज्झसा णेया। सामेसु छंदोगा। ववुभागेसु पसन्नेसु मुज्जायणा। अप्प-सत्थेसु कत्थलायणा। सारवंतेसु गगहिका। असारेसु णेरिता। कुटिलेसु थंभत्था। अच्छतेसु काप्पायणा। विच्छिन्नेसु कप्पा। आपुणेयेसु अप्पसत्थभा। धंडागयेसु सालंकायणा। सामेसु वणाणा। विसमेसु आमोसला। सामुग्गेसु
15 साकिज्जा। परिमंडलेसु उपयति। उण्णतेसु डोभो। उद्धभागेसु थंभायणा। मुदितेसु जीरंतायणा। वेरेसु दढका। णातिवत्तेसु धणजाया। कुद्धिरमणेसु संखेणा। असुद्धीरमणेसु लोहिच्चा। थिरेसुं अंतभागा पियोभागा। सदेयेसु संडिल्ला। दुंदुभिघोसे पव्वयत्रा। जीणाधिगतेसु आपुरायणा। [11]विविहेसु वायदारी। संवुते वग्घपदा। रत्तेसु पिला। उत्तमेसु जीयसाधारणेसु देवदत्ता। थंभेयेसु आपुणेयेसु वारिणीला। दढोदरेसु सुधरा।

सव्वधणगते चेव सव्वरिद्धागते सव्वदुगते सधाणसेसु य मूलगोत्तं चेव। हत्थ-पादसंजमे चेव धीणवे। सव्व-
20 अपरिग्गहेसु चेव सव्वसत्तेसु वेयाकरणं बूया। गणावलोकणे मीमंसका। जत्थ (तत्थ) पमाणे छंदोको। विछिण्ण-विमद्दिते सव्वविद्धगते पण्णायिकं बूया। ओजासणे कविताजाणे। यण्णेज्जेसु यण्णिकं बूया। सण्हेसु तिक्खकं बूया। अग्गेयेसु जोतिसिकं बूया। पतिलोमेसु इतिहासं बूया। संवेवेसु रहस्सं बूया। पुरत्थिमेसु सुयवेदं बूया। सामेसु सामवेदं बूया। संवुतेसु यजुव्वेदं बूया। दारुणे अहव्वेदं बूया। समभागेसु एकवेदं बूया। उद्धंभागेसु दुवेदं बूया। उद्धंभागेसु आहारेसु य तिवेदं बूया। उद्धंभागे आहारभंगेसु सव्ववेदं बूया। परिहितेसु छलंगवी बूया। महावकासेसु
25 सेणिका। लुक्खेसु गिरागति। अंतेसु वेदपुट्ठं बूया। धंभंतरेसु सोत्तिया। घोसवंतेसु अज्झायी। कन्नेसु आचरियो। मुदितेसु जायको। अणुलोमपतिलोमे णगत्ति। उत्तमंगे वामपारा॥

॥ इति गोत्तज्झायो नाम पंचवीसइमो समत्तो ॥ २५ ॥ छ ॥

[छव्वीसइमो णामज्झायो]

णमो भगवतो य अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स। णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय
30 अंगविज्जाय। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय णामज्झायं। तं खलु भो! तमणुवक्खा-यिस्सामो। तं जधा—

> यदक्षरमिदं प्रोक्तं, महर्षिप्रविचिन्तितम्। अंगविज्जावसुं रत्ननामाध्यायं प्रचक्ष्महे ॥ १ ॥
> ऋषयो येन बुध्यन्ते [15]लोके नामगतं पदं। तदहं प्रोदाहरिष्यामि, सङ्क्षेपं नामसङ्ग्रहम् ॥ २ ॥

---

१ °विकयगो° ह० एव॥ २ °सु पचारा हं० त०॥ ३ गोत्तमा सप्र०॥ ४ णिट्ठेसु सि० विना॥ ५ पूरियंसा हं० त०॥ ६ कावल्ला हं० त०॥ ७ णिण्णेसु हं० त०॥ ८ लंमया हं० त० विना॥ ९ टोला हं० त०॥ १० गिन्नेसु हं० त०॥ ११ जणा° हं० त० विना॥ १२ विपट्टेसु हं० त०॥ १३ सव्वधदुगए सज्झाणरेयसु हं० त०॥ १४ कमपारा हं० त० विना॥ १५ लोकानां सुगतं सि०॥

गते यो वाऽनुभाषेत, पढंतो य विसेसतो । जीवमज्जीवसंसट्ठं दुविधं नामपग्गहं ॥ ३ ॥
सममक्षरसङ्घातं भवेद् वा विसमक्षरम् । ससंजोगमसंजोगं गुणा-ऽभिप्पायकं तधा ॥ ४ ॥
सरादि १ व्यञ्जनादि वा २ सव्वणामगतं ३ तिधा ।
उष्मान्तं १ व्यञ्जनान्तं वा २ स्वरान्तमिति[1] ३ तत् त्रिधा ॥ ५ ॥
थीणामधेयं १ पुण्णामं २ णपुंसकमिति ३ तिधा । ऐकभस्सं १ दुभस्सं च वहुभस्समिति ३ तिधा ॥ ६ ॥ 5
अतीता १ ऽणागता काले २ वत्तमाणं च ३ तं तिधा । [.............................. ॥ ७ ॥]
उपसग्ग १ णिपाताणं २ णामा ३ऽक्खायं च ४ भागसो । विणिच्छितं महेसीणं भस्समेतं चतुव्विधं ॥ ८ ॥
सच्चं १ चेवालितं चेव २ तधा सच्चालितं भवे ३ । ण सच्चा णालिता या वि ४ गिरा लोके चतुव्विधा ॥९॥
अंतरिक्खं १ सलिलजं २ पत्थिवं ३ पाणजं ४ तधा । मग्गा य तस्स अक्खाता णामं जेहिं पवत्तते ॥ १० ॥
णक्खत्ताणं गहाणं च ताराणं चंद-सूरयो । विधीणं मंडलाणाय दिसाणं गयणस्स य ॥ ११ ॥ 10
उक्काणं परिवेसाणं तधा पुव्वगतस्स य । सतहुताणं मेवाणं पक्खिलं(णं) जे णभालया ॥ १२ ॥
कट्ठा-मग्गा-ऽऽलवाणं च गयणस्स णिसाय य । उदूणं च समाणं च तधा मास-ऽद्धमासयो ॥ १३ ॥
णिस्सितं या वि णक्खत्तं तधा णक्खत्तदेवतं । यं णामधेयं भवति सव्वमाकासणिस्सितं १ ॥ १४ ॥
कूपाणं उदपाणाणं णदीणं सागरस्स य । ह्रद-पुक्खरणीणं च णागाणं वरुणस्स य ॥ १५ ॥
समुद्द-पट्टणाणं च दण्णपाणं च सव्वसो । सव्ववारिचराणं च द्विजा वारिचरा य जे ॥ १६ ॥ 15
णदीरुहा य जे रुक्खा जले जं चाभिरोहति । यदस्सियं णामधेज्जं सव्वं सलिलसंभवं २ ॥ १७ ॥
दुमाणं च लताणं च सव्वपुप्फ-फलस्स य । देवाणं णगराणं च णातूणं जं जतो भवे ॥ १८ ॥
जत्तु देवणिभं किंचि वसुधामभिणिस्सितं । धातुरत्तगतं या वि सव्वं तं पुढविसंभवं ३ ॥ १९ ॥
सुराणं असुराणं च मणुस्साणं च सव्वसो । चतुप्पदाणं पक्खीणं कीडाणं किमिणं तधा ॥ २० ॥
जदस्सितं णामधेज्जं जं किंचेवंविधं भवे । बहुप्पदाणं अपदाणं सव्वं तं पाणसंभवं ४ ॥ २१ ॥ 20

सव्ववत्थ-भूसण-जाणा ◁-ऽऽसेण-▷ सयण-पाण-भोयण-आवरण-पहरण-पुक्खरगतं चेति, जं चेदं तदपि किंचि एतारिसं सव्वं तदपि जीवं सव्वणेरयिक-तिज्जजोणिगत-मणुस्स-देवा-ऽसुर-पिसाय-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गंधव्व-णागसुवण्णा चेति, जं चऽण्णदपि किंचिदपि एतारिसं दिव्वसंठाणणामधेज्जं तं जीवसंसट्ठं । तदेक-ति-पंच-सत्त-णवेकादसक्खराणि, जाणि चऽण्णाणि[2] चेव समक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, ततो परमेतारिसाणि[3] तं विसमक्खरसंघातं ततो द्वि-चतुर्थ-अट्ट-दश-द्वादशाक्षराणि, जाणि वि अण्णाणि विसमक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, अत परमेतारिसाणि समक्खरसंघातं 25 सें तत इदं सेध-संकरिसण-मदण-सिच-वेसमण-वरुण-जम-चंदा-ऽऽदिच्च-ऽग्गि-मारुत-दिवस-रयणि-रोदुंम-विडंग-णाग-सुवण्ण-देवा-ऽसुर-मणुय-वसुधंतरिक्ख-पव्वत-समुद्द-वसुधाधिप-रत्तणिये, एतं जं चऽण्णदपि किंचि एतारिसं णाम-गोत्तं चेति णिघुंटके उभयोरवि णिपयण्णगोण्णं तं तं णक्खत्तदेवयणामधेज्जेसु जं किंचि दीहसरीरादितं सरादितं वंजणादितं तहा उस्सातं तधा वंजणातं स्वरांताणि भवंति । जधा-थी-पुं-णपुंसकणामधेज्जाणि एक द्वि-बहुवचनानि अतीत-सांप्रता-ऽनागतानि सवक्षेरेव विण्णेयाणि भवंति उच्चारितरससुम्मट्ठे तधा उल्लोकित-ऽब्भुत्थियसमाचारे येदिज्जं विब्भंससुसितमिति 30 सवणणक्खत्तदेवताणिस्सितेसु थी-पुंसयो णामधेज्जेसु णक्खत्तं वूया । एतेसामेव संधिउदीरणे णक्खत्तणिस्सितं णामधेज्जं

१ यापि सम° सप्र० ॥ २ °ति त्रिधा सि० विना ॥ ३ 'एकमाष्यं द्विभाष्यं च बहुभाष्यमिति' एकवचनं द्विवचनं बहुवचनं चेत्यर्थः ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ५ सि० विनाऽन्यत्र-°णि विविदसमक्खरसंघा° हं० त० । °णि विविसमक्खरसंघा° सं ३ पु० ॥ ६ °णि यं विसंघातं सं ३ पु० ॥ ७ संतत इदं सेंहसं° हं० त० ॥ ८ °रोदम° हं० त० ॥ ९ यदिट्ठं यि° हं० त० विना ॥

बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे णक्खत्तदेवतणामधेज्जं बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे संहारे णक्खत्तणिस्सितं णामधेज्जं बूया । एतेसामेव सव्वत्तोदीरणे अत्थमितणक्खत्त-चंदा-ऽऽदिचणामधेज्जं बूया । तेसामेव चलोदीरणे अयहत्थिसु समगमारुत्तणामधेज्जं बूया । तेसामेव चलोदीरणे संहारे अजहत्थिसु समगमारुतणिस्सितं णामधेज्जं बूया । अवत्थितोदीरणेसु णक्खत्तणामधेज्जं बूया । तेसामेव च उदीरणे संहारे सुणक्खत्तदेवतणिस्सितं णामधेज्जं बूया । एतेसामेव अवकरिसणो-
5 दीरणे या पव्वत-सागर-मेदिणी-णदी-वेतिया-ऽऽयागणामधेज्जं बूया । तेसामेवावकरिसणे या अधरोदीरणे या संहारे पव्वत-सागर-मेदिणी-णदी-वेतिया-ऽऽयागणिस्सितं थी-पुमंसयो णामधेज्जं बूयादिति । तत्थ सव्वतिज्जजोणिगते तत सव्वतिज्जजोणीगते थी-पुमंसयो णामधेज्जे तिज्जजोणीणामधेज्जं बूया । तेसामेव संहारोदीरणे तिज्जजोणीणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव य उदीरणे थावरतिज्जजोणिणिस्सितं णामधेज्जं बूया । ☞ तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे विहगणामधेज्जं बूया । तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे विहगणिस्सियं नामधेज्जं बूया । तेसामेव उद्धंभागोदीरणे
10 संहारे परिसप्पणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव थिरोदीरणे संहारे परिसप्पणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे मच्छणामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे संहारे मच्छणिस्सितं [णामधेज्जं] बूया । तेसामेव अपकरिसणोदीरणे या कीडिकिविल्लकणामधेज्जं बूया । णिम्मज्जित-योहित-पोरुपविद्धा-ऽवलोकिते णिरयसव्वभवण[ग]ते सव्वधरगते चेति । तत सव्वणेरयिकेसु दाणवगतेसु अधरणामधेज्जं बूया । तेसामेव जमकोदीरणे णिरयणामधेज्जं बूया । तेसामेव जमकोदीरणे संहारे णिरयाणिरया-णिस्सितं या हिंसाणिस्सियं या णामधेज्जं बूया । तेसामेव
15 तिज्जभागोदीरणे संहारे णागणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे दाणवणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे दाणवनिस्सितं णामधेज्जं बूया थी-पुंसयोरिति ।

तत्थ णक्खत्तणामधेज्जं दुविधं—णक्खत्तणिस्सितं चेव १ णक्खत्तदेवतणिस्सितं चेव २ ।

तत्थ मणुस्सणामधेज्जं पंचविधं, तं जधा—गोत्तणामधेज्जं १ अयणामकं २ कम्मणामधेज्जं ३ सरीरणामं ४ करणणामं ५ चेति ।

20 तत्थ गोत्तणामधेज्जं गहपतिकगोत्तणामधेज्जं दिजातिगोत्तणामधेज्जं चेति । तत्थ गहपतिकगोत्तणामधेज्जं तं जधा—माढ-गोल-हाल-चंडिक-सक्कित(कसित)-यामुल-वच्छ-कोसिका चेति । अतो परमुद्धं बंभणगोत्तणामधेज्जं भवति १ ।

तत्थ अयणामकं समीसु सीसगोम अपि निव्वक-कवरक-उज्झितक-छड्डितका चेति । याणि वऽण्णाणि वि काणिचि-देयजुत्ताणि २ ।

तत्थ कम्मणामधेज्जं पंचकम्माधिकरणकाहप्पयोगस्सिमाभिनिस्सितं, जं चण्णदपि किंचिदेवारिसं कम्माधिकरण-
25 जुत्तं तं कम्मणामधेज्जं ३ ।

तत्थ सरीरणामधेज्जं पसत्थमप्पसत्थं च दुविधं—उम्मगदोसजुत्तं च उपदवदोसजुत्तं च । संड-विकड-सरड-गराड-थिविग आहारे उदके यावि देयभूतिपलायमैमाणुरद्धी समरमीयापि अपरिक्कमा ।

हदये मित्तयग्गे य गोत्तगमे य सव्वरीसम । संजोगेसु य सव्वेसु मित्तं बूया परिक्कमं ॥ १ ॥

णंदी णंदं च दिण्णं च णंदगो णंदिको तधा । णपुंसके अणंदिपदं णिकिरत्ते सेण्णिइड्डिते ॥ २ ॥

---

१ समागमारुयन्ति हं० त० ॥ २ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ °याहिय-पोरुपविट्टाऽय° हं० त० विना ॥ ५ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० सि० नास्ति ॥ ६ °मेव जमकोदीरणे संहारे णाम° सं ३ पु० ॥ ७ णागणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे संहारे मच्छणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव च उद्धं° सप्र० ॥ ८ दिजाति° हं० त० ॥ ९ °णाममपि हं० त० ॥ १० °माभिनिस्सितं हं० त० विना ॥ ११ तत्थ सरीरसरीर° सप्र० ॥ १२ संड-विकड-सयड° हं० त० ॥ १३ °समाणुयद्धी-यसमय° हं० त० ॥ १४ सप्परस सि० ॥ १५ सण्णिपुड्डिते हं० त० विना ॥

परिकमाणा विण्णेया जे जे पधदुप्पते इति पप्पहेवं कोगो चेति, जाणि यऽण्णाणि वि काणि वि एतारिसाणि तल्लक्खणदोससंजुत्तं । तत सरीरोपद्दवजुत्तं, तं जधा–खंडसीस-काण-पिल्लक-कुज्ज-यामणक-कुंविक-सवल-खंज-यडमो चेति, जाणि यऽण्णाणि वि एरिसाणि तं सरीरोपद्दवजुत्तं । पागयभासाय तत्थ पसत्यं ति विविधं, तं जधा–वण्णगुणजुत्तं चेव सरीरगुणजुत्तं चेव । तत्थ वण्ण[गुण]जुत्तं तिविधं, तं जधा–सुद्धे सामे कण्हे चेति । तत्थ सुद्धेसु अवदातको सेडो सेडिलो चेति पागयभासाय । सामे सामा सोमली सामकसामला चेति पागयभासाय । तत्थ कण्हे कालककालिका 5 चेति पागयभासाय । तत्तो तम्मि पादगोरा चेति इति वण्णणामवेज्जाणि । ततो सरीरगुणजुत्तं सुमुह-सुदंसण-सुरुव-जात-सुगता चेति । तत्थ सरीरजमभिणिस्सियं चयं चसित्तं बालकबालक-डहरक-मज्झिम-थविर-थेरसमाजुत्ताणि चयो जं सरीरजं चेति ४ ।

तत्थ करणणामधेज्जं जं किंचि सपरिकमं । ततो परिकमा तिविधा–एक्कक्खरा दुक्खरा तिअक्खरा चेति । तत्थ एक्कक्खरा चतुव्विधा, तं जधा–ककार-लकार-सुकार-णिकारा चेति । तत्थ दुक्खरो परिकमो दुविधो–सव्वगुरू चेवं 10 पधमक्खरलघू पच्छिमक्खरगुरू । तत्थ दुक्खरो परिकमो सव्वगुरू, तं जधा–तात-दत्त-दिण्ण-देव-मित्त गुत्त-भूत-पाल-पालि-सम्म-यास-रात-घोस-भाणु-विद्धि-नंदि-नंद-माना चेति । तत्थ पढमक्खरलघवो पच्छिमेकक्खरगुरू दुक्खरपरिकमा तं जधा–संचसिरियवलधरसद्दवगिरिरिति । अथातधा उक्खरा परिकमो विविधा–मज्झिमेकक्खरलघवो चेव पच्छिमेक-क्खरगुरवो चेव । तत्थ उक्खरा मज्झिमेकक्खरलघवो तं जधा–उत्तरा-पालित-रक्खिय-णंदण-णंदिक-णंदका चेति । तत्थ उक्खरा पच्छिमेकक्खरगुरवो तं जधा–सहितमहका चेति इति छव्विधा । एकचत्तारीसं परिकमा भवंतीति ॥ छ ॥ 15

तत्थ एवमणुगंतूणं सकणामधेज्जं पढंतेणं इदं तदिति नन्नतअक्खरेरिति । तत्थ छव्विधमक्खरं–सरा १ फरिसा २ अंतत्था ३ जोगवहा ४ अजोगवहा ५ यमा ६ चेति । तत्थ अकारादयो औकारणिधणा सरा । ककारादयो मकारणिधणा फरिसा । य-र-ल-या इति अंतत्था । चत्तारो श-ष-स-हेति उम्माणश्चत्वारो योगवहा । तथा विसर्जनीयो उपध्मानीयो जिह्वामूलीयो अनुस्वारोऽनुनासिका चेति तत्थ पंच [अ]योगवहाः–अः इति विसर्जनीयः, ᳵक इति जिह्वामूलीयः, ᳶप इत्युपध्मानीयः, अं इत्यनुस्वारः, ला (लँ) इति नासिका । क ख ग घ इति यमा चत्तारि । अत्र अकारादीणि 20 ऌकारनिधनानि समाणक्खराणि अट्ठ, दस इवेके । तत्थ ए ऐ ओ औ इति चत्तारो संधिअक्खराणि । अकार-आ-कारवज्जा नामिस्सरा, तानेव तु अक्खराणि । ककारादयो मकारणिधणा फरिसा । तत्थ क-च-ट-त-पा ख-छ-ठ-थ-फा श-ष-सा चेति त्रयोदश अघोसा । ग-ज-द-ड-बा घ-झ-ढ-ध-भा ङ-ञ-ण-न-मा य-र-ल-या हकारो य वीसति घोसवंतो, हकारेण सह एकविंशतिं । ङ-ञ-ण-न-मा अनुनासिका यमा चेति एकादशानुनासिका । ख-छ-ठ-थ-फा द्वितीया घ-झ-ढ-ध-भा चत्तारो योगवहा । यमनिधना छव्विधा । पंचसट्ठिं सव्ववायोगते भवंति भगवानाह अरहा 25 महापुरिस इति ।

ततो विसर्जनीयो हकारो चेति उरे विण्णेयो सरोष्मसवण्णे चेति । अकार-आकारा कंठे विण्णेया सवण्णे चेति । ऋकार-ॠकार-कवर्गो जिह्वामूलीयो चेति हनु(नु)मूलजिह्वामूलीयो विण्णेयो सवण्णे चेति । इकार-ईकारो एकार-ऐकारो चवर्गो यकारो शकारो चेति तालुको विण्णेयो सवण्णे चेति । पकारो मज्झिमो टवग्गो चेति सिरसि विण्णेयो

---

१ परक्कमाण वि° ह० त० विना ॥ २ °रूवाकाणो हं० त० ॥ ३ °कुंधिक° हं० त० विना ॥ ४ °तको सेणसेडिलो हं० त० विना ॥ ५ सासणी हं० त० ॥ ६ ययं चस्सियं या° हं० त० ॥ ७ °सम्मजु° हं० त० ॥ ८ सपरक्कमं हं० त० विना ॥ ९ एधिक्करा दुक्खरा तिक्खरा हं० त० ॥ १० चेव पधमक्खरगुरू हं० त० ॥ ११ °पालयालिसम्मतास° हं० त० विना ॥ १२ सव्वसरियवलधरसद्द° हं० त० ॥ १३ अहातहा हं० त० ॥ १४ °मा तिविधा सप्र० ॥ १५ उत्तर-पालित-रिक्खियणंणंदिकणंदिका चेति हं० त० विना ॥ १६ अंतत्था ३ योगवहा ४ अयोग° हं० त० विना ॥ १७ अंतत्था हं० त० विना ॥ १८ °स्वारः इति सं ३ पु० । °स्वारः ल्ला इति सि० ॥ १९ जमा हं० त० ॥ २० °नि यकार° सप्र० ॥ २१ तातेव अक्खर° सं ३ पु० । तानेय अक्खर° सि० ॥ २२ मकार सकार ऋकार कवर्गो हं० त० ॥

सवण्णे चेति । ळंकारो तवग्गो सकारो ळकारो चेति दंतेसु विण्णेयो सवण्णे चेति । उकार ऊकार ओकार औकार पवग्गे उपध्मानीय वकारो चेति ओट्ठयो विण्णेयो सवण्णे चेति । दंतमूले रेफो विण्णेयो सवण्णे चेति । अवत्तवितसंदिट्ठे सतरूपे लकारो विण्णेयो सवण्णे चेति । तत्थ उद्धंभागेसु इकार-ईकारा एकार-ऐकारा ओकार-औकारा विण्णेया सवण्णा चेति । ऋजुभागेसु अवत्थितेसु अकार-आकारो विण्णेयो सवण्णे चेति । संवुतेसु उद्धंभागेसु अवत्थितेसु ऋकारो विण्णेयो सवण्णे चेति । ओकार-औकारो अधेभागेसु विण्णेया सवण्णा चेति । संधिसु संधिअक्खराणि हत्थ-पाद-गुप्फ-जाणु-जंघोरु-वसण-फिज-कुक्खि-पस्स-हत्थतल-बाहु-सहणुगंड-ओट्ठसवण्णेण नाम चेति समाणेसु । मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणके चेव समाणं विण्णेयं सवण्णे चेव । उद्धंभागा-ऽधरभागेसु णामिणो विण्णेया सवण्णा चेव । णिक्खित्ते पडिकुंडिते चेव सबिंदुं विण्णेयं सवण्णे चेव । तत्थ वज्झेसु अब्भंतरेसु य णीहारेसु पकिण्णेसु एकवंजणमसंजोगं विण्णेयं सवण्णे चेव । तत्थ समाणेसु मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणेसु य मलोपकरणेसु य संजोगं विण्णेयं सरिससंयोगं चेव ।

आहारेसु सरं बूया णीहारे वंजणाणि तु । णीहारा-ऽऽहार-मिस्सेसु संपभिण्णं पवेदये ॥ १ ॥
कवग्गमसितेसीऽऽहु यकारं वा वि णिव्वदा । पडिरूवेसु कण्हेसु जकारं तत्थ णिद्दिसे ॥ २ ॥
हवग्गो य-रकारो श-ष-सा चेव पंडरे । चित्ते लकारो विण्णेयो ससंजोगं च णिद्दिसे ॥ ३ ॥
चवग्गो य लकारो य हकारं चोवि तंबसु । णीले पवग्गो विण्णेयो चवग्गो वा वि पीतके ॥ ४ ॥
थूले हवग्गो विण्णेयो मकारो यावि मज्झिमे । उपध्मानीयो विण्णेयो जिह्वामूलीव एव य ॥ ५ ॥
कवग्गो च रकारो यं गकारो य कणीयसो । तवग्गो य लकारो यं कसेसेवे पकित्तिया ॥ ६ ॥
चवग्गो यं चकारो य यकारं वा वि जेट्ठगं । णातिथूलेसु बोद्धव्वा तधा णातिकसेसु य ॥ ७ ॥
चतुरस्सेसु सव्वेसु सव्वचतुप्पदेसु य । चतुक्केसु य सव्वेसु चेतुपक्खयणेसु य ॥ ८ ॥
औकारं वा एकारं वा बूया वण्णेसु वण्णवि । परम्मुहे वा तिज्जं वा चकारोऽवत्थितेसु य ॥ ९ ॥
हकारोऽभिमुहो णेयो औकारो सव्वणिको । आयुयेसु य सव्वेसु सव्वजोगागतेसु य ॥ १० ॥
ऐकारं वा यकारं वा बूया सव्वक्खरेस्विधी । एकारमुद्धभागेसु ओकारमधरेसु य ॥ ११ ॥
बूया एकारमाहारे यत णीहारलक्खणे । शिरो गंडे तथा णामी जाणु-गुप्फे तथा द्विजा ॥ १२ ॥
भायणेसु य सव्वेसु यं किंचि परिमंडलं । दव्वोपकरणं लोके यं वट्टं दिस्सते क्वचि ॥ १३ ॥
पकारं वा चकारं वा बूया वण्णेसु वण्णवि । वट्टे दव्वोपकरणे वद्दणासी भवे क्वचि ॥ १४ ॥
हकारो तत्थ विण्णेयो धकारो चेतरेसु वि । रसदव्वो तथा दव्वे सुपपॅसकडेच्छुके ॥ १५ ॥
आदरिसे वा सुयायं वा यं वट्टस्स तु अंततो । पुप्फं फलं च यं किंचि दीहवट्टं भवे क्वचि ॥ १६ ॥
यकारं वा चकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । आहारे संति मूलेसु चकारमभिणिद्दिसे ॥ १७ ॥
णीहारेसु चकारो सा सवेसंसगतेसु य । णक्खत्तेसु य सव्वेसु तथा णक्खत्तदेवते ॥ १८ ॥

---

१ हकारो सत॰ ॥ २ अयनूरियसंदिट्ठे सतरूपे हं॰ त॰ ॥ ३ °सु अकारो हं॰ त॰ विना ॥ ४ °क्खिसे पणिर्दु° हं॰ त॰ विना ॥ ५ मलाभ° हं॰ त॰ ॥ ६ मलोप° हं॰ त॰ ॥ ७ वंजणेण तु हं॰ त॰ विना ॥ ८ °साहु हं॰ त॰ ॥ ९ चायियं यसु हं॰ त॰ ॥ १० य सयारो हं॰ त॰ विना ॥ ११ य सेसेप य° हं॰ त॰ ॥ १२ य जकारो य सथारं हं॰ त॰ ॥ १३ चउप्पहयणेसु हं॰ त॰ ॥ १४ आयणेसु हं॰ त॰ ॥ १५ पकारं कायकारं वा बूया सव्वक्खरे गिध हं॰ त॰ ॥ १६ यकारमधुरे° हं॰ त॰ विना ॥ १७ पीया(धा)र° हं॰ त॰ ॥ १८ तहा टिका हं॰ त॰ ॥ १९ यकारो हं॰ त॰ ॥ २० तधो दव्वे हं॰ त॰ विना ॥ २१ °पासुफडेच्छुको हं॰ त॰ ॥ २२ सति भूलेसु हं॰ त॰ ॥ २३ सा सवेसंगतेसु हं॰ त॰ । सा यसंगतेसु सं ३ पु॰ ॥

जिब्भग्गे दंतपज्जं च [1]पंजजत्तुणिसेवणे । केसंते कण्णसक्कुलं कण्णपालीय य तधा ॥ १९ ॥
अवत्तं वा वि [2]यं वट्टं अट्ठदंताण तं चयं । णमोक्ते वंदिते वा पूयितुल्लोक्किते तधा ॥ २० ॥
चंदणक्खत्तघोसे य हकारमभिणिद्दिसे । भूसंघाते य णिण्णे य [3]गैत्तेयमविणामिते ॥ २१ ॥
विनामितायं जिब्भायं जं किंचि [4]विणतं भवे । विणतेसु य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य ॥ २२ ॥
[5]चंपसंथाणरूपेसु हकारमभिणिद्दिसे । वत्थिसीसे तिके चेव चिवुके संभुमन्तरे ॥ २३ ॥
तिकुज्जं वा वि जं किंचि [6]पंकारं तत्थ णिद्दिसे । कुंचितेसु य केसेसु मंसु-लोमे य कुंचिते ॥ २४ ॥
[7]कुडिलेसुं य दव्वेसु सव्ववलीगतेसु य । आकुंचितासंगुलीसु गत्तेसाऽऽकुंचितेसु य ॥ २५ ॥
आकुंचितायं जिब्भायं जं किंचि [8]कुंडलं भवे । आविद्धे चेट्ठिते चेव भामिते सव्वसप्पसु ॥ २६ ॥
[9]ठंकारं वा हकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । विधत्तेसु [10]ढंकारो स (सा) हकारे संवुतेसु य ॥ २७ ॥
पंडरेसु [11]ढंकारो सा चमुतेसु णिव्वदा । आकुंचिताणं गत्ताणं जं किंचि वाहिरं भवे ॥ २८ ॥
कुंडिलं नाम जं किंचि नय[12]कुंचितं भवे । छिन्ने भिन्ने य भग्गे य कुट्टिते वा वि [13]णिव्वेरो ॥ २९ ॥
[14]ढंकारं वा लकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । [15]तंतवज्जेसु सव्वेसु दकारमभिणिद्दिसे ॥ ३० ॥
पंडरेसु दकारो स्सा संधिसुत्तेसु णिव्वदा । [16]पंपुते दद्दुपिलकाय वणे खते तिलकालके ॥ ३१ ॥
चम्मक्खीले तद्दोसे य पलिते य तधा पुणो । [17]पुरीसमुत्ते सद्दे य [18]असीवे कण्णगूधके ॥ ३२ ॥
पूतिके रुधिचीके य णिद्धुते खुविए तधा । विकूणिते कूविते य रुण्ण विकंदिते तधा ॥ ३३ ॥
कासिते जंभिते चेव वेविते परिदेविते । पयलाइते पसुत्ते य पतिते विप्पलोट्टिते ॥ ३४ ॥
णिव्वाहिते णिरससिते [19]रोगे संधाणिदंसणे । उवहुते फले पुप्फे पावन्ने पाण-भोयणे ॥ ३५ ॥
उवहुतेसु सव्वेसु हकारमभिणिद्दिसे । ऋजुकेसु उज्जुलेहासु रकारमभिणिद्दिसे ॥ ३६ ॥
वालेसु सव्वजीयेसु जकारमभिणिद्दिसे । णामप्पयोगे [20]सव्वत्त मुदितेसु य सव्वसो ॥ ३७ ॥
.... । सत्थिकाकाररूपेसु मकारमभिणिद्दिसे ॥ ३८ ॥
उत्ताणेसु य वत्तेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । उक्कूजे सयणे वत्थे दव्वोपकरणे तधा ॥ ३९ ॥
[21]धं-चकारो द्दढहुतं तकारो [22]पदमा तधा । उद्धमुहे रकारं वा मकारं वा वि मज्झिमं ॥ ४० ॥
तिज्झाणतेसु गत्तेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । तिज्झंभगासणे वत्थे दव्वोपकरणे तधा ॥ ४१ ॥
द-[23]धंकारो यकारो य ह्राऊणापणमेव य । लघवो पंचवण्णा जे गुरवो जे य कित्तिता ॥ ४२ ॥
लघवो यावि जे वण्णा सेसा वक्खामि गोरवं । [24]यमा य योगवाहा य संयोगा यावि कैवला ॥ ४३ ॥
पंच वायें[25]तणिद्धं ति पुव्वरूवगुरू भवे । [26]दुवंजणपरवरो सतवंजणमुत्तमं ॥ ४४ ॥
[27]संजोगकद्धणामस्स संजोगेसु य छव्विधं । गत्ताणमादिमूलेसु पढमं तत्थ णिद्दिसे ॥ ४५ ॥
पढमेसु य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य । [28]गत्ताणमद्धदेसेसु ततियं तत्थ णिद्दिसे ॥ ४६ ॥

---

१ पणुजंतुणि° हं० त० ॥ २ °यं वद्धं अट्ठदंताण संचयं हं० त० ॥ ३ गत्तेयमिति नामिए हं० त० विना ॥ ४ विणितं हं० त० विना ॥ ५ चयसंथाणरूवेसु दकार° मि० ॥ ६ पकारं हं० त० ॥ ७ °ले सव्वदव्वेसु हं० त० विना ॥ ८ कुंडिलं हं० त० सि० ॥ ९ टकारं वा हुंकारं हं० त० ॥ १० टकारो हं० त० ॥ ११ टकारो सांवसुएसु णिच्छदा हं० त० ॥ १२ °कुंचिए भवे हं० त० ॥ १३ णिच्छदा हं० त० ॥ १४ डंकारं हं० त० विना ॥ १५ तयवत्थेसु हं० त० ॥ १६ जपुत्ते दद्दुविलकाय चरणे खते हं० त० ॥ १७ सपुरी° हं० त० ॥ १८ असीवे णकगू° हं० त० ॥ १९ मोगे हं० त० ॥ २० सव्वं व हं० त० ॥ २१ धम्मकारो हं० त० ॥ २२ पढमा तधा । उद्धमुद्धेरकारं हं० त० ॥ २३ धयकारो जकारो य हं० त० ॥ २४ जमा य जोगवण्णा य संजोगा हं० त० ॥ २५ °तणिद्धं ति हं० त० ॥ २६ दुवंजण° हं० त० ॥ २७ संजोगं घट्टणामस्स हं० त० विना ॥ २८ गत्ताणमद्धदेसेसु हं० त० ॥

[1]तितियेसु य सव्वेसु देव्वाणं मज्झिमेसु य । गत्ताणामंवदेसेसु जे वथा तत्थ णिद्दिसे ॥ ४७ ॥
पच्छिमेसु य सव्वेसु [2]दव्वोवकरणेसु य । आदि-म[3]ज्झधिगादेसु बितियं तत्थ णिद्दिसे ॥ ४८ ॥
मज्झिमाणं विमरिसेसु चउत्थं तत्थ णिद्दिसे । यदक्खरं णामधेज्जं पुरत्था समुदीरितं ॥ ४९ ॥
तण्णक्खरं नामधेज्जं भागाभागं पवेदये । थीणामधेज्जं थीणामे तुल्लातुल्लं पवेदये ॥ ५० ॥
5 पुतं णामगते णत्थि गेयेण णंतगायणं । अधीयतां सामवेदं विप्पाणं तप्पुग्गं भवे ॥ ५१ ॥
सव्वेसेतेसु रूवेसु पंडरं अभिणिद्दिसे । पुरत्थिमेसु गत्तेसु सद्द-रूवे पुरत्थिमे ॥ ५२ ॥
दक्खिणेसु य गत्तेसु दक्खिणं दारमादिसे । दक्खिणेसु य सव्वेसु पीते रूवे य दक्खिणे ॥ ५३ ॥
सव्वकण्हेसु रूवेसु पच्छिमं दारमादिसे । पच्छिमेसु य सद्देसु सद्दे रूवे य पच्छिमे ॥ ५४ ॥
सव्वमेतेसु गत्तेसु [7]उत्तरं दारमादिसे । उत्तरेसु य गत्तेसु सद्दे रूवे य वामतो ॥ ५५ ॥
10 णासावंसे भुमंगुट्ठे ओट्ठे गंडे सपोरिसे । अंगुलीसु य सव्वासु णंतं भागे पवेदये ॥ ५६ ॥
णंतं चरेसु पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । णंतं चरेसु सव्वेसु णंतभागं पवेदये ॥ ५७ ॥
हत्थयो पादयो चेव जंघयोरूरुयो तधा । गीवायं वा वि [4]वद्धो च पुव्वंभागं पवेदये ॥ ५८ ॥
मज्झिमेसु य पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । मज्झिमेसु य सव्वेसु [5]पट्ठिपापुदरे तधा ॥ ५९ ॥
फढं पस्सोदरं या वि कुच्छीसु सिरसी तधा । गुहे य दुपधोभागे णक्खत्तं अभिणिद्दिसे ॥ ६० ॥
15 फायवंतेसु पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । कायवंतेसु सव्वेसु महाखेत्तं पवेदये ॥ ६१ ॥
केस-मंसु-णहग्गेसु तणूरु-गहणेसु य । हहरे चले थावरे या अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६२ ॥
सव्वबीयगते या वि तधा कीड-किविल्लगे । अणूसु सव्वखुद्दुमेसु अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६३ ॥
दारुणेसु य सव्वेसु सव्वपक्खि-चतुप्पदे । सव्वेसु यावि दुग्गेसु दारुणंगाणि णिद्दिसे ॥ ६४ ॥
चलेसु चलसंधीसु णिद्दिसे थावरेसु य । सव्वेसु [6]थावरण्णे य थावरेसु य णिद्दिसे ॥ ६५ ॥
20 आसिलेसा तधा मेत्तं धंभेयं विस्सदेवतं । सतभिसावज्जमेतेसु वंजणंताणि णिद्दिसे ॥ ६६ ॥
अद्दा पूसो य साती य मद्दा मूलं च पंचमं । ठेकुरं सव्वगुरुकं पढमेगलघुं तधा ॥ ६७ ॥
[8]सद्दाना तधऽरिसलेसा संसमत्ते [.........] । कित्तिका रोहिणी चेव फग्गुणी रेवती तधा ॥ ६८ ॥

॥ त्यक्खरं मज्झिमं ॥ छ ॥

द्वितीये गुरुं णेयं पयापति [10]सतभत्तो । [[11]........] एव गुरुं णेयं महीवूधो ॥ ६९ ॥
25 [...] मिदेयमितिगुत्तघोसगिरियधि तधा । परिकमा से देवतेते विण्णेया कण्हसंभवा ॥ ७० ॥
[12]सम्मसेण करति यो रक्खितो [13]* रोजविम्गहा * । [14]रतिणेयो [य] सूरो य सद्दो य सहितसिरि ॥ ७१ ॥
मित्तभोगाचलो भूति भाणु मित्त मद्दा तधा । पालितो पालिपालो य महितो महिको तधा ॥ ७२ ॥
नीलेसु पतिरूवेसु [16]धीरसेते परिकमा । [17]पधक्खरगतं [चेव] लकारो ताम्रसंभरो ॥ ७३ ॥
ततो दत्तो य दिण्णो य णंदणो णंदिको [18]धीरो । देवदासो य पीतेसु णिकारो णंदको तधा ॥ ७४ ॥
30 इंदे गाते तधा [19]अंधे तधा जमलभूसणे । परिकमा ससंजोगा [20]सेतमिस्साग्रवं तधा ॥ ७५ ॥

---

१ ततियेसु० इत्यर्थ श्लोकः सं ३ पु० प्रतिषु द्विरावृत्तो दृश्यते, मया तु हं० त० सि० प्रतीराश्रित्य सकृदेव आदृतः ॥ २ दव्व्योयकरणेसु य सि० ॥ ३ °ज्झयिगारेसु हं० त० ॥ ४ पद्दी च पुच्छं भागं हं० त० विना ॥ ५ पट्ठिसापु हं० त० ॥ ६ थावरेसे सं ३ पु० ॥ ७ उत्तरं हं० त० ॥ ८ रुद्दानायधस्सिरलेसा संसामते हं० त० ॥ ९ उक्खरं हं० त० ॥ १० सयचप हं० त० ॥ ११ [......] च गुरुं हं० त० विना ॥ १२ सम्मासेण हं० त० विना ॥ १३ ** एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सि० एव वर्तते ॥ १४ रतिपेतिणेयो सूरो हं० त० ॥ १५ °भागो चलो त्रूतिभाउमित्त° हं० त० ॥ १६ धादसेते हं० त० विना ॥ १७ एकक्खर° हं० त० सि० ॥ १८ धरो हं० त० ॥ १९ अंचे तधा हं० त० ॥ २० आसमिस्साग्र° हं० त० ॥

[1]सत्थे सत्योपजीवीसु परक्कमकधासु य । [2]ताओ गुत्तो य सेणो य रक्खितो य परिक्कमा ॥ ७६ ॥
संरोधेसु य सव्वेसु तधा वाहुपरिग्गहे । [3]परिक्खेवेसु सव्वेसु संबाधे वंधणेसु य ॥ ७७ ॥
[4]चलवता तधा गुत्तो पालि पालोयणी तधा । पालितो रक्खितो चेव विन्नेया [5]गुत्त-रक्खिते ॥ ७८ ॥
णंदी णंदो वलो मित्तो णंदणो णंदको सिरि । सामेसु मुदिते चेव मह्व्वमह्कारिणि ॥ ७९ ॥
हत्थयो भासणे चेव सव्वदाणपरिग्गहे । दत्तो दिण्णो य विण्णेया पासंडेसु य सव्वसो ॥ ८० ॥
उत्तमे सक्कतो चेव वंदिए पूतिए तधा । देवो भूति जसो घोसो भाणू णेया महासिरि ॥ ८१ ॥
[6]महितो यावि विण्णेयो सिरिमुहविभूसणे । दढे धातुगते यावि गिरि णेयो धरोऽचलो ॥ ८२ ॥
पाद-जंघागते णिच्चं पादुकोपाहणे तधा । पेस्सोवकरणे यावि दासं बूया परिक्कमे ॥ ८३ ॥
आहारे वोदके या[वि] देव भूति वलो यसो । भाणू वद्धी य सम्मं च सरपीतपरिक्कमा ॥ ८४ ॥
हितये च मित्तवग्गे य गोत्तणामे य सव्वसो । सेसं जोगेसु सव्वेसु मित्तं बूया परिक्कमं ॥ ८५ ॥
णंदी णंदो य दिण्णो य [7]णंदणो णंदको तधा । णपुंसकेसु णंदिकरं णिक्खित्ते सण्णिकुट्टिते ॥ ८६ ॥
[8]णीहारेसु य सव्वेसु वाहिरेसु चलेसु य । णिज्जीवेसु य सव्वेसु णामं णिज्जीवमादिसे ॥ ८७ ॥
आहारेसु य सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । *गोणरूवेसु* सव्वेसु *गोणणामं* पवेदये ॥ ८८ ॥
णीहारेसु य सव्वेसु वज्झेसु य चलेसु य । आभिप्पायिकणामेसु आभिप्पायिकमादिसे ॥ ८९ ॥
अभिहारेसु सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । समणामेसु सव्वेसु णामं बूया समक्खरं ॥ ९० ॥
समणामेसु सव्वेसु जमलाभरणेसु य । द्वंद्वे दव्वोपकरणे य समं जोगं पवेदये ॥ ९१ ॥
एक्केक्केसु य गत्तेसु एक्काभरणकेवले । वंजणेसु य सव्वेसु वंजणंतं पवेदये ॥ ९२ ॥
णीहारा-ऽऽहार-मीसेसु वज्झ-ऽब्भंतरमिस्सिते । उम्मत्तेसु य सव्वेसु उम्मत्तं तत्थ णिद्दिसे ॥ ९३ ॥
आहारेसु य सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । पुण्णामेसु य सव्वेसु पुण्णामं तत्थ णिद्दिसे ॥ ९४ ॥
णीहार-मिस्सेसु तधा वज्झेसऽब्भंतरेसु य । णपुंसकेसु सव्वेसु णामं बूया णपुंसकं ॥ ९५ ॥
एक्केक्केसु य सव्वेसु एकोपकरणेसु य । एक्कभस्से य सव्वम्मि एक्कभस्सं पवेदये ॥ ९६ ॥
समाणेसु य सव्वेसु जमलाभरणे तधा । तधा विवयणे यावि विभस्समभिणिद्दिसे ॥ ९७ ॥
[9]उक्खरप्पभितीगणेसु बहूपकरणेसु य । बहुभस्सेसु सव्वेसु बहुभस्सं पवेदये ॥ ९८ ॥
पच्छिमेसु य गत्तेसु सद्द-रूवे य पच्छिमे । अतीतवयणे यावि अतीतवयणं भवे ॥ ९९ ॥
वाम-दक्खिणगत्तेसु सद्दे रूवे तधेव य । संपत्तेसु य सव्वेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ १०० ॥
पुरत्थिमेसु गत्तेसु सद्दे रूवे पुरत्थिमे । अणागते य वयणे वक्कं बूया अणागतं ॥ १०१ ॥
उवहुतेसु गत्तेसु सद्दे रूवे उवहुते । सोवसग्गे य सव्वम्मि सोवसग्गं पवेदये ॥ १०२ ॥
णिम्मज्जिते णिल्लिहिते छिण्णे भिण्णे णिकूजिते । णिपात्तेसु य सव्वेसु णिपातमभिणिद्दिसे ॥ १०३ ॥
दढामासेसु सव्वेसु थावरेसु य सव्वसो । ☞ सव्वनामगए चेव बूया नामगयं विसुं ॥ १०४ ॥
णिमज्जिया पमज्जिया य संधिमट्टिभिमज्जिए । आखाए वा वि सव्वत्त आखातमभिणिद्दिसे ॥ १०५ ॥
उद्धभागेसु सव्वेसु सव्वभंगेसु सव्वसो । उद्धभूए य वयणे सव्वमेवाभिणिद्दिसे ॥ १०६ ॥
अहोभागेसु गत्तेसु कुड्डिएसु य सव्वसो । ☜ विवरीते य वयणे वितधं तत्थ णिद्दिसे ॥ १०७ ॥

१ सत्यो सत्यो° हं० त० ॥ २ तत्तो गत्तो हं० त० विना ॥ ३ परिखाचेसु हं० । परिक्खेत्तेसु त० ॥ ४ चलवंता हं० त० ॥ ५ मुत्त° हं० त० ॥ ६ महिणाया वि वण्णेया सिरिमुहविभूसणा । दढे धातुमए यावि गिरे णेयो धरोऽचलो हं० त० ॥ ७ नंदिणो नंदिको हं० त० ॥ ८ णीहारीसु हं० त० विना ॥ ९ अक्खर° हं० त० हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं० त० एव वर्त्तते ॥

उद्धाधर-विमीसेसु कुडिला-ऽकुडिलेसु य । भूता-ऽभूते य वयणे बूया सव्वाणितं गिरं ॥ १०८ ॥
गत्ताणं छिद्ददेसेहि दव्वणामंतरेसु य । अवत्तेसु य सद्देसु असव्वणवमादिसे ॥ १०९ ॥
उद्धंभागेसु गत्तेसु चंदणक्खत्तसंगहे । अंतरिक्खे य सव्वत्त अंतरिक्खं पवेदये ॥ ११० ॥
आपुणेयेसु गत्तेसु जलेयेसु य सव्वसो । सव्वमत्थगते यावि वारिजं तत्थ णिद्दिसे ॥ १११ ॥
5 दढामासेसु सव्वेसु थावरेसु य णिच्चसो । सव्वचातुप्पदे यावि पत्थिवं णाममादिसे ॥ ११२ ॥
चलामासेसु सव्वेसु चालायं णिग्गमेसु य । सज्जीवेसु य सव्वेसु पाणजं णाममादिसे ॥ ११३ ॥

संगहे एकसण्णा । तत्थ एक्कस्सरणामधेज्जाणि–श्रीः श्रिया स्त्रीः स्त्रियाः वागिति वाचा गौरिति णावा खमिति आकासं, जाणि चऽण्णाणि एवंविधाणि णामधेज्जाणि तदेकक्खरं णाम । तत्थ प्लवा चउव्विधा–दुक्खरा त्र्यक्खरा चतुरक्खरा पंचक्खरा । तत्र दुक्खरा प्लवा द्विविधा–सव्वगुरु चेव पढमक्खरलघवो चेव पच्छिमक्खरगुरवो ⊲ चेति । 10 तत्थ दुक्खरगुरवो ⊳ प्लवा णक्खत्तेसु तं जधा–अद्दा पूसो हत्थो चित्ता सांती जेट्ठा मूलो मघा इति, तत्थ णक्खत्ते देवतेसु चंदो रुद्दो सप्पो अज्जो तट्ठो वायू मित्ता इंदो तोयं विस्से अजा बंभा विण्हू पुस्मा इति णक्खत्तदेवतेसु, कण्हो रामो संबो पज्जुण्णो भाणु इति दसारणिस्सितेसु, लक्ष्मी भूती वेदी नदी इति थीणामधेज्जेसु । तत्थ परिक्कमेसुं भात-दत्त-देव-मित्त-गुत्त-पाल-पालित-सम्म-सेण-दास-रात-घोस-भाग-वुद्धिमात्रा वेति परिक्कमेस्विति, अनेन परिक्कमेण सेव्वत्थाणुगंतव्वं भवतीति । तत्थ पढमक्खरलघवो 15 पच्छिमक्खरगुरवो सव्वगुरवो चेति । तत्थ पच्छिमक्खरलघवो त्र्यक्षरलघवो णक्खत्तेसु–अभिजि सवणो भरणी अदिती सविता गिरिती वरुण इति, णक्खत्तदेवतेसु सहितमहितरतिका चेति परिक्कमेसु इत्येतेन प्लवेनाणुगंतव्वं भवति । तत्थ मद्धक्खरलघवो प्लवा-कत्तिका रोहिणी आसिका मूसिका वाणिजो मगधा मधुरा प्रातिका चेति णक्खत्तेसु, वे फग्गुणीयो रेवती अस्सयाविति णक्खत्तेसु, अज्जमा अश्विनाविति णक्खत्तदेवतेसु इति अनेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । तत्थ पढमक्खरलघवो प्लवा-विसाहा आसाढा दुवे धणिट्ठा इति णक्खत्तेसु, इंदग्गीति णक्खत्तदेवतेस्विति अनेन प्लवेनानुग- 20 न्तव्वं भवति । तत्थ चतुरक्खरप्लवा सव्वगुरवो तृतीयलघवो प्रथमलघवो प्रथमद्वितीयलघवो । तत्थ सव्वगुरवो तं जधा–रोद्दत्रातो पुस्सत्रातो फग्गुत्रातो हत्थत्रातो अस्सत्रातो इति देवते, अपच्छिमगुरवो-कैघसिल अचणिल पृथिविल इति । अगस्त्य ससित्रात पितृत्रात भवत्रात वसुत्रात अंजुत्रात यमत्रात इति प्रथमलघुरिति । शिवदत्त पितृदत्त भवदत्त वसुदत्त अंजुदत्त यमदत्त इति विपच्छिमे गुरुणि पुणव्वसु णक्खत्तेसु । प्रजापति बृहस्पति शैवक्रतुरिति देवतेसु इति, अनेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । [13]संधानेन संधानं प्रमाणेन प्रमाणं परिक्कमेण परिक्कमं प्लवेन प्लवं 25 सव्वत्ताणुगंतव्वं भवति ।

इति अक्खरणाममिदं सव्वं णामविणिच्छयं । सभस्सं जनयं लक्ष्मी यमो य [14]विज्जोविज्जारिति ॥ ११४ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णामज्झायो छव्वीसतिमो सम्मत्तो ॥ २६ ॥ छ ॥

---

१ दव्वणामं' हं० त० ॥ २ दक्खरा त्र्यक्खरा चतुरक्खरा पंचक्खरा । तत्र द्व्यक्खरा हं० त० ॥ ३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ °सु भात° हं० त० ॥ ५ सप्पअग्गोऽज्जु° सं० ॥ ६ °क्खरलघवो चेति हं० त० ॥ ७ चउ-प्पवा° हं० त० ॥ ८ अपच्छिमगुरवो हं० त० ॥ ९ कपिलिति घुसिलिल अथ' हं० त० ॥ १० अजत्रात हं० त० ॥ ११ अजदत्त हं० त० ॥ १२ पुणव्वसु' हं० त० विना ॥ १३ संधानेन संधानं प्रमाणेन सि० ॥ १४ विण्हुलो हं० त० विना ॥ १५ सामाताता° हं० त० ॥

[सत्तावीसइमो ठाणज्झायो]

☞ णमो महापुरिसवद्धमाणस्स। ☜ अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय ठाणं णामऽज्झायं, तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा–तत्थ उद्धंभागेसु सिरोमुहामासे सव्वउद्धंभागे पडिरूवे चेव रायाणं वा रायकम्मिकं वा अमच्चं वा अमच्चकम्मिकं वा बूया । अक्खीसु णायकं बूया । कण्णेसु आसणत्थं बूया । दंतेसु भंडागारिकं बूया । णासायं अब्भागारिकं बूया । जिब्भायं आहारपडिरूवगते य महाणसिकं बूया । थणेसु गवाधियक्खं 5 बूया । पुणरवि य णासायं आहारेसु य मज्जघरियं बूया । णिद्धेसु पाणियघरियं बूया णावाधियक्खं वा बूया । अग्गेयेसु सुवण्णाधियक्खं बूया । सव्वचतुप्पयपडिरूवगते य हत्थिअधिगतं वा बूया अस्सअधिगतं वा योग्गायरियं वा गोवंयक्खं वा बूया । [1]संवुतेसु पडिहारं बूया । थीणामेसु अब्भागारिगं गणिकक्खं वा बूया । पुण्णामेसु वलगणकं वा णायकं वा बूया । णपुंसकेसु वरिसधरं बूया । दढेसु वत्थुपारिसदं वा आरामपालं वा पचंतपालं वा बूया । चलेसु दूतं वा संधिपालं वा बूया । अब्भिंतरेसु अब्भागारिकं बूया सीसारक्खं वा बूया । बाहिरब्भंतरेसु पतिआरक्खं बूया । 10 आहारेसु [3]सुंकसालियं बूया । णीहारेसु ◅ दिणीयरेसु ▻ रज्जकं वा पेधवावतं वा बूया । उवग्गहणेसु आडविकं बूया । परिमंडलेसु णगराधियक्खं बूया । मतेसु सुसाणवावतं वा सूणावावतं वा बूया । संरोधबंधणेसु चारकपालं बूया । पुण्णेसु महाणसिकं वा फलाधियक्खं वा बूया । मुदितेसु पुप्फाधियक्खं बूया । जण्णेयेसु पुरोहितं बूया । तिक्खेसु आयुधाकारिकं बूया । पुधूसु सेणापतिं बूया । अणूसु कोट्ठाकारिकं बूया ॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय० ठाणज्झायो नाम सत्तावीसतिमो सम्मत्तो ॥ २७ ॥ छ ॥ 15

[अट्ठावीसइमो कम्मजोणिअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कम्मजोणीणामज्झायो । तं जधा–तत्थ अत्थि कम्मं ◅ णत्थि कम्मं ▻ ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे अत्थि कम्मं ति बूया । तत्थ चज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे णत्थि कम्मं ति बूया । तत्थ कम्मं पंचविधं पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तं जधा–रायपोरिसं ववहारे कसिगोरक्खं कारुककम्मं भतिकम्मं पंचमं भवति । तत्थ उत्तमेसु इस्सरितेसु य रायपोरिसं 20 बूया । गहणोपगहणेसु सव्वगो-वलिवद्दगते य कसिगोरक्खं बूया । तत्थ महापरिग्गहेसु सव्वदाणपतिग्गहेसु य वाणियककम्मं बूया । तत्थ चलामासेसु सव्वकारुकोपकरणपरिग्गहेसु य कारुककम्मं बूया । तत्थ सव्वबज्झेसु सव्वअंतेसु य सव्वचेट्ठिककम्मकरपयोगे य [11]भतिकम्मकारकं बूया । तत्थ रायपोरिसे पुव्वमाधारिते उत्तमेसु य रायाणं वा रायमच्चं वा बूया । सव्वराजोपकरणे चेव तत्थ उपोत्तमेसु अमच्चं वा अस्सवारिकं बूया । बाहिरेसु सव्वचतुप्पदगते य आसवारियं बूया । अक्खीसु णायकं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरावचरं बूया । थीणामेसु अब्भाकारियं बूया । [12]संवुतेसु भंडागारियं बूया । सीसकोपकरणे 25 सीसारक्खं बूया । चलेसु आहारणीहारेसु य पडिहारकं बूया । उदरे कुक्खिम्मि मुहे गीवायं सव्वआहारगते य सूतं वा महाणसिकं वा बूया । आपुणेयेसु सव्वपाणगते य मज्जघरियं बूया पाणीयघरितं वा बूया । सव्वचतुक्केसु चतुरस्सेसु हत्थाधियक्खं वा महामत्तं वा हत्थिमेंठं वा अस्साधियक्खं वा अस्सारोयं वा अस्सबंधकं वा छागलिकं वा गोपालं वा

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ २ संवुचेसु हं० त० ॥ ३ सुकआलिग हं० त० ॥ ४ ◅ ▻ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ पचवारयं वा हं० त० ॥ ६ ◅ ▻ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ °माहारयियव्वं हं० त० । माधारेतव्वं सि० ॥ ८ °माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ भवति कारुककम्मं पंचमं सप्र० ॥ १० °परिग्ग° हं० त० ॥ ११ भवतिकम्म° हं० त० विना ॥ १२ संवुएसु हं० त० ॥

महिसीपालं वा उट्टपालं वा बूया, मगलुद्धगं वा ओरब्भिकं वा अहितिपं वा बूया। तत्थ रायपोरिसगताणि अस्सातियक्खो वा ⌐ हत्थाधियक्खो वा ⌙ हत्थारोहो वा हत्थिमहामत्तो वा गोसंखी वा गजाधिपति त्ति वा। तत्थ सुकेसु सव्वहिरण्णकारेसु चेव भंडागारिकं वा कोसरक्खं वा बूया। महापरिग्गहेसु सव्वाधिकतं बूया। अंगुलीसु सव्वलिपिगते चेव लेखकं बूया। जिब्भाय हितये सव्वबुद्धिरमणेसु य गणकं बूया। सव्वसत्थगते सव्वदेवगते य पुरोहितं
5 बूया। णिद्धेसु चक्खूसु य संवच्छरं बूया। अंतिअसिणिग्गमेसु दाराधिगतं वा दारपालं वा बूया। ⌐ पुण्णामेसु पत्थगकं बूया ⌙ सेणापतिं वा बूया। थीणामेसु अब्भागारिकं वा गणिकारक्खकं वा बूया। णपुंसकेसु वरिसधरं बूया। दढेसु वत्थुसु वत्थाधिगतं बूया णगरगुत्तियं वा बूया। चलेसुं दूतं वा जइणकं वा बूया पेसणकारकं वा पंविहारकं वा बूया। णिद्धेसु तरपअट्टं वा णंयाधिगतं वा तित्थपालं वा पाणियघरियं वा ण्हाणघरियं वा सुराघरितं वा बूया। लुक्खेसु कट्ठाधिकतं वा तणाधिगतं वा सीतपालं वा बूया। अब्भिंतरेसुं ओपेसेज्जिकं वा सीसारक्खं वा बूया।
10 बाहिरेसु आरामाधिगतं बूआ। बाहिरब्भंतरेसु णगररक्खं वा अब्भागारियं वा बूया। कण्हेसु असोकवणिकापालं बूया यागाधिगतं वा। सामेसु आभरणागतं बूया। तत्थ ववहारिणं आपुणेयेसु उदकवड्डिकं वा मच्छबंधं वा णोविकं वा वाद्दविकं वा बूया। सव्वेसु सुवण्णकारं अलित्तककारकं वा रत्तरज्जकं वा देवडं उण्णवाणियं सुत्तवाणियं जतुकारं चित्तकारं चित्तजोजी चेति। सुक्केसु सद्दकारं सुंदरजकं वा बूया। खंडिते छिण्णे भिण्णे सुवण्णकारे लोहकारे सीतपट्टके जतुकारे कुंभकारा य विण्णेया। दढेसु मणिकारं संखकारं च विन्नेयं। थूलेसु कंसकार-पट्टकार-दुस्सिक-रयक-कोसेज्ज-
15 वाग-देवडसा(मा)ति विण्णेया। थूलेसु ओरब्भिक-महिसघातका विण्णेया। दीहेसु उसणिकामत्तं छत्तकारक-यत्थोपजीविका विण्णेया। हस्सेसु रसेसु फलवाणिय-मूलवाणिय-धण्णवाणिया विण्णेया। सव्वआहारगते ओदनिक-मंस-कम्मासवाणिय-तप्पण-लोणवाणिज्जा-ऽऽपूपिक-खज्जकारका विण्णेया। तत्थ सव्वगाहणेसु पण्णिक-फलवाणियका विण्णेया। उपग्गहणेसु सिंगेरवाणिया विण्णेया। सिरसि राया वा अमच्चो वा अस्सवारिको वा छत्तधारको वा छत्तकारको वा सीमारक्खो वा पसायको वा विण्णेया। णिडाले हत्थिसंसं वा अस्ससंसं य त्ति बूया। अच्छीसु
20 अग्गिउपजीविं वा आहितग्गिं वा बूया। कण्णेसु सुवण्णकारो वा कुसीलको [वा] रंगचरो वा विण्णेया। णासायं गंधिको मालाकारो सुंगिकारो वा, जिब्भायं सूतमागधं पुरसमाणवं पुरोहितं धम्मट्ठं महामंतं गणकं गंधिकजोयकं दपकारं सेहुरसयं वा, गीवायं मणिकारं सुवण्णकारं कोट्टाकं चट्टकिं वा बूया। बाहुसु चेत्थवाडकं वत्थुवावनिकं मंतिकं भंडवावतं तित्थवावतं आरामवावतं वा बूया। तत्थ उरे अधिगतं वा रधकारं वा दारुकआधिकारिवा विण्णेया। उदरे महाणसिकं वा सूतं वा ओदनिकं वा बूया। कडीयं सीमेलवरं वा गणिकारक्खं वा
25 बूया। ऊरूसु हत्थारोहं वा अस्सारोहं वा बूया। जंघासुं दूतं पेसगं वा बूया। गुलुफेसु बंधं वा बंधनागारियं वा बूया। पादेसु चोल्लोवदारा विण्णेया। मज्झमूलजोणीगते मूलकम्मणक-मूलिक-मूलकम्मा विण्णेया। तिरिक्खेसु सव्वसत्थका विण्णेया। सारधनेसु हेरण्णिक-सुवण्णिक-चंदण-दुस्सिक-संजुत्तका देवडा चेति विण्णेया। बाहिरेसु कम्मामयणेसुं गिहेसु गव्वचतुप्पथेसु सव्वभूमीगते य गोयरगभतिहारगा य विन्नेया। चलेसु य ओसारेसु य आविद्धेसु

१ °सुवण्णपाडरत्तिकं वा हं० त० ॥ २ ⌐ ⌙ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ कोसारक्खं सि० ॥ ४ °स्साधिपते सव्व° हं० त० ॥ ५ अभिमणणिग्गमेसु अतिमणिग्गमेसु दारा° हं० त० ॥ ६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ७ °सु दूतं वा जवइकं हं० त० ॥ ८ परिहारत्थेयी बूया हं० त० ॥ ९ णाधिगयं वा हं० त० ॥ १० सीयपालं हं० त० ॥ ११ °सु मसारे° हं० त० ॥ १२ आकरणा° से १ पु० ॥ १३ °वट्टकिं हं० त० ॥ १४ णाविकं वा वाहुविकं वा सं० ॥ १५ °रत्तूकं हं० त० सि० ॥ १६ गुण्णवाणियं हं० त० सि० ॥ १७ °जोयसेसु ति सुक्केसु हं० त० ॥ १८ सुद्धरजकं हं० त० सि० ॥ १९ उसणिकामेत्तं उत्त° हं० त० सि० ॥ २० आहारगते सि० ॥ २१ हत्थिसंसं वा अस्ससंसं वा हं० त० ॥ २२ कुसीलवो वा हं० त० सि० ॥ २३ °णाधिकंद° हं० त० ॥ २४ बहुगुयं वा हं० त० ॥ २५ वागुरा° हं० त० ॥ २६ णामेलवरकं वा हं० त० ॥ २७ °सु दूतं पेसगं हं० त० ॥ २८ मधेसु सत्त° हं० त० ॥ २९ °सु विण्हे° हं० त० ॥ ३० असारेसु य आविद्धेसु य उपरा उरहा य हं० त० ॥

य ओयकार-ओड्डा य विण्णेया । णिण्णेसु मूलखाणक-कुंभकारिक-इट्टकार-चालेपतुंद-सुत्तवत्त-कंसकारक-चित्तकारका विण्णेया । ओकिन्नेसु रूवपक्खर-फलकारका विन्नेया । सव्ववद्धमाणेसु सीकाहारकेमड्डहारका विण्णेया । तत्थ अप्पणा पहतेसु कोसज्जवायका दिअंडकंवलवायका कोलिका चेव विण्णेया । उपद्दुतेसु सव्वओसधगते य वेज्जा विण्णेया । कायस्स परिमासे कायतेगिच्छका विण्णेया । थणेसु य सव्वसत्थगते सल्लकत्ता विण्णेया । अच्छिगते सौलाकी, सव्वदेवगते भूतविज्जिका, वालेज्जेसु कोमारभिच्चा विण्णेया । सव्वपरिसप्पगते विसतितिथिका विण्णेया । अब्भंतरेसु सिप्पपारगतं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मज्झिमं बूया । सव्वपाणजोणिगते वेज्ज-चम्मकार-ण्हाविय-ओरब्भिक-गोहातक-चोरघाता विण्णेया । बाहिरेसु वि दढं बूया । सिवेसु मायाकारकं वा गोरीपाढकं वा लंखक-मुट्ठिक-लासक-वेलंबक-गंडक-घोसकं बूया । सव्वछिद्देसु सव्वउपद्दुतेसु मोघं सिप्पं बूया । अवत्थितेसु उड्ढंभागेसु सफलं सिप्पं बूया । अधोभागेसु निप्फलं सिप्पं बूया ॥

॥ इति भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कम्मजोणी णाम अट्ठावीसतिमो अज्झाओ सम्मत्तो ॥ २८ ॥ छ ॥

[एगूणतीसइमो णगरविजयज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णगरविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अत्थि णगरं णत्थि णगरं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जे सव्वआहारगते य अत्थि णगरं ति बूया । तत्थ बज्झामासे सव्वणीहारगते य णत्थि णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते समिद्धं न समिद्धं ति आधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासादीसु समिद्धं णगरमिति बूया । तत्थ बज्झामासादिसु ण समिद्धं णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते बंभेयेसु सव्वबंभणपडिरूवगते य बंभणज्झोसियं बूया, बंभणोसण्णं वा णगरं ति बूया । तत्थ खत्तेयेसु सव्वखत्तगते य सव्वखत्तपडिरूवगते खत्तियज्झोसियं वा खत्तिकोसण्णं वा णगरं ति बूया । वेस्सेज्जेसु सव्ववेस्सपडिरूवगते य वेस्सज्झोसितं वा वेस्सोसण्णं वा णगरं ति बूया । सुद्देयेसु सव्वसुद्दपडिरूवगते य सुद्दज्झोसियं वा सुद्दोसण्णं वा णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते थीणामं पुण्णामं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेसु सव्वपुरिसपडिरूवगते य पुण्णामधेज्जं रायहाणिं बूया । थीणामेसु सव्वइत्थिपडिरूवगते य थीणामधेज्जं साखानगरं वा बूया । दढेसु चिरनिविट्ठं णगरं ति बूया । चलेसु अचिरनिविट्ठं णगरं ति बूया । णिद्धेसु बहुउदगं वा बहुवुट्ठीकं वा णगरं ति बूया । लुक्खेसु अप्पोदगं वा अप्पवुट्ठीगं वा णगरं ति बूया । बज्झेसु सव्वचोरपडिरूवगते य चोरवासो णगरं ति बूया । अब्भंतरेसु सव्वअज्जपडिरूवगते य अज्जो वासो णगरे त्ति बूया । आहारेसु अप्पणो णगरं ति बूया । णीहारेसु परणगरं ति बूया । दीहेसु दीहं णगरं ति बूया । परिमंडलेसु परिमंडलं ति बूया । चतुरस्सेसु चतुरस्सं ति बूया । कंसेसु सव्वमूलजोणीगते य कट्ठपागारपरिगतं णगरं ति बूया । थूलेसु इट्टगपागारं ति बूया । दक्खिणेसु दक्खिणोद्दागं णगरं ति बूया । वामेसु वामोद्दागं णगरं ति बूआ । मज्झिमेसु पविट्ठं णगरं ति बूआ । पुधूसु वित्थिण्णं णगरं ति बूआ । गहणेसु गहणणिविट्ठं णगरं ति बूआ । उपग्गहणेसु आरामबहुलं णगरं ति बूया । उद्धंभागेसु उद्धनिविट्ठं पव्वते वं त्ति बूया । णिण्णेसु णिण्णे वा निव्विगंदि पाणुप्पविट्ठं वा णगरं ति बूया । वद्धेसु बहुवापीतं वा णगरं ति बूया । मोक्खेसु अन्नाधितं वा

१ °कारछावेपवुंद° हं० त० ॥ २ °कनट्टहा° हं० त० ॥ ३ उपद्दवेसु हं० त० ॥ ४ कायपगिच्छका हं० त० ॥
५ सालकी, सत्तदेवगते भूयवेधिका, यालेयेसु हं० त० ॥ ६ °समतिथिका हं० त० ॥ ७ °ल्पकार° हं० त० ॥
८ °वकगंतुकघोसकं हं० त० ॥ ९ °माहारियव्वं हं० त० ॥ १० णत्थि घरं ति सप्र० ॥ ११ माहारियव्वं हं० त० ॥
१२ °गते पुण्णामधेज्जं तं वा खत्तिकोसण्णं हं० त० विना ॥ १३ वइस्सिज्झो° सप्र० ॥ १४ °माहारियव्वं हं० त० ॥
१५ केसेसु हं० त० ॥ १६ मूलेसु हं० त० ॥ १७ उद्धनिवि° हं० त० विना ॥ १८ घट्टेसु सं ३ पु० सि० । वद्देसु हं० त० ॥

अप्पुज्जोगं व त्ति बूया। पसन्नेसु अतिक्खदंडं अप्पपरिक्खेसं वा णगरं ति बूया। अप्पसन्नेसु बहुविग्गहं बहुपरिक्खेसकारामणं ति व बूया। पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमेसु य सद्द-रूवेसु पुरत्थिमायं दिसायं णगरं ति बूया। पच्छिमेसु य गत्तेसु ⊲ पच्छिमेसु ⊳ य सद्द-रूवेसु पच्छिमायं दिसायं ति बूया। दक्खिणेसु सद्द-रूवेसु दक्खिणेसु य गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं ति बूया। वामेसु गत्तेसु वामेसु य सद्द-रूवेसु उत्तरायं दिसायं ति बूया। पुण्णेसु बहु अण्णपाणं [णगरं] ति बूया।
5 तुच्छेसु अप्पअण्णपाणं णगरं ति बूया। वायव्वेसु बहुवातकं बहुवातोवद्दवं च णगरं ति बूया। अग्गेयेसु बहुउण्हं आलीपणगबहुलं व त्ति बूया। आपुजोणीयेसु बहूदकं बहुवुट्ठिकं बहूदकवाहनं वा णगरं ति बूया। तण्हेसु बहुमकसकं वा सत्थप्पातबहुलं व त्ति बूया। आदिमूलिकेसु आसण्णे णगरं ति बूया। मज्झविगाढेसु जुत्तोपकट्ठणगरं ति बूया। अंतेसु दूरे पच्चंतिमणगरं ति बूया। अयोगखेमपडिरूवगते सुभिक्खयोगक्खेमगतं अणभिवुत्तं वा णगरं ति बूया। सद्देयेसु विस्सुयकित्तियं ति बूया। दंसणीयेसु दिट्ठपुव्वं वा रमणीयं वा णगरं ति बूया॥

10 ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णगरविजयो णामाज्झायो एगूणतीसतिमो सम्मत्तो ॥ २९ ॥ छ ॥

[तीसइमो आभरणजोणीअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आभरणजोणी णामाज्झायो। तं खलु भो ! [त]मणुवक्खस्सामो। तं जधा—तत्थ अत्थि आभरणं णत्थि आभरणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे
15 दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आवद्धे मले वा भूसणे वा हसिते वा गीते वादितगते सव्वाभरणगते आवद्धं आभरणं बूया। तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे कासिते खुहिते णिम्मज्जिते णिछिक्किते णिब्भग्गे णिट्ठुते ओमुक्के मले वा भूसणे वा अच्छादणे वा रुण्णे वा कंदिते वा कुंजिते वा सव्वउपद्दुतेसु य अणावद्धं आभरणं बूया। तत्थ आभरणं तिविधमाधारयितव्वं भवति—पाणजोणीगतं धातुजोणीगतं मूलजोणीगतं। तत्थ पाणजोणीयं चलेसु य पाणजोणीयं विण्णेयं। सव्वमूलगते मूलजोणीगतं विण्णेयं। ☞ धाउजोणीगए धाउजोणीगयं विण्णेयं। ☜ तत्थ
20 पाणजोणीमयं संखमयं मुत्तामयं दंतमयं गवलमयं वालमयं अट्ठमयं चेति। तत्थ मूलजोणीमयं कट्ठमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति। तत्थ धातुमयं सोवण्णमयं रुप्पमयं तंबमयं सीसमयं लोहमयं तपुमयं काललोहमयं आरकुडमयं सव्वमणिमयं गोमेयकं लोहितक्खो पवालकं रत्तक्खारमणिं लोहितकं चेति। तत्थ सेतेसु रुप्पमयं संखमयं मुत्तामयं सुक्क फलिकविमलकसेतक्खारमणी विण्णेया। तत्थ कालकेसु सीसक-काललोह-अंजणमूलक-कालक्खारमणी चेति। णीलेसु सस्सक णीलखारमणी चेति। अग्गेयेसु सुवण्ण-रुप्प-सव्वलोहमयं लोहितक्ख-मसारकल्लखारमणी चेति। अणग्गेयेसु
25 अवसेसाणि बूया। कोट्टिते सव्वलोहमयं विण्णेयं। णिस्सिते सव्वक्खारमयं विण्णेयं। घट्ठेसु सव्वमणिमयं विण्णेयं संखगतं पवालगतं वा बूया। विसुद्धेसु ओमधिए परिमट्ठिते मुत्ता विण्णेया। तत्थ सिरसि ओचूलका-णंदिविणद्धक-अपलोकणिका-सीसोपकाणि य आभरणाणि बूया। कण्णेसु तलपत्तका-ऽऽवद्धक-पलिकामदुघनक-कुंडल-जणक-ओकासक-कण्णेपूरक-कण्णुप्पीलकाणि य बूया। अक्खीसु अंजणं, भमुहासु मसी, गंडेसु हरिताल-हिंगुलुय-मणसिला विण्णेया। ओट्ठेसु अलत्तको विण्णेयो। कण्णेसु वण्णसुत्तकं तिपिसाचकं विज्जाधारकं असीमालिका-हार-ऽद्धहार-पुच्छलक-आवलि-

---

१ अप्पजोगं हं० त० ॥ २ °रिक्केस° हं० त० विना ॥ ३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ बहुअण्णं उण्हं हं० त० ॥ ५ सत्थुप्पा° हं० त० ॥ ६ °माहारपियव्वं हं० त० ॥ ७ सुक्खा° हं० त० विना ॥ ८ वा कंजिए वा हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ १० °णीमयं सं° हं० त० ॥ ११ आकुरड° हं० त० ॥ १२ चलेसु हं० त० विना ॥

का-मणिसोमाणक-अट्ठमंगलक-पेचुका-वायुमुत्ता-वुप्पसुत्त-पडिसरासारमणी कट्ठेवट्टका वेति आभरणजोणी बूया। बाहूसु अंगयाणि तुडियाणि सव्ववाहोवकाणि बूया। हत्थेसु हत्थकडगाणि कडग-रुचक-सूचीका यानि वा तानि हत्थोपकाणि वा बूया। हत्थेसु अंगुलीसु य अंगुलेयकं मुद्देयकं वेंटकं जाणि य अन्नाणि अंगुलेयकाणि ताणि बूया। कडीयं कंचिकलापकं मेखलिका कडिउपकाणि य बूया। जंघासु गंडूपयकं णीपुराणि परिहेरकाणि आभरणाणि य बूया। पादेसु खिंखिणिक-खत्तियधम्मका पादमुद्दिका पादोपकाणि य आभरणाणि बूया॥ 5

॥ इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आभरणजोणी नामज्झायो तीसतिमो सम्मत्तो॥ ३०॥ छ॥

[एगतीसइमो वत्थजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वत्थजोणी णामऽज्झाओ। तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामो। तं जधा—तत्थ अत्थि वत्थं नत्थि वत्थं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधिज्जे सव्वआहारगते य सव्ववत्थपडिरूवगते य अत्थि वत्थं ति बूया। 10 तत्थ धज्झामासे चलामासे तुच्छामासादिके हि णत्थि वत्थं ति बूया। तत्थ वत्थे पुव्वाधारिते वत्थं तिविधमाधारयितव्वं भवति—धातुजोणिगतं मूलजोणिगतं पाणजोणिगतं चेति। तत्थ चलामासे सव्वपाणजोणिगते य पाणजोणिगतं बूया। तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणीगते य धातुजोणीगतं बूया। तत्थ सव्वकेस-मंसुगते सव्वमूलगते य मूलजोणिं बूया। तत्थ पाणजोणीगते वत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतं वत्थं तिविधमाधारये—कोसेज्जं पेंतुज्जं आविकं चेति। तत्थ सव्वचतुप्पदगते सव्वचतुप्पयपडिरूवगए य सव्वाविकं बूया। तत्थ 15 सव्वकीडगते सव्वकीडपडिरूवगते य कोसेज्जं वा पेत्तुण्णं वा बूया। तत्थ मूलजोणीगते पुव्वाधारिते मूलजोणिगतं वत्थं चतुव्विधमाधारये—खोमं दुकुलं चीणपट्टं सव्वकप्पासिकं चेति। तत्थ सव्वतयागते सव्ववक्कगते सव्वखंधगते य खोमं वा दुकुलं वा चीणं वा पट्टं वा बूया। तत्थ सव्वफलगते सव्वअग्गगते य सव्वपम्हगते य कप्पासिकं बूया। तत्थ धातुगते वत्थे पुव्वमाधारिते धातुगतं वत्थं तिविधमाधारये—लोहजालिका सुवण्णपट्टा सुवण्णखसितं चेति। तत्थ कण्हपडिरूवगते य सव्वकाललोहजालिकं बूया। तत्थ सव्वपीतके सव्वपीतपडिरूवगते य सुवण्णपट्टं सुवण्णखसितं 20 बूया। तत्थ दढामासे अहतं वत्थं बूया। चलामासे परिजुण्णं बूया। अब्भंतरेसु परग्घं बूया। बाहिरेसु जुत्तग्घं बूया। बाहिरबाहिरेसु समग्घं ति बूया। थूलेसु थूलं, अणूसु अणुकं, दीहेसु दीहं बूया, ह्रस्सेसु ह्रस्सं बूया। अंगुलीसु सकलदसदं बूया। णहेसु वहितं दसं बूया। चलेसु छिन्नदसं बूया। अंगुलीयंतरेसु विवाहितं बूया। घणेसु सिवितं बूया। छिद्देसु छिद्दं बूया। गहणेसु पावारकं वा कोतवकं वा उण्णिकं वा अत्थरकं बूया। उपग्गहणेसु एवाणं चेव तणुलोमाणि ह्रस्सलोमाणि वा बूया। मुदितेसु वधूय वत्थाणि बूया। दीणेसु मतेसु य मतकवत्थाणि विलाती वा 25 बूया। अब्भंतरेसु सकं वत्थं बूया। बाहिरब्भंतरेसु आतवितकं बूया। बाहिरेसु परकं बूया। दढेसु णिक्खित्तं वत्थं बूया। चलेसु अपहितं बूया। आहारेसु याचितकं बूया। णीहारेसु णट्ठं बूया। अतिगमेसु लद्धं बूया। तत्थ अब्भंतरामासे सव्वसेतवण्णपडिरूवगते य सेयं बूया। कण्हेसु कालकं बूया। जिब्भा-तालु-ओट्ठ-करतल-चरणतलमब्भत्तपडिरूवगते य रत्तं बूया। ओमट्ठिते पीतवण्णपडिरूवगते य पीयकं बूया। तत्थ सव्वआहारगते सेवालकं बूया।

---

१ °पेतुकायायुमत्तासुप्पसुत्त° हं० त० ॥ २ °रयमंड° हं० त० विना ॥ ३ अंगुलीकं मुद्दीकं हं० त० विना ॥ ४ बूया मय एव हत्थोवकाणि बूया। कडीयं हं० त० ॥ ५ णामाज्झायो हं० त० विना ॥ ६ कोसेट्टं प° हं० त० विना ॥ ७ पउत्तं आविकं हं० त० ॥ ८ रूवे य हं० त० विना ॥ ९ पउण्णं हं० त० ॥ १० °र्वाचितं हं० त० ॥ ११ रस्सेसु रस्सं हं० त० ॥ १२ °दसं हं० त० ॥ १३ सिव्वितं हं० त० ॥ १४ विलयो वा हं० त० ॥ १५ °सु णिमित्तं हं० त० ॥

☞ केस-मंसुगते सेवालकं बूया। ☜ सव्वसंधीसु अक्खके उदरे तंब-सेतसाधारणे मयूरग्गीवं बूया। सेतकण्ह-साधारणेसु करेणूयकं बूया। अक्खींसु वित्तं बूया। सीतपीतसमासे साधारणे कप्पासिकं पुप्फकं विण्णेयं। सेतरत्त-साधारणे पत्तुमरत्तकं विण्णेयं। रत्तपीतसाधारणे मणोसिलकं विण्णेयं। तंबकण्हसाधारणेसु मेचकं विण्णेयं। उत्तमेसु उत्तमरागं विण्णेयं। मज्झिमेसु मज्झिमरागं विण्णेयं। मज्झिमाणंतरकायेसु ण जधामाणसिकं बूया। पेच्चरकायेसु
5 विरत्तं वा अद्धरत्तं वा बूया। तत्थ अब्भंतरेसु जातीपट्टणुगतं बूया। बाहिरब्भंतरेसु जातीपडिरूपकं बूया। बाहिरेसु अपट्टणुगतं बूया। उद्धंगीवासिरोमुहामासे मुहोपकरणे उद्धंभागेसु य जालकं वा ◁ पैट्टिकं वा ▷ पट्टणं वा सीसे-करणं वा बूया। उद्धं णामीय गत्तेसु उद्धं णामीय उपकरणेसु सव्वउत्तरिज्जगतेसु य उत्तरिज्जं बूया। अधोहेट्ठा णामीय गत्तेसु अधोगत्तोपकरणे अंतरिज्जं बूया। पट्ठीय पच्चत्थरणं बूया। उद्धोकिते उद्धंभागेसु य विताणकं बूया। तिरियंभागेसु परिसरणकं बूया॥

10 ॥ इति खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वत्थजोणी णामऽज्झाओ एगतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३१ ॥ छ ॥

[बत्तीसइमो धण्णजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय धण्णजोणी णामाज्झायो। [तं खलु भो! तं अणुव-क्खयिस्सामि।] तं जधा—तत्थ अत्थि धण्णं णत्थि धण्णं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे
15 दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जामासे आहारगते य अत्थि धण्णं ति बूया। तत्थ सव्वधण्णगते सव्वयवहारगते अत्थि धण्णं ति बूया। तत्थ पज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि धण्णं ति बूया।

तत्थ धण्णाणि सालि वीहि कोद्दवा कंगू रालका तिला मासा मुग्गा चणका कलाया णिप्फावा कुलत्था यवा गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसरसव त्ति। तत्थेकण्णेसु पुव्वमाधारिते पुव्वण्णं अवरण्णं ति पुव्वमाधारयितव्वं
20 भवति। तत्थ पुरिमेसु गत्तेसु पुरिमेसु य सद्द-रूवेसु पुव्वण्णं बूया। तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमेसु य सद्द-रूवेसु अवरण्णं बूया। तत्थ पुव्वण्णेसु पुव्वमाधारिते सालि वीहि कोद्दवा रालका कंगू वरका तिला चेति। तत्थ अवरण्णे पुव्वमाधारिते मासा मुग्गा णिप्फावा चणवा कलाया कुलत्था यव-गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसरसव त्ति बूया।

तत्थ पुव्वण्णे पुव्वमाधारिते णिद्धेसु साली वीही तिला वा विण्णेया। लुक्खेसु कोद्दवा रालका वरका वा विण्णेया। णिद्धलुक्खसाधारणेसु वीही वा कंगू वा विण्णेया। सेतेसु सालि सेतवीही वा सेततिला वा बूया। रत्तेसु रत्तसालि
25 वा कोद्दवा वा कंगू वा रत्तवीही वा रत्ततिला वा विण्णेया। पीतकेसु रालके वा बूया। कण्हेसु कण्हवीही वा कण्हरालके वा कण्हतिले वा बूया। * सामेसु वरके बूया। मधुरेसु साली कंगू तिले वा बूया। अंबेसु रालके बूया। कसायेसु वीही वा कोद्दवे वा बूया। तत्थ संवुतेसु कोसिधण्णगते सव्वकोसीगते सव्वसंगलिकागते सव्वसंगलिकापुप्फेसु रुक्खेसु सव्वफलसमुगतविकागते सव्वसिंगिगते तिला बूया। तत्थ सव्वविमुक्केसु सव्वपरिकिण्णेसु बाहिरेसु सव्वअ-कोसिधण्णगते सव्वअसंगलिकाफलेसु रुक्खेसु सव्वअसंगीगते य साली वा वीही वा कोद्दवे वा वरके वा रालके वा

१ इत्यचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते॥ २ अक्खवीसु उदरे हं॰ त॰ विना॥ ३ सेयपीयस॰ हं॰ त॰॥ ४ °रागं बूया। मज्झि° हं॰ त॰॥ ५ °डिरूवचिकं हं॰ त॰॥ ६ सुहो° हं॰ त॰॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ८ पच्चणं हं॰ त॰ विना॥ ९ नामाज्झा° हं॰ त॰॥ १० * * एतच्चिह्नान्तर्वर्ती पाठः सर्वासु प्रतिषु द्विरावृत्तो वर्त्तते। अस्माभिस्तु सकृदेव सीकृतोऽस्ति॥ ११ °काफलेसु र° हं॰ त॰॥ १२ °मासवि° हं॰ त॰। °मायवि° सि॰॥

कंगू वा बूया। तत्थ रत्तेसु घणेसु आचितेसु सव्वपसूतेसु सव्वपघगगते वरलकं वा कंगू वा बूया। तत्थ खंधगते सव्वविसालगते य तिले बूया। तत्थ सव्वअखंधगते सव्वअविसालगते य साली वा वीही वा बूया। परिमंडलेसु वट्टेसु कोद्दवा वा रालके वा बूया। तत्थ पुप्फगए अपुप्फगए त्ति। तत्थ पुप्फवंतेसु कोद्दवे कंगुओ रालके वरके वा बूया। तत्थ अव्वत्तपुप्फेसु साली वीही वा बूया। सुव्वत्तपुप्फेसु तिला बूया। इति पुव्वघण्णं (पुव्वण्णं) वक्खातं।

तत्थ अवरण्हे पुव्वमाधारिते जवे वा मासे वा अतसीयो वा कुसुंभे वा सस्सवे बूया। तत्थ सुक्खेसु णिप्फाव- 5 मुग्गे चणवे कुलत्थे मसूरे वा बूया। णिद्धलुक्खेसु साधारणेसु गोधूमे वा कलाये वा बूया। सेतेसु यवे वा सेतणिप्फावे वा कुसुंभे वा बूया। रत्तेसु गोधूमे वा कुलत्थे वा अतसीयो वा वरके वा कंगू वा [बूया]। पुधूसु तिला बूया। दीहेसु साली वा वीही वा बूया। परिमंडलेसु रत्तसासवे वा रत्तणिप्फावे वा बूया। पीतकेसु चणके कलाये वा बूया। कण्हेसु मासा वा मुग्गे वा कण्हतिले वा बूया। णीलेसु हारीहणिप्फावे वा बूया। सामेसु मसूरे वा बूया। मधुरेसु जवे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा बूया। अंबेसु चणवे वा गोधूमे वा कुलत्थे वा बूया। कसायेसु मुग्गे बूया। 10 तित्तकेसु णिप्फावे वा कुसुंभे वा बूयं। कडुकेसु सस्सवे बूया। तत्थ सव्वसंवुतेसु कोसीधण्णगते बूया। सव्वसंगलिकागते सव्वसंगलिकाफलेसु रुक्खेसु सव्वफलसमुग्गाघविकागते य सव्वसिंगिसु य मासे मुग्गे चणवे वा कलाये वा णिप्फावे वा मसूरे वा कुलत्थे वा बूया। तत्थ सव्वघणेसु सव्वआचितेसु सव्वपधगगते सव्वमंजरिगते य जवे वा गोधूमे वा बूया। तत्थ सव्वगुम्म(गुप्फ)गते सव्वगोप्फधण्णगते य कुसुंभे वा सस्सवे वा अतसीको वा बूया। तत्थ सव्ववल्लीगते सव्ववल्लिघण्णगते य णिप्फावे वा कुलत्थे वा बूया। तत्थ सव्वगुम्मगते सव्वगुम्मधण्णगते 15 य मुग्गे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा चणए वा बूया। तत्थ सव्वखंधगते सव्वखंधमये धण्णगते सस्सए वा कुसुंभे वा अतसीओ वा बूया। तत्थ सव्वअक्खखंधगते जवे वा गोधूमे वा बूया। तत्थ सव्वपुधूसु णिप्फावे वा कुलत्थे वा मसूरे वा बूया। वट्टेसु चणए वा मुग्गे मासे वा कुसुंभे वा सस्सपे वा बूया। दीहेसु जवे वा गोधूमे वा बूया। तत्थ सुव्वत्तपुप्फेसु मुग्गे वा मासे वा चणए वा णिप्फावे वा मसूरे वा अतसीको वा सस्सए वा कुसुंभे वा बूया। अव्वत्तपुप्फेसु जवे वा गोधूमे वा बूया। थूलेसु णिप्फावे वा बूया। मज्झिमकायेसु जवे वा 20 गोधूमे वा बूया कुसुंभे वा मासे वा मुग्गे वा चणगे वा कलाये वा बूया। पच्चवरकायेसु अतसीको वा सस्सवे वा मसूरे वा बूया। तत्थ णिद्धेसु अतिगमेसु य भायणगतं धण्णं बूया। कायवंतेसु मंजूमागतं पल्लगतं बूया। चलेसु जाणगतं बूया। अब्भंतरेसु णिवेसणगतं बूया। अब्भंतरब्भंतरेसु ओवारिगतं बूया। बाहिरेसु बाहिरो धण्णं बूया। बाहिरबाहिरेसु अरण्णगतं बूया। आहारेसु कीतं बूया। णीहारेसु विक्कीतं बूया। अब्भंतरब्भंतरेसु सकं बूया। अब्भंतरेसु मित्तधण्णं बूया। बाहिरब्भंतरे आचितकं बूया। बाहिरेसु णिकरे[य]रिगतं बूया। बाहिरबाहिरेसु अपरि- 25 हियं बूया। महापकासेसु महापरिग्गहेसु य बहुं बूया। अप्पपकासे अप्पपरिग्गहेसु य अप्पं बूया। परिजुन्नेसु पोराणं बूया। बालेसु णयं बूया॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाए धण्णजोणी णामाज्झायो बत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३२ ॥ छ ॥

[तेत्तीसइमो जाणजोणीअज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जाणजोणी णामाज्झायो। तं जधा—तत्थ अत्थि जाणं 30 णत्थि जाणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे

१ °पत्तपसु है० त० ॥ २-३ °विलासगते है० त० विना ॥ ४ पुप्फगते फलगते त्ति है० त० विना ॥ ५ कंगू रा° है० त० ॥ ६ सुवण्णसु° है० त० ॥ ७ पुव्वयण्णं है० त० ॥ ८ °गते सव्वगुप्फधण्णगए य मुग्गे है० त० ॥ ९ वण्णमए सस्सवे है० त० ॥ १० सुवण्णगुप्फे. वा समुग्गे है० त० ॥ ११ अवत्तगुप्फेसु है० त० ॥ १२ अपहरियं है० त० ॥ १३ °सुवण्णयं है० त० ॥ १४ णामऽज्झा° है० त० ॥ १५ °माधारयियव्वं है० त० ॥ १६ °मासे दढामासे णिद्धा° सि० ॥

सव्वआहारगते अत्थि जाणं ति बूया। तत्थ वज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि जाणं ति बूया।

तत्थ जाणे पुव्वमाधारिते जाणं दुविधमाधारये—सज्जीवं णिज्जीवं चेति। तत्थ सज्जीवोवलद्धीयं सज्जीवं बूया। तत्थ अज्जीवोवलद्धीयं अज्जीवं। तं दुविधमाधारये—जलयरं थलयरं चेति।

5 तत्थ सव्वथलोपलद्धीयं थलजं विण्णातव्वं भवति। तत्थ सव्वआपुणेयेसु जलयरं विण्णातव्वं भवति। तत्थ थलचरे सिविका भद्दासणं पल्लंकसिका रधो संदमाणिका गिल्लि जुग्गं गोलिंगो सकडं सकडी चेति। तत्थ पुण्णामेहि पुण्णामं ति बूया। थीणामेहि थीणामं ति बूया। तत्थ उत्तमेसु सिविका भद्दासणं वा विण्णेयं—पुण्णामेसु भद्दासणं, थीणामेसु सिविका। सव्वसत्थगते सव्वसंगामगते य रधो विण्णेयो। तत्थ सव्वसयणगते पल्लंकसिका विण्णेया। तत्थ विपुलेसु विपुलं बूया। संवुतेसु संवुतं बूया। महव्वयेसु सकडं वा संदमाणिकं वा गिल्लिं वा बूया। मज्झिमकायेसु सकडिं 10 बूया। पच्चवरकायेसु रधं गोलिं[गं] वा बूया। ▷ तत्थ उद्धंभागेसु उड्डायितं बूया। अधोभागेसु अणुड्डायितं बूया। तत्थ दीहेसु सकडं वा गिल्लिं वा जुग्गं वा सकडिं वा बूया। ◁ परिमंडलेसु भद्दासणं वा रधं वा गोलिंकं वा बूया। इति थलचराणि अज्जीवाणि जाणाणि बूया।

तत्थ णिज्जीवाणि जलचराणि—णावा पोतो कोट्टिंबो सालिका तप्पको प्लवो पिंडिका कंडे वेलु तुंबो कुंभो दती चेति। तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामाणि। थीणामेसु थीणामाणि। तत्थ महावकासेसु णावा पोतो वा विन्नेया। मज्झिमका-15 येसु कोट्टिंबो सालिका संघाडो प्लवो तप्पको वा विण्णेयो। मज्झिमाणंतरेसु कट्टं वा वेलु वा विण्णेयो। पच्चवरकायेसु तुंबो वा कुंभो वा दती वा विण्णेया। इति णिज्जीवाणि जलचराणि भवंति।

तत्थ सज्जीवा जाणजोणी—अस्सा हत्थी उट्टा गो महिसा खरा अयेलका मका चेति। तत्थ उद्धंभागेसु सव्वसिं-गिसु य सव्वसंगलिकागते य संगलिकाचंलेसु सव्वगोसिघण्णगते य सिंगी विण्णेया। तत्थ अधोभागे सव्वअसंगलिकागते य फल-वच्छेसु वा सव्वअकोसीवण्णगते य असिंगी विण्णेया। तत्थ महावकासेसु हत्थी उट्टा महिसा वा विन्नेया। 20 मज्झिमकायेसु अस्सा बलिवद्दा वा विन्नेया। मज्झिमाणंतरकायेसु मगे वा खरे वा बूया। पच्चवरकायेसु अए वा एलके वा बूया। तत्थ सव्वहत्थिगते हत्थिउपजीविसु हत्थिउपकरणे हत्थिपडिरूवगते य सव्वहत्थिपादुब्भावे हत्थिं बूया। तत्थ सव्वअस्सगते सव्वअस्सोपकरणे सव्वअस्सोपलद्धीयं अस्सपादुब्भावे य अस्सं बूया। तत्थ सव्वगोगते सव्वगो-उपजीविसु सव्वगोउपकरणगते सव्वगोउपकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वगोपादुब्भावे य बलिवद्दं बूया। तत्थ सव्वमहि-सोपलद्धीयं महिससदरूवपादुब्भावे य एवमेव महिसं बूया। एवमेव सव्वउट्टोपलद्धीयं उट्टो विन्नेयो। सव्वखरोपल-25 द्धीयं खरो विन्नेयो। सव्वअयेलकोपलद्धीयं अयेलको विण्णेयो। एवमेव सव्वमगोपलद्धीयं मका विन्नेया। तत्थ गहणेसु अयेलकं विण्णेयं। उपग्गहणेसु य अवसेसा विण्णेया। तत्थ अब्भंतरब्भंतरेसु सकं जाणं विण्णेयं। बाहिरब्भं-तरेसु याचितकं जाणं बूया। बाहिरेसु आयावितकं जाणं। बाहिरबाहिरेसु अपहरितकं जाणं। तत्थ वयत्थेसु अभिरामेसु य णवं बूया। अणभिरामेसु महव्वएसु य जुण्णं बूया। छिद्देसु दुट्ठितं जाणं। घणेसु सुट्ठितं जाणं बूया। आहारेसु कीतकं बूया, णीहारेसु विकीतं बूया। सामेसु पडिरूवं जाणं ति बूया॥

30 ॥ इति खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय जाणजोणी णामाज्झायो तेत्तीसतिमो सम्मत्तो॥ ३३॥ छ॥

---

१ सव्वोपल° सं ३ पु० सि०। सव्वथलोपल° हं० त०॥ २ जलचरे सप्र०॥ ३ जुग्गगोसंकडसंकडी हं० त० विना॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ ५ कोडिंबो- हं० त०॥ ६ °वच्छेसु हं० त०॥ ७ °सु अद्दा-यियकं हं० त०॥ ८ नामज्झा° हं० त०॥

[चउतीसइमो संलावजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय संलापजोणी णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ वत्तो संलावो ण वत्तो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामवेज्जामासे वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ वज्झामासे लुक्खामासे तुच्छामासे पुव्वामासे ण वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ सज्जीवेसु सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे घोसवंतेसु य सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे सुक्खामासे लुक्खामासे तुच्छामासे अघोसवंतेसु य अज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया ।

तत्थ जीवगतं तिविधं—दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणीगयं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु दिव्वमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । उजुभागेसु थीणामामासेसु माणुस्सोपकरणगते य माणुसमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्तो चतुरस्सेसु चतुप्पदोपकरणेसु य चतुप्पदमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ उद्धंभागेसु सव्वपक्खिगते य पक्खिमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ दीहेसु सव्वेसु सव्वपरिसप्पगते य परिसप्पमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । आयुजोणीयेसु जलचरेसु य जलचरमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । ☞ अणूसु सव्वखुड्डसिरीसिवगए य खुड्डसिरीसिवमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । ☜ तत्थ पुण्णामासेसु पुरिसमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । थीणामधेज्जेसु थीणाममंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । बंभेयेसु बंभणमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । खत्तेयेसु खत्तियमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । वेसेज्जेसु वेस्समंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । सुद्देयेसु सुद्दमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । उड्ढं णामीय उत्तममंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । अधो णामीयं उद्धं जाणुकेहि अधे दीणकमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । अहे जाणूणं पायजंघेसु पेस्समंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । अणूसु वत्थमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । सामेसु आभरणमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । वट्टेसु वद्धं घावारकमंतरेणं वा वत्तो संलावो त्ति बूया । चलेसु जाणमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । उद्धंभागेसु पासादं वा चंदं वा सूरं वा णक्खत्तस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । अधोभागेसु कूव-णदीमंतरेणं वा वत्तो संलावो त्ति बूया । तिण्हेसु सव्वसत्थगते य आयुधाकारस्स वा आयुधभंडस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । एतेसु जेव जोधस्स वा खंधावारस्स वा संगामस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । सव्वकामुकपयत्तेसु चलेसु य अंतरेसु य वेसिकं वा गणिकायं वा गूढिकायं वा कामुकस्स वा कामिणीयं वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तत्थ दढेसु णगरस्स वा जणपदस्स वा सण्णिवेसस्स वा खेत्तस्स वा खेडस्स वा आरामस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । णिद्धेसु तलाकस्स वा णदीयं वा सरस्स वा पोक्खरणीयं वा उंउपाणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । लुक्खेसु कंटकस्स वा सुसाणस्स वा सुण्णघरस्स वा उट्ठितपद्दवस्स वा अण्णणगर-गाम-जणपदस्स वा गिहस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । णपुंसकेसु णिरत्थकं वत्तो संलावो त्ति बूया । वज्झेसु दूरजणपद-णगरमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु इमस्स जणपदस्स अंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । अब्भंतरेसु संकस्स वा जणकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । णीहारेसु मज्झस्स वा जणस्स अण्णातकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । ☞ दीहेसु दीहकालं वत्तो संलावो त्ति बूया । ☜ रस्सेसु रस्सकालं वत्तो संलावो त्ति बूया । थूलेसु हत्थिस्स वा ◁ मंहिसस्स वा मच्छस्स

१ नामऽज्झा° हं० त० ॥ २ तं जहा खलु हं० त० ॥ ३ जीवमयं हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ घट्टेसुवद्दं चावा° हं० त० ॥ ६ जालमं° हं० त० ॥ ७ वा मूढि° हं० त० ॥ ८ उदुपाण° हं० त० ॥ ९ लुक्खस्स कं° हं० त० विना ॥ १० सकस्स वा उपकारणवत्तो सं ३ पु० । सकस वा जणसकस्स वा उपकरण वा उपकरेण वत्तो सि० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

वा ▷ थूलपक्खि-परिसप्पथी-पुरिसमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । कसेसु खुड्डाकसत्तमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । पुधूसु वेत्थुमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया खेत्तमंतरेण वा बूया । गहणेसु आराममंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । उपग्गहणेसु खेत्तसीमामंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । परिमंडलेसु भायणमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । मतेसु मतमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । उण्णतेसु उलुकमंतरेणं पव्वतमंतरेण वा वत्तो संलावो 5 त्ति बूया । पसण्णेसु दाणमंतरेण वा वंदणमंतरेण वा ☞ पेतिग्गहमंतरेण वा ☜ सम्मोईमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । अप्पसण्णेसु निच्छोभमंतरेण वा णिराकारमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । पुण्णेसु आहारमंतरेणं वत्तो संलावो त्ति बूया । तुच्छेसु छुधामंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । अग्गेयेसु अग्गीमंतरेण वा ओलीपणकमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । जण्णेयेसु उस्सयमंतरेण वा समवायमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । दंसणीयेसु चंदा-ऽऽदिच्च-गह-तारारूवसमिद्धसामिद्धिं गाम-जणपद-णगर-उस्सयसमायमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । अणागतेसु 10 अणागतमंतरेण वा वत्तो संलावो त्ति बूया । यामदक्खिणेसु वत्तमाणमत्थमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया । पच्छिमेसु गतेसु अतीतमत्थमंतरेण वत्तो संलावो त्ति बूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय संलावजोणी णामाऽज्झायो चउतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३४ ॥ छ॥

[पणतीसइमो पयाविसुद्धीअज्झाओ]

अथापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पयाविसुद्धी णामाऽज्झायो । तं जधा–तत्थ अत्थि पया 15 णत्थि पय त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे दक्खिणामासे मुदितामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते य अत्थि पय त्ति बूया । तत्थ उँल्लोइते उस्सिते उग्घारिते उण्णामिते उत्थिते उपसारिते उपप्पिते उपलोलिते उपकड्डिते उपवत्ते उपणते उपणद्धे उपलद्धे उपसारिते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि पय त्ति बूया । तत्थ माता-पितु-भगिणि-सोदरिय-मित्त-बंधुजणसमागमे समाणिते अभिसंगते अभिणंदिते उपहासिते उपगूहिते चुंबिते अच्छादयिते पाउते परिहिते अणुलित्ते अलंकिते वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि पय त्ति 20 बूया । तत्थ उक्कुट्ठे अप्फोडिते पेच्चोलिते गज्जिते पवादिते सेसाऽऽयाम-बलिहरगते णव-पुण्ण-पसत्थ-पहट्ठ-परग्घ-पैद्धउदग्गीये पुप्फे वा फले वा मल्ले वा भूसणे वा अच्छादणे वा ☞ असणे वा सयणे वा ☜ जाणे वा वाहणे वा उपकरणे वा रयणगते वा धण्णगते वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा उपणामित-पडिच्छिते वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि पय त्ति बूया । तत्थ उवलद्ध-संत-भूत-अत्थिसद्दपादुब्भावे अत्थि पय त्ति बूया । तत्थ धातीकुमारदारकसव्वअपच्चपादुब्भावे य अत्थि पय त्ति बूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे 25 णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ कासिते छीते जंभिते रुदिते परिदेविते भग्गे भिण्णे विगट्ठे विपाडिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छिन्ने णिलुंचिते विणासिते विसंधिते रूवाकडे फूमिते विज्झविते धंते वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ णिम्मज्जिते णिल्लिहिते णिस्सारिते णिण्णामिते णिद्धाडिते णिल्लोलिते णिक्कड्डिते णिप्फीलिते णिच्छोलिते णिक्खित्ते णिच्छुद्धे णिव्वाडिते णिसित्ते णिलुंचिते णिच्छोलिते णिरससिते

१ पत्थयं° हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ आलापक° हं० त० ॥ ४ नामोऽज्झा° हं० त० ॥ ५ णामऽज्झा° हं० त० ॥ ६ °माहारयियव्वं हं० त० ॥ ७ उल्लोकिए हं० त० ॥ ८ °णते उपणाइ[ए] उपसारिते हं० त० विना ॥ ९ उक्कट्ठे हं० त० ॥ १० पच्चिट्ठलिते हं० त० विना ॥ ११ °लिहर° हं० त० ॥ १२ °पधादग्गीये हं० त० विना ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १४ धण्णे वा हं० त० ॥ १५ णिलुंचिते सं ३ पु० । णिलुयिए हं० त० ॥ १६ विधंसिते सि० ॥ १७ णिल्लोडिए णिक्कड्डिए हं० त० ॥ १८ णिच्छोलिए णिपिट्ठे णिच्छुद्धे हं० त० ॥ १९ णिच्चोलिए हं० त० ॥

णिस्सरिते णिप्पतिते णिप्फाडिते ¹णिड्डीले णिकुज्जिते णिव्वामिते णिराकते णिराणते चेति एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ पम्हुट्ठे ²पमुक्के पब्भट्ठे पकिण्णे ³पविसिते पमुच्छिते पलोलिते परावत्ते परिसडिते ⁴परिसोढिते ⁵पडिसिद्धे पप्फोडिते पडिणायिते ⁵पडिहरिते पडिदिन्ने पडिछुद्धे पडिते ⁶परिवड्ढिते पडिलोलिते पडिसरिते ⁷पडिओधुते एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ अपमट्ठे अपलोलिते अपसारिते अपणासिते अपकड्ढिते अपणते अपछुद्धे ⁸अपहिते अरिफाढिते चेति एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ ओलोकिते ओसरिते ओमथिते 5 ⁹ओणामिते ओवट्टिते ओलोलिते ¹⁰ओकड्ढिते ओवत्ते ओणते ओछुद्धे ओतारिए ओमुक्के मल्ले वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ आयरणे असंत-णत्थिसद्दपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ वंज्झा-संढक-अणवच्च-पासंडगते संदंसणे य णत्थि पय त्ति बूया। तत्थ णवणीत-तेल्ल-घत-दधि-गोरसदंसणे वच्छक-पुत्तक-पिल्लक-वप्पक-सिंगक-खुड्डक-चालक-साडक-मोदणक-अंकुर-¹¹परोह-पुप्फ-फल-पादप-पवाल-हरिताल-हिंगुलुक-मणसिल-सव्व-समालभणकगते बालकपरिणंदिते जं किंचि बालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा 10 बाहिरे सद्दरूवपाउब्भावे पयं वा पयालाभं वा पयासामग्गी वा उदरं वा पुत्तलाभं वा इमं से भविस्सतीति बूया। एतेसामेव ¹²अंतरोरुकरणे अप्पणो गब्भो त्ति बूया। एताणि चेव तिलेमाणो पुच्छेज्ज ससल्ला गब्भिणी मरिस्सति त्ति बूया। एताणि चेव अक्कमंती पुच्छेज्ज ¹³पया से विणस्सिस्सति त्ति बूया। एताणि चेव पतिगिण्हंती पुच्छेज्ज ¹³पया से भविस्सति त्ति तं बूया। एताणि चेव पणामयंती [पुच्छेज्ज] पया ते परिहायिस्सति त्ति णं बूया। एताणि चेव उपकड्ढंती पुच्छेज्ज ⊲ ¹⁴पया से भविस्सति त्ति णं बूया। एताणि चेव अपकड्ढिंती पुच्छेज्ज पया से ण भविस्सति त्ति णं बूया। ⊳ एताणि चेव उपकड्डित्ता अपकड्ढंती 15 पुच्छेज्ज पया ते भवित्ता ण भविस्सति त्ति बूया। एताणि चेव अपकड्ढित्ता उपकड्ढिंती पुच्छेज्ज पया ते ण भवित्ता ण भविस्सति त्ति बूया। एताणि चेव छिंदंती वा णिक्खणंती वा फालेंती वा विवाडेंती वा पुच्छेज्ज पया ते विणस्सि-स्सति त्ति बूया। एतेसामेव आदिमूलगहणेसु उत्तजिव्वा ते पया भविस्सति त्ति बूया। एतेसामेव मज्झगहणेसु जुत्तोपचया ते [पया] भविस्सति त्ति बूया। एतेसामेव अंतगहणे णिरोपजिव्वा ते पया भविस्सति त्ति बूया।

तत्थ पयायं पुव्वाधारितायं वावण्णा अवावण्ण त्ति ¹⁵आधारयितव्वं भवतीति। तत्थ वावण्णामासे अप्पसत्था- 20 मासे दीणामासे वापण्णे वा पुप्फे वा फले वा पाणे वा भोयणे वा सव्ववापण्णेसु वा वापण्णे त्ति बूया। अवावण्णामासे अणुपद्दुतामासे सुगंधामासे पसण्णामासे मुदितामासे अव्वापण्णे पुप्फे फले वा पाणे वा भोयणे वा भायणे वा सव्वअव्वापण्णेसु य अव्वापण्ण त्ति बूया। तत्थ पयायं पुव्वाधारितायं विकतं अविकतं पज्जायिस्सति त्ति पुणो आधारयितव्वं भवति। तत्थ उज्जुकामासे उज्जुभायगते उज्जुउल्लोयिते य सव्वमणुस्सजोणीपादुब्भावे य सव्वमणु-स्सजोणीणामधेज्जोदीरणे य सव्वमणुस्सरूपागितिपादुब्भावे य सव्वमणुस्सरूपागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वमणुस्ससरीरोपकर- 25 णणामधेज्जोदीरणे सव्वमणुस्सगते सव्वमणुस्सवे¹⁷सगते सव्वमणुस्सकम्मोवारगते सव्वमणुस्सोपलद्धीयं च अविगतं बूया। तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियविलोकिते सव्वतिरियजोणिपादुब्भावे सव्वतिरियजोणीणामधेज्जोदीरणे सव्वतिरियजोणी-उपकरणे तिरिक्खरूपागितिपादुब्भावे तिरिक्खरूपागितिणामधेज्जोदीरणे तिरिक्खजोणीमये उवकरणे णामधेज्जोदीरणे सव्व-तिरिक्खजोणिगते विगतं बूया। तत्थ ¹⁸पयातं पुव्वमाधारियायं कण्णा कुमारो त्ति ¹⁹आधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे पुण्णामे पुप्फे [वा] फले वा पाणे वा भोयणे वा सव्वकुमारोपलद्धीयं च कुमारं 30 बूया। तत्थ वज्झामासे वामामासे थीणामधेज्जामासे ⊲ ²⁰थीणामे ⊳ पुप्फे वा फले वा भायणे वा भोयणे वा उप-

---

१ णिड्डीणा णिकु° हं० त० विना ॥ २ पम्हुक्के सप्र० ॥ ३ पसविते हं० त० ॥ ४ परिसिट्ठे हं० त० ॥ ५ परिहरिते हं० त० ॥ ६ परिवट्टिते हं० त० ॥ ७ पडिभुप एवं हं० त० ॥ ८ अपट्टिते हं० त० ॥ ९ उण्णामिते सि० ॥ १० उक्कड्ढिते हं० त० ॥ ११ अहरोह° हं० त० ॥ १२ पया ते वि° हं० त० ॥ १३ पया ते भ° हं० त० ॥ १४ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १५ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १६ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १७ °वेस्सगते हं० त० विना ॥ १८ पयायं हं० त० ॥ १९ आहारयियव्वं हं० त० ॥ २० ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥

करणे वा सव्वइत्थीउपलद्धीयं च कण्णं बूया । तत्थ पजायं पुंव्वमाधारितायं एक्कं दुवे पजाइस्सति त्ति ओधारयितव्वं भवति । तत्थ एक्केकेसु गत्तेसु एक्काभरणे एक्कोपकरणे एक्कचारिसु सत्तेसु सव्वएक्कमाधारणगते य एकं पजातिस्सति त्ति बूया । तत्थ विएसु गत्तेसु य मेंहुणाभरणके य मेंहुणोपकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु सव्वमिसाहागते य दुवे पजातिस्सति त्ति बूया । तत्थ बहवेसु गत्तेसु बहूपकरणके बहूकोपकरणके संघचारिसु सत्तेसु सव्वबहुसाहागते य बहवो पजाति-
5 स्सति त्ति बूया । त ⊲ त्थं कण्हामासे कण्हवण्णपडिरूवगते य सव्वणिप्पभावगते य उल्लोकिते य कालो पजातिस्सति त्ति बूया । तत्थ सुक्कामा⊳से सुक्कवण्णपडिरूवगते य सव्वसप्पभा[व]गते य उल्लोकिते दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वदिवाचारिसु सत्तेसु सव्वदिवसोपलद्धीयं च दिवा पजातिस्सति त्ति बूया । तत्थ कण्हामासे कण्हवण्णपडिरूवगते य सव्वणिप्पभावे ओलोकिते वामामासे थीणामधेज्जामासे सव्वरत्तीचारिसु सत्तेसु सव्वरत्तीउपलद्धीयं च रत्तिं पजातिस्सति त्ति बूया । सुक्काणि आमसित्ता सुक्काणि आमसती पुणो जोण्हे दिवा पजायिस्सति त्ति बूया । कण्हाणि आमसित्ता
10 कण्हाणि आमसती पुणो काले रत्तिं पजातिस्सति त्ति बूया ॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पयाविसुद्धी णामऽज्झायो पंचतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३५ ॥ छ ॥

[छत्तीसइमो दोहलज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय दोहलो णामाऽज्झायो । तं जधा–अत्थि दोहलो
15 णत्थि दोहलो त्ति पुव्वमोधारयितव्वं भवति ।

तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते य अत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ उल्लोकिते ऊंसिते उच्चारिते उण्णामिते ठत्थिते उपसारिते उपणामिते उपविट्ठे उपलोलिते उपंवत्ते उपणते उपगद्धे उपलद्धे उपसरिते उपविट्ठे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ माता-पितु-भगिणि-संबंधिजणसमागमे समाणिते सातिज्जिते पडिच्छिते अभिणंदिते अभिसंथुते उपहासिते चुंबिते अच्छाइते पाउते
20 परिहिते अणुलित्ते अलंकिते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे रस-गंध-फासपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ उक्कुट्ठे अप्फोडिते पच्चेलिते पवायिते सेसागहणे बलिहरणगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ णव-पुण्ण-पसत्थ-पहट्ठ-परघ-पबद्दगो पुप्फे वा फले वा पत्ते वा पवाले वा मल्ले वा भूसणे वा आसणे वा सयणे वा विसयणे वा जाणे वा वाहणे वा भायणे वा उपकरणे वा धण्णे वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा उपणामिते पडिच्छिते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति वा बूया । तत्थ उपलद्धे अत्थिसद्दपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया ।
25 तत्थ धाती-कुमार-दारक-वडु-अपच्चसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ णवणीत-दुद्ध-घत-परिसप्पक-अंटक-सप्पक-वच्छक-वालक-साडक-वाटक-मोहणके बालाभरके अंकुर-परोह-बाल-पुप्फ-फलपादुब्भावे परामासे वा हरिताल-हिंगुलुक-मणोसिला-ण्हाण-समालभणकगते वाटकपरिवंदितके यं किंचि बालं बालचारं वा एताणि आमसंतो वा वा पेक्खमाणो या भासमाणो वा एतेसिं वा बाहिरे आभाससद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो त्ति बूया ।

तत्थ वज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य
30 णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ कासितेण खुधितेण जंभितेण रुदितेण परिदेवितेण भग्गे छिण्णे भिण्णे विणासिते

---

१ पुव्वं धारियायं हं० त० ॥ २ आहारयियव्वं हं० त० ॥ ३ °भरणके हं० त० ॥ ४ मलाभ° हं० त० विना ॥ ५ मलोप° हं० त० विना ॥ ६ पक्खकोप° हं० त० ॥ ७ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ सव्वदीवचा° हं० त० ॥ ९ नामाज्झाओ हं० त० ॥ १० नामऽज्झा° हं० त० ॥ ११ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १२ उस्ससिते हं० त० ॥ १३ उपवेप हं० त० ॥

विपाडिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छिन्ने विणट्ठे वंते सिंवितालिते[1] रूयकडे पूंसिते[2] विज्झविते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ णिम्मज्जिते णिहक्खिते णिस्सारिते णिव्वट्टिते णिलुलिते णिक्कड्ढिते णिद्धाडिते णिस्साविते णिप्फाविते णिच्छोलिते णिक्खण्णे णिव्विट्ठे णिच्छुद्धे विच्छुद्धे णिरिसिते णिव्वुविते णिवोल्हिते णित्थणिते णिस्ससिते णिस्सिंघिते णिट्ठुते णित्थुद्धे णिस्सरिते णिप्फेडिते णिद्दीणे णिण्णीते णिकुज्जिते णिव्वासिते णीरक्कए णिराणंदे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ पंमुट्ठे[3] पम्हुते पक्किण्णे पब्भट्ठे पसंखित्ते पमुच्छिते पलोलिते परावत्ते परिसाडिते पडिसिद्धे पंरफिडिते[4] पडिणामिते पंडिहारिते[5] पडिदिण्णे पडिवुद्धे पडिते पडिमुंडिते पडिलोलिते पडिसरिते पंडिछुद्धे[6] एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ अपमट्ठे अपलिखिते अपसारिते अपणामिते अपवट्टिते अपलोलिते अपवत्ते अपणते अपहिते अपविट्ठे अंपछुद्धे[7] आपडिते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ ओलोकिते ओसारिते ओमत्थिते ओणामिते ओवट्टिते ओलोकिते ओकड्ढिते ओवत्ते ओणते उग्गहिते ओंच्छुद्धे[8] ओतारिते ओतिण्णे उक्खित्ते ओमुक्के मड्ढे वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ आयरणाअंणंतणत्थिभूतपादुब्भावे[9] णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ वंझा-पंडक-अणपच्चसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ परिजुण्णे परिसुक्के वा परिखंडे वा वापण्णे वा पुप्फे वा फले वा भूसणे वा अच्छादणे वा आसणे वा सयणे वा जाणे वा वाहणे वा उपकरणे वा रयणगते वा धण्णे वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा सव्ववापण्णेसु वा वापण्णं दोहलं बूया ।

तत्थ दोहले पुव्वमाधारिते दोहलकं पंचविधमाधारये । तं जधा—सद्दगतो गंधगतो रूवगतो रसगतो फासगतो चेति । तत्थ सद्देयेसु सव्वसद्दपडिरूवगते य सद्देयो दोहलो विण्णेयो । तत्थ गंधेयेसु सव्वगंधपडिरूवगते य गंधेयो दोहलो विण्णेयो । तत्थ सव्वरूवगते सव्वदंसणीयगते य रूवगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ ◁ सव्वफासगते ▷[10] सव्वफासपडिरूवगते य फासगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ सव्वरसगते सव्वरसपडिरूवगते य रसगतो दोहलो विण्णेयो ।

तत्थ रूवगते दोहले पुव्वमाधारिते रूवगतो दोहलो मणुस्सगतो चतुप्पदगतो पक्खिगतो परिसप्पगतो कीडकिमिविल्लगतो पुप्फगतो विद्धिगतो णदीगतो समुद्दगतो तलागगतो वापिगतो पुक्खरणिगतो अरण्णगतो भूमीगतो णगरगतो खंधावारगतो जुद्धगतो किड्डागतो । तत्थ मणुस्सजोणीपडिरूवगते मणुस्सजोणिं बूया । सव्वपक्खिपडिरूवगते पक्खि[जोणी] विण्णेया । चतुप्पदजोणीपडिरूवगते य चतुप्पदजोणी विण्णेया । सव्वपरिसप्पपडिरूवगते सव्वपरिसप्पजोणी विण्णेया । अंतोदद्दरचलेसु कीड-किमिगते य कीड-किविल्लगतो विण्णेयो । मुदितेसु सव्वपुप्फगते य पुप्फगतो विण्णेयो । पुण्णेसु सव्वफलगते य फलगतो विण्णेयो । दीहेसु णिद्धेसु य णदीगतो विण्णेयो । णिद्धेसु परिमंडलेसु महापकासेसु समुद्दगतो विण्णेयो । णिद्धेसु सण्णिरुद्धेसु तलागगतो विण्णेयो । णिद्धेसु वितियण्णेसु महासरगतो विण्णेयो । दढेसु पुधूसु य पुढवीगतो विण्णेयो । दढेसु उद्धंभागेसु य महापगांढेसु[11] य पव्वतगतो विण्णेयो । गहणेसु रण्णगतो विण्णेयो । उपग्गहणेसु आरामगतो विण्णेयो । चतुरस्सेसु संरुद्धेसु परिमंडलेसु संरक्खेसु णगरगतो विण्णेयो । विमुत्तेसु महायकासेसु पुधूसु य देवगतो विण्णेयो । सव्वसत्थअब्भुज्जोगगते संरुद्धेसु य खंधावारगतो विण्णेयो । संजोगगते सव्वकिड्डागते य किड्डागतो विण्णेयो । तिरिक्खेसु आकोट्टिते य संगामगतो विण्णेयो । इति रूवगतो दोहलो ।

तत्थ सद्दगते दोहले पुव्वाधारिते सद्दगतो दोहलो, तं जधा—मणुस्ससद्दगतो पक्खिसद्दगतो चतुप्पदसद्दगतो परिसप्पसद्दगतो दिव्वघोसगतो ◁ वादित्तघोसगतो ▷[12] आभरणघोसगतो । तत्थ मणुस्सजोणीगते मणुस्सजोणीपडिरूवगते य मणुस्सजोणी विण्णेया । सव्वपक्खिपडिरूवगते पक्खिसगतो विण्णेयो । सव्वचतुप्पदजोणीपडिरूवगते चतुप्पदजोणीगतो

१ सिंवितालिते हं० त० विना ॥ २ पूमिए हं० त० ॥ ३ पम्हुट्ठे हं० त० विना ॥ ४ पुप्फहिते हं० त० ॥ ५ परिहरिते परिदिण्णे हं० त० ॥ ६ पडिवुद्धे हं० त० विना ॥ ७ अपवुद्धे हं० त० विना ॥ ८ ओवुद्धे हं० त० ॥ ९ अंत° हं० त० विना ॥ १० ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ११ °गाढेसु हं० त० ॥ १२ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

विण्णेयो । [सव्वपरिसप्पजोणीपडिरूवंगते परिसप्पजोणीगतो विण्णेयो ।] सं[1]व्वसंखडगते वादित्तगतो विण्णेयो । सव्वसामेसु आभरणघोसगतो विण्णेयो । दि[2]व्वेयेसु उत्तमेसु दिव्वघोसगतो दोहलो विण्णेयो । इति सद्दगतो ।

तत्थ गंधगते दोहले पुव्वमाधारिते गंधगतो दोहलो । तं जधा—ण्हाणगतो अणुलेवणगतो अधिवासगतो पघंसगतो धू[3]पगतो मल्लगतो पुप्फगतो फलगतो पत्तगतो आहारगतो चेति । उत्तमेसु ण्हाणगतो विण्णेयो । समभागेसु अणुलेवणगतो विण्णेयो । अग्गेयेसु धूवगतो विण्णेयो पघंसगतो चुण्णगतो । तणूसु सव्वत्थगते य अधिवासगतो विण्णेयो । पुण्णेसु स[5]व्वपुप्फ-फलगते य [पुप्फ-]फलगतो विण्णेयो । ☞ ई[6]ति गंधगओ ।

तत्थ रसगए दोहले पुव्वमाधारिते ☜ रसगतो दोहलो । तं जधा—पाणगतो भोयणगतो खज्जगतो लेज्झगतो चेति । तत्थ णिद्धेसु सव्वपाणगते य पाणगतो दोहलो विण्णेयो । सव्वभोयणगते सव्वभोयण-भायणगते य भोयणगतो दोहलो विण्णेयो । सव्वडहरचलेसु सव्वभक्खगते य सव्वभक्ख-भोयणगते य भक्खगतो दोहलो विण्णेयो । इति आहारगतो दोहलो विण्णेयो ।

तत्थ फासगते दोहले पुव्वमाधारिते फासगतो । तं जधा—आसणगतो सयणगतो वाहणगतो गहगतो वत्थगतो आभरणगतो विण्णेयो । सव्वसयणपडिरूवगते सयणगतो विण्णेयो । तत्थ सव्वआसणगते सव्व-⌐आसण⌐-पडिरूवगते य आसणगतो विण्णेयो । चलामासेसु सव्वजाण-वाहणपडिरूवगते य जाण-वाहणगतो विण्णेयो । तत्थ दढेसु सव्वगहगते य गहगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ तणूसु सव्ववत्थगते य सव्ववत्थपडिरूवगते य वत्थगतो दोहलो विण्णेयो । सामेसु सव्वआभरणगते सव्वआभरणपडिरूवगते य आभरणगतो दोहलो विण्णेयो । इति फासगतो दोहलो ।

तत्थ दोहले पुव्वमाधारिते कता वत्तो दोहलो विण्णेयो भवति ? । तत्थ पसन्नेसु सव्वसरदपडिरूवगते य सरदे वत्तो दोहलो त्ति विण्णेयो । तत्थ कण्हेसु रुक्खसाधारणेसु सव्वगिम्हपडिरूवगते य गिम्हे वत्तं दोहलं ति बूया । तत्थ णिरुद्धेसु चालेसु य पाउसे वत्तो दोहलो त्ति बूया । तत्थ णिद्धेसु वासार[8]त्तपडिरूवगते य वासारत्ते वत्तो दोहलो त्ति बूया । संवुतेसु सव्वहेमंतपडिरूवगते य हेमंते वत्तो दोहलो त्ति बूया । तत्थ सामेसु मुदितेसु सव्ववसंतपडिरूवगते य वसंते वत्तो दोहलो त्ति बूया । तत्थ सुक्केसु सव्वसुक्कपडिरूवगते य सुक्कपक्खे वें[9]त्तो दोहलो त्ति बूया । तत्थ कण्हेसु सव्वकण्हपडिरूवगते य कालपक्खे वत्तो दोहलो त्ति बूया । सामेसु पक्खसंधिसु वत्तो दोहलो त्ति बूया । अतिमुलीयेसु अब्भंतरपंचमी वत्तो दोहलो त्ति बूया । मज्झिमविगाढेसु परं पंचमिं वत्तो दोहलो त्ति बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरं दसमीय दोहलो वत्तो त्ति बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु परं दसमीतो वत्तो दोहलो त्ति बूया । सुक्केसु अतिमुलेयेसु पायरासे वत्तो दोहलो त्ति बूया । कं[10]ण्हेयेसु अतिमूलेयेसु पदोसे वत्तो दोहलो त्ति बूया । सुक्केसु मज्झिमविगाढेसु मज्झंतिके वत्तो दोहलो त्ति बूया । कण्हेसु मज्झिमविगाढेसु अड्ढरत्ते वत्तो दोहलो त्ति बूया । सुक्केसु अंतेसु अपरण्हे वत्तो दोहलो त्ति बूया । कण्हेसु अंतेसु पदोसे वत्तो दोहलो त्ति बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु अतिवत्तेसु य सद्देसु अतिवत्तं बूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु अणागतेसु य सद्देसु अणागतं बूया । वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु य सद्दरूवेसु संपतं वत्तमाणं दोहलं बूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय दोहलो णामाज्झायो छत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३६ ॥ छ ॥

---

१ सव्वसंड° हं० त० ॥ २ दिव्विएसु हं० त० ॥ ३ धूमपगतो सप्र० ॥ ४ °गतो दोहलो विण्णेयो हं० त० विना ॥ ५ सव्वपण्णफल° सि० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ ⌐ ⌐ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ८ °रत्तेसु पडिरूयते य वासरत्ते हं० त० विना ॥ ९ वित्तो हं० त० ॥ १० कण्हेसु हं० त० ॥

[सत्ततीसइमो लक्खणज्झाओ]



अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लक्खणो णामाज्झायो । तं जधा—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पसत्थलक्खणं ति बूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे ☞ लुक्खामासे ☜ णपुंसकामासे असुभं लक्खणं ति बूया । ◁ तत्थ पुव्वं सुभाणि आमसित्ता पच्छा असुभाणि आमसति सुभाणि पुरिमखेत्ताणि असुभाणि पच्छिमाणि त्ति बूया । ▷ तत्थ पुव्वं असुभाणि आमसित्ता पच्छा सुभाणि आमसति असुभाणि 5 पुरिमखेत्ताणि पच्छिमाणि सुभाणि त्ति बूया ।

तत्थ लक्खणं बारसविधं । तं जधा—वण्णो १ सरो २ गति ३ संठाणं ४ संघतणं ५ माणं ६ उम्माणं ७ सत्तं ८ आणुकं ९ पगति १० छाया ११ सारो १२ वेति । तत्थ वण्णसंपण्णे अंजण-हरिताल-मणसिला-हिंगुलुक-रयत-कंचण-पवाल-संख-मणि-वइर-सुत्तिका-ऽगलु-चंदण-सयणा-ऽऽसण-जाणेसप्पभागते वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ चंदा-ऽऽदिच्च-णक्खत्त-गह-तारारूव-उक्का-विज्जुता-मेघ-जलण-सलिल-इंदीवर-इंदगोपक-अद्दारिट्ठक-पिअंगु-पियदंसणे वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ पुप्फ- 10 फल-पवाल-पत्त-घत-मंड-तेलवर-सुर-पसण्ण-पदुमुप्पल-पुंडरीक-कोरेंटदाम-चंपक-परग्घमहाभरणविविधसमाउत्ते वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ वण्णसंपण्णे थी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा पियदरिसणे वण्णसंपण्णं बूया । सव्ववण्णगते पाणजोणीयं वा धातुजोणीयं वा मूलजोणीयं वा वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ सव्ववण्णगते अप्पियदंसणे अवुद्धवण्णरागे अवण्णसंपण्णं बूया १ ।

तत्थ सरसंपन्ने हिरन्न-मेघ-दुंदुभि-वसभ-गय-सीह-सद्दूल-भमर-रधणेमिघोस-सारस-कोकिल-उक्कोस-कोंच-चक्काक- 15 हंस-कुरर-बरिहिण-तंतीसर-गीत-वाइत-तलतालघोस-उक्कुट्ठ-छेलित-फोडित-खिंखिणिमहुरघोसपादुब्भावे सरसंपण्णं बूया । तत्थ थी-पुरिस-चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा सरसंपन्ने सरसंपन्नं बूया । तत्थ अमहुरकडुकभणितेसु एवंविधपादुब्भावे असरसंपण्णं बूया । २

तत्थ सीह-वग्घ-उसभ-गय-मज्जार-बरिहिण-सुक-चक्कवाक-हंस-भासय-बलाक-वाल-दद्दुरसव्वगतिसंपन्ने थी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा गतिसंपण्णं बूया । तत्थ सव्वम्मि अगतिसंपन्नं बूया ३ । 20

तत्थ दढामासे सव्वधातुगते सव्वसंघातसंपन्ने वा थी-पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा संघातसंपन्नं बूया । तत्थ चलामासे अप्पसारेसु असंघातोपगते असंघातसंपन्नं बूया ४ ।

तत्थ सव्वअविभत्तगते संठाणोपगतेसु य पियरूवेसु संठाणसंपण्णं बूया । दुविभत्तसंठाणोपगतेसु संठाणहीणं बूया ५ ।

तत्थ जुत्तप्पमाणे सव्वमाणगते सव्वपासंडगते य माणसंपन्नं बूया । तत्थ अयुत्तप्पमाणेसु अपमाणसंपण्णं बूया ६ ।

तत्थ अब्भंतरामासे सव्वगारवोपगते सव्वमहासारेसु य सव्वपरग्घेसु य उम्माणसंपण्णं बूया । तत्थ वज्झामासे 25 सव्वअसारेसु य सव्वअसारोपपेतेसु सव्वअप्पग्घेसु सव्व ◁ उम्माणहीणे य ▷ उम्माणहीणं बूया ७ ।

तत्थ उत्तमेसु सव्वउत्तमगत्तेसु सव्वमहाभोगगते थी-पुरिस-चतुप्पद-पक्खिपरिसप्पगते य सूर-ववसायि-महापरक्कमगते य सत्तसंपन्नं बूया । तत्थ पचयरकायेसु सव्वणिप्पभागते य थी-पुरिस-चतुप्पद-परिसप्प-पक्खिम्मि वा अव्वघसिते परक्कमहीणे य सत्तहीणं बूया ८ ।

---

१ नामऽज्झा° हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ संघयणं हं० त० ॥ ५ °णतप्प° हं० त० ॥ ६ °चक्कवाय-हंस° हं० त० ॥ ७ °भासपयाला° हं० त० विना ॥ ८ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

तत्थ आणूकं—आणूकलद्धी तिविधा आधारेतव्वा भवति, तं जधा—दिव्वा १ माणुसा २ तिरिक्खगता ३ चेति। तत्थ देवाणूकाणि दिव्वोपलद्धीयं उवलद्धव्वाणि भवंति। तत्थ देवाणूके पुव्वाधारिते देवाणूकविधि[1] दिव्वा असुरा गंधव्वा जक्खा रक्खसा णागा किन्नरा गरुला महोरगा एवमादयो सकाहि उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति १। तत्थ माणुसाणूके णत्थि विधि २। तिरिक्खजोणीकाणूके पुव्वाधारिते तिविधमाधारये, तं जधा—पक्खी परिसप्पा चतुप्पदा चेति। ताणि सकाहि उवलद्धीहि उवलभितव्वाणि भवंति उत्तमा-ऽधम-मज्झिमाणि ३।९।

तत्थ चंदा-ऽऽदिच्च-नक्खत्त-गह-तारारूव-अग्गि-विज्जूसव्वपाणगते य छायासंपन्नं बूया। सव्वणिप्पभागते सव्वअच्छायागते य छायाहीणं बूया १०।

तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे मधुरेसु णिद्धेसु सुकेसु उद्धं जत्तगते सेम्हपडिरूवगते य सेम्हपगतिं बूया। तत्थ वज्झामासे कडुकेसु कसायेसु सव्वअधोभागगते य वातप्पगतिं बूया। तत्थ उण्हेसु तिक्खेसु पीतकेसु अंबेसु वा वापण्णेसु वा सव्वसमाभागेसु पित्तप्पगतिं बूया। तत्थ वाते पित्ते सेंभे वा मिस्सपगतिं बूया ११।

तत्थ सारवंतपडिरूवे सव्वसारवंतेसु य सारवंतं बूया। तत्थ सव्वअसारवंतेसु असारवंतं बूया १२।

तत्थ वण्णसंपन्नस्स फलं ण्हाणा-ऽणुलेवणभागी महालंकारभागी सुभगो सुहभागी भवति, वण्णहीणे तेसिं विपत्ति। सरसंपण्णे इस्सरियं इस्सरियसमाणं कित्ति-जससंपण्णं च गहियवक्कं विज्जाभागी य सरसंपण्णे भवति, सरहीणे एतेसिं विवत्ति। गतिसंपण्णे महाजणपरियारो गणपकड्ढको महापक्खजणसमित्तो य भवति, अगतिसंपण्णे तेसिं विवत्ति। संठाणसंपण्णे चक्खुरमणतं महाजणपियत्तणं च छायामणोरधसंपत्ती संठाणे भवंति, असंठाणजुत्ते तेसिं विवत्ति। संघातसंपण्णे आउसमत्थो बलविरियसमत्थो भवति, असंघातसंपण्णे एसिं विवत्ति। माणसंपन्ने माणरिहो माणणीओ य भवति, माणहीणे तेसिं विवत्ति। उम्माणसंपण्णे आयुगारवं साधीणं एत क्खेय य विपुलतरं फलं भवति, उम्माणहीणे तेसिं विवत्ति। सत्तसंपण्णे सूरो ववसायी, सत्तहीणे भीरू अव्ववसिते य। आणूके जधाणूकं फलं। छायासंपण्णे-सुहभोगं बूया, छायाहीणे तेसिं विवत्ति। पगतीसु ⌐ जेधापगतं बूया। ¬[2] सारवंते सारवंतं बूया, असारवंतेसु असारवंतं बूया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लक्खणो णामाज्झायो सत्ततीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३७ ॥ छ ॥

[अट्ठतीसइमो वंजणज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वंजणो णामाज्झायो। तं जधा—तत्थ दक्खिणगतो पुरिसस्स पसत्थं, वामतो इत्थीय। तत्थ दक्खिणेसु पस्सेसु दक्खिणगते वंजणं ति बूया, वामेसु गत्तेसु वामपस्से वंजणं ति बूया। पुरिमेसु गत्तेसु पुरिमे वंजणं ति बूया, पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमे पस्से वंजणं ति बूया। उद्धंभागेसु उद्धं वंजणं ति बूया, अधोभागेसु अधो वंजणं ति बूया। पुण्णामेसु पुण्णामं वंजणं ति बूया, थीणामेसु थीणामं वंजणं ति बूया। दढामासे दढेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया। चलामासे चलेसु गत्तेसु वंजणं बूया। णिद्धामासे णिद्धेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया। लुक्खामासे लुक्खेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया। सव्वसत्थगतेसु सत्थाभिहतं वंजणं ति बूया। सव्वमूलगते कट्ठाभिहतं वंजणं ति बूया। सव्वधातुगते पासाण-लेट्ठु-सक्कराभिहतं वंजणं ति बूया। अभिहते अभिघातं बूया, छिन्नेसु छिन्नं बूया, पन्नेसु पन्नं बूया, उण्हेसु पिलकं बूया, सव्वधातुगते सुणिगदं बूया, मूलधातुगते सुणिगदं फलानं बूया, वण्णेसु तिलकं कण्णर्मालं वा बूया, उद्धं गीवाय लब्भलाभाय, बाहूसु सत्थाधिकरणलाभाय, उरे रायपरिमलंभाय, अक्खिसु

---

१ दिव्वाणूकविधि देवा असुरा हं० त० ॥ २ ¬ ⌐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

गायकलंभाय, थणंतरे धणलंभाय, सामेसु आभरणलंभाय, वज्झेसु जंघासु वा पवासाय, चलेसु जाणलंभाय, धीणामेसु धीलंभाय, पुण्णामेसु मणुस्सलंभाय, अंगुट्ठ-कणेट्ठिकायं थण-हितय-कुक्खि-सोरिससमासे सव्ववज्झेसु य अपचलंभाय बूया। बंधेसु बंधं बूया, मोक्खेसु मोक्खं बूया, तणूसु वत्थलाभं बूया, अणूसु धण्णलाभं बूया, वित्थिण्णेसु भूमीलाभं बूया, ओट्ठे सुहलंभाय, अण्णेसु रोगं बूया, महंतेसु रण्णं बूया, महापरिग्गहेसु महापरिग्गहं, अपरिग्गहेसु अपरिग्गहं, पसंतेसु पमोदं, अप्पसण्णेसु विवादं, मतेसु मरणं, आहारेसु आहारं, सिवेसु आरोग्गं, मुदितेसु हासं, दीणेसु सोकं, 5 सामेसु मेथुणसंजोगं ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वंजणऽज्झायोऽट्ठतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३८ ॥ छ ॥

[एगूणचत्तालीसइमो कण्णावासणज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कण्णावासणो णामाऽज्झायो। तं जधा—तत्थ कण्णा विजिस्सति ण विजिस्संति त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ वज्झामासे चलामासे णीहारेसु सुइतसाधारणेसु कण्णा 10 विजिस्सति त्ति बूया। तत्थ धणु-चाप-सर-पायरणक-आभरण-मल्ल-तलिए वाधुज्जभंड-घरवास-पकरणे आलिंगिते चुंबिते ण्हाणा-ऽणुलेवणे विसेसकिपेरसमाणयणे य मलाभरणे य मिधुणचरेसु सत्तेसु पक्खी-चतुप्पदेसु कीड-किविल्लगेसु मिधुणसंपयुत्तेसु कण्णा विजिस्सति त्ति बूया। तत्थ पुण्णामधेज्जामासे पुण्णे य चले णिद्धे दक्खिणे य कन्ना विजिस्सति त्ति बूया। तत्थ आहारेसु अब्भंतरामासे दढामासे दीणेसु दीणसाधारणेसु वा कण्णा विजिस्सति त्ति बूया। तत्थ लुक्खेसु सुक्खेसु तुच्छेसु कण्णा ण विजिस्सति त्ति बूया। तत्थ विजिस्सति त्ति पुव्वाधारिते पुण्णामेसु 15 रायपुरिसस्स वा सूरस्स वा उत्तमस्स वा विजिस्सति त्ति बूया। णपुंसकेसु किलिट्ठस्स विजिस्सते, से य किलिट्ठे खिप्पं मरिस्सतीति बूया। धीणामेसु ण ताव विजिस्सति, जता य विजिस्सति ◁ ससपत्तं विजिस्सति ▷ त्ति बूया। दढेसु धामेसु चिरा विजिस्सति जिणाती वा णिपुण्णो भविस्सति। दक्खिणेसु दक्खिणाचारवेसस्स विजिस्सति त्ति बूया। पुण्णेसु बहुअण्ण-पाण-भोयणस्स विजिस्सति त्ति बूया। तुच्छेसु अप्पण्ण-पाणं कुलं गमिस्सति त्ति बूया। सुहेसु अधण्णसुहतं कुलं गमिस्सति त्ति बूया। दीणेसु अधंतदीणं कुलं गमिस्सति त्ति बूया। जण्णेयेसु 20 बहुजणस्सयं कुलं गमिस्सति त्ति बूया। सद्देयेसु विस्सुयकित्तियं कुलं गमिस्सति त्ति बूया। दंसणीयेसु दरिसणीयस्स विजिस्सति त्ति बूया। गंधेयेसु णिच्चसुगंधस्स विजिस्सति त्ति बूया। रसेज्जेसु पभूतण्ण-पाणस्स विजिस्सति त्ति बूया। फासेज्जेसु पभूतच्छादणा-ऽणुलेवणस्स विजिस्सति त्ति बूया। मेतेयेसु इट्ठा इट्ठस्स विजिस्सति त्ति बूया। बपहुतेसु बहुरोगस्स विजिस्सति त्ति बूया। सामेसु रतिपधाणस्स विजिस्सति त्ति बूया। पुत्तेयेसु बहुपुत्तस्स विजिस्सति त्ति बूया। कन्नेयेसु बहुकन्नागस्स विजिस्सति त्ति बूया। चले यमलोदीरणे 25 एकपतिम्मि पतिट्ठा भविस्सति त्ति बूया। जतिसु अंगेसु चला यमलोदीरणा भवति ततिसु पतिसु पतिट्ठा भविस्सति त्ति बूया। थलजमलोदीरणे परंपरगते वा णीहारोदीरणे ण कहिंचि सातिट्ठिस्सति त्ति बूया, बहुजलचरा य भविस्सति त्ति बूया। असारेसु अप्पक्खे पंचपव्वयं "रोजयिस्सति त्ति बूया। पुण्णामधेज्जे यमलोदीरणे" पति-देवरेसु संचिट्ठिस्सति त्ति बूया। पुण्णामधेज्जे घत्लोदीरणे कण्णा दुसिस्सति त्ति बूया। उद्धं णामीय इस्सरियं कारयिस्सति त्ति बूया। अधोणामीयं उद्धं जाणूणं वेस्सगोचरा भविस्सति त्ति बूया। पादजंघे दासत्तं कारयिस्सति त्ति बूया। जमकत्थागामो- 30

---

१ पज्झेसु हं० त० विना ॥ २ धीनामलंभाय हं० त० ॥ ३ °रिससमासे हं० त० विना ॥ ४ नामऽज्झा° हं० त० ॥ ५-६ विज्झस्सति हं० त० ॥ ७ 'सरपायणकआमरणमल्लतलिपयाभुज्जभंड° हं० त० ॥ ८ ◁ ▷ एतचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ °स्सति जणायाचिणीपुण्णो हं० त० ॥ १० °कित्तीयं हं० त० ॥ ११ °सु जला य महोदी° हं० त० ॥ १२ °अलजम° हं० त० ॥ १३ पंचपव्वज्झे रोज हं० त० ॥ १४ राजयि° सि० ॥ १५ °दीरणे ण पतिदेयरेसु संतिट्ठस्सति हं० त० विना ॥

दीरणे समरत्तं विज्जिस्सति त्ति बूया। जतियं यमकं थीणामधेज्जं भवति ततिसु सत्तिसु संविट्ठिस्सति त्ति बूया। अधोभागेसु पेस्सजातीयस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। उरुभागेसु थीणामेसु तुच्छजातीयस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। उद्धंभागेसु पुण्णामधेज्जेसु उत्तमतरागस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। बंभेज्जेसु बंभणस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। खत्तेयेसु खत्तियस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। वेस्सेज्जेसु वेस्सस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। सुदेज्जेसु सुद्दस्स विज्जिस्सति त्ति बूया।
5 महव्वयेसु महव्वयस्स, मज्झिमवयेसु मज्झिमवयस्स, जोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थस्स, बालेज्जेसु बालस्स विज्जिस्सति त्ति बूया। अंतेसु विद्धिकस्स, चलेसु कारकस्स, कारुकोपकरणेसु य दढेसु वाणियकस्स, इस्सरिएसु इस्सरोपकरणेसु य इस्सरस्स विज्जिस्सति त्ति बूया॥

॥ इति महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय कण्णावासणो णामाज्झायो एगूणचत्तालीसतिमो सम्मत्तो॥३९॥छ॥

[चत्तालीसइमो भोयणज्झाओ]

10 णमो भगवतो अरहतो जसयतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स[1]। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय भोयणो णामज्झायो[2]। तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामो। तं जधा—तत्थ अत्थि भोयणं णत्थि भोयणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे मुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे मुदितामासे दढामासे उल्लोगिते उद्धस्सिते माता-पितुभायणे उक्कट्ठे अप्फोडिते सव्वपुण्णपादुब्भावणे दंतोट्ठ-जिब्भ-तालुक-गल-कवोलपरामासे आहारितं बूया। तत्थ उल्लोगिते णिगिण्णे अस्साते संपाविते परिलीढे आहारितं बूया। तत्थ
15 णामोदर-थच्छंगे[3] कुच्छि-पस्सोदरपरामासे आहारितं बूया। तत्थ सव्वआहार-भायणगते मूलगते वा खंधगते वा पत्तगते वा पुप्फगते वा फलगते वा आहारितं बूया। तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे ⊲ दीणामासे ⊳[4] णपुंसकामासे सव्वणीहारगते अणाहारितं बूया। तत्थ उक्कासिते[5] खुविते जंभिते णिम्मज्जिते णिच्छूढिते थपमट्ठे अपमज्जिते अवलोणिते[6] पम्हुट्ठे[7] पमुक्के ओलोकित्ते ओसारिते अणाहारितं बूया। तत्थ अब्भंतरामासे भाणितव्वं।

तत्थ आहारे पुव्वमाधारिते आहारं तिविधमाधारये, तं जधा—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं। तत्थ
20 चलामासे सव्वपाणगते सव्वपाणोवकरणे सव्वपाणमए उवकरणे सव्वपाणजोणीणामधेज्ज उवकरणे सव्वपाणजोणीणामधिज्जथी-पुरिसगते सव्वपाणजोणीपडिरूवगते य एवंविधसद्द-रूव-रस-गंधपादुब्भावे पाणजोणी बूया। तत्थ केस-लोमणहगते मंसुगते सव्वमूलगते सव्वमूलजोणीगते सव्वमूलजोणीउवकरणे सव्वमूलजोणीमए उवकरणे सव्वमूलजोणिणामविज्ज-उवकरणे सव्वमूलजोणिणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे मूलजोणीगतं बूया। तत्थ सव्वदढामासे सव्वधातुगते ☞ सव्वधातुजोणीगते उवकरणे ☜[8] सव्वधातुजोणिणामधेज्जे उवकरणे सव्वधातुजोणीणामधेज्जोदीरणे
25 थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे धातुजोणीगतं बूया।

तत्थ पाणजोणीगते पुव्वाधारिते पाणजोणीगतो आहारो दुद्धं दधि णवणीतं तक्कं घतं मंसं वसा मधुं ति। तत्थ पाणजोणीगओ[9] आहारो संसओ असंसओ त्ति पुव्वमाधारइयव्वं[10] भवइ। तत्थ ⊲ संसए ⊳[11] संसयं बूया, असंसये असंसयं बूया। तत्थ संसयं दुद्धं दधि मधु त्ति। तत्थ संसयाणि दुद्धं वा दधिं वा सोलगुलं सक्करा वा अण्णेहिं दव्वेहिं संसनाणि अण्णे मधुं ति। तत्थ असंसयं ☞ मंणगेयं ☜[12] ति पुव्वमाधारइयव्वं[13] भवइ। तत्थ अग्गेयेसु

१ °वीरस्स य° हं० त० ॥ २ भोतणो णामऽज्झा° हं० त० ॥ ३ °रुउच्छंगे हं० त० विना ॥ ४ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ उक्कोसित्ते हं० त० विना ॥ ६ अवलोकित्ते प° हं० त० । अवले अवज्जिते प° सि० ॥ ७ पम्हुक्के हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ °णीमओ हं० त० ॥ १० °माहारयियव्वं भवति हं० त० ॥ ११ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० एव वर्तते ॥ १३ °माहारयियव्वं भवति हं० त० ॥

अग्गेयं बूया, अणग्गेयेसु अणग्गेयं बूया । तत्थ अग्गेयाणि घयं वा मंसं वा दुद्धं वा सिद्धं घसा वा । तत्थ अणग्गे-याणि दुद्धं वा ससत्तं दधि णवणीतं मधुं ति । तत्थ सुकेसु सुक्कवण्णपडिरूवगए य दुद्धं वा दधिं वा ☞ तक्कं वा ☜ णवणीयं वा [बूया] । तत्थ पीतके पीतवण्णपडिरूवगए य ☞ घयं बूया ☜ तत्थ अरसेसु तिक्खद्धारुणेसु सव्वसत्थगए य मंसं बूया । ☞ तत्थ सामेसु वसं मधु वा बूया । ☜ तत्थ मधुरेसु घयं वा दुद्धं वा बूया । तत्थ वालेयेसु दुद्धं बूया । तत्थ सिद्धेसु घयं बूया । तत्थ अंबिलेसु दधिं वा तक्कं वा णवणीयं वा ☞ बूया । ☜ 5 तत्थ घणेसु सुद्धेयेसु दहिं बूया । सारवंतेसु णवणीयं बूया । असारवंतेसु तक्कं बूया । दुग्गंधेसु वसं बूया । ☞ मुइतेसु वसं बूया । ☜ इति पाणजोणीगतो आहारो ।

तत्थ मूलजोणिगए आहारे पुव्वाधारिए मूलजोणीगतं आधारं तिविधमाधारये–मूलगतं खंधगतं अग्गगतं चेति । तत्थ अधोभागेसु गत्तेसु अधोभागगतोपकरणे ⊲ सव्वमूलगते ⊳ सव्वमूलोपकरणे सव्वमूलमये उपकरणे ☞ सव्वमूलजोणीनामधिज्जोपकरणे ☜ सव्वमूलजोणीणामधेयोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फास- 10 पादुब्भावे मूलगतं बूया । तत्थ मूलगते पुव्वाधारिते मूलगतं तिविधमाधारये–मूलगतं कंदगतं तजगतं चेति । तत्थ मूलगते मूलगयं, कंदगते कंदगतं, तयागते तयागयं बूया ।

तत्थ सव्वमाणेसु गत्तेसु सव्वमाणगतोपकरणे सव्वखंधगते सव्वखंधोपकरणे सव्वखंधगते उवगरणे सव्वखंध-णामधेज्जे उवकरणे सव्वखंधगयणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे खंधगयं बूया । तत्थ खंधगते पुव्वाधारिते खंधगयं दुविधमाधारये–खंधगयं णिज्जासगतं चेव सव्वखंधगए ⊲ सव्वसारगते ⊳ य 15 खंधगयं बूया । तत्थ सिरिविट्ठकसद्द-लया-सज्जईहिं कास-सोणिय-पूय-लसिया सव्वणिज्जासगते य णिज्जासगतं बूया ।

तत्थ उद्धगते अधोसिरमुहामासे उद्धजंतुसिरोमुहोपकरणे ☞ सव्वअग्गगए सव्वअग्गोपकरणे ☜ सव्व-अग्गमए उपकरणे सव्वअग्गणामधेज्जे उपकरणे सव्वअग्गणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते य एवंविधसद्द-रूव-रस-गंधपाउब्भावे अग्गगतं बूया । तत्थ अग्गगते पुव्वाधारिते अग्गगतं तिविधमाधारये, तं जधा–पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं चेति । तत्थ अणूसु सव्वपुधूसु य सव्वपत्तगते य पत्तगतं बूया । तत्थ पत्तगते पुव्वाधारिते पत्तगतं तिविधमाधारये–तरुणं वयत्थं 20 पंडु चेति । तत्थ वालेज्जेसु तरुणं पत्तं [बूया], तत्थ वयत्थेसु वयत्थं पत्तं बूया, तत्थ महव्वयेसु य महव्वयं बूया ।

तत्थ सव्वमुदितेसु सव्वपुप्फगते य पुप्फगयं बूया । ☞ तत्थ पुप्फगए पुव्वाहारिए पुप्फगयं तिविहमाहारए–पत्तेगपुप्फं गुलुंकपुप्फं मंजरीपुप्फं चेति । तत्थ एक्कामासे एक्केकेसु ☜ एक्काभरणे एक्कोपकरणे एक्कचारिसु सत्तेसु एक्कसाहागते एक्कंगुलिगहणे य पत्तेकपुप्फं बूया । तत्थ बहुकेसु गत्तेसु बहाभरणक-बहोपकरणे संघचारिसु सत्तेसु बहुसाहागते य बहुअंगुलिग्गहणे य गुलुकपुप्फं बूया । तत्थ दीहेसु सव्वमंजरिगते य मंजरीपुप्फं बूया । इति 25 पुप्फगतं ।

तत्थ पुण्णामेसु सव्वफलगते य फलगतं बूया । तत्थ फलगते पुव्वाधारिते फलगतं चतुव्विधमाधारये, तं जधा–रुक्खगतं गुम्मगतं वल्लिगतं छुपगतं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु कायवंतेसु सव्वरुक्खगते य रुक्खफलगतं बूया । तत्थ दीहेसु कुडिलेसु य सव्ववल्लिगते य वल्लिफलगतं बूया । तत्थ मज्झिमाणंतरकायेसु सव्वगुम्मगते य गुम्मफलगतं बूया । तत्थ पणंतरकायेसु सव्वछुपगते य छुपफलं बूया । 30

१–२–३–४–५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ पुव्वमाहारिए हं० त० ॥ ७ आहारं हं० त० ॥ ८ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० चेति हं० त० ॥ ११ °गए सव्वगए सव्वसार° सि० ॥ १२ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ तत्थ चतिरे चिट्ठकसद्धाइया° हं० त० ॥ १४ °जन्यति° हं० त० ॥ १५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १६ हस्तचिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ १७ °लुच्छक° हं० त० ॥ १८ वल्लिफलगतुप° सप्र० ॥

तत्थ अणूसु सव्वघण्णगते य घण्णगतं बूया। तत्थ घण्णेसु पुव्वाधारितेसु सव्वधण्णं दुविधमाधारए, तं जधा–पुव्वण्णं अवरण्णं चेति। तत्थ पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमेसु य सद्द-रूवेसु ☞ पुव्वण्णगते य पुव्वण्णं बूया, तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमेसु य सद्द-रूवेसु ☜ सव्वअवरण्णगते य अवरण्णं बूया।

तत्थ पुव्वण्णे पुव्वाधारिते पुव्वण्णं अट्ठविधमाधारये, तं जधा–साली कोद्दवा वीही कंगू रालका वरका 5 सामाग(गा) तिला चेति। तत्थ दीहेसु साली वा वीही वा, पुधूसु तिले बूया। तत्थ कसेसु कोद्दवो कंगू वा रालके वा वरके वा सामाकं बूया। तत्थ रत्तेसु कंगू वा कोद्दवे वा बूया। तत्थ पीतेसु रालके बूया। फरुसेसु सामाकं बूया। सामेसु वरके बूया। णिद्धेसु सालिं वा वीहिं वा कंगुं वा तिले वा बूया। तत्थ लुक्खेसु कोद्दवे वा रालके वा वरके वा सामाकं वा बूया। तत्थ मुसलसमाहतगते साली वा वीही वा कंगू वा रालके वा वरके वा सामागं वा बूया। तत्थ घट्टे वा भासिते वा कोद्दवे बूया। तत्थ पिट्ठे वा पीलिते वा तिले बूया। इति पुव्वण्णं।

10 तत्थ अवरण्णे पुव्वाधारिते अवरण्णं तेरसविधमाधारये। तं जधा–मासा मुग्गा चणका कलावा णिप्फावा मसूरा कुलत्था तुवरयो जवा गोधूमा कुसुंभा सासवा अतसीओ त्ति। तत्थ पीतेसु चणके वा कलाए वा तुवरीओ वा बूया। तत्थ कालेसु मासा वा मुग्गा वा बूया। तत्थ सेतेसु णिप्फावे [बूया]। तत्थ कडुकेसु सासवे बूया। तत्थ कसायेसु गोधूमे बूया। तत्थ अंवेसु चणके कुलत्ये वा बूया। इति अव[र]ण्णं।

तत्थ सव्वधण्णगतं चतुव्विधमाधारये, तं जधा–रसगतं वल्लिगतं तणगतं छुमगतं चेति। तत्थ मधुरेसु मासा 15 वा मुग्गा वा मसूरा वा कलावा [वा] बूया। तेएसु णिप्फावा कुसुंभा वा अतसीओ वा तुवरीओ वा बूया। तत्थ खंधगते तिले वा कुसुंभे वा तुवरीओ वा अतसीओ वा सासवे वा बूया। तत्थ वल्लिगते णिप्फावे वा कुलत्ये वा मसूरे वा बूया। तत्थ गुम्मगते (छुमगते) मासे वा मुग्गे वा चणके वा कलाये वा बूया। तत्थ भाणगते (तणगते) साली वा वीही वा कोद्दवे वा रालकं वा जवे वा गोधूमे वा वरके वा बूया।

तं पुण सव्वधण्णगते दुविधमाधारये–कोसीधण्णं ☞ चेव अकोसीधण्णं चेव। ☜ तत्थ अंगुलीगते णहगते 20 पेलागते घविकागते पसिव्विकागते सव्वमुग्गागते सव्वसुसंवलिकाफलेसु सव्वसिंगिगते य कोसीधण्णं बूया, तं जधा–तिला मासा मुग्गा चणका कलावा णिप्फावा कुलत्था मसूरा तुवरीओ त्ति। अवसेसाणि अकोसीधण्णाणि। इति धण्णगयं।

तत्थ सव्वमाहारं छव्विधमाधारये, तं जधा–मधुरं तित्तं कसायं अंबिलं कडुकं लवणमिति। तत्थ अब्भंतरामासे सव्वमधुरगते मधुरं बूया। तत्थ तिक्खामासे सव्वकडुकगते य कडुकं बूया। तत्थ विघट्टेसु सकसायोवलद्धीयं कसायं 25 बूया। तत्थ वावण्णेसु सव्वअंबिलोवलद्धीयं अंबं बूया। तत्थ अक्खिगूधके कण्णगूधके दंतगूधके सुणीसगते य थूमागगते य रेतगते सेयमलगते य सव्वलवणे यें लवणं बूया। तत्थ चलामासे सव्वतित्तगते य तित्तकं बूया।

तत्थ आधारे पुव्वाधारिए आधारं चतुव्विधमाधारये, तं जधा–भोयणगतं पाणगयं भक्खगतं लेज्झगतं चेति। तत्थ पुण्णामधेज्जामासे सव्वभोयणगते भव्वभोयणपडिरूवगते य भोयणं बूया। तत्थ णिद्धामासे सव्वपाणियेसु सव्वपाणगयं सव्वपाण-भोयण-भायणगते य पाणगतं बूया। तत्थ दढरत्थाणेसु दढचलेसु य सव्वभक्खगते य सव्वभक्ख-30 संभवेसु य संधीसु य भक्खगतं बूया। तत्थ सव्वभक्ख-पाणमासेसु लेज्झगते य लेज्झं बूया।

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ २ °त्थ घट्टे वा भासिए वा हं० त०॥ ३ तत्थएसु हं० त० विना॥ ४ °धण्णं वा दुवि° हं० त०॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ६ अंगुलीगते घणगओ पलगए चविकागए पतिसिविकागए सव्वमुग्गगए सव्वसुसंवलिकाफलेसु सव्वसिंगिगए य कोसीधण्णं हं० त०॥ ७ धण्णगयं हं० त० विना॥ ८ विघट्टेसु हं० त०॥ ९ °भागगते हं० त०॥ १० य सव्वलवणे हं० त०॥

तत्थ भोयणे पुव्वाधारिते भोयणं विविधमाधारये–विसयगतं चेव ◁ घणगतं चेव। ▷ तत्थ सव्वविसयकडे ◁ सव्वरासिकडे ▷ सव्वपुंजकडे सव्वउरसयकडे सव्ववित्थडीकडे सव्वविसयकडे य विसयं बूया। तत्थ सव्वघणकडे सव्वपाणिकडे सव्वपुंधुकडे सव्ववित्थडकडे सव्वघणण्णकडे य घणण्णं बूया। तत्थ विसयकडे पुव्वमाधारिते विरसोदणं वा अतिकूरकं वा ◁ गुलकूरकं वा घतकूरकं वा ▷ बूया। तत्थ सव्वविसयोपलद्धीयं विसयोदणं बूया। उम्मट्ठम्मट्ठेसु य आहाराहारेसु सव्वअतिमासकडे य अतिकूरं बूया। तत्थ सव्वणेहोपलद्धीयं सव्वघतोपलद्धीयं च घतकूरकं बूया। 5 तत्थ सव्वमधुरोपलद्धीयं सव्वगुलोपलद्धीयं च गुलकूरं बूया।

तत्थ घणन्नकडे पुव्वाधारिते विलेविं वा पायसं वा कसरिं वा दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेल्लिं वा बूया। तत्थ महुरोपलद्धीयं विलेविं वा पायसं वा कसरिं वा बूया। तत्थ अंबिलोपलद्धीयं दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेल्लिं वा बूया। तत्थ मधुरेसु पुव्वाधारितेसु आपुणेयेसु विलेविं वा बूया। तत्थ बालेयेसु सव्वदुद्धकडे य पायसं बूया। तत्थ कण्हेसु संखतेसु य कसरं बूया। तत्थ अंबेसु पुव्वाधारितेसु दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेल्लिं वा बूया। तत्थ 10 सारेसु दधितावं बूया। असारेसु तक्कुलिं बूया। तत्थ पागतेसु असेतेसु असारेसु य अंबेल्लिं बूया।

तत्थ भोयणस्स सव्वोपलद्धीयं सालि-वीही-कोद्दव-कंगु-रालक-जव-गोधूम-वरक-सामागो त्ति जधुत्ताहिं उपलद्धीहिं उपलद्धव्वा भवंति। तत्थ अधण्णोपलद्धीयं मुग्गा मासा चणका कलया णिप्फावा मसूरा तुवरीओ वेति जधुत्ताहिं उपलद्धीयं उपलद्धव्वा भवंतीति। [तत्थ] भोयणस्स णेहोपलद्धीयं पाणजोणीगता ☞ मूलजोणीगता ☜ चेति। 15

तत्थ भोयणस्स उपसेकोपलद्धीयं रसो जूसो कुलत्थो खलको दधि दुद्धं तक्कं अंबिलकं पालीको त्ति। सो उपसेको दुविधो–पाणजोणीसंभवो चेव ☞ मूलजोणिसंभवो चेव। ☜ सो पुण दुविधो–अंबो चेव मधुरो चेव। सो पुण दुविधो–अग्गेयो चेव अणग्गेयो चेव। सो पुण दुविधो–लवणो चेव ☞ अलवणो चेव। ☜ तत्थ भोयणस्स उपसेकोपलद्धीयं मूलगता चेव अग्गगता चेव।

तत्थ मूलगता सव्वपक्खिमये उपकरणे सव्वपक्खिणामधेज्जे उपकरणे सव्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते 20 एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे पक्खिमंसं बूया। तत्थ सव्वपरिसप्पगते सव्वपरिसप्पोपकरणे सव्वपरिसप्पमते उपकरणे ☞ सव्वपरिसप्पणामधिज्जे उपकरणे ☜ सव्वपरिसप्पणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे ☞ परिसप्पमंसं बूया। तत्थ चउप्पए पुव्वाधारिए चउप्पयं तिविहमाहारये, तं जहा–गम्मा रण्णा [गामारण्णा चेति]। तत्थ अब्भंतरेसु गत्तेसु अब्भंतरगाम-णगरगए [य अब्भंतरगाम-णगरचतुप्पदे य] एवंविहसद्द-रूव-रस-गंध-फासपाउब्भावे ☜ चउप्पदमंसं बूया। तत्थ बाहिरब्भंतरेसु गत्तेसु सव्वबाहिरब्भंतरगते य सव्वगाम- 25 रण्णचतुप्पदे य एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे गामारन्नगतं बूया। सव्वबाहिरेसु गत्तेसु सव्वआरन्नगते य सव्वआरण्णपडिरूवगते य एवंविधसद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे आरन्नं बूया।

तत्थ चतुप्पदमंसे पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु उद्धंगीवा-सिरो-मुहामासे सव्वसिंगिगते सव्वसंगलिकागतेसु धन्नेसु सव्वसंगलिकाफलेसु वच्छेसु सिंगीणं चतुप्पदाणं मंसं बूया। तत्थ अधोभागेसु सव्वअंगगते सव्वअसंगलिताफलेसु वच्छेसु असिंगीणं चतुप्पदाणं मंसं बूया। 30

१-२ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ३ सव्वतिघट्टीकडे सं ३ पु॰॥ ४ °पुडकडे हं॰ त॰॥ ५ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ६ किसरिं हं॰ त॰॥ ७ °सु येलिविं हं॰ त॰ विना॥ ८ कण्णेसु संपवेसु हं॰ त॰॥ ९ तत्थ ससा° हं॰ त॰॥ १० यहुलिं वा बूया हं॰ त॰॥ ११ असेतेसु हं॰ त॰ विना॥ १२-१३-१४-१५-१६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते॥

तत्थ चतुप्पदेसु परिमितावपलद्धीए—तत्थ कायमंतेसु कायमंता विण्णेया। मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया विन्नेया। मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमाणंतरकाया विन्नेया। पच्चवरकायेसु पच्चवरकाया विण्णेया। सेतेहि सीता, पीतेसु पीता, रत्तेसु रत्ता, कण्हेसु कण्हा, णीलेसु णीला, पंडुरेसु पंडुरा, फरुसेहिं फरुसा, चित्तेहिं चित्ता, घोसवंतेहिं घोसवंता, मधुरघोसेहिं मधुरघोसा, महुररूवेहिं मधुररूवा, पियदंसणेहि पियदंसणा, थीणामेहि थीणामा, पुण्णामेहिं पुण्णामा,
5 णपुंसकेहिं णपुंसका विण्णेया। इति चतुप्पयजोणी।

तत्थ पक्खिगते पुव्वाधारिते थलयरा जलयरा पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ सव्वत्थलेसु सव्वणिण्णेसु सव्वजलगते सव्वथलगते सव्वजलोपजीविसु सव्वजलयेसु सव्वजलोपकरणेसु य जलयरं बूया। तत्थ पक्खिसु पुव्वाधारितेसु पक्खी तिविधमाधारये—पुप्फ-फलभोगी मंस-रुहिरभोगी ⌜ धण्णभोगी ⌝ चेति। तत्थ मुदितेसु सव्वपुप्फ-फलगते य पुप्फ-फलभोगी बूया। तत्थ सव्वसत्थगते सव्वरुधिरभोगिसु सव्वमंसरुधिरगते य मंसरुधिरभोगी बूया। तत्थ
10 धणूसु सव्वधण्णगते य धण्णभोगी बूया। तत्थ पक्खिसु अपरिमियंतो उपलद्धीतो तत्थ जधुत्तेण उपलद्धव्वं भवति। तत्थ थायवंतेसुं पुण्णेसु सव्वफलगते य उवलद्धीहिं सव्वपक्खि उवलद्धव्वा भवंति। इति पक्खिगयं मंसं बूया।

तत्थ परिसप्पे पुव्वाधारिते थलयरा जलयर त्ति पुणरवि ओधारयितव्वं भवति। जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं थलयरा जलयरा उपलद्धव्वा भवंति। ☞ कायवंतादि उवलद्धीहिं ☜ कायवंतो परिसप्पा उवलद्धव्वा. वण्णोपलद्धीहिं वण्णवंतो परिसप्पा उवलद्धव्वा इति परिसप्पं मंसं बूया। तत्थ सव्वं दुविधमाधारये, तं जधा—अद्दमंसं सुक्खमंसं चेति।
15 तत्थ णिद्धेसु सव्वद्दगते य अद्दमंसं बूया। तत्थ सव्वलुक्खेसु सव्वसुक्खमंसगते य सुक्खमंसं बूया। इति मंसगतं।

तत्थ मुदितेसु उस्सये भोयणं ति बूया। तत्थ दीणेसु उवद्दुतेसु य मतकभोयणं ☞ वा सद्धकभोयणं वा ☜ बूया। तत्थ अवत्थितेसु ण वि दीणेसु ण वि मुदितेसुं य दासीणं भोयणं बूया। तत्थ बालेयेसु उत्थाणके वा सत्ताहिकायं वा बालोपणयणे वा भुत्तं बूया। तत्थ सव्वकामोपलद्धीयं सव्वकाममुपजुत्ते सव्वबंधुज्जोपलद्धीयं च बंधुज्जे भुत्तं बूया। तत्थ सव्वदेवगते सव्वदेवोपलद्धीय देवयागे भुत्तं बूया। तत्थ सव्वधम्मोपलद्धीयं जातीयं जण्णे वा मंतगहणे
20 वा मंतसमीवणे वा विज्जागहणे वा विज्जासमत्तीयं वा भुत्तं बूया। तत्थ मुदितेसु अभिणवेसु य अभिणवभोयणं बूया। वापण्णेसु सीतभोयणं बूया। तत्थ लुक्खामासे भिक्खोदणं बूया। तत्थ विमुत्तेसु असामण्णेसु असामण्णपडिरूवगते य असामण्णं भुत्तं बूया। तत्थ सामण्णेसु सव्वसामण्णपडिरूवगते य परेण सह भुत्तं बूया। तत्थ जंघाघातेण वा जधासंठाणेण वा संठाणं रूवेण वण्णेण वा जाणितव्वं भवति। जातितुल्लेणं कुलं, कम्मेण कम्मं, अणुभावेण [अणुभावं,] थीणामेण थीणामा, य पुण्णामेण पुण्णामा य, णपुंसकेण णपुंसका य, एवं समणुगंतव्वं भवति। तत्थ सहचरेसु परेण
25 परिविट्ठा भवति। एवमेव जातीहिं सव्वमणुगंतव्वं भवति।

तत्थ भोयणस्स भोयणगतं तिविधमाधारयितव्वं भवति, तं जधा—पाणजोणीमयं धातुजोणीमयं मूलजोणीमयं। जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति। तत्थ पाणजोणीमये पुव्वाधारिते पाणजोणीमयं सिप्पिपुडं संखमयं च एवमादीहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति। तत्थ मूलजोणीमये पुव्वाधारिते मूलजोणीमयं कट्ठमयं फलमयं पत्तमयं चेति जधु त्तेहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति। तत्थ धातुजोणीमये भायणे पुव्वाधारिते धातुजोणीमयं सुवण्णमयं
30 रुप्पमयं तंबमयं कंसमयं काललोहमयं सेलमयं मत्तिकामयं ति जधुत्ताहिं ⌜ उवलद्धीहिं ⌝ उवलद्धव्वं भवति। एवं सव्वभायणाणि उवलद्धव्वाणि भवंति।

---

१ °माहा° यियव्वं हं० त० ॥ २ सव्वजलचरगते हं० त० ॥ ३ °जलयोप° हं० त० ॥ ४ पुव्वमाहारयिपसु हं० त० ॥ ५ °गतेसु पुप्फ° हं० त० विना ॥ ६ °त्थ सव्वअणूसु हं० त० ॥ ७ °वंतेहिं पु° हं० त० ॥ ८ °क्खिमंसं हं० त० विना ॥ ९ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ °सुरसंगते हं० त० ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गत पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १३ °सु उदासीणाभायणं सि० पु० । °सु दासीण भोयणं सि० ॥ १४ सव्वयज्ञोपलद्धीयं च वाधुवे भुत्तं हं० त० ॥ १५ सव्वसव्वधम्मोपजातीयं जण्णे हं० त० विना ॥ १६ °मारणे हं० त० विना ॥ १७ जधाघातेण वा जधारंगणेण वा जधासंठाणेण हं० त० विना ॥ १८ ⌜ ⌝ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

तत्थ अब्भंतरेसु संगिहे भुत्तं ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तकुले भुत्तं ति बूया । बाहिरेसु उज्जाणघरे जिमितं ति बूया । मुदितेसु सक्कारपडिरूवेणं सक्कारेणं भुत्तं ति बूया । दारुणेसु भीतपडिरूवे य भीतेणं भुत्तं बूया । दढेसु अवत्थितेणं भुत्तं [बूया]। चलेसु उप्पुत्तेणं भुत्तं बूया । पसण्णेसु पसण्णपडिरूवगते य पसण्णेणं भुत्तं ति बूया । अप्पसण्णेसु अप्पसण्णपडिरूवगते य अप्पसण्णेण भुत्तं ति बूया । तत्थ अक्खोडिय-परिविट्ठिय-सव्वकोधपडिरूवगते य कुद्धेणं भुत्तं ति बूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमेसु य सद्द रूवेसु पुरत्थिममुहेणं भुत्तं ति बूया । एवं सव्वा दिसा समणुगंतव्वाओ । इति भोयणगते त्ति । 5

तत्थ पाणगते पुव्वमाधारिते पाणगतं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं चेति । जहुत्ताहिं उवलद्धीहिं तिविधमपि उवलद्धव्वं भवति । तत्थ पाणजोणीगतं पाणगं दुद्धं दधिं तक्कं रसो घतं वा वितत्तं वसा वा वितत्ता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ मूलजोणीगते पुव्वाधारिते मज्जगतं जैवातूगयं फलरसगतं वा बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वखंधपडिरूवगते य उच्छुरसं वा गोलोयं वा बूया । तत्थ पुधूसु सव्वपत्तगते य पत्तरसं बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वपुप्फपडिरूवगते य पुप्फरसं बूया । तत्थ पुण्णेसु सव्वफलपडिरूवगते य फलरसं बूया । तत्थ अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णरसं बूया । तत्थ धातुगते पाणीयं बूया । तत्थ मज्जगतेसु पुव्वाधारितेसु यवा पसण्णं वा अयसं वा अरिट्ठं वा महुं वा बूया । तत्थ ओधुतेसु सव्वोसधीपडिरूवगते य अरिट्ठं बूया । तत्थ पीतेसु सव्वफलपडिरूवगते य मधुं बूया । तत्थ पसण्णेसु सव्वपसण्णपडिरूवगते य पसण्णं बूया । सेतेसु सेतसुरं बूया । इति मज्जगतं । 10 15

तत्थ जैवागूपुव्वाधारितेसु दुद्धजवागुं वा [illegible] घेयजवागुं वा [illegible] तेल्लजवागुं वा अंबिलजवागुं वा उण्हिलं वा ओसधजवागुं वा बूया । तत्थ वालेयेसु पाणजोणिगते सुक्केसु मधुरेसु दुद्धजवागुं वा बूया । तत्थ णिद्धेसु पीतेसु य घतजवागुं वा बूया । तत्थ णिद्धेसु समेसु तेल्लजवागुं वा बूया । तत्थ वापण्णेसु अंबिलोपलद्धीयं वा अंबिलजवागुं वा बूया । तत्थ आपुणेयेसु उण्हेसु य उण्हितं बूया । तत्थ उंडुतेसु सव्वोसधोपलद्धीयं च ओसधजवागुं वा बूया । तत्थ पुप्फ-फलसमाणेसु पाणगतं वा सालयगयं वा बूया । तत्थ सव्वधण्णजोणीयं जहुत्ताय सव्वधण्णरसगते यं उवलद्धव्वा । इति पाणजोणिगतो । 20

तत्थ भैक्खगते पुव्वाधारिते भैक्खगतं दुविधमाधारये—पाणजोणीमयं [मूलजोणीमयं] चेति । तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं दुविधा उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ पाणजोणीगते जधुत्ताहिं मंसोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । इति पाणजोणीगतं ।

तत्थ मूलजोणिगते पुव्वाधारिते मूलगतं खंधगतं णिज्जासगतं पत्तगतं फलगतमिति जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि । तत्थ मूलगते पुव्वाधारिते आलुकं वा कसेरुकं वा सिंघाडकाणि वा भिसं वा भिसमुणालं वा चायं वा एवमादी कंदमूलगतो समणुगंतव्वो भवति । तत्थ खंधगते उच्छुं वा अण्णं वा खंधगतं बूया । तत्थ णिज्जासगते सक्करं वा मच्छंडिकं वा गुलं वा बूया । तत्थ जधण्णेसु चट्टेसु गुलं बूया । तत्थ पसण्णेसु सारयंतेसु सीतलेसु य सक्करं बूया । तत्थ पकिण्णेसु मच्छंडिकं बूया । मुदितेसु खज्जगगुलं बूया । जधण्णेसु चट्टेसु गुलं बूया । असंरत्तेसु अणग्गेये य इक्खासं बूया । जधुत्ताहि उवलद्धीहिं पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं धण्णगतं भक्खं बूया । 25 30

तत्थ सव्वमूलगते रसगते पक्खिगतं गुम्मगतं दुमगतं वम्मलतमिति । तत्थ उद्धंभागेसु पुण्णामेसु दक्खिणेसु चायवंतेसु सव्वपुप्फरसगते य पुप्फरसगतं बूया । तत्थ दीहेसु पुहिलेसु थामेसु थीणामेसु सव्वपक्खिगते य पक्खिरसं

---

१ यवागूगते हं० त० विना ॥ २ उहुप्पसु हं० त० ॥ ३ जवागुपु° हं० त० ॥ ४ इत्यन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ उण्डुतेसु हं० त० विना ॥ ६–७ दसरत° हं० त० ॥

बूया । तत्थ मज्झिमाणंतरकायेसु गहणेसु सव्वगुम्मगए य गुम्मफलं बूया । तत्थ पच्चवरकायेसु उपग्गहणेसु सव्वछुभ-त्तगोपलद्धीयं च छुभगतं बूया ।

तत्थ जधुत्ताहिं धण्णोपलद्धीहिं फलोपलद्धीहि य भक्खोपलद्धीओ उपलद्धव्वाओ भवंति । तत्थ पिट्ठगते चुण्णगते य तप्पणा बदरचुण्णं वा विकसं वा चुण्णं वा उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ भक्खगते पकिण्णगते य कलायभज्जियं वा मुग्ग-मज्जियं वा जवभज्जियं वा गोधूमभज्जियं वा सालिभज्जियं वा तिलभज्जियं वा एवमादीणि भज्जितकाणि बूया ।

तत्थ भक्खगतं चउव्विधमाधारये–गुलगतं लवणगतं अगोलीयं लवणमिति । तत्थ लवणगतं दुविधं–अग्गेयं च अणग्गेयं च । [तत्थ] अणग्गेयं सामुद्दं वा सेंधवं वा सोवचलं वा पंसुखारे वा । तत्थ अणग्गेयाणि जवखारो वा सोवच्चिका वा पिप्पली वा खारलवणं वा बूया ।

तत्थ सव्वगुलगते सक्करं वा मच्छंडिकं वा गुलेण वा गुलगतं जधुत्ताहिं [उवलद्धीहिं] उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ वट्टेण सव्ववट्टपडिरूवगते य मोदका वा पेंढिका वा पप्पडे वा [1]मोरेंडकाणि वा सालाकालिकं वा अंबट्ठिकं वा एवमादीकाणि वट्टाणि उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ पुधूसु वित्थडेसु सव्ववित्थतपडिरूवगते य पोवलिकं [2]वा पोकितकं वा पोवेलके वा पप्पडे वा सक्कुलिकाओ वा पूपे वा फेणके [3]वा अक्खपूपे वा अपहिद्दते वा पवितल्लके वा [4]वेल्लातिको वा पत्तभज्जिताणि वा उल्लोपिको वा सिद्धत्थिका वा बीयकाणि वा खकारिका वा [5]मंडिल्लका वा एवमादीकाणि बूया । तत्थ दीहेसु दीहसक्कुलिकं वा खारवट्टिका वा खोडके [6]वा दीवालिकाणि वा दसीरिका वा मिसकंटकं वा [7]मत्थ-सकं वा, जाणि वऽण्णाणि एवमादीणि बूया । तत्थ गुलोपलद्धीयं गोलिकं बूया । लोणोपलद्धीयं लोणितकं बूया । [भक्खोपलद्धीयं]भक्खगतं बूया । [8]धायायणेणं अलवणमगोलिकं बूया । इति भक्खगयं ।

तत्थ लेज्झगते पुव्वाधारिते लेज्झगतं दुविधमाधारये–पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं चेति । तत्थ जधुत्ताहिं पाण-जोणीयं उवलद्धव्वाण पाणजोणीगतं लेज्झगतं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ लेज्झं वा पाणजोणीगयं घयं नवणीयं वसा मधुं ति यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं । इति पाणजोणीगतं लेज्झं । तत्थ जधुत्तायं मूलजोणीयं उवलद्धीयं मूलजोणीगतं लेज्झं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ मूलजोणीगते लेज्झे पुव्वाधारिते फाणितं वा कक्कवं वा तिलक्खली वा पलालं वा संचारगो वा लेज्झचुण्णं वा बूया । तत्थ गुलोवलद्धीयं कक्कवं वा फाणितं वा उवलद्धव्वं भवति । तिलोवलद्धीयं पललं वा तिलक्खली वा उवलद्धव्वा । एवं कडुकेसु वागलेज्झा उवलद्धव्वा भवति । इति भोयणं भक्खं लेज्झं पाणं चउव्विह-मवि समणुगंतव्वं भवति ॥

॥ इति भोयणो [9]नामाज्झायो चत्तालीसइमो सम्मत्तो ॥ ४० ॥ छ ॥

[एगचत्तालीसइमो वरियगंडियज्झाओ]

णमो भगवतो महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतो [10]जसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अहापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वरियगंडिया नाम अरहस्समज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्ख[11]स्सामो । तं जधा–तत्थ रत्तं ण रत्तं ति पुव्व[12]माधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे छिद्दामासे अतिमासे सव्वे[13]पारगते मीते ण रत्तं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे च ण रत्तं ति बूया । तत्थ सव्वअब्भंतर-

---

१ मोरेंड° हं० त० ॥ २ पोवलिते वा हं० त० विना ॥ ३ पूणफेणके हं० त० विना ॥ ४ वेल्लातिकाओ वा पउ-भज्जियाणि वा उल्लोपिकाओ वा हं० त० ॥ ५ मंडल्लिका हं० त० विना ॥ ६ व दीवलि° हं० त० विना ॥ ७ मच्छत्तकं हं० त० ॥ ८ अहायणेणं हं० त० ॥ ९ णामाध्यायो हं० त० विना ॥ १० यसयओ हं० त० ॥ ११ °स्सामि हं० त० ॥ १२ °माहारयियव्वं हं० त० ॥ १३ °व्वसंपार° हं० त० विना ॥

-गते सव्वमज्झगते सरगते पुक्खरगते गीत-वादितगते संलाव-हसित-तालगते चुंबिता-ऽऽलिंगित-पाण-भोयण-भक्ख-लेज्झ-गते सयणा-ऽऽसणगते य रतं ति बूया। विकणिते णिकाणिते छिविते जंभिते णिट्ठुभिते अविमुत्ते मल्ले वा भूसणे या पकिण्णे वा अपपातिते अपलोलिते ण रतं ति बूया। तत्थ पुण्णामेसु पुरिसेण रतं ति बूया, थीणामेसु थिया रतं ति बूया, णपुंसकेसु चुंबित-आलिंगितरतं ति, ण पुण सेवणारतं ति बूया। तत्थ रते पुव्वाधारिते पुण्णामेसु अभारिकेण पुरिसेण रतं ति, थिया वा अपतिकाय। थीणामेसु सभारिकेण पुरिसेण रतं, थिया वा सपतिकाय। णपुंसकेसु 5 अणवत्येण(वच्चेण) पुरिसेण रतं, थिया वा वंझाय।

तत्थ तिविहं रतं—दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणियं चेति। तत्थ उद्धंभागेसु सिरोमुहे य एकसिकायं अंजलीक-रणे पायुकोपाहणाअधमुंचणे अभिवंदिते आसण-सयणसंपदाणे ण्हाणा-ऽणुलेवणे गंध-मल्लगते छत्त-भिंगार-लाउज्झोपिके वासकडक-लोमहत्थे जक्खोपयाणे समिधजोगपच्चपयणेसु य दिव्वं रतं ति बूया। तत्थ उद्धंभागेसु सुकेसु अच्छराय रतं ति बूया, थिया य वा देवेण रतं ति बूया। णिद्धेसु णागकन्नाय रतं ति बूया, थिया वा णागेण रतं ति बूया। तिरियं भागेसु 10 किण्णरीय रतं ति बूया, थिया वा किण्णरेण रतं बूया। तत्थ तिरियजोणीगते विगताभिरामेसु यँ हस्सेसु पिसायीअ रतं बूया, थिया वा पिसाएण रतं ति। दारुणेसु रक्खसीअ रतं ति बूया, ☞ थिया वा रक्खसेण रतं ति बूया। ☜ सव्वगंधव्वेसु गंधव्वीय रयं ति बूया, थिया वा गंधव्वेण रतं। अधोभागेसु असुरकन्नाय रतं ति, थिया वा असुरेण रतं ति बूया। तत्थ दुपदजोणीगते सव्वअज्जीवगते वियाकरणे मतकपडिमाय रतं ति बूया। असारेसु पत्थिवपडिमाय रतं ति बूया। सारवंतेसुं मुत्तिकापडिमाय रतं ति बूया। मुधूसु चित्तपडिमाय रतं ति बूया। इति दुपदजोणी अज्जीवा। 15

तत्थ तिरियजोणीगते तिरियजोणीरतं ति बूया। तं दुविधं—सउणं वा चतुप्पदं चेति। [तत्थ] उद्धंभागेसु सव्वसउणपाउब्भावगते य सउणीय रतं बूया। चित्तसिद्दे कुक्कुडीयं रतं बूया। अमधुरघोसेसु टिट्टिभीय रतं ति बूया। चित्ते असिद्दे पारेवतीय रतं ति बूया। विगतदारुणेसु छिन्नगालीय रतं। इति पक्खिगतरतं ति। तत्थ सव्वचतुप्पदेसु चतुप्पदेण रतं बूया। तत्थ ☞ सव्वसिंगिए य ☜ सव्वसिंगीकोसीधण्णगते य गो-महिस-अयेलकेण रतं ति बूया। मज्झिमकायेसु गो-महिसेण रतं ति बूया। मज्झिमाणंतरकायेसु अयेलकेण अस्सतरीहिं वा रतं ति बूया। दारुणेसु 20 सुणिकाय रतं ति बूया। साधारणेसु वराहीय रतं ति बूया। वायव्वेसु वलवाय रतं ति बूया। विणतेसु उट्टीय रतं ति बूया। फरुसेसु गद्दभीय रतं ति बूया। ☞ चित्तेसुं गावीय रतं ति बूया। ☜ कण्हेसु महिसीय रतं ति बूया। इति चतुप्पयगतं रतं ति।

तत्थ माणुसं तिविधं—थिया पुरिसा णपुंसका चेति। थीणामे थिया रतं, पुण्णामेसु पुरिसरतं ति बूया, णपुंसकेसु णपुंसकरतं ति बूया। तत्थ रतं दुविधं—विगतं अविगतं चेति। तत्थ माणुसेसु माणुसं उद्धंभागेसु उवरि गीवाय पासितं विज्ञा। 25 तत्थ सव्वसयणा-ऽऽसणगते परिधाण-पादकलापक-पादकिंकणिका-खत्तिय-धम्मक-पायुकोपाणह-सव्वजाणगते सव्वजाणोव-करणे य माणुसं रतं बूया। तत्थ सव्वमल्ल-मुकुडउद्धगते कूचफणलीखावण-ण्हाण-पधोवण-विसेसकियाओकुंतणक-हरिताल-हिंगुलक-मणसिला-अंजण-चुण्णक-अलत्तक-गंध-वण्णक-कण्णसोधणक-अंजणीसलाका-कुच्चठावण-कुंच-सूची-धूपण-गंधवि-धि-सव्वआहारगते सव्वभोयणगते भोयण-भायणगते भक्ख-हरित-पुप्फ-फलगते सासा-सम्मिका-वतंसक-ओयास-कण्णपी-लक-कण्णपूरक-णंदीविगद्धक-कुळीयंधक-तिलक-कुंडल-वल्लिका-तलपत्तक-मधुरक-मुद्दयासक-चंदे-सुज्ज-णक्खत्त-गह-तारागण 30 पडिरूवसद्दपादुब्भावे भुत्तपीते चेति एवंविधसद्दरूवपादुब्भावे पोसियं बूया। तत्थमणुस्सरतं पुव्वाधारितं उद्धितं अवेट्टं चेति।

१ °सु आभिसारिकेण हं० त० विना॥ २ °सुभसारिकेण हं० त०॥ ३ सपालिकाय हं० त० विना॥ ४ °क्खजोणि-गयं हं० त०॥ ५ एकम्मिकायं हं० त०॥ ६ पाउको° हं० त०॥ ७ य सहस्से° हं० त० विना॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ९ °त्थ चउप्पदजो° हं० त०॥ १० वियागरे मत° हं० त०॥ ११ °सु मच्छिका° हं० त०॥ १२-१३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ १४ °यचम्मक° हं० त०॥ १५ °सकिपाउकंतूणक° हं० त०॥ १६ °सलाकि-कुच्च° हं० त० विना॥ १७ °णट्ठकफुरीपवतिलक° हं० त०॥ १८ °मद्दयासक-चंदमुद्दणखग्गद्दलरोगहणपडि° हं० त०॥ १९ चंद-सज्जु-णक्खत्तह-गह° हं० त० विना॥ २० पोसितं हं० त०॥ २१ उद्वितं अवेट्टं हं० त०॥

तत्थ उद्धंभागेसु उस्सितेसु य उट्ठिताय रतं ति बूया। तत्थ सव्वसयणासणगते जाणि वऽण्णाणि माणुसस्स रतस्स पुव्वलिंगाणि एतेसु उवविट्ठाय रतं ति बूया। सव्वसयणासणगते संविट्ठाय रतं ति बूया। सव्वावस्सयगते अवत्थद्धाय रतं ति बूया। संविट्ठरते पुव्वाधारिते दक्खिणेसु य गत्तेसु दक्खिणाय विलोकिते दक्खिणे यावि सद्दम्मि पडिरूवम्मि दक्खिणे दक्खिणेण पस्सेण रतं ति बूया। वामेसु य गत्तेसु वामम्मि य विलोकिते वामे पसारिते यावि वामम्मि पडिपोग्गले वामेण रतं ति बूया। तत्थ पट्ठीयं सयणासणगते उक्कुज्जभायणम्मि वत्थे वा सद्द-रूव-गंधपादुब्भावे वा एवंविधे उत्ताणाय रतं ति बूया। तत्थ णिकुज्जे सयणासणे णिकुज्जभायण-भूसणे वा वत्थे वा सव्वम्मि य पडिगते णिकुज्जे य सद्द-रूवपादुब्भावे वा णिकुज्जाय रतं ति बूया। तत्थ सव्वचतुप्पदगते अधोभागेसु संधीसु बाहिरेसु ओणते ओलोइते ओसन्ने चेव एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे ओणताइ रतं ति बूया। तत्थ उब्भारितेसु गत्तेसु विसारितेसु गत्तेसु उब्भाय रयं ति बूया। तत्थ एकेकेसु गत्तेसु एकाभरणे एक्कोपकरणे एक्कपरामासे एक्कसाहागते चेव एकोब्भगायं रतं ति बूया। पैसज्झिएसु उप्पाएसु पडिरूवेसु पैसज्झिएसु पसज्झियवेलुफालिय रतं ति बूया। तत्थ उत्ताणरतं तिविहं—उभयोसंविट्ठं अद्धसंविट्ठं एकापविट्ठं ति। तत्थ सव्वापस्सिते उभयोसंविट्ठरतं, उरोमविट्ठेसु अद्धसंविट्ठरतं, उद्धंभागेसु उपविट्ठरतं। तत्थ पणतं तिविधं—कडीगहितं चतुप्पदरतं रधजातं ति। तत्थ जाणगते आसणगते पादगते जहण्णे पगते अधोणामीय गत्तामासे य कडीगहिताय रतं ति बूया। तत्थ सव्वरथरणगते सव्वचतुप्पयगते य चतुप्पयरतं ति बूया। तत्थ सिरोमुहोपकरणे सव्वआहारगते य रधप्पयँतकं वा रतकं [ति] बूया। तत्थ उपविट्ठरयं चतुव्विधं—सयणावत्थद्धं आसणावत्थद्धं साहा-वत्थद्धं यक्खावत्थद्धं चेति। तत्थ स[य]णोपकरणोपलद्धीयं च सयणावत्थद्धरतं ति बूया। सव्वासणगते कडीयं वा आसणावत्थद्धरतं ति बूया। सव्वसाहागतेसु साहाअवस्सिताय रतं ति बूया। सव्वमूलगते सव्वमूलजोणीगते अंसेसु पक्खेसु पक्खावत्थद्धाय रतं ति बूया।

तत्थ एगामासे एकोपकरणे एकचरेसु सत्तेसु एकपादुब्भावे य सद्द-रूवाणं एक्कसि रतं ति बूया। तत्थ सामाणेसु गत्तेसु यमलाभरणके मिधुणचरेसु सत्तेसु बिसद्द-रूवपादुब्भावे बिक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ भुयंतरेसु नासातिके पत्थीसीसे तालुके हणुसंधिसु तिकूणिए णिकुज्जे कासिते छिचिते जंभिते ओणामिते णिम्मज्जिते ओलोकिते तिके सिंघा-डके सव्वतिकसद्द-रूवपादुब्भावे य तिक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ पादतल-करतलेसुं चतुरस्सेसु चउक्केसु चतुरंगुलिगहणे हसिते आविद्धमङ्ग-भूसणे उवसप्पिते उवेट्ठे सव्वभोयण-सयणा-ऽऽसणचउरस्से पैच्छेलिते आलिंगिते चुंबिते भुत्ते पीते, चतुप्पदोरकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसगते चतुप्पदरूवपादुब्भावे चतुक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ हत्थ-पाद-जाणु-सीसामासे मुट्ठीकरणे हत्थाभरणे पंचकसद्दपाउब्भावे य पंचखुत्तो रतं ति। तत्थ गंड-मणिबंध-गुप्फामासे तिजमकोदीरणे एकके पँचकमहिए छक्कसद्दपडिरूवगते य छक्खुत्तो रतं ति। तत्थ छसु वा एकमहिएसु पंचसु वा दुगसहिएसु चउसु वा तिगसहिएसु दोसु वा तिगेसु एक्कगसहिएसु तिसुं दुगेसु एक्कगसहिएसु सत्तए वा सद्द-रूवपाउब्भावे सत्तक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ ललाडमज्झे उरमज्झा एकेकअट्ठकोदीरणे अट्ठके वा आमासस‌द्द-रूवपादुब्भावे अट्ठक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ चउक्क-पंचकोदीरणे तिक-छक्कोदीरणे बिक-सत्तकोदीरणे एक्क-अट्ठकोदीरणे णवसद्द-रूवपादुब्भावे वा णवक्खुत्तो रतं ति बूया। तत्थ सिरो-पाद-अंजलिकरणे कच्छभकरणे पादसमागमे जमलपंचकोदीरणे चउक्क-छक्कोदीरणे एक्क-णवकोदीरणे तिअ-सत्तकोदीरणे बियअट्ठकोदीरणे दसए वा आमासस‌द्द-रूवपडिपोग्गलपाउब्भावे दसक्खुत्तो

---

१ दक्खिणेे य हं॰ त॰ ॥ २ वामेसि य हं॰ त॰ ॥ ३ ओपारितेसु हं॰ त॰ ॥ ४ एक्कमग्गायं हं॰ त॰ ॥ ५ पसज्झिएसु तुप्पाएसु हं॰ त॰ ॥ ६ पक्खसहि॰ सं ३ पु॰ ॥ ७ °यावकयारयं बूया हं॰ त॰ ॥ ८ साधाय° हं॰ त॰ ॥ ९ सव्वागमजोग° हं॰ त॰ विना ॥ १० °वसियाय हं॰ त॰ ॥ ११ अरोसु हं॰ त॰ विना ॥ १२ °सु भयरथ° सप्त॰ ॥ १३ कणिए छिधिए जं° हं॰ त॰ ॥ १४ °सु दरयर° सं ३ पु॰ ॥ १५ पचेल्लिते सं ३ पु॰ ॥ १६ °सामागमामासे मुट्ठी° सं ३ पु॰ ॥ १७ गंघमलि° हं॰ त॰ विना ॥ १८ पंचकागद्दपाउब्भावे छज° हं॰ त॰ विना ॥ १९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ २० °पडिपुग्गलपाउ° हं॰ त॰ विना ॥

रतं ति बूया । अतो उद्धं अण्णेण समाजोगेण विकप्पणाय आमास-सद्द-रूव-पडिपोग्गलपाउब्भावेहिं गणणापरिसंखाणि रतेसु वा जोजयितव्वं भवति ।

तत्थ विगतेण वीभत्थेण परिमंडले गुदे रतं ति बूया । परिमंडले णाभीय रतं ति बूया । उण्णते थणंतरे रतं ति बूया । हत्थगते थिग्गलगते य पाणिणा रतं ति । इति विगतरताणि । तत्थ उवाएसु उवातायं रतं, सामेसु सामाय रतं, कण्हेसु कालिकाय रतं, दीहेसु दीहाय रतं, रस्सेसु रस्साय रतं, थूलेसु थूलाय रतं, किसेसु किसाय रतं । 5
[१]वालेसु वालाय रतं, वयत्थेसु वयत्थाय रतं, मज्झिमेसु मज्झिमाय रतं, महव्वयेसु महव्वयाय रतं । वंभेज्जेसु वंभणीय रतं, खत्तेज्जेसु खत्तिकाय रतं ति बूया, वेसेज्जेसु वेस्सीय रतं, सुद्देज्जेसु सुद्दीय रतं, मूल-जोणीगते कसिगोरक्खभज्जाय रतं, दढेसु कारुकभज्जाय सह रतं, थलेसु ववहारीभज्जाय सह रतं । पुण्णामेसु सपतिकाय सह रतं, थीणामेसु ससपतिकाय सह रतं, णपुंसकेसु पउत्थपतिकाय सह रतं । दढेसु अविधवाय सह रतं, असुकाय अवट्ठिताय सह रतं, चलेसु अणवत्थिताय सह रतं चलचित्ताय त्ति । णिद्धे उदुणीय सह रतं, [२]चु(लु)क्खेसु 10
अणुदुणीय सह रतं, ति बूया, लुक्खाय विसदाय [य] रतं बूया । कण्हेसु दुस्सीलाय सह रतं तणूसु सुकेसु अद्धसंवुताय रतं । अब्भंतरेसु अब्भंतराय सकाय थिया रतं, बाहिरेसु परभज्जाय रतं ति, बाहिरब्भंतरेसु मित्त-भज्जाय सह रतं ति बूया । रायचिंधेसु पडिरूवेसु रायपुरिसपडिरूवेसु य रायपुरिसपडिपोग्गले य रायपुरिसभारिकाय सह रतं । जस्स जं चिंधं पडिपोग्गलपडिरूवं वा तेण तस्सोवजीवकभारिकाय सह रतं । [३]णीहारे परिचारिकाय सह रतं । गहणेसु परूढणख-कक्खरोमाय रतं, उपग्गहणेसु अचिरपरूढणह-रोमाय रतं, आकासेसु रमणीयेसु 15
सुपरिमज्जितणह-कक्ख-वत्थिसीसाय रतं ति बूया । पुधूसु पुधुउपधाय रतं, संखित्तेसु संखित्तभगाय सह रतं, परिमंडलेसु परिमंडलभगाय सह रतं, चउरस्सेसु चउरस्सभगाय, तिअंसेसु तिअंसभगाय सह रतं । असंख-तेसु अमेहलाय रतं, संखतेसु समेहलाय रतं । कण्णेयेसु कुमारीय सह संकेतो त्ति, जुवतेयेसु जुवतीय सह रतं ति, अतिवत्तेसु विविधाय रतं । उत्ताणेसु उत्ताणभगाय सह रतं, णिण्णेसु णिण्णभगाय सह रतं । पसण्णेसु [४]पसण्णा-य सह रतं, अपसण्णेसु [५]कुद्धाय रतं । सद्देयेसु चित्ताय वा मुदिताय वा विस्सुयकित्तीय वा पक्खाताय वा सह 20
रतं ति बूया । दंसणीयेसु सुरूवेसु दंसणीयरूवसंपण्णाय सह रतं, गंधेयेसु सुगंधाय ण्हाणा-ऽणुलेवण-मल्ल-गंधसंपुण्णाय सह रतं ति बूया । रसेयेसु मधुराय मधुरलवणाय रतिरसगुणसमण्णागयाय बहुभक्ख-पेय-रसगुणसमण्णागतं रतं ति बूया । फासेज्जेसु फासाय फासगुणसमण्णागयं रयं । मणेयेसु इट्ठाय थियाय सह रतं, भुमकाय भिउडीरतं, अक्खिसु णिकाणितं बूया, मुहे चुंवितं बूया, ओट्ठेसु खयं बूया, बाहूसु आलिंगियं बूया, उच्छंगेसु उपविट्ठं बूया, णहेसु णक्खपदं बूया, दंतेसु दंतपरिमंडलं दंतखयं वा बूया । सणेसु सयं बूया, समेसु घोसवंतेसु य गीतरतं बूया, सद्देयेसु 25
हसियं बूया, आहारोपगएसु आहारियं बूया, णिमिसिएसु[६] कण्हेसु पुसुयं बूया, तिक्खेसु सोणियओचायणं बूया, तुच्छेसु सुद्दाय रतं बूया, [७]कण्णेसु पढियाय रतं बूया, अप्पसण्णेसु विवादं बूया, अभिकं[८]मेसु रतं बूया ।

तत्थ काले पुव्वाधारिए कंसि काले रतं ? ति—कण्हेसु रत्तिरतं ति, सुकेसु दिवा रतं ति बूया, सामेसु संझाकाले रतं बूया, कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसे रतं, सुकेसु आदि[१०]मूलीयेसु अवरण्हेसु रतं, सुकमज्झविगाढेसु मज्झंतियए रतं बूया, कण्हेसु मज्झविगाढेसु अद्धरत्ते रतं, सुकेसु [११]अंतेसु अवरण्हे रतं बूया, कण्हेसु अंतेसु पचूसे रतं । 30

तत्थ आधा[१२]रयितू आधारयितू रयण(णि)रतं ति केण वा सह रतं ? देवेण वा देवीय वा ? मणुस्सेण वा मणुस्सीय वा ? तिरिक्खजोणिएण वा तिरिक्खजोणीगीय वा ? किंजा[१३]तीयेण किंरूवेण किंवयेणं किंअलंकारेणं किंसील-भावा-

---

१ वालायेसु हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ पहिट्ठाय रतं हं० त० ॥ ५ °सु फट्ठाय हं० त० ॥ ६ बूया, अद्देसु हं० त० विना ॥ ७ °सिए कण्णेसु भुसुतं बूया हं० त० ॥ ८ फण्हेसु सि० ॥ ९ °भिक्समेसु° सि० ॥ १० °मूलेसु हं० त० विना ॥ ११ °सु अंतेसु प° हं० त० विना ॥ १२ °रयित्तु आधारयित्तु रय° हं० त० विना ॥ १३ °जाईतेण हं० त० विना ॥

ऽऽपरेतं ? कयं सेविंत सेरगाधार-विगता-ऽविगतसेरणा य त्ति ? कंसि देसंसि आसण-सयण-अच्छसयविधीसु वा ? गीत-वाइत-हसित संलाविर-आलिंगित-चुंबित-णहदंतकेसमद्दण-आगारविगारविधीहिं वा सद्द-रूव-रस-गंध-फास-पडिभोग-इट्ठा-णिट्ठसंहेतेति वा ? सम्मोद्द-विमद्द-अभिप्पेत-अणभिप्पेत-पहिट्ठ-सुट्ठय-अणुलोम-अणणुलोमरंतादिकाणि वा ? विवियाणि रताणि केवतिवुत्तो वा ? कंसि वा कालंसि रतं ति ? । एताणि सव्वाणि ठाणाणि अणेगविधभेद-गताणि ५ अणुगतेहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । आमास-सद्द-रूव-रस-गंधपडिभोगलद्धेहिं सव्वाणि अणुगंतव्वाणि भवंति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय रहस्सपडलो णामज्झाओ एगतालीसइमो सम्मत्तो ॥ ४१ ॥ छ ॥

[बायालीसइमो सुविणज्झाओ]

णमो महावीरवद्धमाणाय । णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय १० अंगविज्जाय सुविणो णामज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तत्थ दिट्ठो सुविणो ण दिट्ठो अव्वत्तदिट्ठो सुविणो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पयलाइए पसुत्ते पसुत्तपयलाये त्ति दिट्ठं एवं सुविणं ति बूया । तत्थ बाहिरामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे ण दिट्ठो सुविणो त्ति बूया । तत्थ बाहिरब्भंतरम्मि दढचलम्मि णिद्धलुक्खम्मि णीहारुद्धरणिति अव्वत्तं दिट्ठं सुविणं ति बूया । तत्थ पसुत्तम्मि सव्वसंगामिएसु य सव्वसमागमेसु य सव्वउवभोगेसु य दिट्ठं सुविणं बूया । सुभेसु सुभं असुभेसु असुभं १५ दिट्ठं सुविणं बूया ।

तत्थ सद्देसु वेणुवे अप्फोडिए सिट्ठिसिट्ठाविए सेपेलियवादन-आमतण-हिरण्ण-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-सद्द-[illegible] सव्वगीतोवलद्धीसु सव्वकंतविणिमुक्कमाणे तत्थ सुविणे सुतं बूया, इट्ठे इट्ठं सुतं बूया, अणिट्ठेसु अणिट्ठं सुतं बूया । तत्थ णासाए उग्घिदिते णिग्घिदिते [illegible] सव्वगंधावाले सव्वगंधजोगीणे सव्वगंध-जोगीसरिसमाले य घातं गंधं सुविणे बूया, सुभेसु सुभं गंधं घातं बूया, असुभेसु असुभं गंधं घातं बूया । तत्थ २० दंतोट्ठ [illegible] अस्साविते संसाविते परिपीते पाणी-[illegible] सव्वआसाएत सव्वआहारसरिसे वाह वा आहारितं सुविणे बूया, सुभेसु सुभं आहारितं, असुभेसु असुभं बूया । [illegible] सव्व[illegible] सव्व[illegible] य [illegible] सुविणं बूया, सुभेसु सुभं [illegible] असुभेसु असुभं बूया । [illegible] [आमासे] [illegible] सुविणं २५ बूया । [illegible] सुविणं बूया । [illegible] सुविणं बूया । [illegible] सुविणं बूया । [illegible] सुविणं बूया । [illegible] दिट्ठं सुविणं बूया । [illegible] दिट्ठं सुविणं बूया । [illegible]

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] १५ [illegible] १६ [illegible]

सुविणं दिट्ठं बूया । थीणा[मा]मासे थीणामामासेसु सव्वेसु सव्वत्थीपडिरूवगते य ☞ [1]थीदिट्ठं बूया, ☜ पुण्णामेसु पुरिसदिट्ठं सुविणे बूया, णपुंसकेसु णपुंसकदिट्ठं बूया ।

तत्थ दिव्वेसु पुव्वाधारितेसु देवो देवि त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेसु देवो दिट्ठो सुविणे त्ति बूया । थीणामेसु दिव्वपादुब्भावेसु देवी दिट्ठा सुविणे त्ति बूया । देवोपलद्धीहि य सद्द-रूवपादुब्भावेहि य णातव्वाणि भवंति । इति दिव्वोपलद्धिसुविणे दिट्ठा उपलद्धव्वा भवंति । 5

तत्थ माणुसे पुव्वाधारिते माणुसा तिविधा, तं जधा—मता संपदा अणागतं त्ति । तत्थ पच्छिमेसु गत्तेसु ◁ मतेसु ▷ य मतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु य सद्द-रूवेसु जीवंतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । पुरिमेसु गत्तेसु अणागतेसु य सद्द-रूवपादुब्भावेसु अणागतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ तिविधा—थीओ पुरिसा णपुंसका इति । तत्थ थीणामे थियं बूया, पुण्णामेसु पुरिसं बूया, णपुंसकेसु णपुंसका विण्णेया । तत्थ थी-पुरिससिरोमुहामासे बंभणं सुविणे दिट्ठं बूया, बाहुअंतरेसु खत्तियं, पट्ठोदरे वेस्सं सुविणे दिट्ठं बूया, पाद-जंघेसु 10 सुद्दं दिट्ठं बूया । तत्थ वये पुव्वाधारिते पाद-जंघासु बालं दिट्ठं बूया, [3]बाहूसु अंतरंसे य मज्झिमवयं दिट्ठं बूया, सिरोमुहे महव्वयं दिट्ठं बूया । अवदातेसु अवदातवण्णं दिट्ठं बूया, सामेसु सामवण्णं दिट्ठं बूया, कण्हेसु कालकं दिट्ठं बूया, ठियामासेसु मिस्सकेहि तधावण्णसाधारणं दिट्ठं बूया । तत्थ ठाणे पुव्वाधारिते उद्धं णाभीय अज्जवाणं इस्सरं दिट्ठं बूया, अधत्था णाभीयं उवरिं जाणूसु अवत्तपेस्सं दिट्ठं बूया, पाद-जंघासु पेस्समेव दिट्ठं बूया, ☞ [5]पादेसु दासं दिट्ठं बूया, ☜ उवरिं थणेहिं अधत्था गीवाय अज्जवाणं विसिट्ठं बूया । जो तु गुरुत्थाणे उवरि गगीवाय 15 अधत्था भमुहाय अज्जवाणं गुरुत्थाणीतं दिट्ठं बूया, एताणं उद्धं गुरुणो गुरुदिट्ठं बूया । वामेसु पुण्णामेसु थीसणामं दिट्ठं बूया, वामेसु थीणामेसु थीसामण्णयं थीगमेव दिट्ठं बूया, दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससामण्णयं पुरिसं बूया, दक्खिणेसु थीणामेसु पुरिससामण्णयं महिलं बूया । पुरिसणामे पुरिसणामेसु अधोभागेसु पुत्तं दिट्ठं बूया, पुरिसणामेसु पुरिसभागेसु पवत्तेसु उद्धंभागे पितरं बूया, पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भातरं बूया, पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु दुहितरं बूया, पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं बूया, पुण्णामा थीणा- 20 मेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु मातरं बूया । थीणामेसु पवत्तेसु थीणामा उद्धंभागेसु थिया मातरं बूया, थीणामा थीणामेसु पवत्ते[6]सुं थीसमभागेसु थिया भगिणिं दिट्ठं बूया, थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु थिया दुहितरं बूया । तत्थ थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागे[7]सुं जामातरं बूया, तत्थ थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं दिट्ठं बूया, थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु [8]ससुरं बूया । थीसंसट्ठेसु आमासेसु पुणो पुणो आवलिं बूया—थीसंसट्ठेसु पुण्णामेसु बाले बूया, अब्भंतरेसु अब्भंतरं दिट्ठं बूया, बाहिरब्भंतरेसु मित्तं दिट्ठं बूया, बाहिरबाहिरेसु जणं दिट्ठं 25 बूया । इति मणुस्सं सुविणे दिट्ठं आमास-सद्द-रूवेहिं बूया ।

तत्थ तिरिक्खजोणियं पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणिं पंचविधमाधारये, तं जधा—पक्खिगतं चतुप्पदगतं परिसप्पगतं जलचरगतं कीड-किविल्लग-दंस-मसगगतं ति । तत्थ उद्धं गीवाय सिरोमुहामासे [9]उद्धोगिते उद्धंभागेसु सव्वसगुणगते सव्व-सगुणोपकरणे सव्वसगुणमये उवकरणे सव्वसगुणोपकरणणामधेज्जे सव्वसगुणणामधेज्जे य थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूव-[2]पादुब्भावे सगुणं दिट्ठं सुविणं बूया । ते दुविधा—जलचरा थलचरा चेति । तत्थ आपुणेयेसु सव्वउदगचर-उदकोपकरणपा- 30 दुब्भावे जलचरा दिट्ठा विण्णेया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु थलचरेसु थलोपकरणे थलोपकरण-थलज-थलजरणामधेज्जे सद्द-रूवपादुब्भावे य थलजा पक्खी सुविणे दिट्ठा भवंति, सुभेसु सुभो असुभेसु असुभो पक्खी दिट्ठो भवति ।

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ २ सद्दपडिरूवपा° हं० त० । सद्दरूवपडिरूवपा° सि० ॥ ३ बाहुअंत° हं० त० ॥ ४ °या, विसामा° हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ६ °सु सम° हं० त० विना ॥ ७ °सु मातरं हं० त० ॥ ८ ससरं हं० त० ॥ ९ उद्धंगए मासेसु हं० त० ॥

तत्थ चतुप्पदेसु चतुरस्सेसु चउक्केसु चतुप्पदउवकरणे चतुप्पयमयेउवकरणे चउप्पयणामधेज्जउवकरणथी-पुरिस-सद्दपादुब्भावे चतुप्पदं दिट्ठं सुविणे बूया। ते दुविधा—थलजा जलजा चेति जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति। ते तिविधा पुणरवि उवलद्धव्वा—गम्मा गम्मारण्णा आरण्णा[1] चेति। ते यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति। संठाण-वण्ण-घोस-आहार-परिभोगविधीहि य उवलभिउं सुविणे दिट्ठं बूया।

5 तत्थ दीहेसु चलेसु तिरियभागेसु य सव्वपरिसप्पगते सव्वपरिसप्पउवकरणगते परिसप्पमये उवकरणे परिसप्पणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिससद्दपाउब्भावे या परिसप्पं बूया। ते दुविधा—थलजा जलजा य। जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं संठाण-वण्ण-संघात-घोस-विरिय-आहार-परिभोगविधीहि य उवलभितुं सुविणे दिट्ठं बूया।

तत्थ अणूसु चलेसु सव्वखुद्दपाणेसु खुद्दपाणणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसगते सद्द-रूवपादुब्भावे य कीड-किविल्ल-दंसमसगे सुविणे दिट्ठं बूया। ते दुविधा—थलजा जलजा चेव। जधुत्ताहि उवलद्धीहिं संठाण-वण्ण-घोस-पडिभोग-
10 विधीहि य उवलभिउं सुविणे दिट्ठं बूया। दिव्व-माणुस-तिरिक्खजोणियसाधारणोपलद्धीहिं साधारणे दिट्ठे बूया। मिस्सगामासेहिं दिव्व-तिरिक्खजोणिएहिं मिस्से दिट्ठो बूया।

तत्थ रूवा-ऽरूवगते अज्जीवे सुविणे पुव्वमाधारिते रूवगतं अज्जीवं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं। तत्थ चलामासे पाणजोणिगते पाणजोणीउवकरणे पाणजोणीमये उवकरणे ◁ पाणजोणी ▷[2] णामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिससद्दपाउब्भावे पाणजोणीगतं अज्जीवं रूवगतं सिविणे दिट्ठं बूया। तत्थ केस-मंसु-लोमगते सव्वमूल-
15 जोणीगते मूलजोणीउवकरणे मूलजोणीणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसगते य सद्द-रूवपादुब्भावे या मूलजोणीगतं अज्जीवरूवगतं सिविणं दिट्ठं बूया। तत्थ दढामासे सव्वधातुगते सव्वधातुजोणीगते य सव्वधातुजोणीउवकरणे धातुजोणीमये उवकरणे धातुजोणीउवकरणे धातुजोणीणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसगते या धातुजोणीगतं अज्जीवरूवगतं सुविणे दिट्ठं बूया।

तत्थ सद्दगते सुविणे पुव्वाधारिते सद्दगतं सिविणं तिविधमाधारये, तं जधा—भासासद्दगतं आतोज्जसद्दगतं पराघातसद्दगतं चेति। तत्थ तिविधमाधारये—जीवसमाजुत्तं ☞ अज्जीवसमाजुत्तं ☜[3] जीवाजीवसमाजुत्तं चेति। तत्थ
20 सद्देयेहिं भासासद्दे आतोज्जसद्दे पराघाते य भेद-संघायसमुत्थितेहिं सद्देहिं पडिरूवेहिं[4] आतोज्जउवकरणपादुब्भावेहि य उवलभिउं सद्दगतं इट्ठा-ऽणिट्ठसद्दगतं सुविणं दिट्ठं बूया।

तत्थ गंधगते सुविणे पुव्वाधारिते गंधगतं सुविणं दुविधमाधारये—सुभगंधं असुभगंधं चेति। तत्थ सुगंधपरामासे सुगंधसद्द-रूवपादुब्भावे य सुभं गंधं सुविणे घातं ति बूया। दुग्गंधपरामासे ◁ किलिट्ठपरामासे ▷[5] दुग्गंधसद्द-रूवपादुब्भावे य असुभं गंधं सुविणे घायं। तत्थ गंधं पुणरवि सुभा ऽसुभं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं
25 धातुजोणीगतं ति। तत्थ जधुत्ताहि पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणीउवलद्धीहिं उवलभितुं सद्द-रूवपादुब्भावेहि य तिविधजोणीयं गंधं सुभा-ऽसुभं सुविणे दिट्ठं बूया।

तत्थ रसगते सुविणे पुव्वाधारिते ◁ रसगते ▷[6] सुविणे तिविधमाधारये, तं जधा—पाणजोणिगतं मूलजोणिगतं धातुजोणिगतं। तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं तिविहजोणिओ रसो उवलद्धव्वो भवति। अव्वावण्णजोणीआमास-सद्द-रूवपाउब्भावेणं अव्वावण्णो रसो उवलद्धव्वो भवति सुभो। वावण्णजोणीआमास[7]-सद्द-रूवपादुब्भावेण वावण्णरसो उवलद्धव्वो
30 भवति असुभो। तत्थ रसं तिविधजोणीयं पुणरवि छविधमाधारये, तं जधा—तित्तकं अंबिलं लवणं कडुकं कसायं मधुरमिति। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे मधुरेसु य सद्द-रूवपादुब्भावेसु मधुरं बूया। तत्थ तिक्खामासे दारुणामासे फरुसामासे कडुगेसु य सद्द-रूवपाउब्भावेसु कडुगं बूया। वावण्णेसु आमासेसु अंबिलेसु सद्द-रूवपाउब्भावेसु अंबिलरसं सुविणे सेविंतं बूया। तत्थ णागपरामासे आसणपरामासे पोक्खरपरामासे सव्वआपुणेयेसु अंसु-खेल-सिंघाणग-परसयण-गव्व-

१ आरण्णा हं॰ सि॰ एव वर्त्तते ॥ २ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥ ४ °रूवगतेहिं सि॰ ॥ ५-६ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ७ आमासजोणीआमास° हं॰ त॰ ॥

सोयदूसिकापरामासे[1] लवणरससद्दपादुब्भावे य लवणरसं सुविणे सेवितं बूया। तत्थ विमुत्तेसु विसयेसु परिब्भट्ठेसु य सव्वकसायसद्द-रूवपादुब्भावेसु कसायं रसं सुविणे पडिसेवितं बूया। तत्थ चलामासे अंतेसु य सव्वतित्तकसद्द-रूवपादुब्भावेसु य तित्तकरसं सुविणे सेवितं बूया। एवंविधजोणीयं रसं छव्विधं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं सुविणे दिट्ठं बूया।

तत्थ फासगते सुविणे पुव्वाधारिते फासगतं सुविणं विविधमाधारये, तं जधा—सज्जीवफासगतं १ अज्जीवफासगतं २ मिस्सकं जीवाजीवसंजुत्तं ३ चेति। तत्थ सज्जीवेसु चलामासेसु य सज्जीवसद्द-रूवपादुब्भावेसु य सज्जीवं फासं [सुविणे सेवितं] बूया। अज्जीवेसु मयेसु य अज्जीवसद्द-रूवपादुब्भावे य अज्जीवं फासं सुविणे सेवितं बूया। वामिस्सामासे सज्जीवअज्जीवेसु य सद्द-रूवपादुब्भावे मिस्सकं फासं सुविणे सेवितं बूया। तत्थ सज्जीवो फासो दिव्व-माणुस्स-तिरिक्खजोणिकादीहिं जीवजोणीहिं उवलद्धव्वो भवति। अज्जीवो फासो अज्जीवोपलद्धीहि पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणीआदीहिं उवलद्धव्वो। मिस्सको फासो मिस्सकोपलद्धीहिं मिस्सको उवलद्धव्वो भवति। तत्थ फासो पुणरपि अट्ठविधो[2] उवलद्धव्वो, तं जधा—कक्खडो मउक्को गुरुको लहुको सीतो उसिणो णिद्धो लुक्खो चेति। तत्थ दढामासे तिक्खामासे दारुणामासे सव्वकक्खडपडिरूव-सद्दपादुब्भावे कक्खडं फासं बूया। तत्थ मउकामासे सव्वमउकसद्द-पडिरूवपादुब्भावे मउकं फासं सुविणे सेवितं बूया। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे उत्तमामासे सव्वसारगते य सव्वसारमंतपडिरूव-सद्दपादुब्भावे गुरु-गारवसद्द-रूवपादुब्भावेसु य गुरुफासं सुविणे सेवितं बूया। तत्थ वज्झामासे चलामासे तुच्छामासे जहण्णामासे[3] सव्वणीहारगते सव्वक-लहुस-तुच्छसारजम्मपडिरूव-[4]सद्दपादुब्भावे य लहुकं फासं सुविणे सेवितं बूया। तत्थ णिद्धामासे सव्वणिद्धफासपडिरूवसद्दपाउब्भावे णिद्धं फासं सुविणे सेवितं ति बूया। तत्थ लुक्खामासे सव्वलुक्खपडिरूव-सद्दपाउब्भावे य लुक्खं फासं सुविणे सेवियं बूया। तत्थ सव्वआपुणेयेसु सव्वसीयफासदव्वोपकरणे पडिरूव-सद्दपाउब्भावे सुपिहिए[5] पाउए उवगूढे पाविविए लुक्खसिए हेमंतउज्जसद्दभयमाणेसु य आहारोपकरण-सयणा-ऽऽसणपरिच्छदपरिभोगपाउब्भावेसु सद्द-रूवेसु य एवंविधेसु सीतं फासं सुविणे सेवियं बूया। तत्थ अग्गेयेसु सव्वअग्गिगए ☞ सव्वउसुणागए ☜[6] सव्वउसुणागए सव्वउसुणसद्द-पडिरूवपाउब्भावे[7-8-9] य उसुणं फासं सुविणे सेवितं बूया। एवं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं सद्द-रूव-रस-गंध-फासगताहिं ☞ सुंभा-ऽसुभाहिं[10] आहारयिउं सद्द-रूव-रस-गंध-फासगयाओ ☜ सुविणे सेवणाओ विण्णेया भवंति। इति विसयगतो विण्णेयो सुविणो ति।

तत्थ चलेसु णट्ठं वा पावासिकं आउरं वा सुविणे दिट्ठं बूया। तत्थ अब्भंतरेसु चलेसु य णट्ठं बूया। बाहिरेसु चलेसु य पावासिकं दिट्ठं बूया। पुण्णामेसु पुरिसं दिट्ठं बूया। सम्मे सम्मदितेसु चलेसु आउरं दिट्ठं बूया। बद्धेसु बद्धं दिट्ठं, मोक्खेसु मोक्खं दिट्ठं बूया। तणप्फय-कुक्खि-णाभि-उच्छंग-पोरुस-अंगुट्ठ-कणेट्ठिकापरामासे पयासंतरेण दिट्ठं बूया। ◁[11] पुण्णामेसु पुरिसं दिट्ठं बूया। थीणामेसु थियं दिट्ठं बूया। णपुंसकेसु णपुंसकं दिट्ठं बूया। दढेसु सारिउपकरणं दिट्ठं बूया। ▷ कण्हेसु असारिउवकरणं दिट्ठं बूया। तंबेसु सुवण्णकं दिट्ठं बूया। सुक्के रुप्पं वा कोहावणे[12] वा बूया। सुक्केसु दढेसु रुप्पं बूया। चित्तेसु सुक्केसु दढेसु य कोहावणे[13] बूया। णपुंसकेसु णिरत्थकं सुविणं दिट्ठं बूया। णीहारेसु हाणिं सुविणे दिट्ठं बूया। आहारेसु वद्धिं सुविणे दिट्ठं बूया। ☞ वण्णउवलद्धीयं[14] सव्ववण्णगए य रण्णं दिट्ठं बूया। ☜ णिण्णेसु णदिं वा कूवं वा तलागं वा पुक्खरणिं वा वाविं वा समुद्दं वा दिट्ठं बूया। ☞ उव्वेट्ठिसु[15] कूवं दिट्ठं बूया। ☜ णिण्णेसुं[16] वित्थिण्णेसु सण्णिरुद्धेसु य तलागं दिट्ठं बूया। चउरस्सेसु मुदितेसु य पुक्खरणिं बूया। चउरस्सेसु

---

१ °सोयगद्° सं ३ पु० ॥ २ °घो णातव्वो सि० ॥ ३ जण्हामा° हं० त० विना ॥ ४ सव्वलफलहुसतुच्छसारजम्म° हं० त० ॥ ५ °हिए सुवगूढे पधिगते उलुकुसिते हेमंतउक्कसद्द° हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ७-८-९ उसुण स्थाने हं० त० विना उसण इति पाठो वर्त्तते ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ११ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ १२-१३ कहा° हं० त० विना ॥ १४-१५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ १६ °सु विच्छेसु रुट्ठेसु य हं० त० ॥

वार्वि बूया। महावकासेसु य समुद्दं दिट्ठं बूया। कसे सुत्तं वा अच्छादणं वा किंसं वा थी-पुरिसं दिट्ठं बूया। तत्थ अज्जीवेसु केस-मंसु-लोमगतेसु सुत्तं वा तंतुवितं वा दिट्ठं बूया। तत्थ वित्थतेसु अत्थुतेसु परिहिते पाउते विट्ठणे व त्ति अच्छादणं दिट्ठं बूया। थलेसु उण्णतं वा पव्वतं वा दिट्ठं बूया। तत्थ महावकासेसु दढेसु य पव्वयं दिट्ठं बूया। गहणेसु अरण्णं वा पव्वतं वा बूया। तत्थ उण्णएसु गहणेसु पव्वयं बूया। णिण्णेसु
5 कंदरं वा दरिं वा बूया। समेसु समं गहणं दिट्ठं बूया। उपग्गहणेसु आरामं वा वणराइं वा दिट्ठं बूया। परिमंडलेसु भायणं। पुधूसु किलिंजं वा पुधविं वा दिट्ठं बूया। तत्थ पुधूसु दढेसु पुढविं बूया। जण्णेयेसु जण्णं वा वाधुज्जं वा दिट्ठं बूया। अग्गेयेसु अग्गिं दिट्ठं बूया। णिद्धेसु उदकं वा वुट्ठिं वा आहारं वा दिट्ठं बूया। तत्थ उवरिमेसु णिद्धेसु वुट्ठिं बूया। समभागेसु णिद्धेसु आहारं बूया। अधोभागेसु णिद्धेसु उदकं बूया। चउरस्सेसु चउप्पयं वा खेत्तं वा सुविणे दिट्ठं बूया। तत्थ चउरस्सेसु चलेसु चतुप्पदं बूया। चतुरस्सेसु दढेसु खेत्तं बूया।
10 वज्झेसु पावासियं बूया। पच्छिमेसु परस्स सुविणं दिट्ठं बूया। पुरत्थिमेसु अप्पणो सुविणं दिट्ठं बूया। वज्झब्भंतरेसु अप्पणो य परस्स य सुविणं दिट्ठं बूया। पुणरवि आधारिते अतिक्कंतो सुविणो अणागतो वत्तमाणो त्ति। पुरत्थिमेसु अणागतं सुविणं बूया। पच्छिमेसु अतिक्कंतं सुविणं बूया। वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणं संपदाकालियं सुविणं अणंतरं दिट्ठं बूया। मतेसु मतकप्पं वा मतं वा दिट्ठं बूया। रुक्खेसु चोरियं दिट्ठं सुविणं बूया। वामेसु आभरणं दिट्ठं बूया। दीहेसु अडविं दिट्ठं बूया। हस्सेसु पुप्फफलं दिट्ठं बूया। रमणीयेसु
15 हरिणं वा भद्दं वा रमणीयं वा देसं दिट्ठं सुविणे बूया। मुदितेसु उसवं वा समायं वा दिट्ठं बूया। दीणेसु उवसग्गं वा दाणिं वा थी-पुरिसं दिट्ठं बूया। पसत्तेसु उस्सयं वा वाधुज्जं वा दिट्ठं बूया। उद्धंभागेसु दिव्वं दिट्ठं बूया। कण्णपवेसु सव्ववाहणगतं चतुप्पदं वा दिट्ठं बूया। तिखिणेसु जोग-खेमं दिट्ठं बूया। केस-मंसु-लोमगतेसु मूलजोणिगतं बूया। अंतेसु सव्वधण्णगतं बूया। सामेसु संपयोगेसु मेधुणं दिट्ठं बूया। बालेयेसु बालं दिट्ठं बूया। जोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थं दिट्ठं बूया। मज्झिमवयेसु मज्झिमवयं दिट्ठं बूया। मज्झिमसाधारणेसु मज्झिमसाधारणं
20 दिट्ठं बूया। जघण्णेसु जघण्णं बूया। जघण्णसाधारणेसु जघण्णसाधारणं बूया। तत्थ पुणरवि पुरत्थिमेसु अभिक्खितं दिट्ठं बूया। पच्छिमेसु अणुभुत्तं बूया। वामदक्खिणेसु उवभुज्जमाणं दिट्ठं बूया। पुणरवि पसण्णेसु सव्वसम्मोइगते य सम्मोई सुविणं दिट्ठं बूया। विवादेसु दीणेसु सव्वविग्गहगते विग्गहं वा विवादं वा सुमिणे दिट्ठं बूया। छइतेसु सव्वछेज्जगते य छेज्जं बूया। अब्भतरेसु अप्पणो सुविणं दिट्ठं बूया। बाहिरेसु बाहिरेण सुविणं दिट्ठं बूया।

तत्थ कंसि देसे सुविणो दिट्ठो ? त्ति पुव्वमाधारिते अब्भंतरेसु अब्भंतरणगरे सुविणं दिट्ठं बूया। अब्भंतरब्भंतरेसु
25 अब्भंतरणिवेसणे सुविणं दिट्ठं बूया। बाहिरेसु बाहिरिकायं सुविणं दिट्ठं बूया। ☞ बाहिरबाहिरेसु बाहिरिकायं सुविणं दिट्ठं बूया। ☜

[तत्थ] दिसासु आधारितासु कंसि दिसायं दिट्ठो सुविणो ?। तत्थ पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं [दिट्ठो] सुविणो त्ति बूया। पच्छिमेसु पच्छिमायं दिसायं दिट्ठो सुविणो। दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं दिट्ठो, वामेसु उत्तरायं। दिसाओ विदिसाओ य वामदक्खिणेहिं पुरत्थिमपच्छिमेहि य साधारणेहिं णातव्वाओ आमासेसु भवंति।

30 तत्थ काले पुव्वाधारिते कंसि काले दिट्ठो सुविणो ? त्ति। तत्थ कण्हेसु रत्तिं सुविणो दिट्ठो त्ति। सुक्केसु सव्वप्पभागते य दिवा दिट्ठो सुविणो त्ति बूया। कण्हेसु आदिमूलेसु पदोसे सुविणो दिट्ठो त्ति। क[ण्हेसु] मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तकालं दिट्ठो त्ति। कण्हेसु अंतेसु पच्चूसे सुविणो दिट्ठो। सुक्केसु आदिमूलेसु पुव्वण्हे सुविणो दिट्ठो त्ति बूया। मज्झविगाढेसु सुक्के मज्झण्हे दिट्ठो सुविणो त्ति। सुक्केसु अंतेसु अवरण्हकाले दिट्ठो सुविणो त्ति बूया।

१ वा कंसिं वा हं॰ त॰ ॥ २ वा सव्वतं हं॰ त॰ विना ॥ ३ उस्सुयं हं॰ त॰ विना ॥ ४ वा दिट्ठं णं वा हं॰ त॰ ॥ ५ पसंतेसु हं॰ त॰ ॥ ६ कण्हप॰ हं॰ त॰ ॥ ७ ॰व्वत्रण्ण॰ हं॰ त॰ ॥ ८ ॰रवि सस्सेसु सव्व॰ हं॰ त॰ ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ १० सप्पभा॰ हं॰ त॰ ॥ ११ मज्झवि॰ सि॰ ॥ १२ मज्झिमगा॰ हं॰ त॰ ॥

एवं पक्खोपलद्धीहिं सुक्कपक्ख-कण्हपक्खा उवलद्धव्वा भवंति जधा पुव्वमुद्दिट्ठं[1] । उतुउपलद्धीहिं उदू उपलद्धव्वा छप्पि भवंति जधा पुव्वमुवदिट्ठं[2] । एवं सव्वाहिं आमास-सद्द-रूव-रस-गंध-फासपडिरूवोवलद्धीहिं आधारयितुं सुविणे सव्वत्ताणुगंतव्वं[3] भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय सुविणो णामाज्झायो वायालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४२ ॥ छ ॥

[तेयालीसइमो पवासज्झाओ]

णमो भगवंतो[4] जसवओ महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामाज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि पवासो णत्थि पवासो त्ति पुव्वमाहारियव्वं भवति । तत्थ धज्झामासे चलामासे सव्वणीहारगते सव्वेमोक्खगते[5] उवाहण-छत्तगते[6] सव्ववाहणगते सव्वजाणगते पत्थित-पधित-पधावितसव्वचतुप्पद-पक्खि-सिरीसिव-वारिचर-कीड-किविल्लगगते उवाहणआवंधणे छत्तकग्गहणे[7] तप्पण-कत्तरिका-कुंडि-कुक्खलिकापादुब्भावे पंथ-पवा-णदी-पव्वत-तलाग-गाम-णगर-जणपद-पट्टण[8]-सन्निवेसे असमरंगावचर-पासंड-दूतपरिधावके एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे अत्थि पवासो त्ति बूया । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे सव्वआहारगते सव्वसंवाधगते सव्वत्थावरगते सव्वणिवेसितगते[9] सव्वअपरिधावकगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि पवासो त्ति बूया । तत्थ पाद-जंघ-पादुकोपाणह-च्छत्तकएवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे पादेहिं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । तत्थ उद्धंभागेसु चलेसु सव्वजाणगते सव्ववाहणगते सव्वजाण-वाहणोपगरणगते जाणेण[10] वा वाहणेण वा पवासं गमिस्सति त्ति बूया । तत्थ मुदिएसु मुदितमाणसो पवासं गमिस्सति त्ति बूया ।

तत्थ पवासे पुव्वाधारिए दीहेसु दीहं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । ☞ रस्सेसु[11] रस्सपवासं गमिस्सति त्ति बूया । ☜ पुण्णामेसु राजपोरुसेण पवासं गमिस्सति त्ति बूया । थीणामेसु थीपवासे लभिस्सति त्ति बूया । ◁ णपुंसकेसु[12] णिरत्थकं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । ▷ दढेसु तत्थेव गंतुं वाहिसि त्ति बूया । चलेसु खिप्पं पवासा आगमिस्सति त्ति बूया । ☞ [13]विविधे चलामासे परेण परं गमिस्ससि त्ति बूया । ☜ सुक्केसु पवासे महंतं धणखंधं लभिस्सति त्ति बूया । रत्तेसु पीतकेसु वा दढेसु सुवण्णलाभं पवासे लभिस्सति त्ति बूया । कण्हेसु परिकिलेसं पवासे णिप्फलं पाविस्ससि त्ति बूया । आहारेसु कतकज्जो खिप्पं आगमिस्ससि त्ति बूया । णीहारेसु अकतकज्जो चिरा आगमिस्सति त्ति बूया । थूलेसु णिव्वाधिको पच्छत्तो[14] पवासा आगमिस्ससि त्ति बूया । कसेसु वाधिपरिकिट्ठो किसच्छादणो पवासा आगमिस्ससि त्ति बूया । गहणेसु अरण्णदेसं गमिस्ससि त्ति बूया । उपग्गहणेसु आरामबहुलं रमणीयं देसं गमिस्ससि त्ति बूया । आगासेसु रमणीयदेसं णिरुक्खगं[15] गमिस्ससि त्ति बूया । परिमंडलेसु णगरं गमिस्ससि त्ति बूया । वणूसु जणपदं गमिस्ससि त्ति बूया । मतेसु पवासे मरिस्ससि त्ति बूया । उव्वहुते[16] पवासे उवद्दवं पाविस्सति त्ति बूया । वंधेसु वंधं पाविस्ससि त्ति बूया । मोक्खेसु पवासो[17] असंगो भविस्सति त्ति बूया, पंथं खेमं गमिस्सति त्ति बूया । पसण्णेसु पवासे

---

१ पुव्वदिट्ठं हं० त० ॥ २ पुव्वदिट्ठं हं० त० विना ॥ ३ सव्वमणु° हं० त० ॥ ४ °वतो महावीरमहा° सं ३ पु० ॥ ५ °व्वसोक्ख° हं० त० विना ॥ ६ °गते वाहणछत्तगते सव्व° हं० त० विना ॥ ७ °हणे घयाणकोत्त° हं० त० ॥ ८ °पट्टण-रज्ज-रट्ठपमुहट्ठाणेसु परिधा° सि० ॥ ९ °व्वणिवेसगते हं० त० ॥ १० जाण-वाहणपवासं हं० त० विना ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ १२ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ १४ पच्छण्णो प° हं० त० ॥ १५ णिरुक्खमं ग° हं० त० विना ॥ १६ हं० त० विनाऽन्यत्र—°हुते हा........ ...वंधेसु सं ३ पु० । °हुते हाणिं गमिस्सति त्ति सव्वया बूया वंधेसु सि० ॥ १७ पवासासंगो हं० त० विना ॥

मित्तं पाविस्ससि त्ति बूया। अप्पसण्णेसु पवासे विग्गहं वा विवादं या पाविस्सति त्ति बूया। उद्धंभागेसु मूलेसु य पव्व[य]बहुलं देसं वेहायसं गमिस्ससि त्ति बूया। अवेद्धिमे णिण्णेसु य णिण्णं देसं अडवीबहुलं गमिस्ससि त्ति बूया। तुच्छेसु पवासे उड्डुज्झिहिसि त्ति बूया। पुण्णेसु पवासे परस्स हरितं घणं पाविस्ससि त्ति बूया। आपुणेयेसु पवासे अंतरा अधिवसिस्सति त्ति बूया। अग्गेयेसु पवासे आलीवणकं पाविस्ससि त्ति बूया। वायव्वेसु पवासे वाउव्वातिकं पाविस्ससि त्ति बूया। जण्णेयेसु उस्सयं पाविस्ससि त्ति बूया, जिण्णुववहुलं चेव देसं गमिस्ससि त्ति बूया। सद्देयेसु विस्सुयजणपदं गीत-वाइत्तवहुलं गमिस्ससि त्ति बूया। दंसणीयेसु बहुजणाभिप्पेतं दंसणीयजणपदं गमिस्ससि त्ति बूया। गंधेयेसु गंधुपयोग-गंधोपभोगवहुलं जणपदं गमिस्ससि त्ति बूया। रसेयेसु विविधपाधेज्ज-बहुअण्ण-पाण-रसिगपरिभोगं देसं गमिस्ससि त्ति बूया। फासेज्जेसु जाणगतो वाहणगतो वा उदुसुखं उदुसुहफासं देसं गमिस्ससि त्ति बूया। मणेयेसु णिव्वुतमणसो अभिज्झियणिव्वुतव[हु]लं देसं गमिस्ससि त्ति बूया। तिण्हेसु अंतरा संगामं पाविस्ससि त्ति बूया। दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति [बूया]। दक्खिणपुरत्थिमेसु गत्तेसु दक्खिणपुरत्थिमायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। ◁ दक्खिणपच्छिमेसु गत्तेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। ▷ पच्छिमउत्तरेसु गत्तेसु पच्छिमुत्तरायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। वामपुरत्थिमेसु गत्तेसु पुव्वुत्तरायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया।

एवं सव्वदिसाओ आधारयितुं उवलद्धव्वाओ भवंति। जधाकालकालोपलद्धीहिं आधारयितुं कालो पवासे विण्णेयो भवति। जधा लाभा-ऽलाभे जीवित-मरणे सुह-दुक्खे सुकाल-दुक्काल-भया-ऽभयादी य भावा आगास-सद्द-पडिरूव-रस-गंध-फासउवलद्धीहिं ☞ आहारयितुं जहुत्ताहि उवलद्धीहिं ☜ पवासे सव्वे उवलद्धव्वा भवंति॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामाज्झायो तेयालीसइमो सम्मत्तो॥ ४३॥ छ॥

[चउयालीसइमो पवासद्धकालज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महावीरवद्धमाणस्स। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासस्स अद्धाकालं णामाज्झायं। तं खलु भो! वक्खायिस्सामि। तं जधा—

तत्थ पुरत्थिमायं दिसायं अव्वत्तसद्द-रूवे वा अद्धमासे वा पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। दक्खिणायं दिसायं अव्वत्ते वा सद्दे वा रूवे वा पक्खगणणायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। अव्वत्तेसु सद्द-रूवेसु दिवसगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। पच्छिमायं दिसायं अव्वत्तेसु सद्द-रूवपाउब्भावेसु वस्सगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति [बूया]। अव्वत्तेसु सद्द-रूवपादुब्भावेसु मासगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। वामं (उत्तरायं) दिसायं अव्वत्तसद्द-रूव पादुब्भावे वस्सगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। अव्वत्तेसु सद्द-रूवपादुब्भावेसु मासगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। एएसु चेव एक्कवीसाय मासाणं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया।

तत्थ आहारनीहारेसु आगम्म पडिगमिस्ससि त्ति बूया। अणूसु गाउयं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। साधारणे य अद्धजोयणं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया। अब्भंतरेसु इस्सरो रायब्भंतरो पवासो त्ति बूया। अब्भंतरब्भंतरेसु देसब्भंतरो पवासो त्ति बूया। बाहिरब्भंतरेसु थणंतरं रज्जंतरं गमिस्ससि त्ति बूया। बाहिरेसु रज्जंतरं गमिस्ससि त्ति बूया। बाहिरबाहिरेसु अस्सुयं गमिस्ससि त्ति बूया। पुधूसु जणपदं गमिस्ससि त्ति। परिमंडले णगरं गमिस्ससि त्ति। थाव-

१ °सु थूलेसु य बहुलदेसं हं० त० विना॥ २ अधिणिण्णे° हं० त० विना॥ ३ °बहुयं हं० त० विना॥ ४ पवासेसु उडुज्झि° हं० त० विना॥ ५ जित्तुव° सं ३ पु०॥ ६ °सु ठाणगतो हं० त०॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ ८ आगास° हं० त०॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ १० पुरिमायं सि०॥ ११-१२ °सु समाग° हं० त० विना॥ १३ अट्ठजो° हं० त०॥ १४ °स्सरे रा° हं० त० विना॥ १५ °तरे प° हं० त० विना॥ १६ अस्सुतिं ग° हं० त० विना॥

रेसु पट्टणाणि गमिस्ससि त्ति बूया । इहरत्थावरेसु खेडाणि गमिस्ससि त्ति । चलेसु खंधावारं गमिस्ससि त्ति । इहर-चलेसु गामं गमिस्ससि त्ति बूया । इस्सरेसु रण्णो मूलं गमिस्ससि त्ति बूया । उवउत्तमेसु अमच्चस्स मूलं गमिस्ससि त्ति । पुण्णामधेज्जेसु रायपुरिससकासं गमिस्ससि त्ति । दढेसु [1]संसट्ठेसु ववहारं गमिस्ससि त्ति बूया । अब्भंतरेसु अप्पणो अत्थेण पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । बाहिरेसु परस्स अत्थेण पवासं गमिस्ससि त्ति । बाहिरब्भंतरेसु मित्तस्स अत्थेण पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । बाहिरबाहिरेसु णेव अप्पणो णेव परस्स ◁ अत्थेणं पवासं गमिस्स ▷ सि 5 त्ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासज्झायस्स वि अद्धाकालं णामज्झायो चउयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४४ ॥ छ ॥

[पणयालीसइमो पवेसज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगवि- 10 ज्जाय पवेसं णामाज्झातं तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा—अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधे-ज्जामासे उम्मट्ठे उल्लोगिते अभिगहिते भुत्ते पीते खइते लीढे कण्णवेल्लअब्भंगणे हरिताल-हिंगुलुक-मणसिला-अंजण-समालभणकगते अलत्तक-कलंजक-वण्णक-चुण्णग-अंगरागगते उरसिघण-मक्खण-ऽब्भंगे [ण]-उच्छंदण-उव्वट्टण-पघंस-[ण]-ण्हाण-पधोवण-पव्वासेण-अणुलेवण-विसेसकायधूमाधिवाससंजोयणपाडुभावेसु परिधाण-उत्तरासंग-सोणिसुत्त-वर-मल्ल-सुरभिजोगसंविधाणक-आभरणविविधभूसणसंजोयणासु अलंकारमंडणासु य सद्द-रूवेसु य एवंविवेसु पुच्छेज्ज 15 आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ सिविका-रथ-जाण-जुग्ग-कट्ठमुह-गिल्लि-संदण-सकड-सकडि-याहिज्जविविधअधिरोह-णासु हय-गाज-बलिवद्द-करभ-अस्सतर-खर-अयेलक-णर-मरुत-हरित-महिरुह-पासाद-विमाण-सयणाधिरोधणासु धय-तोरण-गोपुर-ऽट्टालग-पतागासु समारोधण-समुस्सवणे वा पुच्छेज्ज आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ हत्थसमाणयणे सव्वं-गसमाणयणे य आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ दुद्ध-दधि-सप्पि-णवणीत-तेल्ल-गुल-लवण-मधु-मच्छ-मंस-[2]सव्वमेद-समामासे आगमो भविस्सतीति । तत्थ पुढवि-दग-अग्गि-वायु-पुप्फ-धण्ण-त्री [3] य-सव्वरयणदव्वसमाधिअणे[4] आगमो 20 भविस्सतीति बूया । तत्थ अंकुर-परोह-पत्त-किसलय-पवाल-तण-कट्ठ-लेट्ठुक-सक्कर-उपल-विविहसत्थ-सत्थाभरणोउपकरणग-रुविअलोह-मणिसुत्त-रयत-चैरसमावण्णेसु चेव आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ उक्खुलि-पिट्ठरग-दविउलंक-रसदव्वीसु य छत्तोपाणह-पाउग-उब्भुभंड-उभिलणफणखपसाणगकुव्वट्टं [5] वणपेलिका-विवट्टणग-अञ्जणी-पसाणग-आदंसग-सरगं-पतिभोयण-वाधुज्जोपकरण-मालागते वा उवसक्किते वा [8]उववसिते वा आवद्धे वा माला-ऽलंकारभूसणे वा[9] पवसिते वा परिहिते वा पाउते वा [10]अच्छादणे वा पुच्छिज्जमाणे वा अभिमुहे वा [11]आलिंगिते वा उवणीए वा एतेसिं वा एवमादीणं 25 पडिपोग्गलाणं संपदग्गहणे पुच्छिज्जमाणे आधारिज्जमाणे वा एवंविघसद्दरूवपाडुब्भावे आगमो भविस्सतीति बूया ।

तत्थ अब्भंतरेसु य सज्जीवेसु य सज्जीवं पवेक्खति त्ति बूया । तत्थ बज्झेसु सव्वअज्जीवेसु य अज्जीवं पवेक्खति त्ति बूया । तत्थ सज्जीवेसु पुव्वाधारिते सज्जीवं तिविवमाधारये—दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणियं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु भिंगार-छत्त-पतागा-ओवह[12]त्थपाणियपाडुब्भावे चेव दिव्वं पवेक्खति त्ति बूया । तत्थ उज्जुकामासे समभागेसु सव्वमणुस्सगते य माणुसं पवेक्खति त्ति । तत्थ तिरियामासे सव्वतिरिक्खगते य तिरिक्खजोणियं पवेक्खति त्ति 30

---

१ रत्तेसु गंधा° हं० त० ॥ २ सम्मूढेसु सि० ॥ ३ °गउच्छवण° हं० त० ॥ ४ °हिण्णवणा° हं० त० ॥ ५ °सव्वमेद° हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ °गरेति° हं० त० विना ॥ ८ वा पवेसिते हं० त० ॥ ९ वा पावासिए वा हं० त० ॥ १० अच्छोदणे हं० त० विना ॥ ११ आगच्छन्ते वा हं० त० ॥ १२ °त्थप-हाणिय° हं० त० ॥

धूया। तत्थ पुण्णामधेज्जाभासे दक्खिणाभासे सव्वपुरिसगते य पुरिसो पवेक्खति त्ति। पुण्णामे पुव्वाधारिए पुण्णा[मा]दि-
पाउब्भावेहि पुरिमा समणुगंतव्वा भवंति। पुण्णामेसु उत्तमेसु गुरुजोणिं पवेक्खति त्ति, समभागेसु तुल्लजोणी
पवेक्खति त्ति बूया, पच्चवरकायेसु बालजोणिं पवेक्खति त्ति बूया। पाद-जंघसव्वपेस्सगते सव्वपेस्सोवकरणे पेस्सो
पवेक्खति त्ति। तत्थ वण्णे पुव्वाधारिते उदाते उदातो पवेक्खति त्ति, काले कालो, सामे सामो, थूले थूलो, किसे
5 किसो, दीहे दीहो, रस्से रस्सो। अब्भंतरेसु सकं, बाहिरेसु परकं। बंभेज्जेसु ⌐ खत्तेज्जेसु ⌐ वेस्सेज्जेसु सुद्देज्जेसु य बंभण-
खत्तिय-वेस्स-सुद्दजोणीयो वत्तव्वातो। पुरिसे पुव्वाधारिते पुण्णामेसु पुरिसो पवेक्खति त्ति, थीणामेसु थी पवेक्खति,
णपुंसकेसु नपुंसकं पवेक्खति त्ति बूया। तत्थ चतुरस्सेसु सव्वचतुप्पदपादुब्भावे य चतुप्पदपडिरूव-सद्दरसपादुब्भावेसु
चेव चतुप्पदं पवेक्खति त्ति। दीहेसु कण्हेसु य सव्वपरिसप्पगए य परिसप्पपडिरूवपाउब्भावे य परिसप्पं पवेक्खति
त्ति बूया। चलेसु उद्धंभागेसु सव्वपक्खिगए पक्खिपडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव पक्खिं पवेक्खति त्ति। आपुणेयेसु
10 चलेसु य सव्वजलयरपडिरूवपादुब्भावेसु जलयरं पवेक्खति त्ति बूया। परिमंडलेसु भायणं पवेक्खति त्ति, ☞ तेणू-
[सु]वत्थं पवेक्खति त्ति, ☜ चतुरस्सेसु चित्तेसु सारवंतेसु य काहावणे पवेक्खति त्ति। रत्तेसु पीतेसु य सारवंतेसु
सुवण्णकं पवेक्खति त्ति, सेतेसु सारवंतेसु य रुप्पं पवेक्खति त्ति, सुकेसु अणग्गेयेसु सीतलेसु मुत्ता पवेक्खति त्ति
बूया। घणेसु सारवंतेसु सव्वप्पभागते य मणी पवेक्खति त्ति। णिस्सितेसु संरत्तेसु सव्वप्पभागते य वारमणी पवे-
क्खति त्ति बूया। घट्टेसु सव्वमणिगतं सकेहिं वण्णेहिं विण्णायं भवतीति। कोट्टिते सव्वलोहगतं पवेक्खति त्ति।
15 णिद्धेसु सव्वपाणं पवेक्खति त्ति। पुण्णेसु आहारं पवेक्खति त्ति। ☞ चिण्हेसु सत्थं पवेक्खति त्ति। तिण्हेसु सत्थं
पवेक्खति त्ति। ☜ अंतेसु उवकरणं पवेक्खति त्ति। थीणामेसु बज्झसाधारणेसु ण्हुसं पवेक्खति त्ति। पुण्णामेसु
णीहारेसु य परब्भावयिता पवेक्खति त्ति। थीणामेसु णीहारेसु य विधवा पवेक्खति त्ति बूया। थीणामेसु अप्पसण्णेसु
विधवा पवेक्खति त्ति। थीणामेसु दढेसु कण्णा पवेक्खति त्ति बूया। थीणामेसु चलेसु जुवती पवेक्खति त्ति। थीणामेसु
चलेसु मुदितेसु य पवियाता पवेक्खति त्ति। थीणा[मा]भासे ☞ विधामासे ☜ वेस्सा पवेक्खति त्ति। थीणामेसु
20 णिद्धेसु भगा पवेक्खति त्ति। लुक्खेसु निरागमा पवेक्खति त्ति, कण्हेसु असारा पवेक्खति त्ति बूया। मतेसु अणाधा
पवेक्खति त्ति। पसण्णेसु मुदिता पवेक्खति त्ति। कण्णेयेसु सुतीसीलसमायारा कण्णा पवेक्खति त्ति। सद्देयेसु विस्सु-
तकुल-घरा-ऽऽयासा पवेक्खति त्ति। दंसणीयेसु पतिरूवा पवेक्खति त्ति। गंधेयेसु गंधवती पवेक्खति त्ति। रसेयेसु रसगुण-
संजुत्ता रमयती पवेक्खति त्ति बूया। फासेयेसु फासवती पवेक्खति त्ति। ☞ मणेयेसु इट्ठा पवेक्खतित्ति। ☜
तत्थ पायासिगमणे पुण्णामधेज्जेसु अपरक्कमेण आगमिस्ससीति। थीणामधेज्जेसु सभज्जो आगमिस्ससि त्ति। नपुंसकेसु
25 निरत्थगो आगमिस्ससि त्ति बूया। दढेसु णेव्वाणिं आगमेस्ससि त्ति। जलेसु खिप्पं आगमिस्ससि त्ति। णिद्धेसु कत-
भोगो आगमिस्ससि त्ति बूया। लुक्खेसु निरागमो आगमिस्ससि त्ति बूया। सुवेसु सधणो आगमिस्ससि त्ति।
गामेसु सुहं आगमिस्ससि त्ति बूया। पंजेसु बहुअंतरायो आगमिस्ससि त्ति बूया। आहारेसु आयबहुलो आगमिस्स-
सि त्ति। णीहारेसु हितसारो आगमिस्ससि त्ति बूया। मतेसु आगतमंतो मरिस्सति त्ति। तुच्छेसु आगतमत्तो वाधिं
पाविस्सति त्ति। पुण्णेसु सया जोगो आगमिस्सति त्ति बूया, आगमं वा वि आयं पाविस्सति त्ति बूया॥

30 ॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामज्झायो
पणयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४५ ॥ छ ॥

---

१ ⌐ ⌐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ °दजोणीया° सि० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ४ विधेहिं विण्णेयं म° हं० त० विना ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ८ निरागमो हं० त० ॥ ९ पक्खेसु हं० त० विना ॥ १० °सु य आदित° हं० त० ॥ ११ °सु य आगममओ म° हं० त० ॥ १२ आगयमओ पा° हं० त० ॥

[छायालीसइमो पवेसणज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवेसो णामाज्झायो । तं जधा—

गिहं पविसतो वा वि जं जं पस्से सुभा-ऽसुभं । सव्वं हितयेण गेण्हित्ता णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ १ ॥
वलिवद्दा यावि अस्सा वा उट्टा वा गद्दभा वि वा । सुओ मदणसलाका वा कवी मोरा व दिस्सते ॥ २ ॥
एताणि कोट्ठये दिस्स अंगणं पविसे ततो । अणाइलो असंदिद्धो दिट्ठीसु य समाहितो ॥ ३ ॥
वंभत्थलम्मि यं पस्से जं वा पस्से अरंजरे । उव्वरे वा उवट्ठाणे आसणगहणे तधा ॥ ४ ॥
उदुक्खलस्स सालायं कवाडे दारकण्णये । आसणस्स य दिण्णस्स अंजलीकरणम्मि य ॥ ५ ॥
महाणसम्मि जं पस्से भत्ताकारीय घा पुणो । तत्थ भत्तघरे वा वि जे य वत्थुस्स णिक्कुडा ॥ ६ ॥
ओकड्ढितम्मि णेवम्मि ओभग्गे ओपणिव्वए । वाहिरत्थस्स वायत्तिं अंगवी इति लक्खए ॥ ७ ॥
फंवासु विप्पमुक्कासु ओसरिता मक्कडा जति । वियडे उत्तमाकारे कुलभंगं वियागरे ॥ ८ ॥
वेदणं या सिएणिएहिं दास-कम्मकरेहि या । अणेव्वाणी य अत्थेहि णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ९ ॥
दधि-मंगल-पुप्फ-फलं अक्खते सारतंदुले । विदू सम्मज्जिते दिट्ठा वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ १० ॥
तुसेहिं वा समोखिण्णं पंसुएण व दिस्सति । अंगारच्छारिओखिण्णं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ११ ॥
अध रुक्खम्मि भग्गम्मि अधवा जज्जरीकते । विमुकेसु य संधीसु कुलभंगं वियागरे ॥ १२ ॥
दारुवण्णकसंपाते संधी जस्स चलाचला । अणेव्वाणिं कुडुंबस्स अत्थं या वि चलाचलं ॥ १३ ॥
पुरिसस्स दक्खिणे पासे थिया वामे पवेदये । खंडिते पडिते भिण्णे पडिरूवेण णिद्दिसे ॥ १४ ॥
संधिम्मि विप्पमुक्कम्मि भग्गे वा उत्तरुंवरे । जमत्थमभिकंखेज्ज तमत्थं हीणमादिसे ॥ १५ ॥
उग्घाडो वा कवाडं वा दारं समणुवत्तति । दुक्खेण अंजितो अत्थो सव्वो होति णिरत्थयो ॥ १६ ॥
अधरुत्तरुम्मिरे यावि ओभग्गे विप्पकड्ढिते । वंसवण्णकसंपाते गिहे धूया अणिव्वुतिं ॥ १७ ॥
सव्वतो विप्पमुक्कम्मि ओभग्गे एकपस्सिते । कुडुंविणो अणेव्वाणिं अत्थहाणिं च निद्दिसे ॥ १८ ॥
तिलवेल्लववाका वा कोट्ठते होंति अच्छुया । पिवीलिया या दिस्संति वाधिं तत्थ वियागरे ॥ १९ ॥
एलओ कोट्ठए वद्धो वाहरे विगतं जया । अकारणे विरत्तम्मि कुडुंवे भयमादिसे ॥ २० ॥
अस्सो कोट्ठए वद्धो कडुं मुयति पच्छतो । णिघंसते णिडालं वा कुडुंवं स विणस्सति ॥ २१ ॥
पक्खी य कोट्ठए जत्थ लूणपक्खोऽत्थ दिस्सति । दासा णिगलवद्धा वा हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २२ ॥
उदग्गा दिस्सते पक्खि मोदंताणि दढं ति य । उदग्गत्थपुमंसा य वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २३ ॥
एताणि कोट्ठए दिस्स पविट्ठो अंगणम्मि वि । अणाइलो असंदिद्धो ततो पेक्खेज्ज लक्खणं ॥ २४ ॥
विदं (विदू) सम्मज्जितं दिस्स चक्खुस्सं च वियाणिया । कतं पुप्फोवयारं च वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २५ ॥
दारका जति दिस्संति पलोट्टा धरणीतले । मुत्तं पुरीसमोगाढा हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २६ ॥
दारका जति दिस्संति अलंकित-विभूसिया । हिट्ठा तुट्ठा पमोदंता वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २७ ॥

---

१ असंविट्ठो हं० त० ॥ २ °सणे ग° सि० ॥ ३ दारकामए हं० त० ॥ ४ णिक्खुडा हं० त० ॥ ५ उक्कट्ठितम्मि हं० त० ॥ ६ °का जिया (जया) हं० त० ॥ ७ °स्स दत्थं हं० त० ॥ ८ उत्तरस्सरे हं० त० ॥ ९ दीण° हं० त० विना ॥ १० आघितो हं० त० विना ॥ ११ °कट्टिते हं० त० ॥ १२ दारुयण्ण° हं० त० विना ॥ १३ अट्टुता हं० त० विना ॥ १४ कुट्ठओलद्धो हं० त० ॥ १५ ददंति हं० त० विना ॥ १६ विट्ठस्सम्म° हं० त० विना ॥

अंगणे जत्थ पस्सेज्ज वैण्णं पुप्फ-फलाणि वा । णिग्गिज्जमाणं णीहारं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २८ ॥
अंगणे जत्थ पस्सेज्ज वैण्णं पुप्फ-फलाणि वा । ³अंतणिज्जमाणं आहारं वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २९ ॥
अंगणे जत्थ पासेज्ज ⁴रोदंतो वज्झतोमुहं । परिदेवमाणं कलुणं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ३० ॥
अंगणे जत्थ पासेज्ज रममाणं अभिमुहं । उदग्गवेसं मुदितं वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ ३१ ॥
अंगणे जत्थ पासेज्ज छिज्जमाणे य गंतए । मइले विवण्ण-वियले हाणिं सोयं च णिद्दिसे ॥ ३२ ॥
अंगणे जत्थ पासेज्ज सुक्किले कंबले सुयि । वासिते य मणुण्णे य वद्धिं लाभं च णिद्दिसे ॥ ३३ ॥
भायणाणि य भिण्णाणि अंगणे जत्थ दिस्सते । पल्लोट्टिताणि तुच्छाणि हाणिं रोगं च णिद्दिसे ॥ ३४ ॥
भायणाणि य दिस्संति पडिपुण्णाणि अंगणे । चक्खुसाणि अरंडाणि आयं लाभं च णिद्दिसे ॥ ३५ ॥
अंगणे जत्थ दीसंति ⁵पोत्ती णंतकविक्खला । आसंदका य संभग्गा हाणिं रोगं च णिद्दिसे ॥ ३६ ॥
पविट्ठो अंगणं साधु पस्सेज्ज परन्धारिओ । अलंकिते सुयी हिट्ठे संपीति-लाममादिसे ॥ ३७ ॥
अंगणे जति दीसेज्ज खिज्जंतं रोसगं नरं । पुव्वं जो अंजिओ अत्थो सव्वो तम्मि विणस्सति ॥ ३८ ॥
फला तु उक्कडरसा अंगणे जति दिस्सति । पुण्णामा य मणुण्णा य कुडुंबी घरिणिं जिया ॥ ३९ ॥
फला व उक्कडरसा अंगणे जति दीसति । थीणामा य मणुण्णा य कुडुंबी(विं) घरिणी जये ॥ ४० ॥
पुण्णामधेज्जा छिज्जंते भिज्जंते य फला जति । धाडा तत्थ विवज्जंते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४१ ॥
थीणामा जति छिज्जंते पवालाणि फलाणि वा । दारियाओ विवज्जंते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४२ ॥
समणो बंभणो वा वि गेहे जस्स पलायति । उप्पायं तारिसं दिस्स हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ४३ ॥
पुण्णो अरंजरो जस्स विवज्जेज्ज अणाहतो । कुडुंबस्स विणासाय णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ४४ ॥
तुच्छो अरंजरो जत्थ विवज्जेज्ज अणाहतो । कुडुंबिणो विणासाय णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ४५ ॥
काणा अरंजरे पवरे मुग्गरा वा चारभत्तिया । घरिणी तत्थ कुडुंबस्स जणेण परिमुच्चति ॥ ४६ ॥
चलिओ अरंजरो जत्थ दुव्वला जस्स पेढिया । पुरिसस्स पुण्णं जाणेज्ज अप्पपुण्णा कुडुंबिणी ॥ ४७ ॥
चलिया पेढिया जत्थ दुव्वलो य अरंजरो । घरिणीय पुण्णं जाणेज्जा अप्पपुण्णो कुडुंबिओ ॥ ४८ ॥
थंभत्थलम्मि भिण्णम्मि णामं जाणं कुडुंबिणो । पियविप्पयोग-मरणं अत्थहाणिं च णिद्दिसे ॥ ४९ ॥
समगम्म आसणे दिण्णे कीलिट्टे अत्थुते पडे । कुडुंबियस्स संपत्ती सह भारियाए णिद्दिसे ॥ ५० ॥
समगम्म आसणे दिण्णे सुक्किले अत्थुते पडे । कुडुंबियस्स संपत्ती सह भत्ताए णिद्दिसे ॥ ५१ ॥
अधवा भग्गगेहम्मि समगो आसणं लभे । ¹¹पेडिउज्झमाणे धूमेण कलहं हाणिं च णिद्दिसे ॥ ५२ ॥
सिद्धमण्णं वियागेज्जो जं जधा जारिसं भवे । [वि]भत्तिं उवधारेत्ता दीणोदत्तेण णिद्दिसे ॥ ५३ ॥
¹²संविग्गमुत्तरयणं सुद्धं विमलं च पत्थिया । थंभणं सुक्कीयं च सुयिमोदणमादिसे ॥ ५४ ॥
चाउरेसु य पण्णेसु पाणिस्सं ओदणं वदे । जो जस्स वण्णपडिरूवो तं तधा अण्ण(अत्थ)मादिसे ॥ ५५ ॥
उसंदुलम्मि कलहं ¹³मुधितो रोगमादिसे । अणेव्वाणि पउत्थम्मि दट्ठे उ.चिंतसंसयं ॥ ५६ ॥
¹⁴कुधितो पूतिको तित्तो कडुं गिद्धो दिवा भवे । कडुए परिहाए य तं विणासाय लक्खणं ॥ ५७ ॥
विवण्णो अप्पगारो वा विच्छिड्डो वा वि ओदणो । कुडुंबिणो विणासाय ओदणेण पवेदये ॥ ५८ ॥
सिथिलकाउ दीसंति सप्पुले वा मते वि वा । मतासु मरणं बूया जीवंतीसु उवद्दवं ॥ ५९ ॥

१-२ वण्णं हं० त० विना ॥ ३ अंतणिज्झमाणं णीहारं हं० त० ॥ ४ रोदमाणो हं० त० विना ॥ ५ पोथीणं कति हं० त० ॥ ६ अप्पिओ भावो हं० त० विना ॥ ७ [illegible] हं० त० एव वर्त्तते ॥ ८ उक्कडरसा हं० त० विना ॥ ९ विवज्जेते हं० त० ॥ १० [illegible] हं० त० नास्ति ॥ ११ पडिउज्झ° हं० त० विना ॥ १२ संविग्गमनुत्त° हं० त० ॥ १३ °धाणं तु° हं० त० ॥ १४ कुहितो हं० त० ॥

केसे दिट्ठे परिकेसं सक्काराय उवद्दवं । पराजयमसक्कारं कंडगम्मि वियागरे ॥ ६० ॥
सुत्ते पसारिते दिट्ठे अट्ठाणंतेण णिद्दिसे । तमेव सुत्तं पलिमूढे बंधणंतेण णिद्दिसे ॥ ६१ ॥
तणं च जति दिस्सेज्ज कुडुंबे जं समीहती । सव्वं णिरत्थकं भवति जति सुक्खं ओदणं भवे ॥ ६२ ॥
जवणीयं च पुच्छेज्ज पहसंती परम्मुही । वेधव्वं सा लभित्ताणं पच्छा रूवेण जीवति ॥ ६३ ॥
जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अभिम्मुही । वत्थे या वि पलिमूढा पुण्णेज्ज पवडेज्ज वा ॥ ६४ ॥ 5
कुडुंबिणो असंपत्ती तिस्से धीया पवेदये । अब्भंतरेण पक्खस्से बंधणे सा विरुब्भति ॥ ६५ ॥
जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अभिम्मुही । संधितं अंजलिं कुज्जा णिव्वुतिं तत्थ णिद्दिसे ॥ ६६ ॥
दक्खिणे पुत्तलाभाय [4]धिती लाभं च वामतो । सक्कारे सुहभागी य असक्कारे अणेव्वुतिं ॥ ६७ ॥
संखिप्पे वा खिवे[5] हत्थे पुव्वं भागी वियागरे । विखिप्प संखिवे हत्थे पच्छा भद्दं वियागरे ॥ ६८ ॥
[6]उज्जुयं अंजलिं कुज्जा विपुला अत्थ संपदा । विणतं अंजलिं कुज्जा अत्थहाणिं वियागरे ॥ ६९ ॥ 10
अंतो महाणसे सेसं साकं सूवोदणं दधिं । तब्भावपडिरूवेणं अंगवी उवलक्खये ॥ ७० ॥
दद्धं च अंगमामसति तिधा [7]उट्ठाय आमसे । अभिमुही य भणति अण्णमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७१ ॥
उल्लोयिते उम्मट्ठे आणिते उवणामिते । हितयोदराणं आमासे अण्णमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७२ ॥
चले चलं अंगमामसति बाहिराणि [8]णिसेयति । णिम्मट्ठेसु य गत्तेसु अण्णं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७३ ॥
रित्तकाणि पदिस्संति भायणाणि समंततो । पलोट्टिताणि भिण्णाणि अण्णं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७४ ॥ 15
तंदुले य पदिस्संति पणालीय गलेज्ज य । परिमज्जकं च दट्ठूणं अत्थि मज्जं ति णिद्दिसे ॥ ७५ ॥
पसुत्ता जति दीसंति मोरा वट्टक-लावका । तेसिं रुता-ऽरुतं सोधा सागुणामऽभिणिद्दिसे ॥ ७६ ॥
ओसुद्धे णिट्ठुते छुद्धे णिसुद्धे [10]धंसिते धुते । कलहं व [11]दिट्ठो बालाणं मंसमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७७ ॥
रित्तकाणि पदीसंति [12]घंड-कुड-अरंजरा । पलोट्टिता य भिण्णा [13]य णत्थि मज्जं ति णिद्दिसे ॥ ७८ ॥
जलयरेसु य सत्तेसु जलपस्संदणेसु य । उदकेसु य भंडेसु मच्छमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७९ ॥ 20
दब्भे कुसे य दट्ठूणं अद्दपुप्फ-फलाणि य । हरितंकुर-पवालाणि सागं हरितकं वदे ॥ ८० ॥
फलाणि जति दीसंति णिद्धाणि मधुराणि य । दन्तोट्ठ-जिब्भआमासे फल-सागाणि णिद्दिसे ॥ ८१ ॥
यामिस्सोदीरणे वण्णा यामिस्सोदीरणे रसा । यामिस्साणि तु सागाणि णिद्दिसे अंगचिंतओ ॥ ८२ ॥
अत्थि अब्भंतरामासे वज्झामासेसु णत्थि य । आमाससंजोगविधिं अंगवी इति लक्खये ॥ ८३ ॥
मच्छमाणं दट्ठूणं तक्कमच्छंविलं तधा । परिकिण्णसद्देसु तधा दव्वम्मि रसकं वदे ॥ ८४ ॥ 25
समणं पत्थितं संतं णिग्गतं वज्झतोमुहं । जो ठवेतूण पुच्छेज्ज अप्पसत्थं पवेदये ॥ ८५ ॥
पवेट्ठुकामं पुच्छेज्ज अत्थि आगमणं धुवं । णिग्गंतुकामं पुच्छेज्ज पवासा णिग्गमं वदे ॥ ८६ ॥
कोट्ठकम्मि व पुच्छेज्ज वज्झत्थं तं पवेदये । सक्कारेण य पुच्छंते अत्थि अत्थो त्ति णिद्दिसे ॥ ८७ ॥
तं चेव अत्थं पुच्छेज्ज असक्कारेण अंगविं । जाणे असुभं अत्थं बाहिरं अंगचिंतको ॥ ८८ ॥
समणं पज्जुवासंतो अंतो वा जति वा बहिं । महिला होंति असम्मूढा पुरिसा तत्थ वट्टंति ॥ ८९ ॥ 30
समणं पज्जुवासंतो अंतो वा जति वा बहिं । पुरिसा होंति असम्मूढा इत्थिओ तत्थ वट्टंति ॥ ९० ॥
पेम्मं रागं च दोसं च अवणेत्ता वियक्खणो । आधारयित्ता अंगेणं अंगविं अभिणिद्दिसे ॥ ९१ ॥ छ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवेसणो णामाज्झायो
[14]छट्टुचत्तालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४६ ॥ छ ॥

---

१ अभिमुही हं० त० ॥ २ °स्स बंधणे सा विरुंभए हं० त० ॥ ३ अभिमुही हं० त० ॥ ४ धिती धामं च वामए हं० त० ॥ ५ °वे सुहत्थि हं० त० विना ॥ ६ अज्झयं हं० त० विना ॥ ७ तहा उट्ठाए हं० त० ॥ ८ णिसेसति हं० त० ॥ ९ गएसु य हं० त० ॥ १० धंसिए धुओ हं० त० ॥ ११ दिट्ठं हं० त० विना ॥ १२ घरकुंड° हं० त० विना ॥ १३ य छिन्नं मज्जं हं० त० ॥ १४ पट्टचत्ता° हं० त० विना ॥

[सीयालीसइमो जत्तज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जत्ता णामज्झायो। तं खलु भो! तमणुवक्खाइस्सामो। तं जधा—अत्थि जत्ता णत्थि जत्त त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तं जधा—अब्भंतरामासे धुवे थिरामासे दढामासे दक्खिणगत्तामासे णपुंसकामासे पच्छिमगत्तामासे उम्मजिते उवकसिते उवट्ठिए आउंढिते संविट्ठे अवसित्ते पल्हत्थियागते छिद्दापिधाणे पिहिते उग्गहिते पचालंबिते पडिरुद्धे पडिसिद्धे पवेसिते विक्खित्ते ठविते ठावयितीए छड्डिते णिकायिते एतेसु आमास-सवण-दंसणपादुब्भावेसु णत्थि जत्त त्ति बूया। तत्थ छत्ते वा भिंगारे वा वियणियं वा तालवेंटे वा सत्थे वा पहरणे वा आयुधे वा आवरणे वा वम्मे वा कवये वा अभिणीयमाणे वा पवेसियमाणे वा णिखिप्पमाणे वा पडिसामिज्जमाणे वा वियाजिज्जमाणे वा विगासिज्जमाणे वा पचालंबिज्जमाणे वा अंयज्जेयमाणे वा णत्थि जत्त त्ति बूया। अब्भंतरम्मुहे एवंपकारये वा जाणे वा वाहणे वा उवगाहणे (उववाहणे) वा ओमुंचणे वा अतिणयणे वा णत्थि जत्त त्ति बूया। सव्वेसु य णत्थिकारसद्दपादुब्भावेसु णत्थि जत्त त्ति बूया। तत्थ चज्झामासे चलामासे चलणामासे वामगत्तामासे पसारितामासे गत्तपंचगओमज्जिते णिम्मज्जिते अवमज्जिते उपविट्ठे उट्ठिते पत्थिते वा णिग्गते वा णिल्लोक्किते वा -- णिल्लोलिते वा -- णिल्लिसिते वा अवसारिते अवसक्किते अपवजाते वा विप्पमुंचणे अपंगुते णिक्कड्डिते णिण्णेते णिक्खिट्टे वा कोसीगते वा गमणलिंगदंसण-सवणपादुब्भावे सज्जीव-णिज्जीवाणं च दव्वाणं एवंविधाकारपादुब्भावे अत्थि जत्त त्ति बूया। तत्थ छत्ते वा भिंगारे वा वीयणीयं वा तालवोंटं वा अब्भुट्ठियते वा णीणिते वा पहरणे वा आयुधे वा आवरणे वा वम्मे वा कवये वा सण्णाहपट्टे वा उंदीरमाणे वा णीणीयमाणे वा णेव वाहिरंतो वा जत्तामुहे वा कज्जमाणे व सज्जे वा मंडिज्जमाणे वा अत्थि जत्त त्ति बूया। तत्थ जाणे वा पवाहणे वा वाहणे वा जुत्ते वा जोयिज्जमाणे वा संसिज्जमाणे वा णिग्गते वा णिज्जायंते वा णिव्वट्टिज्जमाणे वा णिव्वट्टिते वा पादुपाहणाणं वा गहणे आबंधणे वा णिग्गमणे वा आगमणलिंग-सद्दपादुब्भावेसु वा अत्थि जत्त त्ति बूया। विपद-चउप्पद-छप्पद-बहुपद-अपदाणं वा सत्ताणं गमणसंपायसद्द-रूवपादुब्भावे अत्थि जत्त त्ति बूया।

तत्थ पुण्णामधेज्जेसु विजयिका जत्ता भविस्सतीति [बूया]। थीणामधेज्जेसु सम्मोदी जत्ता भविस्सतीति बूया। णपुंसकेसु निरत्थिका जत्ता भविस्सतीति। दढेसु चिरं जत्ता भविस्सतीति। चलेसु ण चिरं जत्ता भविस्सतीति। सुद्धेसु महाफला जत्ता भविस्सतीति बूया। कण्हेसु बहुपरिक्केसा जत्ता भविस्सतीति बूया। सामेसु सुदितेसु य बहुउस्सयसमोया जत्ता भविस्सतीति बूया, अवि य पमादवती जत्ता भविस्सतीति बूया, भुग्गेसु य पभूतऽण्ण-पाणा। बहुसत्त-पेज्जजत्ता भविस्सतीति बूया, धणलंभबहुला यावि जत्ता भविस्सति त्ति। आहारेसु आयबहुला जत्ता भविस्सतीति बूया। णीहारेसु अपायबहुला जत्ता भविस्सतीति बूया। थूलेसु महब्भया जत्ता भविस्सतीति बूया। किसेसु अप्पजोगा जत्ता भविस्सतीति बूया। पुण्णेसु जणपदलंभाय जत्ता भविस्सतीति बूया। परिमंडलेसु णगरलंभाय जत्ता भविस्सतीति बूया। दहरपलेसु गामलंभाय जत्ता भविस्सति। दहरायरेसु खेडलंभाय जत्ता भविस्सति। गहणेसु अरण्णदेसगमगमूयिट्ठा जत्ता भवि-

१ °पवयद° हं० त० ॥ २ °क्खामि सि० ॥ ३ °त्थियप्पे हं० त० ॥ ४ ओविट्ठे हं० त० विना ॥ ५ संधिट्ठे हं० त० ॥ ६ छड्डिंतिम° हं० त० ॥ ७ आहारणे हं० त० ॥ ८ अतिणीयमाणा वा पवारिय° हं० त० ॥ ९ वा विणि° सि० ॥ १० मरस्ले वा च° हं० त० सि० ॥ ११ °तरे मुहे हं० त० ॥ १२ वा ओमुंचणे हं० त० ॥ १३ परिसारितामासे गयपंचग° हं० त० ॥ १४ अपविट्ठे उण्णिते पत्थि° हं० त० विना ॥ १५ -- -- एतन्मध्यवर्ती पाठः हं० त० नास्ति ॥ १६ अपयजाए हं० त० ॥ १७ णिक्कड्डिते सि०। णिक्कड्डिते हं० त० ॥ १८ णिक्कट्ठे हं० त० ॥ १९ °णिणिते वा दंसण° हं० त० विना ॥ २० उव्वीरणमाणे हं० त० ॥ २१ वा णय वाहिरमो जत्ता° हं० त० ॥ २२ सज्जिज्ज° हं० त० ॥ २३ संसिज्ज° हं० त० ॥ २४ णिव्वाडिज्ज° हं० त० ॥ २५ °मणे वा लिंग° हं० त० ॥ २६ °मायपा हं० त० ॥

स्सति । उवग्गहणेसु आरामदेसगमणभूयिट्ठा जत्ता भविस्सति । णिण्णेसु णिण्णदेसभागगमणबहुला जत्ता भविस्सति । बद्ध-रुद्ध-वइतेसु गाम-णगर-सण्णिवेसरोधाय जत्ता भविस्सति । मोक्खेसु मुक्केसु अपंगुतेसु य णगररोधविप्पमोक्खाय जत्ता भविस्सति, णगरं रुद्धं विप्पमुच्चिस्सति त्ति । पसादेसु पसण्णेसु य विजयाय जत्ता भविस्सति त्ति बूया, पसाद-लंभाय जत्ता भविस्सति त्ति । अप्पसण्णेसु अप्पसादेसु य पराजयाय विवादबहुला यावि जत्ता भविस्सति त्ति । णवेसु पच्चुदग्गेसु य णवो अपुव्वो जयो जत्तायं भविस्सति त्ति । अधोभागेसु पराजयो जत्तायं भविस्सति त्ति । ☞ उद्धं- 5 भागेसु वेसिकाविजयाय जत्ता भविस्सति । ☜ मज्झिमेसु सँमागमं[3] उभयतो समेण जत्ता भविस्सति त्ति । विव-द्धीसु चतुप्पद-विपदेसु वाहणागार-सद्द-रूवपादुब्भावेसु य वाहणलाभजुत्ता य जत्ता भविस्सति । जण्णेयेसु बालेयेसु य जाणलाभाय जत्ता भविस्सति । तिक्खेसु सत्थसण्णिवायबहुला जत्ता भविस्सति, संगामबहुला यावि जत्ता भविस्सति त्ति । उवद्दुतेसु उवद्दवबहुला जत्ता भविस्सति । [4]संसयितेसु ससंसयिता जत्ता भविस्सति त्ति । साहाधम्मेसु साहाधम्मप्प-हारबहुला जत्ता भविस्सति । मुदितेसु णिरुवद्दुता जत्ता भविस्सति । अब्भंतरेसु उत्तमेसु य सयं अत्थवतिं जत्तं गमि- 10 स्सति त्ति बूया । बाहिरेसु बाहिरपरियारो भूयिट्ठं अत्थवतिस्स जत्तं गमिस्ससि त्ति । बाहिरब्भंतरेसु बाहिरब्भंतरो भूयिट्ठं अत्थवतिस्स जत्तं गमिस्सति त्ति ।

बाहिरब्भंतरा बाहिरा बाहिरबाहिरा य आमासपादुब्भावा उत्तम-मज्झिम-पच्चवर-साधारणेसु णायका परिवारो य जत्तायं आधारयित्ता सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ णीहारेसु णीहारबहुला जत्ता भविस्सति त्ति । णीहारणीहारेसु अपयाता अब्भुत्थिता णिवत्तिस्सति त्ति । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमं जत्ता भविस्सति । दक्खिणेसु दक्खिणं 15 जत्ता भविस्सति । पच्छिमेसु पच्छिमेण जत्ता भविस्सति । वामेसु उत्तरेण जत्ता भविस्सति । आपुणेयेसु वरिसारत्ते जत्ता भविस्सति त्ति । [5]विसिमेतेसु पसण्णेसु य सरदे जत्ता भविस्सति । संवुतेसु सीतलेसु य हेमंते जत्ता भविस्सति । अलंकितेसु चित्तेसु य सुरभीसु य वसंते जत्ता भविस्सति । अग्गेयेसु [6]उण्हेसु य धिंसुमे जत्ता भविस्सति त्ति । उयणि-द्धेसु बालेसु य पाउसे जत्ता भविस्सति त्ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जत्ताऽज्झायो नाम 20
[7]सीतालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४७ ॥ छ ॥

[अडयालीसइमो जयज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्झायो । तमणुवक्खाइस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि जयो णत्थि जयो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे लद्धामासे [8]◁ पुण्णामासे ▷ मुदितामासे दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे इस्सरामासे [9]उत्तमामासे 25 उद्धंभागामासे पसण्णामासे अणुपद्दुतामासे उम्मज्जिते उह्रोगिते उदत्तेसु सद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे य अत्थि जयो त्ति बूया । तत्थ रण्णं वा रायकुलं वा गणाणं वा णगराणं वा णिगमाणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सन्नि-वेसाणं वा विवद्धीसंपयुत्तासु कहासु उदाहरणोदीरणेसु वा एवमादीणं सद्दाणं अत्थि जयो त्ति बूया । तत्थ उदुकाले उस्सये वा रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वल्लीणं वा पुप्फ-फल-तय-पत्त-पवाल-परोदउदग्गपद्दइसद्द-रूवपादुब्भावेसु पक्खि-चतुप्पद-परिसप्प-जलयराणं [10]मेंदोदग्गसंपयोगे य कधासु वा एवमादीसु पडिरूवेसु वा अत्थि जयो त्ति बूया । तत्थ 30 णव-पुण्ण-अहिणवपुप्फ-फल-पत्त-पवाल-मूल-कंदगतेसु वत्था-ऽऽभरण-भायण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहणपरिच्छद-वत्था-

---

१ पच्चदज्झेसु य हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ समासमं हं० त० सि० ॥ ४ संसंतितेसु हं० त० सि० ॥ ५ विसिमिते° ॥ ६ उण्हेयेसु हं० त० ॥ ७ सत्ताली° हं० त० ॥ ८ ◁ ▷ एत-च्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ उत्तरामासे हं० त० ॥ १० °महोदग्ग° हं० त० ॥

ऽऽभरणोपकरणसमंग-उदत्त-परग्घपादुब्भावेसु चेव अत्थि जयो त्ति बूया । तत्थ धण-धण्णगह-गाम-णगरलद्ध-अधि-
ट्ठितपसुत्त-जातसद्दपादुब्भावेण खंधावारऔंक्खुज्जंतउदग्गविजितणिचयपादुब्भावेण सव्वकज्जारंभपुरिसकारणिव्वेस-
फलपादुब्भावेण अत्थि विजयो त्ति बूया । तत्थ छत्त-भिंगार-ज्झयविअणि-सिविका-रध-पासादसद्द-रूवपादुब्भावेसु
असण-पाण-खाइम-साइमणव-पत्रुदग्ग-मणुन्नपादुब्भावे गाम-णगर-खेड-पट्टणा-ऽऽगर-अंतेपुर-गिह-खेत्त-सण्णिवेससंथा-
5 पणमापणासु आराम-तलाग-सव्वसेतुसंथावणमापण-सन्निवेसेसु एवंविहेसु सद्द-रूवपादुब्भावेसु अत्थि विजयो त्ति बूया ।
एवमादीसु मणुण्णोदत्तेसु अब्भंतरबाहिरेसु आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेसु विजयं बूया । तत्थ वज्झामासे चलामासे कण्हामासे
तुच्छामासे दीहामासे वामामासे णपुंसकामासे पेस्सामासे जघण्णामासे अधोभागामासे अप्पसण्णामासे उड्डयामासे
ओमज्जिते ओलोगिते अणुदत्तेसु य सद्द-रूव-गंध-रस-फासपादुब्भावेसु णत्थि जयो त्ति बूया । तत्थ धण्णं वा रायकुलाणं
वा गणाणं वा देसाणं वा णिगमाणं वा णगराणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सण्णिवेसाणं वा
10 एवमादीणं अण्णेसिं पि हाणीसंपयुत्ता[सु] कधासु णत्थि विजयो त्ति बूया । तत्थ उट्टणं वा मासाणं वा समयाणं वा
रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वल्लीणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा कीड-किविल्लगाणं वा थीणं वा
पुरिसाणं वा उदुकाल-मद-जोव्वण-पहास-पमुदित-वल वीरिय-अतिरत्त-हीणदीणसद्द-रूवपादुब्भावेसु णत्थि विजयो त्ति ।
तत्थ परिदीणोवहुल-धावण्णपुप्फ-फल-पवाल-अंकुर-परोह-पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरणोपकरण-सयणा ऽऽसण-जाण-वाहणपरि-
च्छद-आसार-परिविहल-भिण्ण-जज्जरपादुब्भावेसु एतेसिं वा एवमादीणं दव्वोवकरणाणं विणास-विसंजोयणादिसु सद्द-
15 रूवपादुब्भावेसु णत्थि विजयो त्ति । तत्थ धण-धण्ण-रतणसंचयपरिहाणि-विणास-विप्पलोयणसद्द-रूवपादुब्भावेसु णत्थि
विजयो त्ति बूया । तत्थ धय-छत्त-सत्ति-पास-वीयणी-भद्दासण-सिविक-संदण-रध-वलभी-पदोलि-पवहणभग्ग-मँधित-पडित-
विप्पजोयित-ओणामिव-लग्ग-लयित-अपविद्ध-छुद्द-सदिवारित-पहत-परावत्तिय एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावेसु णत्थि विजयो
त्ति बूया । तत्थ खंधावारपराजय-विणिपातितजोध-विविधवाद्दण-पडह-तुरिय-वेजयंति-घंटा अणुदत्त-हीण-खामसर-भीत-
धावक-पलातविविधएवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे णत्थि जयो त्ति बूया ।

20 तत्थ अब्भंतरेसु सयं परक्कमेण विजयं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सयं परक्कमेण संमुधविजयं बूया । बाहिरेसु परसं-
सयपरक्कमेण विजयो भविस्सति त्ति बूया । पुण्णामेसु परक्कमेण विजयो भविस्सतीति बूया । थीणामेसु संतेण विजयो भवि-
स्सतीति । णपुंसएसु अपुरिसकारेणं विजयो भविस्सतीति । णिद्धेसु समुदितस्स साभिद्धीयं विजयो भविस्सतीति बूया ।
लुक्खेसु णिरागयस्स अदसंसाय विजयो भविस्सतीति । अब्भंतरेसु रज्जत्थस्स विजयो भविस्सतीति बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु
रायधाणितं णगरगतस्स विजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरब्भंतरेसु रज्जंतरगतस्स विजयो भविस्सति त्ति । बाहिरेसु
25 परविसयं गंता विजयो भविस्सतीति । बाहिरबाहिरेसु परविसयगतस्स परो विजयो भविस्सतीति बूया । आहारेसु आयबहुलो
विजयो भविस्सतीति । णीहारेसुं जोणिबहुलो विजयो भविस्सतीति । थूलेसु महाविजयो भविस्सती ति बूया । किसेसु अप्पो
विजयो भविस्सतीति । तिक्खेसु महता सत्थण्णिवातेण विजयो भविस्सतीति । मतेसु पाणावायबहुलो विजयो भविस्सतीति
बूया । मुदितेसु धरिसाय मुदितस्स विजयो भविस्सतीति बूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमायं दिसायं विजयो
भविस्सतीति बूया । दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं विजयो भविस्सतीति । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं
30 विजयो भविस्सतीति । वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं विजयो भविस्सति त्ति ।

☞ 'पंसि काले विजयो भविस्सतीति । ☜ पुव्वमाधारिते जधुत्ताहि वालोपलद्धीहिं उदु-पक्ख-मुक्ख-काल-

---

१ °मयउ° हं १ पु० । °मग्गउ° सि० ॥ २ °रध पणयण्ण° हं० त० ॥ ३° अब्भमज्जुतउद° हं १ पु० । अब्भुज्जंतउद° सि० ॥ ४ °रध पण्णं वा रायकुलं वा गहणं वा हं० त० ॥ ५ °मद्दित° हं० त० ॥ ६ °सु अत्थस्स हं १ पु० ॥ ७ °सु आणीव° हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

पुव्वण्ह-मज्झण्हा-ऽवरण्ह-पदो-सऽड्ढरत्त-पच्चूसोपलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति । पुव्वं जये आधारिते कस्स कधं कंसि खेत्तंसि केण गुणोपजयेण कंसि कालंसि त्ति एवमादीआओ उवलद्धीओ आधारयित्ता आधारयित्ता जयमंतरेण जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलभिउं वियाकरे तव्वाओ भवंति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्झायो अडयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ छ ॥ 5

[एगूणपण्णासइमो पराजयज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय **पराजयो णामाज्झायो** । तमणुवक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि पराजयो णत्थि पराजयो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणगत्तामासे इस्सरियामासे उत्तमामॉसे उद्धंभागामासे अभिमज्जितामासे मुदितामासे पसण्णामासे णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ उदूणं वा कच्छाणं 10 वा लताणं वा गुम्माणं वा वल्लीणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविल्लगाणं वा इत्थीणं वा उदुकालहासं समुदयउदग्गसमायुत्तासु कधासु पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु य णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ णव-परिपुण्ण-अविणट्ठरुक्ख-पुप्फ-फल-पत्त-मूल-पवाल-पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरण-भायण-जाण-वाहण-वत्था-ऽऽभरणोवकरणपादुब्भावे सद्दोदीरणे वा णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ चलामासे चलामासे लुक्खामासे किलिट्ठामासे तुच्छामासे णपुंसकामासे वामगत्तामासे जधण्णामासे अधोगत्तामासे णिम्मज्जिते अपमज्जिते दीणामासे अप्पसण्णामासे 15 मतामासे उवहुवामासे दुग्गंधामासे पराजयो भविस्सतीति बूया । ☞ तत्थ अरण्णं वा रायकुलं वा देसाणं वा णिगमाणं वा नगराणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सन्निवेसाणं वा हाणी-उट्ठाण-विणासपादुब्भावे एवंजुत्तासु कहासु य पराजयो भविस्सतीति बूया । ☜ तत्थ णीहारेसु उदूणं वा रसयाणं वा रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविल्लगाणं वा पुरिसाणं वा इत्थीणं वा उदुकाल-हास-जोव्वण-मदोदग्ग-अतिवत्त-खीणपादुब्भावेसु पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ रयणविणासे रज्जविणासे 20 रायविणासे रायकुलविणासे देसविणासे रायधाणिविणासे णगरविणासे णिगमविणासे पट्टण-खेड-आगर-गाम-सण्णिवेस-पासाद-गिह-खित्त-आराम-तलाग-सव्वसेतु-विणासपादुब्भावे चेव एवंजुत्तासु य कधासु पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ परिजिण्ण-खंड-हीणोपद्दुत-हित-विणट्ठ-वायण्णोपकपुप्फ-फल-पत्त-पवाल-कंद-मूल-अंकुर-परोहगते पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरण-जाण-वाहण-भायण-सयणा-ऽऽसण-वत्था-ऽऽभरणउवकरणविणासपादुब्भावे पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ धण-धण्ण-रतणसंचय-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-वत्था-ऽऽभरणपरिच्छद-सत्थावरण-सव्वोपकरणामासेसु उत्थाणकरण- 25 असं-पत्ति-असक्कार-परिभव-अवमाणा-ऽवसिद्धि-असंपत्त-अणिव्वुतिपादुब्भावेसु एवंजुत्तेसु वा उदाहरण-सद्दपादुब्भावेसु पराजयो भविस्सतीति बूया ।

तत्थ अब्भंतरे सयं पराजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरब्भंतरेसु अण्णेहिं सह पराजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरेसु परसंसितो पराजयो भविस्सतीति बूया । पुण्णामेसु परक्कमेण पराजयो भविस्सतीति ☞ बूया । थीणामेसु संतेण पराजयो भविस्सतीति । ☜ णपुंसएसु अपुरिसक्कारेण पराजयो भविस्सतीति बूया । दढेसु एकट्ठाणट्ठिताणं 30 पराजयो भविस्सतीति । चलेसु परिधावंताणं पराजयो भविस्सतीति बूया । णिद्धेसु मुदिताणं पराजयो भविस्सतीति बूया ।

---

१ जयंत° हं० त० सि० विना ॥ २ णामज्झा° सि० ॥ ३ °यालातीसति' हं० त० ॥ ४ माधारियव्वं हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ °मद्दोदग्ग° हं० त० ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

लुक्खेसु निरागताणं पराजयो भविस्सतीति बूया। अब्भंतरेसु रायत्थस्स पराजयो भविस्सतीति। ☞ अब्भंतरेसु रायहाणीगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति ☜ बूया। बाहिरब्भंतरेसु रज्जसंधीगतस्स पराजयो भविस्सतीति। बाहिरेसु अरण्णगतस्स पराजयो भविस्सति त्ति। ☞ बाहिरेसु अरण्णगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति। ☜ बाहिरबाहिरेसु परविसयगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति। आहारेसु सलाभो पराजयो भविस्सति त्ति। णीहारेसु अफलो पराजयो 5 भविस्सति त्ति। थूलेसु महापराजयो भविस्सति त्ति। कसेसु अप्पो पराजयो भविस्सतीति बूया। कण्हेसु बहुक्खतो पराजयो भविस्सतीति बूया। सुकेसु अत्थलाभसमाउत्तो पराजयो भविस्सतीति। तिक्खेसु सत्थपातबहुलो पराजयो भविस्सतीति। मतेसु पाणपातबहुलो पराजयो भविस्सतीति। अप्पसण्णेसु अप्पियपराजयो भविस्सति त्ति। पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं पराजयो भविस्सतीति। दक्खिणेसु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति। पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति। वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति।

10 एवं पराजये पुव्वाधारिते उप्पन्ने पादुब्भावे अत्थि पराजयस्स पुणरवि कधं पराजयो भविस्सति त्ति ☞ कंधं कस्स कस्स पराजयो भविस्सति त्ति ☜ कंसि देसंसि पराजयो भविस्सति त्ति ☞ कंसि कालंसि पराजयो भविस्सति त्ति कंसि दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति ☜ आधारइत्ता अणुपुव्वसो आमास-सद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावेसु अब्भंतर-बाहिरत्थायणाहि य एवमादीहि यधोत्ताहिं उवलद्धीहिं पराजयो समणुगंतव्वो भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पराजयो णामाज्झायो एगोणपण्णासतिमो
15 समणुगंतव्वो भवति ॥ ४९ ॥ छ ॥

[पण्णासइमो उवद्दुतज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उवद्दुतं नामऽज्झातो। तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि। [तं जधा—] तत्थ सोवद्दवो निरुवद्दवो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ उवद्दुतामासे दुग्गंधामासे किलिट्ठामासे कण्हामासे लुक्खामासे अप्पसण्णामासे दीणामासे तिक्खामासे सव्वसत्थगते 20 सव्वछिद्दगते सव्वसंडगते सव्ववज्जगते सव्वउपद्दवगते सव्वउपद्दुतणर-णारि-पक्खि-चउप्पद-परिसप्प-जलचर-कीडकिविल्लक-पुप्फ-फल-रुक्ख-गुम्म-लता-वल्लि-पत्त-पवाल-अंकुर-परोहगते वत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरिच्छद-दव्वोवकरण-धण-धण्ण-रयणगते भिण्ण-विज्ज-सविकार-सवाहत-उवहित-फुड-कम्मपासससमाउत्तपादुब्भावे एतारिसे सोवद्दवे सोवद्दवं बूया। तत्थ अणुवद्दुतामासे अव्वापण्णामासे सुगंधामासे अकिट्ठामासे सुक्कामासे णिद्धामासे पसण्णामासे मुदितामासे सव्वअच्छिण्ण-अखंड-अणवज्ज-अणुवद्दुतगते सव्वअणुपद्दुतमुदितणर-णारि-पक्खि-चउप्पद-जलयर-25 कीडकिविल्लगते णव-पुण्णपुप्फ-फल-रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लता-वणे(वल्लि-)पत्त-पवाल-अंकुर-परोहगते उदत्तवत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरिच्छद-दव्वोपकरण-धण-धण्ण-रयणगते अभिण्ण-अविज्ज-अविकार-अव्वाहत-अफुडित-अकूडकम्मदोसविप्पमुक्कपादुब्भावे मणुण्ण-पमुदगऽण्ण-पाण-भोयणपादुब्भावेसु चेव एवंविहेसु आमास-सद्द-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावेसु उदत्तेसु णिरुवद्दुतेसु णिरुवद्दुतो त्ति बूया।

उवद्दवे पुव्वाधारिते उपण्णयापादुब्भावेसु सोवद्दवो कीरिसो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ सव्वत्थगते 30 छेज्जं बूया। सव्वणिण्णेसु विलंकं बूया। कण्हेसु तिलकालकं बूया। गहणेसु णत्थकं बूया। उवग्गहणेसु तणं बूया।

१-२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ बहुकूलो परा° हं० त० ॥ ४-५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ भविस्सति हं० त० विना ॥ ७ पगूल° हं० त० ॥ ८ °माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ पण्णामासे हं० त० विना ॥ १० °ण्णाहरयपु° हं० त० ॥

अप्पसण्णेसु चलं बूया । वावण्णेसु किडिभकं सरं कुणिणखाणि णयणविकारो वा विण्णेया । गंठीसु गंठी बूया । वणेसु वणं बूया । अदंसणीयेसु काणं वा अंधं वा बूया । सद्देयेसु बहिरं वा कण्णछेज्जं वा बूया । गंधेयेसु णासारोगं वा णासाछेज्जं वा [बूया] । रसेयेसु जिब्भारोगं वा जिब्भाछेज्जं वा बूया । फासेयेसु तयादोसं वा फासोवघातं वा बूया ।

तत्थ उवद्दुतो अणुवद्दुतो पुव्वमाधारिते इमे संखेवा—उवद्दुते पडिपोग्गला उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ काणं वा अंधं वा कुंटं वा गंडीपादं वा खंजं वा कुणीकं वा आतुरं वा उवद्दुतं वा विकलं वा दिट्ठा पडिरूवे उवद्दुतो त्ति 5 बूया । तत्थ पलितं वा खरडं वा विपण्णा वा तिलकालकं वा चम्मक्खीलं वा दद्दुं वा किडिगं[1] वा किलासं वा कट्ठं वा सिब्भं वा कुणिणद्दं वा खवं वा अरुअं[2] वा अण्णतरं वा सोवद्दवं दव्वमामसति उवद्दुतो त्ति जाणितव्वो भवति । तत्थ तेल्ल-दधि-दुद्ध-मधु-पुप्फरस-फलरस-मंस-सोणित-पूव-वसा-मुत्त-पुरीस-खेल-सिंघाणक-अक्खिगूधक-कण्णगूधकादीणि एवंविधाणि आमसेज्जो उवद्दुतो त्ति जाणितव्वो भवति ।

तत्थ किलिट्ठेसु किलिट्ठमल्लाणुलेवण-किलिट्ठपुप्फ-फल-पवाल-मूल-परोह-अंकुरकिलिट्ठ-पमिलातपादुब्भावे वापण्णदुद्ध- 10 दधि-घत-वापण्णपाणभोयण-परिजिण्णवत्थभोयणजज्जर-परिभिण्ण-खंडदव्वोपकरणे चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूव-गंध-फास-रसपादुब्भावेसु उवद्दुतो त्ति बूया । तत्थ उवद्दुते पुव्वाधारिते उप्पण्णे पादुब्भावे कीरिसो उवद्दवो त्ति पुव्वाधारिते तत्थ सुक्केसु सबलं बूया, ☞[3] तं चेव सुणवारकं बूया । ☜ पीतेसु कामलं बूया। वापण्णेसु वापण्णं बूया । णीलेसु णीलं बूया । कण्हेसु कण्हतिलं बूया । गहणेसु णच्छकं बूया । उवग्गहणेसु तूणं बूया । सव्वणिद्धेसु पिलकं चम्मक्खीलं वा गलुकं वा बूया । पिलकाय पिलकं चम्मक्खीलं, गलुणा गलुकं, [4]गंडेण गंडं पडिरूवेण जाणितव्वं भवति । तत्थ 15 अग्गेयेसु दद्दुं बूया । कोढे कोढिकं, कोट्टिते कोट्टितं, आपडितेण आपडितं, वणेण वणं, तज्जातपडिरूवेण एवमादि अणुगंतव्वं भवति । तत्थ णद्देसु कुणिणद्दं, पोरिसेण वातंडं वा अम्हरिं वा, वसणेसु वातंडअरिसं वा भगंदलं वा, उदरे कुच्छिरोगं वा वातगुम्मं वा सूलं वा, हितये छड्डिं वा, उरे हिक्कं वा, कंठे अवयिं वा गलगंडं वा कंट्ठसालुकं[5] (कंठमालकं) वा, [6]कंकेसु अवयिं, पट्ठीये पट्ठिरोगं, सव्वाहारगते खंडोट्ठं वा गुरुलं वा करलं वा बूया[7][8] । मूकं वा खंडदंतं वा ◁ सोमदंतं वा ▷[9] आमासपडिरूवेहिं आधारयितूण पत्तेगं पत्तेगं सव्वं गीवाय गीवरोगं अवयिं वा गलगंडं 20 वा बूया । हत्थेसु [10]हत्थछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा अत्थोवद्दवं वा । पडिरूयोपलद्धीहिं आमासेहि य उवलद्धिं बूया । पादेसु पादछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा पादोवद्दवं वा बूया । सीसे सीसवाधयो बूया । अक्खिसु अक्खिवाधयो बूया ।

तत्थ वातिको पेत्तिको संभिको सण्णिवातिको त्ति रोगा पुव्वमाधारयितव्वा भवंति । तत्थ सव्ववायव्वेसु सुक्केसु कसायरसपादुब्भावेसु वा सव्वप्पयोगेसु सव्वचेट्ठागते य वातिकं रोगं बूया । तत्थ अग्गेयेसु पीयरसपादुब्भावेसु पण्णे अंबिलरसपादुब्भावेसु लवणरसपादुब्भावेसु सव्वउसुणपरिदाहगते य पेत्तिकं रोगं बूया । आपुणेयेसु 25 दढेसु सीतलेसु मधुर-पेसलरसपादुब्भावेसु चेव संभिकं रोगं बूया । तत्थ अधोणामीयं [11]गत्तामासे अधोणामीगत्तोपकरणेसु य वातिकं रोगं बूया । अधोहितयस्स जाव णामीतो त्ति एतेसिं गत्ताणं संपरामासे एतेसिं [12]चेव उवकरणसद्द-रूवपादुब्भावे पेत्तिकं रोगं बूया । उद्धंहितयगत्तेसु संपरामट्ठेसु एतेसिं चेव गत्तोवकरणेसु घूमणेत्तादिसु पादु[13]ब्भावेसु य पुण्णामेसु य सद्द-रूवेसु संभिगं रोगं बूया । आमेसु अणग्गेयेसु य आमा[स]यगतं रोगं बूया । पक्केसु अग्गेयेसु य पक्कासयसमुप्पण्णं रोगं बूया । 30

---

१ °डिलं वा हं० त० विना ॥ २ अरूवं वा हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ गंडयेण हं० त० ॥ ५ °डपरि° हं० त० ॥ ६ कट्टुसा° हं० त० ॥ ७ फक्केसु हं० त० विना ॥ ८ वा मुदलं वा करणं वा हं० त० विना ॥ ९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० हत्येज्जं हं० त० ॥ ११ गंधामासे हं० त० ॥ १२ चेव करण° हं० त० विना ॥ १३ °ब्भावेहि सुतवणामे° हं० त० विना ॥

लुक्खेसु निरागताणं पराजयो भविस्सतीति बूया। अब्भंतरेसु रायत्थस्स पराजयो भविस्सतीति। ☞ अब्भंतरेसु राय-
हाणीगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति ☜ बूया। बाहिरब्भंतरेसु रज्जसंधीगतस्स पराजयो भविस्सतीति। बाहिरेसु
अरण्णगतस्स पराजयो भविस्सति त्ति। ☞ बाहिरेसु अरण्णगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति। ☜ बाहिरबाहिरेसु
परविसयगयस्स पराजयो भविस्सति त्ति। आहारेसु सलाभो पराजयो भविस्सति त्ति। णीहारेसु अफलो पराजयो
5 भविस्सति त्ति। थूलेसु महापराजयो भविस्सति त्ति। कसेसु अप्पो पराजयो भविस्सतीति बूया। कण्हेसु बहुक्खतो
पराजयो भविस्सतीति बूया। सुक्केसु अत्थलाभसमाउत्तो पराजयो भविस्सतीति। तिक्खेसु सत्थपातबहुलो पराजयो
भविस्सतीति। मतेसु पाणपातबहुलो पराजयो भविस्सतीति। अप्पसण्णेसु अप्पियपराजयो भविस्सति त्ति। पुरत्थिमेसु
पुरत्थिमायं दिसायं पराजयो भविस्सतीति। दक्खिणेसु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति। पच्छिमेसु
गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति। वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति।

10 एवं पराजये पुव्वाधारिते उप्पन्ने पादुब्भावे अत्थि पराजयस्स पुणरवि कधं पराजयो भविस्सति त्ति ☞ कंधं
कस्स कस्स पराजयो भविस्सति त्ति ☜ कंसि देसंसि पराजयो भविस्सति त्ति ☞ कंसि कालंसि पराजयो भवि-
स्सति त्ति कंसि दिसायं पराजयो भविस्सति त्ति ☜ आधारइत्ता अणुपुव्वसो आमास-सद्द-रूव-रस-गंध-फासपादु-
ब्भावेसु अब्भंतर-बाहिरत्थावणाहि य एवमादीहि यधोत्ताहिं उवलद्धीहिं पराजयो समणुगंतव्वो भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पराजयो णामाज्झायो एगोणपण्णासतिमो
15 समणुगंतव्वो भवति ॥ ४९ ॥ छ ॥

[पण्णासइमो उवद्दुतज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उवद्दुतं नामऽज्झावो।
तं खलु भो ! वमणुवक्खस्सामि। [तं जधा—] तत्थ सोवद्दवो निरुवद्दवो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ
उवद्दुतामासे दुग्गंधामासे किलिट्ठामासे कण्हामासे लुक्खामासे अप्पसण्णामासे दीणामासे तिक्खामासे सव्वसत्थगते
20 सव्वछिद्दगते सव्वखंडगते सव्वभग्गगते सव्वउपद्दवगते सव्वउपद्दुतणर-णारि-पक्खि-चउप्पद-परिसप्प-जलचर-कीडकिवि-
ल्लय-पुप्फ-फल-रुक्ख-गुम्म-लता-वल्लि-पत्त-पवाल-अंकुर-परोहगते वत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरि-
च्छद-दव्वोवकरण-धण-धण्ण-रयणगते भिण्ण-विद्ध-सविकार-सवाहत-उवहित-कूड-कम्मपाससमाउत्तपादुब्भावे एतारिसे
सोवद्दवे सोवद्दवं बूया। तत्थ अणुवद्दुतामासे अव्वापण्णामासे सुगंधामासे अकिलिट्ठामासे सुक्कामासे णिद्धामासे पसण्णा-
मासे मुदितामासे सव्वअच्छिण्ण-अखंड-अणभग्ग-अणुवद्दुतगते सव्वअणुपद्दुतमुदितणर-णारि-पक्खि-चउप्पद-जलयर-
25 कीडकिविल्लगते पत्त-पुप्फ-फल-रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लता-वणे(वल्लि-)पत्त-पवाल-अंकुर-परोहगते वद्दत्तवत्था-ऽऽभरण-
सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणपरिच्छद-दव्वोपकरण-धण-धण्ण-रयणगते अभिण्ण-अविद्ध-अविकार-अव्वाहत-अकुढित-
अकूडकम्मदोमविप्पमुक्कपादुब्भावे मणुण्ण-पसुदग्गऽण्ण-पाण-भोयणपादुब्भावेसु चेव एवंविहेसु आमास-सद्द-रूय-रस-
गंध-फासपादुब्भावेसु उदत्तेसु णिरुवद्दुतेसु निरुवद्दुतो त्ति बूया।

उवद्दवे पुव्वाधारिते उवण्णयापादुब्भावेसु सोवद्दवो कीरिसो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ सव्वत्थगते
30 छेत्तं बूया। सव्वनिण्णेसु विलकं बूया। कण्हेसु तिलकालकं बूया। गहणेसु फलकं बूया। उवग्गहणेसु तणं बूया।

१-२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ३ बहुकूलो परा° हं० त० ॥ ४-५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त०
एव वर्त्तते ॥ ६ भविस्सति हं० त० विना ॥ ७ पगूल° हं० त० ॥ ८ °माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ पण्णामासे हं० त०
विना ॥ १० °कम्महत्यपु° हं० त० ॥

अप्पसण्णेसु चलं बूया । वावण्णेसु किडिभकं सरं कुणिणत्ताणि णयणविकारो वा विण्णेया । गंठीसु गंठी बूया । वणेसु वणं बूया । अदंसणीयेसु काणं वा अंधं वा बूया । सद्देयेसु बहिरं वा कण्णछेज्जं वा बूया । गंधेयेसु णासारोगं वा णासाछेज्जं वा [बूया] । रसेयेसु जिब्भारोगं वा जिब्भाछेज्जं वा बूया । फासेयेसु तयादोसं वा फासोवघातं वा बूया ।

तत्थ उवद्दुतो अणुवद्दुतो पुव्वमाधारिते इमे संखेवा—उवद्दुवे पडिपोग्गला उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ काणं वा अंधं वा कुंटं वा गंडीपादं वा खंजं वा कुणीकं वा आतुरं वा उवद्दुतं वा विकलं वा दिट्ठा पडिरूवे उवद्दुतो त्ति बूया । तत्थ पलितं वा खरडं वा विपण्णा वा तिलकालकं वा चम्मक्खीलं वा दद्दुं वा किडिगं[1] वा किलासं वा कट्ठं वा सिब्भं वा कुणिणद्दं वा खतं वा अंरुअं[2] वा अण्णतरं वा सोवद्दवं दव्वमामसति उवद्दुतो त्ति जाणितव्वो भवति । तत्थ तेल्ल-दधि-दुद्ध-मधु-पुप्फरस-फलरस-मंस-सोणित-पूव-वसा-मुत्त-पुरीस-खेल-सिंघाणक-अक्खि-गूधक-कण्णगूधकादीणि एवंविधाणि आमसेज्जो उवद्दुतो त्ति जाणितव्वो भवति ।

तत्थ किलिट्ठेसु किलिट्ठमल्लाणुलेवण-किलिट्ठपुप्फ-फल-पवाल-मूल-परोह-अंकुरकिलिट्ठ-पमिलातपादुब्भावे वापण्णदुद्ध-दधि-घत-वापण्णपाणभोयण-परिजिण्णवत्थभोयणजज्जर-परिभिण्ण-खंडदव्वोपकरणे चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूव-गंध-फास-रसपाउब्भावेसु उवद्दुतो त्ति बूया । तत्थ उवद्दुते पुव्वाधारिते उप्पण्णे पादुब्भावे कीरिसो उवद्दवो त्ति पुव्वाधारिते तत्थ सुक्केसु सबलं बूया, ☞[3] तं चेव सुणवारकं बूया । ☜ पीतेसु कामलं बूया । वापण्णेसु वापण्णं बूया । णीलेसु णीलं बूया । कण्हेसु कण्हतिलं बूया । गहणेसु णच्छकं बूया । उवग्गहणेसु तूणं बूया । सव्वणिद्धेसु पिलकं चम्मखीलं वा गलुकं वा बूया । पिलकाय पिलकं चम्मक्खीलं, गलुणा गलुकं, [4]गंडेण गंडं पडिरूवेण जाणितव्वं भवति । तत्थ अग्गेयेसु दद्दुं बूया । कोढे कोढिकं, कोट्टिते कोट्टितं, आपडितेण आपडितं, वणेण वणं, तज्जातपडिरूवेण एवमादि अणुगंतव्वं भवति । तत्थ णद्देसु कुणिणद्दं, पोरिसेण वातंडं वा अम्हरिं[5] वा, वसणेसु वातंडेअरिसं वा भगंदलं वा, उदरे कुच्छिरोगं वा वातगुम्मं वा सूलं वा, हितये छड्डिं वा, उरे हिक्कं वा, कंठे अवयिं वा गलगंडं वा कट्टंसालुकं[6] (कंठमालकं) वा, [7]कंकेसु अवयिं, पट्ठीये पट्ठिरोगं, सव्वाहारगते खंडोट्ठं वा गुरुलं वा करलं वा बूया[8] । मूकं वा खंडदंतं वा ◁ सेमदंतं वा ▷[9] आमासपडिरूवेहिं आधारयितूण पत्तेगं पत्तेगं सव्वं गीवाय गीवरोगं अवयिं वा गलगंडं वा बूया । हत्थेसु [10]हत्थछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा अत्थोवद्दवं वा । पडिरूवोपलद्धीहिं आमासेहि य उवलद्धिं बूया । पादेसु पादछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा पादोवद्दवं वा बूया । सीसे सीसवाधयो बूया । अक्खिसु अक्खिवाधयो बूया ।

तत्थ वातिको पेत्तिको संभिको सण्णिवातिको त्ति रोगा पुव्वमाधारयितव्वा भवंति । तत्थ सव्ववायव्वेसु सुक्केसु कसायरसपादुब्भावेसु वा सव्वप्पयोगेसु सव्वचेट्ठागते य वातिकं रोगं बूया । तत्थ अग्गेयेसु पीयरसपादुब्भावेसु पण्णे अंबिलरसपादुब्भावेसु लवणरसपादुब्भावेसु सव्वउसुणपरिदाहगते य पेत्तिकं रोगं बूया । आपुणेयेसु दढेसु सीतलेसु मधुर-पेसलरसपादुब्भावेसु चेव सेंभिकं रोगं बूया । तत्थ अधोणाभीयं गेंत्तामासे[11] अधोणाभीगत्तोपकरणेसु य वातिकं रोगं बूया । अधोहितयस्स जाव णाभीतो त्ति एतेसिं गत्ताणं संपरामासे एतेसिं चेवं[12] उवकरणसद्द-रूवपादुब्भावे पेत्तिकं रोगं बूया । उद्धंहितयगत्तेसु संपरामट्ठेसु एतेसिं चेव गत्तोवकरणेसु धूमणेत्तादिसु पादुब्भावेसु[13] य पुण्णामेसु य सद्द-रूवेसु सेंभिगं रोगं बूया । आमेसु अणग्गेयेसु य आमा[स]यगतं रोगं बूया । पक्केसु अग्गेयेसु य पक्कासयसमुप्पण्णं रोगं बूया ।

१ °डिलं वा हं० त० विना ॥ २ अरूवं वा हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ गंडयेण हं० त० ॥ ५ °डपरि° हं० त० ॥ ६ कट्ठसा° हं० त० ॥ ७ ककेसु हं० त० विना ॥ ८ वा गुरुलं वा करणं वा हं० त० विना ॥ ९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० हत्थेज्जं हं० त० ॥ ११ गंधामासे हं० त० ॥ १२ चेव करण° हं० त० विना ॥ १३ °ब्भावेहि सुतण्णामे° हं० त० विना ॥

एवं वातपित्त-सिंभोपलद्धीहिं अभिघातसयोपलद्धीहिं आमासय-पक्कासयोपलद्धीहिं वात-पित्त-सिंभोपलद्धीहिं उवलब्भ आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं य संगहतो वातिक-पित्तिक-सेंभिक-सन्निवातिका य चउव्विहा भेदसो अणेगागारा आधारयितूणं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ तिलकालकं वा चम्मकीलं वा दद्दुं वा पिलकं वा तूणं वा णत्थकं वा वणं वा एवमादि उद्धंभागेसु आमट्ठेसु उद्धंगीवाय विण्णेयाणि भवंति । अधोभागेसु अधोकडीयं 5 विण्णेयाणि भवंति । समभागेसु गत्तेसु आमट्ठेसु अंतरकाये विण्णेया भवंति । धंसि देसे पुव्वाधारितेसु दक्खिणेसु दक्खिणेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि भवंति । वामेसु वामेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । वामदक्खिणेसु वामदक्खिणेसु गत्तेसु विण्णेयाणि । मज्झिमे णेव वामेसु णेव दक्खिणेसु मज्झिमेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । पुण्णामेसु गत्तेसु पुण्णामेसु चेव विण्णेयाणि । थीणामेसु गत्तेसु थीणामेसु चेव विण्णेयाणि भवंति । णपुंसकेसु अंतसंधिच्छेदेसु विण्णेयाणि । दढेसु दढेसु कक्खडगत्तेसु विण्णेयाणि । चलेसु चलेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । णिद्धेसु अच्छीसु कण्णेसु वा णासायं वा मुहे वा पोरिसे वा 10 विण्णेयाणि । लुक्खेसु णहेसु विण्णेयाणि । कण्हेसु केसंते वा उत्तरोट्ठे वा मुमकासु वा । सुक्केसु णाभीयं वा वत्थिसीसे वा विण्णेयाणि । सामेसु थणपालीसु विण्णेयाणि भवंति । किसेसु सुयीसु वा दंतेसु विण्णेयाणि । बाहिरेसु बाहिरेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । अब्भंतरेसु अब्भंतरेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । दीहेसु दीहेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । रस्सेसु रस्सेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । थूलेसु थूलेसु चेव गत्तेसु विण्णेयाणि । किसेसु किसेसु चेव जाणेज्जो । णिलाडेसु गंडेसु कण्णेसु पादतलेसु करतलेसु चेव विण्णेयाणि भवंति । हत्थचलेसु चेव अंगुलीसंधीसु जाणेज्जो । हत्थथावरेसु अंगुली- 15 पव्वेसु जाणेज्जो । गहणेसु सिरंसि कक्खेसु वा वत्थिसीसे वा विण्णेया । उग्गहेसु भमुहासु अच्छीसु वा जाणेज्जो । परिमंडलेसु सिरंसि गंडे वा विण्णेया । थलेसु उण्णतेसु जाणेज्जो । वायव्वेसु णासायं वा मुहे वा अवाणे वा विण्णेया । अग्गेयेसु अग्गेयेसु चेव जाणेज्जो । तिक्खेसु दंतेसु वा णहेसु वा जाणेज्जो । आदिमूलिएसु आदिमूलिएसु चेव जाणिज्जो । मज्झिमविगाढेसु मज्झिमविगाढेसु चेव जाणेज्जो । अंतेसु अंतेसु चेव जाणेज्जो । ☞ तंवेसु[1] तंवेसु चेव जाणेज्जो । ☜ दंसणिज्जेसु दंसणिज्जेसु चेव जाणेज्जो ॥

20 ॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उवहुतो णामाज्झायो पण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ छ ॥ ५० ॥

[एगपण्णासइमो देवताविजयज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणसामिस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय देवताविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खाइस्सामि । तं जधा–उद्धंभागेसु सुरा, अधोभागेसु सुरा, 25 सुयीसु जक्खा, मंदेयेसु गंधव्वा, चलेसु पितरो, मतेसु पेता, मह्च्चलेसु दारुणेसु य दारुणा विन्नेया । सारमंतेसु वसवा, अग्गेयेसु आदिचा, चतुरस्सेसु अस्सिणो, णिव्वेढेसु अव्वाबाधा, सामेसु देवदूता, कण्हेसु अरिट्ठा, सुद्धिरमणेसु मारुम्मता, थोममंतेसु गद्दतोया, वण्णवंतेसु वण्हिणो, थीणामेसु अच्छरावो, सेतेसु वरुणकाइया, पच्छिमेसु दक्खिणेसु मवेसु य वेतका, धमारवंतेसु य उत्तरेसु वेसमणकाइया जक्खा, अग्गेयेसु पुरत्थिमेसु य अग्गिकाइया सोमकाइया य विण्णेया । चलेसु चंदप्पदम्मेसु य छिद्देसु णक्खत्त-गह-चंद-तारारूवाणि विन्नेयाणि भवंति । अक्खिसु चंदाऽऽ- 30 दिचा–तत्थ अग्गेयेसु आदिचा पीतेसु रत्तेसु य विन्नेया, सीतलेसु सुक्केसु य चंदो विण्णेयो, संसतेसु णक्खत्ताणि, संसतेसु उण्हेसु य णक्खत्तदेवताणि, चलेसु गहा विण्णेया । सोदेयेसु सामण्णेसु य बलदेव-वासुदेवा सिव-वेसमणा खंद-विसाहा अग्गि-मारुया य विण्णेया भवंति । सव्वाहिं सव्वाहिं आमास-सद्द-रूव-पडिरूवोपलद्धीहिं

१ वा चमकासु वा १ पु० । सुमकासु हं० त० ॥ २ निडालेसु हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ °सतिमो पण्णासमो सम्मत्तो ॥ ५० ॥ हं० त० ॥ ५ निव्वट्टे° हं० त० ॥ ६ °प्पदेसु सुस्सेसु हं० त० ॥

णिद्धेहिं सागरो या णदी वा विण्णेया—तत्थ परिक्खेवेसु सागरा विण्णेया, दीहेसु णदी विण्णेया। लुक्खेसु अग्गि इंदग्गि वा विण्णेया। सप्पभेसु आदिच्चो। उण्हेसु अग्गी। उत्तमसाधारणेसु उण्हेसु य इंदग्गि विण्णेयो। मत्थए बंभा उत्तमेसु या विण्णेया। णिद्दालेसु इंदो इस्सरेसु य विण्णेयो। उत्तरेसु उवेंदो सव्वपरक्कमगते य विण्णेयो। बाहूसु बलदेवो वा वासुदेवो वा सव्वबलदेवगते य विण्णेया। सामेसु कामो विण्णेयो। सव्व-कामपउत्ते सव्वरतिपयुत्ते चेव संधिसु उदलादला विण्णेया। दढेसु गिरी विण्णेया। सिवेसु सिवो विण्णेयो। 5 बहुरूवेसु य लिंगपादुब्भावेसु जमेसु य जमो विण्णेयो। सारवंतेसु वेस्सवणो विण्णेयो। सुक्केसु य उत्तमेसु य वरुणो विण्णेयो। सोमेसु सोमपादुब्भावेसु य सोमो विण्णेयो। कण्हेसु रत्ती विण्णेया। सुक्केसु दिवसो विण्णेयो। सिरंसि सिरी विण्णेया। मुदितेसु कामपजुत्तेसु य अइराणी विण्णेया। महावकासेसु पुढवी विण्णेया। सामेसु एकणासा विण्णेया। दंसणीयेसु णवमिगा विण्णेया। णिद्धेसु सुरादेवी विण्णेया। कण्हेसु णिण्णेसु सव्वपरि-सप्पपादुब्भावे य णागी विण्णेया। उद्धंभागेसु चलेसु य वण्णवंतेसु सुवदणेसु सव्वपक्खि-पवकपादुब्भावे य सुवण्णा 10 विण्णेया। गरुलवाहणपादुब्भावे य तत्थ अधोभागेसु णिण्णे य अधोलोकोपवण्णा विण्णेया, असुरा वा णागा वा सुवण्णा वा विण्णेया भवंति, सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं विण्णेया। तत्थ तिरियंभागेसु[1] उद्धंणामीय अधोगीवाय तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियसद्दपादुब्भावे य तिरिउववपातिका दीवकुमारा समुद्दकुमारा दिसाकुमारा अग्गिकुमारा वाउकुमारा थणितकुमारा विज्जुकुमारा पिसाय-भूत-जक्ख-रक्खस-गंधव्वा चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारुवा य सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारयितूणं आधारयितूणं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं विण्णेया भवंति। उद्धंभागेसु छत्त-वीयणि-भिंगार- 15 पादुब्भावेहिं उद्धं पक्खित्तंसि उद्धंभागोवकरणेसु य एवमादीसु य पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु उद्धंलोकोपपण्णा वेमाणिका देवा विण्णेया कप्पसण्णाहिं विविधआधारणाहिं लेस्सादिआधारणाहिं चेव भवंति। तत्थ उत्तमेसु इस्सरेसु चेव अधिपती विण्णेया। सामाणेसु दंडेसु सामाणपादुब्भावे य सामाणिया विण्णेया। पेस्सेसु आभियोगिका परिसोववण्णा विण्णेया। तत्थ सव्ववाहणगते सव्ववाहणजोणीगते य आभिजोगिका विण्णेया। सव्वपरिसागते सव्वपरियारगते य परिसोववण्णा विण्णेया। तत्थ सव्वसगुणगते सुवण्णा पुण्णामेसु, थीणामेसु सुवण्णकण्णका जाणितव्वा भवंति। दीहेसु णिद्धेसु णागा 20 पुण्णामेसु, थीणामेसु णागीदेवी विण्णेया। धणगते ववहारगते सारवंतेसु य वेस्सवणो विण्णेयो। सुक्केसु णिद्धेसु इस्स-रेसु समुद्दावकपादुब्भावेसु य वरुणो विण्णेयो। ◁[3] इस्सरेसु उत्तमेसु सव्वरायपडिरूवेसु य इंदो विण्णेयो। मतेसु सव्वपेतपडिरूवेसु इस्सरेसु य जमो विण्णेयो। ▷ गो-महिस-गवेलकपादुब्भावे रुद्देसु य सिवं बूया। कुक्कुड-मयू-रपादुब्भावे सेणावति [विण्णेयो]। कुमारपादुब्भावेसु य खंदो विण्णेयो। छगल-मेंढक-कुमार-असिपादुब्भावे य विसाहो विण्णेयो। दंडेसु सव्वजोधपादुब्भावेसु य वण्ही विण्णेयो। उण्हेसु अग्गी विण्णेयो। सव्वदव्वोयकरणपादु- 25 ब्भावे य चलेसु तालवंट-वीजणकादिसु य पादुब्भावेसु येतं[4] बूया। दारुणेसु रक्खसा विण्णेया। विम्हित-रुद्द-भय-हासेसु पिसाय-भूता चेव विण्णेया, थीणामेसु एतेसु चेव पादुब्भावेसु रक्खसीओ पिसाईओ भूतकण्णा देवीओ विण्णेयाओ भवंति। सव्वगंधव्वगते तंति-तल-तालणिग्घोसे गंधव्वा विण्णेया, थीणामेसु गंधव्वकण्णाओ विण्णेया। मधुर-घोसेसु पक्खिसु पडिरूवपादुब्भावेसु किन्नरा किंपुरिसा य विण्णेया, थीणामेसु किन्नरीओ किंपुरिसकण्णका विण्णेया। सुयींसु पुण्णेसु यक्खा विण्णेया, थीणामेसु जक्खिणिओ विण्णेयाओ। मूलजोणीगते वणस्सतीकण्णाओ 30 विण्णेयाओ। धातुजोणीगते पव्वतदेवता विण्णेया। णिद्धेसु पाणजोणीगए य समुद्द-नदी-कूव-तलाग-पल्ललदेवयाँतो[5] विण्णेया—[तत्थ] णिण्णेसु परिक्खेवेसु समुद्ददेवताओ, ◁[6] तत्थ दीहे णदीदेवताओ, ▷ णिण्णेसु उवट्टेसु परिमंडलेसु य ◁[7] कूव-देवता विण्णेया, णिण्णेसु परिमंडलेसु य ▷ समुद्ददेवताओ विण्णेयाओ, विवेक्खिते दिसादेवताओ विण्णेया। तधाऽणुपुव्वं दिसोपलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति। इढेहिं सिरी विण्णेया। बुद्धिरमणेसु बुद्धि-मेहाओ विण्णेयाओ।

१ सपादेसु हं॰ त॰॥ २ °सु अधोणामीय हं॰ त॰ विना॥ ३ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ४ यते हं॰ त॰ विना॥ ५ °यावो वि° हं॰ त॰॥ ६-७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥

अब्भंतरेसु रुवादेवताओ विण्णेयाओ। दढेसु चेत्युदेवताणि विण्णेयाणि। परिमंडलेसु णगरदेवताणि विण्णेयाणि। मतेसु सुसाणदेवताणि विण्णेयाणि। दुंगंधेसु वचदेवताणि उक्कुरुडिकदेवताणि य। उत्तमेसु उत्तमाणि, मज्झिमेहिं मज्झिमाणि, पच्चवरेहिं पच्चवराणि। आरियोपलद्धीहिं आरियदेवताणि, मिलक्खूपलद्धीहिं मिलक्खुहिं मिलक्खदेवताणि।

विमुत्तेसु अपरिग्गहेसु उज्जुएसु य ⊲ सप्पभेसु ⊳ पसण्णेसु य सम्ममावियाणि। अविमुत्तेसु वंकेसु णिप्पभेसु 5 परिग्गहवंतेसु आरुभेसु य मिच्छमावियाणि। पुण्णामेसु पुरिसा विण्णेया, थीणामेसु थिओ विण्णेयाओ भवंति। कण्ह-नील-कापोत-रत्त-पीय-सुक्किलेहिं वण्णपडिरूवेहिं ठियामासेहि य कण्हणील-काउ-तेउ-पंम-सुक्काओ लेस्साओ सएहिं वण्णपडिरूवेहिं आयारयित्ता आधारयित्ता देवताणं विण्णेयाओ भवंति॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय देवताविजयो णामाज्झायो एगपण्णासतिमो वक्खातो भवति॥ ५१॥ छ॥

10 [बापंचासइमो णक्खत्तविजयज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरस्स। अथापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णक्खत्तविजयो णामाज्झायो। तं खलु भो! वक्खस्सामि। तं जधा—उद्धोगिते उम्मज्जिते सीसुम्मज्जणे परिरदंसणे इंदधणु-विताण-विज्जु-थणित-चंदा-ऽऽदिच-णक्खत्त-गहगण-तारागणजोगा-ऽजोगा उदय-ऽत्थमण-अमावस्सा-पुण्णमासी-मंडल-वीथी वि जारिसं थाणं जुग-संवच्छर-उदु-मास-पक्ख-सव्वतिधि-अघोरत्त-खण-लव-15 मुहुत्त-उक्कापात-दिसादाह-संझादंसण-णक्खत्तणाम-थी-पुरिस-पक्खि-चउप्पद-दव्वोवकरणगते एवंविहसह-रूवपादुब्भावे जोतिसं पुच्छसि त्ति बूया। तत्थ सुक्कामासे चंदं बूया। णिद्धाले चेव चंदं बूया। थम्भिसु मुहे चेव आदिचं बूया। संधिसु णक्खत्तं बूया। दढामासेसु गहं बूया। पकिण्णामासे तारकाओ बूया। ओमज्जिए ओलोकिए अत्थमणाणि बूया। उद्धोकिए उम्मज्जिए उम्मट्ठिए य उदयं बूया। चलेसु वियारं बूया। दढामासेसु आहारेसु य गहणं बूया। णीहारेसु चलेसु मोक्खं बूया। परिमंडलेसु परिमंडलाचारं बूया। दीहेसु विवीचारं बूया। आहारेसु पवेसं बूया। 20 णीहारेसु णिग्गमणं बूया। वज्झेसु बाहिरमंडलायारं बूया, ⊲ सामेसु मज्झिममंडलायारं बूया ⊳ अब्भंतरेसु अब्भंतर-मंडलायारं बूया। तत्थ दीहेसु वहस्सतिं बूया। सुक्केसु सुक्कं बूया। रत्तेसु लोहितकं बूया। मंडलेसु सणिच्छरं बूया। पयलाइएसु णिमिज्झियंसि य राहुं बूया। उपद्दुएसु धूमकेतुं बूया। पंडूसु विसुद्धेसु य बुधं बूया।

तत्थ पुरिमेसु गत्तेसु कत्तिकादीणि असलेसपज्जवसाणाणि पुव्वदारिकाणि सत्त नक्खत्ताणि बूया। दक्खिणेसु गत्तेसु महादीयाणि विसाहापज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि दक्खिणदारिकाणि बूया। पच्छिमेसु गत्तेसु अणुराधादीणि 25 सवणपज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि पच्छिमदारिकाणि बूया। वामेसु गत्तेसु धणिट्ठादीयाणि भरणीपज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि उत्तरदारिकाणि बूया।

तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामं पुणव्वसुं वा पुस्सं वा पुव्वदारेसु बूया। हत्थं वा भातिं वा दक्खिणदारेसु बूया। मूलं वा अभीइं वा सवणं वा पच्छिमदारेसु बूया। उत्तरदारेसु णत्थि पुण्णामाणि णक्खत्ताणि। सव्वाणि उत्तराणि थीणामाणि जाणियव्वाणि भवंति। अवसेसाणि णक्खत्ताणि थीणामाणि णपुंसकाणि जाणियव्वाणि भवंति।

---

१ पच्चवे° हं० त० ॥ २ दुग्गंधेसु हं० त० ॥ ३ °दिकदानि देव° हं० त० सि० ॥ ४ सीसमज्जणा हं० त० ॥ ५ °दय बहिर्यादि उदयं हं० त० ॥ ६ ⊲ ⊳ एतचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ लोचकं हं० त०। लोहितकं सि० ॥ ८ निमिज्झियंसि हं० त० सि० ॥ ९ य बुधं बू° हं० त० ॥ १० असिलेस° हं० त० ॥ ११ अभीयिं वा सवणं हं० त० ॥

तत्थ हत्थ-पाद-जंघोरु-बाहु-णाभीसु तीसं मुहुत्ताणि-बूया । तत्थ पट्ठोदरं-खंध-वच्छेसु सिरंसि च पणयालीसति-मुहुत्ताणि बूया । तत्थ केस-मंसु-लोम-णह-सव्वंगुलीगए अंगुट्ठेसु चेव पण्णरसमुहुत्ताणि बूया । एतेसामेवादेसेग्गहणे तूणपण्णरसमुहुत्तं अभीयिं बूया ।

तत्थ तीसतिमुहुत्तेसु पुव्वदारेसु कत्तिगा मिगसंठाणं पुस्सं ति तिण्णि णक्खत्ताणि बूया । दक्खिणदारेसु महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्तं च चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । अवरदारेसु अणुराधा मूलो पुव्वासाढाओ सवणो चत्तारि 5 णक्खत्ताणि बूया । उत्तरदारेसु धणिट्ठा पुव्वापोट्ठपदाओ रेवती अस्सिणी य चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । एयाणि तीसमुहुत्ताणि पण्णरस नक्खत्ताणि बूया । तत्थ पणतालीसमुहुत्ताणि पुव्वदारेसु रोहिणी पुणव्वसुं च दुवे णक्खत्ताणि जाणीया । दक्खिणदारेसु उत्तराफग्गुणीओ विसाहा चेव दुवे णक्खत्ताणि जाणीया । पच्छिमद्दारेसु उत्तरासाढा एगं णक्खत्तं जाणिया । उत्तरदारेसु उत्तरापोट्ठपदा एकं णक्खत्तं जाणीया । एवमेयाणि पणयालीसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि बूया । तत्थ पण्णरसमुहुत्ते पुव्वदारिए अद्दं असिलेसं च दुवे णक्खत्ताणि जाणिया । दक्खिणदारेसु एकं 10 साइं णक्खत्तं बूया । पच्छिमद्दारेसु जेट्ठं एकं णक्खत्तं बूया । उत्तरदारेसु सयभिसया भरणी य दुवे णक्खत्ताणि जाणिया । एयाणि पण्णरसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि बूया । अवरद्दारेसु जण्णं पण्णरसमुहुत्तं अभिर्ति णक्खत्तं एकं णवमुहुत्तं सत्तावीसं चे [सत्त]सट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाणिया ।

तत्थ तीसमुहुत्ताणि समखेत्ताणि पनरस णक्खत्ताणि उवलद्धीहिं समखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । पणयालीसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि दिवड्ढखेत्ताणि दिवड्ढखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । पण्णरसमुहुत्ताणि अद्ध- 15 खेत्ताणि छ णक्खत्ताणि अद्धखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तूणपण्णरसमुहुत्तं तूणपण्णरसमुहुत्तोवलद्धीहिं उवल-द्धव्वं भवति । एयाणि अट्ठावीस णक्खत्ताणि दारतो खेत्तपविभत्तीहि य आधारयितुं आधारयितुं उवलद्धव्वाणि भवंति ।

तत्थ चलेसु चलाणि खिप्पाणि वा बूया—तत्थ चलाणि पुणव्वसू सवणो धणिट्ठा सतभिसय त्ति, तत्थ खिप्पेसु पुस्सो हत्थो अभियी अस्सिणीउ त्ति चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ दढामासे रोहिणीओ तिण्णि उत्तराणि चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । दारुणेसु दारुणाणि बूया, तिण्णि पुव्वाओ महा चेति । तत्थ चत्तारि नक्खत्ताणि सव्वसत्थगताणि उग्गाणि 20 बूया, उग्गाणि पुण अस्सेस जेट्ठा मूलो अद्दा भरणी चेति पंच णक्खत्ताणि भवंति । तत्थ मिदूसु सव्वमित्तगते पसण्णेसु य मुदूणि बूया, तत्थ मुदूणि मिगसिरो चित्ता अणुराधा रेवति चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ साधारणेसु साधार-णाणि बूया, साधारणाणि पुण कित्तिया विसाहा चेति दुवे णक्खत्ताणि बूया । तत्थ बंभेयेसु सव्वबंभणपडिरूवगते य अभियिं बूया । तत्थ सव्ववण्हिगते सव्ववण्हिपडिरूवगते य सवणं बूया । तत्थ सव्ववसुगते धण-रयणगते य वसु-धण-रतणपडिरूवगते य धणिट्ठं बूया । तत्थ सव्वमदगते सव्वमदमज्जपडिरूवगते य सतभिसं बूया । तत्थ सव्वअयगते सव्व- 25 अयपडिरूवगते य पोट्ठवदं बूया । तत्थ विवद्धिसंपयुत्ते सव्वविद्धिगते सव्वअभिवद्धिपडिरूवगते य उत्तरपोट्ठपदं बूया । तत्थ सव्वदाणगते विग्गहगते सव्वदाण-विसग्गपडिरूव-सद्दपादुब्भावगते चेव रेवतिं बूया । तत्थ सव्वातिगच्छोवलद्धीहिं सव्वअरसगते सव्वअरसपडिरूवोवकरणगते य सव्वअरसोपजीवीहि य एतेसामेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावे अस्सिणिं बूया । तत्थ दीणं मदोवलद्धीहिं सव्वजमगते य जमपडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव भरणीओ बूया । तत्थ सव्वअग्गेयेसु अग्गिगते अग्गीउपलद्धीयं सव्वअग्गेयोपकरणे सव्वअग्गिदेवताए य अग्गिउवकरणे सव्वकंटइरुक्खगते एवंविवेसु सद्द- 30 रूवपादुब्भावे कत्तियाओ बूया । तत्थ पयापुत्तोपलद्धीयं पयावतिसद्द-रूवपादुब्भावेसु चेव सव्वधण्णगते सव्वकासकगते

---

१ °रयंधुव° हं० त० विना ॥ २ °साणिग्गह° हं० त० विना ॥ ३ °त्ताणि पण्णरसमुहुत्ताणि पण्णरस हं० त० विना ॥ ४ "चन्द्रस्याभिजिता योगे मुहूर्ता नव कीर्तिताः । सप्तषष्टिभुवोऽप्यथ मौहूर्ताः सप्तविंशतिः ॥" लोकप्रकाशे सर्गः २८ श्लोकः ३२३ पत्रं ३८० ॥ ५ च अट्ठभागा हं० त० ॥ ६ पण्णरस णक्खत्ताणि अट्ठणक्खत्ताणि छ णक्ख° हं० त० विना ॥ ७ °त्थ चत्ताणि णक्ख° हं० त० ॥ ८ °सत्थाणि गताणि बूया सि० ॥ ९ °गते दाणविग्ग° हं० त० ॥ १० °पडिसद्दरूवपा° हं० त० विना ॥

सव्वकोसकोपकरणगते फासकोपलद्धीयं सव्वरूढगते चेव रोहिणी बूया । तत्थ सव्वसोमगते सव्वसोमोपलद्धीयं
सव्वसोमकम्मोवयारगते चेव सव्वसोमकम्मोपलद्धीयं सव्वसाधारणगते सव्वकोसीधण्णगते सव्वसंगलिकागते
सव्वखीरवच्छगते एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु मिगसिरं बूया । तत्थ सव्वरुद्दगते सव्वणिधाणगते
सव्वरुद्दोवकरणे सव्वरुद्दोपयारकम्मगते एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेहिं अद्दं बूया । तत्थ पुणरावत्तिएसु
5 सद्देसु पुणगते य सव्वअदितिगते सव्वअदितिकम्मोपचारगते सव्वअदितिउवलद्धीयं एवंविधेसु पडिरूव-सद्द-
पादुब्भावेसु पुणव्वसुं बूया । तत्थ सव्वबुद्धिगते सव्वबुद्धिकम्मगते ☞ सव्वबहस्सतिगए ☜ सव्वबहस्सति-
पुस्सकम्मोवयारगते सव्वबहस्सतिपुस्सोवलद्धीसु एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु पुस्सं बूया । तत्थ सव्वसप्पगते
सव्वसप्पोवलद्धीयं सव्वसप्पोवजीविगते सव्वविसगते सव्वअस्सिलेसोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावे
असिलेसं बूया । तत्थ पितुकज्जकिच्चपेतकिच्चगते सव्वसद्दगते सव्वमाघगते सव्वपितुकिच्चोपलद्धीसु सव्वपितुउवलद्धीसु
10 एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु मघाओ बूया । तत्थ सव्वसोभग्ग-सोभग्गिय-सुभगगते सव्वरूवोवजीविगते सव्ववे-
सियागते सव्ववेसियाउवकरणगते सव्वसोभग्गियकम्मोवयारगते सव्ववेसोवलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूवसद्दपादुब्भावेसु
पुव्वाओ फग्गुणीओ बूया । तत्थ सव्वउज्जगते सव्वसचगते सव्वधम्मगते सव्वधम्मिगगते एतेसिं चेव पडिरूव-सद्द-
पादुब्भावेसु उत्तराओ फग्गुणीओ बूया । तत्थ सव्वहत्थिगते सव्वहत्थिपडिरूवगते य सव्वहत्थिउवकरणगते सव्व-
हत्थिकम्मोपचारगते सव्वहत्थिउपजीविगते आदिच्चकम्मोवयारे आदिच्चोवलद्धीयं सव्वकारुकोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडि-
15 रूव-सद्दपादुब्भावेसु हत्थं बूया । तत्थ सव्वदंसणीयेसु रूवकार-चित्तकार-कट्ठकार-सव्वरूवकारोवकरणे सव्वअलंकारि-
यगते सव्वालंकारेसु ◁ अलंकारकम्मोवगरणेसु ▷ अलंकारकम्मोवयारेसु एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु चित्तं
बूया । तत्थ वायव्वेसु सव्ववायगते वीयणक-तालवेंटगते उक्खेवगते फूमिते वीजणकम्मोवयारेसु वातयत्तकी-
योपचारेसु एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावे सातिं बूया । तत्थ वणस्सतीसु सव्वदव्वगते सव्वसामण्णगते
विसाहं बूया । तत्थ सव्वणानिमित्तसंबंधिगते सव्वमेत्तिउवयारगते पसण्णेसु य एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु
20 अणुराधं बूया । तत्थ इस्सरेसु सव्वजेट्ठगते सव्वइंदकम्मोवयारगते इंदोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूवगते सद्दपादुब्भावेसु
जिट्ठं बूया । तत्थ सव्वमूलजोणीगते सव्ववीजभूतगते सव्वमूलकम्मगते सव्वमूलोवयारगते एतेसिं चेव पडिरूव-सद्द-
पादुब्भावे मूलं बूया । तत्थ आपुणेयेसु सव्वआपुणजोणीसु सव्वजलगते सव्वजलचरगते सव्वजलोवजीविगते सव्व-
जलावगाहीगते णवपोतोवकरणे एतेसिं चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु पुव्वासाढा बूया । तत्थ उव ☞ संताउवद्ध-
लकहा ☜ संलावजोणीसु ☞ णिट्ठुरकम्मोवयारेसु ☜ णिट्ठुलपडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु य उत्तरासाढा बूया ।
25 ◁ तत्थ अग्गेयेसु कत्तियं वा विसाहं वा बूया । ▷ असाधारणेसु अग्गेयेसु कत्तियं बूया । साधारणेसु अग्गेयेसु विसाहं
बूया । आपुणेयेसु अद्दं वा पुव्वासाढं वा सतविसयं वा बूया । तत्थ सव्वचतुप्पदगते चतुक्केसु रोहिणिं वा
मिगसिरं वा हत्थं वा अस्सिणीओ वा बूया । मतेसु भधं वा भरणीयो वा बूया । मूलजोणीपडिरूवगते
☞ रोहिणी वा मूलं वा बूया । तत्थ सव्वजाणपडिरूवगते ☜ कत्तियं वा रोहिणिं वा बूया । तत्थ
सव्वरायोपलद्धीयं पुस्सं वा जेट्ठं वा बूया । कंटकीरुक्खगते कत्तियं बूया । सगडजाणगते रोहिणिं बूया । खीररुक्खेसु
30 चंदोपलद्धीयं मिगसिरपडिरूवे य मिगसिरं बूया । मुदितेसु पुस्सं वा सतविसयं वा बूया । तत्थ असगोपलद्धीयं अद्दं वा
पुव्वासाढा सतविसयं वा बूया । तत्थ सव्वपरिसप्पगते असिलेसं बूया । तत्थ कोसीधण्णगते विसाहं वा मिगसिरं वा
बूया । तत्थ सव्वजोगगते कम्मोवलद्धीयं च मघा वा पुव्वफग्गुणीओ वा बूया । मतेसु पेतोवलद्धीयं मघा विण्णेया ।
सोभग्गसोभिग्गोपचारेसु रूवोपजीविउवलद्धीसु य पुव्वाओ फग्गुणीओ बूया । सव्वसिप्पिगते हत्थं बूया । चित्तेसु

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ °पिउकज्जोप° हं० त० ॥ ३ चेव हं० त० ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः
पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ °वयीजंजीयगते हं० त० विना ॥ ६–७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ८ ◁ ▷ एतच्चिह्ना-
न्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

-चूया । ◁ त(ति)ज्जंभागेसु तिरिक्खजोणीगतं उप्पायं बूया । ▷. सव्वचउप्पदेसु य चउरस्सेसु य चउक्केसु चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते चतुप्पयगतं उप्पायं बूया । तत्थ उद्धंभागेसु चलेसु य सव्वपक्खिगते उवकरणे पक्खिउवकरणेसु पक्खिणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते पक्खिगतं उप्पायं बूया । तत्थ दीहेसु कण्हेसु सव्वपरिसप्पोवकरणे परिसप्पणामधेज्जथी-पुरिसउवकरणगते चेव परिसप्पगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु सव्वजलचरेसु सव्वमच्छेसु सव्वजलेसु थी-पुरिसउवकरणगते चेव मच्छगतं बूया । सव्वबीयगते कीडकिविल्लगगए कीडकिविल्लगगतं उप्पायं बूया । तत्थ वालेयेसु पजातं उप्पायं बूया । तत्थ छिण्ण-भिण्ण-कोट्टितसद्दे पासाद-गोपुर-ऽट्टालग-इंदधय-तोरणगतं वा उप्पायं बूया । अग्गेयेसु पागार-गोपुर-ऽट्टालग-कोट्ठागारा-ऽऽयुधाकार-आयतण-चेतिएसु अग्गि-जलण-धूमपादुब्भावेण विज्जु-पतणगतं उप्पातं बूया । णिद्धेसु उदकवाहेकअणादके उदकपादुब्भावेण अपयातक-अकालवुद्धं अणंतवुद्धं अणंततिमिर-पादुब्भावेणं वा बूया । पुधूसु अज्जीवेसु सव्वभायणपडिरूवगयं चेव भायणगतं उप्पायं बूया । जाणेसु सव्वजाणोपलद्धीयं जाणगतं उप्पायं बूया । किसेसु वत्थ-परिच्छदगतं उप्पायं बूया । थूलेसु थलगतं वा पढंकगतं वा उप्पायं उट्टिकगतं अरंजरगतं वा बूया । सामेसु सव्वआभरणगते य आभरणगतं उप्पायं बूया । तिक्खेसु सव्वसत्थगते चेव सत्थगतं उप्पातं बूया । अब्भंतरेसु णगरगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु अंतेपुरगतं उप्पायं बूया । बाहिर-ब्भंतरेसु बाहिरिकागतं उप्पायं बूया । बाहिरेसु जणपदगतं उप्पायं बूया । गहणेसु आरण्णगतं उप्पायं बूया । उवग्गहणेसु आरामगतं उप्पायं बूया । एवं आमास-सद्द-रूव-रस-गंध-फासपाउब्भावेसु अंतलिक्ख-भोम्मा चउव्विधो उप्पातो आधारयित्ता आधारयित्ता बहुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वो भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उप्पातो णामाज्झायो तिपण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ ५३ ॥ छ ॥

[चउपण्णासइमो सारासारज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जायं **सारासारो णामाज्झायो** । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि सारो णत्थि सारो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सारवंतो त्ति बूया । तत्थ बाहिरामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे णपुंसकामासे असारवंतो त्ति बूया ।

तत्थ सारगते पुव्वाधारिते सारं चतुव्विधमाधारये–धणसारं १ मित्तसारं २ इस्सरियसारं ३ विज्जासारमिति ४ । तत्थ अब्भंतरेसु धणमंतेसु य धणसारं बूया १ । तत्थ महापरिग्गहेसु सव्वमित्तगते य मित्तसारं बूया २ । ☞ तत्थ सव्व-इस्सरियगए सव्वरायगए सव्वविजयगए य इस्सरियसारं बूया ३ । ☜ तत्थ बुद्धिरमणेसु सव्वसत्थबुद्धिगते य विज्जासारं बूया ४ । तत्थ उत्तमेसु उत्तमो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा ◁ विज्जासारो वा ▷ विण्णेयो । ☞ मज्झिमेसु ☜ मज्झिमो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा ◁ विज्जासारो वा ▷ विण्णेयो । मज्झिमाणंतरेसु मज्झिमाणंतरो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो । तत्थ पच्चवरे पच्चवरो धणसारो वा ☞ मित्तसारो वा ☜ इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो ।

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ २ °सगते उवकरणे गते हं॰ त॰ विना ॥ ३ °रायमकाराआयवणचेति° हं॰ त॰ विना ॥ ४ °एसु वण्णजलण° सि॰ । °एसु धीयजलण° सं ३ पु॰ ॥ ५ °हकं अणोद° हं॰ त॰ ॥ ६ बाहिरगतं हं॰ त॰ ॥ ७ °य सारो णामा° हं॰ त॰ ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥ ९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥ ११ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्त्तते ॥

[तिपंचासइमो उप्पातणज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय
उप्पातणामज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि । तं जधा—उद्धं णामीय उद्धंभागेसु अन्तलिक्खगतं उप्पायं
विज्जा । अधो णामीयं अधोभागेसु भोम्मं उप्पायं बूया । तत्थ अंतलिक्खेसु पुव्वाधारितेसु उप्पातेसु परिमंडल-
5 गतेसु चंदा-ऽऽदिच्चगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु धूमकेतु-राहुगतं उप्पायं बूया । दीहेसु बहस्सतिगतं उप्पायं
बूया । अंतरेसु धूमकेतु-सुक्क-बुधगतं उप्पायं बूया । सुद्धसुक्केसु सुक्कगतं उप्पायं बूया । दंसणीयेसु बुधगयं उप्पायं बूया ।
किलिट्ठेसु धूमकेतुगतं उप्पायं बूया । ◁ मंदेसु सणिच्छरगतं उप्पायं बूया । ▷ थावरेसु बुध-सणि-चर-बहस्सतिगतं
उप्पायं बूया । चलेसु सुक्कमाळोहित-धूमकेतु-राहुगतं उप्पातं बूया । अग्गेयेसु आदिच्चगतं, [उप्पायं बूया]। लोहितंके
उक्कागतं उप्पायं बूया । कण्हेसु रत्तिगतं उप्पायं बूया । संधिसु संझागयं उप्पायं बूया । सुक्केसु आदिमूलीयेसु
10 पुव्वण्हगतं उप्पायं बूया । सुक्केसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं बूया । सुक्केसु अंतेसु अवरण्हगतं उप्पायं बूया ।
कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु अंतेसु
पच्चूसगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरमग्गगतं उप्पायं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सामेसु य मज्झिमवीधीगतं उप्पायं
बूया । बाहिरेसु वेस्साणरपधगतं उप्पायं [बूया] । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं उप्पायं बूया । दक्खिणेसु गत्तेसु
दक्खिणायं दिसायं उप्पायं बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं उप्पायं बूया । वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं
15 उप्पायं बूया । णिद्धेसु उवरिट्ठिमेसु मेघगतं उप्पायं बूया । चलेसु पभागतेसु य विज्जुगतं उप्पायं बूया । फरुसेसु
पंसुवुट्ठिगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु धूमकोपेतं रत्तिगतं उप्पायं बूया । अग्गेयेसु दिसादाहगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु चलेसु
वुट्ठिगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु चलेसु रत्तेसु य मंस-सोणितवुट्ठिगतं उप्पायं बूया । एवं पडिरूवोवलद्धीहिं पत्तेकसो
पत्तेयसो वुट्ठि-उप्पाता तेल्ल-घत-दुद्ध-वसा-विच्छिक-सप्प-परिसप्प-कीड-किविल्लगते वा उवलद्धव्वा भवंति । इति अंत-
लिक्खगता उप्पाता वक्खाता भवंति ।

20 तत्थ भोम्मा उप्पाया भवंति माणुसा चतुप्पदा परिसप्पगता मच्छगता खुड्डसिरीसिवगता वणप्फतिगता गिरिण-
दि-णगगता आयतण-उवकरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायणगता चेव भवंति । तत्थ केस-मंसु-लोमगते वणप्फतिगतं
उप्पायं बूया । तत्थ अपत्ते काले पाणे वा भोयणे वा आभरणे वा हसिते वा भणिते वा गीते वा णट्टे वा वादिते वा
अप्पत्तकाले पेक्खितम्मि वा चउप्पदे वा परिसप्पे वा सप्पे वा खुड्डसिरीसिवे वा आहारे वा दंसणे वा पयाणे वा
अपत्तकाले पुप्फ-फले उप्पातं बूया । तत्थ वणप्फतीसु एतेसु चेव अतिरत्तकालेसु एतेसु चेव पुव्वदिट्ठेसु पडिरूवेसु
25 अतिरत्तकाले वणप्फतीगतं बूया । तत्थ पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-पुप्फ-फल-धण्ण-प्पकरण-विविधविहरी-
यदंसणे विगताभिरामे वा अभूतपुव्वपुप्फ-फलपादुब्भावे विगतरूववणप्फती उप्पायं बूया । तत्थ उद्धं गीवाय सिरो-
मुहामासे अंजलिकरणे पकंसाधारणे उप्पायणोमुंचणे णमोकार-वंदित-पूजित-छत्त-भिंगार-लाउल्लोयिक-वासण-कडग-
लोमहत्थ-उस्सय-समाय-महाभागगते चेव देवतागतं गहगतं उप्पायं बूया । दढेसु पव्वत-गाम-दुग्ग-णगरगतं बूया । संव-
टेसु गामगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरेसु वित्थडेसु णगरगतं उप्पातं बूया । ☞ बाहिरेसु वित्थडेसु जणपदगयं
30 उप्पायं बूया । उत्तमेसु उण्णएसु य पव्वतगयं उप्पायं बूया । ☜ दीहेसु णिद्धेसु य णदीगतं उप्पातं बूया । णिद्धेसु
परिक्खेवेसु य समुद्दगतं उप्पायं बूया । ☞ णिद्धेसु सण्णिरुद्धेसु कूवगयं उप्पायं बूया । ☜ चलेसु पाणजोणीगते
☞ सव्वपाणजोणीगए ☜ सव्वपाणजोणीउवकरणे चेव पाणजोणीगतं बूया । उज्जुभागेसु मणुस्सजोणीगतं उप्पायं

१ °प्पायणा णामा° हं० त० ॥ २ पक्खाइस्सा° सं ३ पु० । °पक्खायस्सा° सि० ॥ ३ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ °करणे पकंसाकरणे उपाहणोमुयणे णमो° सि० । करणे उपायणोउंधणे णमो° हं० त० ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

रितेसु य सव्वप्पसूतेसु पुप्फ-फलेसु पुरिसेसु य पुत्तसारं बूया। एतेसु चेव थीणामेसु कण्णेयेसु कण्णासारं बूया। इति मित्तसारो विण्णेयो भवति।

तत्थ इस्सरियसारे पुव्वाधारिते इस्सरियसारं दुविधं आधारए—अव्वत्तं सुव्वत्तं चेति। तत्थ सुव्वत्तो अधिकरणं णायकत्तं अमच्चत्तं रायत्तं चेति। तत्थ अव्वत्ते इस्सरियसारे पेस्साणं रायपुरिसस्स य पेस्सत्तं बूया। तत्थ अव्वत्तेसु पच्चवरकायेसु चेव संसयं मज्झिमाणंतरेसु पेस्साणं रायपुरिसस्स णिस्सियं इस्सरियसारं बूया। मज्झिमकायेसु थाणप्पत्तं 5 अधिकरणत्थं बूया। कायमंतेसु सेणापतिं वा अमच्चं वा णायकं वा बूया। एतेसु चेव आहारेसु रायिणं बूया। जधुत्ताहि य थाणज्झाये थाणोवलद्धीहिं इस्सरियसारं बूया। इति इस्सरियसारो विण्णेयो।

तत्थ विज्जासारे पुव्वाधारिते सव्वबुद्धिरमणेसु सव्वविज्जासत्थगते य पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु चेव विण्णेयाणं सत्थाणं वा विज्जासारं बूया। तत्थ कायमंतेसु विज्जासारं गतं बूया। मज्झिमकायेसु उत्तमाणंतरेसु य विज्जाविस्सुयं बूया। मज्झिमेसु मज्झिमं बूया। मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमजहण्णसारेसु य असमत्तविज्जं बूया। पच्चवरकायेसु 10 जहण्णेसु य विज्जाविलंबितं बूया, विज्जाछित्तं वा बूया। इति विज्जासारो विण्णेयो॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए [सारा]सारो णामाज्झातो वक्खातो चउपन्नासतिमो सम्मत्तो ॥ ५४ ॥ छ ॥

[पणपण्णासइमो णिधाणज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स। अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिधाणं णाम- 15 ज्झायं। तं खलु वक्खायिस्सामि। तं जधा— ☞ [१]तत्थ अत्थि णिहाणं णत्थि णिहाणं ति पुव्वमाहारयियव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे अत्थि णिहाणं ति बूया। तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे अत्थि (णत्थि) णिहाणं ति बूया। ☜

तत्थ अत्थि णिधितं ति पुव्वमाधारिते णिधितमट्ठविधमादिसे। तं जधा—भिण्णसतपमाणं भिण्णसहस्सपमाणं ☞ सयसहस्सपमाणं ☜ कोडिपमाणं अपरिमियपमाणमिति। कायमंतेसु उम्मट्ठेसु अपरिमियणिहाणं बूया। [४]तत्थ 20 अपुण्णामेसु अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे य समं बूया। भिण्णे दसक्खे पुव्वाधारिते दो वा चत्तारि वा अट्ठ वा बूया। समे पुव्वाधारिते दसक्खे वीसं वा [चत्तालीसं वा] सट्ठिं वा असीतिं वा बूया। वीसासु समासु पुव्वाधारितासु दो वा चत्तारि वा छ या अट्ठ वा सताणि बूया। तधा सहस्साणि तधा सयसहस्साणि तधा कोडीओ तधा अपरिमिते एतेण [५]वीयगमेण दसक्खभिण्णादी जाव अपरिमितो त्ति सव्वं समे आधारिते समणुगंतव्वं भवति। तत्थ थीणामेसु चलेसु लुक्खेसु वज्झेसु सुक्खेसु णीहारेसु समग्गेसु चेव सद्द-रूवपादुब्भावेसु विसमो- 25 पलद्धीसु चेव विसमं बूया। तत्थ भिण्णे दसक्खे विसमे पुव्वाधारिते एक्कं वा तिण्णि वा पंच वा सत्त वा णव वा बूया। दसक्खे पुव्वाधारिते दस वा तीसं वा पण्णासं वा सत्तरिं वा णउतिं वा बूया। एवं भिण्णसतप्पमाणे विगले दसक्खेसु पुव्वाधारितेसु सव्वमणुगंतव्वं भवति। तत्थ सतप्पमाणे विगले पुव्वमाधारिते सयं वा तिण्णि वा सताणि ◁ पंच [६] वा सताणि ▷ सत्त वा सयाणि णव वा सयाणि बूया। एवं भिण्णसहस्सप्पमाणविगलेसु एतेसु पुव्वाधारितेसु समणुगंतव्वं भवति। एवं विगलसहस्सप्पमाणं भिण्णसहस्सप्पमाणं भिण्ण- 30

१ रायित्तं हं॰ त॰॥ २-३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं॰ त॰ एव वर्त्तते॥ ४ तत्थ पु॰ सि॰॥ ५ वीयरागेण हं॰ त॰॥ ६ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥

तत्थ धणसारो भूमीगतो खेत्तगतो आरामगतो ◁ गामगतो ▷ णगरगतो त्ति भूमीगतो एस सारो पुव्वमाधार-
यितव्वो भवति । तत्थ महावकासेसु अयत्तेसु भूमीसारो विण्णेयो । तत्थ सयणा-ऽऽसण-पाण-भोयण-वत्था-ऽऽभरणगते
गिहसारं बूया । तत्थ चतुरस्सेसु खेत्तसारं बूया । उवग्गहणेसु आरामसारं बूया । रायगते विजयगते अव्वत्ते गामसारं
बूया । रायगते विजयगते अव्वत्ते णगरसारं बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे रज्जसारं बूया । इति भूमीगतो धणसारो
5 विण्णेयो ।

तत्थ पाणसारो धणसारो दुविधो आधारयितव्वो भवति—मणुस्ससारो १ तिरिक्खजोणियसारो चेव २। तत्थ
सव्वसज्जीवगते पाणसारं बूया । तत्थ उज्जुभागेसु सव्वमणुस्सगते य मणुस्ससद्द-रूवपादुब्भावेसु य मणुस्ससारं बूया ।
[3] तत्थ तिरियामासे सव्वतिरियजोणिगते सव्वतिरिक्खजोणियसद्द-रूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणिगतं सारं बूया ।

तत्थ तिरिक्खजोणियगतो सारो णातव्वो भवति—अस्सा हत्थी गो-महिसं अयेलकं खरोट्टमिति विण्णेयं । तत्थ
10 सव्वसिंगिगते सिंगिपडिरूव-सद्दपादुब्भावे हत्थि-गो-माहिसं अयेलकमिति विण्णेयं भवति । तत्थ तिणभोयिसु तिणभोयी
विण्णेया । मंस-रुधिरभोयीसु हत्थी विण्णेया । कण्हेसु हत्थी वा मासा या विण्णेया । खत्तिसु हत्थी वा अस्सा वा
पसू वा विण्णेया । सेतेसु खरा विण्णेया । सामेसु उट्टा विण्णेया । गहणेसु अयेलकं विण्णेयं । उपग्गहणेसु अस्सा
गो-माहिसं उट्ट-खरे बूया । आकासेसु अगहणेसु य कायवंतेसु हत्थी विण्णेया । मज्झिमकायेसु अस्सा गो-माहिसा
उट्टा य विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु खरा विण्णेया । पच्चवरकायेसु अयेलका विण्णेया । इति तिरिक्खजोणिगतो
15 मणुस्सगतो दुपद-चतुप्पदगतो पाणसारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ धणसारो अज्जीवो सज्जीवो य दुविधो विण्णेयो । वित्थरतो एका(बा)रसविधो भवति—वित्तसारो १ सुवण्ण-
सारो २ रुप्पसारो ३ मणिसारो ४ मुत्तासारो ५ वत्थसारो ६ आभरणसारो ७ सयणासणसारो ८ भायणसारो ९ दव्वोप-
करणसारो १० अब्भुपॅहज्जसारो ११ धण(ण्ण)सारो १२ । इति धणसारो विण्णेयो । तत्थ सव्वसंघातेसु वित्तेसु चतुरस्सेसु य
काहावणसारो विण्णेयो भवति १। पीतकेसु तंबेसु य सुवण्णसारो विण्णेयो २। सेतेसु अग्गेयेसु य रुप्पसारो विण्णेयो ३।
20 अणग्गेयेसु ◁ मणिसारो विण्णेयो ४। आपुणेयेसु ▷ मुत्तासारो विण्णेयो ५। किसेसु वित्थतेसु पुधूसु य सव्ववत्थगते
सव्वतंतुगते चेव वत्थसारो विण्णेयो ६। सामेसु सव्वआभरणगते य आभरणसारो विण्णेयो ७। चतुरस्सेसु कडीयं च
आसणसारो विण्णेयो, पट्टेसु (पट्टेसु) सव्वसत्तेसु य सयणसारो विण्णेयो ८। पुधूसु सव्वभायणपडिरूवगते य भायण-
सारो विण्णेयो ९। हत्थ-पादपरामासे सव्वसिप्पिकगते य उवकरणगते य उवकरणसारो विण्णेयो १०। आहारेसु सव्वेसु
अब्भुपहज्जेसु सद्द-रूवेसु य अब्भुपहज्जाणं अब्भुपहज्जसारो विण्णेयो ११। अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णसारो
25 विण्णेयो १२। चलेसु पाद-जंघे य जाणसारो विण्णेयो । इति धण्ण(ण)सारो सज्जीवो अज्जीवो य दुविधो विण्णेयो
एकारसविधो (बारसविधो) वित्थरेण वक्खातो भवति ।

तत्थ मित्तसारो पंचविधो आधारयितव्वो भवति । तं जधा—संबंधिसु १ मित्ताणि २ वयस्सा ३ थिया ४ कम्म-
कर-भिच्चवग्गो ५ चेति । तत्थ अब्भंतरब्भंतरेसु सव्वसंबंधिगते य संबंधिणो विण्णेयो १ । बाहिरब्भंतरेसु सामेसु य
मित्ता विण्णेया २। सामेसु वयस्सा विण्णेया ३। थीणामेसु थिया विण्णेया ४। पेस्सेसु अंतेवासी विण्णेया, बाहिरेसु बाहिरो
30 कम्मकर-भिच्चवग्गो त्ति विण्णेयो ५ । तत्थ थीसु पुव्वाधारितासु समागमेसु भज्जावग्गो विण्णेयो । सामेसु गमेसु अंतेसु
सहिवग्गो विण्णेयो । पच्चवरकायेसु दासिवग्गो कम्मकरवग्गो त्ति वा विण्णेयो । तत्थ भज्जासु पुव्वाधारितासु बालेयेसु
थणेसु य कोमारीणं भज्जाणं सारं बूया । चलेसु पुणब्भवाणं भज्जाणं सारं बूया । तत्थ पुरिसेसु संबंधिसु य पुव्वाधा-

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ २ °माहारियव्वो हं॰ त॰ ॥ ३ हत्थ सव्व॰ ॥ ४ वा मसा हं॰ त॰ ॥
५ °पट्टेसु° हं॰ त॰ विना ॥ ६ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ७ अण्णेसु हं॰ त॰ ॥ ८ समागमेसु
हं॰ त॰ विना ॥

रितेसु य सव्वप्पसूतेसु पुप्फ-फलेसु पुरिसेसु य पुत्तसारं बूया। एतेसु चेव थीणामेसु कण्णेयेसु कण्णासारं बूया। इति मित्तसारो विण्णेयो भवति।

तत्थ इस्सरियसारे पुव्वाधारिते इस्सरियसारं दुविधं आधारए—अव्वत्तं सुव्वत्तं चेति। तत्थ सुव्वत्तो अधिकरणं णायकत्तं अमच्चत्तं रायत्तं चेति। तत्थ अव्वत्ते इस्सरियसारे पेस्साणं रायपुरिसस्स य पेस्सत्तं बूया। तत्थ अव्वत्तेसु पच्चवरकायेसु चेव संसयं मज्झिमाणंतरेसु पेस्साणं रायपुरिसस्स णिस्सियं इस्सरियसारं बूया। मज्झिमकायेसु थाणप्पत्तं 5 अधिकरणत्थं बूया। कायमंतेसु सेणापतिं वा अमचं वा णायकं वा बूया। एतेसु चेव आहारेसु रायिणं बूया। जधुत्ताहि य थाणज्झाये थाणोवलद्धीहिं इस्सरियसारं बूया। इति इस्सरियसारो विण्णेयो।

तत्थ विज्जासारे पुव्वाधारिते सव्वबुद्धिरसणेसु सव्वविज्जासत्थगते य पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु चेव विण्णेयाणं सत्थाणं वा विज्जासारं बूया। तत्थ कायमंतेसु विज्जासारं गतं बूया। मज्झिमकायेसु उत्तमाणंतरेसु य विज्जाविसुयं बूया। मज्झिमेसु मज्झिमं बूया। मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमजहण्णसारेसु य असमत्तविज्जं बूया। पच्चवरकायेसु 10 जहण्णेसु य विज्जाविलंबितं बूया, विज्जाछित्तं वा बूया। इति विज्जासारो विण्णेयो॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए [सारा]सारो णामाज्झातो वक्खातो चउपन्नासतिमो सम्मत्तो॥ ५४॥ छ॥

[पणपण्णासइमो णिधाणज्झाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिधाणं णाम- 15 ज्झायं। तं खलु वक्खायिस्सामि। तं जधा— ☞ तत्थ अत्थि णिहाणं णत्थि णिहाणं ति पुव्वमाहारयियव्वं भवति। तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे अत्थि णिहाणं ति बूया। तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे अत्थि (णत्थि) णिहाणं ति बूया। ☜[2-3]

तत्थ अत्थि णिधितं ति पुव्वमाधारिते णिधितमट्ठविधमादिसे। तं जधा—भिण्णसतपमाणं भिण्णसहस्सपमाणं ☞ सयसहस्सपमाणं ☜ कोडिपमाणं अपरिमियपमाणमिति। कायमंतेसु उम्मट्ठेसु अपरिमियणिहाणं बूया। तत्थ[4] 20 अपुण्णामेसु अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे य समं बूया। भिण्णे दसक्खे पुव्वाधारिते दो वा चत्तारि वा अट्ठ वा बूया। समे पुव्वाधारिते दसक्खे वीसं वा [चत्तालीसं वा] सट्ठिं वा असीतिं वा बूया। वीसासु समासु पुव्वाधारितासु दो वा चत्तारि वा छ वा अट्ठ वा सताणि बूया। तधा सहस्साणि तधा सयसहस्साणि तधा कोडीओ तधा अपरिमिते एतेण वीयगमेण[5] दसक्खभिण्णादी जाव अपरिमितो त्ति सव्वं समे आधारिते समणुगंतव्वं भवति। तत्थ थीणामेसु चलेसु लुक्खेसु बज्झेसु सुक्खेसु णीहारेसु समग्गेसु चेव सद्द-रूवपादुब्भावेसु विसमो- 25 पलद्धीसु चेव विसमं बूया। तत्थ भिण्णे दसक्खे विसमे पुव्वाधारिते एक्कं वा तिण्णि वा पंच वा सत्त वा णव वा बूया। दसक्खे पुव्वाधारिते दस वा तीसं वा पण्णासं वा सत्तरिं वा णउतिं वा बूया। एवं भिण्णसतप्पमाणे विगले दसक्खेसु पुव्वाधारितेसु सव्वमणुगंतव्वं भवति। तत्थ सतप्पमाणे विगले पुव्वमाधारिते सयं वा तिण्णि वा सताणि ◁ पंचँ वा सताणि ▷[6] सत्त वा सयाणि णव वा सयाणि बूया। एवं भिण्णसहस्सप्पमाणविगलेसु एतेसु पुव्वाधारितेसु समणुगंतव्वं भवति। एवं विगलसहस्सप्पमाणं भिण्णसहस्सप्पमाणं भिण्ण- 30

१ रायिणं हं॰ त॰॥ २-३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं॰ त॰ एव वर्त्तते॥ ४ तत्थ पु॰ सि॰॥ ५ वीयरागेण हं॰ त॰॥ ६ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥

सतसहस्सप्पमाणं भिण्णकोडीप्पमाणं अपरिमितं च विगलप्पमाणं एतेण कमेण जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलब्भ सव्वमेवं विगलप्पमाणं समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ कंसि देसे सि णिधाणं पुव्वमाधारितं ? ति इमाहिं उवलद्धीहिं समणुगंतव्वं भवति–तत्थ उद्धोगिते पासायगतं बूया मालगतं वा पद्धीवंसगतं वा आलग्ग[गतं] वा पागारगतं वा गोपुरगतं वा ☞ अट्टालगयं वा रुक्खगतं वा ☜ पव्वतगतं वा बूया । तत्थ असंखयेसु रुक्खगतं वा पव्वतगयं वा बूया । संखतेसु आमास-सद्द-पडिरूव-पादुब्भावेसु अवसेसाणि बूया । तत्थ सव्वजोधगते सव्वरायगतेसु य पागार-गोपुर-ऽट्टालक-धयगतं बूया । णिग्गमपधेसु धारगयं बूया । सण्णिरुद्धेसु पागारगतं बूया । पविट्ठेसु अट्टालगगतं बूया । सयणासणे उवविट्ठे-संविट्ठेसु पासादगतं बूया । सव्वदिव्वजोणिगते देवतायतणगतं बूया । केस-मंसु-सव्वमूलगते य गिहणिस्सितं बूया । णिद्धेसु कूविअणिधितं बूया । गंभीरेसु कूवियणिधितं बूया । उपद्दुतेसु उद्धितपद्धे रण्णे वा णिधितं बूया । गहणेसु गहणंसि अरण्णगतं णिधितं बूया । उवगाहणेसु आरामगतं णिधितं बूया । आकासेसु आकासे णिधितं बूया । गहणाणं आकासाण य सैमामासे जणपदगतं वा अरण्णाणं वा सीमंतिकासु वा ☞ आरामसीमंतिकासु वा ☜ णिधितं बूया । चतुरस्सेसु संकट्ठेसु खेत्तगतं णिधितं बूया । इति थावराणि णिधिताणि बूया । अब्भंतरेसु गत्तेसु दीहेसु रच्छागतं णिधितं [बूया] । परिमंडलेसु णिवेसणंसि णिधितं बूया । पुरिमेसु रायमग्गे णिधितं बूया । कायमंतेसु रायमग्गे णिधितं बूया । मज्झिमकायेसु रायमग्गसमासु रच्छासु णिधितं बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु खुड्डिकासु रच्छासु णिधितं बूया । पच्चवरकायेसु णिक्कुडरच्छासु णिधितं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु अब्भंतरब्भंतरे णिवेसणे णिधितं बूया । मत्थकेसु मालगतं बूया । कण्ठेसु आलग्गगतं बूया । उद्देसु कुड्डगतं बूया । केसेसु णिव्विगतं [बूया] । णासायं णत्थणपोरुसे वा पणालीगतं बूया । अंतेसु गंभीरेसु कुसी[ग]यं ति बूया । पाल्डुम्मि डुंडेसु य वच्चाडगतं ति बूया । उदरे मुखे वा गब्भगिहगतं [बूया] । पुरत्थिमेसु अंगणगतं बूया । ☜ पच्छिमेसु पच्छावत्थुगतं बूया । ☞

कंसि भायणंसि पुव्वमाधारियंसि ?–तत्थ मूलजोणिगते कट्ठभायणगतं बूया । धातुजोणीयं सारमंतेसु य लोहीगतं वा कडाहगतं वा थरंजरगतं वा कुंडगतं वा उक्खलिगतं वा रक्किगतं वा लोहीवारगतं वा बूया । तत्थ महावकासेसु उट्टियं वा लोहिं वा कडाहकं वा बूया । मज्झिमकायेसु कुंडगतं वा उक्खलिगतं वा वारगतं वा लोहवारगतं वा बूया । पच्चवरकायेसु आयमणी वा सत्थिआयमणी वा करुकगतं वा कडुलुंडिगतं वा णिधाणं बूया । एतेसामेव तिण्हं सण्णिधाणाणं दढामासेसु तत्थ तिविधं पि य भायणं बूया । तत्थ पडिरूवेहिं आमासेहि य मूलजोणी-धातुजोणीउवलद्धीहिं संठाणेहि य भायणगतं बूया । वित्थडेसु भूमीयं णिधितं बूया । तत्थ ओमज्जितेसु अणाहारेसु अण्णेहिं हरितं णिधियं बूया । ठितामासेसु पच्छा णीहारेसु णिधिट्ठाणा विप्पणट्ठं बूया । केवलणीहारेसु णत्थि णिधितं ति बूया । अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पच्चे णिधितं ति बूया । तत्थ यज्झामासे चलामासे लुक्खामासे वण्णामासे अप्पण्णे णिधितं ति बूया । सुभा-ऽसुभेसु पत्तं णिधिं अण्णेहिं हरितं ति बूया । असुभेसु पुव्वपादुब्भावेसु पच्छा सुभेसु पुव्वमपरिभिट्ठो णासो पविहिसि[11] णिधिं ति बूया । एवं गणणापरिसंखाय देस-भागोपलद्धीहिं भाजणोपलद्धीयं दिसाउपलद्धीयं अप्पणीयक-परायकोपलद्धीहिं लंभ-विप्पणास-णट्ठ-पडिलंभोपलद्धीहि य आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं सव्वं समणुगंतव्वं भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिधाणो णामाज्झातो वक्खातो भवति पणपण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ ५५ ॥ छ ॥

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ °ट्ठाणं सं° हं० त० ॥ ३ समासेण जण° हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ रडियासु हं० त० विना ॥ ६ णिव्वगतं हं० त० ॥ ७ °रीसगतं हं० त० विना ॥ ८ कुखेसु हं० त० विना ॥ ९ ☜ ☞ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० अट्टिकं वा लोहिकं वा हं० त० ॥ ११ वा धारकगतं वा कुण्डु° हं० त० ॥ १२ रुढामासे हं० त० ॥ १३ निधितं ति सि० ॥

[छप्पण्णासइमो णिव्विसुत्तज्झाओ]



णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिव्विसुत्तं णामाज्झायं । तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि वद्धं णत्थि वद्धं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे उज्ञोगिते ओहसिते माता-पितिसद्द-रूवपादुब्भावे उक्कुट्ठे अप्फोडिते णवपुण्णामपहट्ठ-तुट्ठ-पमुदग्गे पुप्फे फले वा उवलद्ध-संत-अत्थिसद्दपादुब्भावे अत्थि वद्धं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे उक्कासिते खुधिते णिम्मज्जिते णिल्लिखिते[1] पकुट्ठे पम्मुए अवमट्ठे अवलोयिते ओलोगिते ओसारिते अणुदत्ते अपमुदग्गे अपहट्ठे पुप्फे फले वा पादुब्भूते एवंविधे वा ☞ पडिरूव-सद्दपादुब्भावे आवरण-असंत-णत्थिसद्द ☜ पाउब्भावे णत्थि वद्धं ति बूया । तत्थ वद्धे पुव्वाधारिते वद्धं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं १ मूलजोणीगतं २ धातुजोणीगतं ३ । तत्थ जधुत्ताहिं पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणीउवलद्धीहिं पाणजोणी य [मूलजोणी य] धातुजोणी य उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ पाणजोणीगते पुव्वाधारिते मुत्तिकं संखभंडं गवलभंडं वालमयं दंतमयं अट्ठिकमयमिति उवलद्धव्वं भवति । एताणि सव्वाणि आधारयित्ता पत्तेगं जधुत्ताहिं ⌐ उवलद्धीहिं ⌐ आमास-सद्द-रूवोपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति ।

मूलजोणीगते पुव्वाधारिते तं चतुव्विधमाधारये—मूलगतं खंधगतं अग्गगतं पत्तगतमिति फलगतमिति । एतं एवमादि चतुव्विधं मूलजोणीगतं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं पत्तेकसो पत्तेकसो आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वं समणुगंतव्वं भवति । तत्थ धातुजोणिगते पुव्वाधारिते तं दुविधमाधारये—मणिधातुगतं चेव ⌐ लोहधातुगतं चेव । ⌐ तत्थ सव्वलोहधातुपडिरूवेण तस्सद्दपादुब्भावेण चेव लोहधातुगतं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ सव्वमणिधातुपडिरूवेण सव्वमणिधातुगतं उवलद्धव्वं भवति । पुणरवि धातुगतं दुविधमाधारयितव्वं भवति—अग्गेयमणग्गेयं चेति । दुविधमवि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति—तत्थ अग्गेयाणि सव्वलोहगयाणि लोहियक्खो पुलओ गोमेदओ मसारगल्लो खारमणी चेव, अवसेसाणि धातु अणग्गेयेसु उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं सव्वलोहाइं सव्वमणीसु य उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ घट्ठेसु मणिं वा संखभंडं वा पवालयं वा बूया । ओमत्थिते पर(रि)मत्थिते सव्वविद्धपडिरूवे य विद्धभंडं बूया । मुत्ताओ य आधायितेण अविद्धभंडं बूया । तत्थ सासेसु सव्वाभरणगते चेव आभरणगतं बूया । तत्थ कोट्टिते खोडिते दंतणहे अंजण-पासाण-सक्करा-लेट्ठुक-ढेढिया-मच्छक-फड्डादिसु सव्वकढिणगते सव्वकडगए सव्वचुण्णगते सव्वंधणपडिरूवउवकरणगते चेव धणं बूया । उद्धं णामीय काहावणे बूया । अधो णामीय णाणकं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे सव्वसारगते सव्वकाहावणोपकरणगते य काहावणे बूया । तत्थ काहावणेसु पुव्वाधारितेसु उत्तमेसु उत्तमयत्तिए बूया, मज्झिमेसु मज्झिमयत्तिए बूया, जहण्णेसु जहण्णयत्तिए बूया, साधारणेसु उत्तममज्झिमजहण्णेसु साधारणयत्तिए बूया, आदिमूलेसु पुराणे बूया, वालेसु णवाए बूया । तत्थ बज्झामासेसु असारगते य सव्वणाणकपडिरूवगते य णाणकं बूया । तत्थ णाणए पुव्वाधारिते कायमंतेसु सव्वमासकपडिरूवगते य मासए बूया, मज्झिमकाएसु अद्धमासकपडिरूव-सद्दपादुब्भावे य अद्धमासए बूया, मज्झिमाणंतरकाएसु सव्वकाकणिपडिरूवगते य काकणिं बूया, पच्चवरकाएसु सव्वअट्ठपडिरूवगते य अट्ठातो बूया । तत्थ अब्भंतरेसु छेए बूया, बाहिरब्भंतरेसु पत्तेये बूया, बाहिरेसु बाहिरबाहियं बूया, कण्हेसु लोहं बूया, फालितेसु गाढं बूया, दढेसु सारमंते बूया, चलेसु अप्पसारं बूया, चतुरस्सेसु चतुरस्सं बूया, वट्टेसु वट्टं बूया, लेहागते लेहागतं चित्तं बूया, सण्हेसु अप्पलक्खणं बूया, थलेसु उत्ताणलक्खणं बूया, उविद्धेसु उविद्धलक्खणं बूया । एतेसु अक्खरठाणाणि भवंति ।

---

१ °ते पम्हुत्ते अव° हं० त० ॥ २ पादुब्भावे पर्थ° हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४–५ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६–७–८ विद्धभं हं० त० ॥ ९ °व्वडंकग° हं० त० सि० ॥ १० °व्वचण्णप° हं० त०, °व्वधण्णप° सि० ॥ ११ वण्णं हं० त० ॥ १२ °हण्णसाधा° हं० त० ॥ १३ °सु यत्तिये बूया, बाहिरबाहिरे हतं बूया, हं० त० विना ॥ १४ अप्पासा° हं० त० विना ॥

ऍत्थं एक्कक्केसु गत्तेसु एकाभरणे एक्कोपकरणे एक्कचरेसु सत्तेसु एक्कीणियं एक्कंगुलिग्गहणे एक्कसाहागते य एक्कं बूया। तत्थ दंडेसु गत्तेसु जमलाभरणे जमलोवकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु बिअंगुलिग्गहणे विसाहागते सव्वबिगपडिरूवगते य दुवे बूया। तत्थ तिए भमुहासंगयए णासाचूलायं पोरिसे. तियंगुलिग्गहणे सव्वतियपडिरूव-सद्दपादुब्भावे य तिण्णि बूया। तत्थ चतुरस्सेसु चतुक्केसु सव्वचतुप्पदेसु चतुरंगुलिग्गहणे. पादतल-पाणितलेसु सव्वचतुसाहागते सव्व-
5 चतुक्कपडिरूवे य चत्तारि बूया। तत्थ दंतेसु थणेसु अंसे मुट्ठीकरणे फियग्गहणे पंचकपरामासे पंचकपडिरूवेसु य पंच बूया। तत्थ गंडे मणिबंधणे गोप्फासु छक्कपडिरूवे य छ बूया। तत्थ सोणीयं कण्णेसु पस्सेसु कुक्खीसु य सत्तकपडिरूवे य सत्तकं बूया। तत्थ णिडाले कण्ठे उरमज्झे हिदए णाभीयं अट्ठकपडिरूवे य अट्ठकं बूया। तत्थ चतुक्क-पंचकपरा-मासे एक्कके अट्ठगसहिए बिए सत्तगसहिए तिए छक्कगसहिते णवगपडिरूव-सद्दपादुब्भावे य णव बूया। तत्थ पंचगदंडो-दीरणे पंचकजुवलकपरामासे एकए णवकसहिते बिए अट्ठगसहिते चउके छक्कगसहिते दस बूया। एवं एक्कारसकसहिते
10 बारसक-तेरसक-चोद्दसक-पण्णरसक-सोलसक-सत्तरसक-अट्ठारसक-एकूणवीसाका वग्गा आमास-पडिरूवसंजोगेहिं पडि-रूव-सद्द-आकारपादुब्भावेहि य एक्कुत्तरवड्ढीय णेतव्वा भवंति। तत्थ अंसफलए कोप्परे जण्णूसु वीसं बूया। तूरुमज्झे पणुवीसं बूया। पट्ठीयं तीसं बूया। अंतरोदरेण पणतीसं बूया। णाभीयं चत्तालीसं बूया। उवरि णाभीयं पणतालीसं बूया। उवरि णाभीयं अंगुलेसु पण्णासं बूया। हेट्ठा हितयस्स पंचावण्णं बूया। हियए सट्ठिं बूया। उवरिं हियस्स पंचसट्ठिं बूया। अक्खए सत्तरिं बूया। गीवामज्झे पण्णत्तरिं बूया। हणु-कवोले असीतिं बूया। उत्तरोट्ठे
15 पंचासीतिं बूया। भमूसु णउतिं बूया। णिडाले पंचाणउतिं बूया। सीसे सतं बूया। बाहुमज्झे उरमज्झे य तीससयं बूया। तालुये जिब्भायं वासंते मुद्दे त्ति सहस्सं बूया। गीते विप्पेक्खिवे विजंभिते सहस्समेतं बूया। पुव्वदिट्ठेण चेव कमेण अक्खट्ठाणाणि यधुद्दिट्ठाणि एकुत्तरियाय वड्ढीय समत्त-भिण्णोवलद्धीहिं चेव आधारयित्ता आधारयित्ता काहावणा णाणकोवलद्धीओ य आमास-पडिरूवसंजोगोपलद्धीहिं आकार-सण्णा-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं सव्वं समणुगंतव्वं भवति।

20 तत्थ 'कंसि बद्धं ?' पुव्वमाधारिते णासायं थणेसु पोरिसे त्ति थैविकाय त्ति बूया। मुखे पिट्ठते णाभीयं अक्खीसु त्ति चम्मकोसगतं बूया। अवहत्थेसु कुक्खीसु त्ति पोट्टलिकागतं बूया। दढेसु बद्धं बूया। चलेसु मुक्कं बूया। ओवेढिय-परिवेढिते अट्टियगतं बूया। केस-मंसुगते सुत्तबद्धं बूया। अंगुलीसु चक्कबद्धं बूया। तणूसु हेत्तिबद्धं बूया। अब्भंतरेसु सकं बूया। बाहिरेसु परकं बूया। बाहिरब्भंतरेसु सक-परकसाधारणं बूया। कायमंतेसु सुवण्णप्पमाणं बूया। मज्झिमकायेसु अद्धसुवण्णप्पमाणं बूया। मज्झिमाणंतरकायेसु सुवण्णमासकप्पमाणं बूया। पच्चवरकायेसु
25 सुवण्णकाकणिं बूया। अब्भंतरेसु पलप्पमाणं बूया। बाहिरब्भंतरेसु मिण्णपलप्पमाणं बूया। अणिव्वुतेसु अपरिणिव्वुतिं बूया। ☞ णिव्वुएसु णिव्वुयं बूया। णिव्वुएसु णिव्वियं बूया। ☜ आहारेसु अचिरलद्धं बूया। णीहारेसु चयगयं बूया। चीणामेसु अंद्धद्दितमेव बूया॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिव्वुसुत्तो णामाज्झायो वक्खातो भवति छप्पण्णासतिमो॥ ५६ ॥ छ ॥

---

१ पर्क प° हं० त०॥ २ णासाभूयालं पो° हं० त०॥ ३ पुव्वुदिट्ठेण हं० त०॥ ४ थविकाय हं० त०॥ ५ ओयेट्टित-परियेट्टिते उअट्टि° हं० त० विना॥ ६ अणिवुतेसु अपरिणिव्वुतिं पं २ पु०। अणिव्वएसु अपरिणिव्वयं हं० त०॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ८ °सु चय° हं० त०॥ ९ अद्धद्दियं मेयं बू° हं० त०॥

[सत्तपण्णासइमो णट्ठकोसयज्झायो]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाए णट्ठाणट्ठो णामाज्झायो । तं खलु भो! तमणुवक्खाइस्सामि । तत्थ णट्ठं ण णट्ठमिति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ णेत्तपडिप्पिधणे सोत्तपडिप्पिधणे पाणपडिप्पिधणे मुहपडिप्पिधणे अट्ठाणपडिप्पिधणे छिद्दपडिप्पिधणे वज्झामासे चलामासे अणामिकागहणे पल्हत्थे पसंखित्ते मुत्ते पकिण्णे णिक्खित्ते ववादिण्णे वेद्धमुत्ते अवसक्किते अवणामिते विणासिते 5 णट्ठ-हरियसद्दपादुब्भावे णट्ठं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे आहारेसु अणट्ठ-हरितपादुब्भावे चेव ण णट्ठं ति बूया ।

तत्थ णट्ठे पुव्वाधारिते णट्ठं तिविधमाधारये—णट्ठं वा पम्हुट्ठं वा हरितं वा । तत्थ अणामिकागहणे वंधणमोक्खणे दाणापत्तिगते णिक्खेवउप्पोवणे धज्झे णट्ठो त्ति बूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधाणे णेत्तपडिप्पिहाणे ☞ घाणपडिप्पिहाणे ☜ णप्फडिते मुत्ते सयं भट्ठे पलोलिते पम्हुट्ठं ति बूया । तत्थ चलामासे णीहारेसु य सव्वचोरपडिरूव- 10 सद्दपादुब्भावेसु य हरितं बूया ।

तत्थ णट्ठं दुविधं—सज्जीवं अज्जीवं चेति । तत्थ अब्भंतरामासे चलामासे णिद्धामासे पुण्णामासे सव्वसज्जीवगते चेव सज्जीवं णट्ठं बूया । तत्थ वज्झामासे दढामासे लुक्खामासे तुच्छामासे सव्वअज्जीवगते चेव अज्जीवं णट्ठं बूया । तत्थ सज्जीवे णट्ठे पुव्वाधारिते सज्जीवं णट्ठं दुविधमाधारये—मणुस्सजोणीगतं तिरिक्खजोणिगतं चेव ।

तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियविलोगिते सव्वतिरिक्खजोणिगते पडिरूव-सद्दपादुब्भावे सव्वतिरिक्खजोणी- 15 परामासे सव्वतिरिक्खजोणीसद्दगते सव्वतिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीणामधेज्जे थी-पुरिसगते तिरिक्खजोणीणामधेज्जे उवकरणे तिरिक्खजोणीउवकरणे चेव तिरिक्खजोणी णट्ठं बूया । तत्थ तिरिक्खजोणीयं पुव्वाधारितायं तिरिक्खजोणिं तिविधमाधारये—पक्खिगतं चतुप्पदगतं परिसप्पगतं चेति । तत्थ उद्धंगीवा-सिरो-मुहामासे णक्खत्त-चंद-सूर-गह-तारागणपडिरूव-सद्दपादुब्भावे उद्धंभागगते सव्वपक्खिपादुब्भावे सव्वपक्खिपरामासे सव्वपक्खिसद्दगते सव्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे ☞ सव्वपक्खिणामधेज्जे थी-पुरिसगए ☜ सव्वपक्खिणामधेज्जोवकरणदव्वगते सव्व- 20 पक्खीउवकरणे चेव पक्खि नट्ठं बूया । तत्थ सव्वचतुरस्सेसु वा चतुप्पदेसु वा चतुप्पदपादुब्भावे चतुप्पदपरामासे चतुप्पदसद्दगते य चतुप्पदणामधिज्जोदीरणे चतुप्पयमये उवकरणे चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसे चतुप्पद-उवकरणदव्वगते चउप्पदसद्द-रूवपादुब्भावेसु चउप्पयं णट्ठं बूया । तत्थ कण्हेसु सव्वदीहेसु सव्वपरिसप्पपादुब्भावे परिसप्पपरामासे परिसप्पसद्दगते सव्वपरिसप्पणामोदीरणे परिसप्पमये उवकरणे परिसप्पउवकरणगते परिसप्पणामधेज्जे थी-पुरिससद्दोपकरणे परिसप्पसद्द-रूवपादुब्भावे चेव परिसप्पं नट्ठं ति बूया । 25

तत्थ पक्खिसु णट्ठेसु पुव्वाधारितेसु जलचरं थलचरं ति पुव्वमाधारयितव्वं । तत्थ आपुणेयेसु सव्वजलयेसु सव्वजलचरेसु जलचरजलयपरामासे जलचरजलयणामोदीरणे जलचरजलयणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसदव्वोवकरणे सद्द-रूवपादुब्भावेसु जलचरं पक्खि नट्ठं ति बूया । तत्थ लुक्खेसु थलेसु य थलयेसु य थलचरेसु य सत्तेसु थलय-थलचरपरामासे थलयथलचरसद्दणामोदीरणे थलयथलचरउवकरणपादुब्भावे सव्वथलयथलचरणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसे य थलचरउवकरणसद्द-रूवपादुब्भावे थलचरं पक्खि णट्ठं बूया । तत्थ अब्भंतरेसु आहारेसु सव्वगामेसु 30

१ °वक्खस्सा° हं० त० ॥ २ णेत्तपडिप्पिधणे मुहपडिप्पिधणे अयाणपडिप्पिधणे वज्झा° हं० त० विना ॥ ३ पलामासे हं० त० ॥ ४ वद्धमित्ते हं० त० ॥ ५ °पाणणे हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ °भद्दे प° हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ °घेज्जेसु य थी° हं० ॥

य गामवसिंग णट्ठं बूया । तत्थ चलेसु णीहारेसु य सव्वआरण्णेसु आरण्णपादुब्भावेसु य आरण्णं पक्खिं णट्ठं बूया । तत्थ कायवंतेसु कायवंतं, मज्झिमकायेसु मज्झिमकायं, मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमाणंतरकायं, पच्चवरकायेसु पच्चवरकायं पक्खिं णट्ठं ति बूया । सेतेसु सेतं, तंबेसु तंबं, पीतेसु पीतं, सेवालएसु सेवालयं, णीलेसु णीलं, फरुसेसु फरुसं, चित्तेसु चित्तं, पियदंसणेसु पियदंसणं, अदंसणीयेसु अदंसणीयं, घोसवंतेसु घोसवंतं, अघोसवंतेसु अघोसवंतं पक्खिं णट्ठं ति बूया । मधुररुतेसु मधुररुतं, कडुयरुतेसु कडुयरुतं, दारुणेसु दारुणं, मदूसु मदुं, अविदेसुमविदं, मंस-रुहिरभोयीसु मंस-रुहिरभोयिं, पुप्फ-फलभोयीसु पुप्फ-फलभोयिं, अण्णूसु धण्णभोयिं णट्ठं ति बूया । इति पक्खिगतं णट्ठं बूया ।

तत्थ चउप्पदेसु णट्ठेसु गम्म आरण्ण त्ति दुविधा आहारा पीतआहारा पीत [illegible] चेवं ति । तत्थ अब्भंतरेसु आहारेसु सव्वगम्मेसु य गम्मचउप्पदं णट्ठं ति बूया । ⌈ तत्थ चलेसु णीहारेसु सव्वआरण्णेसु आरण्णचतुप्पदं णट्ठं ति बूया । ⌉ तत्थ सव्वउण्णतेसु सिंगीसु कोसिंगलगते य सिंगीचतुप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ अधोभागेसु असिंगीसु ⌈ असिंगि ⌉ चतुप्पदं णट्ठं बूया । असंगमिरागते पयप्फलीसु असिंगिचतुप्पदं णट्ठं बूया । तत्थ कायवंतेसु कायवंतं, मज्झिमकायेसु मज्झिमकायं, मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमाणंतरकायं बूया । पच्चवरकायेसु पच्चवरकायं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ सेतेसु सेतं, तंबेसु तंबं, पीतेसु पीतं, सेवालयेसु सेवालयं, ⌈ पण्डूसु ⌉ पण्डुं, णीलेसु णीलं, कण्हेसु कण्हं, फरुसेसु फरुसं, चित्तेसु चित्तं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । थीणामेसु थीणामं, पुण्णामेसु पुण्णामं, णपुंसएसु णपुंसगं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । इति चतुप्पदगतं णट्ठं ।

तत्थ परिसप्पे णट्ठे पुच्छापारिते तिविधमाधारये—दव्वीकरं मंडलिं राइण्णं चेति । तत्थ पायवंतेसु दव्वीयरं णट्ठं ति बूया । परिमंडलेसु परिमंडलिणो णट्ठे बूया । तिरिच्छीणराईसु तिरिच्छीणराइणो णट्ठे त्ति बूया । उड्ढेसु उड्ढराइणो णट्ठे त्ति बूया । तत्थ कायवंतेसु कायवंता, मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया, मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमाणंतरकाया, पच्चवरकायेसु पच्चवरकाये परिसप्पे णट्ठे त्ति बूया । सेतेसु सेता, तंबेसु तंबा, पीतेसु पीता, सेवालेसु सेवाला, पण्डूसु पण्डू, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसएसु णपुंसगा परिसप्पे णट्ठे त्ति बूया । इति परिसप्पगतं णट्ठं ति बूया । इति तिरिक्खजोणिगतं णट्ठं ।

तत्थ मणुस्सजोणीयं पुच्छापारिताणं उड्ढभागे उड्ढअपेक्खिते उड्ढुद्दोइते गत्तअब्भंतरगते य मणुस्सं णट्ठं ति बूया । तत्थ मणुस्से णट्ठे पुच्छापारिते अज्जो पेस्सो त्ति पुच्छापारत्तिजं भवति । तत्थ उड्ढं णाभीयं गत्तअब्भंतरगते य अज्जयं णट्ठं ति बूया । तत्थ अधो णाभीयं गत्तपेस्सगते य पेस्सजातं णट्ठं ति बूया । पुण्णामेसु पेस्सेसु दासं णट्ठं ति बूया । ⌈ थीणामेसु पेस्सेसु दासिं णट्ठं ति बूया । ⌉ एवं पेस्सगते पुच्छापारिते णायव्वं भवतीति । अज्जगते पुच्छापारिते बंभणो खत्तिओ वेस्सो सुद्दो त्ति पुच्छापारत्तिजं भवति । तत्थ बंभेज्जेसु बंभेसु बंभणं णट्ठं बूया । खत्तियेसु खत्तियं णट्ठं ति बूया । वेस्सेयेसु वेस्सं णट्ठं ति बूया । सुद्देयेसु सुद्दं णट्ठं ति बूया । वण्णेसु पुच्छापारितेसु रत्तेसु रत्तं, कण्हेसु कण्हं, गामेसु गामं, बालग्गामेसु बालग्गामं, सुद्दग्गामेसु सुद्दग्गामं, [illegible] बूया । [illegible] पुच्छापारिते दीहेसु दीहं, हस्सेसु हस्सं, थूलेसु थूलं, किसेसु किसं, [illegible] मज्झेसु मज्झं, मज्झिमवयेसु मज्झिमवयं, महल्लेसु महल्लगं णट्ठं मणुस्सं ति बूया ।

तत्थ अब्भंतरो बाहिरो बाहिरब्भंतरो [illegible] दसओ त्ति मणुस्से पुच्छापारिते—तत्थ अब्भंतरेसु आहारेसु य अब्भंतरं बूया, बाहिरेसु बाहिरं बूया, बाहिरब्भंतरेसु मित्तं बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु अप्पणो बंधवं णट्ठं ति बूया, बाहिरबाहिरेसु मित्तमित्तं णट्ठं बूया । अब्भंतरब्भंतरे पुच्छापारिते [illegible] बूया । अथवा

१ [illegible] हं० त० [illegible] ॥ २-३ [illegible] ॥ ४ [illegible] हं० त० [illegible] ॥

गीवाय उद्धं कडीय तुल्लजोणीयं बूया। अधत्था कडीय पच्चवरजातीयं बूया। तत्थ गुरुजोणीयं पुव्वाधारितायं अज्जयं वा पितरं वा आयरियं वा णट्ठं ति बूया। पुण्णामेसु दंडेसु पेत्तिज्जं वा मातुलं वा उवज्झायं वा णट्ठं बूया। थीणामेसु दंडेसु मातुस्सियं वा पितुस्सियं वा उवज्झायभगिणिं वा णट्ठं ति बूया। पुणो विसेसितेसु दंडेसु थीणामेसु चुल्लमातुयं वा उवज्झायं वा बूया। अब्भंतरेसु दंडे पितुस्सियं वा उवज्झायभगिणिं वा णट्ठं बूया। बाहिरेसु दंडेसु थीणामेसु पितुजातिं वा उवज्झायजातिं वा बूया। तत्थ उत्तमुत्तमेसु अब्भंतरब्भंतरेसु य पुण्णामधेज्जेसु अज्जकं वा उवज्झायं 5 वा णट्ठं बूया। उत्तमुत्तमेसु थीणामेसु अज्जियं वा उवज्झायमातरं वा उवज्झायउवज्झायिणिं वा णट्ठं बूया। इति गुरुजोणी णट्ठा वक्खाता भवति।

तत्थ तुल्लजोणीसु भाता वा वयस्सो वा भगिणिं वा [1]संलो वा भगिणिं वा पतिं वा मेधुणो वा देवरो वा पतिजेट्ठो वा भातुवयस्सो वा [2]☞ जेरस(वयस्स)वयस्सो वा ☜ णट्ठो विण्णेयो भवति। तत्थ [3]दंडेसु भाता विण्णेयो। वामेसु पुण्णामेसु भगिणिपति विण्णेयो। दक्खिणेसु पुण्णामधेज्जेसु मातुलपुत्तो विण्णेयो। वामेसु पुण्णामधेज्जेसु 10 मातुस्सियापुत्तो विण्णेयो। चलेसु वज्झेयेसु य पुण्णामेसु वयस्सो विण्णेयो। [4]दंडेसु चलेसु पुण्णामधेज्जेसु य भातुवयस्सो विण्णेयो। बाहिरबाहिरेसु चलेसु पुण्णामेसु य वयस्सवयस्सो विण्णेयो। तत्थ थीणामेसु तुल्लजोणीयं भज्जं वा सौलिं वा भगिणिं वा मातुस्सियाधीतरं वा पितुस्सियाधीतरं वा पित्तियधीतरं वा जातरं वा णणंदरं वा सहिं वा जारिं वा णट्ठं जाणिय। तत्थ अब्भंतरेसु चलेसु भुज्जा वा भातुज्जा वा विण्णेया भवति। बाहिरब्भंतरेसु चलेसु य सही वा सही वा विण्णेया। बाहिरेसु चलेसु य थीणामेसु जारिं विण्णेया। तत्थ [5]दंडेसु भगिणिं वा भगिणिगतं वा बूया। 15 तत्थ पुण्णामधेज्जेसु सोदरिं वा महपितुकधीतरं वा पित्तियधीतरं वा मातुलधीतरं वा जोणिभगिणिं वा बूया। तत्थ अब्भंतरेसु सोदरियं भगिणिं बूया। उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु महपितुयधीतरं भगिणिं बूया। उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु णामेसु पितियधीतरं भगिणिं बूया। थीणामधेज्जेसु सोदरियं भगिणिं बूया। थीसाधारणेसु पुण्णामेसु मातुलधीतरं बूया। बाहिरेसु चलेसु य जोणिभगिणिं बूया। बाहिरेसु थीसाधारणेसु पितुस्सियाधीतरिं बूया, मातुस्सियाधीतरिं वा। दक्खिणेसु थीणामेसु पितुस्सियाधीतरिं बूया। उदरेसु सोदरिउग्गमेव बूया, दक्खिणपस्से भायरो, वाम- 20 पस्से भगिणीओ बूया। दक्खिणपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठो भाया, ओमज्जिए कणेट्ठो भाता, थिताबासे जमलभातरो विण्णेया। वामपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठं भगिणिं बूया, ओमज्जिते कणिट्ठभगिणीं बूया, थितामासे जमलभगिणीओ बूया। इति तुल्लजोणीणट्ठं वक्खातं भवति।

तत्थ [6]पँचवरजोणीपुण्णामधेज्जेसु पुत्तो [7]वा जामाता वा जामातुयभाया वा ण्हुसा वा भाया वा भागिणेज्जो वा वयस्सपुत्तो वा जोणीपुत्तो वा [8]भत्तिओ वा। तत्थऽब्भंतरेसु पुत्ता विण्णेया। बाहिरब्भंतरेसु दंडेसु भातुपुत्ता विण्णेया। 25 थीणामेसु दंडेसु भगिणीपुत्तो विण्णेया। बज्झेसु थीणामेसु जोणिपुत्ता विण्णेया। वज्झेसु चलेसु वयस्सपुत्ता विण्णेया। तत्थ पच्चवरजोणीयं थीणामधेज्जेसु धिया जोणी धीया वा विण्णेया। तत्थ अब्भंतरेसु थीणामधेज्जेसु धीतरं बूया। बाहिरब्भंतरेसु थीणामधेज्जेसु भातुधीतरं बूया। जमगथीणामोदीरणे भगिणिधीतरं बूया। वज्झसण्णितेसु थीणामधेज्जेसु जोणिभगिणीधीतरं बूया। थीणामेसु वज्झेसु चलेसु य वयस्सधीतरं बूया। थीणामधेज्जसाधारणे जामातरं ण्हुसं वा बूया। पुण्णामेसु अब्भंतरेसु ण्हुसं बूया। इति पच्चवरजोणी णट्ठे [10]वक्खाया भवति। 30

एतेसिं पच्चवरजोणीयं समुद्दिट्ठायं अण्णतरंसि आधारिए अण्णत्तरं णट्ठं बूया। तत्थ 'केण हरितं?' ति आधारितंसि तत्थ णट्ठं आहारेसु। अब्भंतरेसु य अब्भंतरेण हरितं ति बूया। अब्भंतरेसु [11]यमगामासेसु य जो पुच्छेज्ज

१ संभो वा हं० त०॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ३-४ दढेसु हं० त० विना॥ ५ सहिं वा हं० त०॥ ६ दंतेसु हं० त० विना॥ ७ पचत्तर° हं० त०॥ ८ वा जायाभाया जामाउयजाया वा ण्हुसा° हं० त०॥ ९ भवत्तिओ हं० त०॥ १० वक्खातो हं० त० विना॥ ११ यमगामामगामासेसु हं० त०॥

तेणेव हरितं ति बूया। बाहिरब्भंतरेसु णीहारेसु बाहिं वसंतेण हरितं अब्भंतरेण त्ति बूया। अब्भितरबाहिरेसु आहार-णीहारेसु अण्णहिं वसंतेण ☞ बाहिरेणं हरियं ति बूया। ☜ बाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण दिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया। बाहिरबाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण अदिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया। तत्थ णिवेसणे पुव्वाधारिते अब्भंतरेसु णिवेसणगतं, बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु उव्वरकगतं बूया, बाहिरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, बाहिरेसु बहिद्धा णिवेसणस्स त्ति बूया, बाहिरबाहिरेसु बहिद्धा णगरस्स बूया। तत्थ बहिं वा णिवेसणस्स त्ति पुव्वाधारिते अब्भंतरे णगरे पुव्वाधारिते अब्भं-तरेसु णगरगयं बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, अब्भंतरबाहिरेसु बाहिरियागतं बूया, बाहिरेसु आरामगतं बूया, बाहिरबाहिरेसु अरण्णगतं बूया। पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमायं दिसायं बूया। दक्खिणपुरत्थिमेसु दक्खिणपुरत्थि-मायं दिसायं ति बूया। दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं ति बूया। दक्खिणपच्छिमेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं ति बूया। पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं ति बूया। उत्तरपच्छिमेसु गत्तेसु उत्तरपच्छिमायं दिसायं ति बूया। उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं ति बूया। उत्तरपुरत्थिमेसु गत्तेसु उत्तरपुरत्थिमायं दिसायं ति बूया। तत्थ उद्धेसु मालगतं वा रुक्खगतं वा पव्वतगतं वा आरुभितकं वा बूया। अधोभागेसु कूवगतं वा वावीगतं वा तलागगतं वा पवाणगतं वा णदीगतं वा भूमीगतं वा भूमीघरगतं वा णिण्णे वा णिधितं बूया।

तत्थ अज्जीवपेगति अणेकाकारा भवति थाणेण वा णिधाणेण वा। सा तिविधा उवलद्धा—पाणजोणीगता मूलजोणीगता धातुजोणीगता चेति। तत्थ चलामासेसु पाणजोणी विण्णेया सव्वपाणपडिरूवगते य। केस-मंसु-णह-लोमगते मूलजोणी विण्णेया सव्वमूलपडिरूवगते चेव। दढामासेसु सव्वधातुपडिरूवगते चेव धातुजोणी विण्णेया। सा दुविधा विण्णेया—संखता असंखता चेव। तत्थ संखते संखता विण्णेया। असंखते असंखता। सा पुणरवि दुविधा विण्णेया—अग्गेया अणग्गेय त्ति। तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णेया। [अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्णेया।] सा पुणरवि दुविधा विण्णेया—आहारे उवकरणे चेव। तत्थ आहारेसु आहारो विण्णेयो। सव्वभोयणपडिरूवगते चेव णीहारेसु उवकरणं विण्णेयं सव्वउवक्खरगतं चेव। तत्थ पाणजोणीए आहारे दुद्धं दधिं तक्कं णवणीतं कूचियं आमधितं गुलदधिं ☞ रसालादहिं ☜ मंथुं परमण्णं दधितावो तक्कोदणो अतिकूरको मंसं रुधिरं वसा चेति। अवसेसाणि पुव्वुदिट्ठाणि असंखताणि, दुद्धं दधिं चेति असंखताणि। तत्थ णिद्धेसु पाणीयं, णिद्धसाधारणेसु परमण्णं, अणिद्धेसु दधितावो तक्कोदणो वा विण्णेयो। अलुक्खेसु अतिकूरको मंसं ति विण्णेयं। लुक्खेसु वहूरं विण्णेयं एवमादी। इति पाणजोणीगते आहारो विण्णेयो भवति।

तत्थ मूलजोणीगते आहारे साली वीही कोद्दवा कंगू रालका वरका जव-गोधूमा मासा मुग्गा अलसंदका चणका णिप्फावा कुलत्था चणविकाओ मसूरा तिला अतसीओ कुसुंभा सामाका चेति। तत्थ आहारेसु अंतेसु धण्ण-गतमेव णट्ठं बूया। जधुत्ताहिं पुव्वोपलद्धीहिं अणूसु संखतेसु मूलजोणीयं आहारं णट्ठं बूया। जधुत्ताहि भोयणपडले आहारोवलद्धीहिं तत्थ सेते साली वीही सेततिला कुसुंभा सेतसासवा चेति विण्णेया। सामेसु अदसी विण्णेया। तंबेसु कोद्दवा गोधूमा तंबनिप्फावा तिला कुलत्था वा रायसासवा विण्णेया।

तत्थ सव्वण्णगतं तिविधं—तणगतं गुम्मगतं वल्लिगतं ति। तत्थ तणगतं साली वीही कोद्दवा कंगू रालका सामाका तणफलं चेति विण्णेयाणि भवंति। तत्थ गुम्मगते अदसी तिला सासवा चेति विण्णेयाणि। तत्थ वल्लीगते मुग्गा मासा चणका चणविकाओ अलसंदे वा निप्फावा कुलत्था चेति विण्णेया भवंति। इति आहारगतं णट्ठं ति बूया।

तत्थ उवणिद्धेसु कुसणगतं विण्णेयं मास-मुग्ग-अलसंदका-चणविकातं भवति। तत्थ कोलत्थो कंबलिको सांकरसो थूणिंकारसलो दुद्धं दहिं तक्कं अंबिलं ति विण्णेया उपसेका। तत्थ सेतेसु मधुरेसु असंखयेसु य दुद्धं विण्णेया।

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते॥ २ °पमाति हं॰ त॰ विना॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते॥ ४ पुव्वदिट्ठा° हं॰ त॰॥ ५ काल° हं॰ त॰॥ ६ सारकसो हं॰ त॰॥ ७ °का दुद्धं हं॰ त॰ विना॥ ८ उपसिको हं॰ त॰ विना॥

अंबेसु घणेसु असंखतेसु दधिं विण्णेयं भवति । तंबेसु संखतेसु य तक्कं विण्णेयं । पाणजोणीगते सोपरत्ते सोपद्दुते रसगतं विण्णेयं भवति । मूलजोणीगते संखयेसु जूसो विण्णेयो । अच्छेसु कंबलिको विण्णेयो । वापण्णेसु अंबिलं ति विण्णेयं । तत्थ सव्वकोसगए सव्वकोसीधण्णगते सव्वसिंगिगते सव्वसुद्धचूलागते सव्वचेट्टितसिहंडिगते सव्वसंपुड-पेला-पेलिकगते करंडगगते संकोसकगते पणसक-थइआ-पसेव्वकगते सगलिकारसं बूया । तत्थ सव्ववालेयेसु थूणिकारसं बूया । सव्वअंतेसु सागरसं बूया । मुदितेसु पुप्फरसं बूया । पुण्णेसु फलरसं बूया । तत्थ सागगते एतेहिं जेय 5 पादुब्भावे णेतव्वं ॥ सव्वहेट्ठिमेहिं मूलगतं विन्नेयं । सव्वमूलजोणीपडिरूवगते य पा(वा)लेयेसु थूणिकारसो विण्णेयो । तणूसु सागगते चेव सागरसो विण्णेयो । मुदितेसु पुप्फगते य पुप्फरसो विण्णेयो । पुण्णेसु फलेसु फलगते चेव फलरसो विण्णेयो । इति फलजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ पसण्णा णिट्ठिता मधुरको आसवो जगलं मधुरमेरको अरिट्ठो अट्ठकालिका आसवासवो सुरा कुसुकुंडी जयकालिका चेति पाणगतं आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धीहिं जधुत्ताहिं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ पसण्णेसु 10 पसण्णा विण्णेया । सेतेसु कुसकुंडी णिट्ठिता जगलं चेति विण्णेया भवंति–तत्थ सारवंतेसु णिट्ठिता, मधुरेसु कुसुकुंडी, सद्देसु जगलं विण्णेयं भवति । तत्थ मधुरेसु तंबेसु य आसवो विण्णेयो । तंबेसु कण्हसाधारणेसु कसायेसु य मधुरं विण्णेयं । इति एतेसिं एकतरं मज्जं णट्ठं ति बूया । एवं मूलजोणी वक्खातो भवति । पाणजोणी गता आहारजोणी गता चेति ।

तत्थ धातुगते णत्थि आहारो त्ति बूया । तत्थ धाउजोणीगते उवकरणं आभरणं वा विण्णेयं । तत्थ उवकरणं तिविधं–पाणजोणीजं मूलजोणीजं धातुजोणियं चेति । तत्थ पाणजोणियं सुत्तिकं संखागवलमयं दंतमयं सिंगमयं अट्ठिक- 15 मयं वालमयं लोहमयं अट्ठिकमयं सिंगमयं चम्ममयं वालमयं चेति भाजणगतं विण्णेयं । तत्थ अच्छादणाणि कोसेज्जकं आयिकं अविकपत्तुण्णा अजिणपट्टा अजिणप्पवेणी चम्मसाडीओ वालवीरा चेति । इति पाणजोणीआणि उवकरण-भायण-भूसण-ऽच्छादणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तत्थ मूलजोणीआभरणाणि कट्ठमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणीभायणाणि कट्ठमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणियो अँच्छादो कप्पासिकं [ ] येकभंडं वेलुमयं [ ] चेति । एवमेव उवकरणं मूलजोणियं समणुगंतव्वं 20 भवति । इति मूलजोणिओ अँच्छादो आभरणाणि भायणाणि उवकरणाणि य सव्वं समणुगंतव्वं भवति । तत्थ धातुजोणिमयं आभरणं सुवण्णमयं रुप्पमयं तंबमयं हारकूडमयं तपुमयं सीसकमयं काललोहमयं वट्टलोहमयं सेलमयं मत्तिकामयं । तत्थ धातुजोणिमयो अँच्छादो सुवण्णपट्टो सुवण्णखयितो अँच्छादो लोहजालिका चेति । एतेसिं एत्तो एगतरं आधारयित्ता आधारयित्ता जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति ।

तत्थ णिद्धेहिं रसगतं णट्ठं बूया । सुक्खेसु सुक्खं णट्ठं बूया । चलेसु सजीवं णट्ठं बूया । दढेसु धातुगतं णट्ठं 25 बूया । पुण्णामधेज्जेसु पुरिसं णट्ठं बूया । थीणामधेज्जेसु इत्थिं णट्ठं बूया । णपुंसकेसु णपुंसकं नट्ठं बूया । तेणूसु वत्थं नट्ठं बूया । सव्वतंतुगते चेव सामेसु आभरणं णट्ठं बूया । सुकेसु चउरस्सेसु चित्तेसु सारवंतेसु य काहावणे णट्ठे बूया । परिमंडलेसु भायणं णट्ठं बूया । चलणीहारेसु जाणं णट्ठं बूया । पुण्णेसु आहारं णट्ठं बूया । तिरस्सेसु सत्थं णट्ठं बूया । अंतेसु उवकरणं णट्ठं बूया । तंबेसु पीतकेसु य सुवण्णकं णट्ठं बूया । बुद्धीरमणेसु विज्जासत्थगतं णट्ठं बूया । उत्तमेसु उत्तमं णट्ठं बूया । मज्झिमेसु मज्झिमं णट्ठं बूया । जहण्णेसु जहण्णं णट्ठं बूया । 30

तत्थ णट्ठेसु पुव्वाधारिते अब्भंतरणिवेसणंसि कंसि देसंसि भायणंसि ? त्ति । तत्थ थूलंसि अरंजरंसि उट्टिआगतं वा पल्लगतं वा बूया । उवथूलेसु कुडुगतं वा भिज्जरगतं वा उरलिकागतं वा बूया । णातिथूलेसु णातिकसेसु

१ °परित्ते हं० त० विना ॥ २ °रमेरको अरिट्ठो वि अरिट्ठका° हं० त० विना ॥ ३ °मयं वमअट्ठिक° हं० त० ॥ ४ आच्छादो हं० त० विना ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६-७-८ आच्छादो हं० त० ॥ घणेसु वत्थं हं० त० ॥

तेणेव हरितं ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु णीहारेसु बाहिं वसंतेण हरितं अब्भंतरेण त्ति बूया । अब्भितरबाहिरेसु आहार-
णीहारेसु अण्णहिं वसंतेण ☞ बाहिरेण हरियं ति बूया । ☜ बाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण दिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया ।
बाहिरबाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण अदिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया । तत्थ णिवेसणे पुव्वाधारिते अब्भंतरेसु णिवेसणगतं,
बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु उव्वरकगतं बूया, बाहिरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, बाहिरेसु बहिद्धा णिवेसणस्स त्ति बूया,
5 बाहिरबाहिरेसु बहिद्धा णगरस्स बूया । तत्थ बहिं वा णिवेसणस्स त्ति पुव्वाधारिते अब्भंतरे णगरे पुव्वाधारिते अब्भं-
तरेसु णगरगयं बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, अब्भंतरबाहिरेसु बाहिरियागतं बूया, बाहिरेसु आरामगतं
बूया, बाहिरबाहिरेसु अरण्णगतं बूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमायं दिसायं बूया । दक्खिणपुरत्थिमेसु दक्खिणपुरत्थि-
मायं दिसायं ति बूया । दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं ति बूया । दक्खिणपच्छिमेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं
ति बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं ति बूया । उत्तरपच्छिमेसु गत्तेसु उत्तरपच्छिमायं दिसायं ति बूया ।
10 उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं ति बूया । उत्तरपुरत्थिमेसु गत्तेसु उत्तरपुरत्थिमायं दिसायं ति बूया । तत्थ उद्धेसु
मालगतं वा रुक्खगतं वा पव्वतगतं वा आरुभितकं वा बूया । अधोभागेसु कूवगतं वा वावीगतं वा तलागगतं वा
पयाणगतं वा णदीगतं वा भूमीगतं वा भूमीघरगतं वा णिण्णे वा णिधितं बूया ।

तत्थ अज्जीवपंगति अणेकाकारा भवति थाणेण वा णिधाणेण वा । सा तिविधा उवलद्धा—पाणजोणीगता
मूलजोणीगता धातुजोणीगता चेति । तत्थ चलामासेसु पाणजोणी विण्णेया सव्वपाणपडिरूवगते य । केस-मंसु-णह-
15 लोमगते मूलजोणी विण्णेया सव्वमूलपडिरूवगते चेव । दढामासेसु सव्वधातुपडिरूवगते चेव धातुजोणी विण्णेया ।
सा दुविधा विण्णेया—संखता असंखता चेव । तत्थ संखते संखता विण्णेया । असंखते असंखता । सा पुणरवि दुविधा
विण्णेया—अग्गेया अणग्गेय त्ति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णेया । [अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्णेया ।] सा
पुणरवि दुविधा विण्णेया—आहारे उवकरणे चेव । तत्थ आहारेसु आहारो विण्णेयो । सव्वभोयणपडिरूवगते चेव
णीहारेसु उवकरणं विण्णेयं सव्वउवक्खरगतं चेव । तत्थ पाणजोणीए आहारे दुद्धं दधिं तक्कं णवणीतं कूचियं आमथितं
20 गुलदधिं ☞ रसालादहि ☜ मंथुं परमण्णं दधितावो तक्कोदणो अतिकूरको मंसं रुधिरं वसा चेति । अवसेसाणि
पुंव्युद्दिट्ठाणि असंखताणि, दुद्धं दधि चेति असंखताणि । तत्थ णिद्धेसु पाणीयं, णिद्धसाधारणेसु परमण्णं, अणिद्धेसु
दधितावो तक्कोदणो वा विण्णेयो । अलुक्खेसु अतिकूरको मंसं ति विण्णेयं । लुक्खेसु यहूरं विण्णेयं एवमादी ।
इति पाणजोणीगते आहारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ मूलजोणीगते आहारे साली वीही कोद्दवा कंगू रालका वरका जव-गोधूमा मासा मुग्गा अलसंदका
25 चणका णिप्फावा कुलत्था चणविकाओ मसूरा तिला अतसीओ कुसुंभा सामाका चेति । तत्थ आहारेसु अंतेसु धण्ण-
गतमेव णट्ठं बूया । जधुत्ताहिं पुव्वोपलद्धीहिं अणूसु संखतेसु मूलजोणीयं आहारं णट्ठं बूया । जधुत्ताहि भोयणपडले
आहारोपलद्धीहिं तत्थ सेते साली वीही सेततिला कुसुंभा सेतसासया चेति विण्णेया । सामेसु अदसी विण्णेया । तंबेसु
कोद्दवा गोधूमा तंबनिप्फावा तिला कुलत्था या रायसासवा विण्णेया ।

तत्थ सव्वण्णगतं तिविधं—तणगतं गुम्मगतं वल्लिगतं ति । तत्थ तणगतं साली वीही कोद्दवा कंगू रालका सामाका
30 वणपल्लं चेति विण्णेयाणि भवंति । तत्थ गुम्मगते अदसी तिला सासवा चेति विण्णेयाणि । तत्थ वल्लीगते मुग्गा मासा
चणका चणविकाओ अलसंदे वा निप्फावा कुलत्था चेति विण्णेया भवंति । इति आहारगतं णट्ठं ति बूया ।

तत्थ उवणिद्धेसु कुसणगतं विण्णेयं मास-मुग्ग-अलसंदका-चणविकातं भवति । तत्थ कोलयो कंबलिको
भंफरमो घूणिकासलो दुद्धं दहि तक्कं अंबिलं ति विण्णेया उपसेका । तत्थ सेतेसु मधुरेसु असंखयेसु य दुद्धं विण्णेया ।

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ °पमाति हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
४ पुव्वद्दिट्ठा° हं० त० ॥ ५ काल° हं० त० ॥ ६ रालकसो हं० त० ॥ ७ °का दुद्धं हं० त० विना ॥ ८ उपसिको
हं० त० विना ॥

[अट्ठवण्णासइमो चिंतितज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स। अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए **चिंतितं णामाज्झातो।** तं खलु भो! तमणुवक्खायिस्सामि। तं जधा—तत्थ चिंतितमचिंतितं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति। तत्थ परित्ता-ऽणंतप्पमाणोपदेसा अणंतमपारगमसंजुत्तं चिंतितमुदाहरिस्सामि। तत्थ अब्भंतरामासे ◁ दंढामासे ▷ णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते एक्कगणयण-माणसे सुप्पणिहितिंदिय-अवत्थितसरीरमणोवया- 5 रगते चेव चिंतितं ति बूया। तत्थ बज्झामासे कण्हामासे किलिट्ठामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते अणेकगणयण-माणसे उच्चावय-चल-इंगितागार-अणवत्थितसरीरमणोपयारे ण चिंतितं ति बूया।

तत्थ दुविधा चिंता पवत्तति संगहतो तिविधा—जीवचिंता अज्जीवचिंता तदुभयचिंत त्ति। जीवचिंता दुविधा—संसारसमावण्णजीवचिंता य असंसारसमावण्णजीवचिंता य। तत्थ सव्वजीवगते सव्वजीवआमासगते जीवणाम-सद्द-रूवपादुब्भावे चलामासेसु य जीवं चिंतितं बूया। तत्थ चिंतिते पुव्वाधारिते सव्वअज्जीवगते अज्जीवआमासेसु 10 अज्जीवणामसद्द-रूवपादुब्भावेसु अज्जीवं चिंतितं बूया। एतेसु चेव वामिस्सेसु आमास-सद्दपादुब्भावेसु जीवा-ऽजीव-समायुत्तं चिंतितं बूया।

तत्थ जीवचिंतायं जीवचिंतं दुविधमाधारये—संसारसमावण्णजीवचिंता चेव असंसारसमावण्णजीवचिंता चेव। तत्थ उत्तमेसु उम्मज्जितेसु सव्वबंध-मोक्खेसु सव्वनिग्गमेसु सव्वयुव(त्त-)सिद्ध-अंतगड-तिण्ण-सुद्धपादुब्भावेसु चेव असंसारसमावण्णं जीवं चिंतितं ति बूया। तत्थ सव्वआहारेसु सव्वबंधेसु सव्वसंजोगेसु सव्वकामभोगेसु सव्वकामभोग- 15 सद्दपादुब्भावेसु जायणविवद्धि-पडिभोगकम्म-चेट्ठ-आवाह-विवाह-चोलोपणयण-तिथि-उस्सय-समाये-जण्णएवमादियलोइ-यसद्द-रूवपादुब्भावेसु संसारसमावण्णं जीवं चिंतितं ति बूया। तत्थ संसारसमावण्णजीवचिंतं चउव्विधमाधारयितव्वं भवति—दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणिगतं णेरइयसंसारसमावण्णजीवं चिंतितं चेति।

तत्थ सव्वेसु उड्ढंभागेसु एवं धाकरणे वंदिते पूयिते संथुते अब्भुत्थिते उल्लोगिते पादुकोपाहणामुंचणे छत्त-पडागा-वासण-कडग-लोमहत्थ-वीयणि-चामरपाहाणगते ☞ सव्वदेवगते ☜ सव्वदेवायतणगते सेसाय गहणे उस्सय-समाय- 20 अब्भुदय-उदु-पव्व-देवपादुब्भावे देवणामकम्मोपचारसद्द-रूवपादुब्भावे चेव देवं चिंतितं बूया। तत्थ सव्वसउणगते सुवण्णं चिंतितं बूया सुवण्णित्थि वा। थीणामेसु उड्ढंभागेसु य धणगते ववहारगते य वेस्समणं चिंतितं बूया। दंतेसु वेण्हुं चिंतितं बूया। सव्वजोधपडिरूवगते य गो-महिस-अय-एलएसु रुद्देसु सिवं चिंतितं बूया। सउणगते बालेयेसु कुमारोवकरणे चेव खस्सद्द-रूवपादुब्भावे चेव खंदं चिंतितं बूया। तरुणकच्छाएकगए असिपट्टिरूवे य विसाहं चिंतितं ति बूया। तत्थ पुण्णामेसु देवेसु बंभा बलदेवो वासुदेवो पज्जुण्णो वेस्समणो खंदो विसाहो पव्वतो णागो सुवण्णो 25 एवमादीया उवलद्धव्वा भवंति। थीणामेसु णदी अलग्गा अंज्जा अद्दराणी माउया सउणी एकाणंसा सिरी बुद्धी मेधा कित्ती सरस्सती एवमादीयाओ उवलद्धव्वाओ भवंति। तत्थ उण्हेसु अग्गिं चिंतितं बूया अग्गिघरं वा। णिद्धेसु ◁ णागं णागघरं वा, थीणामेसु णिद्धेसु ▷ णागिं चिंतितं बूया। दारुणेसु रक्खसं, थीणामेसु दारुणेसु रक्खसिं चिंतितं बूया। विगतभयं कंदप्प-भय-हस्सेसु [असुरं, थीणामेसु] असुरकण्णा चिंतितं बूया। सव्वगंधव्वगते तंतीसरगते तलतालघोसेसु य गंधव्वं चिंतितं ति बूया, थीणामेसु गंधव्वी ◁ बूया ▷। मधुरघोसेसु पक्खिसु किंपुरिसं बूया, थीणा- 30 मेसु किंपुरिसकण्णं बूया। सुयीसु पुण्णामेसु य जक्खो, थीणामेसु य [जक्खी बूया। ···..........]मणोगयगामि-

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ २ °व्वयुतसिद्ध° हं० त० विना॥ ३ °कामभगइभोगपादु° हं० त०॥ ४ °वण्णजण्ण हं० त० विना॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ ६ रत्ता अइ° हं० त०। अज्जा दइ° सं ३ पु० सि०॥ ७ मित्ता हं० त०॥ ८–९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥

घडभायणगतं बूया। कसेसु खड्डभायणगतं [बूया]। पुधूसु पेलिवागतं बूया। आसन्नेसु पेलिकागतं वा करंडगगतं वा बूया। चतुरस्सेसु सयणा-ऽऽसणगतं बूया। उद्धंभागेसु मालगतं बूया। अक्खिसु वातपाणगतं बूया चम्मकोसगतं वा बूया। णिडाले कुड्डगतं बूया। कण्णछिद्देसु बिलगतं बूया। णासायं णालीगतं बूया। गीवाय थंभगतं बूया। भमुहासु अंतरियागतं बूया। गंडेसु पस्संतरियागतं बूया। थणंतरेसु कोट्ठागारगतं बूया। उदरे भत्तघरगतं बूया। हियए 5 वासघरगतं बूया। तंबेसु अरस्सगतं बूया। पसण्णेसु पडिकम्मघरगतं बूया। गहणोवगहणेसु असोयवणियागतं बूया। [1]पोरिसे आवुपधगतं पणालीगतं वा बूया। णामीयं उदकचारगतं बूया। [2]अंवाणे वचाडकगतं बूया। उवहुतेसु अरिट्ठगहणगतं बूया। सामेसु चित्तगिहगतं [बूया]। सुक्केसु सिरिघरगतं बूया। कण्हेसु अग्गिहोत्तगतं बूया। णिद्धेसु ण्हाणघरगतं बूया। [3]उत्तमेसु पुस्सघरगतं बूया। ☞[4] जहण्णेसु दासिघरगयं बूया। ☜ इति वेसणगतं णट्ठं ति बूया।

तत्थ णगरे पुव्वाधारिते मत्थए अंतेपुरगतं बूया। णिडाले अंतेपुरगतं बूया। णासायं [5]भुमंतरे वा तिए बूया। 10 पोरिसे सिंघाडगगतं बूया। उरे पादतल-करतलेसु वा चउक्कगतं बूया। दीहेसु रायपधगतं बूया। जुत्तप्पमाणदीहेसु महारच्छागतं बूया। किंचिदीहेसु उस्साहियागतं बूया। उद्धंभागेसु पासादगतं वा गोपुरगतं वा अट्टालगगतं वा पकंठागतं वा बूया। तत्थ अब्भंतरेसु पासादगतं बूया। मुदितेसु तोरणगतं बूया। [6]संखतेसु धण्णगतं बूया। णिग्गमातिगमेसु दारगतं बूया। दढेसु पव्वतगतं बूया। उवहुतेसु वासुरुल्लगतं बूया। मतेसु थूभगतं वा एलुयगतं वा बूया, मुदितसाधारथूभगतं वा बूया। दीहेसु पणालीगतं बूया। अधोपभागेसु पवातगतं वा बप्पगतं वा तलाकगतं 15 वा दहफलिहागतं वा णदीगतं वा बूया। तत्थ दीहेसु णिण्णेसु णदीगतं वा फलिहागतं वा बूया। णिद्धेसु णदीगतं बूया। संखतेसु फलिहागतं बूया। चतुरस्सेसु वाहिगतं बूया। चंदाणतेसु तलागगतं बूया। उरिसतेसु अट्टालगतं बूया। दीहेसु परिक्खेवेसु मंडलेसु य पाकारगतं बूया। थलेसु वयगतं बूया। णिण्णेसु परिखागतं बूया।

तत्थ मज्झगतो णगरस्स त्ति पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु धयगतं वा [7]◁ तोरणगतं वा ▷ देवागारगतं वा [8]वुंखगतं वा पव्वतगतं वा मालगतं वा थंभगतं वा एलुगगतं वा पालीगतं वा बूया। तत्थ मुदितेसु तोरणगतं बूया। उत्तमेसु 20 देवागारगतं बूया। मूलजोणीगतेसु रुक्खगतं बूया। वट्टेसु तलागगतं बूया। तणूसु साधारणेसु चउक्केसु य वप्पगतं बूया। उपगहणेसु आरामगतं बूया। आगासेसु आगासणिधितं ति बूया। मतेसु उवहुतेसु य सुसाणे णिधितं बूया। तुच्छेसु [9]सुक्करुक्खगतं वा सुक्कतलागगतं वा बूया। वायव्वेसु वचभूमीयं णिधितं ति बूया, मंडलभूमीगतं वा बूया, जतो [10]वाओ वायति तम्मि देसे निधितं ति बूया। आपुणेयेसु पवा-उदुपाणं वा णदी-तलागं वा बूया। अग्गेयेसु दड्डवणं वा [11]उट्टियपट्टगं वा बूया, जतो वा आदिच्चो तम्मि देसे णिधितं ति बूया। जण्णेयेसु जण्णवाडगतं वा देवाय- 25 सणगतं वा बूया, जतो [12]वा तुसरिद्दो (तुरियसद्दो) तम्मि देसे णिधितं ति बूया। तिक्खेसु संगामभूमीयं वा णिधितं ति बूया, जतो वा वाधितो तम्मि देसे णिधितं ति बूया। सद्देयेसु [13]सुतप्पवत्तिकं णट्ठं ति बूया। दंसणीयेसु दिट्ठचेट्ठं ति बूया॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए णट्ठकोसयो णामऽज्झातो सत्तावण्णो वक्खातो भवति॥ ५७॥ छ॥

---

१ पारिसेज्जादुपवगयं हं॰ त॰॥ २ आवणे वचाडक॰ हं॰ त॰। अचाणे धाधाडक॰ सं ३ पु॰ सि॰॥ ३ °सु स्सतुस्सघर° हं॰ त॰॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते॥ ५ भुमुत्तरे हं॰ त॰॥ ६ °सु सुवण्ण° हं॰ त॰॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं॰ त॰ नास्ति॥ ८ तुरग° हं॰ त॰। ९ सुक्कपल्लगगतं हं॰ त॰ विना॥ १० वा जो वा° हं॰ त॰ विना॥ ११ उट्टितपट्टगतं वा हं॰ त॰ विना॥ १२ वा पुरिसद्दो हं॰ त॰ विना॥ १३ सत° हं॰ त॰ विना॥

चिंतियं ति बूया । दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससमण्णयं पुरिसमेव चिंतितं ति बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु पितरं चिंतितं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भायरं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु पुत्तं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु मातरं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु दुहितरं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु [1]थीमातरं बूया । थीसमभागेसु थिया भगिणिं चिंतितं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु 5 थिया दुहितरं बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु आयामातरं बूया । थीणामेसु पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु ⊲ अधोभागेसु ⊳ उद्धंगीवाय ससुरं बूया । थीसंसिद्धेसु पुणो पुणो संलिं बूया । थीसंसिद्धेसु पुण्णामेसु संलिं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरं बंधवं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तं बूया । बाहिर-बाहिरेसु जणं बूया । तत्थ मणुस्सजोणीवण्णविसेसेहिं थी-पुरिस-णपुंसकादेसेहिं अज्ज-पेस्सोवलद्धीहिं संठाण-वण्ण-वयप्पमाणेहिं सम्मण्णय-संवद्धणवेसणाहिं गुरुजोणि-तुल्लजोणी-पच्चवरजोणीहिं उवलद्धीहिं वज्झ-ऽब्भंतरपवियएहिं 10 एव जधुत्ताहिं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावोपलद्धीहि य णट्ठकोसए उवदिट्ठतेहिं उवलद्धिविचारविसेसेहिं माणुसजोणी समणुगंतव्वा भवति । इति मणुस्सजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोइते तिरियगते सव्वतिरिक्खजोणीमंते उवकरणे तिरिक्खजोणिउवकरणे तिरिक्ख-जोणीसद्दगते तिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीमए उवकरणे थी-पुरिससद्द-रूवपादुब्भावे एवंविधे सद्द-रूवपादु-ब्भावे तिरिक्खजोणिं बूया । तत्थ तिरिक्खजोणि संगहेण दुविधा—तसगता थावरगता चेव । तत्थ तसोवलद्धीय तस- 15 गता विण्णेया । थावरोवलद्धीय थावरा विण्णेया । सा वित्थरतो छव्विधा आधारयितव्वा भवति । तं जधा—पक्खिगता १ चतुप्पदगता २ परिसप्पगता ३ उदकचरगता ४ कीड-पयंगक-किविल्लगता चेव ५ एकिंदियथावरकायगता ६ चेति । तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुहामासे उल्लोइते उद्धंभागेसु सव्वसउणगते सव्वसउणमते उवकरणे सव्वसउणोवकरणे सउणोप-करणे सउणसद्दगते सउणणामधेज्जोदीरणेसु सउणणामधेज्जे थी-पुरिससद्द-रूवोवकरणपादुब्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूवपादुब्भावेसु पक्खी विण्णेया । ते दुविधा आधारयितव्वा—थलयरा जलयरा चेति, अथवा जलजा थलजा 20 चेति । तत्थ आपुणेयेसु णिण्णेसु य जलजा पक्खि विण्णेया चिंतितं ति बूया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु य थलजा पक्खी चिंतिय त्ति बूया । तत्थ सेतेसु हंसा सेडिका य विण्णेया । पंण्डूसुं चक्का-चक्काकयीएसु य विण्णेया । चित्तेसु आडा टेट्टिवालको णतूहका णदीसुत्तका कारंडवा य विण्णेया । कालेसु काकमज्जुका कातंबा णदीकुक्कुडीको विण्णेया । आरुणेसु उक्कोसा कोंचा गीवा रोहिणिका समुद्दकाक त्ति विण्णेया । ☞ फरुसेसु चक्क-हंस-चक्काका विण्णेया । ☜ अवसेसा जलजा सगुणो पडिरूवआहाराओ य विण्णेया । मंसरुधिरभोयीसु मंसरुधिरभोयी चिंतित त्ति । सुद्धं चूलेसु 25 कातंबा रोहिणिका बलाक त्ति विण्णेया । थीणामेसु सेडिका रोहिणिका णदीकुक्कुडिका आडाओ टिट्टिमीओ त्ति विण्णेया । तत्थ कायवंतेसु कुररा पारिप्पवा उक्कोसा रोहिणिका चेति विण्णेया । मज्झिमकायेसु हंसा चक्काका विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु आडा सेडिका णदीकुक्कुडिकाओ कारंडवा चेति विण्णेया । पच्चवरकायेसुं टेट्टिवालको णतूहका णदीपुत्तका एवमादयो विण्णेया । अणुलोम-पडिलोमेसु गत्तेसु उद्धंभागेसु अधोभागेसु य उद्धंरायिसु उद्धंरायी विण्णेया । सेतेसु सेता, एवमादीहिं वण्णेहिं सुवण्णा विण्णेया । तत्थ अक्खतेसु सव्वेसु अतिमासेसु या आसीविसा विण्णेया । 30 तिण्हेसु तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हपयावत्तितेसु मिदुसाधारणेसु मंदविसा विण्णेया । वापण्णेसु अविसा चिंतेसि त्ति बूया । ते दुविधा—मंसरुधिरभोजी अमंसरुधिरभोजी चेव । इति जलजा पक्खिगो जलचर त्ति विण्णेया ।

---

१ °सु महोमा° हं० त० ॥ २ थीनामयरं पू° हं० त० ॥ ३ °द्धीहिं वयण° हं० त० ॥ ४ °णीगते सि० ॥ ५ पंडूसु सं १ पु० । पंडरेसु सि० ॥ ६ °सु चक्कयाकी पीतेसु य हं० त० विना ॥ ७ अडा हं० त० विना ॥ ८ °हा टेंटिया° हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० °सु देहिया° हं० त० विना ॥ ११ मतिसामेसु हं० त० ॥ १२ तिण्हेसु प° हं० त० ॥

रामेसु देवं वेमाणितं चिंतितं बूया। थीणामासु अच्छरसाओ, मूलजोणीगतेसु ☞ अज्जोपगते वेति अज्जाधिउत्थं ☜ चिंतितं बूया, थीणामेसु देवीसु वुक्खाधिउत्था चिंतितं ति बूया। धातुजोणीगए पव्वतदेवतं चिंतितं ति बूया, थीणामेसु गिरिकुमारिं बूया। णिद्धेसु परिक्खेवेसु य समुद्दं वा समुद्दकुमारं वा चिंतितं बूया, थीणामेसु समुद्दकुमारिं बूया। महापकासेसु पुधूसु परिक्खेवेसु य दीवकुमारं चिंतितं बूया, थीणामेसु दीवकुमारिं चिंतितं बूया। चतुप्पदगते वग्घ-
5 सीह-हत्थि-वसभपडिमाधिउत्थं चिंतितं बूया। दीहेसु उवणिद्धेसु य णागं चिंतितं बूया। सुद्धणि वंभं चिंतितं। उद्धं-मागेसु धणगते य वेसमणो। सप्पभेसु चंदा-ऽऽदिच्च गह-णक्खत्त-तारागणे चिंतिते बूया। ☞ थलेसु मारुतं चिंतियं बूया। ☜ थीणामेसु वातकण्णाओ चिंतिताओ बूया। मतेसु जमं बूया। आपुणेयेसु उद्धंभागेसु सुक्कवण्णपडिरूवगते य वरुणं चिंतितं बूया। [4]सोम्मेसु सव्वसोम्मगते य सव्वसोम्मपादुब्भावेसु चेव सोमं चिंतितं बूया। इस्सरेसु इंदं बूया। पुधूसु पुधविं बूया। विवेक्खितेसु दिसाकुमारीओ बूया, दिसाओ वा बूया। इट्ठेसु सिरिं चिंतितं
10 बूया। बुद्धीरमणेसु मेधं बुद्धिं सत्थंधिवुत्थाओ चिंतिताओ बूया। विमुत्तेसु णिप्परिग्गहेसु य मोक्खं विज्जासत्थाहिवुच्छाओ चिंतिताओ बूया। अब्भंतरेसु कुलदेवताओ बूया। दढेसु वत्थुदेवताणि चिंतियाणि बूया। दुग्गंधेसु वच्चदेवताणि बूया। मतेसु सुसाणदेवताणि बूया। पच्छिमेसु पितुदेवताणि बूया। माणुसदिव्वसाधारणेसु विज्जाधरे विज्जासिद्धे वा चारणे चिंतिते बूया। थीणामेसु दिव्वसाधारणेसु माणुसेसु विज्जाधरीओ चिंतिताओ बूया। बुद्धिरमणेसु दिव्वसाधारणेसु सव्वविज्जादेवताओ बूया। थीणामेसु विज्जादेवताओ बूया। पुण्णामेसु देवविज्जाहिवुत्थे चिंतिते बूया। [5]दिव्वेसु
15 सुरेसु य महरिसयो बूया। एवमादीदेवताहिं जधुत्ताहिं देवताज्झाये उवलद्धीहिं देवताणामेहिं देवसंठाणेहिं देवआभ-रण-पहरण-कम्मोवयारपादुब्भावेहिं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं जधा देवताज्झाये उवदिट्ठं तधा णातव्वं भवति। इति देवतागता चिंता वक्खाता भवति।

तत्थ उज्जुकामासे उज्जुकविलोइते उज्जुपेक्खिते उज्जुभावगते सव्वमाणुस्सगते णाम-सद्द-रूव-उवकरणपादुब्भावे य मणुस्सजोणीगतं चिंतितं बूया। तत्थ मणुस्सेसु पुव्वाधारितेसु मणुस्सेसु तिविधमाधारये—थिओ पुरिसे णपुंसके ति। तत्थ
20 थीणामेसु थिओ चिंतियाओ त्ति बूया। पुण्णामेसु पुरिसे चिंतिते बूया। णपुंसकेसु णपुंसके चिंतिते बूया। तत्थ णपुं-सके पुव्वाधारिते थीणामेसु इस्सापंडका विण्णेया। पुण्णामेसु आसेत्ता विण्णेया। णपुंसकेसु अबंतोपहता आदिपं-डका विण्णेया। वामदक्खिणेसु पक्खापक्खिगो विण्णेया। तुच्छेसु अणुप्पवी विण्णेया चिंतिता भवंति। इति णपुं-सकजोणी वक्खाता भवति। तत्थ थी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीयं उवलद्धायं बंभणो खत्तिओ वेस्सो सुद्दो त्ति। तत्थ सिरो-मुहामासे बंभणो, बाहूसु खत्तिओ, पट्ठोदरे वेस्सो, पाद-जंघेसु सुद्दो उवलद्धव्वा भवंति। तत्थ वये पुव्वाधारिते
25 पादजंघे बालो, पट्ठोदरे तरुणो, बाहूसु अंतरंसे य मज्झिमवयो, सिरोमुहामासे महव्वयो चिंतिते ति महव्वय-मज्झि-मवय-बालेयसाधारणोपलद्धी वा तधा उवलद्धव्वा भवंति। तत्थ वण्णे पुव्वाधारिते अवदातेसु अवदातं थी-पुरिस-णपुं-सकं बूया, सामेसु सामं बूया, कण्हेसु कण्हं बूया। अज्जो पेस्सो त्ति पुव्वमाधारिते तत्थ उद्धं णाभीयं अज्जपाणं चिंतितं ति बूया। अधो णाभीयं उद्धं जाणूणं अव्वत्तं पेस्सं बूया। पादजंघेसु पेस्समेव बूया। पादेसु अधत्थ पेस्स-पेस्सं दासं चिंतितं बूया। तत्थ अज्जे पाणे पुव्वाधारिते पुणरवि ◁ गुरुजोणी ▷ तुल्लजोणी पवरजोणि त्ति तिविध-
30 माधारयितव्वं भवति। तत्थ उवरिट्ठा गीवाय अधो मुमकाणं गुरुजोणिं, अतो उद्धं गुरुणो गुरु चिंतितो त्ति बूया। अधत्था गीवाय उद्धं कडीय तुल्लजोणीयं बूया। अधत्था कडीयं पवरजोणीयं अज्जपाणं चिंतितं ति बूया। तत्थ समण्णय-संबद्धे पुव्वाधारिते वामेसु पुण्णामेसु थीसमण्णयं पुरिसं चिंतितं ति बूया। थीणामेसु पुरिससमण्णयं इत्थि

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ °मारिं चिंतितं बू° हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ४ सोमेसु हं० त० ॥ ५ दिव्वेसु सुरेसु हं० त० विना ॥ ६ °मणुस्सगते हं० त० ॥ ७ °लद्धव्वायं हं० त० विना ॥ ८ °व्वा इय त्ति। तत्थ हं० त० ॥ ९ अबंतं हं० त० ॥ १० ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ११ °त्था गीवाय कडी° हं० त० ॥

चिंतियं ति बूया । दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससमण्णयं पुरिसमेव चिंतितं ति बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु पितरं चिंतितं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भायरं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु पुत्तं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु मातरं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु दुहितरं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु थीमातरं बूया । थीसमभागेसु थिया भगिणिं चिंतितं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु थिया दुहितरं बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु जायामातरं बूया । थीणामेसु पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु ⊲ अधोभागेसु ⊳ उद्धंगीवाय ससुरं बूया । थीसंसिद्धेसु पुणो पुणो संलिं बूया । थीसंसिद्धेसु पुण्णामेसु संलिं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरं बंधवं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तं बूया । बाहिर-बाहिरेसु जणं बूया । तत्थ मणुस्सजोणीवण्णविसेसेहिं थी-पुरिस-णपुंसकादेसेहिं अज्ज-पेस्सोवलद्धीहिं संठाण-वण्ण-वयप्पमाणेहिं सम्मण्णय-संबद्धगवेसणाहिं गुरुजोणि-तुल्लजोणी-पच्चवरजोणीहिं उवलद्धीहिं बज्झ-ऽब्भंतरपवियएहिं एव जधुत्ताहिं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावोपलद्धीहि य णट्ठकोसए उवदिट्ठंतेहिं उवलद्धिविचारविसेसेहिं माणुसजोणी समणुगंतव्वा भवति । इति मणुस्सजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोइते तिरियगते सव्वतिरिक्खजोणीमंते उवकरणे तिरिक्खजोणिउवकरणे तिरिक्ख-जोणीसद्दगते तिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीमए उवकरणे थी-पुरिससद्द-रूवपादुब्भावे एवंविवे सद्द-रूवपादु-ब्भावे तिरिक्खजोणिं बूया । तत्थ तिरिक्खजोणि संगहेण दुविधा—तसगता थावरगता चेव । तत्थ तसोवलद्धीय तस-गता विण्णेया । थावरोवलद्धीय थावरा विण्णेया । सा वित्थरतो छव्विधा आधारयितव्वा भवति । तं जधा—पक्खिगता १ चतुप्पदगता २ परिसप्पगता ३ उदकचरगता ४ कीड-पयंगक-किविल्लकगता चेव ५ एर्गिदियथावरकायगता ६ चेति । तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुहामासे उल्लोइते उद्धंभागेसु सव्वसगुणगते सव्वसउणमते उवकरणे सव्वसउणोवकरणे सउणोप-करणे सउणसद्दगते सउणणामधेज्जोदीरणेसु सउणणामधेज्जे थी-पुरिससद्द-दव्वोवकरणपादुब्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूवपादुब्भावेसु पक्खी विण्णेया । ते दुविधा आधारयितव्वा—थलयरा जलयरा चेति, अधवा जलजा थलजा चेति । तत्थ आपुणेयेसु णिण्णेसु य जलजा पक्खि विण्णेया चिंतितं ति बूया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु य थलजा पक्खी चिंतिय त्ति बूया । तत्थ सेतेसु हंसा सेडिका य विण्णेया । पंण्डूर्सु चक्काग-चक्कागकयीएसु य विण्णेया । चित्तेसु आडा टेट्टिवालको णवूढका णदीसुत्तका कारंडया य विण्णेया । कालेसु काकमज्जुका कातंवा णदीकुकुडीको विण्णेया । आरुणेसु उक्कोसा कोंचा गीवा रोहिणिका समुद्दकाक त्ति विण्णेया । ☞ फेरुसेसु चक्क-हंस-चक्कागका विण्णेया । ☜ अवसेसा जलजा सगुणो पडिरूवआहारओ य विण्णेया । मंसरुधिरभोयीसु मंसरुधिरभोयी चिंतित त्ति । सुद्धं चूलेसु कातंया रोहिणिका बलाक त्ति विण्णेया । थीणामेसु सेडिका रोहिणिका णदीकुकुडिका आडाओ टिट्टिभीओ त्ति विण्णेया । तत्थ कायवंतेसु कुररा पारिप्पवा उक्कोसा रोहिणिका चेति विण्णेया । मज्झिमकायेसु हंसा चक्कागका विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु आडा सेडिका णदीकुकुडिकाओ कारंडया चेति विण्णेया । पच्चवरकायेसु टेट्टियालको णवूढका णदीपुत्तका एवमादयो विण्णेया । अणुलोम-पडिलोमेसु गत्तेसु उद्धंभागेसु अधोभागेसु य उद्धंरायिसु उद्धंरायी विण्णेया । सेतेसु सेता, एवमादीहिं वण्णेहिं सुवण्णा विण्णेया । तत्थ अक्खतेसु सव्वेसु अतिमामेसु या आसीविसा विण्णेया । तिण्हेसु तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हपच्चावत्तितेसु मिदुसाधारणेसु मंदविसा विण्णेया । पावण्णेसु अविसा चिंतेसि त्ति बूया । ते दुविधा—मंसरुधिरभोजी अमंसरुधिरभोजी चेव । इति जलजा पक्खिगो जलचर त्ति विण्णेया ।

---

१ °सु महोमा° हं० त० ॥ २ थीनामपरं पू° हं० त० ॥ ३ °द्दोहिं पपण° हं० त० ॥ ४ °णीगमे सि० ॥ ५ पंडूरसु सं ३ पु० । पंडरेसु सि० ॥ ६ °सु चक्कवाकी पीतेसु य हं० त० विना ॥ ७ अटा हं० त० विना ॥ ८ °टा टेंटिया° हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० °सु देहिया° हं० त० विना ॥ ११ मतिसामेसु हं० त० ॥ १२ तिण्देसु प° हं० त० ॥

तत्थ थलजा पक्खी तिविधा आधारयितव्वा–गम्मा रण्णा गम्मारण्णा चेति। तत्थ अब्भंतरामासे गामेसु चेव पादुब्भावेसु गम्मा विण्णेया। बाहिरामासेसु आरण्णेसु य पादुब्भावेसु आरण्णा विण्णेया। बाहिरब्भंतरेसु गम्मारण्ण-पादुब्भावेसु चेव गम्मारण्णा पक्खी चिंतिय त्ति विण्णेया। थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका विण्णेया। सेतेसु सेता, रत्तेसु रत्ता, पीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, आरुणेसु आरुणा, पंडुसु पंडू, कविलेसु कविला, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, जधाप(व)ण्णपडिरूवतो वण्णे आधारिते पक्खिणो चिंतित त्ति बूया। कायवंतेसु कायवंता मयूरा कंका छिण्णालिंगाओ सुवण्णाओ चेति, एवमादीका कायवंतेसु चिंतित त्ति बूया। तत्थ मज्झिमका-येसु गद्धा वीरल्ला सेणा उलूका चेति एवमादयो विण्णेया। मज्झिमाणंतरकायेसु सालका कपोता वायसा सुका कोकिला तित्तिरा चेव विण्णेया। पच्चवरकायेसु वातिका तेल्लपातिका सगुणीका परसडणिका चम्मडिला एवमादी विण्णेया। एवं चतुव्विधकायो पडिरूवतो आमासेहिं य विण्णेया। उरसरगते पाणगतेसु य ⌜ सेव्वसउणा ⌝ विण्णेया। चित्तेसु तित्तिरा चित्तकपोतका वणकुक्कुडा वट्टकाओ य विण्णेया। घोसवंतेसु घोसवंता विण्णेया। दारुणेसु मंसरुधिरभोयी विण्णेया। धणूसु धण्णभोयी विण्णेया। अघोसवंतेसु अघोसवंता विण्णेया। मधुररुतेसु महुररुता। कडुकरुतेसु कडुकरुता विण्णेया। तधा अव्वत्तघोसेसु अव्वत्तघोसा चिंतितं ति विण्णेया। एवमादीहिं संठाण-वण्ण-थी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीहिं आहार-घोस-पडिरूव-सद्दपादुब्भावेहिं जलया थलया य पक्खिणो आधारयित्ता आधारयित्ता जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेहिं उवलद्धव्वा भवंति। इति पक्खिगतो जलय-थलयपक्खिसमायुत्ता दुविधा चिंता वक्खाता जीवचिंता भवतीति।

तत्थ चतुप्पदे चउरस्सेसु य चउप्पदमए उवकरणे चतुप्पदोवकरणे चतुप्पदसद्दगते चतुप्पदणामोदीरणे चतुप्पद-णामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधपक्खित्तामासे सद्द-रस-रूवपादुब्भावे चतुप्पदं चिंतितं ति बूया। ते दुविधा आधारये–पज्जा जलचरा चेव, अधवा थलचरा जलचरा चेति। तत्थ सव्वआपुणेयेसु सव्वजलेसु जलचरेसु य जलचरा विण्णेया। तं जधा–सुंसुमारा उदककच्छभ त्ति मच्छगये विण्णेया भवंति। तत्थ पुणरवि चतुप्पदा आधारयितव्वा भवंति–गम्मा अरण्णा गम्मारण्णा चेति। तत्थ अब्भंतरेसु सव्वगम्म ⌜ गते चेव गम्मा ⌝ विण्णेया। बाहिरामासेसु सव्व-आरण्णगतपादुब्भावेसु चेव आरण्णा चतुप्पदा चिंतित त्ति बूया। अब्भिंतरबाहिरेसु गम्मारण्णेसु तस्सद्द-रूवपादुब्भावे य गम्मारण्णा विण्णेया। तत्थ गो-महिस-अयेलकोट्ट-खर-सुणका चेव एवमादी गम्मा विण्णेया। सीह-वग्घ-तरच्छ-ऽच्छ-भल्ल-दीविक-गोज-चमरीओ रम्मा चेति विण्णेया, एवमादयो आरण्णा विण्णेया। तत्थ जे केयि आरण्णा भुत्ता गम्मा भवंति एते गम्मारण्णा भवंति। तत्थ हत्थी अस्सा वराहा वग्गा सियाला मुंगुसा णउला उंदुरा कालका पयला कातो-दूका सरंता घरघुला चेति एवमादयो गम्मारण्णा विण्णेया। तत्थ चउप्पदा पुणरवि दुविहा आहारयियव्वा भवंति–चउ-प्पदा चेव परिसप्पा चेव। तत्थ चउप्पदगए सव्वउद्धंभागेसु सव्वपरिसप्पचउप्पदगते चेव परिसप्पचउप्पदा विण्णेया। अजगरं असालिका गोधा तोडुका सरंता मुंगुसा णउला पयलाका अहिणुका घडोपला उंदुरा चेति।

तत्थ पुणरवि तिविधा चतुप्पदा आधारयितव्वा–थलचरा थुंक्खचरा बिलसाइ त्ति। तत्थ परिधिएसु ⌜ थलेसु ⌝ थलचरेसु य थलचरा चिंतित त्ति बूया। उद्धंभागेसु मूलजोणीगते चेव थुंक्खचरा चतुप्पदा चिंतित त्ति बूया। सन्धिछिद्देसु अधोभागेसु य बिलसायी विण्णेया। तत्थ थुक्खचरा विराला उंदुरा सेलका घरपूपला अहिणुका तोडुका य पयलाका चेति एवमादयो चिंतिता विण्णेया भवंति। तत्थ बिलासया दुविधा–सेलबिलासया भूमिबिलासया

१ छिण्णालिं हं० त० विना ॥ २ सुका कावा को° हं० त० ॥ ३ चम्मट्ठि पय हं० त० विना ॥ ४ उरसुर° सं ३ पु० । उपसर° सि० ॥ ५ ⌜ ⌝ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ वद्दाका° हं० त० ॥ ७ अहातघंतघो° हं० त० ॥ ८ अघंतघो° हं० त० ॥ ९ °गयस (गयल) चम° हं० त० विना ॥ १० °रा कापयला काओट्टका सरंधा घर° हं० त० ॥ ११ सरंडा मुं° हं० त० ॥ १२ उदुंवरा हं० त० ॥ १३–१४ थुसचरा हं० त० ॥ १५ थालका हं० त० ॥

चेव । तत्थ दढेसु अधोभागेसु सेलविलासया विण्णेया । थूलेसु भूमिविलासया विण्णेया । तत्थ सेलविलासया दीहवग्घा अच्छभल्ला तरच्छा सालिर्भा सेधका दीपिका विलाडु अजिणविलाला सलभा गोधा उंदुरा अयकरा वेति विण्णेया भवंति । तत्थ भूमिविलासयेसु लोपका णउला गोधा अहिणूका तोड्का तोडका चेति एवमादयो विण्णेया । माणुसतिरिक्खजोणीसाधारणेसु वाणरा णरसीहा अस्सपूतणा वेति विण्णेया । तत्थ वायुसु चलेसु साहागते अणवरिथयसभावगते य वाणरा विण्णेया । सारवंतेसु सूरेसु य णरसीहा । दारुणेसु विणादेसु य अस्सपूतणा विण्णेया । असमूलकायवंतेसु 5 असालिका ⊲ अयकरा ⊳ हत्थिणो एवमादयो चिंतिता विण्णेया । मज्झिमकायेसु सीह-वग्घ-अच्छभल्ल-तरच्छ-णीलमिग-गयगोकण्णा गो-महिस-खरोट्टा य एवमादयो विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु दीपिका-तरच्छ-कोच-वग-मग-अयेलकमिति एवमादयो विण्णेया भवंति । पचवरकायेसु सुणग-सिगाल-मज्जार-सस-मंगुस-णउलएवमादी चिंतिया विण्णेया । अणूसु उंदुरा सालका तोड्का अहिणूका वेति एवमादयो विण्णेया । गो-माहिस-खरोट्ट-अस्सा हत्थिं वेति वाहणेसु विण्णेया । तणादेहि तणादा, ☞ मंसे-रुधिरभोयिसु ☜ मंसरुधिरभोयी विण्णेया । सेतेसु सेता, पीतेसु 10 पीता, रत्तेसु रत्ता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, पुंडेसु पुंडा, पंडूहि पंडू, आरण्णेहिं आरण्णा, चित्तेहिं चित्ता, फरुसेहिं फरुसा, वण्णतो आधारिते चिंतिता विण्णेया भवंति । पुण्णामेहिं पुण्णामा, थीणामेहिं थीणामा, णपुंसकेहिं णपुंसका, मिधुणचरेहिं मिधुणचरा, गणचरेहिं गणचरा विण्णेया, एकचरेहिं एकचरा चतुप्पदा पक्खी या । एवमादी पज्जएहिं आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वमेव समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ परिसप्पजोणी विविहा—दव्वीकरा मंडलिणो रायिमंता चेति संगहेण आधारयितव्वं भवतीति । तत्थ तिरिच्छा- 15 णराइणो रत्तराइणो सेत-पीत-चित्त-सेवालका कण्हा अणज्जपुप्फवण्णगा पंचाणुरत्ता वेति वित्थारतो वण्णविसेसेहिं आधारयितव्वा भवंति । तत्थ आयतेसु वायव्वेसु य दव्वीकरा चिंतिता विण्णेया । मंडलेसु मंडलिणो विण्णेया । तिरियामासे तिरियविलोगिते चेव तिरिच्छाणराइणो चिंतिता विण्णेया । अणुलोम-पडिलोमितेसु गत्तेसु उद्धंभागेसु य उद्धराइणो विण्णेया । सेवादीका वण्णसमायोगा य सवण्णपडिरूवेसु परिसप्पाण वण्णो आधारिते विण्णेया चिंतिता भवंतीति । तत्थ अक्खयेसु सव्वेसु अतिमासेसु या आसीविसा बूया । तिण्हेसुं तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हेसु पयोयवियेसु णिदु- 20 साधारणेसु यातंदविसा बूया । पेण्णेसु णिव्विसे बूया । ते दुविधा आधारयितव्वा भवंति—थलजा जलजा चेति । तत्थ आपुणेयेसु जलजा विण्णेया । तत्थ कद्दमग-हिरियिय-कच्छभक-आणायचरणिग-पदुमा-भिंगणाग-यमारक-राजमहोरक-जलचर-सवलाहिका कुकुडा देवपुत्तका समाणाहिएँ ति जलजेसु चोदिता । तत्थ अंतलिक्खपरिसप्पा चलेसु उद्धंभागेसु विण्णेया भवंति वंलिका पगती । अवसेसा थलचरा । ते चतुप्पदा अपदा बहुपदा चेति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ चतुप्पदेसु चतुरस्सेसु चतुप्पदमदे उवकरणे चउप्पदोवकरणे चतुप्पदसद्दोदीरणे चउप्पदणामोदीरणे चतु- 25 प्पदणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूवपादुब्भावे चतुप्पदपरिसप्पं चिंतितं बूया, अयकरे-तोड्क गोधा-सरंट-अहिणूका चेति तत्थ बहुपदेहिं केस-मंसु-णहसमामासेसु चेव बहुपदमद्द-पडिरूवपादुब्भावेसु चेव बहुपदा विण्णेया, गोम्मि सेनपदि इंदगोविका घमणिका वेति एवमादिणो भवंति । अवसेसा दीहमसामासेसु विण्णेया भवंति । थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका । संठाण-वण्णबहुविसं आहार-विधार-जोणिकादीकाणि य जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता परिसप्पा उवलद्धव्वा भवंति । इति परिसप्पजोणीगते 30 चिंता वक्खाता भवति ।

---

१ °भा सेधका हं० त० ॥ २ थाडका हं० त० ॥ ३ °स्सा येति ह° हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ पण्डूहि पण्डू, आ° हं० त० ॥ ६ असि(धि)मा° हं० त० ॥ ७ °सु यण्णाधि° हं० त० ॥ ८ पयोमयति° हं० त० ॥ ९ थापण्णे° हं० त० ॥ १० भवंतीति हं० त० विना ॥ ११ अणाव° हं० त० विना ॥ १२ °भिंमणागयमीरकराजमयपहारक° हं० त० ॥ १३ °हिये ति हं० त० विना ॥ १४ °वतिका हं० त० विना ॥ १५ °करओड्क° हं० त० ॥ १६ सामासामेसु हं० त० ॥ १७ °सवापट्टि इंदगोधिय घदणिका हं० त० ॥

तत्थ आपुणेयेसु जलचरेसु एवंरूवेसु चेव पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु चेव जलचरे चिंतिते बूया । तत्थ उदकचरा चतुव्विधा आधारयितव्वा-दुपदा १ चउप्पदा २ बहुपदा ३ अपदा दीहपदा(द्धा) ४ चेति । तत्थ दुपदेसु दुपदसद्दपडिरूवे चेव दुपदं चिंतितं बूया, हत्थिमच्छा मगमच्छा गोमच्छा ☞ अंसमच्छा ☜ णरमच्छा णदीपुत्तका सव्वचरा चेति। तत्थ चतुप्पदेसु चतुक्केसु चतुप्पदसद्द-रूवपादुब्भावे चेव चतुप्पदा विण्णेया, कच्छभा सुंसुमारा मंडुका उदकायो चेति
5 एवमादयो भवंति । तत्थ केस-मंसु-णह-लोमपरामासे बहुपदपडिरूवगते चेव बहुपदा विण्णेया कुंभारीला-सकुचिकादयो भवंति । तत्थ दीहामासे सव्वदीहपद्धपडिरूवगते य दीहपदा(द्धा) विण्णेया, चंम्मिरा घोहणुमच्छा वइरमच्छादयो भवंति, एवमादयो अपदा । तत्थ दारुणेसु गाहा विण्णेया । सव्वआहारगते चेव सव्वआहारगते आहारोपका विण्णेया । अधोभागगतेसु कूवगता विण्णेया । णिण्णेसु सर-पुक्खरणिगता विण्णेया । सण्णिरुद्धेसु तब्भागगता विण्णेया । थीणामेसु दीहेसु णिण्णेसु य णदीगता ◁ विण्णेया ▷ । महावकासेसु परंवरगंभीरेसु परिक्खेवेसु य समुद्दगता विण्णेया । महाकायेसु तिमितिमिंगिला
10 विण्णेया । मज्झिमकायेसु पालीणा सुंसुमारा कच्छभमगरा गहमकप्पमाणा चिंतित त्ति बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु रोहित-पिचक-गल-मीणे-चम्मिराजो विण्णेया । पच्चवरकायेसु कड्डाईक-सीकुंडी-उप्पातिका-इंचका-कुडुकालक-सित्थमच्छका चेति चिंतित त्ति बूया । सेतेसु सेता, रत्तेसु रत्ता सवण्णपडिरूवपादुब्भावेहिं अधण्णामासे दंसणीयपादुब्भावे य दिट्ठपुव्वो चिंतित त्ति बूया । णयणपडिपिधाणे य दंसणीयाणं पतिवग्गामेव अदिट्ठपुव्वा विण्णेया । सोत्तामासे सव्वघोसवंतेसु य सुयपुव्वा भवंति । सोत्तपडिप्पिधाणे घोसवंतविब्भामे य असुतपुव्वा विण्णेया । इति जलचरजोणी वक्खाता भवति ।

15 तत्थ सव्वपच्चवरकायेसु अणूसु य कीडकिविल्लकजोणी चिंतिता विण्णेया । वण्णे आधारिते सेतेसु सेता, रत्तेसु रत्ता, पीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, सेवालकेसु सेयालका, पण्डूसु पण्डू, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, सवण्णपडिरूवतो विण्णेया । थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका, एकचरेसु एकचरा, मिधुणचरेसु मिधुणचरा, गणचरेसु गणचरा चिंतित त्ति विण्णेया । इति कीड-पतंग-किविल्लिकागता तिरिक्खजोणी पडिरूवपादुब्भावेहिं उवलद्धव्वा । इति कीड-पतंगगता तिरिक्खजोणी वक्खाता भवति चिंतिता ।

20 तत्थ थावरतिरिक्खजोणी पंचविधा आधारयितव्वा भवति । तं जधा—पुढविकाइगगता आउकाइगगता तेउकाइगगता वाउकाइगगता वणप्फतिकाइगगता चेति । तत्थ सव्वदढेसु पुढवीपादुब्भावेसु धातुजोणिगते य पुढविकाइकं थावरं चिंतितं ति बूया । आपुणेयेसु उदकपादुब्भावे आवुजोणीगते चेव आवुकायिका थावरा चिंतित त्ति बूया । अग्गेयेसु अग्गिपादुब्भावे अग्गेयेसु सद्द-रूवपादुब्भावेसु अग्गिउवकरणगते चेव तेवुकाइका थावरा चिंतित त्ति बूया । वायव्वेसु वायपादुब्भावेसु चेव उवकरणसद्दपादुब्भावेसु चेव वायुकायिकं थावरं चिंतितं ति बूया । सव्वगहणेसु
25 सव्वतरुणहरितक-पुप्फ-फल-पत्तपादुब्भावे चेव मूलजोणीगतेसु चेव सद्द-रूव-उवकरणपादुब्भावे चेव एवंविधवणप्फतीकायिकथावरं चिंतितं ति बूया । इति थावरगया तिरिक्खजोणीकगता चिंता वक्खाया भवति ।

तत्थ अधोभागेसु जहण्णेसु किण्हेसु संकिलिट्ठेसु उव्वुत्तेसु अदंसणीयेसु अवुद्धीरमणेसु चेव एवमादीकेसु आमासेसु सद्द-रूवेसु चेव एवंरूवेसु णेरइकपडिरूवेसु णेरइकसद्दपादुब्भावेसु चेव णेरइयं चिंतितं ति बूया । इति णेरइकगता चिंता वक्खाता भवति ।

30 तत्थ सव्वपाणा पुणरवि सत्तविधा आधारयितव्वा भवंति । तं जधा—एकपदा १ विपदा २ चतुप्पदा ३ [छप्पदा ४] अट्ठपदा ५ बहुपदा ६ अपदा ७ चेति । तत्थ एकपादुब्भावे एकपदा विण्णेया एंकरका भवंति १ । दुगपादुब्भावे दुपदका भवंति । ते दुविधा—माणुसा पक्खी ☞ माणुसतिरिक्खजोणी चेति । ते तिविधा—किण्णरा किंपुरिसा अरसमुहीओ

---

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ कुरीला° हं० त० विना ॥ ३ तम्मिरा योह° हं० त० ॥ ४ °सु पालीणा सं ३ पु० ॥ ५ °मीलच° हं० त० विना ॥ ६ °डकुसीकुंडिओपातिकाईचकाकुडुकालकमित्थमच्छका हं० त० विना ॥ ७ अण्णेसु हं० त० ॥ ८ °ता तणवण° हं० त० ॥ ९ भवति छप्पया । तत्थ हं० त० विना ॥ १० एकारका हं० त० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

वेति माणुसा ☞ तिरिक्ख ⊲ माणुस ⊳ जोणीसाधारणे विपदा भवंति। तत्थ सव्वं उद्धंभागेसु पक्खी दुपदो विण्णेयो। सव्ववित्थडामासेसु माणुसोपकरणेसु चेव माणुस्सदुपदजोणी विण्णेया। मणुस्सतिरिक्खजोणीसाधारणेसु किन्नरा किंपुरिसा अस्समुहीओ वेति। तत्थ दुपदे थीणामेसु चेव अस्समुहीओ विण्णेयाओ भवंति। सव्वरुतेसु सव्वसउणगते चेव किन्नरा किंपुरिसा विण्णेया। इति माणुसतिरिक्खजोणीसाधारणेसु तिरिक्खजोणी विण्णेया भवति २। तत्थ सव्वचतुप्पदे सव्वचतुप्पदपडिरूवगते य चतुक्कवग्गगतेणं चेव उवलद्धव्वा भवंति ३। तत्थ छप्पदा छेकवग्गोवलद्धीहिं पडिरूवगते उव- 5
लद्धव्वा भवंति। तं जधा—भमरा मधुकरीओ मसगा मक्खिकाओ चेति। तत्थ मुदितेसु भमर-मधुकरा विण्णेया। सव्वमूलगते चेय दारुणेसु मसका मक्खिकाओ य विण्णेया। थीणामेसु मधुकरीओ मक्खिकाओ चेव विण्णेया। पुण्णामेसु भमरा मसका चेव विण्णेया ४। तत्थ अट्ठपदा अट्ठकवग्गपादुब्भावेण अट्ठकपडिरूवेण चेव उवलद्धव्वा भवंति ५। केस-मंसु-णह-लोमपरामासे बहुपदपडिरूवे चेव बहुपदा विण्णेया भवंति ६। अपदेहिं परिमंडलेहिं दीहपादु-
ब्भावेहिं चेव अपदे वि त्ति जाणिय त्ति ७। 10

तत्थ अट्ठपदा बहुपदा कीडकिविल्लगे इमेहिं विण्णेया भवंति। तं जधा—किविल्लकाओ ओपविका कुंथू इंदगोपका पंसलचित्ता कण्हकीडिका ⊲ यूका मंकुणा उप्पातका रोहिणिका चेति एवमादयो। तत्थ उण्हेसु जुगलिका कण्हपिपी-
लिका ⊳ कण्हविच्छिका चेति विण्णेया, जे य ऽण्णे उण्हा। रत्तेसु रत्ता रोहिणिका इंदगोपगो, जे य ऽण्णे रत्ता पिपी-
लिका जगलिका। पंत्थिवेसु किविल्लका इंदगोपका चेति विण्णेया। ☞ ईढेसु किविल्लका जंगलिका विण्णेया। ☜
दीहेसु पिपीलिका जंगलिका विण्णेया। परिमंडलेसु इंदगोपका मंकुणा य। गामेसु यूका मंकुणा य विण्णेया। गम्भा- 15
रण्णेसु घुणा विण्णेया। अवसेसा भूमीणिस्सितेसु। अंतलिक्खेसु संताणका उंडणादी घुक्कमरधा वि वा विण्णेया। पक्खिगते अग्गिकीड-पतंगा मक्खिकाओ भमर-मधुकरा चेव विण्णेया। इति छप्पदा जोणी बहुपदजोणी अपदजोणी चेव कीडकिविल्लगगता वक्खाता चिंता भवतीति।

तत्थ सत्तविधा पाणा पुणरवि आधारयितव्वा भवंति दुविधा—जलचरा थलचरा चेति। तत्थ आपुणेयेसु जलचरेसु सव्वजलचरपडिरूवे चेव जलचरा विण्णेया भवंति। तत्थ थलेसु लुक्खेसु उण्हतेसु य सव्वथलयरगते 20
चेय थलचारी चिंतितं ति बूया। तत्थ उदकचरा विण्णेया उब्भिजा विलासया अभितचरा चेति। तत्थ उब्भिजा संखणा कोकुंथिका वडका सिरिवेढका करिण्डुका पंयुमका सद्दा तीलका इति। उब्भिजेसु एते उम्मट्ठे आमास-सद्द-
पडिरूवेण उवलद्धव्वा भवंति उब्भिय त्ति। तत्थ विलासयेसु कण्हगुलिका सेतगुलिका खुल्लिका आंहाडका फसका वावकुरीढा वातंसु कुतिपि एवमादयो अधोभागेसुं छिन्नेसु वण्ण-आयार-पडिरूवेणं चेव एतेसु विलासया भवंति। इति
विलासया। तत्थ अभितचरेसु इलिका-सीकुणिक-णदि-उम्मणामी संतुवायका णदीमच्छका जलायुमच्छका चेति बहुपदेहिं 25
एते सव्वेहिं पडिरूवपाउब्भावेहिं जधोपदिट्ठेहिं उवलद्धव्वा भवंति।

तत्थ अपदा दुविधा—परिसप्पा चेव किमिका चेव। तत्थ मद्दावकासेसु परिसप्पा विण्णेया। तत्थ किमिगता आसातिका किमिका घुरु गुंण्डु(गंडू)पया य सव्वट्ठका सुकमिंदा चेति ☞ एवमादयो ☜ विण्णेया भवंति। तत्थ णीलेसु णीला, चित्तेसु चित्ता, संविकट्ठपाणस्सितेसु आसातिका किमि धुंरुउ त्ति विण्णेया। भूमीणिस्सितेसुं गंडूपका

---

१ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ २ छयण्णोय° हं० त०॥ ३ अपरिमंडलदीह° हं० त०॥ ४ उपधिका हं० त०॥ ५ पमलचिंता हं० त० विना॥ ६ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ ७ पच्छिपएसु हं० त०॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ ९ जंगिका हं० त० विना॥ १० °ता वि ता म° हं० त०॥ ११ फाकुंचिका धंदका हं० त०॥ १२ °वेडका हं० त० विना॥ १३ पयुसरपस सद्दा तीलुका हं० त०॥ १४ कण्णेपुलिका हं० त०॥ १५ आमांडका फसकस्स हं० त०॥ १६ °सु छित्तेसु हं० त०॥ १७ °रूवेसु पं चेय पयं पिला° हं० त०॥ १८ गण्डु-पया हं० त०॥ १९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते॥ २० °लियकओ त्ति हं० त०॥ २१ °सु रूपका सि०॥

विण्णेया । मूलजोणीणिस्सितेसु लिच्छा संबुट्टिका सूंकमिद्दा ति विण्णेया । इति अपदजोणीयं वक्खाता भवति । इतिं सत्तविधा पाणजोणी वक्खाता । सज्जीवपडिरूव-आमास-सद्दपादुब्भावेहिं [2]चितायं भवतीति ।

तत्थ अज्जीवा तिविधा—पाणजोणीसंभवा मूलजोणीसंभवा धातुजोणीसंभवा चेति । तत्थ चलामासेसु सव्वपाणजोणीगते चेव पाणजोणी विण्णेया । केस-मंसु-लोम-णहगते य सव्वमूलगते चेव मूलजोणी विण्णेया । तत्थ दढामासेसु सव्वधातुगते चेव धातुजोणी विण्णेया । तत्थ पाणजोणी दुविधा—संखता असंखता चेव, अग्गेया ☞ अणग्गेया ☜ चेव दुविधा आधारयितव्वा भवति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णेया । अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्णेया भवंति । सा दसविधा आधारयितव्वा भवंति, तं जधा—केसगता ◁ सिंगगता लोमगता ▷ अत्थिगता [मंसगता रुधिरगता] मज्जागता चम्मगता ण्हाउगता मेदगता चेति । उपजोणीणक पंचविधा, तं जधा—पित्तगता सिभगता दुद्धगता मुत्तगता रेतगता चेति । तत्थोवलद्धीओ केसगता लोमगता सिंगगता चेति आहारमेव उवकरणे उवलद्धव्वा भवंति । अंजणी-फणिका-वीर्जणी-दंडाओ धूमणत्तं समग्गपाउकामये आसंदक-पल्लंक-कोडिलक्खणकआसणगते चेव विण्णेया भवंति, इति केसगता । तत्थ लोमगतं सजीवर्क-पत्तुण्ण-अजिणप्पवेणि इति पकिण्णकं वीजणिया चामरं अजीणकंबलो वालसाडि वालमुंडिका वालव्व-(व्वि)यणी वा एवमादीणि विण्णेयाणि । तत्थ चम्मगते उपाणहा अरसभंडं भच्छा दितिका अजीणं अजीणप्पवेणिका वीणा मसूरका पखरगतं दद्दरका आलिंगा मुरव त्ति एवमादयो विण्णेया भवंति पडिरूवपादुब्भावेणं सएहिं आमासपडिरूवेहिं चेव । तत्थ मंसगते आहारो विण्णेयो भवति । तत्थ ण्हावुणीगतं दुविधं—हीरगतं गंडिगतं चेव । तत्थ हीरगतं तत-वितंता व ता विक्खाता वा गुणगतं विण्णेयं भवति । तत्थ अट्ठिगतं संकुगतं खीलिगतं सिप्पिपुट्ठगतं ☞ संखभायणगतं ☜ विण्णेयं भवति । रुधिरगते अट्ठिगतं कियागतं विण्णेयं भवति । तधा धातुगतं तधा वसागते पुरिसगते कियागतं विण्णेयं भवति ओसहाहारगतं वा । तत्थ आपुणेयेसु वसागतं रुधिरगतं पित्तगतं दुद्धगतं विण्णेयं भवति । तत्थ रत्तेसु रुधिरगतं विण्णेयं । सेतेसु दुद्धगतं रेतगतं वा विण्णेयं भवति । तत्थ चालेयेसु दुद्धगतं विण्णेयं । मुदितेसु विणट्ठेसु य सुक्कं विण्णेयं भवति । सेतेसु चेव कडुकेसु पित्तं विण्णेयं ◁ भवति । ▷ पीतेसु चित्तेसु थूलेसु रुधिर-वसा विण्णेया । अणूसु केस-मंसु-लोमगतं विण्णेयं । उद्धंभागेसु सिंगगतं विण्णेयं । केसगतेसु चेव अग्गेएसु पुरी-दुद्धगतं विण्णेयं । ☞ तणूसु वससगयं विण्णेयं । ☜ दारुणेसु रुधिर-ण्हारु-अट्ठि-मेदो विण्णेया । सव्वबहलगते दुद्धं विण्णेयं । परिजिण्णेसु वधेसु य मुत्त-पुरीसं विण्णेयं । तत्थ आहारेसु पाणजोणी चम्मगता वत्थिगता अट्ठि अट्ठिमज्जा । जे अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति । दीहेसु ण्हारुगतं विण्णेयं । वायव्वेसु वत्थिगतं विण्णेयं भवति । तत्थ आहार-पाणजोणीओ चम्मगता मंसगता वत्थिगता ◁ अट्ठि ▷ अट्ठिमिज्जागता य । अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति । तत्थ भायणगते सिप्पिगतं संखमयं दंतमयं गवलमयं विण्णेयं भवति । तत्थ अट्ठिमये आभरणलोहितिका विण्णेया भवति । तत्थ चम्मे वत्थी आहारगते विण्णेया भवति, दंतभायणगते विण्णेया । अजिणपट्टे अजिणप्पवेणी अजिणगकंचुका चेव वत्थगते विण्णेया भवंति, चम्मसाडीओ य विण्णेया भवंति । मूलगते लोमगतं अच्छादणं विण्णेयं भवति । इति पाणजोणिपडिरूव-सद्दपादुब्भावेहिं समास-वासतो उवलद्धव्वं भवतीति । इति पाणजोणी वक्खाता भवति चिंताया अज्जीवेति ।

तत्थ मूलजोणी तिविधमाधारयितव्वं भवति—मूलगता खंधगता अग्गगता चेति । तत्थ पाद-जंघे मूलजोणी सव्वधातुगते य उद्धं कडीयं अधो गीवायं खंधं जोणीखंधगतेसु य उज्जुयगेसु य उद्धं गीवाय अग्गजोणी उद्धंभागेसु चेव । तत्थ

१ सूरीमद्दा हं॰ त॰ ॥ २ निद्दायं हं॰ त॰ ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ५ °मते सं ३ पु॰ । °गते सि॰ ॥ ६ °अणीओ दंडाओ भूमणत्तं हं॰ त॰ ॥ ७ °पल्लंका° हं॰ त॰ विना ॥ ८ °कप्पतुण्ण° हं॰ त॰ ॥ ९ ण्हावणी° हं॰ त॰ विना ॥ १० °विप्पया भा वि° हं॰ त॰ ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ १२ धातुगते हं॰ त॰ विना ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ १४ °ता वट्टिअट्ठि° हं॰ त॰ विना ॥ १५ ◁ ▷ एतच्चिह्नगतं पदं हं॰ त॰ नास्ति ॥ १६ उज्जुभागेसु उद्धं उद्धं गीवाय उद्धं भागेसु हं॰ त॰ विना ॥

मूलजोणी एकविधा विण्णेया। ⊲ खंधजोणी दुविधा–तया ⊳ गता सारगता चेति। तत्थ तणूसु तयागता विण्णेया तयागता चेव। सारगता सारगते विण्णेया भवंति धातुगते चेव। तत्थ अग्गगता तिविधा–पत्तगता पुप्फगता फलगता चेति। तत्थ पत्तगया तिविधा–तरुणा मज्झिमा जरढा चेति। तत्थ पत्तगया ति(वि)विहा–पुधूसु तणूसु य। पुप्फगते पुप्फगता विण्णेया मुदितेसु चेव। फलगते फलगता विण्णेया पुण्णेसु सारवंतेसु य। तत्थ फलगतं पंचविधं–सेतं रत्तं पीतं नीलं कण्हमिति। एताणि सवण्णेहिं विण्णेयाणि भवंति। तत्थ फलं पंचरसं आधारयित्ता जधारसं विण्णेयं भवति। 5 तत्थ मूलजोणी दुविधा–सज्जीवा चेव अज्जीवा चेव। तत्थ सज्जीवगते सज्जीवा विण्णेया। अज्जीवगते अज्जीवा विण्णेया। तत्थ सज्जीवा तिविधा–गम्मा ⊲ अरण्णा ⊳ गम्मारण्णा चेति। तत्थ अब्भंतरेसु गम्मा वणप्फतयो विण्णेया। गम्मेसु चेव सव्ववज्झेसु वणप्फतयो आरण्णा विण्णेया। वज्झब्भंतरेसु गम्मारण्णा विण्णेया वणप्फतयो। सव्वगम्मारण्णेसु चेव तिविधा–थीणामा पुण्णामा णपुंसकणामा चेति। तत्थ थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकणामेसु णपुंसकणामा विण्णेया वणप्फतयो। आपुणेयेसु णदीरुहा। णिण्णेसु य थलेसु थलजा विण्णेया। 10 लुक्खेसु चेव दढेसु ⊲ पव्वतविरुहा विण्णेया। ⊳

पव्वतपडिरूवेसु य पव्वतरुहेसु चेव ते चतुव्विधा–पुप्फसाली १ पुप्फफलसाली २ ⊲ फलसाली ⊳ चेव ३ [ण] पुप्फसाली ण फलसाली ४ चेति। तत्थ पुप्फसालिणो तिविधा आधारयितव्वा भवंति–पत्तेकपुप्फा गुलुकपुप्फा मंजरिणो। तत्थ एक्कक्केसु गत्तेसु एक्कपादुब्भावे चेव पत्तेकपुप्फा विण्णेया। पत्तेकपुप्फेसु चेव परिमंडलेसु गुलुकपुप्फा विण्णेया। गुलुकपुप्फेसु चेव दीहेसु मंजरिणो विण्णेया। मंजरिपुप्फेसु चेव मंजरिपुप्फेसु ते पंचविधा–सेतपुप्फा 15 रत्तपुप्फा पीतपुप्फा णीलपुप्फा कण्हपुप्फा चेति। एते सवण्णतो आधारयित्ता आधारयित्ता विण्णेया–सेतेसु सेता पुप्फा, रत्तेसु रत्तपुप्फा, पीतेसु पीतपुप्फा, णीलेसु णीलपुप्फा, कण्हेसु कण्हपुप्फा विण्णेया। एते तिविधं आधारयित्ता सुगंधपुप्फा दुग्गंधपुप्फा अचंतगंधपुप्फा चेति। तत्थ सुगंधेसु सुगंधपुप्फा, दुग्गंधेसु दुग्गंधपुप्फा, अचंतगंधेसु अचंतगंधपुप्फा विण्णेया १।

तत्थ फलसाली चतुव्विधा–कायवंतफला मज्झिमकायफला मज्झिमाणंतरकायफला पच्चवरकायफला चेति। 20 तत्थ कायवंतफला पणसा तुंबा कूभंडपुप्फ-फलप्पमाणफला विण्णेया भवंति। मज्झिमकायवंतफला कविट्ठबिल्लप्पमाणा विण्णेया भवंति। मज्झिमाणंतरकायफला अंब-अंबाडक-णीप-तिंदुक-उदुंबरप्पमाणा विण्णेया। पच्चवरकायफला अस्सोत्थ-वड-पील-पियाल-फरुस-चेम्मणडोला-कोलक-करमंद-कलायसंवीयप्पमाणाणि। ते पंचविधा–सेतफला रत्तफला पीतफला णीलफला कण्हफला चेति। जधापडिरूवेहिं वण्णतो कायप्पमाणतो चेव आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवंति भक्खफलगता अभक्खफलगता चेव। तत्थ सव्वआहारगते भक्खफला विण्णेया। अणाहारगते अभक्ख- 25 फला विण्णेया। ते तिविधा आधारयितव्वा–सुगंधा दुग्गंधा अचंतगंधा चेव। सुगंधेसु सुगंधफला, दुग्गंधेसु दुग्गंधफला, अचंतगंधेसु अचंतगंधफला विण्णेया। ते पंचविधा रसफला आधारयितव्वा भवंति, तं जधा–तित्तफला कडुकफला अंबिलफला कसायफला मधुरफला चेति। एते जधुत्ताहिं रसोपलद्धीहिं रसतो उवलद्धव्वा भवंति २।

तत्थ जे पुप्फेण णज्जंति ण फलेण [ते पुप्फसालिणो,] तं जधा–असोग-णागरुक्खा सत्तिवण्णा तिलका सिंदुवार त्ति, जे यऽण्णे एवंविधा चेति। तत्थ जे फलेण उवभुज्जंते ते फलसालिणो। तत्थ इमे फलेण णज्जंते, तं 30 जधा–पणसा पारेवता लउचा मातुलुंगा उदुंवरा, जे यऽण्णे एवमादयो।

तत्थ इमे पुप्फेणं फलेण चेव णज्जंते पुप्फ-फलोपगा, तं जधा–अंबा अंबाडगा णीव-बउल-जंबु-दालिमा, जे य अण्णे एवंविधा भवंति। पुप्फ-फलंतो य जे उवयुज्जंति ते चिंतिता विण्णेया भवंति पुप्फ-[फल]सालिणो त्ति ३।

१-२-३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ४ °त्थफलप्प° हं॰ त॰ विना॥ ५ °धम्मण° हं॰ त॰ विना॥ ६ °संधीय° हं॰ त॰॥ ७ °णाणत° हं॰ त॰॥ ८ माउसगा हं॰ त॰॥ ९ °ण णज्जंते फ° हं॰ त॰॥ १० °लओ य जे चज्जंतिप चिंति° हं॰ त॰॥

तत्थ जे ण पुप्फेण फलेण णेव उवजुज्जंते ते णेव पुप्फसालिणो [णेव] फलसालिणो त्ति विण्णेया। तं जधा—खदिरा धवा अयकण्णा पूतिकरंजो अहिमारो पूतिला कुंभकंडका चेति एवमादयो विण्णेया। जे य अण्णे एवंविधा, ते णेव पुप्फसालिणो [णेव फलसालिणो] चतुत्था पगती रुक्खाणं विण्णेया इति ४।

एते जधुत्ताहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलभित्ता चतुव्विधा उवलद्धव्वा। ते सव्वे चतुव्विधा—कायवंतो मज्झिमकाया मज्झिमाणंतरकाया पच्चंवरकाया चेति तत्थ सव्वरुक्खा विण्णेया। उद्धंभागेसु लता विण्णेया। कुडिलेसु य वामभागेसु मज्झिमकायेसु गुम्मा विण्णेया। गहणेसु य तिरियपच्चवरकायेसु तणा विण्णेया[1] उवग्गहणेसु य। तत्थ सव्वबीयाणि तणेसु विण्णेयाणि। बीयाणि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं जहायण्णजोणीयं उवलद्धव्वाणि भवंति। तत्थ खंधेयेसु उच्छू विण्णेया, सव्वं चेव गुलगतं। तत्थ कंदजाणि सव्वाणि धूवणाणि विण्णेयाणि भवंति। अग्गेयेसु धूवणाणि विण्णेयाणि भवंति। उद्धंसिरोमुहामासे ण्हाणोपलेयणकेण पधोवणविसेसक्किता विण्णेया। मज्झिमकायेसु अणुलेवणं विण्णेयं।

मज्झिमकायं च ण्हाणागलु-अलत्तक-कालेयक-देयदारुगतं य गंधे विण्णेयं। मूलगता गंधा विण्णेया मूलगते। खंधगता गंधा विण्णेया खंधगते। तयगता गंधा विण्णेया तयगते। सारगता गंधा विण्णेया सारगते। णिज्जासगता गंधा विण्णेया णिज्जासगते। तणूसु पुधूसु य पत्तगते य पत्तगया गंधा विण्णेया। पुण्णेसु सव्वफलगते चेव फलगता गंधा विण्णेया। मुदितेसु पुप्फगते य सव्वपुप्फगता गंधा विण्णेया। पुण्णेसु णिद्धेसु य सव्वरसगते य रसगता गंधा विण्णेया।

तत्थ गुग्गुलविगतं सज्जलसं इक्कासो सिरिवेट्ठको चंदणरसो तेलवण्णिकरसो कालेयकरसो सहकाररसो मातुलुंगरसो करमंदरसो सालफलरसो सव्वरसा चेति रसगते विण्णेया भवंति। जधुद्दिट्ठाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवंति एवमादयो रसा चेति।

तत्थ तेल्लेसु कुसुंभतेल्लं अतसीतेल्लं रुचिकातेल्लं करंजतेल्लं उण्हिपुण्णामतेल्लं बिल्लतेल्लं उसणीतेल्लं पह्नीतेल्लं सासयतेल्लं पूतिकरंजतेल्लं सिग्गुकतेल्लं कपित्थतेल्लं तुरुक्कतेल्लं मूलकतेल्लं ◁[2]अतिमुत्तकतेल्लं▷ एवमादीणि तिल्लाणि रुक्ख-गुम्मवल्लि-गुच्छ-वलयफलणिव्वत्ताणि विण्णेयाणि भवंति। जधुत्ताहिं रूवोवलद्धीहिं ◁[3]गुम्मोवलद्धीहि▷ य चत्तारि तेल्ला ◁[4]विण्णेया—तिलतेल्लं अतसीतेल्लं सासवतेल्लं कुसुंभतेल्लं चेति पच्चंवरकायेसु चेव विण्णेयाणि भवंति। रुचिकातेल्लं इंगुणि(दि)तेल्लं सिंगुग्गुतेल्लं चेति एवमादीणि मज्झिमाणंतरकायेसु विण्णेया भवंति। अतिमुत्तकतेल्लं पधकलीतेल्लं चेति मज्झिमकायेसु विण्णेयाणि भवंति। अवसेसाणि कायवंतेसु▷ विण्णेयाणि तिल्लाणि भवंति। तत्थ चंपक-चंदणिकापुस्सतेल्लं अतिमुत्तकतेल्लं जातीतेल्लं पीलुतेल्लं यूथिकातेल्लं [5]उसधतेल्लाणि चेव उवद्दुतेसु विण्णेयाणि भवंति। मुदितेसु गंधतेल्लाणि विण्णेयाणि भवंति। मधुरेसु चंदणिकतेल्लं विण्णेयं। तिण्हेसु यक्किकतेल्लं विण्णेयं। अग्गेयेसु पुस्सतेल्लं विण्णेयं। पीलितपरिमंडितादीसु उवलद्धीहिं पडिरूवतो आमासतो य जधुत्तं तधा उवलद्धव्वं भवति। इति तेल्लाणि वक्खाताणि भवंति।

तत्थ मूलजोणी साली वीही कोद्दवा कंगू रालका वरका मुग्गा मासा णिप्फावा चणका कुलत्था मसूरा अदसीओ कुसुंभा सासवा चेति आहारगता विण्णेया सव्व अणूसु चेव। तत्थ सेतेसु साली जवा सेततिला सेतणिप्फावा कुसुंभा चेति विण्णेया। रत्तेसु वीही कोद्दवा रत्तणिप्फावा कुलत्था मसूरा सस्सवा चेति विण्णेया। पीतेसु कंगू रालगा सिद्धत्थका चेति एवमादयो विण्णेया भवंति। आपुणेयेसु अतसी कुसुंभा तिला सासवा चेति ☞ [6]आहारगया ☜ विण्णेया। अवसेसाणि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति।

तत्थ उवग्गहणगते मूलजोणीगते वत्थाणि खोमकं दुगुल्लं अग्गिकं चीणपट्टा चागपट्टा कप्पासिकं चेति विण्णेयं भवति। जधुत्ताहिं वत्थोपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति। तत्थ जधा वत्थजोणीयं उवदिट्ठं ति।

---

१ °या इति गह° हं० त० विना ॥ २-३ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं०त० नास्ति ॥ ४ ◁▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ५ उसवते हं० त० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥

तत्थ मूलजोणीयाणि भायणाणि कट्ठमयं फलमयं पत्तमयं चेलमयं इति एवमादीयाणि विण्णेयाणि भवंति । तत्थ[1] खंधगते कट्ठमयं विण्णेयं सव्वकट्ठपडिरूवे चेव । पुण्णेसु फलमयं विण्णेयं सव्वफलपडिरूवे चेव । तणूसु पुधूसु य पत्तमयं विण्णेयं सव्वपत्तपडिरूवगते चेव । किसेसु वित्थडेसु य[2] चेलमयं विण्णेयं सव्ववत्थपडिरूवगते चेव । एवमादीहिं सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि ⊲ भायणाणि ⊳[3] भवंति । इति मूलजोणीआ[4] भायणं ।

तत्थ मूलजोणीयं आभरणं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं कट्ठमयं चेति । तत्थ मुदितेसु पुप्फमयं विण्णेयं । पुण्णेसु फलमयं विण्णेयं । तणूसु पुधूसु य पत्तमयं विण्णेयं । खंधगते सारगते चेव कट्ठमयं विण्णेयं भवति । इति मूलजोणीयं आभरणं चिंतियायं वक्खातं भवति ।

तत्थ धातुजोणी सारगता वण्णगता चेव । तत्थ सारगता धातुजोणी सारगता विण्णेया । ⊲ वण्णगता वण्णगते विण्णेया भवंति । ⊳[5] तत्थ सारगता दुविधा—विलयगता[6] चेव घणगता चेव । तत्थ विलयगता[7] णवविधा, तं जधा—सुवण्णकं तवुकं तंबगं सीसकं काललोहं वट्टलोहं कंसलोहं हारकूडगं रूविअगमिति[8] एवमादीणि विण्णेयाणि भवंति । तत्थ पीतकेसु सुवण्णकं हारकूडकं चेव विण्णेयं । उत्तमेसु दंसणीयेसु य सुवण्णं विण्णेयं । पच्चवरेसु सोवण्णेसु य पीतएसु हारकूडकं विण्णेयं । तंबेसु सुवण्णकं वा तंबकं वा हारकूडकं वा विण्णेयं । उत्तमेसु रत्तेसु सुवण्णं, मज्झिमेसु तंबकं, उवहुतेसु हारकूडकं, सेतेसु रुप्पं वा तवुकं वा कंसलोहं वा विण्णेयं । सारमंतेसु सुक्किलेसु रुप्पं, असारेसु तवुकं, सप्पभेसु कंसलोहं विण्णेयं । कण्हेसु[9] सीसकं काललोहं चेति । तत्थ कढिणेसु काललोहं विण्णेयं । ☞ मुंदितेसु सीसकलोहं विण्णेयं । ☜[10] वट्टलोहं विण्णेयं । भायणोपकरणेसु काललोह-कंसलोहाणि विण्णेयाणि । सप्पभेसु कंसलोहं, सव्वच्छायागते[11] चेव तिक्खेसु काललोहं, सव्वसत्थगते चेव जण्णेयेसु सुवण्णकं वा तंबकं वा कंसलोहं वा वट्टलोहं वा विण्णेयं भवति । वत्थेसु तंबकं वा सुवण्णकं वा काललोहं वा विण्णेयं भवति । इति धातुजोणी विलयगता विण्णेया । तत्थ घणजोणी धातुगता वेरुलिय-फालिय-मसारकल्ला लोहितक्खा अंजणमू(पु)लका गोमेदका अंका[12] मलका सासका सिलप्पवाला पवालका वइरं मरगतं विविधा खारमणी चेति । एवमादी पाणजोणी धातुजोणीगता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आभास-वण्ण-पडिरूव-सद्दोपकरणेहि सिप्पिकपादुब्भावेहिं जाति-विजातीहिं अग्गेय-अणग्गेयोपलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति । इति सारगता चिंता विण्णेया भवंति ।

वण्णजोणीगता ततं जधा—सुधा सेडिका पलेपको णेलकंता[13] कडसकरा चेति । रत्तेसु गेरुग-मणोसिला पत्तंगे हिंगुलुकं पञ्जणी वण्णमत्तिका[14] इति विण्णेया भवंति । पीतएसु हरितालं मणोसिला वण्णकमत्तिका चेति विण्णेया । णीलेसु णीलकधातुको सस्सकचुण्णकमिति एवमादी विण्णेयं । कण्हेसु अंजणं कण्हमत्तिका चेति । पण्डूसु पण्डुमत्तिका वण्णमत्तिका चेति वा वण्णेसु । खेत्तभूमीए पण्डूभूमीओ विण्णेयाओ । णिद्धेसु णदीमत्तिका विण्णेया । पाणजोणीगते संगमत्तिका विसाणमत्तिका विण्णेया । उवहुतेसु विसाणमत्तिका । मुदितेसु देवतायतणमत्तिका विण्णेया । तत्थ पुणरवि मत्तिका बहुविधा भवति, तं जधा—कण्हमत्तिका पंडुमत्तिका तंबभूमी मुरुंवो[15] कडसकरा सुवण्णं जातरूवं मणस्सिला गोकंटको खीरपको अब्भवालुका लवणं सुद्धभूमी चेति आधारयितव्वं भवति सकाहिं । उवलद्धीहिं तत्थ सेतेसु लवणं खीरपओ गोकंडको अब्भवालुका चेति । दढेसु मणसिला विण्णेया । मिदूसु कण्हमत्तिका मुरुवो[16] तंबो चेति विण्णेया । इति धातुजोणीगता चिंता वण्णधातुगता चेति वक्खाता भवति ।

तत्थ विगता धातुजोणी भूमीसंजुत्ता, तं जधा—खेत्तं वत्थुं गाम-णगर-सण्णिवेस-आवास-कुंड-णदी-तलाग-पुक्खरणि-कूव[17]-सर-फलिह-सेउ-पागारो[18] पेंडपाली एलुको [19]चेति पधा पंथा पव्वता चेति एवमादीयं विण्णेयं भवति । तत्थ

१ °त्थ गंधग° हं० त० ॥ २ य वेउमयं हं० त० ॥ ३ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ णीज भा° हं० त० ॥ ५ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६–७ वियलगता हं० त० ॥ ८ रुहियगमिति हं० त० ॥ ९ कण्णेसु हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ सच्छाया° हं० त० ॥ १२ °का यमल° हं० त० विना ॥ १३ °क-याडक-सक्क° हं० त० ॥ १४ °मल्लिका हं० त० ॥ १५ मुंडचो करस° हं० त० विना ॥ १६ मुसंचो वेति हं० त० विना ॥ १७ °रकूव° हं० त० विना ॥ १८ °फलिहासतपा° हं० त० विना ॥ १९ 'चेति' चैत्यम् इत्यर्थः ॥

उद्धंभागेसु उण्णतेसु पव्वत-पंधा(या)-पाली-चेति-एलुकमिति, जं च किंचि उण्णतं तं सव्वं विण्णेयं भवति । णिण्णेसु णदी-तलाग-पुक्खरणी-वावी-कूव-उदुपाण-सर-फलिहा एवमादयो विण्णेया भवंति । सण्णिरुद्धेसु तलाग-पुक्खरणी-वावी-गाम-णगर-णिगम-सन्निवेसादयो उवलद्धव्वा भवंति । दीहेसु णदी विण्णेया । चतुरस्सेसु वावी पुक्खरिणी खेत्तं वा विण्णेयं भवति । असंजतेसु णदी पव्वता विण्णेया भवंति । महावकासेसु भूमी वा ☞ पव्वता वा ☜ विण्णेया । पुधूसु महावकासेसु भूमी विण्णेया, उद्धंभागेसु दढेसु य पव्वता विण्णेया । उद्धंभागेसु मतेसु य एलुको विण्णेयो । उद्धंभागेसु जिण्णेयेसु य चीती विण्णेया । पादजंघासु दीहेसु य पंधा विण्णेया । इति भूमिपयुत्ता धातुजोणी ।

तत्थ धातुजोणीओ आभरणजोणी जधुत्ता आभरणजोणीयं तधा विण्णेयं भवति इति धातुजोणीआभरणजोणि-चिंताय उवलद्धव्वा भवति । तत्थ धातुजोणिजा वत्थजोणी लोहजालिका सुवण्णपट्टो खचितं वेति जधुत्तं वत्थजोणीयं तधा धातुजोणीगतं वत्थं विण्णेयं भवति इति धातुजोणिवत्थजोणिजं चिंताय उवलद्धव्वं भवति । तत्थ धातुजोणिया भायणजोणी पुधूसु धातुजोणिगतेसु सव्वभायणपडिरूवगते चेव मत्तिकामए चेव लोहमये मणिमये सेलमये जधुत्ताहिं जधुत्ताहिं भूमी-सेल-लोह-मणिजोणीहिं समणुगंतव्वं भवति इति धातुजोणिजा भायणा जोणीचिंतायं उवलद्धव्वा भवंति। तत्थ धातुजोणिजो सयणासणजोणी लोहमयी सिलप्पवालमयी मणिमयी सेलमयी भूमी वेति जधुत्ताहिं धातुजोणीहिं उवलद्धीहिं सयणासणोवलद्धीहिं चेव समणुगम्म उवलद्धव्वा भवंति । तत्थ महावकासेसु भूमी विण्णेया । अग्गेयेसु इट्टका, समेसु वेदिका, दढेसु सिलापट्टपासाणा, चतुरस्सेसु सिलापट्टा, दढेसु चेव परिमंडलेसु सिलापट्टा, चतुरस्सेसु परिमंडलेसु वा अग्गेयेसु इट्टका । तत्थ तिविधमेव धातु तिविधमेव आसणं सयणं वा संठाणतो उत्तम-जधण्ण-मज्झि-माहिं चेव उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवंति इति धातुजोणिजं सयणासणं चिंताय उवलद्धव्वं भवति । इति धातुजोणी-चिंता वक्खाता भवति ।

तत्थ पाणजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी धातुजोणीसाधारणा, मूलजोणी पाणजोणीसाधारणा, मूलजोणी धातुजोणीसाधारणा, धातुजोणी पाणजोणीसाधारणा, धातुजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी-धातुजोणीसमभागा समणुगंतव्वा भवति । एवमादी चिंता जीव-अजीवसमायुत्ता दिव्व-माणुस्स-तिरिक्ख-णेरइयसंसारसमायुत्ता सिद्धसमा-युत्ता य एवमादी जीवचिंता अजीवचिंता चेव सद्दगता रूवगता रसगता गंधगता फासगता गाम-णगर-खेड-पट्टण-जण-पद-पव्वत-गिह-सण्णिवेस-खेत्त-खल-भूमि-वत्थुगता तलाग-पुक्खरणि-कूव-सर-णदी-समुद्द-धण-धण्ण-रतण-उवकरण-जाण-वाहण-सयणा-ऽऽसण-वत्थ-परिच्छद-भायणगता पाणजोणिगता मूलजोणिगता धातुजोणिगता अतिक्कंता-ऽणागतकाल-संपतसमायुत्ता गणणा-परिसंखा-असंखेज्जसमायुत्ता य विज्जासुत्तसमायुत्ता य सजीव-अजीवसमायुत्ता दुविधा समासेण उदत्ता अणुदत्ता चेति आभास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति ॥

इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय चिंतितो णामाज्झायो अणंतागमसंजुत्तो
जिणाणंतरणाणिपवरगुणाणंतपवरागमसंयुत्ताय मणोगतभावप्पकासणकराय-
मंगविज्जाय णमोक्कारयित्ता णमो भगतोयसवत्तो महतिमहावीर-
वद्धमाणाय अभिप्पसण्णाय अंगविज्जाय चिंता णामज्झायो
अट्ठावण्णो सम्मत्तो ॥ ५८ ॥ छ ॥

---

१ °वदापा° हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ जिणेये° हं० त० विना ॥ ४ पया वि° हं० त० ॥ ५ °णीमयं सप्पमणु° हं० त० ॥ ६ ◁ ▷ सविज्जासुत्तत्यसत्यसमा° हं० त० ॥ ७ °तराणि प° हं० त० विना ॥ ८ पराग° हं० त० विना ॥

[एगूणसट्ठिमो कालज्झाओ]

[पढमं पडलं]

उसभादी तित्थकरे सिरसा वंदित्तु वीरणिच्छेवे । विज्जं महापुरिसदेसितं च णाणं च णाणी य ॥ १ ॥
पंचविहो जो कालो महापुरिसदेसिताय विज्जाय । सो गाधाहिं णिवद्धो अणुजोगत्थं चियेतूणं ॥ २ ॥
पंचविधो पुण कालो मुहुत्तमादी दिवसा य पक्खा य । मासे मासा वस्सं वरसाणि य दिग्घकालो य ॥ ३ ॥
जं पुच्छितं मुहुत्तविसए मुहुत्ता तहिं गणेतव्वा । जं दिवसाणं विसेणय (विसयो) तहिं तु दिवसा गणेतव्वा ॥४॥
पक्खेसु य ते पक्खा एक्कारसमासिकं च मासेसु । वरसाणं जो विसयो तहिं तु वरसा गणेतव्वा ॥ ५ ॥
अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण-पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ६ ॥
सव्वम्मि अतिम्मत्ते समाणजोगा य समगिरेसम्मि । ओलमिवेदुक्खलक्खे चिरणिप्फण्णे य चिरकालो ॥ ७ ॥
अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण-पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ८ ॥
एतेसिं भावाणं मज्झिमजोगेण मज्झिमो कालो । अट्ठे संपुण्णा-अणधिकम्मि लेहट्ठकाले य ॥ ९ ॥
अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माणपमाणे काले वेलागते चेव ॥ १० ॥
एतेसिं भावाणं पतणुकभावे य थोवभावे य । खुड्डलक-ह्रस्सभावे आसण्ण-पसण्णभावे य ॥ ११ ॥
लहुकढ-लहुणिप्फण्णे लहुलोभे [......]आगते सिग्घं । अपरिकेसेण य उवगतम्मि सिग्घो हवति कालो ॥१२॥
वासाणि दीहकालो मासा पक्खा य मज्झिमो कालो । दिवस-मुहुत्ता ह्रस्सम्मि होंति कालप्पमाणम्मि ॥ १३ ॥
वस्सेण व वस्सेहि य अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । वरसाणि विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १४ ॥
मासेण य मासेहि य अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । मासे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १५ ॥
पक्खेण य पक्खेहि य अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । पक्खे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीय ॥ १६ ॥
दिवसेण य दिवसेहि व अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । दिवसे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १७ ॥
किंचि क्खणं मुहुत्तं अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । जाणसु तत्थ मुहुत्ते तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १८ ॥
समतिक्कंते दिवसे मासे संवच्छरे व जाणाहि । णिव्वत्ते अणुतुरिते कडे य भुत्ते अतीते य ॥ १९ ॥
संपतकाले दिवसे वत्तंते वत्तमाणदिवसे य । वत्तंतं वासं वच्छरं तु मुण वत्तमाणेसु ॥ २० ॥
दिवसे मासे संवच्छरे य पुरतो अणागते जाणे । सव्वम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्जिहिति त्ति विण्णातो ॥ २१ ॥
समतिक्कंते दिवसे मासे संवच्छरे य जाणेज्जो । णिव्वत्ते अणुभूते कडे य भूते अतीते य ॥ २२ ॥
अतियत्तेसु ण बूया अणागतं ण वि य वत्तमाणाइ । संपतमतिवत्ताणि य ण वागरे वत्तमाणेसु ॥ २३ ॥
उप्पण्णमतीतेसुं अतिवत्तं जाण सव्वभावेसु । उप्पण्णवत्तमाणे अ वत्तमाणो हवति कालो ॥ २४ ॥
सव्वम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्जिहिति त्ति णागतो कालो । उप्पज्जंतेसु अणागतं य मुण वत्तमाणं वा ॥ २५ ॥

उप्पुप्फ-ज्झीणफले मलिणफले [तह य] मलिण-सुक्खतणे ।
सुक्खपत्ते य जुत्ते मते य वत्तुस्सए य कालो अतिक्कंतो ॥ २६ ॥

मुण वत्तमाणकालं गणिज्जमाणे तिरिच्छमाणे वा । दिज्जंते भुज्जंते आढत्ते कीरमाणे वा ॥ २७ ॥

---

१ अतिस्सए हं० त० ॥ २ °तलक्खदुक्खे हं० त० विना ॥ ३ अद्धाग° हं० त० ॥ ४ पुण अणधिकम्मि लेट्टु हं० त० ॥ ५ अच्छागते य क° हं० त० ॥ ६-७-८ उप्पण्णो हं० त० ॥ ९ विण्णेतो हं० त० ॥ १० °फले मसिणफले मलिणमुसतणो मुसपत्ते य मुत्ते मत्ते य वत्थस्स° हं० त० ॥ ११ °माणे वियिज्जमाणे हं० त० ॥

पुप्फ-फल-सस्स-उदयसमुदए य वत्तमाणम्मि । णवजोव्वणकेसेसु चेव सुग संवदं कालं ॥ २८ ॥
पुप्फ-फलाणं सस्से अचिरा ओलयति या सुद्दो सरदो । ठायंति वंधवत्या होहिति दुक्खेणं भोवव्वं ॥ २९ ॥
एहिति दाहिति काहिति होहिति दिज्जिहिति लभिहिती य त्ति। दस्सामो करसामो त्ति होति तु अणागतो कालो ३०
संपदमणागतमतिच्छिते य एक्कतरगम्मि भावम्मि । ऍवयुत्ते पुच्छंते सो कालो होइ बोधव्वो ॥ ३१ ॥
आधारे तत्थ बाहिरेण तम्मि तु वज्जायअविमत्तो त्ति । तिण्हं पि य कालाणं [............] ॥ ३२ ॥
पंचिंदिएहिं पंचहिं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तु । जे फुड विण्णाता तत्थ ते उप्पाता गणेयव्वा ॥ ३३ ॥

॥ पढमं पडलं ॥ १ ॥ छ ॥

[वितियं पडलं]

[5]केयि ज्जातिविसेसा गज्झा केयित्त रूयसो गज्झा । [6]केयी वण्णविसेसा केयि त्ति रसा रसविसेसा ॥ १ ॥
केयि त्थाणविसेसा गज्झा केयि त्ति जीवितविसेसा । केयि ण्णामविसेसा केयिं तु बलाबलविसेसा ॥ २ ॥
सारगुणा सीलगुणा केयिं धम्मगुणतो सुगेज्झ त्ति । मिदु-कढिण-णिद्ध-रुक्खा सी-उण्हगुणा य केयिं तु ॥ ३ ॥
[7]तेतेण सव्वभावा गज्झं तु भावविधिविसेसेण । इट्ठवणं उवगता विण्णेया माणुसे लोए ॥ ४ ॥
जे पाणजोणिया मूलजोणिया धातुजोणिया या वि । उप्पाया उप्पण्णा एताव विधीय णातव्वा ॥ ५ ॥
सव्वेसिं भावाणं अकित्तिमाणं च कित्तिमाणं च । इट्ठत्तमणिट्ठत्तं मज्झिमं च तिविधं पुणो णेयं ॥ ६ ॥
इट्ठेसु दिग्घकालो मज्झिट्ठेसु वि य मज्झिमो कालो । दोसमणिट्ठमसारेसु चेव अप्पो हवति कालो ॥ ७ ॥
पुण्णामा सारजुत्ता मज्झिमसारा य होंति थीणामा । जे तु णपुंसकणामा ते तु असारेसु बोधव्वा ॥ ८ ॥
कालो तु महासारेसु महंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवंतेसु सव्वेसु ॥ ९ ॥
जध णामा तध रूया सद्दा गंधा रसा ⊲ ये फासा य । पंचविधा उप्पाया एतेण गमेण णातव्वा ॥ १० ॥
उप्पत्ति-विपत्तिसुभा दो वि [य] जे संभवंति दव्वाणं । एगमहोरत्तेण तु तेसु मुहुत्ता मुणातव्वा ॥ ११ ॥
उप्पत्ति(त्ती य) विपत्ती य उदया जे भवंति भावाणं । ⊳ वस्सेहिं तेहिं वरसाणि होंति उप्पज्जमाणेहिं ॥१२॥
निमिसंवरसुस्सासा कट्ठा य लवा कला य वीसं तु । कालस्स एस आदी एगमुहुत्ता समक्खाता ॥ १३ ॥
एते तीसं संखा तु मुहुत्ता जायते अहोरत्तं । एसो तु परो कालो भवति मुहुत्तप्पमाणस्स ॥ १४ ॥
एतेसुप्पातविधी मुहुत्तवग्गस्स वण्णयिस्सामि । जेसु समुदीरमाणेसु मुहुत्ता होंति बोधव्वा ॥ १५ ॥
जे य परंपरकिसा परमाणू वा सयावरा उत्ता । जीवा-ऽजीवणिकाया सव्वे उ मुहुत्तसंखाता ॥ १६ ॥

॥ उप्पातविधिपरिक्खायं उप्पत्तिता अवितथं जधुवदेसं पडलं द्वितीयं ॥२॥ छ ॥

[तइयं पडलं]

उप्पातविधिं तु जहक्कमेण वोच्छं दिवसवग्गस्स । उप्पातविधिं च पुणो मुहुत्तवग्गस्स वोच्छामि ॥ १ ॥
पक्खुप्पातविधिं पि य ततिकं आगमं वोच्छं । मासुप्पातविधिं पि य वोच्छामि चतुत्थवग्गस्स ॥ २ ॥
वस्साणं पि य उप्पातविधिं सव्वं जहक्कमं वोच्छं । संवच्छरं जुत्तोलिं [10]दीवो त्ति ण्णाणरासिस्स ॥ ३ ॥
एत्तो अपरिमितविधिं अपरिमितस्स तु पुणो वि कालस्स । कालमणंतं च पुणो णिरुद्धकालं च वण्णेस्सं ॥ ४ ॥
उदु-वस्स-मास-पक्खं दिवसे य मुहुत्तवग्गं च । मंडलवित्थारेहि य कीलणकउवक्खरविधीहिं ॥ ५ ॥

---

१ °कससेसु हं० त० ॥ २ °ण होयव्वं हं० त० ॥ ३ गाहम्मि हं० त० ॥ ४ देवजुते हं० त० ॥ ५ कज्जिज्जाविविसेसा हं० त० ॥ ६ केयि त्ति वण्ण° हं० त० ॥ ७ तेयण सव्वभागा हं० त० ॥ ८ °ज्झिमेसु हं० त० विना ॥ ९ ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकद्वयाधिकः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० दीवे त्ति हं० त० विना ॥

बारसमासे संवच्छरे य जोतिसगतीय वण्णेस्सं । बारसमासे य पुणो उदुपेयालेण वण्णेस्सं ॥ ६ ॥
एगाह-दुग-तिगा चउक्का पंचके च्छाहा सत्तरत्तं च । अट्ठ णवके दसाहे पण्णरसाहे य वोच्छामि ॥ ७ ॥
कालं जोण्हं च पुणो दिवसं रत्तिं च वण्णइस्सामि । एकमहोरत्तं वा वेलाणं वण्णइस्सामि ॥ ८ ॥
एत्तो वुट्ठीगंडय पुणो अग्घगंडय अग्गिगंडयं । पंचहि वि मूलवत्थूहि जधुत्तं कित्तयिस्सामि ॥ ९ ॥
एक्केकीअ य गाधा य मुहुत्ते य दिवसे य पक्खे य । मासे य पुणो वोच्छं मज्झिमकालप्पमाणम्मि ॥ १० ॥ 5
तण्णामे तंरूवेहिं चेव तब्भावविधिविसेसेहिं । एत्तो कालपमाणं अपच्छिमं वण्णयिस्सामि ॥ ११ ॥

॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालणामावलिकायामध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥ छ ॥

[चउत्थं पडलं]

अंडसुहुमे य बीयसुहुमे य पणकसुहुमे सिणेहे य । वायू सदे गंधे सुहुमे सुहुमेसु सव्वेसु ॥ १ ॥
खुड्डलक-योक-डहरक-अणुक-सुहुम-केस-मंसु-रोमेसु । एत्थ भवंति मुहुत्ता अब्भंतरतो अहोरत्ते ॥ २ ॥ 10
खुल्लक-वराड-संखणग-सिप्पि-गंडूपदे जलूका य । आसालिका पंरवत्ते पाण्णयिका सुंकेसु पट्टेसु ॥ ३ ॥
धिंकुण-लिक्खा-घुण-चम्मकीड-फलकीड-धण्णकीडा [य] । सुत्तजगलिका कुंथू उरणी सुयम्मुत्ता ॥ ४ ॥
एवमादिका जीव(वा) विंदिका तिंदिका य तसकाया । सुकुमालका डहरका सव्वे तु मुहुत्तसंखाता ॥ ५ ॥
पुप्फ-फलं धण-धण्णं सद्द-प्फरिस-रस-रूव-गंधा य । सुकुमालका सुहुमका सव्वे तु मुहुत्तसंखाता ॥ ६ ॥
कंगू-रालकासामाक-वरक-सिद्धत्थका-सरिसवेसु । एत्थ मुहुत्ता णेया सुहुमेसु य सव्वबीयेसु ॥ ७ ॥ 15
धण्णरते ◁ वण्णरते ▷ पंसुरये छारिका दगरये य । चुण्णेसु अंजणेसु य पदुमरयकतम्मि य मुहुत्ता ॥ ८ ॥
सुकुमालका सुहुमका तिइंदिगा जे तु तेसु तु मुहुत्ता । थूलसरीरेसु तिइंदियेसु दिवसा विधीयंते ॥ ९ ॥
खुड्डलकेसु तु चतुरिंदिएसु दिवसा भवंति णातव्वा । थूलसरीरे चतुरिंदिकेसुं पक्खा विधीयंते ॥ १० ॥
खुड्डलकेसु तु पंचेंदिकेसु दिवसा य होंति पक्खा वा । संवच्छर-मासा वा पंचेंदिकथूलकायेसु ॥ ११ ॥
खुड्डलकेसु तु पंचेंदिएसु एत्थ दिवसा य होंति पक्खा वा । संवच्छर-मासा वा थूलसरीरेसु पक्खीसु ॥ १२ ॥ 20
सिग्घ-चवलेसु मदु-सुहुमकेसु पुप्फेसु अप्पसारेसु । आसण्ण-पसण्णेसु य एत्थ मुहुत्ता उ बोधव्वा ॥ १३ ॥
किंचि क्खणं मुहुत्तं चिंदुं थोगं विपच्चते [3]सिद्धं । वड्ढीयते पडिच्छइ एवं तु मुहुत्तिओ कालो ॥ १४ ॥
अणुसुहुमम्मि य काए जति काया पेंडिता व गणिता वा । तति तु मुहुत्ता णेया होंति मुहुत्तप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥

॥ महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालप्पमाणो चउत्थो ॥ ४ ॥ छ ॥

[पंचमं पडलं] 25

भुम-णयण-कण्ण-णासोट्ठ-पोरुसंगोट्ठ-अंगुलिग्गहणे । एतेसिं भागाणं उवकरण-उवक्खरविधीसु ॥ १ ॥
अतिसुहुमे मोत्तूणं खुड्डलकेसु वि य सव्वसत्तेसु । आमास-सद्द-दंसण-कक्खेसु दिवसा मुणेतव्वा ॥ २ ॥
जलुका-लूता-कोलिक-घरपोपलिकासु चेव अहिलूका । भिंगारी-ओलकासु चेय दिवसा विधीयंते ॥ ३ ॥
भमरा मधुकर तोड्डा पतंग तध मच्छिका मगसकेसु । चउरिंदियतसपाणेसु एत्थ दिवसा विधीयंते ॥ ४ ॥
कडुकालमच्छसिकुवलिका तध विकलका य पलकेसु । छिर-कुरिर्ले-सिगिलि-मंडूकलिआसु य तवेव ॥ ५ ॥ 30

१ धारत्वले प्पा° हं॰ त॰ विना ॥ २ सुकप° हं॰ त॰ विना ॥ ३ °के तु प° हं॰ त॰ विना ॥ ४ सिद्दं हं॰ त॰ विना ॥ ५ °अल° हं॰ त॰ ॥ ६ °ल-कुभिगिल-मं° हं॰ त॰ विना ॥

गोम्मी-कीडग-विच्छिय-मुंगोपक-इंदगाइयासु वि य । उंदुर-सरड-करकला-चुंदुलग-चतुप्पदे दिवसा ॥ ६ ॥
पंयोलग-यविभेदग-गहकंडुक-भुंभिकारीयासु वि य । चोलाडिगासु कुलिंगएसु केसु दिवसा विधीयंते ॥ ७ ॥
धेन्मणग-पंदरागं दामएसु आमलग-जंबुलफलेसु । अंबाडग-करमंदे सीवण्णे उंबरफलेसु ॥ ८ ॥
यतग-तोडग-मीहा-लउसु-तुंबुरु-पिप्पलफलेसु । सेडुंफल-कोलफल-चारमट्टिएसु य तथेव ॥ ९ ॥
5 परिफलं करिलेग-लोमसिग-विडालकेसु य तधेव । वातिंगण-वालुंकेसु चेव दिवसा विधीयंते ॥ १० ॥
पूगफल-कक्कोलग-लवंग-जातीफलेसु य तधेव । मुदंगा-गजूरा-पिप्पलि-मरिएसु य तधेव ॥ ११ ॥
वगफलगते मुद्दुता गुम्मफलेसु दिवसा मुणेयव्वा । वल्लिफलेसु य पक्खा मासा रुक्खे विधीयंते ॥ १२ ॥
एत्थ विधी दालिमविल्लएसु पक्खा हवंति मासा वा । चट्टेसु य हस्सेसु य फलेसु दिवसा विधीयंते ॥ १३ ॥
धन्न य हिज्जोऽस्सरे नियट्टियं चेव कित्तिदिवसा तु । वंदेसि-तणिस्सोगेसु चेव दिवसा विधीयंते ॥ १४ ॥
10 पाडिगदावी[या]नु य विधीसु चाउद्दमारमाणेसु । दिवसपरिकित्तणाय तु एत्थ तु दिवसा मुणेयव्वा ॥ १५ ॥
माल्लामदे माल्लमोदण्ते माल्लामरणए य । मालम्मि य पुप्फफले एत्थ तु दिवसा विधीयंते ॥ १६ ॥
मुहुत्तमाया यय जानविका पंडिता य गम्भिता वा । तति दिवसा णातव्वा होंति तु दिवसप्पमाणेणं ॥ १७ ॥

॥ पडलं पंचमं ॥ ५ ॥ छ ॥

[छट्ठं पडलं]

15 अंभोग-बाहु-गीवाआमासे तप सदत्य-पादाणं । उरकरग-भूमगक्खेसु चेव वह पक्खिसओ कालो ॥ १ ॥
घग्गगर-जारिगे वग्गतपेसु वि य सव्वमचेसु । मज्झिमकायेसु चतुप्पदेसु पक्खा विधीयंते ॥ २ ॥
धय-अनिल-सुणग-सूअर-मग-पसत-विडालजातीसु । पागर-मम-लोरासु चेव पक्खा विधीयंते ॥ ३ ॥
तिसिर-यट्टय-लावय-पेरसुत-सुक-मालका-रिक्किसिकेसु । काक-कपोतेसु परपिंजलेसु पक्खा विधीयंते ॥ ४ ॥
पच्छ-गोहकाम-गवरत्त-वंजुल-कट्ठदिर्मीसु वि य । सूकरिका-अंचेलकेसु चेव पक्खा विधीयंते ॥ ५ ॥
20 थाडयय-काक-लेकुर-सेडीका-टेट्टि-मालकेसु वि य । गहकुडिका-कातंपरेसु पक्खा विधीयंते ॥ ६ ॥
पैसिरासु फलासु दिरलेसु मैलकेसु य तधेव । भगगच्छक-सिंगालकेसु पक्खा विधीयंते ॥ ७ ॥
अंपक-दालिम-वीलिनि-पिहि-पहाडेस्सेयपमाणेसु । मूल-फलग्गाहय-तवुससेसु पक्खा विधीयंते ॥ ८ ॥
मज्झिमरे पुप्फफले मज्झिमकायेसु चेव दव्वेसु । अद्दागते य पच्छागते य पक्खा विधीयंते ॥ ९ ॥
दुर्वदि जाव पक्खे पक्खच्छिद्दं णपुंसके जाणे । पुरिसम्मि जाव मासं मिधुणजुगले अहोरत्तं ॥ १० ॥
25 दुर्वसु अन्नगारेसु पाहिदासुलो भयति पक्खो । आचरितमहासाएसु वीसु वे पक्खमो जाव ॥ ११ ॥
सुदुप्पगपरम्मं उमसोतम्मं सरीरम्मं ति । पडिपक्खो त्ति घपक्खो त्ति पक्खवादो त्ति वा पक्खो ॥ १२ ॥
अट्ठो त्ति पदमाले अंतरिमद्धं मरिरमद्धं च । पुव्व-पच्छम य अद्धं देसद्धं मंडलद्धं च ॥ १३ ॥
पक्खग्ग तु विनियोगेन जाव पक्खेन चेव गंतम्मि । पक्खेन य जं कीरति तेन तु पक्खा विधीयंते ॥ १४ ॥
मज्झिमकायेसु तथा पनी काया सिंहिता य वज्झिता वा । तनी पक्खा णेतव्वा भवंति पक्खप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥
30
॥ पडलं ६ ॥ छ ॥

---

१ चम्मलग° हं० त० ॥ २ गेरुपुल° हं० त० विना ॥ ३ °मागे य विडगवरोगासी हं० त० ॥ ४ °परपुमकवणाल° हं० त० ॥ ५ °मंगुगुदेसु हं० त० ॥ ६ पाणिया° हं० त० ॥ ७ मयपरेसु हं० त० ॥ ८ °मग्गामच्छ° हं० त० विना ॥ ९ °पुप्फे नपुंसके° हं० त० विना ॥ १० मेपस्सा हं० ॥

[सत्तमं पडलं]

कडि-उदर-पट्ठि-उरसी-सीसामासे य मासिको कालो । आभरणपक्खरगते एतेसिं चेव भागाणं ॥ १ ॥
हय-गय-खरोट्ट-गो-माहिसेसु सत्तेसु कायवंतेसु । मासा विण्णातव्वा सव्वेसु महासरीरेसु ॥ २ ॥
वग्घ-ऽच्छ[मल्ल-]दीपिक-तरच्छ-खग्ग-वगसावदेसु पि य । रोहित-पसत-वराहेसु चेव मासा विधीयंते ॥ ३ ॥
विपुलणदीमच्छेसु व मज्झिमकेसु य समुद्दमच्छेसु । मासा विण्णातव्वा गाह-मगर-सुंसुमारेसु ॥ ४ ॥ 5
हंस-कोंचेसु किण्णरेसु कुकुड-मयूर-कलहंसे । मासा विण्णातव्वा पारेवत-चक्कवागेसु ॥ ५ ॥
भासकुग-महासकुगा दिग्घगीवा य दिग्घपादा य । मासेसु समक्खाता पारिप्पव-ढंकरालीओ ॥ ६ ॥
गद्दो कुरलो दलुका भासा वीरल्ल-ससघाती । मासेसु समक्खाता छिण्णंगाला ककीओ य ॥ ७ ॥
सव्वे य दीहकीलो[१] दव्वीकर-मोलिणो य णातव्वा । मासेसु समक्खाता भिंगारी गोणसा चेव ॥ ८ ॥
उग्गविसेसु मुहुत्ता सप्पेसु हवंति विसविसेसेण । सप्पेसु तु मंदविसेसु एत्थ मासा समक्खाता ॥ ९ ॥ 10
सेतेसु होति जोण्हा कालो पुण होति कण्हसप्पेसु । चित्तेसु माससंधिं संझा पुण होति लोहितके ॥ १० ॥
तलपक्क-णालि-केसुक-पिट्ठ-लकुलेसु ◁ चेव पणसेसु । ▷ कालिंग-तुंब-कूभंडगेसु मासा विधीयंते ॥ ११ ॥
पिंडीसु य गोच्छेसु य पुप्फ-फलेसु य सवेंट-णालेसु । पोट्टलकभारवद्धे जमलकवद्धे ठियामासे ॥ १२ ॥
भंडेसुवकरणेसु य पुप्फ-फलेसु वि य कायवंतेसु । दीहेसु वित्थतेसु य महासरीरेसु पि य मासा ॥ १३ ॥
[५]वेतोपकरण-पुराण-सुत्तेरक-सुतीसोपकेसु सव्वेसु । रुप्पियमासेसु सुवण्णमासके मासमो बूया ॥ १४ ॥ 15
[.........] पायगहणे य दोण्हं पि बाहुणं जाण । उभयोपक्खाय समागतम्मि मासा विधीयंते ॥ १५ ॥
सव्वमहाकायेसु वि जावतिया पिंडिता य गणिता या । तति मासा णातव्वा होंति मासप्पमाणेणं ॥ १६ ॥

॥ पडलं सम्मत्तं (सत्तमं) ॥ ७ ॥ छ ॥

[अट्ठमं पडलं]

एतेसु चेव अतिकायेसुं तु भवंति वस्साणि । कुल-जाति-माण-रूवाधिके य बहुमुल्लसारे य ॥ १ ॥ 20
उम्मज्जितूणमंगे उम्मट्ठेसु वि य सव्वगत्तेसु । विच्छिण्णायितामासे उड्ढंगाणं च आमासे ॥ २ ॥
देविंदो णागिंदो असुरिंद-महिंद-नरवरिंदो त्ति । सीहो हयो गयो णरवरो त्ति संवच्छरुप्पाया ॥ ३ ॥
सुरवति धणवति जलवति पोतवती णरवती णइवति त्ति । तारावती गहवती जोतिपती जोतिसपति त्ति ॥ ४ ॥
आयरिय-उवज्झाया अम्मा-पिउ-गुरुजणे य सव्वम्मि । देवा रिसयो त्ति य सावयो त्ति संवच्छरुप्पाया ॥ ५ ॥
जगपति गणपति कुलपति जूहपती मिगपति त्ति वस्साणि । गोपति पयापति त्ति य वस्साणि भवंति एतेसु ॥ ६ ॥ 25
जंबुदीवकधासु य अत्थगिरीसु उवयण्णणायं च । वस्सधर-वस्सपरिकित्तणाय वस्साणि जाणेज्जो ॥ ७ ॥
दीवो त्ति समुद्दो त्ति य अकम्मभूमि त्ति कम्मभूमि त्ति । तेलोकं पुढवी पव्वतो त्ति संवच्छरुप्पाता ॥ ८ ॥
अतिदूरं अतिदिग्घं अतिम्महंतेसु अतिमहग्घेसु । लंगे कोट्टित-धणिते धणितवद्धे य वस्साणि ॥ ९ ॥
चिर-दीह-सस्सत-विमद्दितेहिं संवच्छरेहिं जाणाहि । थिर-वलिक-धुवकारे अतिबहुमचत्थकारे य ॥ १० ॥
सव्वेसिं भावाणं चिरणिव्वत्तीय जाण वस्साणि । जोतिसमंडल-पुढवीमंडलं एक्कपके य ॥ ११ ॥ 30
णगरणिवेसकतेसु य पासादुदधी-णदीकधायं वा । हत्थीणं य पदेसु भवंति संवच्छरुप्पाता ॥ १२ ॥

---

१ रद्दो कु° हं० त० ॥ २ °कीडा य द° हं० त० विना ॥ ३ °पच्छणा° हं० त० ॥ ४ °यवंचेसु हं० त० विना ॥ ५ वेयोवयफपु° हं० त० ॥ ६ °सु उभयं ति य° हं० त० ॥ ७ गयवई जोगवई जोतिस° हं० त० ॥ ८ जलपति हं० त० ॥ ९ °तवणिप वणि° हं० त० ॥

हत्थी पव्वतमेत्तो अस्से य भवंति मालवंतो त्ति । वसभो य हत्थिमेत्तो त्ति येंति संवच्छरुप्पाता ॥ १३ ॥
पक्खीसु माणुसेसु य कीडेसु चतुप्पदेसु य तधेव । पुप्फफले दव्वेसु य वरसाणि अतिप्पमाणेसु ॥ १४ ॥
अतिकायेसु वि य तधा जति काया पिंडिता व गणिता वा । तति वरसा णेतव्वा भवंति वरसप्पमाणम्मि ॥१५॥

वरसग्गणाविभंगं पण्णरसविधं पुणो वि वोच्छामि । पंचहि वि मूलवत्थू एकेण तधा विभंगेणं ॥ १६ ॥
भिण्णदसस्सपमाणं वरसाण पुणो मुहुत्तयम्मिम्मि । दस चत्तारि य वरसाणि जाण दिवसप्पमाणेसु ॥ १७ ॥
पण्णरस चेव वरसा पक्खप्पमाणेण होंति णेतव्वा । मासपमाणे तीसा चत्ता पण्णा य सट्ठी य ॥ १८ ॥
सट्ठी य सत्तरी वा असिती णउती सयं च जाणेज्जो । वरसपमाणुप्पाते वरसाण सहस्सवग्गे वा ॥ १९ ॥
मुहुत्तप्पमाणमसारे तिण्णेव भवंति वरसाणि । छम्मासमसारेसु तु तध य महासारवंतेसु ॥ २० ॥
दिवसप्पमाणमसारे दस वरसाणि तु भवंति णेयाणि । चोद्दस मज्झिमसारे वीसा य भवे महासारे ॥ २१ ॥
पक्खपमाणमसारे पण्णरसेव तु हवंति वरसाणि । तीसं च मज्झसारे पणतालीसा महासारे ॥ २२ ॥
मासं पमाणसारे तीसा चत्ता य मज्झसारम्मि । पण्णासा सट्ठी वा मासपमाणे महासारे ॥ २३ ॥
वरसपमाणमसारे सट्ठी वा सत्तरि च्व वासाणि । मज्झिमकम्मि असीती णउती व सतं महासारे ॥ २४ ॥
कोडी अपरिमिनं वा अपरिमितेहिं मुण सव्वभावेहिं । ऊणाधिको दसाहो संजोगविहीहिं बोधव्वो ॥ २५ ॥
जे पुव्वं उप्पण्णा पंचविधा विसमकं उदीरंति । जे आसण्णा बहुका धुवा य ते वग्गमूलाणि ॥ २६ ॥
☞ जंति मिस्सा उप्पाया पंचविहा विसमकं उदीरंति । जे आसण्णा बहुका धुवा य ते वग्गमूलाणि ॥२७॥ ☜
जे थोवा जे तुच्छा दूरे पच्छा य जे उदीरंति । ते वरसदसक्खाणं वग्गगं होति णातव्वं ॥ २८ ॥
वरसपमाणुप्पाता जति तति वरसाणि होंति अंगेसु । जति मूले विण्णाते पुणरवि एते उदीरंति ॥ २९ ॥
मासपमाणुप्पाता जति तति मासा हवंति अंगेसु । जति मूले विण्णाते पुणरवि एते उदीरंति ॥ ३० ॥
☞ पक्खपमाणुप्पाया जति तति पक्खा हवंति अंगेसु । जति मूले विण्णाए पुणरवि एए उदीरंति ॥३१॥ ☜
दिवसपमाणुप्पाता जति तति दिवसा हवंति अंगेसु । जति दिवसदसक्खाणं पुणरवि एते उदीरंति ॥ ३२ ॥
जति तु मुहुत्तपमाणा तति तु मुहुत्ता हवंति अंगेसु । जति वरसदसक्खाणं पुणरवि एते उदीरंति ॥ ३३ ॥
मूलदसक्खे ऊणे दस ऽट्ठ वरसाणि औगकं होति । मासा वा पक्खा वा दिवस-मुहुत्ता य णातव्वा ॥ ३४ ॥
वरसाणि य विण्णाते केवतिया केत्तियाणि वि पुणो त्ति । तावतिया णातव्वा कतम्मि पण्णाविसेसम्मि ॥ ३५ ॥
सुहुमाणि बादराणि य जति दव्वाणि गणणागते होंति । तति वरसा णातव्वा पक्खा दिवसा मुहुत्ता वा ॥३६॥
जध कालो तध लाभो तध य सुहं जीवियं तध य दिग्घं । तध दव्वाणं सारो तध ठाणगुणा य बोधव्वा ॥३७॥

॥ पडलं ॥ ८ ॥ छ ॥

[णवमं पडलं]

पाहुण निग्गीयं ति य मोग्ग निसहो तधेव थिमियं ति । मंतो अ रहस्सं ति य अपरिमितो जायते कालो ॥ १ ॥
दुक्खं उव्वेल्लितं पंडितरिपडकं ति गुपितं ति । एयादीया सदा पडिरूया दिग्घकालस्स ॥ २ ॥
धन-धन्न-रयनरासीसु चेव जुद्धे य गब्भसत्ताणं । अपरिमिता उप्पाया अपरिमिते होंति कालम्मि ॥ ३ ॥
लोको वेदो समयो अत्थो धम्मो तधेव कामो त्ति । अपरिमिता बोधव्वा अविभत्तसमासवग्गेसु ॥ ४ ॥
वेरं संधो त्ति गणो महाजणो आउलं निकायो त्ति । रज्जं देसो त्ति य जणवदो त्ति कालो अपरिमेज्जो ॥ ५ ॥

---

१ "मज्झे अ" हं० त० ॥ २ पवाल्या हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ मिस्स हं० त० विना ॥ ६ पडिरूव परिपहो ति अपि" ॥ हं० त० ॥

चिंता मणोरधो त्ति य हितयागूतं ति अंधकारो त्ति। ठइयाऽऽवरितं अंवेपुरं ति सुद्धी समग्गो त्ति ॥ ६ ॥
वीयं रासी पेयालितं ति भरितं[1] ति संत त्ति। अणुमाणं संकं ति य अपरिमितो जायते कालो ॥ ७ ॥
सव्वे जीवणिकाया अचला य अविकंपिणो चेव। अपरिमिता णातव्वा कायसमासोवलद्धीयं ॥ ८ ॥
पुढवि दग अगणि मारुय आकासं सह (वह) य मूलजोणीओ।
अपरिमिता णातव्वा कायसमासोवलद्धीयं ॥ ९ ॥ 5
णिव्वट्टिणा विभत्ता एते व्वेव तु भवंति संखेज्जा। अविभत्ता य अणिव्वट्टिता य ते चेव संखेज्जा ॥ १० ॥
देविड्ढी देवजुती पलितोवम सागरोवमं य त्ति। कोसो [य] णिधि त्ति महाणिधि त्ति कालो अपरिमेज्जो ॥११॥
अतिअग्गी अतिवातो अतिवासं भेदितं डमरितं ति। सज्जीव-ऽज्जीवाणं अतिउदयं सव्वदव्वाणं ॥ १२ ॥
अतिपेम्ममतिपदोसो अतिथुति-अतिगंञ्जियकधासु। ◁ अतिसद्दे ▷ अतिअव्वाउले य कालो अपरिमेज्जो ॥१३॥
अलसमंभारो भीरू अतिक्किमणो मंथरो त्ति वा सद्दो। मज्झत्थो त्ति पमत्तो त्ति पंगुलो दिग्घपरिस त्ति ॥ १४॥ 10
एवतिया सव्वे चिरकारी जे चिराहि य भवंति। एतेसिं उप्पत्तीय दीहकालो हवइ णेयो ॥ १५ ॥
साहसिको मेहावी लहुको सद्धो त्ति मुक्कहत्थो त्ति। चंडो सूरो दच्छो त्ति चेव सिग्घो हवति कालो ॥ १६॥
आदिं णिधणं च जस्स तु ण णज्जते ◁ णज्जते ▷ य वुत्तंतो। एरिसका उप्पाता विण्णातव्वा अणंतत्ते ॥१७॥
गब्भा सुद्धो मासे जावज्जीवे वते य नियमे य। कोमारबंभचेरे य अणंतं णिद्दिसे कालं ॥ १८ ॥
पाली मेरा सीमंतिक त्ति सुगति त्ति छिण्णसधो त्ति। पागारो फलिहो त्ति य वति त्ति कालो णिरुद्धो त्ति ॥१९॥ 15
कालम्मि णिरुद्धम्मि उ दिट्ठं आगत समागतं धी वि।
☞ लद्धं वा उप्पण्णं तं वा वि ☜ आगते पुच्छियं सव्वं ॥ २० ॥[12][13]
जं जावतितं लभती जं मग्गति तं च दिस्सती साधे। जं इच्छति तं उप्पज्जते य पडिपुच्छणाकाले ॥ २१ ॥
जं[14] चिच्छते करेति य कम्मं सिप्पं णयं विभंगं वा। [............] णिप्परयं च णाणाभिगंमणं वा ॥२२॥
आहारे णीहारे सरीरमब्भंतरे व मज्झे वा। सयमप्पणो परस्स व मित्तममित्तस्स वा किंचि ॥ २३ ॥ 20
इच्छति विसयगुणं वा कंचि धम्म-ऽत्थ-कामजोगं वा। अण्णं वा सुभमसुभं तं चेव णामं च संवेलं ॥ २४ ॥
सव्वम्मि कडे दिण्णे दिट्ठे सम्माणिते वा वि। मणदुक्खं णिच्छिण्णं संपत्तिं इच्छितं जाण ॥ २५ ॥
इच्छितसंपत्तीसु वि तसकायाणं च थावराणं च। तंवेलमुवणतासु तु उववण्णत्थं वियाणेज्जा ॥ २६ ॥
सज्जीव-ऽज्जीवेसु य उवभोगेसु वि य माणुसाणं पि। तंवेलमुवणतेसु य उववण्णत्थं वियाणेज्जो ॥ २७ ॥

॥ पडलं [णवमं] ॥ ९ ॥ छ ॥ 25

[दसमं पडलं]

संवच्छरं महामंडलेसु मज्झिमगमंडले मासं। खुड्डलगमंडलेसु य अहोरत्तं वियाणेज्जो ॥ १ ॥
णक्खत्तमंडलेऽऽहागमंडले चंदमंडले मासा। [............] सूरमंडले[17] वरसमो जाणे ॥ २ ॥
जाणेध मंडलेसु तिविधेसु खुड्डलग-मज्झिम-महंते[18]। दिवसं पक्खं छम्मासमेव विल्यारजोगेणं ॥ ३ ॥

---

१ °पुरम्मि सु° हं॰ त॰ ॥ २ वेया° हं॰ त॰ ॥ ३ °तं निसंमंति हं॰ त॰ विना ॥ ४ अगिग मा° हं॰ त॰ विना ॥ ५ °णिज्जं ठियायए चेव हं॰ त॰ ॥ ६ °गढिय° हं॰ त॰ ॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ८ °मल्लारो हं॰ त॰ विना ॥ ९ चंदो हं॰ त॰ विना ॥ १० ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं॰ त॰ नास्ति ॥ ११ सुमगम्मि छि° हं॰ त॰ ॥ १२ या वि। आगते पुच्छियं सव्वं लाभालाभं वियागरे ॥ २० ॥ जं जाव सि॰ ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ १४ जं तिच्छते हं॰ त॰ विना ॥ १५ °मिमतणं सं ३ पु॰ ॥ १६ °ल्हासमं हं॰ त॰ ॥ १७ °ले पुदरमंडले वस्स° सि॰ ॥ १८ °मणंते हं॰ त॰ विना ॥

दारककीलणगेसु वि चतुचक्कीया भवेज्ज उवयत्ती । चत्तारि अहोरत्ते य जाण चत्तारि वा मासे ॥ ४ ॥

दारककीलणगेसु वि वे चक्कलगाणि होंति [1] पुंत्ताणि ।
वे होंति [2] अहोरत्ता वे वा मासा विधीयंते ॥ ५ ॥

पइंकैक-चक्कलगे दिवसे मासे व जाण चत्तारि । घाडीचके मासो वस्सं तु भवे सकडचके ॥ ६ ॥
एतेण कारणेण तु मूलं कालस्स सुट्ठु कावव्वं । जम्मि भवंति मुहुत्ता दिवसा मासा व वस्सा वा ॥ ७ ॥
पुप्फ-फल-भूसण-ऽच्छादणे य उवकरण भत्त पाणे वा । सज्जीवा-ऽजीवं वा उप्पज्जति जं णिमित्तम्मि ॥ ८ ॥
जध तू रससंभूतं जध य महग्घं जहा महासारं । जध जाती अविसिट्ठं तध दिग्घं णिद्दिसे कालं ॥ ९ ॥
जे कसका जे य विपुलसरीरा ते रसदीहकालभूया । विपुलसरीरेसु य जे कसका दिग्घसकालजुता ॥ १० ॥
सिग्घमणिट्ठप्पाते ओयवति सिग्घमो अणिट्ठस्स । अभिलसितसिग्घैलंभो सिग्घं इट्ठोपपत्तीसु ॥ ११ ॥
जध मूलं तध थोगं जध य समग्घं अजातिमंतं वा । जध सुलभमप्पसारं तध थोगं णिद्दिसे कालं ॥ १२ ॥
पीतिकरे अणुवद्धो भवति धणइट्ठधणसुहस्स । दुक्खस्स वि अणुबंधो भवति अणिट्ठाणुबंधेसु ॥ १३ ॥
पघग्ग-सरस-णव-तरुणगेसु दिवसा हवंति पक्खा वा । परिणतजुण्णगते रसेसु मास-संवच्छरे जाण ॥ १४ ॥
मासपमाणे य महुम्मि उत्तविसेसं य यमलिते मासा । विसेसमेघेसु तु पक्खा समागमागमसमेसु वस्साणि ॥१५॥
जं दिस्सते छड्डं उव्वंते छ उदू वि जाणेज्जा । जं वा सण्णा अंसितं तं या सं ते उदुं जाण ॥ १६ ॥
[16] घुंमलका पेलगमुकुडवेट्ठणे मालिकासु यट्टासु । सीसावकम्मि सव्वम्मि उत्तमत्थं विजाणीया ॥ १७ ॥
पुण्णमेसु तु पुप्फोवफेसु मासा य होंति वासा वा । पुप्फोवकप्पिणामे रातीओ होंति पक्खा वा ॥ १८ ॥
संवच्छरेसुं कुडवेट्ठणेसु साराणुसारतं य वदे । पुप्फोवफेसु मासा पक्खा दिवसा य णावव्वा ॥ १९ ॥
अंहे मले सव्वम्मि मुहुत्ता अेल्लसरभावेणं । परिमलित-मिलाणेण य विलंबितं कालमो जाण ॥ २० ॥
एसेव सव्वदव्वेसु गमो पाणे य भोयणे वा वि । सद्दे या रूवे वा एएण गमेण गंतव्वं ॥ २१ ॥

॥ [पडलं दसमं] ॥ १० ॥ छ ॥

[एक्कारसमं पडलं]

पुरिमंगाणामासे पुव्वदिसाए य ओयलद्धीए । कत्तिय-मग्गसिर-पोसमासेसु जाणीया ॥ १ ॥
संवच्छरलद्धीयं अग्गेयं मग्गसीस पोसं वा । [जाणे] संवच्छरमो पुव्वदिसि पुरत्थिमंगेसु ॥ २ ॥
दक्खिणगत्तामासे पुणो य दक्खिणदिसोयलद्धीयं । [20] माहं [20] फग्गुण चेत्तं वेसाहं वा वदे मासं ॥ ३ ॥
संवच्छरलद्धीयं संवच्छर-माह-फग्गुणं वा वि । चेत्तं वेसाहं वा दक्खिणदिसि दक्खिणंगेसु ॥ ४ ॥
पच्छिमगत्तामासे अवरदिसायं च ओयलद्धीयं । जेट्ठामूला-ऽऽसाढा-सावणमासं चें मासेसु ॥ ५ ॥
संवच्छरलद्धीयं संवच्छरमिंद विस्स विण्हुं वा । संवच्छरमो सूया पच्छिमदिसि पच्छिमंगेसु ॥ ६ ॥
वामे गत्तामासे पुणो य उत्तरदिसोयलद्धीयं । पोट्ठपद-ऽऽसोजं वा मासं मासेसु जाणीया ॥ ७ ॥
पोट्ठपदं वा संवच्छरं तु संवच्छरं च अस्सोयं । संवच्छरलद्धीयं उत्तरदिसि वामगत्तेसु ॥ ८ ॥

---

१ उपयद्धि हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ °कुच° हं० त० ॥ ४ य पक्खा वा हं० त० ॥ ५ °दा सदामासे हं० त० ॥ ६ °ऽजुता हं० त० विना ॥ ७ °स्यलाभा सि° हं० त० ॥ ८ जधुमूल्लतध-थोगं जध हं० त० विना ॥ ९ भवति सय्यअणि° सि० ॥ १० पक्खो हं० त० ॥ ११ °समं घयमलिए मासा हं० त० विना ॥ १२ °समघरु हं० त० ॥ १३ °सगुरु हं० त० ॥ १४ असितं वण्णा सं हं० त० ॥ १५ पुपल पायेल° हं० त० ॥ १६ °त्तामासे तु हं० त० विना ॥ १७ °तु दुइ° हं० त० ॥ १८ अण्णे म° हं० त० विना ॥ १९ अण्णस° हं० त० विना ॥ २० ⊲ ⊳ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २१ च सेसेसु हं० त० ॥

उद्धंगाणामासे पादुब्भावे य थावराणं तु । फग्गुणमासाढं वा पोट्ठपदं वा वदे मासं ॥ ९ ॥
संवच्छरलद्धीयं फग्गुणमासाढ पोट्ठपादो वा । संवच्छरमो बूया दढ-थावर-सासते भावे ॥ १० ॥
चलमंगाणामासे पादुब्भावे य चंचलाणं तु । सावणमासं बूया मासुप्पातोपलद्धीय ॥ ११ ॥
चलमंगाणामासे पादुब्भावे य चंचलाणं च । संवच्छरलद्धीयं सावणसंवच्छरं बूया ॥ १२ ॥
☞ सावण पोट्ठपदं वा अस्सोयं कत्तियं च मासेसु । पुण्णदगभायणेसु य णिद्धंगाणं च आमासे ॥ १३ ॥ 5
सावण पोट्ठपदं वा अस्सोयं कत्तियं च जाणीया । संवच्छरमो बूया णिद्धे वासोवलिंगे य ॥ १४ ॥
चेत्तं वेसाहं वा जेट्ठामूलं तवेव आसाढं । मासं मासेसु वदे रुक्खे गिम्होवलिंगे य ॥ १५ ॥
मग्गसिर पोसमासं माहं वा फग्गुणं च जाणीया । मासेसु सीतभावे तवेव हेमंतलिंगे य ॥ १६ ॥
तं चेव जधुद्दिट्ठे संवच्छरलद्धियं च जाणेज्जो । संवच्छरे तु चउरो सीते हेमंतलिंगे य ॥ १७ ॥
णीहारेसु तु पक्खा उजुभावेसु पुण संथिते मासा । अहोरत्ते [पुण] पक्खं वदे तु पक्खप्पमाणम्मि ॥ १८ ॥ 10

॥ [पडलं एक्कारसमं] ॥ ११ ॥ छ ॥

[वारसमं पडलं]

तरुणंकुर-किसल-पत्तलकेहि अंकित-आलकेहि वि य । आसित-पोसित-ओकुंभआगमे पाउसं जाणे ॥ १ ॥
अज्जुण-कुडय-कतंबे सिलिंध-कंदलि-कुडुंयके चेव । दद्दुर-मयूरगज्जितपडिरूवे पाउसं बूया ॥ २ ॥
खेत्तप्पवत्तणे बीजणिग्गमे बीयवावणे यावि । गड्करण-पज्जणेसु य उदगपरणालिकरणे य ॥ ३ ॥ 15
वासारत्तिकभंडगहसुयणकावरुत्तकदणेसु । वाहणपडिसामण्णेसु य जलं ति णवपाउसं बूया ॥ ४ ॥
साढिकसीहलंबंधयतववेसिसगणिअगणिकक्खदिसेसु । णिट्ठुलसंलावेसु य आसाढं मासमो बूया ॥ ५ ॥
हरितं य सद्दलं ति य पविरूढतणं ति जातसस्सं ति । णिद्दिज्जति सस्सं ति य सावणमासं विजाणीया ॥ ६ ॥
पुण्णपलोरियतदकभायणेसु अच्छायकुप्पवट्टे य । वद्दलकअच्छाणीक त्ति पोट्ठपादो भवति मासो ॥ ७ ॥
मज्झविगाढे णेट्ठे उलुंवितो वीलणि[11] त्ति य किलिण्णे । अभिवद्धमाणगेण य पोट्ठपदं मासमो जाणे ॥ ८ ॥ 20
इंदसयणे य इंदमहभंडके इंदमोयकरणे य । इंदधणुइंदगामेण पोट्ठपादो भवति मासो ॥ ९ ॥
सेली गब्भणिका च त्ति तित्ति सुज्झते य वीहित्तिकं । बूया पक्क त्ति य तिला य ओपुप्फित त्ति वदे ॥ १० ॥
अस्सोइस्सेइ णवमिक त्ति णीरोणिका वलीयं ति । अस्सोयं पुण मासं अब्भुत्थाणे णरपतीणं ॥ ११ ॥
दारग्घाडिं कत्तिय अभया माद्दातयो सजीवंती । बहुलं मासं बूया बधमोक्खे बंधमोक्खे य ॥ १२ ॥
उववासो दाणं ति य देवतपूय त्ति साधुपूय त्ति । बहुलं मासं बूया उदुंवरभुयो विबुद्धो त्ति ॥ १३ ॥ 25
णिव्वद्धमच्छमुदगं विमलणभं सारसा सुरा संरदो । दीवा हसंति वध दंविक त्ति दाणं वतोववासो त्ति ॥१४॥
देवस्स वा वि थवणं उदुंवरभूयो विबुद्धो त्ति । वसागाधा उवरिं उवयुत्ते पुच्छंते सो कालो होति बोधव्वो ॥ १५ ॥
आधारेतव्वं वाहिरेण तम्मि तु भवंति जे भाया । तज्जाता तरूवा भवंति ते[19] तं पि कालाण ॥ १६ ॥
पंचिंदिएहिं पंचहिं सद्द-प्फरिस-रस-रूव-गंधेहिं । अग्गिकते अग्गिकम्मि य बहुलं मासं विजाणेज्जो ॥ १७ ॥
पच्छा जक्खो धणकं सुरयितपडदीयरुस्सो त्ति । सुण मग्गसीसमासं इह्लिमकडे धमकमदे ॥ १८ ॥ 30

---

१ भागे हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ °मासे हं० त० विना ॥ ४ °मासे हं० त० ॥
५ तरुणंकिलरसकिलपत्तकेहि हं० त० ॥ ६ °रमज्जि° हं० त० ॥ ७ सत्तप्पवद्दणे हं० त० ॥ ८ °वदणा° हं० त० ॥
९ °सुतणकाधमत्तगह° हं० त० विना ॥ १० °लयपलवयिसेअगणिक° हं० त० विना ॥ ११ णिट्ठे हं० त० विना ॥
१२ °लणेति य हं० त० विना ॥ १३ सालीगमणकारचितं ति सु° हं० त० ॥ १४ °स्सा अलेई ण° हं० त० ॥
१५ णोरा° हं० त० ॥ १६ °ट्ठाणं ति हं० त० ॥ १७ सद्दो हं० त० विना ॥ १८ च्चवणं हं० त० विना ॥ १९ तेयं पि हं० त० ॥

संगलिगं खीरदुमे चतुप्पदे खीरिणीसु खीरेसु । मुण मग्गसीसमासं सोम्मे वा सोम्मणामे वा ॥ १९ ॥
जाणपवट्टण-यत्तप्पवद्दणे मुरसस्समलणे य । मुण मग्गसीसमासं गिरिजण्णे भूमिजागे य ॥ २० ॥
सीतं हिमं ति वा सीतलं ति दीहमहिला णिसा दीहा । थीउत्तरे जुगलगे य एत्थ पोसो भवति मासो ॥२१॥
इंगालसगडिका-अग्गिचुल्लके तावणे य अग्गिम्मि । गब्भघर-कंबलणिसेवणे य पोसो हवति मासो ॥ २२ ॥
थीणं महाजणे पुरिसवंद्धणे माहमासमो बूया । [1]पोवकयमासिकत्थे सद्धे ओछाडिते चेव ॥ २३ ॥
सव्वम्मि सीतभावे सायं गीत-अग्गिसेवणाए य । एत्थ वि माहो मासो अणोज्जवासं विसेसो वा ॥ २४ ॥
णर-णारीमिधुणगतस्स उस्सवे मेधुणप्पसंगेसु । दित्तेसु य मुदितेसु य फग्गुणमासं वियाणेज्जा ॥ २५ ॥
सीतक्खयपरिणामे उवगमेसु वि य उण्हभावस्स । णच्चुण्हा सीतेसु य फग्गुणमासं वियाणीया ॥ २६ ॥
आपाणगप्पमोदे उक्कुट्ठे गीत वादिते हसिते । परभुयसद्दे चूतकुसुमे य मुण फग्गुणं मासं ॥ २७ ॥
जवकिंदीवर-सामाककुसुम-अंदोलका वसंतो त्ति । फग्गुणमासं बूया मत्तो अंदोलति जणो त्ति ॥ २८ ॥
मिधुणसमागम-मेधुणकधासु सव्वेसु कोमलंगीसु । फग्गुणमासं बूया छणरत्तमंडणासु वि य ॥ २९ ॥
उस्सयमत्तुम्मत्ते वसंतलिंगे य कामलिंगे य । एत्थ वि चेत्तो मासो समे य पुण्णाम-थीणामे ॥ ३० ॥
समुदयमणुबद्धेसु य वसंतलिंगे य कामलिंगे य । चेत्तं मासं बूया समे य थीणाम-पुण्णामे ॥ ३१ ॥
वत्थगते रूवगते चित्तगते चित्तवण्णजोगे य । चेत्तं मासं बूया चेत्तो विविधे यऽलंकारे ॥ ३२ ॥
पुरसुत्तरे जुगलगे जव-गोधुमसंगहे गहपतीणं । मुण वेसाहं मासं णिदाघमासे उवणतम्मि ॥ ३३ ॥
पाडल-मल्लिक-वट्टिक-सीतजलनिसेवणेसु य णराणं । मुण वेसाहं मासं वीयणके तालवेंटे य ॥ ३४ ॥
णिद्दड्ढघण्णतावे अतिउण्हो वा पवाति वातो त्ति । तण्हा मगतण्ह त्ति य जेट्ठामूलो हवति मासो ॥ ३५ ॥
लुच्छेसु यं लुक्खेसु य दगभायण-णट्ठभायणेसु वि य । णदि-कूव-तलागेसु वि जेट्ठामूलो हवति कालो ॥ ३६ ॥
अणिट्ठकरकउत्थोऽभितप्पणे छेत्ते पावाक्खयं । आपक्खये य णेहक्खए य जेट्ठो त्ति वा मासो ॥ ३७ ॥
णिद्धे वासारत्तं हेमंतं य मुण सीतवातं सीतभावेणं । उण्हेहि य लुक्खेहि य गिम्हं सुद्धेहि य मुणेहिं ॥ ३८ ॥
जे जम्मि तम्मि भावे तसकाया थावरा य सव्वे वि । तेसिं पादुब्भावेण चेव तं तं उदुं जाण ॥ ३९ ॥
पुप्फ-फल-भूसण-ऽच्छादणेहि उवकरण-भत्त-पाणेहिं । तं तं उदुं वियाणे जं जम्मि उदुम्मि भयमाणं ॥ ४० ॥
देव-मणुस्सा पक्खी चतुप्पदा जलचरा थलचरा य । जे जं सोभेंति उदुं तेहि तु तं तं उदुं जाण ॥ ४१ ॥
सज्जीया-ऽज्जीवाणं उवलद्धीय वि उ सव्वभावाणं । तं तं उदुं वियाणे जं जस्स उदुस्स भयमाणं ॥ ४२ ॥

॥ पडलं बारसमं ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमं पडलं]

सव्वे रूवविसेसा ◁ वण्णविसेसा ▷ य पतिविसेसेणं । सुव्वत्तमविण्णाता भवंति कालस्स पडिरूवं ॥ १ ॥
सव्वे वण्णविसेसा रूवविसेसा य पतिविभागेणं । अव्वत्तं विण्णाता भवंति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ २ ॥
अच्चीणि चंद-सूरा अग्गी दीवो पभंकरा सव्वे । णाणुज्जोगो तेयो पभ त्ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ३ ॥
चक्खुप्पगासे जोती पगासते चंद-सूरमत्थमणे । अण्णातमविण्णातेण य कालस्स पडिरूवं ॥ ४ ॥
सुद्धं ति पंडरं ति य विमलं उज्जोतितं पभा य त्ति । दिवसो त्ति णीरयो त्ति य पडिरूवं जोण्हपक्खस्स ॥ ५ ॥
मागोलविसालाकं पभभंति-णीलं तिमिरंधकारं ति । रत्ती उत्तासो त्ति य पडिरूवं कालपक्खस्स ॥ ६ ॥

---

1 पंतंकयमासिकच्चे हं० त० ॥ 2 °वासं ति अरसो य हं० त० विना ॥ 3 पाडयम° हं० त० ॥ 4 य सुण्हेसु य हं० त० ॥ 5 छत्ते य पावूयं हं० त० विना ॥ 6 ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥

थक्कितं रित्तं ति य लंछितं ति पडिसामितं ति णिक्खित्तं । अव्वत्तमदेसं ति य पडिरूवं कालपक्खस्स ॥ ७ ॥
उब्भिण्णं मुक्कमवंगुतं ति पागडियं दंसियं थद्दिट्ठं वा । सुव्वत्तं दिस्सति पागडं ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ८ ॥
खुव्वति भारमरीति सुज्झति त्ति ~ जोण्हस्स [जाण] पडूवणं । विमलं सुद्धं परिमज्जितं ति ▷ जोण्हस्स पडिरूवं ॥९॥
मइलतिकेणं कितकालगो त्ति कालस्स जाण पट्ठमणं । मइले कालकियं ति य भवंति संपुण्णकालस्स ॥ १० ॥
॥ पडलं [तेरसमं] ॥ १३ ॥ छ ॥　　5

[चोद्दसमं पडलं]

एगदिवसप्पमाणे एगंगे एगमाभरणगते य । एकंगियउवकरणे सचेसु य एक्कचारीसु ॥ १ ॥
बिंगुलिगहणे बिसु एक्कएसु आभरणएसु जमलेसु । मिधुणचरसत्तजमले जुवकरणे वेट्ठिओ कालो ॥ २ ॥
भुमगंतर-णासग्गे तिक-हणु-मंज्झक्खयंतरे चेव । पोरिसि सव्वत्थि-सीसे तिंगुलिगहणे तियं बूया ॥ ३ ॥
ओणतमुत्थितमज्जियते य उल्लोइते [य] हसिते य । णट्टे गीते धाइते चउक्के य चतुरंता ॥ ४ ॥　　10
चउंगुलिगहणेसु य [............] चउप्पुडागते य । पादतल-करतले विजुगलेसु चतुरत्तिओ कालो ॥५॥
पंचंगुलिगहणेण थी जणहितयाणं च गहणजोगेण । सयणा-ऽऽसणे सपुरिसे य पंचरत्तो भवति कालो ॥ ६ ॥
गुप्फ-मणिबंधगहणेसु बिसु य तिगेसु य तधेव जाणीया । बिअसहिते य चउक्के वियाण छरत्तियं कालं ॥ ७ ॥
तियसहिते [य] चउक्के वितिकम्मि य एक्कएण सहितम्मि । एक्कसहितेसु तिसु वा विएसु सत्ताहिओ कालो ॥८॥
अट्ठसु य एक्कएसुं बिसु य चउक्केसु चउसु व विएसु । [.................................. ॥ ९ ॥　　15
.... ।] तिगतिगुणे णवगणणे कते य जाणे णवाहं ति ॥ १० ॥
पंचविगेसु दसाहो दसाहिभागे दसक्खगणिते य । कच्छवकंजलिकरणे उच्चणीवद्धहत्थलंभे य ॥ ११ ॥
पंचसहिते दसक्खे मासद्धे पक्खिते य पक्खे य । पण्णरसाहं जाणे पण्ण[रस]सु एक्कगणतेसु ॥ १२ ॥
॥ पडलं [चोद्दसमं] ॥ १४ ॥ छ ॥

[पण्णरसमं पडलं]　　20

पुण्णामेसु य दिवसं थीणामेहिं रयणिं वियाणेज्जो । दिवसं दियाचरेहि य रत्ती रत्तिविचारेहिं ॥ १ ॥
दिवसकरेण तु दिवसं रयणिकरेण रयणिं वियाणेज्जो । सुज्जोदएण दिवसं रत्तिं चंदोदए जाण ॥ २ ॥
उण्हेण जाण दिवसं रत्तिं सीतेण संविजाणेज्जो । उज्जोवेण य दिवसं रत्तिं पुण अंधकारेणं ॥ ३ ॥
सुज्जपरिवेस-इंदधणु-रायिवासेण दिवसकं जाणे । सोमपरिवेस-विज्जुत-उक्कापातेण रत्तिं तु ॥ ४ ॥
पासंडजणोवयारोपलद्धीय दिवसमो वियाणेज्जो । चोराऽऽरक्खिगचरितोपलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ५ ॥　　25
समणजण-सावकजणस्साऽऽहारे दिवसमो वियाणेज्जो । आजीवकआहारोवलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ६ ॥
दिवसाहारविधी अग्गिजं ति दिवसो त्ति संवियाणीया । कज्जोयदीविकदीवतारकादंसणे रत्तिं ॥ ७ ॥
पडिसामित-णिक्खित्ते ठइया-ऽऽवरितं ति रत्तिमो जाण । मुक्कमपंगुत-पागडिय-दंसिते दिवसमो जाण ॥ ८ ॥
पयलाइत पासुत्ते सयिते रत्तिं वियाणेज्जो । तुंट्ठुट्ठितेसु दिवसं दिवसकडे कम्मजोगे य ॥ ९ ॥
दिवरत्ति भूतरत्ती तधेय आणंदसव्वरत्ति त्ति । रयणि त्ति सव्वरि त्ति य णिस त्ति रागता णिवियरत्ति ॥१०॥　　30
पुरिसे पुरिसोयकपुरिसपुरिसभावाण दिवसमो जाणे । महिलाभरणे दव्वेसु महिलिका भवति रत्तिमुहं ॥११॥
दिवसको दिवसकम्मकं ति णिव्वायदिवसो त्ति । आय-व्वयदिवसो त्ति य दिवसेसु सम त्ति ये सदा ॥१२॥
॥ पडलं [पण्णरसमं] ॥ १५ ॥ छ ॥

---

१ छकियं हं० त० ॥ २ ~ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ विपुलि° हं० त० ॥ ४ पादगलकर° सप्र० ॥ ५ य घणट्ठियाणं हं० त० ॥ ६ उवकरणीचउहत्थ° हं० त० ॥ ७ पण्णगेसु दि° हं० त० ॥ ८ सुज्जदिपरियसईदधणु° हं० त० ॥ ९ तुट्ठुट्ठिवेसु हं० त० ॥ १० महियाभ° हं० त० ॥

[सोलसमं पडलं]

बारस मासा संवच्छरो त्ति भागेसु तीसती मासो । पण्णरसेव तु पक्खो तीसं भागे अहोरत्तं ॥ १ ॥
एतस्स अहोरत्तस्स पुणो तीसतिविधस्स णातव्वं । राति-दिवसपरिवड्ढी हाणी य पुणो गणेयव्वा ॥ २ ॥
राती दिवसं च पुणो वड्ढी हाणी य सुट्ठु णातूणं । सव्वे वि अहोरत्ता वेलाहि पुणो गणेतव्वा ॥ ३ ॥
एत्तो तिण्हि मुहुत्ता वेसंझाउट्ठिओ य मज्झण्हो । छ प्पुव्वण्हो वुत्तो छ अवरण्हो मुहुत्तो उ ॥ ४ ॥
विमुहुत्तो मागधओ विमुहुत्तो हवति पातरासो वि । अणुमज्झण्हो विमुहुत्तमो त्ति तिविधो य पुव्वण्हो ॥ ५ ॥
किं वा वत्ते सूरम्मि दिवाभातो वि हवति विमुहुत्तो । अवरण्हो विमुहुत्तोणिये सूरो विविमुहुत्तो ॥ ६ ॥
संजोगेति तिमिरहा उट्ठेंतो दिणकरो दिसं पुव्वं । तेण मुणे पुव्वण्हं पुव्वदिसायोवलद्धीय ॥ ७ ॥
संजोगेति तिमिरहा मज्झण्हे दक्खिणेण वच्चंतो । तेण मुणे मज्झण्हं तु दक्खिणदिसोवलद्धीय ॥ ८ ॥
संजोयेति तिमिरहा अवरदिसं दक्खिणेण वच्चंतो । तेण मुणे अवरण्हं अवरदिसायोवलद्धीय ॥ ९ ॥
पुव्वदिसाए इंदो वत्सुवलंभेण जाण पुव्वण्हं । अवरदिसाए वरुणो वत्सुवलंभेण अवरण्हं ॥ १० ॥
दक्खिणतो पेयवती उत्तरतो धणवती दिसाधिवती । एतेसिं उवलद्धीय जाण मज्झंतियं वेलं ॥ ११ ॥
जं जिस्से उप्पज्जति दिसाय बिपदं चतुप्पदं वा वि । पुप्फ फलं दव्वाणि य तेण तु तं तं दिसं जाण ॥ १२ ॥

॥ पडलं [सोलसमं] ॥ १६ ॥ छ ॥

[सत्तरसमं पडलं]

मइलब्भे रत्तकदंसणम्मि संझं तु पच्छिमं जाण । अभिणवरत्तकसंदंसणम्मि पुव्वा भवति संझा ॥ १ ॥
रत्तच्छादणणयघडिकुंभे[1] वेरत्तकंबलाणं च । पुप्फ-फल-रत्तमणिकेण कुंभेण य जाण सूरुदयं ॥ २ ॥
रत्तंबरुत्तरिज्जे य दारगे रत्तमज्जणिज्जोगो । रत्तणियत्थाउपणिग्गमे य सुज्जोदया वेला ॥ ३ ॥
पुण्णामाणुगमणे पुण्णामेण खचिते य थीणामे । [2]ओणायकवाहुपावियाय सुज्जोदयणवेला ॥ ४ ॥
संदीवियगजलणे य जाण आलोकणे वणदवस्स । रण्णो वि य आगमणेण जाण सुज्जोदयणवेलं ॥ ५ ॥
पालतिलकं च कण्णतिलगे य तवणिज्ज-पदुमतिलके य । उदितं सूरं जाणे उवणीते रत्तमल्ले य ॥ ६ ॥
एसाऽऽगतो णरिंदो त्ति सामिको सुपुरिसो त्ति वा बूया । जातं दाणि सणाधं ति जाण अइरुग्गतं सूरं ॥ ७ ॥
देवतपूया-बलिमंगलकरणे सत्थीवायगकदेवा । विज्जुद्दीवेण अज्झापणे य मुण मागधं वेलं ॥ ८ ॥
विपणीए सारणेण य पट्ठवणेसु वि य दिवसकम्माणं । भत्तेवरधोभे दोसिकम्मि मुण मागधं वेलं ॥ ९ ॥
बालघतपज्जणेसु य मुहधोवण-मुंडकाणुदासेसु । रसगजणपारणासु य जाणेज्जो मागधं वेलं ॥ १० ॥
ओलिद्दणंजण-तिलकरण-केसमंडण-पसाधणविधीसु । बालजुवतीजणस्स तु मागधियं वेलमो जाण ॥ ११ ॥
सव्वम्मि पातरासे सिद्धवणीते य भुज्जमाणे य । दुद्धुण्हिक-दधित्तावे अंवेहि-विलेपिकादीसु ॥ १२ ॥
कंकरपिंडगगंगावत्तगचुकितकवप्पडीसु वि य । अंबट्ठिकघत[3]उण्हे पोवलिकासिद्धिविद्धीसु ॥ १३ ॥
भत्तकज्जगसिप्पिकजणस्साहारे सरगजणपातरासे य । मुण पातरासवेलं मज्झिमिया कूरवेल त्ति ॥ १४ ॥
जूताजूतकआढ[4]वकसेयकाणं च पातरासो त्ति । कज्जगसि पातरासे य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १५ ॥
मुद्दिकरवसभागमणे बंधवे इति अत्थवेल त्ति । मग्गो उवद्दरण त्ति य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १६ ॥
आतवछत्तग्गहणे जुत्तपसूणं विणोयणेणं च । तण्हाइत-मक्तण्हासु चेव मज्झण्हवेलं तु ॥ १७ ॥
णिद्दहति य आदिच्चो उण्हं सण्ह त्ति णिस्ससति भूमिं । उण्हो य वाति वातो त्ति एय मज्झंतियं जाणे ॥ १८ ॥

---

१ °मे चेव पत्तरकंब° हं॰ त॰ ॥ २ ओयाणकवाहुप्पतियाय हं॰ त॰ विना ॥ ३ °उण्हे पोवलिकासिद्धि विद्धीसु हं॰ त॰ विना ॥ ४ वयक° हं॰ त॰ ॥

डज्झंतभूसति कढतु तिरियं ति वणदवग्गिजालो त्ति । रूयाविघो संतप्पते त्ति मज्झंतिकं वेलं ॥ १९ ॥
मज्झो त्ति मज्झिमो त्ति य मज्झत्थो मज्झदेसकं व त्ति । मज्झण्हो मज्झठिय तत त्ति मज्झण्हमेतेहिं ॥ २० ॥
तत्तस्स य णिव्ववणे सरितोमद्धकपिते पसण्णे य । सिद्धावेतारणे मज्झिते य उव्वत्तमज्झण्हे ॥ २१ ॥
सव्वणियमट्ठिताणं कयण्हिकाणं तु भोयणाकाले । पज्झोवत्तं सूरं जाणे एकसत्तरत्तेसु ॥ २२ ॥
घहिणगरकम्मजणके ससिद्धकबलिकम्मकरणे य । उज्जाणभोज्जभत्तिककते य अवरण्हमो जाण ॥ २३ ॥ 5
निग्गंथकयाहारे पच्चक्खाणे पडिते घेणायं च । पासंडालयवसघीकते य सुण पच्छिमं वेलं ॥ २४ ॥
सव्वदिवाचारीणं पसु-पक्खीणं तु वसतिमधिगमणे । पुण्णामाणं च खयेण जाण सूरत्थमणवेलं ॥ २५ ॥
रत्ते पुप्फ-फले भूसणे य अच्छादणे य रत्तम्मि । थीणामेसु य रत्तेसु जाण संझागतं वेलं ॥ २६ ॥

पडलं [सत्तरसमं] ॥ १७ ॥ छ ॥

[अट्ठारसमं पडलं] 10

घालाहारविधीहि य मागधियं भत्तवेलिकं जाण । आतुरओसधपाणेसु चेवं सुण मागधं वेलं ॥ १ ॥
खमगजणपारणाअ य जाणेज्जो दुद्धवेलिका य त्ति । समणजणवायरासे आलोलीवेलिकायं वा ॥ २ ॥
सेडकपढमाहारे जाणेज्जो आणुतासवेलं ति । भतकजणपतरासे जाणेज्जो कूरवेलं ति ॥ ३ ॥
वुड्ढसावक-भिक्खुकजणे य सुण पातरासवेलं ति । भिक्खूणाऽऽहारेण य गंडीवेलं वियाणाहि ॥ ४ ॥
किंचोवत्तं सूरं णिग्गंथजणस्स भत्तवेल त्ति । जागु त्ति अण्णपाणे पधिकाणं कंसकाणं च ॥ ५ ॥ 15
अच्छादण-पणियगते अवरण्हे वं(वा)सवेलिकं जाण । णागेहिं णागवेलं पसूहि पसुवेलिकं जाण ॥ ६ ॥
रागेण सायवेलं दीवेहि य दीववेलिकं जाणे । आजीविकमहासारे सामासं वेलिकं जाणे ॥ ७ ॥
सुंभलक-सुरा-पुप्फे फले हरितकाण चुण्णणवसेसु । कामुकलिंगोपगतेसु चेव सुण आपदोसो त्ति ॥ ८ ॥
णिव्वहणे य वघूणं जंति भूतबलिकम्मकरणे य । पातिट्ठे य वघूणं जाणेज्जो आपदोसो त्ति ॥ ९ ॥
जामेण जामवेलं भिण्णं अंविसारिकाहि जाणेज्जो । चोरेहिं चोरवेलं महापदोसं च रक्खेहिं ॥ १० ॥ 20
पासुत्त-णिसीधं ति य मोण-णिसद्दं तधेव थिमितं ति । मंते अरहस्सं ति य थितड्ढरत्तं वियाणेज्जो ॥ ११ ॥
उच्छुप्पीलणके मोगरसद्दे जंत-मुसलसद्दे य । मंदिरमंथणगागरसद्दे [य] वियाण गोसग्गं ॥ १२ ॥
गो-माहिसणिग्गमणे पच्छा(त्था)णे य पधिग-प्पवासीणं । सारइयसालिमद्दणपंतीसद्दे य गोसग्गं ॥ १३ ॥
णरदेव-देवपडिबोधणासु संख-पडहायणादेसु । पच्छिमजामं कुकुडसद्दे या जाण गोसग्गं ॥ १४ ॥
मंगलिक-सत्थिवाचक-गोसग्गिकसंखभाणकेसु वि य । देवथुतिमंगलेसु य तवोधणे चेवं तु विभत्तं ॥ १५ ॥ 25

॥ पडलं [अट्ठारसमं] ॥ १८ ॥ छ ॥

[एगूणवीसइमं पडलं]

सीसकलोहेण तु पुदसीसिका अरुणमो य दव्वा वि । तंबे तु पुव्वसंझं वियाण सुज्जोदयं वा वि ॥ १ ॥
तघणिज्ज-सुवण्णेण तु सूरमुदेंतमुदितं व जाणेज्जो । नवकणक-सुवण्णेसु य पुव्वण्हं पातरासं वा ॥ २ ॥

---

१ °देसमज्झम्मि । मज्झ° हं० त० ॥ २ °यचारणे मज्झिते य ओवत्तमज्झण्हो हं० त० विना ॥ ३ सव्वतियमट्ठियाणं कयण्हिकालं तु हं० त० ॥ ४ घयाणं च हं० त० ॥ ५ चेव पुण्णमागयं वेलं हं० त० ॥ ६ कासयाणं हं० त० ॥ ७ तुस° हं० त० विना ॥ ८ चुंभल° हं० त० विना ॥ ९ जढिभूत° हं० त० विना ॥ १० अवसा° हं० त० विना ॥ ११ चेव ति मव्वं हं० त० ॥ १२ तु फुसीसका हं० त० विना ॥

मज्झंतिकट्ठितं कंसलोहकेणं य कंसभाणे वा । किंचोवत्तं सूरं आमइले कंसलोहम्मि ॥ ३ ॥
उद्यावरण्हमेव तु पावरुप्पिकेण [1]संविजाणाहि । आमइले रुप्पिकके तपुकेण व जाण अवरण्हं ॥ ४ ॥
अत्थमणवेलकं पि य जाणेज्जो वट्टलोहेणं । [2]वेकंतकलोहेण य जाणेज्जो णागवेल त्ति ॥ ५ ॥
[3]अरकूडकेण संझं अत्थमितं जाण काललोहेणं । मुदए आपदोसं यितऽड्ढरत्तं च विक्खेणं ॥ ६ ॥
परिवत्तंगो सगां जाणीया पाणकेण सव्वेण । घंटासद्देण पुणो य जाण गोसग्गकालं ति ॥ ७ ॥

॥ पडलं [एगूणवीसइमं] ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसइमं पडलं]

जं जिस्से वेलायं दिस्सति विपदं चतुप्पदं वा वि । पुरिसो वा इत्थी या सा वेला तेण णातव्वा ॥ १ ॥
जो जिस्से वेलाए सद्दो उप्पज्जति सुव्वती वा वि । ◁ सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय सद्दस्स ॥ २ ॥
जो जिस्से वेलाए गंधो उप्पज्जति दिस्सती वा वि । ▷ सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय गंधस्स ॥ ३ ॥
जं जिस्से वेलाए रूवं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय रूवस्स ॥ ४ ॥
जो जिस्से वेलाए भक्खो उप्पज्जति लब्भती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय भक्खस्स ॥ ५ ॥
जं जिस्से वेलाए पाणं उप्पज्जती लभती या वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय पाणस्स ॥ ६ ॥
जं जीसे वेलाए दव्वं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय दव्वस्स ॥ ७ ॥
जं जीसे वेलाए भंडं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय भंडस्स ॥ ८ ॥
जं जीसे वेलाए रयणं उप्पज्जति दिस्सते वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीए ॥ ९ ॥
जं जीसे वेलाए पणितं उप्पज्जति दिस्सती या वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय पणितस्स ॥ १० ॥
जं उवकरणं णर-णारीणं उप्पज्जते [य] जं वेलं । सा वेला णातव्वा तस्सुवकरणस्स लद्धीए ॥ ११ ॥
अब्भंतरबाहिरका यं देसं सेवते मणुया । सा वेला णातव्वा तस्सुद्देसस्स लद्धीए ॥ १२ ॥
लेहं रूवं गणितं विज्जाथाणाणि सत्थणीतीओ । इस्सत्थत्थरूवगतं जुद्धं चऽतितिकिच्छयाणि वि य ॥ १३ ॥
जं जीसे वेलायं तु मणूसा यं कालं अधीयंते । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीय ॥ १४ ॥
बंभणवेदज्झयणे पासंडाणं च ससमयज्झयणे । णिग्गंथाणं च सुयम्मि कालके रासिबद्धेयं ॥ १५ ॥
जं जिस्से वेलायं बंभण-समणा सुतं अधीयंते । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीए ॥ १६ ॥
कामगुणे मणुयगुणे सद्द-प्फरिस-रस-रूव-गंधे य । मदु-कढिण-णिद्ध-रुक्खे फासे सुहे सीतमुण्हे य ॥ १७ ॥
जे जिस्से वेलाए णर-णारिगणा सुहं अणुभवंति । सा वेला णातव्वा विसयसुहाणोपपत्तीय ॥ १८ ॥
उक्कट्ठहसित-गीताइयाइ-णट्टाइविलसियाणं च । णाडिज्जित-वेलंबिय-पढिताणि परूवणाओ य ॥ १९ ॥
जं जिस्से वेलाए कीडं णर-णारिओ णिसेवंति । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीय ॥ २० ॥
रामायण-भारधिका तु कहाओ जा य अरहता वत्ता । रायपुरिसाण य जा परक्कमगुणा य सूराणं ॥ २१ ॥
एता पोराणाओ कधाओ जा जम्मि देस-कालम्मि । वत्ता तु कधीयंते सा वेला तेण बोधव्वा ॥ २२ ॥
जं सयमणुभूतं णर-णारिगणेहिं जं च सेसेहिं । लाभा-ऽलाभं जीवित-मरणं दुक्खं सुहं वा वि ॥ २३ ॥
जं जीसे वेलाए परेण सुयमप्पणा व अणुभूतं । सा वेला णातव्वा तस्सुपायस्स लद्धीय ॥ २४ ॥
बहिणगरकणिग्गमणे समिद्धजोक-बलिकम्मकरणे य । उज्जाण-भोज्ज-भत्तिक-जत्तागमणेसु य णराणं ॥ २५ ॥
जं जीसे वेलाए उज्जाणगुणे णरा अणुभवंति । सा वेला णातव्वा जत्तागमणेण तु णराणं ॥ २६ ॥

---

१ संधि जा° हं॰ त॰ ॥ २ वंकंतयलो° हं॰ त॰ ॥ ३ अकरूणडकेण' हं॰ त॰ ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्धे हं॰ त॰ न स्तः ॥

मज्जविधी खज्जविधी फल-हरितक-सुसिप्पिककडे या । सुभमसुभे वाऽऽहारे उत्तममासे जहण्णे य ॥ २७ ॥
जं जिस्से वेलायं आहारविधिं णिसेवए मणुया । सा वेला णातव्वा तस्साऽऽहारस्स लद्धीय ॥ २८ ॥
देवतसेतूणं वा णवकरणं वा वि उज्जवणिका वा । वय-णियमाणं गहणे दाण-विसग्गे य साधूणं ॥ २९ ॥
जं जीसे वेलायं पारत्तहितं णरा समीहंति । सा वेला णातव्वा तस्सुपातस्स लद्धीयं ॥ ३० ॥
वाणियववहारगेते दिवसववहारे ठिते य ववहारे । भंडपणियस्स कय-विकए य णियए विसग्गे य ॥ ३१ ॥ 5
जं जीसे वेलायं ववहारं तु वणिया समीहंति । सा वेला णातव्वा गहण-विसग्गेण भंडाणं ॥ ३२ ॥
कस्सेण कासकाणं वापण्णे खेत्त-खलकम्मजोगे य । धण्णाणं गहणे संगहे य वेला तु जा जत्थ ॥ ३३ ॥
जं जीसे वेलायं कम्मारंभं तु कासका कुणते । सा वेला णातव्वा तस्सुपायस्स लद्धीय ॥ ३४ ॥
जं वेलं जं कम्मं सुभमसुभं माणुसा णिसेवंति । सा वेला णातव्वा कम्मुप्पत्तीय पुरिसाणं ॥ ३५ ॥
थीणं पि सव्वकम्मेसु जाण रंधणक-भोयणादीसु । जं वेलं जं कम्मं करेति तं वेलमो जाण ॥ ३६ ॥ 10

॥ पडलं [वीसइमं] ॥ २० ॥ छ ॥

[एकवीसइमं पडलं]

तद्दिवस जातकं दिस्स दारकं जाण सूरमुग्गमणं । किंचुग्गयम्मि सूरे गोरे उत्ताणसेज्जम्मि ॥ १ ॥

ओसूतकं कडिगेज्झकं दारकं दिस्स अचिरुट्ठितं सूरं बूया । ओवातं दारकं दिस्स परिखकम्मंतं पातरासवेलं बूया। ओवातं दारकं लेहिचकं दिस्स उचपातरासं बूया । ओवातं दारकं तरुणजुवाणं दिस्स पुव्वण्हं बूया । ओवातं तरुणं 15 दिस्स जुवाणं अणुमज्झण्हं बूया । ओवातं पुरिसं मज्झवयं दिस्स मज्झंतियं वेलं बूया । ओवातं पुरिसं पवत्तपलितं दिस्स पव्वत्तमज्झण्हवेलं बूया । ओवातं पुरिसं मिस्सपलितं दिस्स उच्चावरण्हवेलं बूया । ओवातं पुरिसं दिस्स पव्वपलितं अवरण्हं बूया । ओवातं पुरिसं दढपकम्महत्थं दिस्स ओलंबमाणं सूरं बूया । ओवातं पुरिसं खट्टासमारूढं दिस्स अत्थमितं आदिच्चं बूया । उत्ताणपरिसकं दारिकं दिस्स संझावेलियं बूया । कडिगेज्झिकं दारिकं दिस्स दीवचेलियं बूया । पंचकम्मंतिकं [दारिकं] दिस्स पाकंतरं ति बूया । वत्तवोलिकं दारिकं दिस्स पाकडितणक्खत्त-तारं बूया । उब्भिज्ज- 20 माणथणिकं दारिकं दिस्स जामवेलिकं बूया । जोव्वणवत्तं दारिकं दिस्स तिण्णयामं बूया । महाकुमारिं दारिकं दिस्स अड्ढरत्तं जाणीया । मज्झिममहिलं पविआतं दिस्स वत्तड्ढरत्तं बूया । बहुप्पयातं जुण्णं दिस्स महागोसग्गं बूया । वुड्ढं णिव्वियातं दिस्स विधवं वा पासंडवद्धं महिलगोसग्गं वेलं बूया । ओवाते[सु] पुरिसेसु जोण्हपक्खं बूया । कालकेसु पुरिसेसु कालदिवसे बूया । सामेसु पुरिसेसु मिस्ससंधिं बूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हरत्तिं बूया । कालिकासु इत्थिकासु कालरत्तिं बूया । सामासु इत्थिकासु मिस्सा पुण्णमासद्धरत्तिं बूया । ओवातसामेसु पुरिसेसु जाव जोण्ह- 25 पडिपदातो जोण्हट्ठमित्तो त्ति जोण्हदिवसे बूया । ओवातेसु पुरिसेसु जोण्हट्ठमीतो पाय याव जोण्हपुण्णमासीतो दिवसे बूया । कालसामेसु पुरिसेसु जाव कालट्ठमीतो पाय याव चतुद्दसातो त्ति कालदिवसे बूया । ओवातसामाय इत्थिकाय जाव जोण्हट्ठमीतो त्ति जोण्हरत्तिं बूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हट्ठमीतो पाय जाव पुण्णमासीतो त्ति जोण्हरत्तिं बूया । कालसामासु इत्थिकासु कालट्ठमीतो त्ति कालरत्तिं बूया । कालिकासु इत्थिकासु कालट्ठमीतो पाय जाव कालचाउद्दसातो त्ति कालरत्तिं बूया । ओवातं उत्ताणसेज्जं दिस्स जोण्हपडिपदं बूया । ओवातदारकस्स सरीरजोव्वण- 30 परिवड्ढीय जाव तरुणसम्मत्तजोव्वणातो त्ति य दारकपरिवड्ढीय जाव पुण्णमासीतो त्ति वत्तव्वं । एवमेव कालकदारकपरिवड्ढीय कालपरिवड्ढी बूया ।

---

१ 'गते दीसववहारे भिए य हं० त० ॥ २ दिव्वपरक्कंतपा' हं० त० ॥ ३ मज्झगयं दिस्स मज्झिमियं हं० त० ॥ ४ °स्सायो संधिं रत्तिं हं० त० विना ॥

जधा मणुस्सेसु तधा चउप्पदेसु तधा पक्खीसु तधा परिसप्पेसु तधा कीड-किविल्लकेसु तधा पुप्फ-फलेसु भोयणेसु तधा अच्छादणेसु तधा भूसणा-सण-मल्ला-णुलेवणकरणेसु तधा लोहेसु (सव्वसाधुसु) सव्वधातुसु य तधा सव्व[ध]ण्णेसु य तधा सव्वभंडोपक्खर-उवकरणेसु तधा सज्जीव-णिज्जीवेसु सव्वदव्वेसु समणुगंतव्वं । जधा मणुस्साणं वयपरिणामेणं दिवस-रत्तिपरिणामेणं एवं सव्वदव्वाणं पुरिसजुण्णपरिणामेण[1] दिवस-रत्तिपरिणामो विण्णातव्वो—पुण्णामेसु दिवसाणं, थीणामेणं रत्तीणं । वण्णविसेसेणं जोण्हा कालो वा विण्णातव्वो—सुक्किलेसु सप्पभेसु ओदातेसु जोण्हा णातव्वो, कालवण्णेसु णिप्पभेसु मइलेसु अचक्खुविसयकेसु कालपक्खं बूया ॥

॥ पडलं [एगवीसइमं] ॥ २१ ॥ छ ॥

[वावीसइमं पडलं]

अग्घस्स तु परिवड्ढिं ओसरणं च पुण सव्वभंडाणं । देसिय-मुहुत्त-पक्खिय-मासिक[2]-वरसप्पमाणेहिं ॥ १ ॥
अतिवत्ते[3] अतिवत्तो अग्घो हवति णिचयेसु भंडाणं । अणुपालणा ण खमते भवति धुवो छेदको एत्थं ॥ २ ॥
एमेव वत्तमाणेसु जाणयो संपदं भवति अग्घो । वस्ससतस्स तु अंतो एतस्स तु एत्तिओ अग्घो ॥ ३ ॥
खमति णिचयो णिचेतुं खमति य अणुपालणा गहीतस्स । सव्वमणागतभावे इट्ठे य मणाभिलसिते य ॥ ४ ॥
[.....................................] खमति णिचयो णिचेतुं वड्ढीसु य सव्वभंडाणं ॥ ५ ॥
वड्ढीसु समुदएसु य तसकायाणं च थावराणं च । इच्छासंपत्तीसु य लाभस्स वि होति संपत्ती ॥ ६ ॥
सव्वम्मि वि तसकाये थावरकायेसु चेव सव्वेसु । पुप्फ-फल-भोयण-ऽच्छादणेसु दव्वोवकरणे य ॥ ७ ॥
एत्थ तु जे मंगलिया ते धन्ना ते तु लाभिया होंति । एतेसिं उप्पत्ती[4] भंडणिचए हवति लाभो ॥ ८ ॥
धणसंपत्तिकधाए[5] महाधणाणं कुडुंविणं चेव । कोसपरिवड्ढणासु य रुप्प-हिरण्णे सुवण्णे य ॥ ९ ॥
जुज्झजये पणियजये विज्जासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । आरंभाणं सिद्धीसु चेव णिचये धुवो लाभो ॥ १० ॥
उयणतमणोरधाणं उप्पत्तीए य मणभिलसियाणं । अदिट्ठसिरीए च्चिय लाभे लाभस्स संपत्ती ॥ ११ ॥
जध विपुलो उप्पातो जातिविसिट्ठो य सारमंतो य । जध उत्तमपरितोसो तध णिचये लाभओ बहुओ ॥ १२ ॥
अप्पो[6] उप्पातो त्ति य अजातिमंतो य अप्पसारो य ।
जध यऽप्पो परितोसो तध णिचये लाभओ अप्पो ॥ १३ ॥
जध थागविगो पडिलाभणा य उप्पज्जते परीतोसो । अप्पो वा बहुओ वा तध णिचये लाभओ होति ॥ १४ ॥
वड्ढिकरं पीतिकरं णिव्वाणिकरं च मंगलिज्जं च । इट्ठा आणंदकरं च लाभिया होंति उप्पाता ॥ १५ ॥
लुक्खे तुच्छेसु णपुंसकेसु कसकेसु वाहिरंगेसु । वावण्णेसु चलेसु य ण भंडणिचया पसस्संति ॥ १६ ॥
आरंभ-विवत्तीसु य छेअवितेहि वि य सव्वभंडेहिं । मोहपरिधावितेसु[7] य अफलं च कडे पुरिसक्कारे[8] ॥ १७ ॥
उज्झीयति विज्झीयति हायति त्ति परिहायति त्ति वा सद्दे[9] । णट्ठ-हित-पलाते दूसिते विणट्ठे विपण्णे वा ॥ १८ ॥
अंसणिहते[10] विद्दुदते उद्दूढे जित-पराजिते विद्दले । मग्गो त्ति दुग्गतो किस्सते अणत्तो अणाधो त्ति ॥ १९ ॥
किवण-वणीमक-पेस्सजण-सव्वपासंडअरसमगते य । अधणेसु दुग्गतेसु य परिहायंतेसु य अलाभं ॥ २० ॥
अभिलसितस्स अलाभे आसाभंगे यं[11] पणयभंगे य । पडिसिद्धणिराकारे य जायणायं अलाभे य ॥ २१ ॥
उवद्दुतमुवद्दुते वा अभिजुत्ते गहिय-बद्ध-रुद्धे वा । अद्दव[12] य भयसेवासु य धुववावत्ती उ णिचयस्स ॥ २२ ॥

---

१ पुरिसजसपरि° हं० त० ॥ २ °मासक° हं० त० विना ॥ ३ °वत्तेसु अति° हं० त० विना ॥ ४ °प्पत्तियमंडणिज्ज ये हवंति लाभो सप्र० ॥ ५ °कधासु य महा° हं० त० ॥ ६ अग्घो उप्पाओ चिय हं० त० ॥ ७ °परिहाविएसु हं० त० ॥ ८ °कारो हं० त० ॥ ९ या भद्दे हं० त० ॥ १० असिणिहते हं० त० ॥ ११ य पाणभंगे हं० त० ॥ १२ अव्वय भयसेया° हं० त० विना ॥

देवदंड रायदंडे व चोरदंडे व अग्गिदंडे वा । इट्ठाणं च अलाभे उववत्तीए अणिट्ठाणं ॥ २३ ॥
दमग-वणीवग-छातक-अणसितेहि दुक्कालमो जाण । मुत्त-हसित-प्पहिट्ठे मुदिते सुभिक्खं सुवुद्वीयं[1] ॥ २४ ॥
आहारेसु दढ-थावरेसु अणुपालणं पसंसंति । मोहा व णिग्गमो विक्कयो व ण पसस्सते एत्थं ॥ २५ ॥
मोक्खे चल-णीहारिसु विक्कयो सिग्घमेव कातव्वो । अणुपालणा ण सहते भवति धुवो छेदओ एत्थं ॥ २६ ॥
गंतागंतु[2]वणिज्जेण णामग्गेया पडिभ[3]ण्णंति । अं[4]क्खोडिते उवक्खलिते णिकिण्णे ण वि विक्किते ॥ २७ ॥　5
णिद्धे यो यंतिते हंती उच्छाहे जीव[5] चिट्ठते । णर-णारीयोऽभिणंदंति ण [किणे] विकिणे वि वा ॥ २८ ॥
लाभस्स छेदं[6]कस्स य परिमाणं पुण पुणो वि वोच्छामि । तस्स पमाणुप्पाते भवंति बहुका महंता य ॥ २९ ॥
मासिक-पक्खपमाणे मज्झिमको छेअको व लाभो य । अप्पो छेअक-लाभो दिवस-मुहुत्तप्पमाणे वा ॥ ३० ॥
पक्खेवो वा ण भवति पक्खेवो पंचभागसेसो वा । मासपमाणुप्पातेसु अप्पसत्थेसु सव्वेसु ॥ ३१ ॥
पक्खेवो वा ◁ णं[7] भवति पक्खेवो वा ▷ तिभागसेसो तु । पक्खपमाणुप्पातेसु अप्पसत्थेसु सव्वेसु ॥ ३२ ॥　10
पक्खेवो वा ण भवति चउत्थभागो य छेयको भवति । दिवसपमाणुप्पाते सव्वेसु तु अप्पसत्थेसु ॥ ३३ ॥
पक्खेवो वा ण भवति पंचमभागो य छेदको भवति । सव्वम्मि पणियभंडे असुभम्मि मुहुत्तवग्गम्मि ॥ ३४ ॥
सव्वपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । पंचगुणो व बहुगुणो य भंडणिचये भवति लाभो ॥३५॥
मासपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । तिगुणो चतुग्गुणो या वि भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३६ ॥
पक्खपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । विगुणो तिगुणो व चतुग्गुणो व भंडणिचये भवति लाभो ॥३७॥　15
दिवसपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । एक्कगुणो विउणो वा भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३८ ॥
होंति मुहुत्तुप्पाता तु लाभिका जति अणागते कालो । किंचि च्छोका सग्घं व भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३९ ॥
अग्घे विण्णाते दसक्खवड्ढी तहिं गणेतव्वं । जध वस्सपमाणेण तु णीतदसक्खा सया होंति ॥ ४० ॥
सतवग्गस्स पवड्ढी एव सहस्साति संगणेतव्वं । वड्ढिसहस्से वग्गस्स सतसहस्सं ति णातव्वा ॥ ४१ ॥
जध कोडी दोण्णि विवड्ढी भवति सहस्सवग्गस्स । कोडीय तु वड्ढीय तु अपरीमाणा गणेतव्वा ॥ ४२ ॥　20
एसऽग्घे परिवड्ढी एवतिकेसु मुण सव्वपणिएसु । कारणमासज्जित्ता भवति बहुगुणा असारे वि ॥ ४३ ॥
जोग-क्खेमं वड्ढिं आसज्जित्ता खयं च भंडाणं । आकाले असंते वड्ढी उ भवति अपरिमेया ॥ ४४ ॥
कइक-च्छेअकलाभो त्ति पुच्छितेण तु पुणो वि णातव्वं । लाभो व छेयको या सिग्घसिग्घं पडुप्पण्णो ॥ ४५ ॥
कइक-च्छेयकलाभो त्ति पुच्छितेण तु पुणो वि णातव्वं । लाभो व छेयको वा चिरेण तु चिरं पडुप्पन्ने ॥ ४६ ॥
सिग्घं दिवस-मुहुत्ता मासा पक्खा य मज्झिमे काले । चिरदुक्खं पडुपण्णेहिं जाण संवच्छरे एत्थं ॥ ४७ ॥　25
सुट्ठु वि य लाभवंतं अतिवत्तेसु तु अणागतो कालो । छिण्ण-खये वा ण भवति सव्वेसु य अप्पसत्थेसु ॥४८॥
जं जिस्से उवयोगं तिरिक्खजोणीय माणुसाणं वा । तेसिं अं[8]ब्भागमणे पियकारो तस्स भंडस्स ॥ ४९ ॥
जं सेसं उवयोगं तिरिक्खजोणीय माणुसाणं वा । तेसिं णीहारगते अणिग्गमो तस्स भंडस्स ॥ ५० ॥
णिप्फत्तिमणिप्फत्तिं रमणाकालेसु वुड्ढि-दुवुट्ठी । कइके व अकइके वा अग्घमणग्घं तथा वूया ॥ ५१ ॥
पुण्णामचलामासे खय-णीहारे य पुरिसणामाणं । अग्घखयं णासं वा वूया पुण्णामधेयाणं ॥ ५२ ॥　30
पुण्णामाणामासे जयमाहारे य पुरिसणामाणं । णिप्फत्ती लाभो आगमो य पुण्णामधेज्जाणं ॥ ५३ ॥
थीणामखयामासे जयमाहारे य इत्थिणामाणं । णिप्फत्ती लाभो आगमो य थीणामधेज्जाणं ॥ ५४ ॥
थीणामखयामासे खय-णीहारे य इत्थिणामाणं । अग्घखयं णासं वा वूया थीणामधेज्जाणं ॥ ५५ ॥

---

१ सुवुद्धीयं हं० त० विना ॥ २ °तु णिव्वत्तेण हं० त० विना ॥ ३ °डिहण्ण° हं० त० विना ॥ ४ अववाढिए उवखढिए विकिण्णे न वियक्किए हं० त० ॥ ५ जालं वट्टंते सं ३ पु० । जायं रट्ठत्ते हं० त० ॥ ६ छेदकारस्स यं परि° हं० त० ॥ ७ ◁ ▷ एतचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ अच्चाग° हं० त० ॥

भोयणदव्वाणं पि य चल-णीहारे रये अलाभे य । अग्घखयं णासं वा बूया आहारदव्वाणं ॥ ५६ ॥
भोयणदव्वाणं पि उ उदये लाभे तधेव आहारे । णिप्फत्ती लाभो आगमो य आहारदव्वाणं ॥ ५७ ॥
सुकंगचलामासे रय-णीहारे य सुक्किलाणं तु । अग्घक्खयं णासो वा दव्वाणं सुक्किलाणं तु ॥ ५८ ॥
सुकंगदढामासे आहारगते य सुक्किलाणं तु । णिप्फत्ती लाभं आगमं च सुण सुक्किलाणं तु ॥ ५९ ॥
रत्तंगचलामासे रय-णीहारे य सव्वरत्ताणं । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं रत्तवण्णाणं ॥ ६० ॥
रत्तंगदढामासे आहारगते य सव्वरत्ताणं । णिप्फत्ती लाभं आगमं च सुण सव्वरत्ताणं ॥ ६१ ॥
कण्हंगचलामासे रय-णीहारे य कालकाणं तु । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं कालकाणं तु ॥ ६२ ॥
कण्हंगदढामासे आहारे चेव कालकाणं तु । णिप्फत्ती लाभं आगमं च सुण कालकाणं तु ॥ ६३ ॥
अग्गेयचलामासे रय-णीहारे य अग्गिदव्वाणं । अग्गिखयं णासं वा जाणे अग्गेयणामाणं ॥ ६४ ॥
अग्गेयदढामासे आहारगए य अग्गिदव्वाणं । णिप्फत्ती लाभं आगमं च अग्गेयदव्वाणं ॥ ६५ ॥
पुधुलंगचलामासे रय-णीहारे य पुधुलदव्वाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो पुधुविदव्वाणं ॥ ६६ ॥
☞ पुंदुलिंगचलामासे आहारगमे य पुढविदव्वाणं । ☜ णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण पुधुलदव्वाणं ॥६७॥
णिद्धंगचलामासे रय-णीहारे य आपजोणीयं । ☞ अग्घखयं नासं वा जाणेज्जो आपजोणीयं ॥ ६८ ॥
णिद्धंगचलामासे आहारगते य आपजोणीयं । ☜ णिप्फत्तिं लाभं [आगमं] च सुण आपजोणीयं ॥ ६९ ॥
वायव्वचलामासे रय-णीहारे य वायजोणीयं । अग्घखयं णासं वा वायव्वाणं सुणसु तत्थ ॥ ७० ॥
वायव्वदढामासे आहारगते य वेयुजोणीयं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण वातजोणीयं ॥ ७१ ॥
छिद्दंगचलामासे रय-णीहारे य झुसिरदव्वाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो झुसिरदव्वाणं ॥ ७२ ॥
छिद्दंगदढामासे आहारगते य झुसिरदव्वाणं । णिप्फत्तिं लाभो आगमो यं झुसिराण दव्वाणं ॥ ७३ ॥
तिरियंगचलामासे णीहारे चेव तिरियजोणीयं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो तिरियजोणीयं ॥ ७४ ॥
तिरियंगदढामासे आहारगते य तिरियजोणीयं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण तिरियजोणीयं ॥ ७५ ॥
दढमंगचलामासे रय-णीहारे य धातुजोणीयं । अग्घखयं णासं वा वियागरे धातुजोणीयं ॥ ७६ ॥
दढंगदढामासे आहारगते य धातुजोणीयं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण धातुजोणीयं ॥ ७७ ॥
मूलजोणिचलामासे रय-णीहारे य मूलजोणीयं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो मूलजोणीयं ॥ ७८ ॥
मूलजोणिदढामासे आहारगते य मूलजोणीयं । ⌐ णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण मूलजोणीयं ॥ ७९ ॥ ⌐
पाणजोणिचलामासे रय-णीहारे य पाणजोणीय । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो पाणजोणीय ॥ ८० ॥
पाणजोणिदढामासे आहारगते य पाणजोणीयं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण पाणजोणीयं ॥ ८१ ॥
उत्तमंगचलामासे रय-णीहारे य उत्तमंगाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो उत्तमंगाणं ॥ ८२ ॥
उत्तमंगदढामासे आहारगते य उत्तमंगाणं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण उत्तमंगाणं ॥ ८३ ॥
मज्झंगचलामासे रय-णीहारे य मज्झिमंगाणं । अग्घखयं णासं वा मज्झिमजणउपभोग्गाणं ॥ ८४ ॥
मज्झंगदढामासे आहारगते य मज्झसाराणं । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण मज्झसाराणं ॥ ८५ ॥
पेसंगचलामासे रय-णीहारे य पेस्सयणस्स । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं पेस्सणामाणं ॥ ८६ ॥
पेसंगदढामासे आहारगते य पेस्सयणस्स । णिप्फत्तिं लाभं आगमं च सुण पेस्सभोग्गाणं ॥ ८७ ॥
एमेव पंचसु रसेसु गमो पाणेसु भोयणेसु वि य । वत्थे आभरण उवक्खरे य सय गंध मल्ले य ॥ ८८ ॥

१ एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकार्धः हं० त० एव वर्तते ॥ २ आयुजो° हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्धे हं० त० एव वर्तेते ॥ ४ आयुजो° हं० त० ॥ ५ वायवो° हं० त० ॥ ६ य [सुण] झुसिरदव्वाणं हं० त० विना ॥ ७ ⌐ ⌐ एतच्चिह्नान्तर्गतं सूत्रार्धं हं० त० नास्ति ॥

तेल्ल-घते गुल-वण्णे एसेव गमो तु सव्वधण्णेसु । मणिमुत्ते रयणेसु य रुप्प हिरण्णे सुवण्णे य ॥ ८९ ॥
पंचविधो य अवायो णेयो गहण-णिचयेसु भंडाणं । अग्गी उदकं चोरा राया य तिरिक्खजोणीयं ॥ ९० ॥
दिव्वो भवति अवाओ उसुण हिम अग्गि मारुतो आपं । मणुयगतम्मि य राया चोरा सयणो परजणो य ॥ ९१ ॥
सव्वेसु अप्पसत्थेसु अपायो पुव्ववण्णितेसु भवे । णट्ठविणट्ठे जोणिंगते य [......] अवहिते चेव ॥ ९२ ॥
पुव्वपरिकित्तिएसु तु वासुप्पातेसु अप्पसत्थेसु । उदकातो तु अपायो एत्थ णिस्संकितो बूया ॥ ९३ ॥　5
सुण य तिरिक्खजोणी तिरिक्खजोणीगओ अपाओ त्ति । दंसणपादुब्भावे असुभा य तिरिक्खजोणीए ॥ ९४ ॥
रायदंडे कोट्टे य आणकोवत्तणे य पणए य । रायग्गहेसु य कयक्कए य सुण रायदंडो त्ति ॥ ९५ ॥
गाहण-कालक्खवणा खया पाणपराभियोगेसु । गुत्तिं अंदु-णिगलेसु वद्ध-रुद्धेसु सव्वेसु ॥ ९६ ॥
पंचमहाकारणकारणेसु सव्वेसु रायदिट्ठेसु । रायभये सव्वम्मि तु रायकुलगतो अपायो तु ॥ ९७ ॥
उण्हे वा णिससिते मण्णसंतावे य अंगदाहे य । हक्कार-रुदित-कंदित-भयद्दुते रुद्धमावद्धे ॥ ९८ ॥　10
उण्हहते य उदके य कुंथिते तध तुच्छ दड्ढे वा । अग्गीतो तु अपायो धूमाणुगते य आहारे ॥ ९९ ॥
तिरियंगाणामासे तिरिक्खजोणीगते य सव्वम्मि । उवकरणोयखरगते तिरिक्खजोणीय संदेहो ॥ १०० ॥
उंदुर-सुत्तोली या अत्थिला कीडा किविल्लिकाओ य । दाढी णंगूली संगिणो य णहि-सव्ववाला य ॥ १०१ ॥
जलचर-थलचर-खगचारिणो य पक्खी चतुप्पदा चेव । अवरज्झंति णराणं असुभा जे अप्पसत्था य ॥ १०२ ॥
तेसिं पादुब्भावे सद्दे रुवे दवक्खरकते य । तेरिक्खिसु य अवायो त्ति एव णिस्संसयं वेहि ॥ १०३ ॥　15
इत्थिअतिसंधणायं णियडी-कवडेसु वंचणादीसु । चोरुप्पत्तिं बूया हित-महितावित्रेक्खणायं च ॥ १०४ ॥
कूडतुल-कूडमाणं कूडहिरण्णे य कूडलेहे य । चोरुप्पत्तिं बूया आयरणायं च सव्वायं ॥ १०५ ॥
सव्वेसु पावकम्मिसु हिंसके होढकेसु य णरेसु । वीसत्थपाणहरणे य अवायं चोरतो विज्जा ॥ १०६ ॥
जैवि धावइ कूवित-कंदितेसु हित-मारिते य छिण्णे य । चोरुप्पत्तिं बूया सव्वेसु य चोरलिंगेसु ॥ १०७ ॥
जध विपुला उप्पाता तध विपुलं णिद्दिसे अपायं ति । मज्झिमके मज्झिमकं अप्पसारेसु अप्पं तु ॥ १०८ ॥　20
दिण्ण-परिविद्ध-चतुस्सयम्मि खीणे य भोज्ज-पेयम्मि । णट्ठे पम्हुट्ठ पडिसामिते य मडिसाहणयं च ॥ १०९ ॥
वेस्से दोभग्गे अप्पिते य णिक्किते य अक्किते य । उक्कंठिय परितंते य छेइया सव्वभंडेसु ॥ ११० ॥
एवं अग्घपमाणं एतेण गमेण सव्वभंडाणं । सव्वपणितेसु य वधा विविधो सारो मुणेयव्वो ॥ १११ ॥

तं जधा—साली-वीही-जव-गोधूमादिसु सगसत्तरसेसु धण्णेसु अग्घपमाणं विण्णातव्वं भवति । एवमेव पुप्फ-फलेसु, तेल्ल-घतादिसु णेहेसु, लवणादिसु छसु रसेसु, कप्पासादिसु य सव्वछादणेसु, रुप्प-सुवण्णादिसु य सव्वलोहेसु, 25 वइर-वेरुलिकादिसु य सव्वरतणेसु, मणसिलादिसु सव्वधातुसु, अगुरु-चंदणादिसु सव्वसंखितेसु, सव्वमूलजोणिसु सव्वतण-कट्ठेसु य, मणुस्सादिसु य सव्वपाणजोणिसु, सव्वम्मि चेव परिणभंड-पणितगते समणुगंतव्वं भवति । उत्तरं च सविसेसं सुवुट्ठीपडिपोग्गलं दुभिक्खपडिपुग्गलं च घण्णग्घं बूया । सुवुट्ठिपडिपोग्गलं च दगभायणेहि सुक्खेहिं तिरोगेहिं आपजोणिक्खयेण णिद्ध-लुक्खत्तणेण उद्धाणं सुक्खत्तणेण तण्हाइत-पिपासिताणं च अपाणलंभेणं अवुट्ठिं बूया । अवुट्ठीयं पुण जावतिकाणि वुट्ठिसंभवाणि धण्णादीकाणि सव्वमूलजोणीकाणि एतेसिं अणिप्फत्ती पियंकरं च बूया ॥　30

॥ एवं भगवतीय अंगविज्जाय महापुरिसदिण्णाय [वावीसइमं] अग्घप्पमाणं [पडलं] सम्मत्तं ॥ २२ ॥ छ ॥

---

१ वातुप्पा° हं० त० विना ॥ २ °माविट्ठे हं० त० विना ॥ ३ मुच्छद° हं० त० विना ॥ ४ °विज्ञयाणं च हं० त० ॥ ५ अमिधाइव कू° हं० त० विना ॥ ६ °गालतं वण्णयं वूया हं० त० ॥ ७ °हिं गिरोगेहिं हं० त० विना ॥ ८ °पिसन्नगेण हं० त० ॥

[तेवीसइमं पडलं]

अग्गिस्स संभवं पि य अग्गेयेहि पुण सव्वदव्वेहिं । धूमो त्ति व अग्गि त्ति य आलीवणकं वणदवो त्ति ॥ १ ॥
संतत्ये वा कोलाहलं च डमरे विलुप्पमाणे वा । अवि धावध सद्दे वा आलीवणकं वियाणेज्जा ॥ २ ॥
इंगालकोट्ठकिंगालसकडिका कडुच्छ-धूपघडिका य । धूमकरडाकधूमणाण पिसायके धूमणेत्ते य ॥ ३ ॥
5 छगणि-छारि-क्खारापेको त्ति वीजणक-धूमणालीसु । होमाहुतिकये अग्गिकारिके अग्गिकुंडे य ॥ ४ ॥
जग्गंतको त्ति संदीपणं ति दारु समिध त्ति या सद्दा । आहुति हुणियति वि त्ति य उवक्खरे यऽग्गि ◁ होतेस ▷ ॥५॥
दीवो त्ति दीवक त्ति य चुडली मधअग्गि चुल्लके य त्ति । विज्जु त्ति विज्जुता आयवो त्ति कज्जोपको व त्ति ॥६॥
अणलि त्ति व चुल्लि त्ति व चितक त्ति य फुंफुक त्ति या सद्दा । एत्थ उ अग्गुप्पत्ती अग्गिट्ठे अग्गिकुंडे य ॥७॥
अहिमकरिक-अग्गिपखंडकेसु अग्गिस्स जाण उप्पत्तिं । रुद्धापिते थ संतापिते य संतप्पमाणे य ॥ ८ ॥
10 उद्दग्गे व वातउण्हाहते य छुधिते व वुत्थ दट्ठे या । धूमायतम्मि य भोयणम्मि अग्गिस्स उप्पत्ती ॥ ९ ॥
डज्झति सुंसवि भज्जिज्जते त्ति उक्खलिते पखलिते त्ति । कँढउत्तरीयतेत्ति य अग्गुप्पत्तिं वियाणाहिं ॥ १० ॥
अग्गिउवजीवणे अग्गिमेंढपव्वेसु अग्गिकम्मेसु । उवकरणेसु य अग्गिस्स जाण अग्गिस्स उप्पत्तिं ॥ ११ ॥
उण्हे घातुब्भामे फरुसे या अग्गिसंभवं जाणे । उम्मुकपरिकूलेसु य अंगारे छारिकायं च ॥ १२ ॥
रत्तम्मि य पुप्फ-फले रुधिरणिपाते य सव्वसत्ताणं । तिक्खरसे खारेसु य अग्गुप्पत्तिं वियाणेज्जो ॥ १३ ॥
15 अगणि पुण जाततेओ अणलो या हुतवहो त्ति जलणो त्ति ।
पवणो त्ति य जोति त्ति य अग्गिस्स भवंति णामाणि ॥ १४ ॥
वस्सपमाणुप्पाते अग्गेयेसु पुण अप्पसत्थेसु । विरिधिण्णस्स णिवेसस्स झावणं सण्णिवेसस्सा ॥ १५ ॥
मासपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । मज्झिमकस्स णिवेसस्स झावणं मज्झसारस्स ॥ १६ ॥
पक्खपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । बाहासु सण्णिवेसस्स झामणं मज्झसारस्स ॥ १७ ॥
20 दिवसपमाणुप्पाते अग्गेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । गिहझामणिकं यूया ततिमगिहा जति य दव्वाणि ॥ १८ ॥
मोहुत्तिकप्पमाणं अग्गेयेसु पुण अप्पसत्थेसु । जत्थुप्पज्जति अग्गी तत्थेव पसम्मते सिग्घं ॥ १९ ॥
संवट्टका य वाता उण्हा लुक्खा गिहाणि भंजंति । सुमहं अग्गुप्पातो जति भवति उ पुच्छणाकाले ॥ २० ॥
तस-थावरसोभाणिव्वुतेसु वाते सुखेम वायंते । सुब्भिगंधा वाता य मणुण्णा खेमभावाय ॥ २१ ॥

॥ पडलं [तेवीसइमं] ॥ २३ ॥ छ ॥

[चउवीसइमं पडलं]

25 वंदित्तु सव्वसिद्धे सज्जो वुट्ठिं तधा अवुट्ठिं च । वासारत्तविभागं वासपमाणं च वोच्छामि ॥ १ ॥
वासं ति य सव्वे त्ति य णागा वरुणो जलाधिपो व त्ति । णागिंद गइंदो सागरो समुद्दो त्ति वा बूया ॥ २ ॥
एतेसिं देवाणं णामे या भूसणोवकरणे या । सामुद्देसु भंडेसु चेव वासस्स उप्पत्ती ॥ ३ ॥
इंदधणु-इंदकेतुग्गमेसु णिद्धासु इंदराईसु । कीर्लिदिक्खायिका इंदगोपका इंदरक्खा य ॥ ४ ॥
30 णिद्धाणं फलिहाणं णिद्धाणं वुग्गमेण मेहाणं । दुमसंड-मच्छ-कच्छभ-गय-णगसंठाणरूवेहिं ॥ ५ ॥
णिद्ध-घणे अच्छिद्दे परिवेसे यावि चंद-सूराणं । उदय-ऽत्थमणेसु समागमेसु तारा-गहाणं तु ॥ ६ ॥
णिद्धायं संझायं णिद्धासु य सूरियस्स रस्सीसु । सूर-पडिसूरएसु य आरयदसुरसेते य ॥ ७ ॥

१ °पक्कोयिदीजण° हं० त० ॥ २ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ३ घुस्सति सं ३ पु० । मुस्सति सि० ॥ ४ कढउत्तरीयतेहिय हं० त० ॥ ५ पम्मुक° हं० त० ॥ ६ °कम्माणि पसस्सवारणं मज्झ° हं० त० ॥ ७ भूसणे य करणे हं० त० ॥ ८ °त्थयणे° हं० त० ॥

लोह्-गुलाणं झरणे लोहकलंके य णिद्दिसे वासं । कंडकण्णकग्गहणे पुढविठिते उण्हमुदके य ॥ ८ ॥
तसकायाणं गब्भे जावणे रोहणे य वीयाणं । अंडग[प]पूरणम्मि य पिपीलिकाणं थलारुभणं ॥ ९ ॥
गंडूपदणिक्खमणे कुलीर-मंडूक-कच्छभाणं च । उत्थलमारुभणे या मच्छाणं कच्छभाणं च ॥ १० ॥
मच्छ-महंतमहोरग-समुद्दकाका तधेव वम्मीका । कासार-समुद्दच्छेणके य जलफेणके चेव ॥ ११ ॥
मेहे विज्जुत-गज्जित-फुसिते वा पगलिते पवट्टे वा । जलसत्तपमोदे वा दारुकवासेलिकाकरणके वा ॥ १२ ॥ 5
आपाणकप्पमोदे सोदकउक्कोसणे पपतणे वा । मत्त-पेणट्ठ-पलोट्टे कट्टित-पासासकरणे वा ॥ १३ ॥
उल्लपडसाडके केसपीलणे आसिते सवंते य । उक्कापतणे पुढविज्जओलुविले णिव्विले चेव ॥ १४ ॥
धोवंतो वा पुच्छति हत्थं पादं मुहं व दूसं वा । उवकरण भायणं वा सज्जो वुट्ठिं विजाणेज्जो ॥ १५ ॥
तेल्ल-घत-दुद्ध-दधि-मज्जपाणिते बहुविधे मधूसु तधा । रस-णिज्जासे णेहेसु चेव वासस्स उप्पत्ती ॥ १६ ॥
सागर-णदी-तडागेसु चेव वावि-दह-कूव-वरणेसु । पुण्णेसु अत्थि वासं वासति पुण भिज्जमाणेसु ॥ १७ ॥ 10
कुड-घडग-ऽरंजरुदिक-आचमणिक-करक-कुंडिकासु वि य । पुण्णेसु अत्थि वासं वासति य पलोट्टमाणेसु ॥ १८ ॥
☞ [1]णिस्सिंघियाणि दुट्ठेसु मुत्त-पुरीसकरणेसु य काणे । सेआइयपसणे सव्वम्मि सरीरनीहारे ॥ १९ ॥
एएसु अत्थि वासं वुट्ठी पडिपोग्गलेसु सव्वेसु । ☜ लुक्खेसु य तुच्छेसु य सुक्खेसु य आतवं बूया ॥ २० ॥
णिसुंघिते सवाते वाति जति सगज्जितं तहिं वासं । रुदितेसु विज्जुपतणं उक्कापातं सणिद्धट्ठे ॥ २१ ॥
[4]पासासम्मि पवट्टे खेले सिंघाणके य मुक्कासं । रुदितं पि य अणुवद्धं उच्चारगते महावासं ॥ २२ ॥ 15
घदलिका वि असेआइते उल्लपडसाडकेसु । वि य वालेसेडसु पवट्टितेसु पवट्टिमं वासं ॥ २३ ॥
दगअसणि-[5]दगवुच्छलकेसु मज्जघर-पाणभूमीसु । वच्छच्छगणम्मि य सद्दले य णिद्धे महितले य ॥ २४ ॥
जातम्मि जलचरे जलउवक्खरे जलयरेसु सत्तेसु । पुप्फे फले य जलजे जलोवजीवीसु य णरेसु ॥ २५ ॥
उदइकदग-वड्ढगि-णाविग-जलकम्मि-वाणिकाणं च । तेसिं कम्मुप्पत्तीसु चेव वासस्स उप्पत्तिं ॥ २६ ॥
उदगपधउदकसंकामणाय पणालीकोरणे य सव्वम्मि । दगजंतककुप्पलेसु चेव वासस्स उप्पत्तिं ॥ २७ ॥ 20
देवाणं ण्हाणेसु य रायीणं पि य महाभिसेगेसु । दगसेविगमज्जणके मज्जणग उवक्खरविधीसु ॥ २८ ॥
वरमज्जणे वधूमज्जणे य गोसग्गण्हाणके चेव । वरपंचमज्जणे मज्जणे य तेरिक्खजोणीय ॥ २९ ॥
एतेसु वुट्टिपडिपोग्गलेसु दित्तेसु सोभमाणेसु । मुदितेसु उदत्तेसु य वुट्ठिसुदत्तं वियाणेज्जो ॥ ३० ॥
एतेसिं लाभे आगमे य उवगमण उवगमो वा वि । पादुब्भावे या धारिते य वासस्स उप्पत्ती ॥ ३१ ॥
एतेसिं [7]खणसेणे व्व हरणे व सण्णिरुद्धे वा । एतेसिं च अलाभेण चेव जाणे अणावुट्ठिं ॥ ३२ ॥ 25
विपुलुत्तमेसु विपुलं मज्झिमसारेसु मज्झिमं वासं । अप्पं च भवति वासं अजातिमंते असारे य ॥ ३३ ॥
फरुसकिदुकसराय तिरिक्खजोणीय माणुसेसु वि य । कडुकासु य णासासु य फरुसासु भवे अणावुट्ठी ॥३४॥
अभिजुत्तमभग्ग-हते लग्गे या वद्ध रुद्धे वा । णिस्ससित-छीत-कासित-जंभायंते अणावुट्ठिं ॥ ३५ ॥
णिप्पीलिते णिगालिते झीणे झविते य लुक्ख-तुच्छे य । तुस-[9]कंतलिछारिका-चुण्णछारिकायं चऽणावुट्ठी ॥ ३६ ॥
जति दिवसा आभोगे रोधणकमभिग्गहे य आतम्मि । दुक्खस्स य सहितव्वा तति दिवसे [10]आहवं बूया ॥३७॥ 30
जतिहि दिवसेहिं मुचति इट्ठेहिं समेहिं इच्छितं [11]लभति । जं वेलं च विमुचति तं वेलं णिद्दिसे वासं ॥ ३८ ॥

---

१ कंडकसगहणे हं० त० ॥ २ °णद्धपलोइयहेछट्टियपासा° हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः सार्धश्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ सासासम्मि पवद्धे हं० त० ॥ ५ °दगवुधुल° हं० त० विना ॥ ६ पाणजोणीसु हं० त० ॥ ७ तु खणासणो य सण्णि° हं० त० विना ॥ ८ °सकतुगसरा° हं० त० विना ॥ ९ °कयलि° हं० त० ॥ १० आतवं हं० त० विना ॥ ११ भवति हं० त० ॥

वासुप्पाते इट्ठे णिव्वाणिकरे सुभे पसत्थे य । इच्छापूरमपीडाकरेसु वासं सुभं बूया ॥ ३९ ॥
वासुप्पातमणिट्ठे अणिव्वुतिकरे य अप्पसत्थे य । पीलाकरे य असुभे वासं पीलाकरं बूया ॥ ४० ॥
वासुप्पाते अप्पे अप्पं विपुले भवे महावासं । अणुबद्धे अणुबद्धं दिट्ठपणट्ठे य पुण णासो ॥ ४१ ॥
देवतपूताणियमे समिद्धजाग-बलिकम्मकरणे वा । जारिसया सा संपति तारिसकं णिद्दिसे वासं ॥ ४२ ॥
5 जण्णे छणुस्सए वा वाघुज्जे तध घोल-उवणयणे । उज्जाणभोज्ज-भत्तिय-जण्णागमणेसु य णराणं ॥ ४३ ॥
आहारसमुप्पत्ती गंधेसु वि य तध गंधसंपत्ति । विविधालंकारेसु वि जारिसिया रूवसंपत्ती ॥ ४४ ॥
एतेसु तु मणतुट्ठी गुणसंपत्तीव जारिसी भवति । हासजणणी णराणं तारिसिया वाससंपत्ती ॥ ४५ ॥
देव-मणुस्सा पक्खी चतुप्पदा जलचरा थलचरा य । दीसंति छद्धलाभा यधलाभो तारिसं वासं ॥ ४६ ॥
इच्छासंपत्तीयं तसकायाणं च थावराणं च । जारिसिया संपत्ती तारिसिकं णिद्दिसे वासं ॥ ४७ ॥
10 इच्छासंपत्तीसमागमेसु धम्म-ऽत्थ-कामजोगाणं । जारिसिया तु णराणं संपत्ती तारिसं वासं ॥ ४८ ॥
अत्थफले संपत्ती कम्मफलम्मि य रतीअ संपत्ती । धम्मत्थे य समाधी जारिसिया तारिसं वासं ॥ ४९ ॥
राईसु इस्सरेसु य महाधणाणं कुडुंबिणं चेव । बहुरयणसंचयाणं णगराणं जणपदाणं च ॥ ५० ॥
इड्ढिगुणा रायगुणा आरंभगुणा कुडुंबिणं चेव । णगरगुणा णयराणं णिप्फत्तिगुणा जणपदाणं ॥ ५१ ॥
जारिसिया सुयंते कधासु वा जारिसा कधिज्जंति । आहारम्मि य वत्ते तारिसकं णिद्दिसे देवं ॥ ५२ ॥
15 कच्छाय जेट्ठियायं जति सिद्धी जेट्ठकं भवति वासं । मज्झिमियासु य मज्झं कणिट्ठिकायं कणिट्ठं च ॥ ५३ ॥
कच्छागतेसु जध तध जातिविसेसे वि समणुगंतव्वं । थाणविसेसेसु तधा सारा-ऽसारेसु य णराणं ॥ ५४ ॥
कच्छागते वि कागं सेट्ठिमतत्थे कामजोगेसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं णिद्दिसे देवं ॥ ५५ ॥
जुज्झजये पणितजये विज्जासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं णिद्दिसे देवं ॥ ५६ ॥
जातीय उत्तमा हीणमुत्तमं उत्तमं च कच्छायं । सारम्मि उत्तमे वा वि उत्तमं णिद्दिसे वासं ॥ ५७ ॥
20 एसो एक्कतरम्मि वि जध सिद्धी तारिसं भवति वासं । जंति पुत्तमसंजोगा ताव गुणं उत्तमं वासं ॥ ५८ ॥
पुण्णामा पुण्णामा दक्खिणगा य णिद्धा य मंगलिज्जा य । पट्ठिकरा णंदिकरा य एरिसा होंति उप्पाता ॥ ५९ ॥
सव्वे मधुरा य मणोहरा य इट्ठा य णिव्वुतिकरा य । चित्ता आणंदकरा य एरिसिया होंति उप्पाता ॥ ६० ॥
जाती रूवं वण्णो सत्तं सारो बलं च तेयो य । णाणं विण्णाणं विक्कमो य पगती सभावो य ॥ ६१ ॥
एताणि मणुस्साणं जध पवराणुत्तमाणि य भवंति । वासधरे समुदीरितम्मि तध उत्तमं वासं ॥ ६२ ॥
25 जे आयं वा लंभं णर-णारीणं च एक्कमेक्कम्मि । पीती बहुमाणो गउरवो य पेम्माणुरागो य ॥ ६३ ॥
पवासे पडिपक्खम्मि अवासं विग्गहे गुणे तेसं । एतेसिं च अलाभे णीहारमसंपदायं च ॥ ६४ ॥
जारिसिया संपत्ती सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं । गुणजुत्ता पीतिकरी तारिसकं णिद्दिसे वासं ॥ ६५ ॥
पुग्गिलाणि सुद्दुणेसु तु सुभासं च रियमप्पमाणम्मि । पवरेसु तु अणुरद्धं मासरमाणे विरेयं पुरा ॥ ६६ ॥
संवच्छरप्पमाणेसु परिपुण्णं लोकपूरो य । पुण्णो चंदो तो मेघा वासंति संवच्छरप्पाता ॥ ६७ ॥
30 दुक्खसंघा तसकाया थावरकाया य रुक्खपुप्फ-फला । दुक्खरा य दगत्थाणा पातो य भवे अवुट्ठीयं ॥ ६८ ॥
णिद्धंगा तसकाया थावरकाया य णिद्धपुप्फफला । णिद्धा य दगत्थाणा पातो य भवे सुवुट्ठीयं ॥ ६९ ॥
सिसिर-वसंत-णिदाहा तु सुपुप्फ-फल-सीतसुगंधाणं । अब्भुदये अभिसोभासु चेव अभिसोभमो बूया ॥ ७० ॥

---

१ देवतपूताणिय° हं० ॥ २ ⟶ ⟵ एतच्चिह्नान्तर्गतपाठो हं० त० नास्ति ॥ ३ °णा य णराणं हं० त० ॥ ४ आधारम्मि वत्ते हं० त० विना ॥ ५ पवासे सेट्ठिमपत्थे हं० त० विना ॥ ६ जति पुत्तम° हं० त० ॥ ७ °रात° हं० त० विना ॥ ८ °पूरं लोकपू° हं० त० ॥ ९ °सुगंधाणं हं० त० ॥

उदुसोभा य उपहता सीतं उण्हं फलं य पुप्फं च । उदयेसु ण सोभंते तदा अवुट्ठिं वियाणीया ॥ ७१ ॥
सव्वा दिसा वितिमिरा चंदा-ऽऽदिचा गहा सणक्खत्ता । विमला विपुलसरीरा दीसंति णभे सुवुट्ठीयं ॥ ७२ ॥
तिमिराकुला दिसाओ चंदा-ऽऽदिचा गहा सणक्खत्ता । फरुसा किसा विपण्णा दीसंति णभे अवुट्ठीयं ॥ ७३ ॥
सम्मं चरंति णक्खत्ता उदू पुप्फ-फलाणि या । सम्मं चंदो य सूरो य सम्मं देवोऽत्थ वासति ॥ ७४ ॥
विसमं चरंति णक्खत्ता फलं पुप्फं अणोदुगं । एवमादि जधाकालं काले वासति वासवो ॥ ७५ ॥ 5
जुज्जति य जोतिसं सम्मं उदू पुप्फ-फलाणि य । जधाकालं जधासुत्तं काले वासति वासवो ॥ ७६ ॥
णक्खत्तजोगा उदुणो दुमा पुप्फ-फलाणि य । ण भवंति जधाकाले पच्छा देवो वि वासति ॥ ७७ ॥
पुण्णे पुण्णामे दक्खिणे य णिद्धे य आमसित्ताणं । एतेसिं पडिपक्खं पुणरवि पच्छा परामसति ॥ ७८ ॥
पुरिमे मासे वासति आसारो पच्छिमेसु मासेसु । जंव वहुं परिमसते जं वहुकं तं वहुं बूया ॥ ७९ ॥
लुक्खे णपुंसके तुच्छके य वामकडुके य दीणे य । पुव्वं परामसित्ता पडिपक्खं से परामसति ॥ ८० ॥ 10
पुरिमे मासे डेंगंतो पच्छा वासति य पच्छिमे मासे । जं च वहुं परिमसती जं वहुकं तं वहुं बूया ॥ ८१ ॥
एसेव सव्वदव्वेसु गमो सद्द-रस-रूव-गंधेसु । सज्जीवे णिज्जीवे य जं वहुं तं गहेतव्वं ॥ ८२ ॥
जवमज्झा उप्पाता मुतिंगमज्झा य जे उदीरंति । मज्झपसत्था अंतेसु गरिता पुरिमणिच्छेवा ॥ ८३ ॥
एतेसु मज्झवासं मासे अस्सोय-पोट्ठपादेसु । सावणवहुलामासेसु दोसु आसारमो बूया ॥ ८४ ॥
जे होंति पणवमज्झा किविल्लका वंज-मुसलमज्झा वा । मज्झम्मि पलिचा अंतकेसु विपुला पसत्था य ॥ ८५ ॥ 15
एवं पुरिमं वासं मज्झे पच्छा य होति णातव्वं । तध पुरिम-पच्छिमं या मज्झं वा जेण पुण जुज्जे ॥ ८६ ॥
सिंसवेसयसव्वे वि सोभमाणा सव्वकालिकपसत्था । सव्वे वि अप्पसत्था तदा अवुट्ठिं वियाणेज्जो ॥ ८७ ॥
दिवस-मुहुत्तपमाणे वासारत्तो तु हवति दोमासो । फूसलि यत्थ वासति ण य होंतित्थ सारधण्णाणि ॥ ८८ ॥
पक्खपमाणुप्पाते वासारत्तो तु हवति तेमासो । फूसलि एत्थ वासति ण य होंति तेल्लालपुरत्था ॥ ८९ ॥
चातुम्मासं वासति वासपमाणे तु मज्झिमं वासं । मज्झिमिका एत्थ भवे णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९० ॥ 20
वासति य पंचमासे वासपमाणे तु उत्तमं वासं । णिप्फज्जते य सस्सा अधिगं सई सारधण्णाणं ॥ ९१ ॥
पुण्णामे पुण्णेसु य णीरोगेसुवचितेसु णिद्धेसु । मुदितेसु उदत्तेसु य णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९२ ॥
लुक्खे णपुंसकेसु य तुच्छेसु किसेसु अप्पसारेसु । थाणेसुवहुतेसु य इति बूया अवुट्ठिं वा ॥ ९३ ॥
पुण्णेसु सुवुट्ठिं धातकं च अधिगं सई य धण्णाणं । तुच्छेण अवुट्ठिं छातकं य सइ सरसगासाय ॥ ९४ ॥
पुण्णामे णिप्फत्ती पुण्णामाणं तु सव्वधण्णाणं । थीणामे णिप्फत्ती थीणामाणं च धण्णाणं ॥ ९५ ॥ 25
पुण्णामा थीणामा य णत्थि सस्सा णपुंसके केयि । वासच्छिद्दं च भवे रित्तफला जायते सस्सा ॥ ९६ ॥
उत्तममंगामासे पादुब्भावे य उत्तमाणं तु । उत्तमया भोगाणं णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९७ ॥
मज्झिमगाणामासे पादुब्भावे य मज्झिमाणं तु । मज्झिमजहण्णगाणं णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९८ ॥
पेस्संगाणामासे पादुब्भावे य पेस्सवग्गस्सा । णिप्फत्ति धण्णाणं पेस्सजणस्सेव भोगाणं ॥ ९९ ॥
पुण्णामा थीणामा उत्तम-मज्झिम-जहण्णवग्गा य । णिरुवहुता उवचिता य जति य होंति पसण्णा वा ॥१००॥ 30
तण्णामा तव्वण्णा तं ताणि य जणामोपभोगा वा । णिप्फज्जते य सस्सा अधिकं च सईमणा होंति ॥ १०१ ॥

॥ पडलं चोवीसतिमं ॥ छ ॥

---

१ पच्चा देवोऽत्थ या° हं॰ त॰ विना ॥ २ वासे वासति आकारो हं॰ त॰ ॥ ३ जो वहुं हं॰ त॰ विना ॥ ४ तु अंतो हं॰ त॰ विना ॥ ५ °सु मरि° हं॰ त॰ ॥ ६ मज्झमुसलवज्झा हं॰ त॰ ॥ ७ अंयकेसु हं॰ त॰ ॥ ८ णिसापत सव्वे हं॰ त॰ विना ॥ ९ अधिसगई हं॰ त॰ ॥ १० °गं सिई हं॰ त॰ विना ॥ ११ भागेणं हं॰ त॰ ॥

[पणुवीसइमं पडलं]

देवाणं तु पणामेण मुहुत्ता वंदितेण दिवसा तु । अभिसंथुतीए पक्खा ओवयित-णमंसिते मासा ॥ १ ॥
धूमो चुण्णेसु कतो त्ति मुहुत्ता मुक्कपुप्फयो दिवसा । कंठेगुणेसु पक्खा मासा तु समिद्धजोगेसु ॥ २ ॥
लाभस्स तु धुवकारे एवं कालो तु एस बोधव्वो । दुक्खस्स उ आगमणे पडिलोमो एस बोधव्वो ॥ ३ ॥
अम्मा-पितीसु मासा पक्खा तु भवंति मातुगम्मि । पुत्तेसु होंति दिवसा अप्पसरीरम्मि य मुहुत्ता ॥ ४ ॥
अप्पत्थम्मि मुहुत्ता पुत्तत्थम्मि दिवसे वियाणेज्जो । मित्तत्थम्मि य पक्खा मासा य महाजणत्थम्मि ॥ ५ ॥
रायत्थो त्ति मुहुत्ता महत्तरकत्थो त्ति दिवसमो जाणे । णिगमत्था वि य पक्खामासा य भवे जणपदत्थे ॥ ६ ॥
रायाणं वि मुहुत्ता महत्तरकाणं वि दिवसमो जाणे । णिगमाणं ति य पक्खा मासा गामस्स आणं ती ॥ ७ ॥
सेट्ठिपसादे मुहुत्ता दिवसा जाण पत्तीपसादम्मि । ⌐ संतिपसादे पक्खा मासा रायप्पसादम्मि ॥ ८ ॥ ⌐
इंदग्गि त्ति मुहुत्ता पयण्णि त्ति दिवसा विधीयंते । रुद्दग्गि त्ति य पक्खा मासा आदिच्चमग्गि त्ति ॥ ९ ॥
विज्जुपवणे मुहुत्ता अग्गिणिपाते य दिवसमो जाणे । सूरणिपाते पक्खा मासा वुट्ठीणिपातम्मि ॥ १० ॥
घोरपरोवे मुहुत्ता वाभुवरोवेण दिवसमो जाणे । मित्तुवरोवे पक्खा मासा रातोवरोधम्मि ॥ ११ ॥
समतिच्छिए मुहुत्ता चिंतम्मि दिवसा उवेक्खते पक्खा । मासा य णिव्वण्णम्मि तु वासा य भवे पसुत्तम्मि ॥१२॥
संपत्थितो त्ति मासा अद्धपथं आगतो त्ति ⌐ पक्खा तु । एकरसधि त्ति ⌐ दिवसा अतीति एंते त्ति य मुहुत्ता ॥१३॥
परमज्जा ति मुहुत्ता दिवसा पणितमहिल त्ति णातव्वा । मित्तमिधुणं य पक्खा मासा य सकासु पत्तीसु ॥१४॥
अंतो वासमुहुत्ता दिवसा अब्भिंतरे उवट्ठाणे । पक्खा य आविकासु तु मासा पुण अंगणे होंति ॥ १५ ॥
अंतोनिवेसणे होंति मुहुत्ता कोट्ठके तथा दिवसा । उव्वरकम्मि य पक्खा मासा य भवे पडिद्दारे ॥ १६ ॥
सारीमुहेसु तु दिवसा मुहुत्ता णिवेसणस्स दारम्मि । सारीसु होंति पक्खा मासा पुण रायमग्गम्मि ॥ १७ ॥
अंतोपुरे मुहुत्ता अंतोणगरे य दिवसमो बूया । बाहिरकायं पक्खा मासा गामंतरगयम्मि ॥ १८ ॥
सीमागते मुहुत्ता दिवसट्ठाणम्मि दिवसमो जाणे । पक्खा पक्खट्ठाणे मासा पुण दिवसमट्ठाणे ॥ १९ ॥
मंडपको त्ति मुहुत्ता दिवसा उदयमंडपकेसु । सभमालासु य पक्खा मासा य घरे सभाळम्मि ॥ २० ॥
रायगिहेसु तु मासा पक्खा तेमग्गिहेसु णातव्वा । फारुगगिहेसु दिवसा पधिकणिलयेसु तु मुहुत्ता ॥ २१ ॥
संथारो त्ति मुहुत्ता दिवसा गामेसु होंति णातव्वा । खेडेसु होंति पक्खा मासा णगरेसु णातव्वा ॥ २२ ॥
सव्वेसु विच्छविसितु मुहुत्ता फारुगेसु दिवसा तु । पक्खा चउपासेसु तु मासा सामाइयजणम्मि ॥ २३ ॥
अण्ण-उण्णसरिसैदणेसु पत्थ पामाणि होंति मासा या । गिधणिवासगणेसु तु दिवसा पक्खा य णातव्वा ॥ २४ ॥
पयम्मणिक त्ति मुहुत्ता पित पोट्टनि दिवसा विधीयंते । भायणमुपय पक्खा मासा आपागके होंति ॥ २५ ॥
पाणीयम्मि मुहुत्ता गुलपाणीयं परं च दिवसा तु । पट्टुपिट्ठीयं पक्खा जातिपसण्णा अरिट्ठे य ॥ २६ ॥
मज्जमयो त्ति मुहुत्ता इम्मरियमयेसु वाससो बूया । निज्जामयो त्ति पक्खा मासे जाणे गुलमयो त्ति ॥ २७ ॥
सीयारम्मि मुहुत्ता दिवसा कोदवउराळमत्तेसु । यंतीसु होंति पक्खा मासा सालीसु णातव्वा ॥ २८ ॥
अच्छंबिले मुहुत्ता दिवसा यावूसु होंति णातव्वा । पक्खा अंबेट्ठि-विलेवियम्मि मासा य पूरम्मि ॥ २९ ॥
दुद्धे होंति मुहुत्ता दिवसा दधिकम्मि होंति णातव्वा । लवणरसम्मि य पक्खा मासा मधुरे रसे होंति ॥३०॥
भिक्खायं तु मुहुत्ता दिवसा पुन पहिलो होंति । परिवेसगं ति पक्खा मासा भोज्जं ति णातव्वा ॥ ३१ ॥
दानं पुप्फगं होंति मुहुत्ता भत्तपत्तदाणके दिवसा । अच्छादणम्मि पक्खा मासा य हिरण्णदाणम्मि ॥ ३२ ॥

---

१ ⌐ ⌐ एतदन्तर्गतपाठस्थाने हं० त० नास्ति ॥ २ ⌐ ⌐ एतदन्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ एए त्ति य हं० त० ॥
४ °क्खा पम° हं० त० ॥ ५ °पट्टणं° हं० त० विना ॥ ६ दाणं गुरुस्सेवे हं० त० ॥

उत्ताणसेज्जगे होंति मुहुत्ता रिंगमाणके दिवसा । तरुणवयम्मि य पक्खा मासा पुण मज्झिमवयम्मि ॥ ३३ ॥
संझायं तु मुहुत्ता दिवसा पढमिल्लके पदोसम्मि । पक्खा तु मासवेलं मासा तु ठितड्ढरत्तम्मि ॥ ३४ ॥
मासा चेव पयत्तिगतम्मि लेहागमे तु पक्खा तु । दिवसा गतागमणे तस्स णिग्गमणम्मि य मुहुत्ता ॥ ३५ ॥
अरुणोदये मुहुत्ता दिवसा सुज्जोदये विधीयंते । पुव्वण्हम्मि य पक्खा मासा य भवंति अवरण्हे ॥ ३६ ॥
लोहरजे तु ◁ मुहुत्ता ▷ दिवसा तवु-सीसगेसु लोहेसु । पक्खा य तंवहारं कूडके सुवण्णे तधा मासा ॥३७॥ 5
दुविधम्मि काललोहे मासे संवच्छरे य जाणेज्जो । मासा तु तिक्खलोहे वस्साणि तु मुंडलोहम्मि ॥ ३८ ॥
अड्ढागते हिरण्णम्मि मुहुत्ता णाणकम्मि दिवसा तु । पण्णरसदे पक्खा मासा तीसोवके होंति ॥ ३९ ॥
अड्ढाकयाकये होंति मुहुत्ता मासकंक्कये दिवसा । अड्ढक्कये य पक्खा मासा पडिकैक्कये होंति ॥ ४० ॥
काहापणा यति कयक्कयम्मि मासा तु तत्तिया होंति । जति होंति सताणि कयाकयस्स तति होंति वस्साणि ॥४१॥
तीसतिभागो सुहुमम्मि मुहुत्ता होंति सुहुमछेदे त्ति । खुड्डलकभागछेदो मितिभागे दिवसमो जाण ॥ ४२ ॥ 10
पण्णरसमम्मि भागे मज्झिमकायेसु पक्खमो जाण । बारसभागम्मि य कइकेसु मासो भवति कालो ॥ ४३ ॥
अँचत्थमहासारे बारसभागम्मि वस्समो जाणे । तति वस्सा णातव्वा हवंति जति भागलद्धीओ ॥ ४४ ॥
अत्थत्थिकागमणम्मि पुण्णहत्थम्मि लाभमो बूया । रित्तक-तुच्छकहत्थम्मि आगते णत्थि संपत्ती ॥ ४५ ॥
उच्छंगभायणे होंति मुहुत्ता दिवसमो तु पुडिकासु । पक्खा तु विअलभाणे मासा पुण लोहभाणम्मि ॥ ४६ ॥
वरसपुप्फिते मुहुत्ता दिवसा किंचि पवट्टिते होंति । पक्खा वद्दलिकाया मासा यें भवे विरजसूरे ॥ ४७ ॥ 15
उज्जोकिते मुहुत्ता णक्खत्तेसु दिवसा विधीयंते । तारा-गहेसु पक्खा मासा पुण चंद-सूरेसु ॥ ४८ ॥
एक्कगामे एकणगरे व एकम्मि निवेसणे वा वि । मासा पक्खा व भवे बहुजणसाधारणे देसे ॥ ४९ ॥
एक्कघर-एक्कसेज्जा-एक्कासण-एक्कभायणगते य । एकोऽत्थ अहोरत्तो अब्भासण्णे य मलितम्मि ॥ ५० ॥
एतेसिं भावाणं पसत्थगुणसंथवे सुभो लाभो । णिंदिव-दोसगरहणासु चेव असुभो भवति लाभो ॥ ५१ ॥
पुप्फरतम्मि मुहुत्ता दिवसा पुण होंति सुक्कपुप्फम्मि । गुच्छेसु होंति पक्खा भुंभलक-उरच्छके मासा ॥ ५२ ॥ 20
आपेलगेसु दिवसा पक्खा पुण मालिकासु णेतव्वा । वट्टापेले मासा मुकुडेसु भवंति वस्साणि ॥ ५३ ॥
अवरण्हे वँण्णेसु य दिवसा मासा व होंति सकलेसु । कणलीकतेसु पक्खा चुण्णाणि कतेसु य मुहुत्ता ॥ ५४ ॥
देवेसु य रायीसु य मासा संवच्छरा य णातव्वा । पक्खा वा मासा वा सेसेसु मणुस्सभागेसु ॥ ५५ ॥
आयरिय उवज्झाये अम्मा-पितु-गुरुजणे य सव्वम्मि । थाणत्थिते य सव्वम्मि मासे संवच्छरे जाणे ॥ ५६ ॥
एतेणऽणुमाणेण तु कालं मुण सव्वदव्वेसु । थाणत्थाणविसेसेहिं चेव मुण माणुसाणं पि ॥ ५७ ॥ 25
जध कालो तध लाभो तधा सुहं तह य जीवितं ''देहं । तध दव्वाणं सारो तध ठाणगुणो य बोधव्वो ॥ ५८ ॥
लाभो कालविभंगो सारा-ऽसारे य पुच्छणट्ठस्स । एगणिमित्तेण वि अणुगतम्मि जुत्तेण चोयव्वं ॥ ५९ ॥
आधारणासु ☞ बहुसु वि जति सो चेव अणुबंधए भावे । ण य अण्णा उप्पज्जति तेण उ सव्वं ववसियव्वं ॥६०॥
वामिस्सेसुं ☜ बहुसु वि णाणत्थेसु समुदीरमाणेसु । जे तब्भावणुबंधी तज्जोणीया य ते गज्झा ॥ ६१ ॥

॥ पडलं [पणुवीसइमं ॥ २५] ॥ छ ॥ 30

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २-३ °कडसे हं० त० ॥ ४ अम्मत्थ° हं० त० ॥ ५ य रूवे विरजमूले हं० त० ॥ ६ णेयव्वा हं० त० ॥ ७ वण्णेसु हं० त० विना ॥ ८ कलणीक° हं० त० विना ॥ ९ पुण्णा° हं० त० विना ॥ १० कूलो हं० त० ॥ ११ दीहं हं० त० ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकपरिमितः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

[छव्वीसइमं पडलं]

दिट्ठम्मि आगतम्मि य लद्धे थोवतरके मुहुत्तग्गे । दीवसस य णिव्वामण एकदिवसो मुणेतव्वो ॥ १ ॥
एकजुगलम्मि पुरि[सि]त्थिसंगमे एकमो अहोरत्तं । ☞ रेत्तंवरवुच्छेहि य परिवुत्थं होयहोरत्तं ॥ २ ॥ ☜
जति मिधुणकाणि संवेडिताणि तति णिद्दिसे अहोरत्ते । जति पुण्णामाणि समागताणि तति णिद्दिसे दिवसे ॥ ३ ॥
5 जं जतिहि अहोरत्तेहि होंति जं जतिहि भवति दिवसेहिं । पक्खेहिं य मासेहि व तस्सुप्पत्तीय सो कालो ॥ ४ ॥
जो जत्तिएण कालेण जाति जातं च भवति णिप्फण्णं । सो कालो णातव्वो तस्सुप्पायस्स लद्धीय ॥ ५ ॥
जं जत्तिएण कालेण कीरते जस्स देसकालस्स । जम्मि व कीरति काले सो कालो तेण णातव्वो ॥ ६ ॥
कतणिट्ठितम्मिं दव्वे वाळाभमुपट्ठितम्मि कालेण । जेण य तं निप्फज्जति सो कालो तेण बोधव्वो ॥ ७ ॥
आगतमेत्ते व समागते व दिण्णम्मि णिट्ठिते लद्धे । सिग्घं च पडुप्पण्णे संपत्ती तत्तियं वेलं ॥ ८ ॥
10 एहिति दाहिति काहिति कम्मं होहिति व मा चतूरित्थ । दुक्खेण व परिगणितम्मि दिग्घकालो भवति कालो ॥९॥
थोवं सेसं सिद्धं विपचते थाहि ता मुहुत्ताणं । दूरागतो पघे या गतेहिं दिवसा मुहुत्ता वा ॥ १० ॥
पुण्णेसु समत्तेसु य मासं संवच्छरं ति जाणेज्जो । सव्वद्धेसु य पक्खो दिवसो य चतुत्थभागेसु ॥ ११ ॥
जुण्ण-विमद्दित-खलित-विलिहिते दीहेण भवति कालेण । णव-तरुण-सरस-लहुसंपदासु थोवो भवति कालो ॥१२॥
सव्वेसिं दव्वाणं अकत्तिमाणं च कत्तिमाणं च । इट्ठत्त-मज्झिममणिट्ठता य तिविधा गती णेया ॥ १३ ॥
15 पुण्णामा सारजुता मज्झिमसारा य होंति थीणामा । जे तु णपुंसकणामा ते तु असारेसु बोधव्वा ॥ १४ ॥
कालो तु महासारेसु महंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवंतेसु सव्वेसु ॥ १५ ॥
जय णामा तध रूवा सद्दा गंधा रसा य फासा य । पंचविधा उप्पाता एतेण गमेण बोधव्वा ॥ १६ ॥

॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालज्झायो पडलं ॥ २६ ॥ छ ॥

[सत्तावीसइमं पडलं]

20 अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालप्पविभागं णामज्झायं वक्खस्सामि । तं जधा–तत्थ कालो पंचविधो भवति । तं जधा–मुहुत्तप्पमाणं दिवसप्पमाणं पक्खप्पमाणं मासप्पमाणं संवच्छरप्पमाणमिति ।

मुहुत्तप्पमाणं ◁ [5]तिविधं–▷ दिवसप्पमाणं रत्तिप्पमाणं मिण्णरत्ति-दिवसप्पमाणमिति । तत्थ दिवसप्पमाणं तिविधं–पंचरत्तप्पमाणं दसरत्तप्पमाणं पण्णरसरत्तप्पमाणमिति । तत्थ पक्खप्पमाणं विविधं–एकपक्खप्पमाणं विपक्खप्पमाणमिति । तत्थ मासप्पमाणं एकारसविधं–एक्कमासप्पमाणं विमासप्पमाणं तिमासप्पमाणं चतुमासप्पमाणं पंचमास-
25 प्पमाणं छम्मासप्पमाणं सत्तमासप्पमाणं अट्ठमासप्पमाणं णवमासप्पमाणं दसमासप्पमाणं एकारसमासप्पमाण ◁ [6]मिति । तत्थ संवच्छरप्पमाणं अपरिमितविधं भवति ।

तत्थ केस-मंसु-णह-लोमसमासे सुहुमसत्तेसु अणूसु ठिएसु अच्छरप्फोडणे अंगुलिप्फोडणे य मुहुत्तप्पमाणं बूया । तत्थ कण्ण णासा मुमका णयण-जिब्भोट्ठ-दंत-पोरिसपरिमासे अंगुट्ठंगुलिग्गहणे मज्झिमाणंतरकायेसु चेव पुप्फ-फलेसु दिवसप्पमाणं ▷ एवं बूया । तत्थ जंघोरु-हत्थ-पाद-बाहु-गीवा-अंस-कोप्पर-फिजागहणे मज्झिमकायेसु सत्तेसु मज्झिम-
30 कायेसु पुप्फ-फलेसु चेव पक्खप्पमाणं बूया । तत्थ पट्ठी-उदर-कडी-उर-सीससमामासे चायवंतेसु सत्तेसु चेव पुप्फ-फलेसु मासप्पमाणं बूया । एते चेव उद्धंभागेसु उग्गहेसु वासं संवच्छरप्पमाणं बूया । तत्थ अयदातेसु सुक्कपक्खं दिवसं वा

१ णेपापेण हं॰ त॰ विना ॥ २ इगचिह्नान्तर्गतसूत्रार्थं हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ३ °म्मि दिवसे धालारतु पट्ठि° हं॰ त॰ ॥ ४ °ज्झायो सम्मत्तो ॥ छ ॥ हं॰ त॰ विना ॥ ५ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं॰ त॰ नास्ति ॥ ६ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं॰ त॰ नास्ति ॥

बूया । कण्हेसु कालपक्खं रत्तिं वा बूया । सामेसु संझं वा पक्खसंधिं वा बूया । णिद्धेसु वासारत्तं बूया, कण्हेसु वि वासारत्तं बूया । सुक्केसु सरदं बूया, पसण्णेसु वि सरदं बूया । सीते हेमंतं बूया, ◁ संवुतेसु य हेमतं बूया । ▷ [......सिसिरं बूया,............वि सिसिरं बूया ।] सामेसु वसंतं बूया, मुदितेसु वि वसंतं बूया । लुक्खेसु गिम्हं बूया, उण्हेसु वि गिम्हं बूया । वालेयेसु पाउसं बूया, उवणिद्धेसु णिद्धेसु वा पाउसं बूया । एवं रत्तीयं वा दिवसे वा सुक्कपक्खे वा कालपक्खे वा अण्णतरंसि वा छण्हं उदूणं उदुंसि आधारितंसि संझा-पक्खसंधीसु वा उदुसंधीसु वा 5 आधारितेसु एतेहिं जधुत्तेहिं आमासेहिं उवलद्धव्वं भवति, सद्द-रूवपादुब्भावेसु चेव समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ मासेसु पुव्वाधारितेसु कतमो मासो ? त्ति । तत्थ पुरिमेसु गत्तेसु कत्तियं वा मग्गसिरं वा पोसं वा बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते अग्गेयं वा सोमं वा पोसं वा संवच्छरं बूया । दक्खिणेसु गत्तेसु ☞ माहं वा फग्गुणं वा चेत्तं वा वेसाहं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते ☜ माहं वा फग्गुणं वा चेत्तं वा वेसाहं वा संवच्छरं बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु जेट्ठामूलं वा आसाढं वा सावणं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते जेट्ठामूलं वा आसाढं वा 10 सावणं वा संवच्छरं बूया । वामेसु गत्तेसु पोट्ठपदं वा अस्सयुजं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते पोट्ठपदं वा अस्सोजं वा संवच्छरं बूया । दढेसु गत्तेसु फग्गुणं वा आसाढं वा पोट्ठपदं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते फग्गुणं वा आसाढं वा पोट्ठपदं वा संवच्छरं बूया । चलेसु सावणमासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते सावणं संवच्छरं बूया । णिद्धेसु सावणं वा पोट्ठपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते सावणं वा पोट्ठपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा संवच्छरं बूया । लुक्खेसु चेत्तं वा वेसाहं वा जेट्ठामूलं वा आसाढं वा मासं बूया, 15 संवच्छरे पुव्वाधारिते चेत्तं वा वेसाहं वा जेट्ठामूलं वा आसाढं वा संवच्छरं बूया । सीतेसु संवुतेसु य मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा मासं बूया । संवच्छरे पुव्वाधारिते मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा संवच्छरं बूया । एवं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेसु उदुउपचारेहिं कम्म-चेट्ठापविचारेहिं णक्खत्तदेवयकम्मोवयारेहिं उवलद्धीहिं चेव जधोपदिट्ठेहिं आधारयित्ता आधारयित्ता मास-संवच्छरोपलद्धीहिं कमसो पवासमणुगंतव्वं भवति । इति मासपरिसंखा ।

◁ संवच्छरपरिसंखा ▷ पमाणाणिच्चेव णामतो देवतोपलद्धीहिं उदुप्पविभागेहिं चेव पक्खातं भवतीति । तत्थ पक्खे 20 पुव्वाधारिते णीहारेसु पक्खप्पमाणं बूया । उजुभागेसु अवत्थितेसु मासप्पमाणं बूया । आहारेसु तिपक्खप्पमाणं बूया ।

दिवसे पुव्वाधारिते एक्कत्ते एक्काभरणके एक्कोपकरणे एक्कचरेसु सत्तेसु एक्कसाहागते चेव एक्काहिकप्पमाणं बूया । तत्थ दंडेसु गत्तेसु विअंगुलिग्गहणे यमलाभरणके यमलोपकरणे मिधुणचरेसु चेव सत्तेसु विहप्पमाणं बूया । तत्थ तिअंगुलीग्गहणे सुमकंतरे णासग्गे तिके अपदूयं अखत्तरे पोरिसे वत्थिसीसे तियमलोपकरणे तिकसद्दपडिरूव-आकार-पादुब्भावेसु चेव तिहप्पमाणं बूया । तत्थ चउरंगुलिग्गहणे पादतलपाणितले उम्मज्जिते उल्लोकिते उट्ठिते णट्टे गीते वादिते 25 दंडजमलोदीरणे चतुक्कसद्दपडिरूवे आकारपादुब्भावेसु चेव चातूहिकप्पमाणं बूया । तत्थ पंचंगुलिग्गहणे मुट्ठिग्गहणे थणग्गहणे फिजागहणे सयणा-ऽऽसणे सपुरिसे सव्वपंचकपरामासे पंचकसद्दपडिरूवा-ऽऽगारपादुब्भावेहिं चेव पंचाहप्पमाणं बूया । तत्थ गुप्फग्गहणे मणिबंधग्गहणे छसु वा एक्केसु तिसु वा विकेसु बिसु वा तिकेसु एक्के पंचकसहिते विके चतुक्कसहिते छक्कसद्दपडिरूव-आकारपादुब्भावेहिं चेव छाहिकप्पमाणं बूया । तत्थ सत्तकपरामासे चतुके तिगसहिते पंचगे दुगसहिते छक्के एक्ककसहिते विसु वा विकेसु एक्कगसाधारणेसु तिसु वा विकेसु एक्कसाधारणेसु 30 सत्तकसद्दपडिरूव-आकारपादुब्भावेसु चेव सत्ताहिकप्पमाणं बूया । तत्थ विचउक्कोदीरणे चउण्हं वा दुगाणं दंसणे अट्ठसु

---

१ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते ॥ ३ °परिचारे° हं॰ त॰ विना ॥ ४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ५ अपत्तयं अखंतरे हं॰ त॰ विना ॥ ६ मुट्ठिकरणे थणंतरे गहणे फिजा° हं॰ त॰ विना ॥

या एक्केसु अट्ठकसद्दपडिरूव-आकारपादुब्भावेसु चेव अट्ठाहिकं बूया। तत्थ चउक्कपंचकोदीरणे अट्ठके एक्कासहिते तिकाणं या तिण्हं दंसणे सत्तके विकसहिते णवण्हं वा एक्काणं उदीरणे परामासे या णवकसद्दपडिरूवा-ऽऽकार-पादुब्भावे चेव णवाहिकप्पमाणं बूया। तत्थ पंचकदंडोदीरणे पंचकजुगलग्गहणे पंचण्हं या बिकाणं दंसणे दसकपरामासे या दसकवग्गोदीरणे या दसकपडिरूव-आकारपादुब्भावे चेव दसाहिकप्पमाणं बूया। एवं णेतव्वं वा योगेणं दिवसप्पमाणं जाव एकूणतीसतिरत्तातो। विपक्खे वाऽऽधारिते उप्पण्णे या जोगेणं पण्णरसरत्तातो उद्धं जाव भिण्णमासमासप्पमाणातो त्ति णेतव्वं दिवसप्पमाणं भवति। इति दिवसप्पमाणं वा योगते आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेहिं य उवलद्धव्वं भवति।

तत्थ मासप्पमाणे पुव्वाधारिते एतेणेव एक्कवग्गादिणा दुग-तिग-चउक-पंचक-छक्क-सत्तक-अट्ठक-णवक-दसक-वग्गक्कमेणं यथा दिवसप्पमाणं उवदिट्ठं आमास-सद्द-पडिरूवा-ऽऽगारपादुब्भावविधीहिं तहा पक्खप्पमाण भवि णेतव्वं भवति। जधा वा जोगप्पमाणं दिवसप्पमाणे उद्दिट्ठं तथा मासप्पमाणं पि वा जोगए दिट्ठव्वं भवति। इति मासप्पमाणं वक्खातं भवतीति।

तत्थ संवच्छरप्पमाणे पुव्वाधारिते संवच्छरप्पमाणे उप्पण्णे जधा मासप्पमाणेण एक्कवग्गादिणा बिग-तिग-चउक-पंचक-छक-सत्तक-अट्ठक-णवक-दसकवग्गक्कमेण जधा मासप्पमाणमुवदिट्ठं आमास-सद्द-पडिरूवा-ऽऽकारपादुब्भावेहिं तधा संवच्छरप्पमाणं य णेतव्वं भवति। जाव कोडिवग्गाओ अपरिमितवग्गातो या यथा या जोग्गा अक्खरट्ठाणं आमासा य उवदिट्ठा णिघीसुत्ते तधा णेतव्वं भवति संवच्छरप्पमाणं परिमितं अपरिमितं चेति। मुहुत्त-दिवस-पक्खप्पमाण-मास-संवच्छरप्पमाणाणि चेव पुणरवि अण्णोण्णसमाजोगेणं भिण्णाणि एतेहिं चेव वग्गेहिं या जोगट्ठाणेहि य आधारयित्ता संजोयणाविसेसेहिं सम्मं समणुगंतव्वाणि भवंति॥

॥ इति खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालज्झायो णाम
एगोनपट्टि(णसट्ठि)मो सम्मत्तो॥ ५९॥

[सट्ठिमो पुव्वभवविवागज्झाओ-पुव्वद्धं]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पुव्वभवविवागं णामज्झायं। तं खलु भो! तमणुवक्खस्सामि। तं जधा—तत्थ अंगवता अव्वग्गेणं मज्झत्थेणं तणुरागदोसेणं भवितूणं अप्पणो अज्झत्थभावेणं परेण या पुच्छितेणं 'को मे भंते! पुरिमो अणंतरपच्छाकडो भवो?' त्ति एवमुत्तेणं सम्ममव्वग्गसतीकेणं अंतरंगे बाहिरंगे या उभये या भवो चउव्विहो आधारयितव्वो भवति। तं जधा—देवभवो मणुस्सभवो तिरिक्खजोणिकभवो णेरइकभवो चेति। तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुहामासे उम्मज्जिते उल्लोविते पहसिते हरिसते उट्ठिते एकंमाकरणे छत्त-भिंगार-पडागा-लोमहत्थ-वामणकदव्व-चामरा-वीजणीदंसणे सेसाजोग-उण्ण-पडिपादुब्भावे पद्देणकगते अधिगते वंदिते पूयिते सफले संवुते मनोहारअंजलिकरणे देवनपूयापादुब्भावे सव्वदेवगते सव्वदेवणामोदीरणे सव्वदेवणामधेज्जे थी-पुरिसगते देवकम्मपरिकित्तणासु सव्वदेवोपचारगते एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे चेव देवभवातो आगते सि देवा अणंतरपच्छाकडो त्ति बूया। तत्थ कतरातो देवनिकायातो आगतो? त्ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति। तं जधा—देवज्झाते तं उवदिट्ठं विधी देवनिकायाणं आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तधा आधारयितव्वं भवति, आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवति। तत्थ पुणरवि देवोवलद्धीयं देवत्तातो आगतो आधारयितव्वं भवतीति इति देवभवो पुरिमो विण्णेयो भवति।

---

१ या जोगेणं हं० त०॥ २ ... एतदन्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति॥ ३ ... एतदन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते॥ ४ °णवं भवति हं० त०॥ ५ ... हं० त०॥ ६ उपदिट्ठ ... हं० त०॥ ७ ... हं० त०॥ ८ देवणगर ... हं० त०॥ ९ देवकरो हं० त०॥

तत्थ समगत्तामासे उज्जुकपेक्खिते उज्जुकवक्कोपचारे[1] उज्जुभावगते उज्जुववहारगते णिकूडे णिरुवहते सव्वउज्जुकम्मोपचारगते अविसंवादणाय[2] सव्वमाणुसगते सव्वमाणुसोपचारगते ☞ सव्वमाणुसोपकरणगए ☜[3] सव्वमाणुसकम्मचेट्ठागते चेव एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव माणुसभावातो[4] आगतो सि माणुसभवातो अणंतरपच्छाकडो त्ति बूया। तत्थ कतमेहिं माणुसेहिं आगतो त्ति जधुत्तं आधारयितव्वं। तस्स जातीविचये आरिय-मेलक्खु-अज्ज-पेस्सोपलद्धीयं दीव-समुद्द-पव्वतवासीतो[5] वा आमास-पडिरूव-सद्दपादुब्भावोपलद्धीहिं आधारयित्ता आधारयित्ता 5 उवलद्धव्वं भवतीति। तत्थ पुणरवि थीभावातो वा पुरिसभावातो वा कत्तो आगतो त्ति आधारितंसि जधुत्ताहिं थी-पुरिसणपुंसकोपलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवतीति। इति मणुस्सभवो[6] पुरिमो विण्णेयो।

तत्थ तिरियामासे सव्वउवधि-णिकडि-सातिकजोगकरणे[7] सव्वअणज्जवभावगते सव्वतिरिक्खजोणीगते सव्वतिरिक्खजोणीकणामगते सव्वतिरिक्खजोणिकउवचारगते सव्वतिरिक्खजोणीमये उवकरणे सव्वतिरिक्खजोणीकउवकरणे सव्वतिरिक्खजोणीकणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव तिरिक्खजोणिगभवातो 10 सि आगतो[8] त्ति बूया। पुव्वमाधारितंसि जधुत्ताहि एकेंदिय-वेइंदिय[9]-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियोपलद्धीको जीवणिकायाणं तसाणं थावराणं य तिरिक्खजोणीकाणं य विधिभेदोपलद्धीयं चिंतिते अज्झाये आमास-सद्द-रूवपादुब्भावेहिं तधा सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति। तत्थ पुणरवि आधारितंसि कत्तो आगतो? इति (इत्थि) भावातो[10] पुरिसभावातो[11] णपुंसकभावातो[12]? त्ति। इमे कायणपुंसका विण्णेया भवंति, तं जधा–पुढविकाइया आयुकायिका तेउकायिका वाउकायिका वणप्फतिकायिका[13], एते एकेंदिया एकेंदियोपलद्धीयं णपुंसकवेदा वेति विण्णेयं। [14]वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया 15 एते वि सकाहिं उवलद्धीहिं उवलब्भ णपुंसकवेदो ज्जेव विण्णेयो भवति। पंचेंदियतिरिक्खजोणिकेसु सकायं उवलद्धीयं उवलद्धेसु तिविधमाधारयितव्वं भवति–थियो पुरिसा णपुंसका चेति। एते जधुत्ताहि थी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीहिं आधारयित्ता आधारयित्ता थियो पुरिसा णपुंसका चेति थीणासाणंतरा विण्णेया भवंतीति। इति तिरिक्खजोणीगता पुरिमभावा अणंतरपच्छाकडा उवलद्धव्वा भवंतीति।

तत्थ अधोगत्तामासे णिण्णामासे कण्हामासे उवद्दुतामासे संकिलिट्ठामासे दुग्गंधामासे दारुणामासे अमणुण्ण- 20 सद्द-पडिरूव-गंध-फासगते सव्वदारुणकम्मोपचारगते सव्वणेरइयणामपादुब्भावे सव्वणिरयपुरक्खडोपचारगते सव्वणेरयिकणामधेज्जे थी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे चेव णेरइकभवातो सि आगतो णेरइकभवो ते अणंतरपच्छाकडो त्ति बूया। तत्थ कतमेहिं णेरयिकेहिं आगतो? त्ति पुणरवि आधारितंसि जधुत्ताय चिंतायं णेरइकोपलद्धीओ लेस्साहिं वेदणाहिं ठितिविसेसेहिं आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तधा सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति। तत्थ पुणरवि णेरइए पुव्वाधारिते णेरइया णपुंसका चेव सव्वे उवलद्धव्वा भवंतीति। एवं लेसाहिं वेदणाहिं ठितीविसेसेहिं पुढवीए विचयेण 25 पढमाय वितियाय ततियाय चउत्थीयं पंचमीयं छट्ठीयं सत्तमीयं ति आगमणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता आमास-सद्द-पडिरूवसण्णाभिणिवेसेहि य उवलब्भ णेरयिकभवो पुरिमो विण्णेयो भवतीति॥

॥ पुरिमभवविभागो णामा षष्टिमोऽध्यायः समाप्तः ॥ छ ॥

---

१ °ज्जुवकोप° हं॰ त॰॥ २ अतिसं° हं॰ त॰॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ एव वर्तते॥ ४ °भावतो हं॰ त॰ विना॥ ५ °सी चेव आ° हं॰ त॰॥ ६ माणुसभवे पुरिसमो हं॰ त॰ विना॥ ७ °माति हं॰ त॰ विना॥ ८ °जोणीगए भ° हं॰॥ ९ °वेंदिय-तेंदिय° हं॰॥ १०-११-१२ भावओ हं॰ त॰॥ १३ °णस्सइका° हं॰ त॰॥ १४ वेंदिया तेंदिया हं॰ त॰॥

[सट्ठिमो उववत्तिविजयज्झाओ–उत्तरद्धं]

अधापुव्वं खलु भो! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उववत्तिविजयो णामज्झायो, तमणुवक्खस्सामि। तत्थ अंगविदा सम्मं अप्पाणं पडिदेक्खियाणं सव्वंगेण सव्वंगसंवेगं अवहट्टु राग-दोसे मज्झत्थेणं सम्मं आधारणे जोगं समंताहारपणिधितेणं एक्कग्गमतिंदियसमंताहारेणं तप्परेणं अप्पणो अज्झत्थे सण्णायं आधारयमाणेणं 'कत्थ इमं 5 जंतुमुपपज्जिस्सति?' त्ति 'काऽस्स गती पुरेक्खडे?' त्ति एव पुव्वाधारितेण वा आधारयमाणेणं उपपत्ती जीवाणं उवलद्धव्वा भवति। तं जधा–णिरयभवोपपत्ति तिरिक्खभवोपपत्ति मणुस्सभवोपपत्ति देवभवोपपत्ति सिद्धिअभवउपपत्ति णिव्वाणमिति। तत्थ णेरयिकोपपत्ति तिरिक्खजोणेकोपपत्ति मणुस्सगतोपपत्ति देवोपपत्ति चेति चतुव्विधा संसारोपपत्ती विण्णेया भवति। सिद्धउपपत्ती मोक्खो अपुणब्भवो संसारविप्पमोक्खो असंसारोपपत्ती विण्णेया भवति। तत्थ अंतरंगे वा बाहिरंगे वा तदुभये वा आधारयित्ता संसारोपपत्ती पुणब्भवो चतुव्विधो सिद्धीउपपत्ती चेव अपुणब्भवो इमेहिं 10 आमास-सद्द-पडिरूवविसेसेहिं उवलद्धव्वं भवतीति।

तत्थ अधोगत्तामासे णिण्णामासे कण्हामासे किलिट्ठामासे दुग्गंधामासे ◁ उव्वट्टुतामासे ▷ सव्वदारुणगते सव्वणिरयपुरक्खडोपचारगते णेरयिकणामपादुब्भावे णेरयिकपडिरूवगते णेरयिकणामधी-पुरिसउवचारगते णिरयणामोदीरणे णिरयाणुभागपरिकित्तणासु णिरयोपपातकधासु अमणुण्णसद्द-पडिरूप-गंध-रस-फासोदीरणेसु चेव उव्वेदणीयासु एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे चेव णिरयमुपपज्जिस्सतीति णिरयभावो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। 15 तत्थ कतमं णिरयमुपपज्जिस्सतीति पुव्वमाधारिते सीतवेदणीयं उसिणवेदणीयं व त्ति। तत्थ अग्गेयेसु सव्वअग्गिपादुब्भावे सव्वउसुणफासपादुब्भावे सव्वपयणपादुब्भावे सव्वतावणपादुब्भावेसु उसु[ण]जोणीकेसु सत्तेसु अग्गिउवकरणेसु अग्गिसरीरेसु वा उवकरणेसु एवंविधे सद्द-रूवपादुब्भावे वा उसुणवेदणीयं णिरयं उपपज्जिस्सति त्ति बूया। तत्थ सव्वआपुणेयेसु संवत्ततेसु सव्वसीतफासेसु सव्वसीतआपुजोणीयं सव्वआपुमये उवकरणे हेमंतोपकरणेसु हेमंतसीतफास-सीतघावपरिकित्तणासु सीतजोणिकेसु सत्तेसु सीतदुयपरिकित्तणासु चेव एवंविधे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे सीतवेदणीयं णिरयं 20 उपपज्जिस्सति त्ति बूया। किंलेसे निरये उपपज्जिस्सति त्ति लेसायं आधारितायं कण्हवण्णपडिरूवगते कण्हलेस्सजीवपरिकित्तणे चेव कण्हलेसं णिरयं उपपज्जिस्सति त्ति बूया। तत्थ णीलवण्णे पडिभोगपरामासे णीलवण्णपडिरूवगते य णीललेस्सजीवपरिकित्तणेसु चेव एवंविधे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे णीललेस्सं णिरयं उपपज्जिस्सति त्ति बूया। तत्थ काउवण्णपडिभोगपरामासे काउवण्णपडिरूवगते काउलेस्सजीवपरिकित्तणेसु चेव एवंविधे सद्दपडिरूवपादुब्भावे काउलेस्सं णिरयं उपपज्जिस्सति त्ति बूया। तत्थ 'कतमंसि पुढवीयं उपपज्जिस्सति?' त्ति पुव्वमाधारयितव्वं 25 भवति। गणणापरिसंखायं एकक-विक-तिक-चउक्क-पंचक-छक्क-सत्तकेहिं ठियामासठाणेहिं उवलब्भ पढम-वितिय-ततिय-चउत्थी-पंचमी-छट्ठी-सत्तमीयो पुढवीयो अमुकिंसि पुढवीयं उपपज्जिस्सति त्ति बूया। 'किंठितीयं उपपज्जिस्सति णिरयं' ति पुव्वमाधारितंसि सव्वपादुब्भावेसु सव्वंगिकिं ठितिं बूया। जघण्णपलिवोवमेसु वा आधारितेसु पलियपडिरूवेसु पलियपडिरूवेहिं सद्देहिं य पलितोवमं विण्णेयं, सागरपडिरूवेण य सागरसद्दोदीरणेहि य सागरोपमं विण्णेयं। गणणापरिसंखाय णेतव्वाणि पलितोवमाणि सागरोपमाणि य आधारयित्ता आधारयित्ता विण्णेयाणि भवंति 30 सागरोवमाणं परिसंखा।

सिद्धं खीरिणि! खीरिणि! उदुंबरि! स्वाहा, सव्वकामदये! स्वाहा, सव्वणाणसिद्धिकरि! स्वाहा १। तिण्णि छट्ठाणि, मासं दुद्धोदणेणं उदुंबरस्स हेट्ठा दिवा विज्जामधीये, अपच्छिमे छट्ठे ततो विज्जाओ य पवत्तंते रूवेण य दिस्सते,

१ °सलिलेण हं॰ त॰॥ २ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं॰ त॰ नास्ति॥ ३ उपपयिस्सति हं॰ त॰ विना॥ ४ सव्वम्मि कि हं॰ त॰॥ ५ सागरसमुद्दो° हं॰ त॰ विना॥

भणति-कतो ते पविसामि ?, तं जहा ते पविसामि तं ते अणंगं काहामीति । पविसित्ता य भणति-सोळस वाकरणाणि वा णाहिसि एक्कं चुक्किहिसि । एवं भणित्तु पविसति सिद्धा भवति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो सव्वसाधूणं, णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय, आकरणी वाकरणी लोकवेयाकरणी धरणितले सुप्पतिट्ठिते आदिच्च-चंद-णक्खत्त-गहगण-तारारूवाणं सिद्धकतेणं अत्थकतेणं धम्मकतेणं सव्वलोकसुवुहेणं जे अट्ठे सव्वे भूते भविस्से से अट्ठे इध दिस्सतु पसिणम्मि स्वाहा २ । एसा आभोयणीविज्जा 5 आधारणी छट्ठग्गहणी, आधारपविसंतेण अप्पा अभिमंतइतव्वो, आकरणि वाकरणि पविसित्तु मंते जेवति पुस्सयोगे, चउत्थभत्तेणमेव दिस्सति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स, णमो भगवतीय सहस्सपरिवाराय अंगविज्जाए, इमं विज्जं पयोयेस्सामि, सा मे विज्जा पसिज्झतु, खीरिणि खीरिणि! उदुंबरि! स्वाहा, सर्वकामदये! स्वाहा, सर्वज्ञानसिद्धिरिति स्वाहा ३ । उपचारो-मासं दुद्धोदणेण उदुंबरस्स हेट्ठा दिवसं विज्जामधीये, अपच्छिमे छट्ठे कातव्वे 10 ततो विज्जा ओवयति त्ति रूवेण दिस्सति, भणति य-कतो ते पविसामि ?, जतो य ते पविसिस्सं तीय अणंगं काहामि । पविसित्ता य भणती-सोळस वाकरणाणि वाकरेहिसि, ततो पुण एक्कं चुक्किहिसि, वाकरणाणि पण्णरस अच्छिड्डाणि भासिहिसि, ततो अजिणो जिणसंकासो भविस्ससि, अंगविज्जासिद्धी स्वाहा । परिसंखा णेतव्वा, तच्छीसोवरि पुढवीयं ठिती विण्णेया ।

एसा उक्कट्ठो पलितोवमाणं गणणा । परं दस ◁ कोडाकोडीओ आधारयित्ता दसकोडा ▷ कोडीओ सागरोवमं 15 पलितोवमाणं विण्णेयाणि भवंति । उक्कस्सं सागरोवमं विण्णेयं भवति । उक्कस्सा णिरयेसु ठिती तेत्तीसं सागरोवमाणि विण्णेयाणि भवंति । तत्थ कतमायं पुढवीयं ति एवं ठितीयो निरयो णिरयोपपाते आधारयित्ता उक्कस्स-जहण्णायं पुढवीउवलद्धीयं चेव उवलब्भ अमुकठितीकं णिरयमुपपज्जिस्सतीति बूया । इति णिरयोपपाता विण्णेया । भवंति या वि [एत्थं गाहाओ-]

अधोगत्ताणि आमसति किलिट्ठाणि य सेवति । दीणे दीणपरामासे अधोदिट्ठीय माणवो ॥ १ ॥ 20
उपहुताणि सेवंतो उव्विग्गो जो तु पुच्छति । अमणुण्णे सद्द-रूवम्मि णिरयाणं कधासु य ॥ २ ॥
णिरयोपपातकरणे वत्तंते वा वि दंसणे । एतारिसे समुप्पाते जाणेज्जा णिरयोपकं ॥ ३ ॥ इति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियगमणे तिरिच्छागमणे तिरिच्छाकरणे सव्वकुडिलागते सव्वअणज्जवगते सव्वअणज्जवभावगते सव्वउवधि-णिकडि-सातिजोगकरणे सव्वअतिसंधणागते सव्वअणज्जववहारगए च्छादणा-गूहणासु चेव सव्वतिरिक्खजोणीगते सव्वतिरिक्खजोणिकपडिरूवगते सव्वतिरिक्खजोणिकणामपादुब्भावे सव्वतिरिक्खजोणिकसद्दगते 25 ◁ सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणगते ▷ सव्वतिरिक्खजोणिकसरीरमये उवकरणे सव्वतिरिक्खजोणिकणामधेज्जे थी-पुरिसे एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणी उपपज्जिस्सति त्ति तिरिक्खजोणीभावो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया । तत्थ तिरिक्खजोणिकभावे पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणी पुणरवि पंचविधामाधारये । तं जधा-एकेंदिए बेइंदिए तेइंदिए चउरिंदिए पंचेंदिए चेति ।

तत्थ एक्केसु गत्तेसु एकाभरणके एक्कोपकरणे एक्कवेणीकरणे एकचरेसु सत्तेसु एक्कसाधारगते एकपादुब्भावे सव्वे- 30 केंदियपादुब्भावे एकेंदियणामपादुब्भावे एकेंदियमये उवकरणे एकेंदियणामधेज्जथी-पुरिसउवकरणे चेव एवंविधे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे चेव एकेंदियकायभवं बूया । तत्थ एकेंदिये पुव्वाधारिते एकेंदियं पंचविधमाधारये, तं जधा-पुढविकाइके आवुकायिके तेवुकायिके वायुकायिके वणप्फतिकायिके चेति ।

---

१ अत्थकत्थकपणं हं॰ त॰ ॥ २ °वहेणं हं॰ त॰ ॥ ३ आलोयणी° हं॰ त॰ ॥ ४ युवति हं॰ त॰ विना ॥ ५ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गत. पाठः हं॰ त॰ नास्ति ॥ ६ °माति° त॰ विना ॥ ७ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः त॰ नास्ति ॥ ८ °पुराकडो त॰ सि॰ ॥ ९ एक्कामाहार° त॰ ॥

तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणीगते पुढवीकायपादुब्भावे पुढविणामधेज्जोदीरणे पुढवीउवकरणगते पुढवीधातुमये उवकरणे पुढवीणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणपादुब्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे पुढवीकायएकेंदियकाये उववज्जिस्सति त्ति पुढविकाइओ ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ पुढविकाइये पुव्वाधारिते पुणरवि सुद्धपुढवी पत्थरपुढवी मणिपुढवी धातुपुढवी कायवंतपुढवीकायं च अधापडिरूवतो आधारयित्ता आधारयित्ता सजोणीहिं आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेहिं चेव बूया इति पुढविकायोपपत्ती विण्णेया भवति।

तत्थ आपुणेयेसु पाणजोणीगते सव्वउदकपादुब्भावे उदकसद्दगते य उदकणामधेज्जोदीरणे आपुजोणिकउवकरणपादुब्भावे पाणजोणीमये उवकरणे आपुजोणीणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते चेव आपुकायिको ते एकेंदियकायिको अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ आपुकायिके पुव्वाधारिते आपुकायं सत्तविधमाधारये, तं जधा–सायोदकं लवणोदकं मधुरोदकं वारुणोदकं खीरोदकं घतोदकं सोतोदकं ति। एताणि उदकाणि जधोवदिट्ठेहिं रूव-पडिरूवोपलद्धीहिं आमासोपलद्धीहिं चेव उवलद्धव्वाणि भवंति। तं समासेण पुणरवि दुविधमाधारयितव्वं भवति–अंतलिक्खं भोम्मं चेति। एताणि उदकाणि अंतलिक्खोपलद्धीहिं भोम्मोपलद्धीहिं चेव उवलद्धव्वाणि भवंति। तत्थ उद्धंभागेसु गत्तेसु सद्द-पडिरूवेसु चेव अंतलिक्खेसु य अंतलिक्खोदकं बूया। अधोभागेसु गत्तेसु भोम्मेसु चेव सद्द-पडिरूवेसु य भोम्ममुदकं बूया। तत्थ भोम्मे उदके पुव्वमाधारिते तं अट्ठविधमाधारये, तं जधा–सामुद्दं णादेयं तालुकं[1] रोढं कोप्पं पल्ललजलं परसवणजं उब्भिज्जमिति। एताहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं समुद्द-णदी-तलाक-कूपादिकाणि उवलद्धीहिं ☞[2] आमास-सद्दपादुब्भावेहिं ☜ उवलद्धव्वाणि भवंति इति आपुकायो विण्णेयो भवतीति।

तत्थ अग्गेयेसु सव्वअग्गिपादुब्भावे सव्वअग्गिगते सव्वअग्गिणामगते अग्गिउवकरणेसु अग्गेयेसु उवकरणेसु अग्गिजीवणेसु अग्गेयकम्मं उवचारपादुब्भावेसु ☞[3] तं अग्गिनामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणपादुब्भावेसु ☜ चेव तेवुकायं उववज्जिस्सति त्ति बूया, तेवुकायो ते एकेंदियकायो अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ तेवुकाये पुव्वाधारिते अणुसरीरं बादरसरीरं वा कतमं उववज्जिस्सति? त्ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति। तत्थ अणूसु आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेसु अणुसरीरं तेवुकायं उववज्जिस्सतीति बूया। तत्थ कायवंतेसु बायरसद्द- ☞[4] पडिरूव ☜ पादुब्भावेसु चेव बादरसरीरमुववज्जिस्सति त्ति बूया। तत्थ तेवुकायस्स सुभत्तमसुभत्तं चेति आधारयित्ता आधारयित्ता आमास-सद्दपडिरूवपादुब्भावेसु चेव णेतव्वं भवतीति इति तेवुकायोपपातो विण्णेयो भवति।

तत्थ वायव्वेसु वाउकायपादुब्भावेसु वायुकायसद्दगते वायुकायणामोदीरणे वायुकायोपकरणेसु विजेणय[5]-तालविंटादीसु संख-पव्वत-योगणालकादिसु आतोज्जेसु वायुकायणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवगते पादुब्भावे वायुकायमुववज्जिस्सति त्ति बूया, वायुकायो ते एकेंदियभवो अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ वायुकाये पुव्वाधारिते वायुकायस्स अणुसरीरता[6] बादरसरीरता य सुभता असुभता य आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावेहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवतीति इति वायुकातोपपातो उवलद्धव्वो भवतीति।

तत्थ मूलजोणिगते सव्वतण-वणस्सति-हरितपादुब्भावेहिं मूलजोणीसद्दगते मूलजोणीणामपादुब्भावे मूलजोणीउवकरणगते मूलजोणीमये उवकरणे मूलजोणीणामधेज्जे थीपुरिसउवकरणगते अद्धोगत्तामासे सव्वखंधगते सव्वमूलगते सव्वबीजगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे वणप्फतिकायं उववज्जिस्सति त्ति बूया, वणप्फतिकायो ते एकेंदियभवो अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ वणप्फतिकाये पुव्वाधारिते तं णवविधमाधारये, तं जधा–रुक्खगतं लतागतं गुम्मगतं गुच्छगतं वलयगतं उद्दाणगतं तणगतं थलज-हरितगतं चेति। तत्थ उद्धंभागेसु सव्वखंधगते चेव रुक्खं बूया। उज्जूसु उद्धंभागेसु य उस्सद्धेसु य लतायो बूया। गहणेसु गुम्मे बूया। दीहेसु कुडिलेसु य सव्वगुच्छगते

---

१ तालुकं चोढं स ३ पु० सि० ॥ २–३–४ हस्तचिह्नान्तर्गत पाठः त० एव वर्तते ॥ ५ °वीजण° त० ॥ ६ °रस्स मायादसरीरता य त० ॥

चेव गुच्छे वूया। कायवंतेसु रुक्खे वूया। मज्झिमकायेसु गुम्मे वूया। मज्झिमाणंतरकायेसु वलये वूया। पच्चवर-कायेसु तणाणि हरिताणि वा वूया। अरपुणेयेसु मूलजोणीसाधारणेसु थलजोणिहरिताणि वूया। सद्द-पडिरूवपादुब्भावेसु चेव सव्वाणि सरिसेहिं वूया। तत्थ वणप्फति सव्वं पुणरवि चउव्विधमाधारये–कंदगतं मूलगतं खंधगतं अग्गगतं चेति। तत्थ कंदगते कंदगता विण्णेया, मूलगते मूलगता विण्णेया, खंधगते खंधगता विण्णेया, अग्गगते अग्गगता विण्णेया भवंतीति। तत्थ अग्गगता चतुव्विधामाधारयितव्वा भवंति, तं जधा–पत्तगता पुप्फगता फलगता वीजगता 5 चेति। तत्थ अणूसु पुधूसु सव्वपत्तगते चेव पत्तगता विन्नेया। मुंदितेसु[1] सव्वपुप्फगते चेव पुप्फगता विण्णेया। पुण्णेसु सव्वफलगते चेव फलगता विण्णेया। तणूसु सव्ववीयगते चेव वीयगता विण्णेया। तत्थ एसा वणप्फती दुविधा समासेण–जलजा थलजा चेव। णववीधा रुक्खादिकेण वित्थारेणं। पुणरवि चउव्विधा समासेणं–कंदगता मूलगता खंधगता अग्गगता चेव। जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास-सद्द-पडिरूवसमुत्थिताहिं विण्णेया आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवंति। इति वणप्फतिउपपातो विण्णेयो भवतीति। 10

तत्थ दंडोदीरणे दंडेसु गत्तेसु[2] जमलाभरणके यमलोपकरणे यमलपीतिकरणे मेधुणचरेसु सत्तेसु सव्वबियपादु-ब्भावे ☞ वेइंदियसत्तपादुब्भावे ☜[3] सव्वविइंदियसद्दगते विइंदियणामोदीरणे वेइंदियोपकरणे विइंदियसरीरमये उवकरणे विइंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविवे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवगते विइंदियकाये उपपज्जिस्सति त्ति वूया, विइंदियकायो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया इति विइंदियोपपातो विण्णेयो भवति। तत्थ तिकपादुब्भावेसु भुमकंतरे णासग्गे सिंघाडगे सव्वतिकपादुब्भावेसु तिइंदियसत्तपादुब्भावे तिइंदियणामधेज्जोदीरणे तिइंदियोपकरणे 15 तिइंदियसरीरमये उवकरणे तिइंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते पादुब्भावे एवंविवे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूव-पादुब्भावेहिं तिइंदियोपपज्जिस्सतीति तिइंदियभवो ते अणंतरपुरक्खडो भविस्सतीति वूया इति तेइंदियोपपातो भवतीति विण्णेयो। तत्थ चउकेसु सव्वचउक्कवग्गपादुब्भावे सव्वचउरिंदियसत्तपादुब्भावे सव्वचउरिंदियसद्दगते चउरिंदियणा-मधेज्जोदीरणे चउरिंदियउवकरणे चउरिंदियमते उवकरणे चउरिंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणपादुब्भावे चउरिंदिय-सद्दपडिरूवपादुब्भावे चेव चतुरिंदियभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति इति चतुरिंदियोपपातो भवतीति। 20

तत्थ वेइंदिये संख-संखणग-सिप्पिका-जलाउ-दककिमी-णीपुर-सुमंगल-संबुक्कादयो एवंविधा फासिंदिय-जिब्भि-दियोपपेता विण्णेया भवंतीति। तिइंदिया उ [4]जुंगलिका-उप्पादक-उप्पातक-तणहारक-पत्तहारक-कुंथु पिपीलिका-उपचिक-रोहणिक-तेवरुक-तपुस-भिंजिक-पातिक-साहिक-सतप्पाय-गोम्मि-हत्थसोंडक-कडमच्छादयो एवंविधा [फासिंदिय-जिब्भिदिय-घाणिंदियोपपेता विण्णेया भवंति। तत्थ चउरिंदिया.................................दयो] फासिंदिय-जिब्भिदिय-घाणिंदिय-चक्खिदियउपपेता विण्णेया भवंति। एते णं जीवा ससकायिका सम्मुच्छणसंभवा, ण 25 एतेसिं गब्भोपपत्ती विण्णेया, एते णं पच्चवरकायेसु खुड्डजोणी विण्णेया। एतेसिं णपुंसकजोणीयो सीत-उसुण-सीतोसुण-साधारणातो सरीरसट्ठाणाणि वण्णोपलद्धीतो अपद-बहुपदगं खेचोपपातविसेसा उद्धमधो तिरियं च दिसापविभागा उग्गविसता मंदविसया णिव्विसया तोप्पभोगतो अणोपभोगतो सुभत्तं असुभत्तं च यधुत्ताहिं[5] ☞ आमास-सद्द-पडि-रूवोपलद्धीहिं ☜[6] आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वं भवतीति। एते व णं तसा वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया वायरा य काया एकेंदिया सव्वे णपुंसका विण्णेया भवंतीति।

तत्थ पंचकामासे पंचकपादुब्भावे सव्वपंचेंदियगते सव्वपंचेंदियोपकरणे सव्वपंचेंदियतिरिक्खजोणिकसरीरमये 30 उवकरणे सव्वपंचेंदियतिरिक्खजोणिकणामधेज्जे थी पुरिसउवकरणगते एवंविवे पेक्खितामासे सद्द-पडिरूवपादुब्भावे चेव पंचेंदियतिरिक्खजोणीयं उपपज्जिस्ससि त्ति वूया, पंचेंदियतिरिक्खजोणीकभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति वूया। तत्थ

---

१ मिंदितेसु त० विना॥ २ °रणेसु गत्तेसु त० विना॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः त० एव वर्तते॥ ४ जंग° त०॥
५ °या ओपभोग्गया अणोपभोग्गया सु° त०॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः त० एव वर्तते॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणीयं पुव्वाधारितायं पंचेंदियतिरिक्खजोणी पंचविधा आधारयितव्वा भवति, तं जधा—पक्खिगता चतुप्पदगता सरीसिवगता परिसप्पगता जलचरगता चेति। एस पंचविधा वि पंचेंदियतिरिक्खजोणीयं जधा पुव्वचिंतितायं उवदिट्ठा समास-वित्थरेहिं आमास-सद्द-रूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तधा सव्वा समणुगंतव्वा भवतीति। एवं पंचेंदियतिरिक्खजोणीकउववातो उवलद्धव्वो भवतीति। भवंति चावि एत्थं गाहाओ, तं जधा—

तिरियं गत्ताणि आमसति तिरियं वा वि विपेक्खति। तिरिच्छागमणे चेव तिरिच्छागमणेसु य ॥ १ ॥
उवधी-णियडिजोगेसु सातिजोगमणज्जवे। तिरिक्खजोणीसमुप्पाते तेरिच्छसद्दरूविते ॥ २ ॥
तिज्जजोणिसणामके थी-पुमंसे उवक्खरे। एरिसे सद्द-रूवम्मि तिज्जजोणिकमादिसे ॥ ३ ॥

तत्थ उज्जुकामासे उज्जुकपेक्खिते उज्जुकोपगमणे उज्जुकवापगते सव्वणिरुवहितगते सव्वअणुकूलगते सव्वमाणुसगते सव्वमाणुसपडिरूवगते माणुससद्दगते माणुस्सणामपादुब्भावे मणुस्सोवकरणगते मणुस्सकम्मोवयारगते माणुसकम्मोवयारपरिकित्तणासु चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूवपादुब्भावेसु चेव मणुस्सभवं उववज्जिस्ससि त्ति मणुस्सभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ मणुस्सभवे पुव्वाधारिते मणुस्सा आरिया मिलक्खू अज्जा पेस्सा थी-पुरिस-णपुंसक-सिप्प-कम्म-विज्जा-खेत्तोववातविसेसेहिं चेव एवमादीकेहिं उक्कस्स-मज्झिम-जहण्णकेहिं उवलद्धीहिं जधा जातीविचये उवदिट्ठं आमास-सद्द-पडिरूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तधा सव्वमाधारयित्ता आधारयित्ता सम्मं समणुगंतव्वं भवतीति। भवंति या वि एत्थ गाहाओ—

उज्जुगत्तसमामासे उज्जुकोवकरणम्मि य। उज्जुकं पेक्खिते चेव उज्जुभावगतेसु य ॥ १ ॥
सव्वज्जवोपयोगेसु ववहारम्मि य उज्जुके। उज्जुकम्मोपचारे य ◁ माणुसाणं च दंसणे ॥ २ ॥
समे सद्दोवकरणे उवचारे य ▷ माणुसे। माणुसे पडिरूवे य माणुसं भवमादिसे ॥ ३ ॥

एवं मणुस्सभवोपपातो विण्णेयो भवतीति।

तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुद्धामासे उल्लोकिते उम्मट्ठे उपहसिते ऊस्सिते उट्ठिते एकंसाकरणे छत्त-भिंगार-आदंस-पताका-लोमहत्थ-वीजणि-आसण-कडकपादुब्भावे वंदिते पूजिते सक्कते संथुते अच्चिते पणमिते अभिवादिते सेसाजोग-जण्ण-बलिहरणगते सव्वपहेण-गंध-मल्ल-धूप-लावण्णकपयोगगते चेव सव्वदेवागारगते देवणामोदीरणे देवतोपचारे देवकम्म-परिकित्तणासु सव्वदेवणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूव-रस-गंध-फासदिव्वियपादुब्भावे देवभवं उप्पज्जिस्सतीति देवभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। तत्थ देवभवे पुव्वाधारिते देवाणं णिकायविसेसा ◁ आधिपच्चविसेसा ▷ सामाणिकविसेसा परिसाविसेसा ◁ लेसाविसेसा ▷ खेत्तविसेसा आभिजोगिकविसेसा थी-पुरिसविसेसा भावणाविसेसा जहा देवज्झाए उवइट्ठो तहा नेयव्वं भवइ। उवलद्धीयं पि आमास-सद्द-पडिरूवणामपादुब्भावेहिं णेतव्वं भवतीति। भवंति चापि एत्थं गाहाओ—

उद्धं गीवाय गत्ताणि आमसंतो तु पुच्छति। उल्लोकंतो जो जं तु गत्तमुम्मज्जए तु जो ॥ १ ॥
एगंसायरणे छत्त-भिंगारदंसणे। पताका-वेजयंतीणं पहेणाणं च दंसणे ॥ २ ॥
देवकम्मोवचारेसु देवकम्मकधासु य। देवोववातं जाणीया पादुब्भावे य तारिसे ॥ ३ ॥

एवं देवोववातो विण्णेयो भवतीति।

तत्थ दिव्वजोणीयं अत्ताणं उम्मज्जगाय उत्तमट्ठेसु उत्तमेसु सव्वमोक्खेसु सव्वअसंसत्तेसु सव्वविसंजोगेसु सव्वमोक्खोवायकधासु सव्वमोक्खसत्थोदीरणासु सव्वसिद्धिगते सव्वणिव्वुयगते सव्वतिण्णगते ◁ सव्वअरजगते ▷ सव्वअपम्मगते सव्वसुघगते ◁ सव्वअयोलगते ▷ सव्वपरिसुद्धगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्द-रूवपादुब्भावेसु

१ आयरिया त० ॥ २-३-४ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गत- पाठः त० नास्ति ॥ ५ उद्धंकंतो जो जं तु गत्त सम्म° त० ॥
६-७ एतच्चिह्नान्तर्गत पाठः हं० त० नास्ति ॥

चेय सिद्धिं उपपज्जिस्ससि त्ति बूया, सिद्धिभावो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया। भवंति चावि एत्थं गाहाओ–

गत्ताणि देवजोणीयं उम्मज्जंतो तु पुच्छति। मोक्खेसु या वि सव्वेसु उम्मट्ठे उत्तमम्मि य ॥ १ ॥

सिद्धो[1] मुत्तो त्ति तिण्णो त्ति णीरयो णिव्वुतो त्ति य। असंगो केवली बुद्धो असरीरकधासु[2] य ॥ २ ॥

अकम्मो णिप्पयोगो त्ति सद्देसेवंविधेसु य। [.................] सिद्धिभावं पवेदयेदिति ॥ ३ ॥

इति सिद्धोपपत्ती अपुणब्भवा विण्णेया इति ॥ 5

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय उपपत्तीविजयो
णामऽज्झायो सट्ठितिमो सम्मत्तो ॥ ६० ॥

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स। णमो भगवतीय महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय सहस्सपरिवाराय भगवतीय अरहंतेहिं अणंतणाणीहिं उवदिट्ठाय अणंतगमसंगहसंजुत्ताय पण्णसमणसुतणाणिधीजमतिअणुगताय अणंतगमपज्जायाय ॥ 10

णमो अरहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
णमो भगवतीए सुतदेवताए ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रम् ९००० ॥ छ ॥[3]

॥ अंगविज्जा[पइण्णयं] संपुण्णं ॥

---

१ सिद्धमु° त० विना ॥ २ असंसारकधा° त० विना ॥ ३ ग्रंथाग्रम् ८८०० ॥ अंगविद्यापुस्तकं समाप्तम् ॥ त० ॥

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम्

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

सटीकं अङ्गविद्याशास्त्रम्

...तानां कालोऽन्तरात्मा सर्वदा सर्वदर्शी शुभाशुभैः फलसूचकैः सविशेषेण प्राणिनामपराङ्गेषु स्पर्श-व्याहारेङ्गितचेष्टादिभिर्निमित्तैः फलमभिदर्शयति । तत्प्रयतो दैवज्ञोऽप्रहतमतिरवधार्य स्वशास्त्रार्थमनुसृत्य यशोवर्मानुमहार्थमर्थिनां शुभा-शुभानां भावा-भावमभिनिर्दिशेत् ।

तत्र दिशं दिशः कालं व्या[हा]रद्रव्यदर्शनम् ।
अङ्गप्रत्यङ्गस्पर्शनं समीक्ष्य फलमादिशेत् ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

स्थानं पुष्पसुहासिभूरिफलभृत्सुस्निग्धकृत्तिच्छदा-
ऽसत्पक्षिच्युतशस्तसंज्ञिततरुच्छायोपगूढं समम् ।
देवर्षि-द्विज-साधु-सिद्धनिलयं सत्पुष्प-सस्योक्षितं,
सत् स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च सच्छाड्वलम् ॥ २ ॥

एवंविधं स्थानं 'सत्' पृच्छायां शुभदमित्यर्थः । कीदृशम् ? एवंविधानां तरूणां—वृक्षाणां या छाया तयोपगूढं—छन्नम् । कीदृशानाम् ? 'पुष्पसुहासि' पुष्पाणि—कुसुमानि शोभनो हासो येषां ते पुष्पसुहासिनः । तथा भूरीणि—प्रभूतानि फलानि [बिभ्रति—] धारयन्ति ये ते भूरिफलभृतः । सुस्निग्धा कृत्तिः—त्वक् छदानि—पर्णानि येषां ते सुस्निग्धकृत्तिच्छदाः । तथा असत्पक्षिभिः—अनिष्टविहगैः काकोलूकादिभिश्च्युताः—रहिताः । तथा शस्तसंज्ञिताः—प्रशस्तनामानो ये पलाशपिप्पल-न्यग्रोध-बिल्वप्रभृतयः । तथा 'समं' निम्नोन्नतावनिरहितम् । 'देवर्षीति' देवाः—सुरा ऋषयः—मुनयो द्विजाः विप्राः साधवः—सन्तः सिद्धाः—देवयोनय एतेषां यन्निलयं—स्थानम् । तथा सत्पुष्पैः—सुगन्धैः कुसुमैः सस्यैश्च—धान्यादिभिर्युतं उक्षितं—सेवितं शुभम् । तथा 'स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च' स्वादु—मृष्टं यदुदकं—जलं निर्मलं—प्रसन्नं च तद्भावेन जनितं—उत्पादितं आह्लादं—चित्तहर्षम्, यत् तथाभूतेनोदकेन युक्तम् । 'सच्छाड्वलं' शोभनदूर्वायुक्तं तत् सदिति । तथा च **परासरः**—"अथ पुष्पितफलितहरितस्निग्धत्वक्पत्रनामाङ्कितसौम्यद्विजवरनिषेविततरुच्छायोपगूढे सस्यकुसुमसहितमृदुशाड्वलासिक्तमृष्टहृद्यप्रसन्नसतिलाशयेऽवकाशे देवर्षिसिद्धसाधू ....पूर्वाभिमुखो वा यः पृच्छेत् तस्य प्रार्थितार्थोपपत्तिमेभिर्निर्दिशेत्" ॥ २ ॥ अथ [अ]शुभस्थानप्रदर्शनार्थमाह—

छिन्न-भिन्न-कृमिखात-कण्टकि-प्लुष्ट-रूक्ष-कुटिलैर्न सत्कुजैः ।
क्रूरपक्षियुतनिन्द्यनामभिः शुष्कशीर्णबहुपर्णचर्मभिः ॥ ३ ॥

एवंविधैः कुजैः—वृक्षैर्युतं असत् । कीदृशैः ? छिन्नैः—कल्पितैः, भिन्नैः—त्रुटितैः, कृमिखातैः—कीटक्षितैः, कण्टकिभिः—सकण्टकैः, प्लुष्टैः—दुष्टैः रूक्षैः—अस्निग्धैः, कुटिलैः—अस्पष्टैर्न शोभनैः । कौ—भूमौ जायन्त इति कुजाः । तथा क्रूरैः—अनिष्टैः पक्षिभिः—विहगैः काक-गृध्र-बकाद्यैर्युक्तैः निन्द्यनामभिः—कुत्सितसंज्ञैः बिभीतका............ । शुष्कैः—नीरसैः । तथा शीर्णानि—च्युतानि बहूनि पर्णानि—प्रभूतानि पत्राणि चर्माणि—त्वचो येषां ते ॥ ३ ॥ [अन्यद्] प्याह—

श्मशान-शून्यायतनं चतुष्पथं तथाऽमनोज्ञं विषमं सदोषरम् ।
अवस्करा-ऽङ्गार-कपाल-भस्मभिश्चितं तुषैः शुष्कतृणैर्न शोभनम् ॥ ४ ॥

एवंविधं स्थानं पृच्छायां न शोभनम् । कीदृशम् ? श्मशानं—शवशयनप्रदेशः । शून्यायतनं—उद्वासितदेवगृहम् । 'चतुष्पथं' चत्वारः पन्थानो यत्र । तथा 'अमनोज्ञं' न चित्ताह्लादकम् । विषमं—निम्नोन्नतम् । सदा—सर्वकालमूषरं—

१ ग्रन्थोऽयमाद्यन्तरहितः खण्डित एव प्राप्तोऽस्ति, अतो नामाप्यस्येदं मत्परिकल्पितमेव ज्ञेयमिति ॥

कतासंयुक्तम्। अवस्करैः—गृहमुक्तैरशुचिभिरनुपयोग्यैर्भाण्डैश्चितं—व्याप्तम्। तथाऽङ्गारकैः—दग्धकाष्ठैः कपालैः—अस्थिकालैः भस्मना च चितं—युक्तम्। तथा तुषैः—धान्यचर्मभिः शुष्कैः—नीरसैस्तृणैश्चितं न शोभनमिति ॥ ४ ॥

अन्यदप्याह—

प्रव्रजित-नग्न-नापित-रिपु-बन्धन-सौनिकैस्तथा श्वपचैः।
कितव-यति-पीडितैर्युतमायुध-माक्षीकविक्रयादशुभम् ॥ ५ ॥ 5

एवंविधं स्थानं पृच्छायामशुभम्। प्रव्रजितः—तापसो लिङ्गी। नग्नः—विवस्त्रः। नापितः—दिवाकीर्तिः शिल्पी त्रधारप्रभृति। रिपुः—शत्रुः। बन्धनं—बन्धशाला। सौनिकः—पशुघातकः। एतैर्युक्तं स्थानम्। तथा श्वपचैः—चाण्डालैः। तवः—द्यूतकारकः। यतिः—त्रिदण्डी। पीडितो रोगादिना। एतैर्युक्तं स्थानम्। तथाऽऽयुधं आयुधशाला यत्र, माक्षीकं—मधु द्विक्रयशाला कल्पपालगृहसमीपाद्वेतोरशुभमिति ॥ ५ ॥ अथ दिक्काललक्षणमाह—

प्रागुत्तरेशाश्च दिशः प्रशस्ताः प्रष्टुर्न वाय्वम्बु-यमा-ऽग्नि-रक्षः। 10
पूर्वाह्णकालेऽस्ति शुभं न रात्रौ सन्ध्याद्वये प्रश्नकृतोऽपराह्णे ॥ ६ ॥

दिशः—आशाः प्राक्—पूर्वा उत्तरा ऐशानी च पृच्छायां 'प्रशस्ताः' शुभाः 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य, तदभिमुखः शुभ त्यर्थः। 'वाय्वम्बुयमाग्निरक्षः' वायवी वारुणी दक्षिणाऽऽग्नेयी नैर्ऋती च न शस्ताः, न शुभाः एता दिशः ष्टुः। 'पूर्वाह्णकाले' दिनप्राग्भागसमये 'प्रश्नकृतः' पृच्छकस्य 'शुभं' शोभनफलमस्ति विद्यते, 'रात्रौ' निशि ['सन्ध्याद्वये'] सायं प्रातः अपराह्णे च न शुभमिति। तथा च परासरः—"छिन्नभिन्नशुष्करूक्षवक्र......दग्धकण्टकक्र 15 ......द्विज...पिधिनाः प्रशस्तनामाङ्कितपादपच्छायदमशानयन्यायतनबन्धरोपितरिपुनापितायुधमद्यविक्रय......... तु नैर्ऋताग्नेययाम्यवारुणवायव्याशाभिमुखः प्रचोदयेत्, स्पष्टमर्थमनर्थाय विन्द्यात्"। अपि च—

वेलाः सर्वाः प्रशस्यन्ते पूर्वाह्णे परिपृच्छताम्। सन्ध्ययोरपराह्णे तु क्षिपायां च विगर्हिता ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अन्यदप्याह—

यात्राविधाने च शुभाशुभं यत् प्रोक्तं निमित्तं तदिहापि वाच्यम्। 20
दृष्ट्वा पुरो वा जनताहृतं वा प्रष्टुः स्थितं पाणितलेऽथ वस्त्रे ॥ ७ ॥

यात्राविधाने यत् शुभाशुभं 'प्रोक्तं' कथितम्, "सिद्धार्थका-ऽऽदर्श-पयो-ऽञ्जनानि" इति शुभदम्, "कर्पासौपध-कृष्णधान्यम्" इत्यशुभम्। तथा तत्र शाकुनं यन्निमित्तं 'प्रोक्तं' कथितं तद् 'इहापि' प्रश्नसमये 'वाच्यं' वक्तव्यम्। 'पुरो' अग्रतो वा दृष्ट्वा य...नो वरजनता—जनसमूहः तया आहृतं—आनीतं 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य 'पाणितले' हस्ते 'वस्त्रे' अम्बरे वा स्थितं दृष्ट्वा शुभमादिशेदिति। तथा च परासरः—

यात्राविधाने निर्दिष्टं निमित्तं यच्छुभाशुभम्। तदेव दृष्ट्वा दैवज्ञो वाञ्छासिद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ ७ ॥ 25

अधुना अङ्गानि पुंसंज्ञकान्याह—

अथाङ्गान्यूर्वोष्ठ-स्तन-वृषण-पादं च दशना,
भुजौ हस्तौ गण्डौ कच-गल-नखा-ऽङ्गुष्ठमपि यत्।
सशङ्खं कक्षांसं श्रवण-गुद-सन्धीति पुरुषे, 30
स्त्रियां भ्रू-नासा-स्फिग्-वलि-कटि-सुलेखा-ऽङ्गुलिचयम् ॥ ८ ॥

अथैतानि पुंसंज्ञकान्यङ्गानि भवन्ति—ऊरू ओष्ठौ स्तनौ वृषणौ—मुष्कौ पादौ—चरणौ 'दशनाः' दन्ताः 'भुजौ' बाहू 'हस्तौ' करौ 'गण्डौ' मुखकपोलौ कचाः—केशाः गलः—कण्ठः नखाः—कररुहाः अङ्गुष्ठौ—हस्तपादाङ्गुष्ठौ, एतत् सर्वं यत्तदपि 'पुरुषे' पुंसि। कक्षौ प्रसिद्धौ, अंसौ—स्कन्धौ, श्रवणौ—कर्णौ, गुदं—पायुस्थानं सन्धिग्रहणे सर्वाङ्गसन्धय उच्यन्ते, 'इति' एवं प्रकाराः सर्व एव पुरुषे पुंसि ज्ञेयाः। तथा च परासरः—"तथाङ्गानि मुष्क-

स्तन-पादा-ऽङ्गुष्ठोरु-गुह्य-भुज-हस्त-मस्तक-कर्णा-ऽक्षि-कक्ष-शङ्ख-दन्ता-ऽङ्गुष्ठोष्ठ नख-गल-स्कन्ध-गण्डं केश-सन्धयः पुरुषाख्यानीति"। अथ स्त्रीसंज्ञानाह–'स्त्रियां' इति एतान्यङ्गानि स्त्रियां भवन्ति । भ्रुवौ प्रसिद्धे । नासा–घ्राणम् । स्फिजौ–प्रसिद्धौ । वली–लेखा, यथा त्रिवली । कटिः–प्रसिद्धा । सुलेखा–शोभनलेखा करमध्यस्था । अङ्गुलिचयं–अङ्गुलिसमूहः ॥ ८ ॥ अन्यानपि स्त्रीसंज्ञानाह—

5 जिह्वा ग्रीवा पिण्डिके पार्ष्णियुग्मं जङ्घे नाभिः कर्णपाली कृकाटी ।
वक्त्रं पृष्ठं जत्रु जान्वस्थि पार्श्वं हृत्ताल्वक्षि स्यान्मेढ्रनोरस्त्रिकं च ॥ ९ ॥

'जिह्वा' रसना । 'ग्रीवा' कृकाटिका । 'पिण्डिके' जङ्घयोः पश्चिमभागौ । 'पार्ष्णी' चरणयोः पश्चिमभागौ 'जङ्घे' प्रसिद्धे । 'नाभिः' तुन्दः । 'कर्णपाली' प्रसिद्धा । 'कृकाटी' ग्रीवापश्चिमभागः । [............] ॥ ९ ॥

नपुंसकाख्यं च शिरो ललाटमाभ्याद्यसंज्ञैरपरैश्चिरेण ।
10 सिद्धिर्भवेन्नातु नपुंसकैर्नो रूक्ष-क्षतैर्भग्न-कृशैश्च पूर्वैः ॥ १० ॥

'शिरः' मस्तकम् । 'ललाटं' मुखपृष्ठम् । एतत् सर्वं नपुंसकाख्यम् । तथा च परासरः—"शिरो-ललाट-सु... घु...पृष्ठ-जठर-जत्रु-जान्वस्थि-पार्श्व-हृदय-कर्णपीठा-ऽक्ष-मेढ्रनोरस्त्रिक-तालिवति नपुंसकाख्यानि"। अथ 'आद्यसंज्ञैः' प्रथमत उक्तैः पुन्नामभिः स्पृष्टैः 'आशु' क्षिप्रमेव सिद्धिः 'स्याद्' भवेत् । 'अपरैः' तदनन्तरोक्तैः स्त्रीनामभिश्चिरेण सिद्धिर्भवेदिति । नपुंसकैः स्पृष्टैः 'न जातु' न कदाचित् सिद्धिः स्यात् । 'रूक्ष-क्षतैर्भग्न-कृशैश्च पूर्वैः' इति, नेत्यनुवर्तते,
15 पूर्वैः पुंनामभिः स्त्रीनामभिर्वा रूक्षैः–अस्निग्धैः क्षतैः–सप्रहारैः भग्नैः–स्फुटितैः कृशैश्च–अल्पमांसैर्न जातु सिद्धिः । तथा च परासरः–"तत्र पुन्नामभिरस्निग्धमनुपहतमरोगमङ्गं स्पृष्टं दिग्देश-काल-व्याहारेष्टदर्शन-निरुपहतप्रष्टुः पृच्छार्थं सफलमभिचिन्तयति, स्त्रीसत्कमपि पूर्वोक्तलक्षणमुक्तं तत् कालान्तरेणासफलम् । नपुंसकाख्यमकार्यसिद्धिमनर्थानां च गमनं कुर्यात् । अपि च भवति यात्र—

पुंसंज्ञेष्वाशु सिद्धिः स्यात् स्त्रीसंज्ञेषु चिराद् भवेत् । अशुभं त्वेव निर्दिष्टं नपुंसकसनामसु ॥ १ ॥
20 पुरुषाख्येऽपि संस्पर्शे वाह्ये रूक्षे च लक्षिते । नार्थसिद्धिमथो ब्रूयादङ्गविद्याविशारदः ॥ २ ॥" इति ॥ १० ॥

अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशार्थमाह—

स्पृष्टे वा चालिते वाऽपि पादाङ्गुष्ठेऽक्षिरुग् भवेत् ।
अङ्गुल्यां दुहितुः शोकं शिरोघाते नृपाद् भयम् ॥ ११ ॥

तत्र पृच्छायां पादाङ्गुष्ठे चालिते स्पृष्टे वा प्रष्टुः 'अक्षिरुग्' नेत्रपीडा 'स्याद्' भवेत् । अङ्गुल्यां स्पृष्टायां दुहितुः
25 शोकं वदेत् । 'शिरोघाते' शिरोऽभिहत्य पृच्छेत् तदा 'नृपाद्' राजतो भयं ब्रूयात् । अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशः— तत्र पादाङ्गुष्ठं प्रचालयन् स्पृष्ट्वा वा पृच्छेत् तत्प्रष्टुश्चक्षुरोगं विनिर्दिशेत्, अङ्गुलीं स्पृष्ट्वा दुहितृशोकम्, शिरसि हन्यमाने राजभयम् ॥ ११ ॥ अन्यदप्याह—

विप्रयोगमुरसि स्वगोत्रतः कर्पटाहतिरनर्थदा भवेत् ।
स्यात् प्रियाप्तिरभिगृह्य कर्पटं पृच्छतश्चरण-पादयोजितुः ॥ १२ ॥

30 ....सह विप्रयोगं प्रवदेत् 'स्वगोत्रतः' आत्मीयवर्गात् । 'कर्पटाहतिः' वस्त्रत्यागः 'अनर्थदा'.........। 'कर्पटं' वस्त्रं 'अभिगृह्य' प्राप्य चरणं–पादं पादे–द्वितीये चरणे योजयति तस्य 'पृच्छतः' प्रष्टुः प्रेयलाभः स्यात् । तथा च परासरः—"उरः स्पृष्ट्वा विप्रयोगं गोत्रात्, वस्त्रमुत्सृजतोऽनर्थागमम्, पादं पादेन संस्पृशेत् पटान्तमभिगृह्य वा पृच्छेत् प्रियसमागमं विद्यात्" ॥ १२ ॥ अन्यदप्याह—

पादाङ्गुष्ठेन विलिखेद् भूमिं क्षेत्रोत्थचिन्तया ।
35 हस्तेन पादौ कण्डूयेत् तस्य दासीमया च सा ॥ १३ ॥

प्रष्टा क्षेत्रोत्थचिन्तया पादाङ्गुष्ठेन 'भूमिं' भुवं विलिखेत्, 'हस्तेन' करेण पादं कण्डूयेत् तदाऽस्य 'सा' चिन्ता

'दासीमया' दासीकृता। तथा च परासरः—"अङ्गुष्ठेन भूमिं विलिखेत् क्षेत्रचिन्तां विजानीयात्, हस्तेन पादौ कण्डूयेद् दासीकृता च सा" ॥ १३ ॥ अन्यदप्याह—

ताल-भूर्जपटदर्शनेऽशुकं चिन्तयेत् कच-तुपा-ऽस्थि-भस्मगम्।
व्याधिराश्रयति रज्जु-जालकं वल्कलं च समवेक्ष्य बन्धनम् ॥ १४ ॥

तालवृक्षपत्रदर्शने भूर्जपटदर्शने वा प्रष्टा 'अंशुकं' वस्त्रं चिन्तयेत्। 'कचतुपा-ऽस्थि-भस्मगं व्याधिराश्रयति' 5 कचाः—केशाः तुषं—धान्यवर्म अस्थि—प्रसिद्धम्, भस्म, एषामन्यतमस्योपरिगतं प्रष्टारं 'व्याधिः' पीडा आश्रयति। रज्जुः—प्रसिद्धा, जालकं—यत्र मत्स्य-पक्षिणो बध्यन्ते तदेव तत्सदृशं वा, 'वल्कलं' त्वक्, एषामन्यतमस्यं वा 'समवेक्ष्य' अवलोक्य गृहीत्वा वा पृच्छेत् तदा बन्धनं वदेत्। तथा च परासरः—"ताल-भूर्जपत्रदर्शने वस्त्रार्थे, केशा-ऽस्थि-भस्मनाऽऽक्रम्य व्याधिभयं ब्रूयात्, निग(मृग)जाल-रज्जु-सिक्थ-वल्कलान्यधिष्ठाय दर्शने वा बन्धनं मतम्" ॥ १४ ॥ अन्यदप्याह— 10

पिप्पली-मरिच-सुण्ठि-वारिदै रोध्र-कुष्ट-वसना-ऽम्बु-जीरकैः।
गन्धमांसि-शतपुष्पया वदेत् पृच्छतस्तगरकेन चिन्तनम् ॥ १५ ॥
स्त्री-पुरुषदोष-पीडित-सर्वा-ऽध्व-सुता-ऽर्थ-धान्य-तनयानाम्।
द्वि-चतुःशफ-क्षितीनां विनाशतः कीर्त्तितैर्दृष्टैः ॥ १६ ॥

पिप्पलीति। पिप्पल्यादिदर्शने क्रयादिचिन्तां क्रमशो व्यपदिशेत्। तत्र पिप्पलीदर्शने या स्त्री दोषदुष्टा 15 सद्दोषा तत्कृतां चिन्तां वदेत्। मरिचदर्शने दोषयुतस्य सपापस्य पुरुषस्य चिन्तां प्रवदेत्। सुण्ठिदर्शने पीडितस्य—व्याधितस्य मृतस्य चिन्तां वदेत्। वारिदा—मुस्ता तेषां दर्शने सर्वनाशकृताम्। रोध्रदर्शने अध्वनाशकृताम्। कुष्टदर्शने सुतनाशकृतां—पुत्रनाशजाम्। वसनं—वस्त्रं तद्दर्शने अर्थनाशकृताम्। अम्बुदर्शने धान्य[नाश]कृताम्। जीरकदर्शने तनयस्य—पुत्रस्य नाशकृताम्। गन्धमांस्या द्विशफानां—द्विपदनाशकृताम्। शतपुष्पया चतुःशफानां—चतुष्पदविनाशकृताम्। तगरेण क्षितेः—भूमेः नाशकृताम्। एतैः 'कीर्त्तितैः' उच्चरितैर्वा 'दृष्टैः' अवलोकितैर्वा विनाशहेतोः पृच्छा 20 भवति। तथा च परासरः—"पिप्पलीनां दर्शने प्रदुष्टस्त्रीकृतां चिन्ताम्, मरीचकस्य पापपुरुषकृताम्, शृङ्गवेरस्य मृतचिन्ताम्, अजाज्याः सुतनाशकृताम्, रोध्रस्याध्वनाशकृताम्, मुस्तस्य सर्वनाशकृताम्, कुष्टस्य सर्वनाशकृताम् वसनस्यार्थनाशकृताम्, तगरस्य भूमिनाशकृताम्, शतपुष्पायाश्चतुष्पान्नाशकृताम, मांस्या द्विपदनाशार्थाम्" ॥ १५ ॥ १६ ॥ अन्यदप्याह—

न्यग्रोध-मधुक-तिन्दुक-जम्बू-प्लक्षा-ऽऽम्र-बदरजातफलैः। 25
धन-कनक-पुरुष-लोहां-ऽशुक-रूप्योदुम्बराप्तिरपि करगैः ॥ १७ ॥

'न्यग्रोधादिजातफलैः' तत्सम्भवैः फलैः 'करगैः' हस्तस्थैः धनाद्याप्तिर्भवति। तत्र न्यग्रोधजातफलैः प्रष्टुर्हस्तस्थैर्धनाप्तिः—वित्तलाभो भवति। मधुकफलैः कनकस्य—स्वर्णस्याप्तिः। तिन्दुकफलैः द्विपदस्य—पुरुषस्याप्तिः। जम्बूफलैर्लोहस्य। प्लक्षफलैः अंशुकस्य—वस्त्रस्य। आम्रफलैः रूप्यस्य। बदरफलैरुदुम्बरस्य—ताम्रस्येति। तथा च परासरः—"अथ न्यग्रोधफलैर्हस्तस्थैः पृच्छेद् धनागममादिशेत्, मधुकोदुम्बरफलैः काञ्चनागमम्, द्विपदागमं तिन्दुकैः, वस्त्रागमं प्लक्षजैः, 30 रूप्यस्य आम्रैः, ताम्रस्य बदरैः, लोहस्य जाम्बवैः" इति ॥ १७ ॥ अन्यदप्याह—

धान्यपरिपूर्णपात्रं, कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः।
गज-गो-शुनां पुरीषं, धन-युवति-सुहृद्विनाशकरम् ॥ १८ ॥

धान्यपरिपूर्णं पात्रं कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः। 'गज-गो-शुनां पुरीषं धन-युवति-सुहृद्विनाशकरं' गजानां—हस्तिनां 'पुरीषं' विष्ठा गवां पुरीषं च शुनां—सारमेयानां पुरीषं धनस्य—ऐश्वर्यस्य युवतीनां—स्त्रीणां व्यभिचारं सुहृदां च विनाशं 35 करोति ॥ १८ ॥ अन्यदप्याह—

पशु-हस्ति-महिष-पङ्कज-रजत-व्याघ्रैर्लभेत सन्दृष्टैः ।
आविक-धन-निवसन-मलयज-कौशेया-ऽऽभरणसङ्घातम् ॥ १९ ॥

पश्वादिभिः पृच्छासमये 'सन्दृष्टैः' अवलोकितैः अव्यायामरणसङ्घातं—समूहं प्रष्टा लभेत । तत्र पशुदर्शने आविकस्य—और्णिकस्य कम्बलादेर्लाभः । हस्तिनः—करिणो दर्शने धनागमः । महिषदर्शने निवसनस्य—क्षौमवस्त्रस्य, 5 पङ्कजस्य—पद्मस्य दर्शने मलयजस्य, रजतस्य—रूप्यस्य दर्शने कौशेयस्य वस्त्रस्य, व्याघ्रदर्शने आभरणस्यागमः । तथा च परासरः—"महिषस्य क्षौमवस्त्रागमम्, मणिभाण्डस्य गवाजिनम्, और्णिकानां पशुदर्शने, व्याघ्रस्याभरणागमं वदेत्, पङ्कजस्य दर्शने रक्तवस्त्रचन्दनलाभम्, रूप्यस्य दर्शने कौशेयवस्त्राणाम्" ॥ १९ ॥ अन्यदप्याह—

पृच्छा वृद्धश्रावक-सुपरिव्राड्दर्शने नृभिर्विहिता ।
मित्र-द्यूतार्थभवा गणिका-नृप-सूतिकार्था वा ॥ २० ॥

10 वृद्धश्रावकः—कापालिकः तद्दर्शने—तदालोकने 'नृभिः' पुरुषैः मित्र-द्यूतार्थभवा 'पृच्छा विहिता' कृता पृच्छा । गणिका—वेश्या नृपः—राजा सूतिका—प्रसूता स्त्री तत्कृता ॥ २० ॥ अन्यदप्याह—

शाक्योपाध्याया-ऽर्हन्निर्ग्रन्थ-निमित्त-निगम-कैवर्तैः ।
चौर-चमूपति-वाणिज-दासी-योधा-ऽऽपणस्थ-वध्यानाम् ॥ २१ ॥

शाक्यादीनां दर्शने चौरादीनां पृच्छा । शाक्यदर्शने चौरकृताम् । उपाध्यायदर्शने चमूपतिकृतां—सेनापतिकृताम् । 15 अर्हतो दर्शने वाणिजकृताम्, निर्ग्रन्थदर्शने दासीकृताम् । नैमित्तिकस्य—दैवविदो दर्शने योधकृताम् । नैगमस्य दर्शने आपणस्थस्य—श्रेष्ठिनः कृताम् । कैवर्तस्य धीवरस्य दर्शने वध्यकृतां चिन्तामिति ॥ २१ ॥ अन्यदप्याह—

तापसे शौण्डिके दृष्टे प्रोषितः पशुपालनम् ।
हृद्गतं पृच्छकस्य स्यादुञ्छवृत्तौ विपन्नता ॥ २२ ॥

तापसे दृष्टे पृच्छकस्य 'हृद्गतं' चित्तस्थं 'प्रोषितः' प्रवासे यः कश्चित् स्थितः तस्य प्रवासिनश्चिन्तनम् । 'शौण्डिके' 20 मद्यासक्ते दृष्टे पशुपालनं चित्तस्थम् । 'उञ्छवृत्तौ' शैलोञ्छवृत्तौ दृष्टे विपन्नार्थचिन्ताम् । तथा च परासरः—"निर्ग्रन्थदर्शने दासीपृच्छाम्, वृद्धश्रावकदर्शने मित्रद्यूतकृताम्, शाक्यस्य चौरकृताम्, परिव्राजकस्य नृप-सूतिका-गणिकार्थां वा, उपाध्यायस्य चमूपतिकृताम्, नैगमस्य श्रेष्ठिकृताम्, नैमित्तिकस्य योधार्थाम्, उञ्छवृत्तीनां विपन्नार्थाम्, अर्हतो वाणिजकृताम्, तापसस्य प्रोषितार्थाम्, शौण्डिकस्य पशुपालनार्थाम्, कैवर्तस्य वध्यघातकृताम्" इति ॥ २२ ॥ अन्यदप्याह—

25 इच्छामि द्रष्टुं भण पश्यत्वार्यः समादिशेत्युक्ते ।
संयोग-कुटुम्बोत्था लाभैश्वर्योद्भवा चिन्ता ॥ २३ ॥

इच्छामीत्याद्युक्ते यथासङ्ख्यं संयोगादिकृताम् । तत्रेच्छामि द्रष्टुमिति 'उक्ते' भाषिते संयोगकृतां चिन्तां वदेत् । भणेत्युक्ते कुटुम्बकृताम् । पश्यतु आर्य इत्युक्ते लाभाद्भवां लाभार्थकृताम् । समादिशेत्युक्ते ऐश्वर्योद्भवां चिन्तामिति ॥ २३ ॥ अन्यदप्याह—

30 निर्दिशेति गदिते जया-ऽध्वजा प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद ।
आशु सर्वजनमध्यगं त्वया दृश्यतामिति च बन्धु-चौरजा ॥ २४ ॥

निर्दिशेति 'गदिते' उक्ते पृच्छा 'जयाध्वजा' जयार्थं कृता जाता अध्वजा वा । 'प्रत्यवेक्ष्य' विचार्य मम 'चिन्तितं' हृद्गतं वदेत्युक्ते बन्धुकृता । सर्वजनमध्यगं द्रष्टारमेवं वक्ति 'आशु' क्षिप्रमेव त्वया दृश्यतामिति 'चौरजाता' तस्करकृता चिन्ता । तथा च परासरः—"आदिशेत्युक्ते ऐश्वर्यचिन्ताम्, भणेत्युक्ते कुटुम्बचिन्ताम्, इच्छामि 35 द्रष्टुमिति संयोगचिन्ताम्, पश्यत्वार्य इति लाभकृताम्, निर्दिशेत्यध्वकृतां जयपृच्छां वा, पृच्छामि तावदार्येति वा सम्यक् सम्प्रत्यवेक्षस्वेति बन्धुकृताम्, अथ काले निष्प्रयासः सहसा बहुजनमध्यगतं दृश्यतामिति पृच्छेच्चौरकृतां जानीयादिति ॥ २४ ॥ अथ चौरज्ञानमाह—

अन्तःस्थेऽङ्गे स्वजन उदितो वाह्यगे वाह्य एव,
पादाङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिकलनया दास-दासीजनः स्यात्।
जङ्घे प्रेष्यो भवति भगिनी नाभितो हृच भार्या,
पाण्यङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिचयकृतस्पर्शने पुत्र-कन्ये ॥ २५ ॥

'अन्तःस्थेऽङ्गे' अभ्यन्तरस्थे 'अङ्गे' अवयवे स्पृष्टे पृच्छायां चौरः 'स्वजनः' आत्मीय एव 'उदितः' उक्तः। 5 वाह्यगेऽङ्गे स्पृष्टे वाह्यत एवोदितश्चौरः। 'पादाङ्गुष्ठाङ्गुलिकलनया' पादाङ्गुष्ठे स्पृष्टे दासश्चौरः, अङ्गुलीषु–पादाङ्गुलीष्वेवं दासीजनः 'स्याद्' भवेत्। जङ्घास्पर्शने 'प्रेष्यः' कर्मकरो भवति। नाभितो भगिनी। हृदि 'भार्या' आत्मीया जाया। पाणिः–हस्तः, हस्ताङ्गुष्ठस्पर्शने पुत्रः। अङ्गुलिचयस्पर्शने कन्या–आत्मीया तनया चौरी। एवं कृतस्पर्शने चौरज्ञानम् ॥ २५ ॥ अन्यदप्याह—

मातरं जठरे मूर्ध्नि गुरुं दक्षिण-वामकौ। 10
बाहू भ्राताऽथ तत्पत्नी स्पृष्ट्वैवं चौरमादिशेत् ॥ २६ ॥

'जठरे' उदरे स्पृष्टे 'मातरं' जननीं चौरीं वदेत्। 'मूर्ध्नि' शिरसि गुरुम्। दक्षिण-वामकौ बाहू स्पर्शने यथासङ्ख्यं भ्राताऽथ तत्पत्नी, दक्षिणबाहुस्पर्शे भ्राता, वामे तत्पत्नी। 'एवं' अङ्गस्पर्शने दृष्टे 'चौरं' तस्करं 'आदिशेद्' वदेत्। तथा च परासरः—"बाह्याङ्गस्पर्शने बाह्यं चौरम्, अन्तः स्वकृतम्, तत्र पादाङ्गुष्ठे दासम्, अङ्गुलिषु दासीम्, जङ्घयोः प्रेष्यम्, जठरे मातरम्, हस्ताङ्गुलिषु दुहितरम्, अङ्गुष्ठे सुतम्, नाभ्यां भगिनीम्, गुरुं शिरसि, 15 हृदि भार्याम्, दक्षिणबाहौ भ्रातरम्, वामबाहौ भ्रातृभार्याम्" ॥ २६ ॥ अथापहृतस्य लाभाऽलाभज्ञानमाह—

अन्तरङ्गमवमुच्य वाह्यगं स्पर्शनं यदि करोति पृच्छकः।
श्लेष्म-मूत्र-शकृतस्त्यजनमथ पातयेत् करतलस्थवस्तु चेत् ॥ २७ ॥
भृशमवनामिताङ्गपरिमोटनतोऽप्यथवा,
जनधृतरिक्तभाण्डमवलोक्य च चौरजनम्। 20
हृत-पतित-क्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभग्न-गतो-
न्मुषित-मृतायनिष्टरवतो लभते न धनम् ॥ २८ ॥

अन्तरङ्गमिति। एवंविधैर्निमित्तैः प्रष्टा हृतं धनं न लभेत। कैः? इत्याह—'अन्तरङ्गं' अभ्यन्तरस्थमवयवं प्राप्तं 'अवमुच्य' परित्यज्य बाह्यमवयवस्य स्पर्शनं यदि पृच्छकः करोति। अथवा श्लेष्म-मूत्र-शकृतः 'त्यजनं' परित्यजति तत्कालम्। अथवा करतलस्थं–पाणितलस्थं किञ्चिद् वस्तु पातयेत् ॥ २७ ॥ 25

भृशमवनामिताङ्गमिति। अथवा 'भृशं' अत्यर्थं अवनामिताङ्गावयवो अङ्गानामेव परिमोटनं–चटचटाशब्दमुत्पादयति। तथा तत्कालं जनधृतं–लोकस्यादेवितरिक्तभाण्डं(?) 'अवलोक्य' दृष्ट्वा। तथा 'चौरजनं' तस्करमवलोक्य। अथवा हृत-पतिता-ऽक्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभग्न-गतोन्मुषित-मृतादि, एषामनिष्टरवतः–शब्दश्रवणात्, आदिग्रहणाद्भ्रष्ट-कष्ट-दग्धा-ऽनिष्ट-जीर्णशब्दश्रवणात् प्रष्टा हृतं न लभत इति। तथा च परासरः—"अन्यत्र रोगं स्पृष्ट्वा निर्हरणं वा श्लेष्म-मूत्र-पुरीषाणां कुर्यात्, हस्ताद्वा किञ्चित् पातयेत्, गात्राणि वा स्फोटयेत्, क्षत-हृत-पतित-मुषित-विस्मृत-नष्ट-कष्टा- 30 ऽनिष्ट-भग्न-गत-जीर्णशब्दप्रादुर्भावो वा स्यात्, रिक्तभाण्ड-तस्कराणां दर्शने नष्टस्यालाभं विन्द्यात्" ॥ २८ ॥

अथ पीडार्त्तानां मरणाख्यानमाह—

निगदितमिदं यत् तत् सर्वं क्षुपा-ऽस्थि-विपादकैः,
सह मृतिकरं पीडार्त्तानां समं रुदित-क्षुतैः।

"अन्तरङ्गमवमुच्य" इत्यत आरभ्य यदिदं नष्टचिन्तायां 'निगदितं' उक्तं तत् सर्वं क्षुपा-ऽस्थि-विपादकैः 'सह' 35 सार्कं तथा रुदित-क्षुतैः 'समं' सह 'पीडार्त्तानां' रोगिणां 'मृतिकरं' मरणं करोति। आदिग्रहणात् छिन्न-भिन्न-मृत-दुग्ध-

दग्ध-पाटितशब्दैरिति । तथा च पराशरः—अथो रोगाभिज्ञावत्यर्दि(?)मूत्र-पुरीषोत्सर्ग-केशा-ऽस्थि-भस्म-तुष-विषादानां अशुभानां दर्शने, तथा छिन्न-भिन्न-व्यापन्न-हत-गत-क्षुत-जग्ध-बद्ध-दग्ध-पाटित-रुदितशब्दश्रवणे वा रोगिणां मरणमादिशेत्" ॥ अथ भोजनज्ञानमाह—

अवयवमपि स्पृष्ट्वाऽन्तःस्थं दृढं मरुदाहरे-
दतिवहु तदा भुक्त्वाऽन्नं सुस्थितः सुहितो वदेत् ॥ २९ ॥

'अन्तःस्थं' अभ्यन्तरस्थितं 'दृढं' स्थिरमवयवं स्पृष्ट्वा 'मरुद्' वायुं 'संहरेत्' चद्रिरन् पृच्छेत् तदा स पृच्छको 'अतिवहु' अतिप्रभूतमन्नं भुक्त्वा 'सुहितः' तृप्तः सुस्थित इति वदेत् ॥ २९ ॥ अन्यदप्याह—

ललाटदर्शनाच्छूकदर्शनाच्छालिजोदनम् ।
उरःस्पर्शात् षष्टिकाख्यं ग्रीवास्पर्शे च यावकम् ॥ ३० ॥

ललाटदर्शनाच्छूकधान्यानां वा दर्शनाच्छालिजौदनं पृच्छकेन भुक्तमिति वदेत् । उरः—वक्षःस्पर्शात् षष्टिकान्नम् । ग्रीवास्पर्शे 'यावकं' यावान्नम् ॥ ३० ॥ अन्यदप्याह—

कुक्षि-कुच-जठर-जानुस्पर्शे माषाः पयस्तिल-यवागूः ।
आस्वादयतश्चौष्ठौ लिहतो मधुरं रसं ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥

कुक्षिस्पर्शे माषा भुक्ताः । कुचौ—स्तनौ तयोः स्पर्शे पयः—क्षीरौदनम् । जठरं—उदरं तत्स्पर्शने तिलौदनम् । जानुस्पर्शे यवागूः—यावकम् । ओष्ठौ आस्वादयतो लिहतो वा प्रष्टुर्मधुरं रसं भुक्तमिति ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥ अन्यदप्याह—

विसृक्के स्फोटयेज्जिह्वामम्ले वक्त्रं विकोपयेत् ।
कटुकेऽसौ कषाये च हिक्केत् ष्ठीवेच्च सैन्धवे ॥ ३२ ॥

'जिह्वां' रसनां विसृक्के स्फोटयेद्वा प्रष्टाऽम्ले भुक्ते । मुखं विकोपयेत् कटुके 'असौ' पृच्छकः । कषाये भुक्ते हिक्केत् । 'सैन्धवे' लवणे भुक्ते ष्ठीवेत् ॥ ३२ ॥ अन्यदप्याह—

श्लेष्मत्यागे शुष्क-तिक्तं तदल्पं श्रुत्वा क्रव्यादं प्रेक्ष्य वा मांसमिश्रम् ।
भ्रू-गण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं तद् भुक्तं तेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम् ॥ ३३ ॥

श्लेष्मणः परित्यागे शुष्कं रूक्षं तिक्तं तदल्पं च भुक्तम् । 'क्रव्यादं' मांसाशिनं प्राणिनं [श्रुत्वा] 'प्रेक्ष्य' दृष्ट्वा वा तन्मांसमिश्रं भुक्तम् । भ्रूगण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं मांसं 'तेन' प्रष्ट्रा तद् भुक्तमिति । 'उक्तं' कथितमेतद् 'निमित्तं' चिह्नम् ॥ ३३ ॥ अन्यदप्याह—

मूर्द्ध-गल-केश-हनु-शङ्ख-कर्ण-जङ्घं च वस्ति च स्पृष्ट्वा ।
गज-महिष-मेष-शूकर-गो-शश-मृग-महिषमांसयुतम् ॥ ३४ ॥

मूर्द्धादिस्पर्शने यथाक्रमं गजादिमांसं वक्तव्यम् । मूर्द्धा—शिरस्तत्स्पर्शने गजमांसं भुक्तं वदेत् । गलस्पर्शने माहिषम् । केशस्पर्शने मेषमांसम् । हनुस्पर्शने शौकरं मांसम् । शङ्खस्पर्शने गोमांसम् । कर्णस्पर्शने शशमांसम् । जङ्घास्पर्शने मृगमांसम् । वस्तिस्पर्शने च माहिषमांसयुतमेव भुक्तमिति ॥ ३४ ॥ अन्यदप्याह—

दृष्टे श्रुतेऽप्यशकुने गोधा-मत्स्यामिषं वदेद् भुक्तम् ।
गर्भिण्या गर्भस्य विनिपतनमेवं प्रकल्पयेत् प्रश्ने ॥ ३५ ॥

अशकुने दृष्टे श्रुते अवलोकिते वा.........गोधामिषं मत्स्यमांसं वा भुक्तं वदेत् । एवमेव गर्भस्य पृच्छायां 'अशकुने' दुर्निमित्ते दृष्टे श्रुते वा गर्भिण्याः स्त्रियो गर्भपतनं वदेत् । तथा च पराशरः—"तथा स्निग्ध-दृढमभ्यन्तराङ्गं स्पृष्ट्वोद्गिरन् पृच्छेद् भुक्तमन्नं विन्यात् । तत्र ललाटस्पर्शे शूकानां च दर्शने शाल्योदनम्, उरसि संस्पृष्टे षष्टिकान्नम्, ग्रीवायां यावकान्नम्, जठरे तिलौदनम्, कुक्षौ माषौदनम्, स्तनयोः क्षीरौदनम्, आन्वोर्यावकमास्वादयेत्, ओष्ठौ वा परिलेढि मधुरम्, विसृक्के जिह्वां वा स्फोटयेत्, अम्ले मुखं विकूणयेत्, कटुके हिक्केत्, कषाये

निष्ठीवेत्, तिक्ते शुष्के श्लेष्माणमुत्सृजेदिति, लवणम्। कव्यादानां दर्शने मांसप्रायम्। तत्र भ्रू-गण्ड-जिह्वोष्ठसंस्पर्शने शाकुनम्, हन्वोर्वाराहम्, कर्णयोश्छागम्, जङ्घयोर्मार्गम्, केशानामौरभ्रम्, शङ्खयोर्गव्यम्, वस्ति-गलयोर्माहिषम्, मूर्ध्नि कौञ्जरम्, पाटित-छिन्न-भिन्नानां दर्शने श्रवणे गोधा-मत्स्ययोर्मांसमिति ॥ ३५ ॥ अथ गर्भिण्या गर्भज्ञानमाह—

पुं-स्त्री-नपुंसकाख्ये दृष्टेऽनुमिते पुरःस्थिते स्पृष्टे।
तज्जन्म भवति पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभम् ॥ ३६ ॥ 5

गर्भपृच्छायां पुरुषे 'दृष्टे' अवलोकिते 'अनुमिते' विकृते 'पुरःस्थिते' अग्रतः स्थिते स्पृष्टे वा तस्मिन् तस्मिन् 'तज्जन्म भवति' पुंजन्म भवति। एवं स्त्रियां दृष्टायां च पुरःस्थितायां वा स्पृष्टायां स्त्रीजन्म। नपुंसकाख्ये दृष्टे स्पृष्टे पुरःस्थितेऽनुमिते नपुंसकजन्म भवति। 'पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभं' इति पानस्य—आसवस्य अन्नस्य—भोजनादेः पुष्पाणां—कुसुमानां फलानां च दर्शने 'शुभं जन्म' सुखप्रसवो भवति ॥ ३६ ॥ अन्यदप्याह—

अङ्गुष्ठेन भ्रूदरं चाङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेद् गर्भचिन्ता तदा स्यात्। 10
मध्वाज्याद्यैर्हेम-रत्न-प्रवालैरग्रस्थैर्वा मातृ-धात्र्यात्मजैश्च ॥ ३७ ॥

स्त्री स्वाङ्गुष्ठेन भ्रूयुगमुदरं वाऽङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेत् तदा गर्भचिन्ता 'स्याद्' भवेत्। अथवा 'अग्रस्थितैः' पुरोऽवस्थितैः 'मध्वाज्याद्यैः' मधु—माक्षिकं आज्यं—घृतम्, आदिग्रहणात् पुंनामभिः शोभनफलैश्च, तथा 'हेम-रत्न-प्रवालैः' हेम—स्वर्णं रत्नानि—मणयः प्रवालं—विद्रुमम्, तथा 'मातृ-धात्र्यात्मजैश्च' माता—जननी धात्री—स्तनदायिनी आत्मजः—पुत्रः, एतैरप्यग्रस्थैर्गर्भपृच्छां जानीयात्। तथा च परासरः—"अथ स्त्री भ्रुवौ जठरमङ्गुष्ठेनाङ्गुलिं स्पृष्ट्वा 15 पृच्छेद् गर्भचिन्तां जानीयात्, तथा फल-च्छायावृक्ष-प्रवाला-ऽङ्कुर-मधु-घृत-हेम-गर्भ-प्राजापत्यं वा मातृ-धात्री-पुत्रनिर्दर्शनशब्दप्रादुर्भावे गर्भपृच्छामेव" ॥ ३७ ॥ अन्यदप्याह—

गर्भयुता जठरे करगे स्याद् दुष्टनिमित्तवशात् तदुदासः।
कर्षति तज्जठरं यदि पीडोत्पीडनतः करगे च करेऽपि ॥ ३८ ॥

'जठरे' उदरे 'करगे' हस्तगते हस्तेन स्पृष्टे स्त्री गर्भयुता 'स्याद्' भवेत्। तस्मिन्नेव पृच्छासमये 'दुष्टनिमित्त- 20 वशाद्' दुष्टनिमित्तदर्शनात् क्षुत्-पतित-भग्न-विनष्ट-दग्ध-क्षीणादिदर्शन-श्रवणात् 'तदुदासः' गर्भपतनं भवति। अथवा तज्जठरं 'पीडोत्पीडनतः' पीडमर्दनं कृत्वा कर्षति कण्डूयत्, 'करगे च करेऽपि' हस्तं हस्तेन वाऽवलम्ब्य पृच्छति तथापि तदुदास इति ॥ ३८ ॥ अथ गर्भग्रहणे कालज्ञानमाह—

घ्राणाया दक्षिणे द्वारे स्पृष्टे मासोऽन्तरं वदेत्।
वामेऽब्दौ कर्ण एवं मा द्वि-चतुर्भे श्रुति-स्तने ॥ ३९ ॥ 25

अङ्गुष्ठेनेत्यनुवर्तते। 'घ्राणायाः' नासिकाया दक्षिणे 'द्वारे' श्रोतसि अङ्गुष्ठेन स्पृष्टे गर्भग्रहणे मासोऽन्तरं 'वदेद्' ब्रूयात्, मासेन गर्भग्रहणं भविष्यतीति। वामे श्रोतसि स्पृष्टे 'अब्दौ' वर्षद्वयमन्तरम्, वर्षद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति। एवं वामे कर्णे वर्षद्वयेनैव। माःशब्देन मास उच्यते, श्रुतिः—कर्णः दक्षिणे कर्णच्छिद्रे स्पृष्टे मासे द्विघ्ने—द्विगुणम्, मासद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति। वामे वर्षद्वयेन स्तनस्पर्शने। माश्चतुर्भे—चतुर्मासैः स्तनद्वयस्पर्शनेनेति ॥३९॥ अन्यदप्याह—

वेणीमूले त्रीन् सुतान् कन्यके द्वे कर्णे पुत्रान् पञ्च हस्ते त्रयं च। 30
अङ्गुष्ठान्ताः पञ्चकं चाऽनुपूर्व्या पादाङ्गुष्ठे पार्ष्णियुग्मेऽपि कन्याम् ॥ ४० ॥

वेणी—केशकलापः तन्मूले पृच्छायां स्पृष्टे त्रीन् 'सुतान्' पुत्रान् द्वे कन्यके जनयिष्यसीति वक्तव्यम्। 'कर्णे' कर्णयुग्मे स्पृष्टे पुत्रान् पञ्च। हस्तयोः स्पर्शने पुत्रत्रयं च। कनिष्ठिकाङ्गुलेरारभ्याङ्गुष्ठाङ्गुलिं यावदानुपूर्व्या क्रमेण पुत्रपञ्चकं सूते। तत्र कनिष्ठिकास्पर्शने एकं पुत्रम्, अनामिकास्पर्शने द्वौ, मध्यमायां त्रयः, तर्जन्यां चत्वारः, अङ्गुष्ठे पञ्च। पादाङ्गुष्ठे स्पृष्टे पार्ष्णियुग्मेऽपि स्पृष्टे कन्यामेकां सूते ॥ ४० ॥ अन्यदप्याह—

सव्या-ऽसव्योरुसंस्पर्शे सूते कन्या-सुतद्वयम् ।
स्पृष्टे ललाटमध्या-ऽन्ते चतु-स्त्रितनया भवेत् ॥ ४१ ॥

सव्यं—दक्षिणमूरु तत्संस्पर्शे कन्याद्वयं सुतद्वयं च सूते । असव्ये—वामेऽप्येवमेव । ललाटमध्या-ऽन्ते स्पृष्टे यथासङ्ख्यं चतुस्त्रितनया भवेत्, ललाटमध्ये स्पृष्टे चतुस्तनयाः—चतुःपुत्राः, ललाटान्ते त्रितनया भवेत् । तथा च **परासरः**— 5 "तत्र जठरस्पर्शने गर्भिणीमेव ब्रूयात्, अङ्गुष्ठेन नासाश्रोतसि दक्षिणे कुर्यान्मासान्तेन गर्भग्रहणम्, वामे द्विवर्षान्तरेण, कर्णच्छिद्रे मासद्वयेन, वामे वर्षद्वयेन, स्तनयोरङ्गुष्ठेनैव स्पृशेच्चतुर्भिर्मासैः । पीठमर्द-कचान्तरे कृत्वोपरं कण्डूयेत्, अग्र-हस्तं हस्तेनावगृह्य वा पृच्छेद्, भग्नलोहिका-बधिरउद्दालक-कुठार-सुतपलित-भग्नदर्शन-शब्दप्रादुर्भावे वा स्याद् गर्भपतनं वा विन्द्यात् । तथाऽन्न-पान-पुष्प-फलं प्रेक्ष्य द्वि-चतुष्पदामन्यद्रव्याणां पुंसंज्ञकानां दर्शन-श्रवणे पुंजन्म विन्द्यात्, स्त्रीपुंसंज्ञानां स्त्रीपुंजन्म, नपुंसकाख्ये नपुंसकानाम् । अथ विशेषः—वेणीमूलमतिगृह्य पृच्छेत् तस्य 10 द्वित्रान् पुत्रान् जनयिष्यसीति ब्रूयात्, ललाटमध्यं स्पृशन्तीति चत्वार्यपत्यानि, ललाटान्तं त्रीणि, कर्णयोः संस्पर्शे पञ्चापत्यानि विन्द्यात्, हस्ततलसंस्पर्शे त्रीणि, कनिष्ठा-ऽनामिका-मध्यमा-प्रदेशिनी-तर्जन्यङ्गुष्ठानामेक-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्चापत्यानि, दक्षिणोरुस्पर्शे द्वौ पुत्रौ द्वे कन्यके जनयिष्यसीति, वामस्य तिस्रः कन्यका द्वौ पुत्रौ, पादाङ्गुष्ठस्य कन्यकैका, पार्ष्ण्योः कन्यकैकैव" इति ॥ ४१ ॥ अथ गर्भिण्याः कस्मिन् नक्षत्रे जन्म भविष्यतीति तज्ज्ञानार्थमाह—

शिरो-ललाट-भ्रू-कर्ण-गण्डं हनु-रदा गलम् ।
15 **सव्योऽपसव्यः स्कन्धश्च हस्तौ चिबुक-नालकम् ॥ ४२ ॥**
उरः कुचं दक्षिणमप्यसव्यं हृत्पार्श्वमेवं जठरं कटिश्च ।
स्फिक्पायुसन्ध्यूरुयुगं च जानू जङ्घेऽथ पादाविति कृत्तिकादौ ॥ ४३ ॥

सूते इत्यनुवर्तते । पृच्छासमये गर्भिण्याः शिरःप्रभृतिसंस्पर्शने कृत्तिकादौ नक्षत्रे जन्म विन्द्यात् । 'शिरः' मूर्द्धानं संस्पृशेत् कृत्तिकानक्षत्रे जन्म भवति, गर्भिणी सूते । ललाटे रोहिण्याम्, भ्रुवोर्मृगशिरे, कर्णयोरा- 20 र्द्रायाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्वोः पुष्ये, रदाः—दन्तास्तेष्वश्लेषायाम्, गले—ग्रीवायां मघासु, सव्ये—दक्षिणस्कन्धस्पर्शने पूर्वफल्गुन्याम्, अपसव्ये—वामस्कन्धस्पर्शने उत्तराफल्गुन्याम्, हस्तयोः स्पर्शने हस्ते, चिबुके—आस्याधोभागे चित्रायाम्, नालके—वक्षःसन्धौ स्वातौ, उरसि—वक्षसि विशाखायाम्, दक्षिणकुचस्पर्शेऽनुराधायाम्, असव्ये—वामे ज्येष्ठासु, हृदि मूले, पार्श्वद्वयं 'एवं' प्राग्वत्, दक्षिणपार्श्वे पूर्वाषाढासु, वामपार्श्वे उत्तराषाढासु, जठरे श्रवणे, कट्यां धनिष्ठायाम्, स्फिग्—गुदसन्धिस्पर्शने शतभिषजि, दक्षिणोरुस्पर्शने प्राग्भद्रपदायाम्, वामे उत्तरभद्रपदायाम्, जान्वो 25 रेवत्याम्, जङ्घयोरश्विन्याम्, पादयोर्भरण्यामिति । तथा च **परासरः**—"शिरसि स्पृष्टे कृत्तिकासु जन्म विन्द्यात्, ललाटे रोहिण्याम्, भ्रुवोः मृगशिरसि, कर्णयोरार्द्रायाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्वोस्तिष्ये, दन्तेष्वश्लेषायाम्, ग्रीवायां मघासु, दक्षिणांसे प्राक्फल्गुन्याम्, उत्तरायां वामे, हस्ते हस्तयोः, चिबुके चित्रायाम्, स्वातौ नालके, उरसि विशाखायाम्, दक्षिणे स्तनेऽनुराधायाम्, वामे ज्येष्ठासु, हृदि मूले, दक्षिणपार्श्वे प्रागाषाढासु, उत्तराषाढास्वपरपार्श्वे, जठरे श्रवणे, श्रविष्ठासु श्रोण्याम्, स्फिग्गुदयोर्वारुणे, दक्षिणे प्राक्प्रोष्ठपदायाम्, वामेनोत्तरायाम्, जानुभ्यां पौष्णे, जङ्घयोराश्विने, 30 भरण्यां पादयोः" इति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अथोपसंहारा [र्थमाह—]

इति विरचितमेतद् गात्रसंस्पर्शलक्ष्म,
प्रकटमभिमतार्थ्यै वीक्ष्य शास्त्राणि सम्यक् ।
विपुलमतिरुदारो वेत्ति यः सर्वमेत-
न्नरपति-जनताभिः.... .... ॥ ४४ ॥

[॥ अग्रे खण्डितोऽयं ग्रन्थः ॥]

द्वितीयं परिशिष्टम्

अंगविज्जाए सद्दकोसो ।

शब्द		पत्र
आमथित	आमथित भोज्य	२२०
आमलक	फल	६४
आमली	वृक्षजाति	७०
आमसती	आमृशति	१७०
आमसमाण	आमृशत्	१४६
आमसं	आमृशन्	७६
आमसंत	आमृशत्	१४५–१६९
आमसित्ता	आमृश्य	१०३–१७०
आमा[स]य		६–२०३
आमासट्ठमय		७-११-२१-१३८
आमासपडिरूव		५६
आमास-मद्द-रूव		१३
आमेलक	पुष्पापीडक	६४
आमोसग्ग	गोत्र	१५०
आमोसदिपत्त	आमर्शयधिप्रास	८
आयताणि		५९-१२५-१२९
आयमणी	आचमनी	५५-७२-२१४
आयमसुद्दिता		५९
आयरणट्ठपाय	आदरणार्थतया	१३०
आयाग		१५२-१६८
आयिक	प्राणिजवस्त्र	२२१
आयुकायिकाणि		५८
आयुजोणीय	अप्योनिक	१४०
आयुधागारिक	आयुधागारिक	१५९
आयुप्पमाणणिद्देस		१०३
आयुप्पमाणे वस्ससतप्पमाणाणि		५०
आयोग		२०
आरकूडमय	पित्तलआभू.	१६२
आरामजोणि		१४०
आरामपालक	कर्मोपजीविन्	८९-१५९
आरामपालग	कर्मोपजीविन्	१६०
आरामाधिगार	कर्मोपजीविन्	१६०
आरिट्ठक		९२
आरियदेवता	देवता	२०६
आरोहग	आरोहक	१३६
आलंभिक	आरम्भक	२२०
आलिंगणा		१३५
आलिंगणाहार		१४४–१४५
आलेवा	पुरुषवस्त्र	२३०
आवरण		२१४
आवलिय	वस्त्र	२३०

शब्द		पत्र
आलिंगित	क्रिया.	५१–१८४
आलिंगितरव		१८३
आलिंगियविधि		९–१०
आलिंगियाणि चउद्दस		११–१३८
आलिंगेतव्व	आलिङ्गितव्य	५१
आलीपणग	आदीपनक	१६२–१६८
आलीवणक	आदीपनक	१९२–२५४
आलुक	भोज्य	१८१
आलेक्ख	आलेख्य	११६
आलोलीवेलिका		२४७
आवलित	आवल्गित	१८३
आवरित	आवृत	२४१
आवलिका	कण्ठआभू.	१६२
आवसंपयुत्त ?		२०९
आवातेंते	आपातयति	३६
आवाह	उत्सव	२२३
आविक	वस्त्र	१६३
आविंधिहिति	आव्यत्स्यति	८४
आवुजोणिय		१२४
आवुणेया		५८
आवुपधगत	अप्पथगत	२२२
आसक	आस्य	४०
आसज्जित्ता	आसज्य	२५१
आसणगत	दोहदप्रकार	१७२
आसणगिह	आसनगृह	१२६–१२८
आसणज्झाय	आसनाध्याय	१८
आसणठिइ	आसने	१६
आसणविधी निद्दिट्ठा		१५
आसणस्स दिसा भट्ठ		५१
आसणाहारक		८१
आसणाणि		१२८
आसणाणि बत्तीसं		१३
आसणाभिणाहरिही		१५
आसणाणन्तरं	आसनानन्तरम्	१८४
आसत्थ	गुप्त	६४–२२१
आसत्थगम	गुप्त	२२१
आसत्थाम	पक्षिनाम	६२
आसपालग	कर्मोपजीविन्	१५९
आसंदक	आसन	६५–२१०
आसंदग	आसन	१५–२६
आसंदूणा	आसन्दूना	२६

शब्द		पत्र
आसंदी	आसन	७२
आसाइय	आस्वादित	१०७
आसाति(लि)का	कृमि	२२९
आसार ?		२००
आसालक	आसनविशेष	२६
आसासण	आश्वासन	१४८
आसित	क्रिया.	२४३
आसिलेखा	अश्लेषा नक्षत्र	१५६
आसेक	नपुंसकविशेष	२२४
आहाडक	उद्भिज्ज	२२९
आहार		५८-१०७-१२८
आहारगत	दोहदप्रकार	१७२
आहारजोणि		१४०
आहारणीहार		५८-१०८-१२८
आहारणीहारजोणि		१४०
आहारतरकाणि		१२८
आहारमाहार		१०८
आहारसम्पत्ति		१०७
आहाराहारा		५८
आहारिपेक्खित	आहारिप्रेक्षित	६४
आहितग्गि	कर्मोपजीविन्	१०१–१६०
आहिंचति	क्रिया.	८६
आहेच्छिहिति	क्रिया.	८४

इ

शब्द		पत्र
इ	पादपूर्ती अव्ययम्	४
इकास	भोज्य	१८१
इक्कास	रस	१३४–२३२
इक्खेय	इक्ष्वेय	८०
इट्ठक	आसन	७२
इट्ठगवागार	इष्टकाप्राकार	१६१
इट्टकार	कर्मोपजीविन्	१६१
इतिरिंडी	भोज्य	७१
इतिहास	गोत्र	१५०
इक्खेर	इक्ष्वेय	७८
इत्थिभा	क्रियाः	३५
इत्थीय	क्रियाः	१८
इमाग्गि	इमाग्नि	५
इंदिकाड	पुष्प	६३
इरिंग		१३४–१९०
इल्ली	पद्य	७१
इसरायसंठाणि		१२८

शब्द		पत्र
ओयवति	साधयति	२४२
ओरब्भिक	कर्मांजीविन्	१६१
ओराणी	आभू.	७१
ओरिक्क	अवरिक्त	१४८
ओरुज्झ	अवरुह्य	३९
ओरुभंते अवरोहति सप्तमी एक०		३३
ओरूढ	अवरूढ	१४८
ओरेचित	अपरेचित	१४८
ओलकित	अवलगित ?	१४८
ओलमित ?	क्रिया.	२३५
ओलंबित	अवलम्बित	१४८
ओलोएत	अवलोकयत्	४२
ओलोकित	अवलोकित	१३०-१७१
ओलोलित	क्रिया.	८१-११९
ओवट्टित	अपवर्तित	११९-१७१
ओवत्त	अपवृत्त	११९-१७१
ओवयित	अवपतित	२५८
ओवात	अवपात	१४९-२४९
ओवातसामाणि		५७
ओवाताणि		५७-९०
ओवातिक	परिसर्पजाति	६९
ओवातिका	अवपातिका	६८
ओवादकर	अवपातकर	४
ओवारि		१६५
ओवारित	अपवारित	१४८
ओवालित	क्रिया.	१४८
ओवास	कर्णआभू.	१८३
ओवुलीक	चतुष्पद	६९
ओवेढग	आभू	६५
ओवेढिय	अपवेष्टित	२१६
ओसघगिह	औषधगृह	१३७
ओसधजवागू	भोज्य	१८१
ओसधीपडिपोग्गल		१४३
ओसर		१३६
ओसरक	अपसरक	१३७
ओसरित	अपसृत	१६९
ओसारित	क्रिया.	१३०-१४८-१७१
ओसीसजंभिय	अवर्शार्पजृम्भित	४०
ओसुद्द	क्रिया	१४८-१९७
ओसुत्तक	अवमुक्तक	२४९
ओहत	उपहत	१४८
ओहत्थहसिय	अपहस्तहसित	३५

शब्द		पत्र
ओहसित	उपहसित	८१-२१५
ओहास	उपहास	७
ओहिजंत	अपजिह्यित्	८१
ओहित	अपहृत अवहित	३४
ओहीण	अपहीन	४६
कक्काडिका	कृकाटिका	६६-११२-१२१
कक्कितजाण	गोत्र	१५०
कक्की	पक्षी ?	२३९
कक्कुलुंडि	भाण्ड	२१४
कक्कडी	मत्स्यविशेष	१८३
कक्कब	गुडविशेष	१८२
कक्करपिंडग	भोज्य	२४६
कक्कुस	कुक्कुस	१०६
कक्खड	कर्कशः	१८९
कक्खडाल	,,	३३
कक्खारक-ग	फल	६४-२३८
कक्खारणी	वृक्षजाति	७०
कचक्खी	गोत्र	१५०
कचि	क्वचित्	१५४
कच्छमक	स्थल-जलचर	२२७
कच्छभमगर	मत्स्यजाति	२२८
कच्छा	कक्षा	२०१
कज्जूरी	खर्जूरीवृक्ष	७०
कज्जोपक	कार्योपग	२५४
कट्टुत्तरी	वस्त्र	७१
कट्ठ	काष्ठ	१५
कट्ठ	आभू	६५
कट्ठ	जलवाहन	१६६
कट्ठखोड	दे० काष्ठखोड	१५
कट्ठमय	आभू.	१६२
कट्ठमयं पीढं	काष्ठमय पीठम्	२६
कट्ठमुह	वाहन	१९३
कट्ठहारक	काष्ठहारक	८९
कट्ठसालुक (कंठमालक)	रोग	२०३
कट्ठाधिकत	कर्मांजीविन्	१६०
कट्ठेवट्टक	कण्ठआभू.	१६३
कडक-ग	हस्तआभू.	६४-६५-१६३
कडच्छकी	कटुच्छिका	७२
कडमच्छ	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
कडसक्करा	वर्णमृत्तिका	१०४-२३३
कडाहक	भाण्ड	२१४
कडिडपकाणि	कटीआभू.	१६३

शब्द		पत्र
कडिकतोरण	कटिकातोरण	१३६
कडिगेज्झक	कटिग्राह्यक	२४९
कडित	कटित-कटयुक्त	३०
कडीगहितरत		१८४
कडुकालमच्छ		२३७
कडुमाय	चतुष्पद	६९
कडूकीका	वृक्षजाति	७०
कड्डित	कृष्ट	१४८
कढ	गोत्र	१५०
कढिणधातुगत		१३३
कणलीकत ?		२५९
कणवीर	गुल्मजाति	६३
कणवीरका	कनीनिके	९३-१२५
कणिकार	कर्णिकार	९०
कणिल्लिका	कनीनिका	१२५
कणेट्ठिका	अङ्ग	१३४
कण्ण	गोत्र	१२५-१५०
कण्णकोवग	कर्णआभू.	६४
कण्णखील	कर्णआभू.	६५
कण्णगूथक कर्णगूथक-कर्णमलः		१५५-१७८ २०३
कण्णचूलिगा	कर्णचूलिका	६६
कण्णतिल	धान्य	१६४
कण्णपालिक	कर्णआभू.	११६
कण्णपाली	कर्णपाली	६६-१२४-१४१
कण्णपीलक	कर्णआभू.	६५-१८३
कण्णपुत्तक	अङ्ग	९३
कण्णपूरक	कर्णआभू.	६५-१८३
कण्णरालक	धान्य	१६४
कण्णलोहक	कर्णआभू.	६५
कण्णवलयक	कर्णआभू.	११६
कण्णवल्लीका	कर्णआभू.	७१
कण्णवीही	धान्य	१६४
कण्णसक्कुलि	अङ्ग	१५५
कण्णागिव्वहण	उत्सव	१४३-१४४
कण्णातिमास		१८६
कण्णातिलग	तिलकप्रकार	२४६
कण्णापवाहण	कन्याप्रवाहन	३१
कण्णायावहण	उत्सव	१४४
कण्णावासणो अज्झायो		१७५-१७६
कण्णिका	कर्णआभू.	७१
कण्णिकार	वृक्ष	६३
कण्णिवल्लीबंध ?		५

शब्द		पत्र
चलित	क्रिया.	१४८
चलोड	चोलपट्ट	१४२
चल्ला	अङ्ग	६०
चवला		१२५
चमणिका	स्थल-बहुपदा	२२७
चसित्त ?		१५३
चंडक	गोत्र	१४९
चंडाणता		५९-१२४-१२९
चंद	पुष्प	७०
चंदण	वृक्ष	६३
चदणरस		२३२
चंदणिकातेल्ल		२३२
चंदलेहा	देवता	६९
चंपकतेल्ल		२३२
चंपकाली		१०४
चंपगपुप्फ	पुष्प	६३
चाउल	चापल्य	३
चाउव्वण्णविधाण		१०३
चातुहिक	चातुरहिक	२६१
चापल	चापल्य	३
चाय	भोज्य	१८१
चार	वृक्ष	६३
चारकपाल	कर्माजीविन्	१५९
चारायण	गोत्र	१५०
चालित	क्रिया.	१४८
चांडिक्क	गोत्र	१४९
चिंति	चिंता	१०१-१४८
चिंतका	,,	२५४
चित्तकारक	कर्माजीविन्	१६०-१६१
चित्तकूड	पर्वत	७८
चित्तगिह	चित्रगृह	१३७-२२२
चित्तजीवी	कर्माजीविन्	१६०
चित्तपडिमा	चित्रप्रतिमा	१८३
चित्तवण्ण	वर्ण	१०५
चित्तवण्णपडिभागा		५८
चित्तविज्जा	चित्रविद्या	१३०
चिवुक	अङ्ग	११४
चिंतेतूणं	चिन्ता	२३५
चिराइवत्त	चिरातिवृत्त	१६
चिराय		९५
चिलाती	चिलातदेशजा	६८
चिल्लक	वृक्ष	६३
चिल्लिक	नपुंसक	७३
चिंचिणिक	वृक्ष	७०
चिंतितं अज्झातो		२२३
चिंतितो अज्झायो		२३४
चिप्फलक	आसन	१५
चीणपट्ट	वस्त्र	६४-१६३-२३२
चीणंसुग	वस्त्र	६४
चीती	चिता	२३४
चुक्कितक	भोज्य	२४६
चुल्लिलीय	चुल्ल्याः	९२
चुण्णक	गृहधवलनद्रव्यम्	१०४
चुण्णछारिका		२५५
चुण्णिकार	कर्माजीविन्	१६०
चुरु	कृमि	२२९
चुल्लमाता	सपत्नीमाता	६८-२१९
चुल्ली	भाण्ड	७२
चुंवण सोलस	चुम्बनानि षोडश	११
चुंवित	क्रिया.	४८-१३८-१६८-१८३
चुंविय	क्रिया.	९-१०
चुंवियविभासापडलं		४९
चुंमल	पुष्प	६४
चुंमलक	अवतंस-शेखर	२४२
चूचुका	स्तनाग्र	६६
चेट्टितक ?	जाति	१४९
चेति	चैत्य	१४८-२३३
चेतिक	चैत्य	३१
चेतित	,,	२६
चेतितपादव	चैत्यपादप	३०
चेतितागत	चैत्यागत	४१
चेतिय	चैत्य	१४०
चेलिकसुत्तीजा	चेलिकसूत्रजा	१८
चेलिम		२७
चोरघात	कर्माजीविन्	१६१
चोरलोपहारा	,,	१६०
चोरवासो णगर		१६१
चोरेल्ला		२४७
चोराली	भोज्य	७१
चोलक	सत्कारोत्सव	९७-१४३
चोल्लाडिगा	क्षुद्रजन्तु	२३८
चोल्लोपणयण	उत्सव	२२३

छ

शब्द		पत्र
छइच्छेद	छविच्छेद	१४४
छक		१२६
छक्खुत्तो	षट्कृत्वः	१८४
छगणपीढग	छगणपीठक	२६
छगली	अङ्ग-चोटिका ?	६६
छट्टग्गहणी	षष्ठग्रहणी	८
छट्टसाधणी	षष्ठसाधनी	८
छड्डि	रोग	२०३
छड्डेंत	छर्दयत्	३७
छण	क्षण	१२१
छत्तकारक	कर्माजीविन्	१६०
छत्तधारक	,,	१६०
छत्तंतासणहारण ?		७९
छत्तोघ	वृक्ष	६३
छड्डेमाण	छर्दयत्	१३५-१३७
छप्पि	षडपि	१९१
छमिणी	वृक्षजाति	७०
छलंगसी	गोत्र	१५०
छलंस	षडस्र	२४२
छलिक (छंदक) ?		१२०
छंदेति	छन्दयति	१३
छंदोक	गोत्र	१५०
छंदोग	गोत्र	१५०
छागलिक	कर्माजीविन्	१५९
छात	दे० बुभुक्षित	६८-१२१
छातक	क्षुधितक	१४२-१४३
छातता	क्षुधालुता	११५
छातत्त	दे० बुभुक्षितत्व	११
छाया	लक्षण	१०३
छायाथंभ	छायास्तम्भ	२७-३०
छायासंपन्न		१०४
छायछायाहीण		१०४
छारिज	क्षारिका-रक्षा	३९
छिक	गुल्मजाति	६३
छिण्ण	छिन्न	१-१२१
छिण्णमाला	प्राणी	२३९
छित्त	स्पृष्ट ?	७९
छिन्नगाली	कुलटा	१८३
छिर	प्राणी	२३७
छिरा	शिरा	६६
छिवित	स्पृष्ट	१८३-१८४

शब्द		पत्र
जूधिका	पुष्प	७०-१०४
जूव	यूप	१०१-१४८
जूस		६४
जेव	एव	१३६
जोइसमंडल	ज्योतिर्मण्डल	११५
जोगक्खेम	योगक्षेम	१३४
जोगवहा	योगवाहाः	१५३
जोजयितव्वं	योजयितव्यम्	१८५
जोणिका	यौनदेशजा	६८
जोणिवालिक ?		१४२
जोणी अज्झाय		१३८-१४०
जोणीलक्खण वागरण		१४०-१४४
जोतिसिक	गोत्र	१५०
जोयिज्जमाण	योज्यमान	१९८
जोव्वणत्थजोणि		१३९
जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि		५७
जोव्वणत्थाणि		५७-९७-१२८
जोसिता	युवती	६८
झ		
झणित	ध्वनित	१४७
झपित	क्षपित	१४३
झय	ध्वज	१४२
झयक्खंभ	ध्वजस्तम्भ	३०
झल्लरीमंडल		११६
झंकक	आभू.	६४
झंझणित	क्रिया.	१४७
झामित	ध्यामित	१४८
झामितापस्सअ		२७-३०
झीण	क्रिया.	८१-१४८
झुझुरायित	क्रिया.	१४८
झुपित	,,	१४८
झुसिर	शुषिर	१००
झोसित	क्रिया.	१४८
ट		
टक्कारी	वृक्षजाति	७०
टेट्टिवालक	पक्षी	२२५
ठ		
ठइय	स्थगित	२४१
ठवेत्तूण	स्थापयित्वा	१९७
ठाणज्झाय		१५९
ठितिविधिविसेस		५९
ठितिसाधारण		१३९
ठितामास		२१
ठिदामास		२४

शब्द		पत्र
ठियपडल		३३
ठियपत्थिय		१०
ठियविहि		९
ठियंतिय		१८
ठियामट्ठा		१२०
ठियामासा		५९-१०४-१०५-१२८
ड		
डब्बालुअ	नौविशेष	१४६
डहरक	लघु	९८-१२८-१५३
डहरचल		१२९-२०४
डहराक	लघु	११९
डहंत	दहत्	३८
डिप्फर	आसनविशेष	१७-२६-६५
डुपक्कहारक	नौविशेष	७९
डोमा	गोत्र	१५०
डोहला	,,	१५०
ढ		
ढंकराली	पक्षी	२३९
ढेल्लिका	नितम्बी	११४
ढेल्लिय	मृत्खण्ड	२१५
ण		
णइकुकुडिका	पक्षी	२३८
णइूड	स्थानविशेप	१३६
णक्खत्तमंडल		११५
णक्खत्तविजयो अज्झायो		२०६-२०९
णक्खपद	नखपद	१८५
णक्खंतराविमास		१८६
णगत्ति	गोत्र	१५०
णगरगुत्तिय	कर्माजीविन्	१६०
णगरणक्खत्त		२०९
णगरदेवता	देवता	२०६
णगररक्ख	कर्माजीविन्	१६०
णगरविजयज्झाअ		१६१
णगराधियक्ख	नगराध्यक्ष	१५९
णग्गोध	वृक्ष	६३
णच्छक	रोग	२०३
णट्टोसक	नाट्याचार्य ?	६७
णट्ठ	नष्ट	१४८
णट्ठकोसयो अज्झाओ		२२२
णट्ठजोणि		१३९
णट्ठाणट्ठो अज्झाओ		२३७
णतिकुक्कुडिका	पक्षिणी	६९
णतिभया		८

शब्द		पत्र
णत्तमाल	वृक्ष	६३
णत्ति	नप्तृ	६८
णत्थक	दे० नस्तक	२०२
[illegible]	दे० नस्तन	२१४
णत्थि-त्थी	नास्ति	१९
णदीकुकुडीक	पक्षी	२२५
णदीपुत्तक	,,	२२५-२२८
णदीसुत्तक	,,	२२५
णपुंसकजोणि		१३९
णपुंसकणक्खत्त		२०९
णपुंसकाणि		५७-७२
णपुंसकामास		१६८-२०१
णप्फडित	निस्फटित	२१७
णमोक्कत	नमस्कृत	१५५
णमोक्कारयित्ता	नमस्कृत्य	११२
णयणाविमास		१८६
णयणामास		१३०
णरमच्छ	मत्स्यजाति	२२८
णरसीह	पशु	२२७
णरेतर		७३
णल	वृक्ष	६३
,,	मत्स्यजाति	२२८
णलियमालिका	आभू.	७१
णवक्खुत्तो	नवकृत्वः	१८४
णवण	उत्सव	९८
णवणीत	भोज्य	२२०
णवमल्लिका	पुष्प	७०
णवमिगा	देवता	२०५
णंतकविकला	नंतकविकला	११६
णंतुका	पक्षिणी	६९
णंदिविणद्धक	शीर्षआभू.	१६२-१८३
णवुतिवग्गा		५९
णवूहक	पक्षी	२२५
णहसिहा	अङ्ग	१२४
णहसेढि	नखश्रेणि	१२५
[illegible]	परिसर्पजाति	६२
णागतण्णु	अनागतज्ञ	१२९
णागमालक	गुल्मजाति	६३
णागरुक्ख	वृक्ष	६३
णागवेला		२४७
णाणी		७६
णातिक्किमा		५८-११४
णातुण्णमंडल		११६
णाभिणिद्दिसे	न अभिनिर्दिशेत्	३८

शब्द	पत्र	
णिरागति	गोत्र	१५०
णिराणत	निरानत	१६९
णिरातार ?		८२
णिरुक्खगं	निर्वृक्षकं	१९१
णिरुत्त	निरुक्त	२
णिरोपजिव्वा	निरुपजीव्या	१६९
णिलिक्खति	निर्लिखति	१०७
णिलुलित	क्रिया.	१७१
णिलुंचित	क्रिया.	१६८
णिल्लुंचित	क्रिया.	१६८
णिल्लिखित	निर्लिखित	१३०-१६८-२१५
णिल्लिक्खण	निर्लिखन	१०६
णिल्लिहित	निर्लिखित	१५७
णिल्लूवित	क्रिया.	१७१
णिल्लूहित	नीरूक्षित	१०६
णिल्लेले	निर्लाल्य ?	१०८
णिल्लोलित	निर्लोलित	१६८
णिवण्णविभासापडल		५३
णिवण्णाणि		१३८
णिवसिहिति	निवत्स्यति	८४
णिवासेंत	निवासयत्	३८
णिवुर	वृक्ष	६३
णिवेट्ठ	निविष्ट	१४३
णिवेसण	निवेशन	१६५
णिवोलुए	निमज्जयति ?	१०८
णिवोलित	निमज्जित ?	१७१
णिव्वगत		२१४
णिव्वट्टिज्जमाण	निर्वर्त्यमान	१९८
णिव्वट्टित	निर्वर्तित	१७१
णिव्वद्दा ?		१५४
णिव्वर ?		७९-१५५
णिव्वलक	निर्वल्क	१०६
णिव्वहण	निर्वहन	९८
णिव्वाहित	निष्पादित	१६८
णिव्वाधिक	निर्व्याधिक	१९१
णिव्वामण	निर्वापन	२६०
णिव्वामित	निर्वामित	१६९
णिव्वासित	निर्वासित	१७१
णिव्वाहित	निर्वाहित	१५५
णिव्विट्ठ	निर्विष्ट	१७१
णिव्विसुत्तो अज्झायो		२१५-२१६
णिव्वुति	निर्वृति	३०
णिस्सक	भाण्ड	७२

शब्द	पत्र	
णिसढ	पर्वत	७८
णिसण्ण	निषण्ण	३८
णिसित्त	निषिक्त	१६८
णिसीदंत	निषीदत्	३८
णिसुद्ध	पातित	१९७
णिस्सट्ठ	निःसृष्ट, अत्यन्त	४४
णिस्सरित	निःसृत	१६९-१७१
णिस्ससत	निःश्वसत्	१३५
णिस्ससित	निःश्वसित	१६८-१७१
णिस्संघति	निर्दिग्धति	१०८
णिस्संघित	निःदिग्धित	१४६
णिस्सारित	क्रिया.	१६८-१७१
णिस्सावित ?	,,	१७१
णिस्सित	निश्रित	१७१
णिस्सिंघंत	निःदिह्यत्	३७
णिस्सिंघित	निःदिग्धित	१८६
णिस्सिंघेमाण	निःदिह्यत्	१३५
णिस्सेणि	निःश्रेणि	३१
णिंब	वृक्ष	६३
णीयाअ	निर्यात	५
णीपुर	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
,,	आभू.	६५-११६-१६३
णीयमाण	नीयमान	१९८
णीया		५९-१२६-१२९
णीराकए	निराकृते	१७१
णीलक	वर्ण	१०४
णीलकधातुक		२३३
णीलकंटक	गुल्मजाति	६३
णीलसारमणी	आभू.	१६२
णीलपडीभागा		१०४
णीलमिग	नीलमृग	२२७
णीलवण्णपडीभागा		५७
णीलवाणियक	नीलवाणिजक	९२
णीलहारककम्म		९२
णीलीकारक	कर्माजीविन्	९२
णीहरति	निःसरति	१०८
णीहार		५८-१०७-१२८
णीहारगत		१६१
णीहारजोणि		१४०
णीहारणीहारा		५८-१०८-१२८
णीहारपडल		१०८

शब्द	पत्र	
णीहाराहारजोणि		१४०
णीहाराहारा		५८-१०८-१२८
णीहारि		३४
णीहारिपेक्खमाण		३४
णीहारेति	क्रिया.	१०८
णीहू	वृक्षजाति	७०
णुत्तमालक	वनस्पति	१४१
णुमज्जु ?		३९
णूण ?		१४८
णेयातुऊसहा ?		६८
णेरइकाणि		५९-१२१
णेरिता	गोत्र	१५०
णेलक्ता	वर्णमृत्तिका	२३३
णेलकंटक		९१
णेलक्रित ?		१०४
णेलवंत	पर्वत	७८
णेहित	स्निग्ध	१०६
णोल्लति	क्षिपति-नोदति	८०
ण्हाणगिह	स्नानगृह	१३८
ण्हाणघर	,,	२२२
ण्हाणधरिय	कर्माजीविन्	१६०
ण्हाधिति	स्नास्यति	८४
ण्हायमाणो	स्नात्	३८
ण्हाविय नापित	कर्माजीविन्	१६१
ण्हुसाय	स्नुषायाः	२९

त

शब्द	पत्र	
तक्क	तक्र-भोज्य	२२०
तक्कुलि	भोज्य	७१-१७९
तक्कुली	पुष्प	७०
तक्कोदण	भोज्य	२२०
तच्छेमाण	तक्षत्	३८
तजगत	त्वग्गत	१०७
तज्जातपडिपोग्गल		१४२
तज्जायपडिरूव		१८-३१
तट्टक	भाण्ड	६५
तट्टकार	कर्माजीविन्	१६०
तड	तट	३०
तणच्छत ?		५२
तणपीढक	तृणपीठक	२६
तणसाला	तृणशाला	२५८
तणसोल्लिका	मल्लिकाविशेष	१०४
तणसोल्लिय	पुष्प	६३
तणहारक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७

शब्द		पत्र
तुल्लग्घ	तुल्यार्घ्य	१६
तुल्लजोणी		१९७
तुवरि	धान्य	१७८
तुंबुरु	फल	२३८
तूका	यूका	[illegible]
तूण	रोग	२०३
,,	[illegible]	२०७
तूरित्थ	त्वरिष्यसि	२६०
तूहा	ऊहा	५६
तेणित	स्तेनित	१४८
तेनेण	एतेन	२३६
तेत्तिरिक	गोत्र	१५०
तेमगिह ?		२५८
तेरणि	वृक्षजाति	७०
तेल्लवण्णिकरस		११२
तेल्लक्क	भोज्य	६४
तेल्लजवागू	,,	१८१
तेवरक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
तेसं	तेषाम्	९५
तेसं तेसं	तेषां तेषाम्	१४७
तोडण	फल	२३८
तोड्ड	क्षुद्रजन्तु	२३७
तोड्डक	पशु ?	२२७
तोपभोगतो	उपभोगतः	२६७
तोप्पारुभणा	उत्सव ?	९८
तोमर		११५
तोरण		६४
त्तेवं	इत्येवम्	६७
	[illegible]	
थद्दुणा	मकुलिका प्रकार	२२१
थक्केन	श्राम्यत्	३८
थणपाली	स्तनपाली	६६-२०४
थणंत	स्तनत्	३६
थणित	स्तनित	२०६
थलचर		१८७
थला		५८-१२३-१२८
थलिका	स्थलिका	३०
थविका	अङ्ग	११५
थंभायणा	गोत्र	१५०
थंभित	स्तब्ध	१४८
थाल	माण्ड	६५
[illegible]	,,	६५
थालिका	,,	७२
थाली	,,	७२
थावरा		४६-१२८
थिग्गलगत	स्थिग्गलगत	१८५
थितामास		२४-१९८
थिया	स्त्रिया.	२५-३४-३६-४७-१२५
थिल्ली	यान	७२
थीगक्खत्त		२०९
थीगत्त	गोत्र	१५०
थीणामजोणि		१३९
थीणामाणि		५७-६६-७२
थीणा[मा]माम		१८७
थीपरामास		१३१
थीभागा		५९-१२८
थीय	स्त्रियाः	२४
थुल्ला		११३
थूणा	स्कन्ध	
थूणिकालल		२२०
थूणिकारम		२२१
थूभाग	स्तूप	१०८
थूरका	अङ्ग	६६
थूलाणि		५८-११७-१२८
थेम्बिद ?	क्रिया	१४८
	द	
दककिमि	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
दकखाणक	आमू.	६४
दक्खिणगत्तामास		२०१
दक्खिणजोणि		१३९
दक्खिणद्दारिक		२०६
दक्खिणपच्चत्थिमा		५८
दक्खिणपच्छिमजोणि		१३९
दक्खिणपुरत्थिमा		५८
दक्खिणाचार		७४
दक्खिणाणि		५७-१०९-१२८
दक्खिणामाम		१४५-१६८
दक्खिणोद्दागं णगरं		१६१
दग	दक	१२१
दगकोट्टग	दककोष्ठक	१३८
दगलट्ठी	दकयष्टि	३०
दगवद्दुगि	दकवर्दकिन्	२५५
दच्छ	दक्षः	९८
दढका	गोत्र	१५०
दढघक		१८६
दढहुत ?		१५५
दढाणि		५७-७७-१२८
दढामाम		१३९-१३३-१८८
दणि ?		१९०
दण्णपाण ?		१५१
दति	दति-जलवाहन	१६६
दद्दरक	वाद्य	२३०
दद्दुपिलक	रोग	१५५
दद्दुम्मण	क्रिया.	१४७
दधिकूर	भोज्य	६४
दधितात्र	भोज्य ६४-१७९-२२०	२४६
दधिवण्ण	वृक्ष	६३
दधिसर	दधिसारकपदार्थ	१०४
दपकार	कर्मोजीविन्	१६०
दरहड्डाय	ईषत्कृतायाम्	१३०
दलायते	विकसति	८३
दलिय	दलिक	८०
दलुका	प्राणी	२३९
दलुमी ?		६८
दविडलंक	भाण्ड	१९३
दविय	द्रव्य	१३४
दव्वी	दर्वी-माण्ड	७२
दव्वीकर	सर्पविशेष	२१८-२२७-२३९
दसस्तुतो	दशाहृत्वः	१८४
दसमीण्हाणक	दशमीस्नानक	९८
दसाह	दशाह	१२७
दसीरिका	भोज्य	१८९
दस्सामो	द्रक्ष्यामः	२३६
दहफलिहा	ह्रदपरिखा	२२२
दहरचकणा		५८
दहरचला		११९
दहरत्थावरा		११९
दहरथावरेल्ला		५८
दंढमाणव	पक्षी	६२
दंतखय	दन्तक्षत	१८५
दंतगिह	दन्तगृह	१३६
दंतगूथक	दन्तगूथ-दन्तमल	१७८
दंतचुण्ण	दन्तचूर्ण	१०४
दंतपम्ह	अङ्ग	१५५
दंतपवण	दन्तपवन	५
दंतमय	आमू.	१६२
,,	माण्ड	२१५-२२१
दंतवेढी	दन्तवेष्टि	६६
दंतसिहा	अङ्ग	१२५
दंतसेढिका	दन्तश्रेणि	१२४

शब्द		पत्र
पडिबुद्ध	प्रतिबुद्ध	१७१
पडिमविधि		९-१०
पडिमुंडित	प्रतिमुण्डित	१७१
पडियाणि अट्ठ		११
पडिलोलित	प्रतिलोलित	१६९-१७१
पडिवज्झक	उत्सव	९८
पडिविविस्सिज्ज	प्रतिप्रेसेत	१३
पडिवेसघर	प्रतिवेश्मगृह	२२०
पडिसराखारमणी	कण्ठआभू.	१६३
पडिसरित	प्रतिसृत	१६९-१७१
पडिसामिज्जमाण ?		१९८
पडिसायण	प्रतिशावन	११
पडिसिद्ध	प्रतिषिद्ध	१६९-१७१
पडिसेज्जक	शयन	६५
पडिसेधित	प्रतिषेधित	१४८
पडिहारक	प्रतिहारक	७९
पडिहारित	प्रतिहारित	१६९-१७१
पडिहारी	प्रतिहारी	८८
पढमकप्पिगो	प्रथमकल्पिकः	८२
पढमिल्लक	प्रथमक	२५९
पणत्तालीस	पञ्चचत्वारिंशत्	१२७
पणतालीसतिवग्गा		५९
पणवीस		१२७
पणवीसतिवग्गा		५९
पणचिणी	प्रनप्तृका	६८
पणवमज्झ	पणवमध्य	२५७
पणस	वृक्ष	६३
,,	फल	२३१
पणसक	भाण्ड	६५
,,	नकुलिका प्रकार	२२१
पणाली	प्रणाली	३२-३३-२२२
पणितगिह	पणितगृह	१३६-१३८
पणिवते	प्रणिपतेत्	५६
पणुवीसक		१२७
पणुवीसतिवग्गा		५९
पणुवीसपण्णासवस्ससाधारणाणि		५७
पणुवीसवस्सप्पमाणाणि		५७
पण्णत्तरिवस्सप्पमाणाणि		५७
पण्णत्तरिवस्ससतसाधारणाणि		५७
पण्णरस		१२७
पण्णरसवग्गा		५९
पण्णगोट्टल	दे० पर्णगठरिका	३०
पण्णा	प्रज्ञा	९
पण्णाधिग	प्रज्ञाधिक	५७
पण्णायिक	गोत्र	१५०
पण्णास-पण्णत्तरिवस्ससाधारणाणि		५७
पण्णिक	कर्माजीविन्	१६०
पण्णेलिका	प्रणालिका ?	११६
पण्डु	पाण्डु	२१८
पतज्झणट्ठ ?		४५
पतिआरक्ख	प्रत्यारक्ष	१५९
पतिगिण्हंती	प्रतिगृण्हती	१६९
पतिग्गह	पतिग्रह	१६८
पतिजेट्ठ	प्रतिज्येष्ठ	२१९
पतिट्ठाण	प्रतिष्ठान	३१
पतिहारक	कर्माजीविन्	१६०
पतुन्न	वस्त्र	१६३
पते	पतेत्	४५
पत्तकूर	भोज्य	६४
पत्तगत	दोहदप्रकार	१७२
पत्तमज्जित	भोज्य	१८२
पत्तभंड	भाण्ड	६५
पत्तमय	आभू.	१६२
पत्तरस		१८१
पत्तहारक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
पत्तंग	वर्णमृत्तिका	२३३
पत्तंवेल्लि	भोज्य	७१
पत्ति	भाण्ड	७२
पत्तुण्ण	वस्त्र	१४२-१६३
,,	भाण्ड	२३०
पत्तेकसो	प्रत्येकशः	२१५
पत्तेगपुप्फ		१७७
पत्थरिय	प्रस्तृत	११०
पत्थारहत्थ	प्रस्तार्य	७
पत्थित	प्रस्थित	१९१
पत्थिवपडिमा	पार्थिवप्रतिमा	१८३
पत्थीणाईं		५९-१२४-१२९
पत्थुत	प्रस्तृत	११६
पद्दब्भगक	उत्सव	९७
पद्दग्गाह	पद्ग्राह	१४४
पद्दुद्दी	पद्शुद्धि	८
पदुम	पद्म	३९-६३
,,	स्थल-जलचर	२२७
पदुमक	वर्ण	१०५
पदे	पतेत्	४५
पदोत्ति	प्रद्योटी	२००
पद्मतिलक	तिलकप्रकार	२४६
पद्दव	प्रदेशविशेष	१६७
पधकलीतेल्ल		२३२
पधवावत	पथ्याधृत	१५९
पधावति	प्रधावति	८०
पधिकणिलय	पथिकनिलय	२५८
पधित	प्रहित	१९१
पधोवंत	प्रधावयत्	३९
पपुट्ठ	प्रपुष्ट प्रपृष्ट प्रस्पृष्ट	१३०
पपुत	प्रप्लुत	१५५
पप्पड	भोज्य	१८२
पप्परूव	प्राप्यरूप	१५३
पप्फडित	प्रस्फटित	१७१
पप्फोडित	प्रस्फोटित	१६९
पब्भट्ठ	प्रभ्रष्ट	१६९-१७१
पमज्जितापमट्ठ	प्रमार्जितापमृष्ट	२३
पमद्दायं	प्रमद्रायाम्	२९
पमद्द	योग	२०९
पमिलात	प्रम्लान	२०३
पमुक्क	प्रमुक्त	१६९
पमुच्छित	प्रमूर्च्छित	१६९-१७१
पमुट्ठ	प्रमृष्ट	१७१
पमुत्त ?	क्रिया.	१३०
पमुहक	प्रमुखक	१६
पम्मुभ ?	क्रिया.	२१५
पम्हुट्ठ	प्रस्मृत	१३०-१३९-१६९
पम्हुत	,,	१७१
पयणु	प्रतनु	११७
पयलाइतविभासा पडलं		४७
पयलाइताणि		४६-१२९
पयलायमाण	प्रचलायमान	४४-१३५
पयलायंत	,,	३७
पयादार		१४४-१४५
पयाविसुद्धी अज्झाय		१६८
पयुक्का	आभू.	७१
पयुमक	उद्भिज्ज	२२९
पयुमत्तक	वस्त्र	१६४
पयोजयिस्सामि	प्रयोजयिष्यामि	८
परक्का		५८-१२३-१२९
पराघ		१३०-१४४-१४६-१६८
परग्घतरक	परार्घ्यतरक	१६
परग्घगिह	परार्घ्ये	१६
परग्गोहुग्ग	पराग्रोद्गम	४४

शब्द		पत्र
पसती	गवयी	६९
पसत्थं णामाऽज्झायं		१४६
पसत्थो अज्झायो		१४८
पसन्नतरका		११२
पसन्नाणि		५८-१२८-१८१
पसन्ने अप्पसन्ने		११२
पसरांदे	वस्त्र	७१
पसलचित्ता	क्षुद्रजन्तु	२२९
पसल्लिअ	पार्श्विक	१८४
पसंल्लित्त	प्रसक्लिप्त	१७१
पसाणग	उपकरण ?	१९३
पसायक	कर्माजीविन्	१६०
पसाधणकवट्ट	प्रसाधनकपट्ट	११६
पसारितामास		१९८
पसिव्विका	नकुलिकाविशेष	१७८
पसुवेलिका		२४७
पसेव्वक	नकुलिकाप्रकार	२२१
पस्स	पार्श्व	४२
पस्सवण	निर्झरण	१४६
पस्संतरिया	पार्श्वान्तरिका	२२२
पस्से	पश्येत्	१९५
पहिज्जते	प्रहीयते	८१
पंचकाणि		५९-१२६
पंचखुत्तो	पंचकृत्वः	१८४
पंचणउतिवग्गा		५९-१२७
पंचउत्ते	पञ्च आत्मनि	११
पंचपंचासति वग्गा		५९
पंचमंडलिक		११६
पंचमिका		९७
पंचमेजण	उत्सव	९८
पंचवण्ण		१२०
पंचसट्ठिवग्गा		५९-१२७
पंचसत्तरिवग्गा		५९-१२७
पंचासतिवग्गा		५९
पंचासवस्सप्पमाणाणि		५७
पंचासीतिवग्गा		५९-१२७
पंडक		७३
पंडराग	सर्पविशेष	२३८
पंडु	वर्ण	१०४
पंडुपडीमाणे		१०४
पंडुवण्णपडिमाणा		५८
पंथा	पन्थाः	२३३
पंपोलग	क्षुद्रजन्तु	२३८

शब्द		पत्र
पाअसूचिका	पादआभू.	७१
पाउत	प्रावृत	४१
पाकटित	प्रकटित	२४९
पागुत	प्रावृत १३०-१३४-१६८-१७०	
पाघट्टिका	पादघट्टिका शिरआभू.	७१
पाडलिका	पुष्प	७०
पाठीण	मत्स्यजाति	६३
पाडल	पुष्प	६३
पाण	वृक्ष	६३
पाणक	सुरा	६४
पाणगत	दोहदप्रकार	१७२
पाणगिह	पानगृह	१३८
पाणजोणि		३२-३९-१३२-१४०
पाणजोणिगत		४२-४८
पाणजोणिसमुत्थाण		२७
पाणवगिह ?		१३८
पाणहरा वामा		१२८
पाणि	भाण्डोपकरण	७२
पाणियघरिय	पानीयगृहिक	
	कर्माजीविन्	१५९-१६०
पाणुप्पविट्ठं		१६१
पातरासवेला		२४७-२४९
पातवगिह	पादपगृह	१३६
पातिक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
पातिज्ज	उत्सव	९८
पातुणंत	प्रावृण्वत्	३८
पायमक	प्रथमक	३६
पादकलापक	पादआभू. ६५-१८३	
पादकिंकणिका	,,	१८३
पादखडुयग	,,	६५
पादगोरा ?		१५३
पादजालक	पादआभू.	६५
पादपट्टिओ	पादपृष्ठिके	७०
पादपुंछण	पादप्रोञ्छन	१४२
पादपेसणक	उत्सव	९७
पादफल	आसन	६५
पादबंध	काव्यविशेष	१४७
पादमुद्दिका	पादआभू.	१६३
पादसंठी	अङ्ग	४८
पादोविक		९१
पादोपक	आभू.	१६३
पाधेज्ज	पाथेय	१९२
पापढक	आभू.	६५

शब्द		पत्र
पापहिक	सर्पजाति	६३
पामुद्दिका	पादआभू.	७१
पामेच्छ	वनस्पति ?	९२
पायस	भोज्य	१७९
पायुका	पादुका	१८३
पारम्मुह	पराङ्मुख	३३
पारावणा	गोत्र	१५०
पारावत	वृक्ष	६३
,,	फल	६४
पारिप्पव	पारिप्लव प्राणी	२३९
पारियत्त	पारियात्र पर्वत	७८
पारिहत्थी	पुष्प	७०
पारेवत	फल	२३१
पालिका	भाण्ड	७२
पालिभद्दग	वृक्ष	६३
पालीक	भोज्य	१७९
पालु	वृषण १२४-१२५-२१४	
पालोयणी ?		१५७
पावद्ध ?		१५५
पावरणक	वस्त्र	१७५
पावार	वस्त्रप्रकार ६४-१६३	
पावासिक	प्रवासिन् १३४-१३९	
पावासिय	प्रवासिक	१९०
पावासिं	प्रवासिनम्	९६
पावीर	स्थानविशेष	१३६
पासातगत	प्रासादगत	२१४
पासिकुत्ताणक	पार्श्वकोत्तानक	४५
पासुत्ताणाणि		३६
पाहिति	पास्यति	८४
पाँगुहिति	प्रावरिष्यति	८४
पिअबंभण	प्रियब्राह्मण	१०१
पिगाणादियवंतरा ?	प्रश्न	७१
पिचक	मत्स्यजाति	२२८
पिट्ठरग	भाण्ड	१९३
पिढरक	,,	६५
पिणंधण	अपिनहन	४०
पिणिंधण	,,	३८
पिणेधण	,,	१४७
पितरो	देवता	२०४
पितुकम्मकिच	पितृकार्यकृत्य	२०८
पितुदेवता	देवता	२२४
पितुस्सहा ?		९८
पितुस्सिया	पितुःष्वसा ९८-२१९	

शब्द		पत्र
मसूर	धान्य	१६४
मसूरक	उपकरण	१५-१७-६५-२३०
महग्घविद्द	महार्घ्य	१६
महत्तरकाणं	महत्तरकाणाम्	२५८
महतिमहापुरिस		८
महतिमहावीर		८
महतिमहावीरवद्धमाणाय		५९
महपितुयधीतर	महापितृदुहितृ	२१९
महमातुया	पितुर्माता	६८
महव्वताणि		५७-९९
महव्वय	महावयः	१८७
महव्वयाणि		१००-१२८
महव्वकाई		५९
महव्वाणि		१२५
महाजाति	पुष्प	७०
महाण	महाजन	१२३
महाणसेमक	महानसेन्यक	११३
महाणसगिह	महानसगृह	१२७
महाणसिक	महानसिक	६७
महाणि		१२८
महाणिमित्त		१
महापरिग्गह		५८-१२२
महापरिग्गहाणि		१२८
महामत्त	हस्तिमहामात्र	१५९
महामंत ?	,,	१६०
महालोक		६२
महावीर वद्धमाण		१-९-१३०
महासुग		२३९
महाहिमवंत	पर्वत	७८
महिलापस्सय	महिलाप्रश्रय	२०
महिलाय	महिलायाः	२०
महिसपालक	कर्मांजीविन्	१६०
महिस्साहा	वाहन	७२
महिसीपाल	कर्मांजीविन्	१६०
महिंद	पर्वत	७८
मडु	सुरा	१८१
मंगल्लपायण	मङ्गल्यपायन	१६०
मंगुल	अशुभ	९५
मंगुस	पशु	२२०
मंचक	शयन	१५-२६-६५
मंचातिमंच	,,	१५८
मंचिका	शयन	२६-१३०
मंजुल्ल	वृक्ष ?	११८
मंजरीपुष्फ		१०७
मंजिट्ठा		१४१
मंजूसा	मञ्जूषा	२०-१६५
मंजूसिका	मञ्जूषिका	७२
मंठ	बृहत्	११४
मंडलक		११६
मंडलास		११६
मंडलि	सर्प	२१८-२२७
मंडलिकारिका	कृमिजाति	६९
मंडव	मण्डप	१३८
मंडवा	गोत्र	१५०
मंडि	वृक्ष	७०
मंडिल्लका	भोज्य	१८२
मंडी	भाण्ड	७२
मंडूकलिआ	मण्डूकिका	२२७
मंत	पर्वत	७८
मंतिक	कर्मांजीविन्	१६०
मंतुल्लित ?	क्रिया.	१२१
मंथणी	मन्थनी	१७
मंथु	भोज्य	२२०
मंदर	पर्वत	७८
मंस	कर्मांजीविन्	१६०
माउस्सहा ?		६८
माउस्सिया	मातृष्वसा	६८
माकण्णीकण्णिक ?		११६
मागधवेल्ल		२४७
माढ	गोत्र	१४९
माण	लक्षण	१०३
माणक	भाण्ड	६५
माणसंपत्त		१०३
माणिका	भाण्ड	७२
माणिजपुष्फ		८२
माणुसकाणि		१२५-१२८
माणुस्साणक		१०७
मात ?		११४
मातंग		९२
मातुलधीतर	मातुलदुहितृ	२१९
मातुलिंग	फल	६४
मातुलिंगी	वृक्ष	७०
मातुलुंग	फल	२११
मातुलुंगगम्म		२३२
मातुसिया	मातृष्वसा	२१९
मातुस्सियाधीतर	मातृष्वसृदुहितृ	२१९
मातुस्सियाधीतरी		२१९
मातुस्सियापुत्त	मातुःष्वसृपुत्र	२१९
मायाकारक	कर्मांजीविन्	१६१
मारुदि	मारुति	८
मालाकार	कर्मांजीविन्	१६०
मालायोणि		३२
मालुका	पक्षिणी	६९
मास	माषधान्य	१६४
मासककण्णी		७२
मासपूरणक		९७
मासालग	दापन	५२-६५
माहली	गोत्र	१५०
माहिसिक	वस्त्र	७१
माहिंद		८
मितु	मृदु	२७
मितुभागा		५९
मितुणि		१२८
मित्तजोणि		१३९
मितुभागे		१२५
मिथो	मिथः	३१
मिथोसंलावजुत्ता		४०
मिलक्खदेवता	देवता	२०६
मिलक्खु	म्लेच्छ	१४९
मिलिंदक	सर्पजाति	६३
मिलेति	मुखति	४५
मिस्सका		१२८
मिस्सकेसि	देवता	६९
मिस्सगाम'स		१८८
मीण	मत्स्यजाति	२२८
मीमंसका	गोत्र	१५०
मुकुंदवण		१०४
मुगभक्खिय	भोज्य	१८२
मुग्गा	मकुलिकाविशेष	१०८
,,	धान्य	१६४
मुग्गायण	गोत्र	१५०
मुट्ठिक	कर्मांजीविन्	१६१
मुणालिक मृणालिका	फल	७०
मुणेतूण	ज्ञात्वा	५६
मुणिगमज्झ	मृदङ्गमध्य	२५०
मुणालय	आभू.	१६२
मुणालिक	,,	७१

शब्द		पत्र
वत्थुवापतिक	कर्माजीविन्	१६०
वत्थोपजीविक	,,	१६०
वदंसक	अवतंसक	१४७
वधुज्ज	विवाह	१४१
वधूमज्जण	वधूमज्जन	२५५
वद्धक	आभू.	११६
वद्धणक	उत्सव	९७
वद्धमाण	वर्धमान	१
वप्प	वप्र	१३७
वप्पक	बाल	१६९
वप्पडी	भोज्य	२४६
वप्पा	वसा	१०७
वप्फति	भुनक्ति	१०७
वमारक	स्थल-जलचर	२२७
वम्मिका	आभू.	७१
वय	व्रज	१३७-२२२
वयसाधारणा		१००
वराह	परिसर्पजाति	६९
वरक	धान्य	१६४-२२०
,,	गोत्र	१५०
वरड	सुहृद्	११४
वरत्त	रज्जुविशेष	११५
वरमज्जण	उत्सव	२५५
वराणि		५९-१२६-१२८
वराहा	गोत्र	१५०
वरियगेविया अरहस्स		१८२
वरिसधर वर्षधर-कञ्चुकिन्		१५९-१६०
वरुणक	वृक्ष	६३
वरुणकाइय	देवता	२०४
वलक्ख ?		१४७
वलभी		११६-२००
वलयग	आभू.	६५
वल्लयपाणिय		१०४
वलिया	कर्णाभू.	१८३
वलिपरिग्गहक ?		२४०
वलिराज		१७७
वसीमग		२३२
वसुर	भोज्य	२१०
वस्सगंधि	स्वर्णगन्धि	११५
वसगंधार	पूरगन्धार	१९५
व(वा)सोभिया		२४०
वसधा	वसना	५

शब्द		पत्र
वसवा	देवता	२०४
वसायं	वसायाम्	५
वसुमंतो	वसुमान्	१०५
वस्सधर	पर्वत	७८
वस्सारत्तं	वर्षारात्र	६७
वंजण	व्यञ्जन	१
वंजणऽज्झायो		१७४-१७५
वंजणात	व्यञ्जनान्त	१५१
वंजुल	वृक्ष	६३
वंत	वान्त	१७१
वंतं ?		१०
वंदहे	वन्दे	६
वंदिताणि		११-३८-१३८
वंदियविहि		९-१०-५९
वाइज्जो	वाचयेत्	१०
वाउकाणी	वस्त्र	७१
वाउजोणीक	वायुयोनिक	१४०
वाउप्पातिक	वातौत्पातिक	१९२
वाकपट्टिका	वल्कपट्टिका	१८
वाकल	वल्कल	८०
वागपट्ट	वस्त्र	२३२
वागरणजोणि		६-१०
वागरणपागड	व्याकरणप्रकट	७
वागरणोदधि		१०
वागरणोपदेसो अज्झाओ		७
वाचि वाते चिक ?		१४४
वाणर	पशु	२२७
वाणाधिगत	कर्माजीविन्	१६०
वाणियककम्म	,,	१५९
वाणीर	गुल्मजाति	६३
वात		१३६
वातकण्ण	देवता	२२४
वातपुरील	उद्भिज्ज	२२९
वातगुम्म	रोग	२०३
वातघडकमंडल		११६
वातपाग		२२२
वातमग्ग		५८-१२३-१९९
वातंड	रोग	२०३
वातंडअरिस	,,	२०३
वातंडरिस	पक्षी ?	२२०
वातंगु	उद्भिज्ज	२२९
वातिंड		७३
वातिंगण	फल	२३८

शब्द		पत्र
वाधुज्ज	उत्सव	४०-१२१-१४३-१९०
वाधुज्जभंड	विवाहभाण्ड	१७५
वाधेज्ज	विवाह	१३४
वापण्णा		५८
वापण्णोपद्दुता		१२९
वापद	व्यापत्	६१-८०
वापदिं	व्यापदं	८९
[illegible]		१२२
वामगत्तामास		२०१
वामणक		१५३
वामदेस		७६
वामद्धणाहारा		१२८
वामपक्ख		७६
वामपार	गोत्र	१५०
[illegible]		७६
वामसील		७६
वामाई		११३-१२८
वामाणि		५७-७५-११०
वामा धणहरा		५८-११२-१२८
वामा पाणहरा		५८-११२
वामामास		१३१
वामायार		७६
वामारद्ध		७६
वामा सोवद्दवा		५८-११२
वामिस्स	व्यामिश्र	९५-१२८
वामोहारं णगरं ?		१६१
वायुक्काइकाणि		५८
वायुणेय		१३१
वायुमुत्ता	कण्ठाभू.	१६३
वायेज्जो	वाचयेत्	१२९
वायेहिन्ति	वादयिष्यति	८४
वारक	भाण्ड	६५
वारमट्ठिम	फल	२३८
वारत्ताण	कञ्चुकप्रकार	६४
वारंग	वृक्ष	६३
वारिणीलग	गोत्र	१५०
वारिस	वर्षाकालिक	१०१
वारेज्ज	विवाह	९८-१३४
वालक ?		१४२-१७०
वालगि	भोज्य	७१
वालमय	आभू.	१६२-२१५
,,	भाण्ड	२११

शब्द		पत्र
वालंवा	गोत्र	१५०
वालिका	कर्णआभू.	७१
वालीणा	मत्स्यजाति	२२८
वालुंक	फल	६४
वालुंक	,,	२३८
वालुंकी	वृक्षजाति	७०
वावदारी	गोत्र	१५०
वावज्जोणीभामास		१८८
वावारक ?		१६७
वाविद्ध	व्याविद्ध	१०८-१३०
वाम	व्याम-विस्तार	४८
वासकडक	वासकटक	१८३
वासघर	वासगृह	२२२
वासण	वमन	१४२
वासंती	पुष्प	७०-१०४
वासिट्ठ	गोत्र	१५०
वासुरल	स्थानविशेष	२२२
वासुल	गोत्र	१४९
वासुल	पुष्प	७०-१०४
वाहणगत	दोहदप्रकार	१७२
वाहिज्ज	वाहन	१९३
विअडमंबुद्धे		१२४
विआकरे	व्याकुर्यात्	४७
विइत्त	विचित्र	६
विकट्टति	विकर्षति	८०
विकरण		१४६
विकल्का		२३७
विकंपण	क्रिया.	१३०
विकाटिका	आभू.	७१
विकूणंत	विकूणत्	४२
विकूणिज्ज	क्रिया.	१८४
विकूणित		१२३-१३०-१५५
विक्कणित	विक्वणित	१८३
विघस	भोज्य	१८२
विचंदित	विचन्दित	१५५
विचंदितपडलं		४४
विचंदितपाणि अट्टेव		४४
विचय	पुरुष	५
,,	नपुंसक	७३
विच्छड्ड	विच्छर्दि	४५
विच्छिण्ण	विस्तीर्ण	१०८
विच्छित्त	विक्षिप्त	१२-३८

शब्द		पत्र
विक्खित्तमणता	विक्षिप्तमनस्कता	१३५
विक्खित्तविकधा	विक्षिप्तविकथा	४१
विक्खिव	क्रिया.	८०-१६८-१७१
विक्खिरे	विकीरेद्	४५
विखिवंत	विक्षिपत्	१३५
विगतस्सर	विकृतस्वर	३५
विगयसंठाण	विकृतसंस्थान	१७
विगलप्पमाण		२१४
विगिलते	क्रिया.	१०७
विघोलते	,,	८०
विच्छिक	वृश्चिक	२१०
विच्छित्त	विक्षिप्त	१६८
विच्छिण्ण	विस्तीर्ण	१२२-१७१
विच्छुद्ध	विक्षिप्त	१६८-१७१
विच्छुद्धगत्त		५२
विच्छे ?		४१
विजयद्दार		१४४-१४६
विजयिका	विजयवर्णा	१९८
विजाणीया	विजानीयात्	१४
विज्जता	देवता	६९
विज्जा	,,	६९
,,	विद्यात्	१८-४६
विज्जादेवता	देवता	२२४
विज्जाधारक	कण्ठआभू.	१६२
विज्जारसयाहितुरया	देवता	२२४
विज्झिस्पति	क्रिया.	१७५
विज्झिहिए	क्रिया.	८८
विज्झिहिति	क्रिया.	९०
विज्झिहिते	विध्यति	८१-८५
विज्जु	विद्युत्	२०६
विज्जुता	विद्युत्	२५४
विज्जुयाय	विद्युति	५
विज्जेहिते	क्रिया.	११०
विज्झवित	विध्मापित विध्यापित	१६८-१७१
विज्झायति	विध्यायते	२५०
विट्ठण	वेष्टन	१९०
विडिणम	विटपक	६
विणट्ठ	विनष्ट	१६८-१७१
विणमंत	विनमत्	३३-३७-१३५
विणयजोणि		१३९
विणामित	क्रिया.	१४८-१६८
विणामिंत	विनामयत्	३८

शब्द		पत्र
विणिकोलंत	विनिकूजत् ?	३६
विणिट्ठुते	विनिष्ठीवति	१०८
विणियत्त	विनिवृत्त	८१
विणीयविणअ	विनीतविनय	४
विणेच्छिति	विनंक्ष्यति	८४
विण्णातूण	विज्ञाय	१२७
विण्णासणट्ठयाय	विन्यासनार्थतया	१३०
विण्ह ?		१९४
वितड्डीक	वितर्दिक	६
वितत	क्रिया.	११७
विताणक	वस्त्र	६४-१६४-२०६
वित्तीतोस	वृत्तितोष	९३
वित्थत	विस्तृत	११७-१३४-१९०
विदू	विद्वान्	१०
विधत्तेसु	क्रिया.	१५५
विधार	विहार	२२७
विधावति	क्रिया.	८०
विधिसिक	फलजाति	७०
विधीधार	वीथीवार	२०६
विधीयति	विधीयते	१२९
विपज्जय	विपर्यय	४५
विपडंत	विपतत्	१२२
विपत्तीसंपदा		१०
विपाडित	विपातित विपादित विपाटित	१६८-१७१
विपिसिरसविद्धि		९-१०
विपेविरसविधिविसेस		५९
विप्पकट्टित	विप्रकर्षित	१९५
विप्पकिण्ण	क्रिया.	१०८
विप्पयोटति	क्रिया.	८०
विप्पजोयित	विप्रयोजित	२००
विप्पयोगजोगि		१३९
विप्परिचेट्ठते	क्रिया.	८०
विप्परियत्तते	,,	८०
विप्परिमि	विमर्षि	१०१
विप्पलोट्टित	क्रिया.	१५५
विप्पलोयण	,,	२००
विप्पमारित	,,	१०८
विप्पेक्खियाणंते दस		११-३४
विप्पोसहिरण	विमुदीनधिमास सदिए	८
विब्भट्ठरहित	विभ्रष्टरहित	४४
विभमीस	विभ्रमया	४०
विमाणुद्धे	विमानर्धे	४४

शब्द		पत्र
समोखिण्ण	समुक्षिप्त	१९५
समोवयितगत्त		१११
सम्मई	सन्मति-वीरजिन	१०
सम्मज्जित	सम्मार्जित	२१
सम्मट्ठ	सम्मृष्ट	२४
सम्मिका	कर्णआभू.	१८३
सम्मोई	सम्मुद्	१२-४०-१११
सम्मोदी	सम्मुत्	१९८
सम्मोयिआ	सम्मुद्	३९
सयओ	सयतः	६
सयणगत	दोहदप्रकार	१७२
सयणगिह	शयनगृह	१३८
सयणपाली	कर्माजीविनी	९८
सयणावत्थद्धरत	सयनापस्तब्धरत	१८४
सयसाह	शतशाख	९
सयसाहस्ससमुख	शतसहस्रमुख	२
सयसाहस्ससाधि	शतसहस्रशाखिन्	९
सयाहिजुत्त	सदाऽभियुक्त	१३
सयितव्वजोणि		१३९
सर	लक्षण	१७३
सर	स्वर	१५३
सरक-ग	भाण्ड	६५
सरगपतिभोयण	"	१९३
सरजालक	आभू.	६५
सरंड	शरट	२२७
सरसंपण्ण		१७३
सरस्सती	देवता	२२३
सरिक	भाण्ड	७२
सलाकंजणी	शलाकाञ्जनी	७२
सलिलयत्ता	सलिलयात्रा	१४८
सलईहिं	सल्लकीभिः	१७७
सल्लकत्ता	कर्माजीविन्	१६१
सल्लिका	श्यालिका	६८
सली	"	२१९
सवणगिह	सवनगृह	१३८
सवलाहिक	स्थल-जलचर	२२७
सवाहत	क्रिया	२०२
सव्वअजीवपरामास		१३०
सव्वअमणहारित	क्रिया	१३०
सव्वअमणगत		१३०
सव्वगोणिपण्ण		१६६
सव्वचलामास		१३०
सव्वट्ठक	कृमि	२२९
सव्वणीहारगत		१६८
सव्वतोभद्द	आसन	३१-६५
सव्वत्त	सर्वत्र	१५८
सव्वत्थीक ?		३०-४८-५१
सव्वत्थीभागप्पदेसदंसक		५७
सव्वपल्हत्थिका	सर्वपर्यस्तिका	१८
सव्वपादोवक	सर्वपादोपक	१४२
सव्वबाहिरबाहिर		८९
सव्वरंगावचरगत		१३०
सव्ववेद	गोत्र	१५०
सव्वसजीवपरामास		१३०
सव्वसप्पसु		१५५
सव्वाणित ?		१५८
सव्वोधिजिण	सर्वावधिजिन	१
सव्वोसहिपत्त	सर्वौषधिप्राप्त	८
सस	पशु	२३८
ससपतिकाय	सस्यपतिकया	१८५
ससबिंदुक	फल	६४
ससबिंदुकिणी	वृक्षजाति	७०
ससित	श्वसित	१४८
ससिस्स	सच्छिष्य	५
सस्सकचुण्णक		२३३
सस्सप	धान्य	१६५
सस्सयित	संशयित	१९९
सस्साजित	क्रिया	१३३
सहकारस्स		२३२
सहत्थकारी	स्वहस्तकारी	९८
सहयरपुप्फ	पुष्प	६३
सहस्स		१२७
सहस्सदंत	मत्स्यजाति	६३
सहस्सदारजुत्त	सहस्रद्वारयुक्त	२
सहस्सपत्त	पुष्पजाति	६३
सहस्सवग्गो		५९
सहस्सजागरणा	सहस्रव्याकरणा	८
सहिमिणी ?		६८
सहितमहका ?		१५३
संकधा	सङ्कथा	४०
संकम		१३६
संकर		७३
संकुचणुट्ठित	सङ्कोचनोत्थित	४५
संकोसक	नलुलिकाप्रकार	२२१
संख	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
संखअ	संस्कृत	१७६
संखकार	कर्माजीविन्	१६०
संखचुण्ण		१०४
संखणग	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
संखणा	उद्भिज्ज	२२९
संखणाभि		१०४
संखता	संस्कृता	२२०
संखभंड		२१५
संखमय	आभू.	१६२
संखमल		१०४
संखवलय		१०४
संखवाणियक	शङ्खवाणिजक	१०४
संखा	अङ्ग	७७-१२४
संखागवलमय	भाण्ड	२२१
संखागोत्त	गोत्र	१५०
संखावग्माणि		१२८
संखावामा		५८-११२
संखिक		१०४
संखेणा	गोत्र	१५०
संगमजोणि		१३९
संगमत्तिका	वर्णमृत्तिका	२३३
संगमित	सङ्गमित	४१
संगलिका	साङ्गरिका	७१
संगलिकावत्थ	सिङ्गिका	१६६-१७९
संघतण	संहनन लक्षण	१७३
संघमालिका	आभू.	७१
संघाड	जलवाहन	१६६
संघायमंडल		११६
संचित	क्रिया	१४८
संजुकारक	कर्माजीविन्	१६०
संझडित	संशीर्णः	११८
संझादंसण		२०६
संठाण	लक्षण	१७३
संडिल्ला	गोत्र	१५०
संढ		७३
संतत्थ	संत्रस्त	२५४
संताणका	क्षुद्रजन्तु	२२९
संतिट्ठिस्सति	संस्थास्यति	१७६
संथडिय	संस्तृत	११६
संथित	,,	११६

शब्द		पत्र
संदण	वाहन	१९३
संदमाणिका	यान	७२-१६६
संधाणिदंसण	सन्ध्यानिदर्शन	१५५
संधावति	क्रिया	८०
संधिपाल	कर्माजीविन्	१५२
संधिवाल	,,	८८
संधी		१३६
संपडिका	आभू.	७१
संपडिपेक्खित्ता	सम्प्रतिप्रेक्ष्य	४१
संपदा	साम्प्रताः	१६७
संपदाकालिय		१९०
संपभिण्ण	सम्प्रभिन्न	१५४
संपवेदये	सम्प्रवेदयेत्	१४-१२६
संपवेदेज्जो	,,	५०
संपसस्सते	सम्प्रदास्यते	३९
संपादेंत	सम्पादयत्	३८
संपावित	सम्प्राप्त	१७६
संपार्यतरातिमास		१८६
संबुक	द्वीन्द्रियजन्तु	२६७
संभिक	श्लेष्मरोग	२०३
संभिन्नसोय	सम्भिन्नश्रोतस्-लब्धि	८
संभुयविजय	संभूयविजय	२००
संल	श्यालक	२१९
संलावजोणी अज्झाय		१६७
संलावजोणीओ	संलापयोनयः	४१
संलावयंदित	संलापनन्दित	३९
संलावविधिपडलं		४१-४८
संलाववितिधिविसेस		५९
संलाविवाणि		११-१३८
संलावियविहि		९-१०
संवच्छर	कर्माजीविन्	१६०
संवधमणोरध	संवृधमनोरथ	१२१
संवडिका	नकुलिकाविशेष	१०८
संविजाणिया	संविजानीयात्	३२
संविगागक	पुष्प	६४
संविदरिषी		१०
संविपागक		१९३
संविभावये	संविभावयेत्	३६
संविमहाणि		२२-१२१-१२६
संसुद्धिका	कृमि	२६०
संसेडित	क्रिया	११५
संसरणगिह		१३८
संसरित	क्रिया	१४८
संसावित	,,	१८६
संसिज्जमाण	संदीयमान	१९८
संहित	क्रिया	११५
सा	स्वान्	११-२२-३६-४७
साकरस		२२०
साकिजा	गोत्र	१५०
साएतनगर		१६१
सागरस		२२१
सागरोयम	कालविशेष	२६५
साटक	शाटक	१८
साडक	,,	१६९
,,	वस्त्र	६४-१७०
सातिक	मायाप्रकार	२६३
सातिज्जित	स्वादित	१७०
साधारणजोणि		१३९
साधुजुत्त	साधुयुक्त	४
साधूणिज्ज	साधुयोग्य	५
सापसत्त	सापथ्य	३१
सामकण्हाणि		५७-९२
सामकाल		१११
सामली		१५३
सामवेद	गोत्र	१५०
सामंत	सामन्त-समीप	५
सामाग	धान्य	१०८
सामाणि		५७-१५३
सामाणिय	देवता	२०५
सामामेरेडिका		२४७
सामिद्धि		१३०
सामेलवाए	कर्माजीविन्	१६०
सामोइं	सम्मुद्	४०-१११
सामोयमाणि		६८-९१-१२८
सार	छन्नग	१०३
सारस्सत	देवता	२०४
[सारा] सारो अज्झाओ		२१३
सारिकोरवरन		११४
साल	वृक्ष	६३
सालका	पक्षिन्	२६८
सालकडरस		२२२
सालयगय	स्वालयगत	१८१
सालंकायण	गोत्र	१५०
सालाका	पक्षिणी	६९
सालाकालिक	भोज्य	१८२
सालाकी	कर्माजीविन्	१६१
सालि	धान्य	१६४-२१९
सालिका	जलवाहन	१६६
सालिभ	पशु	२३७
सालिभक्खिय	भोज्य	१८२
सालिमालिणी	देवता	६९
सालिया	पक्षिणी	६९
साव	कर्ण आभू.	१८३
सासक ?		१४७
साससकूर	भोज्य	६४
सासवतेल्ल		२३२
साहवो	साधवः	५
साहाभवसिसतव		१८४
साहानामे		११२
साहिक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
साहुसंपन्न	साधुसम्पन्न	४
सिपुणिन ?		१९५
सिउरधी	सर्पिणी	६९
सिउवलिका	प्राणी	२३७
सिट्ठवाली	सर्पिणी	६९
सिगिला	,,	६९
सिगिलि	प्राणी	२३७
सिग्गुकन्डेत		२३२
सिचक्क	वस्त्र	१४१
सिञ्झनि	सीदनि	५६
सिण्हक	वृक्ष	६३
सिता	स्यात्	२८
सिनीयं	दे० निःश्रेण्याम्	३१-३३
सिप्पलच्छक	मन्त्रजाति	२२८
सिद्द		१०७
सिद्धपिक	आभू.	७१
सिद्धपिका	भोज्य	१८२
सिद्धयत्त	सिद्धपात्र	१४०
सिप्पगिह	शिल्पगृह	१३६-१३०
सिप्पसागतं	कर्माजीविन्	१६१
सिप्पिका	द्वीन्द्रियजन्तु	२६०
सिबिका	यान	७२-१४६-१६६-१६३

तृतीयं परिशिष्टम्
अंगविज्जान्तर्गतानां प्राकृतधातुप्रयोगाणां सङ्ग्रहः

तृतीयं परिशिष्टम्

चतुर्थं परिशिष्टम्

(१)

अंगविज्जानवमाध्यायमध्यगतानामङ्गनाम्नां कोशः

अंगनाम — श्लोकांकः

२ अवम्भ ४
२ अच्छि ११८१-१२४६ १२८५-१२९८-१५२९-१६४१-१७२१-१७३७-१७३८-१७६२
२ अच्छिअब्भंतर ७३६-१२४६
२ अच्छिदण्ण १४७०
२ अच्छिकूड ३०६-१७२६
२ अच्छिगुलिका १९४
२ अच्छिरद्द १५९९
२ अच्छिवत्तिणी १९४
२ अग्गकण्ण १०४५
१ अग्गदंत १५७८
२० अग्गनह १५७८
२ अट्ठिअब्भंतर १२८६
२ अट्ठी २-१४६९ १७२०-१७०४
२ अन्तलिका १०५३
२ अधर १५०९-१५२९-१६२३-१६६८
१ अधिट्ठाण १०५८
१ अधोमंसु १५९३
२ अपंग ९६०-१२८४
१ अवडु १५१३
अवडु १९५
२ अवडुप्पदेस ३
२ अवंग २-१२८७-१७५६
१ अवंगअब्भंतर १२४६
२ अंसी १००४
२ अंगुट्ठ १०५३-१०५६
४ ,, ४-१५१०-१५११-१५२९-१७४५ १७५६
१६ अंगुलि १९०-१५१०-१५११-१५९१-१७३५-१७५६
१० अंगुलिय १६०३
१ अंगुलिपव्व ३०६
११ ,, १००३
१६ ,, १७२५
१० अंगुलिपेर १६०१
१ अंगोट्ठ १७११
१ अंस २-९९०-१६६०

२ अंसकूड ३०६
१ अंसपीठ ११९४-१६०८-१७२९
१ अंसपीठाणिय ११२८
१ आस १७३३
१ उदर ५-४८२-९९७-१०९६-१२०० १२८४-१६६८-१६९८-१७०४ १७३३-१७६०
१ उदरपुलिम ६०८
१ उदरब्भंतर ७३८
१ उर ४-४८१-५२२-११९४-१५००- १५६३-१६०१-१६४१-१६५७ १६६८-१७१८-१७२०-१७२५ १७६०
१ उरपुलिम ६९८
१ उरब्भंतर ७३८
१ उवत्थ १५१२
२ उवत्थपरिउमभाग ६१८
१ ऊरु १२००
२ ,, ५-१५००-१५२१-१६६७- १७६८-१७७०-१७६६
२ ऊरुअब्भंतर ७३६
२ ऊरुअंतर १७०३
२ ऊरुपरिउमभाग ६१८
२ ऊरुपाल ६५८
२ ऊरुपुलिम ६९८
२ ऊरुसंधि ५७३
२ ओट्ठ ३-४८१-९६०-११४९- ११८१-१२८५-१२८० १५१०- १६०१-१६६३-१६४४-१६४१- १७३०-१७४५-१७५१-१७५६
१ कडंतिका १९५-१७००-१६०३
१ कच्छा १७००-१५९१-१७१८- १७६६-१७६६-१७४८
१ कण्णपरिकंन ७३६
१ कंठ १९० १७६६-१७१९-१६६८
१ कंठगल १५६६
१ कंठमूल १७६६-१२००-१६६८

२ कडीतड २-९६७-१२८७-१७५६
२ कणिठिका १०५३
२ कण्ण २-९६०-११८१-१२९८-१४६९ १५३९-१५७७-१६०२-१६२४- १६४१-१६७३-१७०४-१७१७- १७२१-१७२८-१७६३
२ कण्णचूलिका १९३
२ कण्णच्छिद्द ६५७
२ कण्णनाली १९४-१०४५
२ कण्णपीढ १५६३
२ कण्णपुत्तक २-९६६
२ कण्णब्भंतर ७३७
२ कण्णसक्कुली १०६३
२ कण्णसंधि ५६५-१५१२
२ कण्णसोत्त १००९-१०६६
१ कण्णुप्पलिका १०३१
२ कन्नार ५६०-१७२५
२ कपाल १५३९-१७२५
२ करमज्झ ५२४
२ कवोल २-११४९-११८१
१ कंठपुलिम ६९०
कंठोल १७८०
कंठा १९०
४ ,, १६६६
१ कुईदल १७१०
१ कुहुर १५११
१ कुच्छिगत ३०६
१ कुच्छि ५
१ कुच्छिपस्स १७००
१ केस १०० १५१९-१५११- १५९१-१६०३-१७०५- १७७०-१७६०
१ केसमंसु १७१८
१ केसग्ग १६०५
१ केसपोसम्म १५८३
१ कोप्पर ३-१५१९-१६०३-१७१९ १७३३

अंगनाम	श्लोकांक

अंगविज्जानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां २७० अङ्गविभाजकद्वाराणां सङ्ग्रहः

	द्वारनाम	द्वारांकः
	अ	
१०	अगणिक्काइकाणि	१४४
१०	अग्गेया	१०६
७	अचपला	२२२
१६	अणागताणि	११
७५	अणायकाइं	२३२
१०	अणिस्सरा	१३५
२	अणू	१२५
५१	अण्णजणाइं	२३५
५०	अतिकण्हाणि	२४
१६	अतिवचाणि	९
२	अद्दंसणिया	१७९
१३	अधोभागा	९५
१	अपरिमिते	२००
५०	अपसण्णअपसण्णा	९८
४	अप्पपरिग्गहा	१६१
५०	अप्पसण्णा	९०
२६	अप्पिया	१४०
२०	अप्पोपचया	१०८
४	अबुद्धीरमगा	१५९
५०	अब्भंतरअब्भंतराणि	१३
५०	अब्भंतरबाहिराणि	१५
५०	अब्भंतराणि	१२
२६	अवयिया	१४१
१९	अविरा	१९३
५०	अव्वोभाताणि	२३
२	असीतिवग्गा	२६२
३३	अंता	१५०
१६	अंतराइं	२३६
	आ	
१२	आक्कामा	१३१
२३	आतिमूलिकाणि	१४८
६	आयता	२०४
४	आयपमुदिता	२०५
१०	आउकायिकाणि	१४३
२०	आउप्पमाणे वस्सग्गप्पमाणाणि	४७
१०	आलुगेया	१८९
१०	आहारणीहारा	८३
१०	आहारा	८०
१०	आहाराहारा	८२
	इ	
१४	इस्सरभूता	१३६
१०	इस्सरा	१३४
	उ	
१०	उज्जुका	२०२
१४	उण्णता	१८५
१०	उण्हा	१८७
२	उत्तममज्झिमसाधारणाणि	२९
२०	उत्तमाणि	२५
१७	उत्तरपच्चत्थिमा	९२
१७	उत्तरपुरत्थिमा	९३
१७	उत्तरा	८९
५	उत्ताणुम्मयका	२२४
१२	उद्धभागा	९४
५	उवग्गहणाणि	१२९
९	उवथूला	१०६
५०	उवद्दुता	१५४
	ए	
५०	एक्काणि	२३९
	ओ	
५०	ओवातसामाणि	१९
५०	ओवाताणि	१८
	क	
२	कण्णेया	२१४
१०	कण्हवण्णपडिभागा	५९
५०	कण्हाणि	२२
१४	करणमंडला	११७
५	काया	१२२
१०	किलिट्ठा	२२९
१०	किसा	११०
१०	कुडिला	२०१
१	कोडिवग्गे	२६९
	ख	
२	खेत्तअखेत्ताणि	४५
१४	खेत्ताणि	४१
२४	खरा	२००
	ग	
२	गतवालुगवण्णपडिभागा	६१
५	गहणाणि	१२८
२	गंधेया	१६९
९	गंभीरा	१८२
४	गोज्झा	२२३
	च	
४१	चउरंसा	१२०
८	चतुक्काणि	२४२
२	चत्तालीसतिवग्गा	२५४
६	चपला	२२१
२८	चलाणि	८
३६	चंदाणता	२०३
	ज	
१०	जण्णेया	१७७
१०	जम्मणा	१७५
१०	जहण्णाणि	२८
२०	जंगमाणि	११७
२५	जुत्तोपचया	१०७
२	जुवतेया	२१६
२	जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि	३८
१४	जोव्वणत्थाणि	३४
	ठ	
६	ठिभामासे	२४४
७	"	२४५
८	"	२४६
९	"	२४७
१०	"	२४८
	ठिभामासे असितवण्णपडिभागा	६८
	ठिभामासे कोरेंटवण्णपडिभागा	६९
	ठिभामासे चित्तवण्णपडिभागा	७०
	ठिभामासे णिद्धलुक्खवण्णपडिभागा	७३
	ठिभामासे णिद्धवण्णपडिभागा	७१
	ठिभामासे पंडुवण्णपडिभागा	६३
	ठिभामासे मणोसिलवण्णपडिभागा	६४
	ठिभामासे लुक्खवण्णपडिभागा	७२
	ठिभामासे सुनुगमवण्णपडिभागा	६७
	ठिभामासे हरितालवण्णपडिभागा	६५
	ठिभामासे हिंगुलकवण्णपडिभागा	६६
	ण	
५८	णपुंसकाणि	३
२	णवुतिवग्गा	२६४
२०	णातिकिसा	१०९
७५	णायकाइं	२३१

द्वारनाम	द्वारांकः
ल	
१० लुक्खणिद्धा	७८
१० लुक्खलुक्खा	७७
१० लुक्खा	७६
व	
२० वट्टा	११८
१० वणप्फद्काइकाणि	१४६
१६ वत्तमाणाणि	१०
७५ वराई	२३०
४ वातमणा	१७३
५० वावण्णा	१५५
१७ वामाणि	५
१६ वामा धणहरा	१०१
१६ वामा पाणहरा	१००
५८ वामा सोवद्दवा	१०२
१२ वाउकाइकाणि	१४५
२८ नियडसंवुडा	१९४
१९ विद्दरा	१९२
१५ विसमा	१८४
२ वीसतिवग्गा	२५०
२ वेसेज्जसुद्देज्जाणि	४६
१४ वेसेज्जाणि	४२
स	
५० सकपरका	१६६
५० सका	१६४
२ सट्ठिवग्गा	२५८
५६ सण्हा	१९९
१ सतवग्गो	२६६
१ सतसहस्सवग्गो	२६८
२ सत्तरिवग्गा	२६०
२ सद्दमणा	१७४
२ सद्देया	१६७
१२ समा	१८६
१ सहस्सवग्गो	२६७
१० संता वामा	१०३
५० सामकण्हाणि	२१
५० सामाणि	२०
११ सिवा	१०४
१० सीतला	१८८
७ सुकुमाला	१९५
७२ सुक्कवण्णपडिभागा	५४
२ सुगधा	१५७
१० सुद्देज्जाणि	४३
२८ सूयी	२२८
११ सुराई	२३७
२ सोम्मा	२११
ह	
१८ हरितवण्णपडिभागा	५८
१६ हस्सा विचिद्दिग्गा	११४
५ हिदयाणि	१२७
१६ हस्सा	११५

(३)

अंगविज्ञानवमाध्याये विभागशो निर्दिष्टानामङ्गनाम्नां यथाविभागं सङ्ग्रहः

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	७५ पुंजातीय अंग पृष्ठ ५९		२	बाहु	३०	२	ऊरु	६९
१	मिसंड	१	२	पबाहु	३२	२	गोप्फ	७१
१	मत्थक	२	२	कोप्पर	३४	२	पाद	७३
१	सीस	३	२	अवहत्थग	३६	२	पादतल	७५
१	सीमंतक	४	२	मणिबंधहत्थसतल	३८		७५ स्त्रीजातीय अंग पृ. ६६	
२	संख	६	४	अंगुट्ठ	४२	१	छगली	
१	ललाट	७	२	खंध	४४	१	सिहा	
२	भमुही	९	२	जनु	४६	२	गंड	
२	अवंग	११	२	पस्स	४८	२	कण्णचूलिका	
२	कणवीरक	१३	२	कक्खक	५०	२	मुमक	
२	कण्ण	१५	१	उर	५१	२	अक्खिगुलिका	
२	गंड	१७	२	थण	५३	२	तारका	
२	कवोल	१९	५	हितय	५८	२	अक्खिवत्तिणी	
२	कण्णपुत्तक	२१	२	कुक्खि	६०	१	णासिका	
२	ओट्ठ	२३	१	उदर	६१	२	कण्णपाली	
१	दंतवेला	२४	२	वक्खण	६३		थूणा	
१	दंतमंस	२५	१	पोरस्स	६४		सीता	
१	मुद्द	२६	१	वत्थिसीस	६५	१	तालुक	
२	अंस	२८	२	चलु	६७	२	दाढा	

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्स	१०
२	जंघापस्स	१२
२	ऊरुपस्स	१४
२	पादपस्स	१६
	१६ अनागत अंग पृ. ८३	
१	मुहपुरिम	१
१	णिडालपुरिम	२
१	कंठपुरिम	३
१	हिदयपुरिम	४
२	जंतुवरपुरिम	६
१	उरपुरिम	७
२	बाहुणालीपुरिम	९
१	वत्थिपुरिम	१०
१	सीसपुरिम	११
१	उदरपुरिम	१२
२	जंघापुरिम	१४
२	ऊरुपुरिम	१६
	५० अब्भंतर अंग पृ. ८४	
२	पादतलब्भंतर	२
२	पाणितलब्भंतर	४
२	जंघब्भंतर	६
२	ऊरुअब्भंतर	८
२	कक्खब्भंतर	१०
२	अक्खिअब्भंतर	१२
२	वक्खणब्भंतर	१४
१	णाभिअब्भंतर	१५
१	मेहणब्भंतर	१६
५	हिदयसमुद्दब्भंतर	२१
२	कण्णब्भंतर	२३
१	णासिकब्भंतर	२४
२	बाहुणालीअब्भंतर	२६
२	हत्थब्भंतर	२८
१	सोणिअब्भंतर	२९
१	गुदब्भंतर	३०
१	मत्थकब्भंतर	३१
१	णिडालब्भंतर	३२
१	गीवब्भंतर	३३
२	गंडब्भंतर	३५
२	मुमगब्भंतर	३७
२	जंतुअब्भंतर	३९
१	उरब्भंतर	४०
१	उदरब्भंतर	४१

....

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	२० उत्तम अंग पृ. ९३	
१	मत्थक	१
१	सीस	२
२	संख	४
१	णिडाल	५
२	कण्णपुत्तक	७
२	कण्ण	९
२	गंड	११
२	ओट्ठ	१३
१	दंत	१४
१	णासा	१५
१	णासपुड	१६
२	कणवीरक	१८
२	अपंग	२०
	१४ मध्यम अंग पृ. ९४	
१	जत्तुअंतर	१
१	थणंतर	२
१	हियय	३
१	उदर	४
२	अंस	६
२	बाहु	८
२	पबाहु	१०
२	हत्थ	१२
२	हत्थतल	१४
	१० जघन्य अंग पृ. ९४	
२	अंगुट्ठ	२
२	पादपण्हि	४
२	जंघा	६
२	गुप्फ	८
२	पादहितय	१०
	२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५	
२	जत्तु	२
	२ मध्यमानंतरमध्यसाधारण अंग पृ. ९६	
२	वक्खण	२
	२ मध्यमानंतरजघन्यसाधारण अंग पृ. ९६	
२	गोप्फ	२
	१० बालेय अंग पृ. ९७	
२	पादंगुट्ठ	२
२	पादंगुलि	४
२	गोप्फ	६
२	जंघा	८
२	पादतल	१०

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	१४ यौवनस्थ अंग पृ. ९७	
१	उदर	१
१	कडि	२
१	णाभि	३
२	कडिपस्स	५
२	पट्ठिपस्स	७
१	पट्ठिमज्झ	८
१	लोमवासी	९
१	मेहण	१०
१	वत्थि	११
१	[वत्थि]सीस	१२
२	फल	१४
	१४ मध्यमवयः अंग पृ. ९९	
२	बाहा	२
२	बाहुणाली	४
१	हत्थंगुलीउदर	५
२	हत्थंगुट्ठ	७
२	हत्थ	९
१	अंसपीफाणिय	१०
२	जत्तु	१२
२	थण	१४
	२० महावयः अंग पृ. ९९	
१	गीवा	१
१	हणु	२
२	दंत	४
२	ओट्ठ	६
१	णासा	७
२	णासापुड	९
२	गंड	११
२	कवोल	१३
१	भुमकंतर	१४
१	णिडाल	१५
१	सिर	१६

....

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	२ बालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००	
२	वक्खण	२
	२ यौवनस्थमध्यमवयःसाधारण अंग पृ. १००	
२	थण	२
	२ मध्यमवयोमहावयःसाधारण अंग पृ. १००	
२	जत्तु	२

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्स	१०
२	जंघापस्स	१२
२	ऊरुपस्स	१४
२	पादपस्स	१६

१६ अनागत अंग पृ. ८३

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	मुहपुरिम	१
१	णिडालपुरिम	२
१	कंठपुरिम	३
१	हिदयपुरिम	४
२	जंतुतरपुरिम	६
१	उरपुरिम	७
२	बाहुणालीपुरिम	९
१	वत्थिपुरिम	१०
१	सीसपुरिम	११
१	उदरपुरिम	१२
२	जंघापुरिम	१४
२	ऊरुपुरिम	१६

५० अभ्यंतर अंग पृ. ८४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	पादतलब्भंतर	२
२	पाणितलब्भंतर	४
२	जंघब्भंतर	६
२	ऊरुअब्भंतर	८
२	कक्खब्भंतर	१०
२	अक्खिअब्भंतर	१२
२	वक्खणब्भंतर	१४
१	णाभिअब्भंतर	१५
१	मेहणब्भंतर	१६
५	हितयसमुद्दब्भंतर	२१
२	कण्णब्भंतर	२३
१	णासिकब्भंतर	२४
२	बाहुणालीअब्भंतर	२६
२	हत्थब्भंतर	२८
१	सोणिअब्भंतर	२९
१	गुदब्भंतर	३०
१	मत्थकब्भंतर	३१
१	णिडालब्भंतर	३२
१	गीवब्भंतर	३३
२	गंडब्भंतर	३५
२	मुमगब्भंतर	३७
२	जंतुअब्भंतर	३९
१	उरब्भंतर	४०
१	उदरब्भंतर	४१

....

२० उत्तम अंग पृ. ९३

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	मत्थक	१
१	सीस	२
२	संख	४
१	णिडाल	५
२	कण्णपुत्तक	७
२	कण्ण	९
२	गंड	११
२	ओट्ठ	१३
१	दंत	१४
१	णासा	१५
१	णासपुड	१६
२	कणवीरक	१८
२	अपंग	२०

१४ मध्यम अंग पृ. ९४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	जतुअंतर	१
१	थणंतर	२
१	हियय	३
१	उदर	४
२	अंस	६
२	बाहु	८
२	पबाहु	१०
२	हत्थ	१२
२	हत्थतल	१४

१० जघन्य अंग पृ. ९४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	अंगुट्ठ	२
२	पादपण्हि	४
२	जंघा	६
२	गुप्फ	८
२	पादहितय	१०

२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	जतु	२

२ मध्यमानंतरमध्यसाधारण अंग पृ. ९६

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	वक्खण	२

२ मध्यमानंतरजघन्यसाधारण अंग पृ. ९६

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	गोप्फ	२

१० बालेय अंग पृ. ९७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	पादंगुट्ठ	२
२	पादंगुलि	४
२	गोप्फ	६
२	जंघा	८
२	पादतल	१०

१४ यौवनस्थ अंग पृ. ९७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	उदर	१
१	कडि	२
१	णाभि	३
२	कडिपस्स	५
२	पट्ठिपस्स	७
१	पट्ठिमज्झ	८
१	लोमवासी	९
१	मेहण	१०
१	वत्थि	११
१	[वत्थि]सीस	१२
२	फल	१४

१४ मध्यमवयः अंग पृ. ९९

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहा	२
२	बाहुणाली	४
१	हत्थंगुलीउदर	५
२	हत्थंगुट्ठ	७
२	हत्थ	९
१	अंसवीकाणिय	१०
२	जतु	१२
२	थण	१४

२० महावयः अंग पृ. ९९

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	गीवा	१
१	हणु	२
२	दंत	४
२	ओट्ठ	६
१	णासा	७
२	णासापुड	९
२	गंड	११
२	कवोल	१३
१	भुमकंतर	१४
१	णिडाल	१५
१	सिर	१६

....

२ बालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	वक्खण	२

२ यौवनस्थमध्यमवयःसाधारण अंग पृ. १००

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	थण	२

२ मध्यमवयोमहावयःसाधारण अंग पृ. १००

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	जतु	२

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्स	१०
२	जंघापस्स	१२
२	ऊरपस्स	१४
२	पादपस्स	१६
	१६ अनागत अंग पृ. ८३	
१	मुहपुरिम	१
१	णिडालपुरिम	२
१	कंठपुरिम	३
१	हिदयपुरिम	४
२	जंतुतरपुरिम	६
१	थरपुरिम	७
२	बाहुणालीपुरिम	९
१	वत्थिपुरिम	१०
१	सीसपुरिम	११
१	उदरपुरिम	१२
२	जंघापुरिम	१४
२	ऊरुपुरिम	१६
	५० अभ्यंतर अंग पृ. ८४	
२	पादतलब्भंतर	२
२	पाणितलब्भंतर	४
२	जंघब्भंतर	६
२	ऊरुअब्भंतर	८
२	कक्खब्भंतर	१०
२	अक्खिअब्भंतर	१२
२	वक्खणब्भंतर	१४
१	णाभिअब्भंतर	१५
१	मेहणब्भंतर	१६
५	हिदयसमुद्दब्भंतर	२१
२	कण्णब्भंतर	२३
१	णासिकब्भंतर	२४
२	बाहुणालीअब्भंतर	२६
२	हत्थब्भंतर	२८
१	सोणिअब्भंतर	२९
१	गुदब्भंतर	३०
१	मत्थकब्भंतर	३१
१	णिडालब्भंतर	३२
१	गीवब्भंतर	३३
२	गंडब्भंतर	३५
२	भुमगब्भंतर	३७
२	अंगुलब्भंतर	३९
१	उरब्भंतर	४०
१	उदरब्भंतर	४१

....

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	२० उत्तम अंग पृ. ९३	
१	मत्थक	१
१	सीस	२
२	संख	४
१	णिडाल	५
२	कण्णपुत्तक	७
२	कण्ण	९
२	गंड	११
२	ओट्ठ	१३
१	दंत	१४
१	णासा	१५
१	णासपुड	१६
२	कणवीरक	१८
२	अपंग	२०
	१४ मध्यम अंग पृ. ९४	
१	जत्तुअंतर	१
१	थणंतर	२
१	हियय	३
१	उदर	४
२	अंस	६
२	बाहु	८
२	पबाहु	१०
२	हत्थ	१२
२	हत्थतल	१४
	१० जघन्य अंग पृ. ९४	
२	अंगुट्ठ	२
२	पादपण्हि	४
२	जंघा	६
२	गुप्फ	८
२	पादहितय	१०
	२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५	
२	जत्तु	२
	२ मध्यमानंतरमध्यसाधारण अंग पृ. ९६	
२	वक्खण	२
	२ मध्यमानंतरजघन्यसाधारण अंग पृ. ९६	
२	गोप्फ	२
	१० बालेय अंग पृ. ९७	
२	पादंगुट्ठ	२
२	पादंगुलि	४
२	गोप्फ	६
२	जंघा	८
२	पादतल	१०

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	१४ यौवनस्थ अंग पृ. ९७	
१	उदर	१
१	कडि	२
१	णाभि	३
२	कडिपस्स	५
२	पट्ठिपस्स	७
१	पट्ठिमज्झ	८
१	लोमवासी	९
१	मेहण	१०
१	वत्थि	११
१	[वत्थि]सीस	१२
२	फल	१४
	१४ मध्यमवयः अंग पृ. ९९	
२	बाहा	२
२	बाहुणाली	४
१	हत्थंगुलीउदर	५
२	हत्थंगुट्ठ	७
२	हत्थ	९
१	अंसवीकाणिय	१०
२	जत्तु	१२
२	थण	१४
	२० महावयः अंग पृ. ९९	
१	गीवा	१
१	हणु	२
२	दंत	४
२	ओट्ठ	६
१	णासा	७
२	णासापुड	९
२	गंड	११
२	कवोल	१३
१	भुमकंतर	१४
१	णिडाल	१५
१	सिर	१६

....

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
	२ बालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००	
२	वक्खण	२
	२ यौवनस्थमध्यमवयःसाधारण अंग पृ. १००	
२	थण	२
	२ मध्यमवयोमहावयःसाधारण अंग पृ. १००	
२	जत्तु	२

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	अधर	५
२	बाहु	७
२	हत्थपाद	९

२५ युक्तोपचय अंग पृ. ११४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
४	अंगुट्ठ	४
१६	अंगुलि	२०
१	णिडाल	२१
१	चिबुक	२२
२	ओट्ठ	२४
१	णासा	२५

१७ हस्स अंग पृ. ११४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	गोप्फ	२
२	जण्णुगसंधि	४
२	मणिबंध	६
१	कवरुग	७
२	[कण्ण] संधि	९
२	भुमसंधि	११
२	संख	१३
१	पट्ठि	१४
१	कुकुडा	१५
२	मत्थु	१७

११ परंपरहस्स अंग पृ. ११४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	गलुक	२
२	जाणुक	४
२	देहिक	६
२	कोप्पर	८
१	केस	९
१	रोम	१०
१	हण (णह)	११

२६ दीर्घ अंग पृ० ११४

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहु	२
२	पबाहु	४
२	जंघा	६
२	ऊरु	८
१६	अंगुलि	२४
१	केस	२५
१	पट्ठि	२६

२६ युक्तप्रमाण दीर्घ अंग पृ० ११५

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	भुम	२
२	अच्छि	४
२	णासा	६
२	तनु	८
१	मेंढ	९
२	अविक्खा	११
१	सिर	१२
२	अधर	१४
१	जिब्भा	१५
४	अंगुट्ठ	१९
१	लोम	२०
६	पाणिलेहा	२६

१० परिमंडल अंग पृ० ११५

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	मत्थग	१
२	बाहुसीस	३
२	जाणुसीस	५
२	थण	७
१	णाभि	८
२	फिया	१०

१४ करणमंडल अंग पृ० ११६

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	दक्खिणबाहुमंडल	१
१	वामबाहुमंडल	२
१	बाहुसंघातमंडल	३
१	सत्थिसंघातमंडल	४
८	अंगुलिमंडल	१२
१	अंगुट्ठंगुलिमंडल	१३
१	संथायमंडल	१४

२० वृत्त अंग पृ० ११६

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१०	हत्थंगुलिपव्व	१०
१०	पादंगुलिपव्व	२०

१२ पृथु अंग पृ० ११६

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	उर	१
१	णलाड	२
१	पट्ठि	३
२	पादतल	५
२	पाणितल	७
२	कण्णपीढ	९
२	गंड	११
१	जिब्भा	१२

४१ चतुरस्र अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	णिडाल	१
२	पस्स	३
२	पादतल	५
२	पाणितल	७
२	पण्हितल	९
२	कडितल	११
३०	पव्वंतरंगुल	४१

२ त्र्यस्र अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	वत्थि	१
१	[वत्थि] सीस	२

५ काय अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	कायवंत	१
१	मज्झिमकाय	२
१	मज्झिमागंतरकाय	३
१	जघण्णकाय	४
१	जघण्णंतरकाय	५

२७ तनु अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	पादतल	२
२	पाणितल	४
२	कण्ण	६
१	जिब्भा	७
२०	णह	२७

२१ परमतनु अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२०	अग्गणह	२०
१	अग्गकेस	२१

२ अणु अंग पृ० ११७

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	केसलोमणह	१
१	मंसु	२

५ हृदय अंग पृ० ११८

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	पादतलहितय	२
२	पाणितलहितय	४
१	हितय	५

५ ग्रहण अंग पृ० ११८

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
१	केस	१
१	मंसु	२
१	अधोमंसु	३
२	कक्खा	५

५ उपग्रहण अंग पृ० ११८

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	भुम	२
२	अक्खिपम्ह	४
१	लोमवासी	५

५६ रमणीय अंग पृ० २१८

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	ओट्ठ	२
२	दंत	४
१	णिडाल	५
२	पादतल	७
२	पाणितल	९
१	उर	१०

२०	अंगुलपोट्ट	३०
२०	नह	५०
१	णासा	५१
१	णासपुड	५२
१	सोणि	५३
२	कण्ण	५५
१	मेहण	५६

१२ आकाश अंग पृ. ११८

१	णिडाल	१
२	अंसपीढ	३
२	जाणु	५
२	जाणुपच्छिम	७
२	पादतल	९
२	पाणितल	११
१	पट्ठि	१२

५६ दहरचल अंग पृ. ११९

२८	हत्थंगुलिपव्व	२८
२८	पादंगुलिपव्व	५६

५६ दहरस्थावरेय अंग पृ. ११९

२८	हत्थंगुलिपव्वंतर	२८
२८	पादंगुलिपव्वंतर	५६

दहरस्थावरेय अंग १३ मतान्तरे

२	जंघामज्झ	२
२	ऊरुमज्झ	४
२	बाहुमज्झ	६
१	पट्ठि	७
२	[illegible]	९
२	कर	११
२	[illegible]	१३

१० ईश्वर अंग पृ० ११९

१	णिडाल	१
१	[illegible]	२
१	सीस	३
१	कण्ण	४
१	गंड	५
१	भुमंतर	६
१	दंत	७
१	ओट्ठ	८
१	णासा	९
१	जिब्भा	१०

५० प्रेष्येय अंग पृ. ११९

१०	पादंगुलि	१०
१०	पादणह	२०

अंग० ४५

१०	पादंगुलिपोट्टिया	३०
२	[पाद] तल	३२
२	पण्हि	३४
२	खुल	३६
२	गोप्फ	३८
४	कंडरा	४२
२	जंघा	[illegible]
२	पेंडिका	४६
२	जाणु	४८
२	फिया	५०

२६ प्रिय अंग पृ. १२०

१	णिडाल	१
१	मत्थक	२
१	सीस	३
२	संख	५
२	कण्ण	७
२	अक्खि	९
१	णासिका	१०
२	दंत	१२
२	ओट्ठ	१४
१	जिब्भा	१५
२	गंड	१७
१	उर	१८
२	थण	२०
१	थणंतर	२१
२	हत्थंगुट्ठ	२३
२	हत्थ	२५
१	णाभि	२६

२६ मध्यस्थ अंग पृ. १२०

१	भुमंतर	१
१	वंस	२
१	मत्थक	३
१	णासिका	४
१	गुद	५
१	उर	६
१	थणंतर	७
१	हिदय	८

....

३२ आतिमूलिक अंग पृ. १२१

२	पादंगुट्ठ	२
२	पाद	४
२	गोप्फ	६
२	जंघा	८
२	ऊरु	१०
२	जाणु	१२
२	अंस	१४
२	बाहु	१६
२	पबाहु	१८
२	बाहुसंधि	२०
१	उदर	२१
१	कडि	२२
२	कडिपस्स	२४
१	लोमवासी	२५
१	[illegible]	२६
१	सिर	२७
२	अधर	२९
१	जत्तु	३०
१	मुह	३१
१	सीस	३२
१	[illegible]	३३

३३ अंत अंग पृ. १२१

२०	अंगुलिअग्ग	२०
१	केसग्ग	२१
१	लोमग्ग	२२
२	कण्णग्ग	२४
२	णासग्ग	२६
२	कोप्पर	२८
२	पण्हिक	३०
२	फिया	३२
१	कसाडिका	३३

२० तीक्ष्ण अंग पृ. १२२

२०	अग्गदंत	२०

२ दुर्गंध अंग पृ. १२२

२	सिहिण णासापुड	२

२ सुगंध अंग पृ. १२२

२	अयगुण णासापुड	२

९ शुद्धिरमण अंग पृ. १२२

२	हत्थ	२
२	पाद	४
२	भुम	६
२	अक्खि	८
१	मुह	९

४ अशुद्धिरमण अंग पृ. १२२

२	वग्ग	२
१	उदर	३
१	पट्ठि	४

११ महापरिग्रह अंग पृ. १२२

१	उदर	१
२	हत्थ	३
२	पाद	५
२	कण्ण	७
१	णासा	८
२	अंसि	१०
१	मुह	११

४ अल्पपरिग्रह अंग पृ. १२२

१	केस	१
१	लोम	२
१	णह	३
१	मंसु	४

१९ यद्ध अंग पृ. १२२

हत्थ
पाद
सिहा
कण्ण

२७ मोक्ष अंग पृ. १२२

हत्थ
पाद
सिहा
कण्ण

२ शाब्देय अंग पृ. १२३

२	कण्णसोत	२

२ रूपेय अंग पृ. १२३

२	णयण	२

२ गंधेय अंग पृ. १२३

२	णासापुड	२

१ रसेय अंग पृ. १२३

१	जिब्भा	१

२ स्पर्शीय पृ. १२३

१	तया	१
१	पोरिस	२

१ मननीय अंग पृ. १२३

१	हिदय	१

४ घातवत् अंग पृ. १२३

१	मुह	१
१	णासग्ग	२
२	कण्ण	४

२ शब्दवत् अंग पृ. १२३

१	गुदा	१
१	मेहण	२

१० वर्णीय अंग पृ. १२३

१	केसमंसु	१
१	उर	२
१	पट्ठि	३
२	जंघा	५
२	कक्खा	७
१	वत्थिसीस	८
२	संख	१०

१० आग्नेय अंग पृ. १२३

१	मुह	१
२	अच्छि	३
१	उर	४
१	हिदय	५
२	तल	७
१	जिब्भा	८
२	तिक	१०

प्रकारान्तरेण

२	अक्खि	२
१	णासिका	३
२	कण्ण	५
१	णिडाल	६
१	मुह	७
१	मत्थग	८
१	कण्णुप्परिका	९
१	सिस	१०

२ दर्शनीय अंग पृ. १२३

१	चक्खु	१
१	सोणि	२

१० स्थल अंग पृ. १२३

१	मत्थक	१
१	णिडाल	२
२	गंड	४
१	हिदय	५
१	उर	६
२	करतल	८
२	कमतल	१०

१२ निम्न अंग पृ. १२३

२	वक्खण	२
२	कक्खा	४
२	अक्खिकूड	६
२	कण्णसोत	८
२	गीवाहेट्ठ	१०
१	कुकुंदल	११
१	णाभि	१२

९ गंभीर अंग(?) पृ. १२४

१	मुह	१
१	णासा	२
२	कण्ण	४
२	बाहु	६

१५ विषम अंग पृ. १२४

१	णासा	१
२	अंसपीठ	३
२	वसण	५
२	फिया	७
२	कोप्पर	९
२	जनुग	११
२	खलुक	१३
२	मणिबंध	१५

८४ पुण्ण अंग पृ. १२४

२	गंड	२
२	थण	४
१	उदर	५
१	आस	६
२	अंजलि	८
१	मुह	९
७५	पुण्णाम	८४

१९ विवर अंग पृ. १२४

१	मुह	१
२	पालु	३
१६	अंगुलिअंतर	१९

८ विवृतसंवृत अंग पृ. १२४

२	अक्खि	२
२	हत्थ	४
२	पाद	६
१	गुदा	७
१	मेढ़	८

उट्टपाल	पाणियघरिय	लोहकार	छत्तधारक	दारुकआधिकारिक	पत्तकारक
मगलुद्दग	ण्हाणघरिय	सीतपट्टक	पसाधक	सामेलक्ख	सीकाहारक
ओरब्भिग	सुराघरिय	कुंभकार	हत्थिबंध	हत्थारोह	मट्टिहारक
अहिनिप	कट्ठाधिकत	मणिकार	अस्सबंध	अस्सारोह	कोसेज्जवायक
हत्थिमहामत्तो	तणाधिगत	संखकार	अग्गिउपजीवी	पेस्स	दियंडकंबलवायक
गोसंखी	पीतपाल	कंसकार	आहितग्गि	बंधणागारिय	कोलिक
गजाधिपति	ओपेसेज्जिक	पट्टकार	कुसीलक (व ?)	चोरलोपहार	वेज्ज
कोसरक्ख	आरामाधिगत	दुस्सिक	रंगवचर	मूलक्खाणक	कायतेगिच्छक
लेखक	णगररक्ख	रथक	गंधिक	मूलिक	सल्लकत्ता
गणक	असोकवणिकापाल	कोसेज्ज	मालाकार	मूलकम्म	सालाकी
पुरोहित	याणाधिगत	धाग	चुण्णकार	[illegible]	भूतविज्जिक
संवच्छर	आभरणाधिगत	सास	सूतमागध	हेरण्णिक	कोमारभिच्च
दाराधिगत	उदकवड्ढकि	महिसघातक	पुस्समाणव	सुवण्णिक	विसतित्थिक
दारपाल	मच्छबंध	उरसणिकामत्त	पुरोहित	चंदण०	सिप्पपारगत
बलगणक	नाविक	छत्तकारक	धम्मट्ठ	दुस्सिक	धम्मकार
सेणापति	वाहुविक	वत्थोपजीविक	महामंत	संखकारक	ण्हाविय
गणिकारक्खक	सुवण्णकार	फलवाणिय	दपकार	गोवस्तमतिकारक	गोहातक
वरिसधर	अलत्तकारक	मूलवाणिय	वड्ढस्सय	पृ. १६१	चोरघात
वत्थाधिगत	रत्तरजक	धण्णवाणिय	मणिकार	ओयकार	मायाकारक
णगरगुत्तिय	देवड	ओदुणिक	कोट्टाक	लोहू	गोरीपाढक
दूत	उण्णवाणिय	कम्मासमंसवाणिज्ज	वत्थुपाढक	कुंभकारिक	लंखक
अट्टणक	सुत्तवाणिय	तप्पणवाणिज्ज	वत्थुवापतिक	इट्टकार	मुट्ठिक
पेसणकारक	जतुकार	लोणवाणिज्ज	संतिक	वालेपतुंद	लासक
पतिहारक	चित्तकार	आपूपिक	मंडवापत	सुत्तवत्तय	वेलंबक
सरपअट्ट	चित्ताजीवी	खज्जकारक	तित्थवापत	कंसकारक	गंडक
णावाधिगत	लट्टकार	पण्णिक	आरामवावत	चित्तकारक	घोसक
तित्थपाल	सुद्धरजक	सिंगारवाणिय	रधकार	रूवपक्खर	

(७) स्थानाध्यक्षविभाग

पृ. १५९	गयाधियक्ख	गणिकक्खंस	पतिमारक्ख	पुरोहित	तारावति
राया	मज्जघरिय	बलगणक	सुंकसालिय	आयुधागारिक	गहवति
रायकम्मिक	पाणियघरिय	गाथक	रज्जक	सेणापति	जोतिपति
अमच्च	णावाधियक्ख	वरिसधर	पथवावत	कोट्ठाकारिक	जोतिसपति
अमच्चकम्मिक	सुवण्णाधियक्ख	वत्थुपारिसद	आडविक	पृष्ठ २३९	जगपति
णायक	हत्थिअधिगत	आरामपाल	णगराधियक्ख	सुरवति	गणपति
[illegible]	अस्सअधिगत	पव्वतपाल	सुसाणवावत	धणवति	कुलपति
भंडागारिक	योग्गघरिय	दूत	सूणावावत	जलवति	जूहपति
अब्भागारिक	गोवयक्ख	संधिपाल	चारकपाल	पोतवति	मिगपति
महाणसिक	पडिहार	सीसारक्ख	फलाधियक्ख	णरवति	गोपति
			पुप्फाधियक्ख	णइवति	पयापति

(८) यानविभाग

पृष्ठ ७१	गिल्ली	जलचरयान	पृष्ठ १६६	पल्लंकिका	जुग्ग
सकडी	सिबिका	णावा	स्थलचरयान	रथ	गोलिंग
सकडिका	संदमाणिका	कोट्टिंब	सिविका	संदमाणिका	सकट
थिल्ली	पृष्ठ १४६	दब्बालुय	महायण	गिल्लि	सकडी

द्वायित
मुह्वायित
जलचरयान
...वा
...
...द्दिव
...लिका
...पक
प्लव
पिंडिका
कंड
वेलु
तुंब
कुंभ
दति
संघाड
कट्ठ
सजीवयान
अस्स
हत्थि
उट्ट
गो
महिस
खर
अयेलक
मक सं. मृग
सिंगी
असिंगी
बलिवद्द
अय
एलग
याचितक जाण
आधावितक जाण
अपहरितक जाण
सक जाण
णव जाण
जुण्ण जाण
दुट्ठित जाण
सुट्ठित जाण
कीतक जाण
विक्कीत जाण
पडिरूव जाण
पृष्ठ १९२
सिविका
रथ
जाण
जुग्ग
कट्ठमुह
गिल्लि
संदण
सकड
सकडी

(९) नगर-विभाग

...ष्ठ १६१
...मणज्झोसियणगर
...मणोसण्णणगर
...त्तियज्झोसियणगर
...त्तिओसण्णणगर
...इस्सझोसितणगर
...स्सोसण्णणगर
...दुज्झोसियणगर
...दोसण्णणगर
...ायहाणी
...साखाणगर
चिरनिविट्ठनगर
अचिरनिविट्ठनगर
बहुउदकनगर
बहुवुट्ठीकनगर
अप्पोदगनगर
अप्पवुट्ठीकणगर
चोरवासणगर
अज्ञवासणगर
अप्पणगर
परणगर
दीहणगर
परिमंडलणगर
चतुरस्सणगर
कट्ठपागारपरिगतणगर
इट्टगपागारपरिगत-
णगर
दक्खिणोद्दागणगर
वामोद्दागणगर
पविट्ठणगर
वितिण्णणगर
गहणणिविट्ठणगर
आरामबहुलणगर
उद्धनिविट्ठणगर
पव्वतणगर
णिव्विसंदिणगर
पाणुप्पविट्ठणगर
बहुवाधीतणगर
अव्वाधितणगर
पृष्ठ १६२
अप्पुज्जोगणगर
अतिक्खदंडणगर
अप्पपरिक्खेसणगर
बहुविसाहणगर
बहुपरिक्खेस
कारामणणगर
पुरत्थिमदिसणगर
पच्छिमदिसणगर
दक्खिणदिसणगर
उत्तरदिसणगर
बहुअण्णपाणणगर
बहुवातकणगर
बहुवातोवद्दवणगर
बहुउण्हणगर
आलीपणगबहुलणगर
बहूदकणगर
बहुवुट्ठिकणगर
बहूदकवाहणगर
बहुमकसकणगर
सत्थप्पवातबहुलणगर
आसण्णणगर
जुत्तोपकट्ठणगर
पच्चंतिमणगर
सुभिक्खयोगक्खेम-
गतणगर
अणभिवुत्तणगर
विस्सुतकित्तियणगर
रमणीयणगर

(१०) गृह-शाला घर-निलय विभाग

पृष्ठ १३६
गब्भगिह
अब्भंतरगिह
भत्तगिह
वच्चगिह
उदगगिह
अग्गिगिह
भूमिगिह
मोहणगिह
दुवारसाला
उवट्ठाणजालगिह
सिप्पगिह
कम्मगिह
रयतगिह
ओधिगिह
उपलगिह
हिमगिह
आदंसगिह
तलगिह
आगमगिह
चतुक्कगिह
रच्छागिह
दंवगिह
कंसगिह
पडिकम्मगिह
कंकसाला
आतवगिह
पणियगिह
आसणगिह
भोयणगिह
रसोतीगिह
हयगिह
रधगिह
गयगिह
पुप्फगिह
जूतगिह
पातवगिह
खलिणगिह
वंधणगिह
जाणगिह
पृष्ठ १३७
भग्गगिह
जलगिह
महाणसगिह
रयणगिह
भंडगिह
ओसधगिह
वित्तगिह
पृष्ठ १३८
लतागिह
दगकोट्ठगगिह
कोसगिह
पाणगिह
सयणगिह
गयसाला
रधसाला
जूतसाला
पाणगिह
वत्थगिह
लेवणगिह
सवणगिह
उज्जाणगिह
जाणसाला
वेसगिह
ण्हाणगिह
अंगणगिह
आतुरगिह
संसरणगिह
सुंकसाला
करणसाला
पृष्ठ २२२
भत्तघर
वासघर
पडिकम्मघर
असोयवणिया
वित्तगिह
सिरिघर
ण्हाणघर
पुरसघर
दासीघर
देवागार
पृष्ठ २२३
अग्गिघर
णागघर
पृष्ठ २५८
तणसाला
तेमगिह
कारुगगिह
पथिक्खणिलय

(११) स्थान-प्रदेश गृह-प्राकारादिअवयव प्रादेशिकसंकेत विभाग

पृष्ठ १२६
नगरमूल
कोट्टक
णट्टट
रस्समूल
विमाण
गगण
संधि
समर
कडिकतोरण
पागार
चरिका
वेति (दि)
गयवारि
संकम
सयण
वलभी
रासि
पंसु
णिद्धमण
णिक्कूड
फलिखा
पावीर
वेदिका
ओसर
सोमाण
अब्भंतरपरियरण
गिहदुवारवाहा
अच्छणक
पृष्ठ १३७

(५)

पञ्चमं परिशिष्टम्

अंगविज्जामध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागशः सङ्ग्रहः

मनुष्यविभागः

(१) चतुर्वर्णविभाग पृष्ठ १०२–३

बंभण	बंभवेस्स	सुद्दबंभ	वेस्सखत्त	वेस्ससुद्द	सुद्दबंभ
बंभक्खत्त	वेस्सबंभ	खत्तिक	खत्तसुद्द	सुद्दवेस्स	
खत्तबंभ	बंभसुद्द	खत्तवेस्स	सुद्दखत्त	[illegible]	

(२) जातिविभाग पृष्ठ १४९

अज्ज	सुद्दवण्ण	ववहारोपजीवी	दीववासि	ओवात	अज्जदेसंतर
मिलक्खु	साम	सत्थोपजीवी	जणपदवासि	पुरत्थिमदेसीय	अणज्जदेसिज्ज
बंभण	कालक	खेत्तोपजीवी	चेट्टितक	दक्खिणदेसीय	
खत्तिय	महाकाय	णिक्खुडवासि	आपेलविध	पच्छिमदेसीय	
वेस्स	मज्झिमकाय	णिक्खुडदेसिज्ज	कण्ह	उत्तरदेसीय	
सुद्द-मिलक्खु	पच्चवरकाय	पव्वतवासि	कंचुकविध	अज्जदेसणिस्सित	

(३) गोत्रविभाग पृष्ठ १४९–५०

गहपतिक	संडिल्ल	वाढ	मुञ्जायण	लोहिच्च	इतिहास
दिजाति	कुंभ	डोहल	करयल्लायण	पियोभाग	रहस्स
भाड	माढवि	कंडूसी	गद्दिक	पच्चयव	सुयवेद
गोल	कस्सव	मागवानी	फेरित	संडिल्ल	सामवेद
हारित	गोतम	काकुरडी	वंमज	आपुरायण	यजुव्वेद
चंडक	अग्गिरस	कण्ण	काप्पायण	धारदारी	अहव्वेद
सकित(कसित)	[illegible]	भज्जदीण	[illegible]	वग्घपद	एकवेद
घामुल	भागवत	[illegible]	अप्पमग्गमा	पिल	दुवेद
वच्छ	सदय	मूलगोत्त	मार्लकायण	देवहच्च	तिवेद
कोच्छ	ओपम	मंन्नागोत्त	[illegible]	धारिपोल	सव्ववेद
कोसिक	कोकसिय	मेदाणुजोग	आमोसल	मुघर	छलंगवि
कुड-कोड	कवसिय	कठ	माढिव्व	धीगव	सेणिक
मगोत्त	चारायण	कलव	उपवाति	वेयाकरण	णिरागति
महगिगगोत्त	पारायण	वार्ल्य	दोम	मीमंसक	वेदपुट्ठ
बंभचारिक	अग्गिवेस्स	सेतस्सतर	वंभायण	छंदोक	सोत्तिय
पार	मोग्गल्ल	तेत्तिरिक	जीवंतायण	पण्णायिक	अज्झायी
मंदव	अट्ठिसेण	माढरम	दुढक	कठितसाग	आचरिय
सेट्ठि	पूतिमास	वासण	धगआय	धम्मिक	जावक
वासिट्ठ	गद्दभ	छंदोग	संगेय	जोतिसिक	णगति
					[illegible]

(४) योनिविभाग-अटक पृष्ठ १३८-४०

धम्मजोणि
अत्थजोणि
कामजोणि
मंगलजोणि
विप्पयोगजोणि
मित्तजोणि
विवादजोणि
पावासिकजोणि
पवुत्थजोणि
आगमणजोणि
णिग्गमजोणि
रायजोणि
रायाणुपायजोणि
रायपुरिसजोणि
वणियप्पथजोणि
कारुकजोणि
अणुयोगजोणि
अज्जजोणि
सिस्सजोणि
पेस्सजोणि
बंधणजोणि
मोक्खजोणि
मुदितजोणि
आतुरजोणि
मरणजोणि
सयितव्वजोणि
छिण्णजोणि
णट्ठजोणि
विणयजोणि
बंभचारिगजोणि
बंभणजोणि
खत्तियजोणि
वेस्सजोणि
सुद्दजोणि
बालजोणि
जोव्वणजोणि
मज्झिमजोणि
उत्तमजोणि
पच्चवरजोणि
अब्भंतरजोणि
बाहिरजोणि
साधारणजोणि
णपुंसकजोणि
पुण्णामजोणि
थीणामजोणि
अणागतजोणि
अतिक्कंतजोणि
वत्तमाणजोणि
पुरित्थिमजोणि
उत्तरजोणि
पच्छिमजोणि
दक्खिणजोणि
दक्खिणपच्छिमजोणि
पच्छिमउत्तरजोणि
पुव्वुत्तरजोणि
पुव्वदक्खिणजोणि
उपरिट्ठिमजोणि
हेट्ठिमजोणि
आहारणीहारजोणि
णीहाराहारजोणि
पाणजोणि
धातुजोणि
मूलजोणि
आभरणजोणि
धण्णजोणि
वत्थजोणि
रण्णजोणि
आरामजोणि
अधमजोणि
उण्णतजोणि
णिण्णजोणि
रसजोणि
वण्णजोणि
गंधजोणि
उदुजोणि

(५) सगप्पण (सगपण)

पृष्ठ ६८
पज्जिया
अज्जिया
णत्तिका
महमातुया
चुल्लमाता
माउस्सिया
पितुस्सिया
अत्ता
सही
धूता
णत्ती
पणत्तिणी
सुण्हा
सावत्ती
सहिका
मेधुणा
भातुज्जाया
भगिणी
भागिणेज्जा
पितुस्सहा
मातुस्सहा
पृ० २१९
अज्जय
पितर
पेतिज्ज
मातुल
मातुस्सिया
पितुस्सिया
चुल्लमातुया
अज्जिया
भाता
भगिणी
संल
संली
मेधुण
देवर
पतिजेट्ठ
भातुवयस्स
भगिणिपति
मातुलपुत्त
मातुस्सियापुत्त
अत्ता
साली
मातुस्सियापीतर
पितुस्सियापीतर
पित्तियपीतर
जावर
णणंदर
सही
भातुज्जा
सही
महपितुकपीतर
मातुलपीतर
सोदरी
जोणिभगिणी
सोदरियभगिणी
भागिणेज्ज
जोणिपुत्त
भत्तिज
भातुपुत्त
भगिणिपुत्त
धीया
मातुपीतर
भगिणिपीतर
ण्हुसा

(६) कर्मविभाग-व्यापारविभाग

पृष्ठ ७९
परिहारक
जंघावाणियक
दिसावाणियग
उवहारग
मागहारग
पेसणिय
कारिट्ठभूमिप
णिवामक
दुरियधारक
[illegible]
इच्छाहारक
[illegible]
[illegible]
णरधारक
[illegible]
पृष्ठ ८१
उक्खित्ततुंबिक
बाहिरतुंबिय
पक्खस्सछपक
कप्पुट
भागहारक
साधिगरणरर
पृष्ठ ८८
परिहारि
मंधियाल
अट्टमागारिक
पृष्ठ ८९
धम्मकम्मिक
[illegible]
वट्टहारक
आरामपालक
उज्जाणपालक
घणपालक
पुप्फुधाण
फलुधाण
वत्तगोपालग
खेत्तपाल
पव्वतपाल
पृष्ठ ९०
उग्गायक
कंगिक
सुराकारि
पृ० ९१
दिविआहारिक
पासंविक
उम्मालक
वारवर
गीतकारि
णट्टक
भगिणक
जागक
आजीवणिक
पृ० ९२
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पृ० १४३
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पृ० १५९
रायपोरिस
ववहार
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
सीमारक्ख
परिहारक
गूल (गूढ)
महागणिक
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
पृ० १६०
[illegible]

उट्टपाल
मगलुद्दग
ओरब्भिग
अहिनिप
हत्थिमहामत्तो
गोसंखी
गन्नाधिपति
कोसरक्ख
लेखक
गणक
पुरोहित
[illegible]
दाराधिगत
दारपाल
[illegible]
सेणापति
गणिकारक्खक
वरिसधर
वत्थाधिगत
णगरगुत्तिय
दूत
अड्डणक
पेसणकारक
पतिहारक
तरपमद्द
णावाधिगत
तित्थपाल

पाणियघरिय
ण्हाणघरिय
सुराघरिय
कट्ठाधिकत
तणाधिगत
धीतपाल
ओपेसेज्जिक
आरामाधिगत
णगररक्ख
असोकवणिकापाल
वाणाधिगत
आभरणाधिगत
वड्ढकवड्ढकि
मच्छबंध
नाविक
वाहुविक
सुवण्णकार
अलत्तकारक
रत्तरजक
देवड
उण्णवाणिय
सुत्तवाणिय
जतुकार
चित्तकार
चित्ताजीवी
वट्टकार
सुद्धरजक

लोहकार
सीतपट्टक
कुंभकार
मणिकार
संखकार
कंसकार
पट्टकार
दुस्सिक
रयक
कोसेज्ज
वाग
साम
महिसघातक
उस्सणिकामत्त
छत्तकारक
वत्थोपजीविक
फलवाणिय
मूलवाणिय
धण्णवाणिय
ओदणिक
कम्मासतमंसवाणिज्ज
तप्पणवाणिज्ज
लोणवाणिज्ज
आपूपिक
खज्जकारक
पणिक
सिंगारवाणिय

छत्तधारक
पसाधक
हत्थिखंभ
अस्सखंस
अग्गिउपजीवी
आहितग्गि
कुसीलक (व?)
रंगवचर
गंधिक
मालाकार
सुण्णकार
सूतमागध
पुस्समाणव
पुरोहित
धम्मट्ठ
महामंत
दपकार
बहुस्सय
मणिकार
कोट्टाक
वत्थुपाढक
वत्थुवापतिक
मंतिक
मंडवापत
तित्थवापत
आरामवापत
रथकार

दारुकआधिकारिक
सामेलक्ख
हत्थारोह
अस्सारोह
पेस्स
बंधनागारिय
चोरलोपहार
मूलक्खाणक
मूलिक
मूलकम्म
सत्थक
हेरण्णिक
सुवण्णिक
चंदण०
दुस्सिक
संजुकारक
गोवज्झभतिकारक
पृ. १६१
ओयकार
मोड्ढ
कुंभकारिक
दड्ढकार
वालेरतुंद
सुत्तवत्तय
कंसकारक
चित्तकारक
रूवपक्खर

फलकारक
सीकाहारक
मट्ठहारक
कोसेज्जवायक
दियंडकंबलवायक
कोलिक
वेज्ज
कायतेगिच्छक
सल्लकत्ता
सालाकी
भूतविज्जिक
कोमारभिच्च
विसतित्थिक
सिप्पपारगत
धम्मकार
ण्हाविय
गोहावक
घोरघात
मायाकारक
गोरीपाढक
लंखक
मुट्ठिक
लासक
वेलंबक
गंडक
घोसक

(७) स्थानाध्यक्षविभाग

पृ. १५९
राया
रायकम्मिक
अमच्च
अमच्चकम्मिक
णायक
[illegible]
भांडागारिक
अब्भागारिक
महाणसिक

गयाधियक्ख
मज्जघरिय
पाणियघरिय
णावाधियक्ख
सुवण्णाधियक्ख
हत्थिअधिगत
अस्सअधिगत
योग्गाघरिय
गोवयक्ख
पडिहार

गणिकक्खंस
वल्लणक
गायक
वरिसधर
वत्थुपारिसद्द
आरामपाल
पव्वतपाल
दूत
संधिपाल
सीमारक्ख

पतिभारक्ख
सुंकसालिय
रज्जुक
पधवावत
आडविक
णगराधियक्ख
सुमाणवावत
सूणावावत
चारकपाल
फलाधियक्ख
पुप्फाधियक्ख

पुरोहित
आयुधागारिक
सेणापति
कोट्ठाकारिक
पृष्ठ २३९
सुरवति
धणवति
जलवति
पोतवति
णरवति
णदवति

धारावति
गहवति
जोतिपति
जोतिसपति
जगपति
गणपति
कुलपति
जूहपति
मिगपति
गोपति
पयापति

(८) यानविभाग

पृष्ठ ७१
सकडी
सकटिका
थिल्ली

गिल्ली
सिविका
संदमाणिका
पृष्ठ १९८

जलचरयान
णावा
कोट्टिंब
[illegible]

पृष्ठ १६६
स्थलचरयान
सिबिका
महायान

पल्लंकसिका
[illegible]
संदमाणिका
गिल्लि

जुग्ग
गोलिंग
[illegible]
सकडी

उल्लायित
अणुल्लायित
जलचरयान
णावा
पोत
कोट्टिंब
सालिका
तप्पक
प्लव
पिंडिका
कंड
वेलु
तुंब
कुंभ
दति
संघाड
कट्ठ
सजीवयान
अस्स
हत्थि
उट्ट
गो
महिस
खर
अयेलक
मक सं. मृग
सिंगी
असिंगी
बलिवद्द
अय
एलग
याचितक जाण
आधावितक जाण
अपहरितक जाण
सक जाण
णव जाण
जुण्ण जाण
दुट्ठित जाण
सुट्ठित जाण
कीतक जाण
विक्कीत जाण
पडिरूव जाण
पृष्ठ १९३
सिविका
रध
जाण
जुग्ग
कट्ठमुह
गिल्लि
संदण
सकड
सकडी

(९) नगर-विभाग

पृष्ठ १६१
बंभणज्झोसियणगर
बंभणोसण्णणगर
खत्तियज्झोसियणगर
खत्तियोसण्णणगर
वइस्सज्झोसितणनगर
वेस्सोसण्णणगर
सुद्दज्झोसियणगर
सुद्दोसण्णणगर
रायहाणी
साखानगर
चिरनिविट्ठनगर
अचिरनिविट्ठनगर
बहुउदकनगर
बहुवुट्ठीकनगर
अप्पोदगनगर
अप्पवुट्ठीकणगर
चोरवासणगर
अञ्जवासणगर
अप्पणगर
परणगर
दीहणगर
परिमंडलणगर
चतुरस्सणगर
कट्ठपागारपरिगतणगर
इट्टगपागारपरिगत-
णगर
दक्खिणोद्दागणगर
वामोद्दागणगर
पविट्ठणगर
विथिण्णणगर
गहणणिविट्ठणगर
आरामबहुलणगर
उद्धनिविट्ठणगर
पव्वतणगर
निरिक्खंदिणगर
पाणुप्पविट्ठणगर
बहुवाधीतणगर
अव्वाधितणगर
पृष्ठ १६२
अप्पुज्जोगणगर
अतिक्खदंडणगर
अप्पपरिक्लेसणगर
बहुविग्गहणगर
बहुपरिक्खेस
कारामणणगर
पुरत्थिमदिसणगर
पच्छिमदिसणगर
दक्खिणदिसणगर
उत्तरदिसणगर
बहुअण्णपाणणगर
बहुवातकणगर
बहुवातोवद्दवणगर
बहुउण्हणगर
आलीपणगबहुलणगर
बहूदकणगर
बहुखुट्टिकणगर
बहूदकवाहणगर
बहुमकसकणगर
सत्थप्पवातबहुलणगर
आसण्णणगर
जुत्तोपकट्ठणगर
पच्चंतिमणगर
सुभिक्खयोगक्खेम-
गतणगर
अणभिवुत्तणगर
विस्सुतकित्तियणगर
रमणीयणगर

(१०) गृह-शाला घर-निलय विभाग

पृष्ठ १३६
गब्भगिह
अब्भंतरगिह
भत्तगिह
वच्चगिह
उदगगिह
अग्गिगिह
भूमिगिह
मोहणगिह
दुवारसाला
उवट्ठाणजालगिह
सिप्पगिह
कम्मगिह
रयतगिह
ओधिगिह
उपलगिह
हिमगिह
आदंसगिह
तलगिह
आगमगिह
चतुकगिह
रच्छागिह
दंतगिह
कंसगिह
पडिकम्मगिह
कंकसाला
आतवगिह
पणियगिह
आसणगिह
भोयणगिह
रसोतीगिह
हयगिह
रथगिह
गयगिह
पुप्फगिह
जूतगिह
पातवगिह
सालिणगिह
वंधणगिह
जाणगिह
पृष्ठ १३७
भग्गगिह
जलगिह
महाणसगिह
रयणगिह
भंडगिह
ओसधगिह
चित्तगिह
पृष्ठ १३८
लतागिह
दगकोट्ठगगिह
कोसगिह
पाणगिह
सयणगिह
गयसाला
रथसाला
जूतसाला
पाणगिह
वत्थगिह
लेवणगिह
सवणगिह
उआणगिह
जाणसाला
वेसगिह
ण्हाणगिह
अंगणगिह
आतुरगिह
संसरणगिह
सुंकसाला
करणसाला
पृष्ठ २२२
भत्तघर
वासघर
पडिकम्मघर
असोयवणिया
चित्तगिह
सिरिघर
ण्हाणघर
पुरसघर
दासीघर
देवागार
पृष्ठ २२३
अग्गिघर
णागघर
पृष्ठ २५८
वणसाला
तेमग्गिह
कारागिह
पधिकणिलय

(११) स्थान-प्रदेश गृह-प्राकारादिअवयव प्रादेशिकसंकेत विभाग

पृष्ठ १३६
करंजरमूल
कोट्ठक
णट्ट
रस्समूल
विमाण
गगण
संधि
समर
कडिकतोरण
पागार
चरिका
वेति (दि)
गयवारि
संकम
सयण
वलभी
रासि
पंसु
णिद्दमण
णिव्वूड
फलिहा
पासीर
वेदिका
ओसर
सोमाण
अब्भंतरपरियरण
गिहदुवारबाहा
अप्पगक
पृष्ठ १३७

चच्चर
थंगण
वियडप्पकास
रायपध
सिंघाडग
खेत्त
अट्टालय
उदकपध
वय
वप्प
पउली
अस्समोहणक
खंभ
आगमणसंरोध
पृष्ठ १३८
आपूसग
मंडव
पवा
सेतुकम्म
पुरोहड
पृष्ठ १४५
चच्चर
महापध
निल्य
उदुपाण
पृष्ठ १४६
जलस्थान
णदी
समुद्द

कूव
तलाक
विडरण
पस्सवण
पृष्ठ १४८
जूव
चिति
सेतुबंध
आयतण
पृष्ठ १५२
पव्वत
सागर
मेदिणी
णदी
चेतिय
आयाग
पृष्ठ २००
देस
णिगम
णगर
पट्टण
खेड
आगर
गाम
सण्णिवेस
पृष्ठ २०१
रायधाणी
पासाद
गिह

सिव
आराम
तलाग
सेतु
पृष्ठ २१४
पासाय
मल्ल
पट्टीखंभ
आलग्ग
पागार
गोपुर
अट्टालग
पव्वत
घर
देवतायतण
गिह
कूविया
आकास
जणपद
अरण्ण
सीमंतिका
खेत्त
रच्छा
णिवेसण
रायमग्ग
कुड्ड
णिव्व
पणाली
वच्चाड

अंगण
पृष्ठ २२१
अरंजर
उट्टिया
पल्ल
कुड्ड
णिव्वर
उसल्लिका
पृष्ठ २२२
माल
वातपाण
कुड्ड
बिल
णाली
थंभ
अंतरिया
पस्संतरिया
कोट्ठागार
अरस्स
आयुपध
पणाली
उदकचार
वच्चाडक
अरिट्ठगहण
वेसण
अंतेपुर
निय
सिंघाडग
चउक्क

रायपथ
महारच्छा
उस्साहिया
पासाद
गोपुर
अट्टालग
पकंठ
तोरण
थार
पव्वत
वासुल्ल
थूम
एलुय
पवात
वप्प
तलाक
दहफलिका
णदी
फलिहा
पाकार
वय
परिखा
पय
सुत्त
पाली
सुसाण
वधभूमि
मंडलभूमी
पवा

उदुपाण
उट्टियपट्टग
जणवाद
देवायतण
संगामभूमी
पृष्ठ २२३
खेत्त
वप्पु
गाम
णगर
सण्णिवेस
आवास
कुंड
णदी
तलाग
पुक्खरणी
कूव
सर
फलिह
खेड
पागार
पंडपाली
एलुग
थेति
पवा
पंथ
पव्वत
पृष्ठ २३४
उदुपाण
वीती

(१२) सिक्क विभाग

पृष्ठ ६६
सुवण्णमासक
रययमासक

दीणारमासक
ऊणमासक
काहापण

खत्तक
पुराण
सतेरक

पृष्ठ ७२
सुवण्णकाकणी
मासकाकणी

सुवण्णगुंजा
दीणारि

(१३) भाण्डोपकरणविभाग

पृष्ठ ६५
पुंजातीय भंडो-
गरण
अरंजर
अलिंद
कुंडग
माणक
घडक
कुडारक

वारक
कलस
गुलमग
पिढरक
मल्लगभंड
पत्तभंड
लोहमय
मणिमय
संखमय

सिप्पमय
सेलमय
पृष्ठ ७२
थीजातीय भंडो-
गरण
अलिंदिका
पत्ती
उक्खली
थालिका

कालंची
करकी
कुडारिका
थाली
मंडी
घडी
दव्वी
केला
उट्टिका

माणिका
णिसका
आयमणी
चुल्ली
फूमणाली
समंछणी
मंजूसिका
मुद्दिका
सलाकंजणी

पेल्लिका
धूतुल्लिका
पिंच्छोला
फणिका
दोणी
उक्कुलिणी
पाणी
अमिला
पडालिका

तवी
वत्थरिका
कुद्दाली
वासी
छुरिका
कवल्ली
दीविका
कडच्छकी
पृष्ठ १९१
उवाहण
छत्तक
तप्पण
कत्तरिका
कुंडिका
उक्खलिका
पादुका
उपाणह
पृष्ठ १९३
उक्खुली
पिट्ठग

दविउलंक
रसदव्वी
[illegible]
उपाणह
पाउगा
उक्खुभंड
उभिखण
[illegible]
रपसाणग
वणपेलिका
विवट्टणग
अञ्जणी
पसाणग
मादंसग
पृष्ठ १९८
छत्त
भिंगार
थीयणिया
तालवोंट
पृष्ठ २०१

सयण
आसण
जाण
वाहण
वत्थ
आभरण
परिच्छद
सत्थावरण
पृष्ठ २२१
सुत्तिक
संखागवलमय
दंतमय
सिंगमय
अट्ठिकमय
वालमय
लोहमय
चम्ममय
पृष्ठ २३०
थंजणी
फणिका

वीजणी
दंडा
धूमणत्त
वीजणिया
चामर
अरसमंड
मच्छा
दितिका
अजीण
पृष्ठ २५४
इंगालकोट्टक
इंगालसकडिका
कडुच्छ
धूपघडिका
धूमकरणाक
धूमण
पिसायक
धूमणेत्त
खारापक
मीजणक

धूमणाली
अग्गिकारिका
अग्गिकुंड
जग्गंतक
संदीपण
दीव
चुडली
मधअग्गि
चुलक
चुली
चितका
कुंफुका
अहिमकरिका
अग्गिपखंडक
पृष्ठ २५५
कुड
[illegible]
अरंजर
उट्टिक
आचमणिक

करक
कुंडिका
पृष्ठ २६२
छत्त
भिंगार
पडागा
लोमहत्थ
वासगकडक
चामर
वीजणी
पृ० २२१
स्थगिका
संपुड
पेला
पेलिका
करंडग
संकोसक
पणसक
थइया
पसेव्वक

(१४) भाजनविभाग

पृष्ठ ६५
पुंभायण
वट्टक
सरक
थाल
सिरिकुंड
पणसक
अद्धकविट्ठग
सुपतिट्ठक
पुक्खरपत्तग
सरग
मुंडग

सिरिकंसग
थालक
दालिमपुसिक
णालक
मल्लकमूलक
करोडक
घट्टमाणग
अलंदक
जंबुफलक
भंडभायण
खोरक
वट्टक

मुंडक
पीणक
पृष्ठ ७२
थीभायण
करोडी
कंसपत्ती
पालिका
सरिका
भिंगारिका
कंचणिका
कवचिका
पृष्ठ १८०

पाणजोणिमय
धातुजोणिमय
मूलजोणिमय
पाणजोणिमय
सिप्पिपुड
संखमय
मूलजोणिमय
कट्ठमय
फलमय
पत्तमय
धातुजोणिमय
सुवण्णमय

रुप्पमय
तंबमय
कंसमय
काललोहमय
सेलमय
मत्तिकामय
पृष्ठ २१४
लोही
कडाह
अरंजर
उक्खली
रकि

लोहीवार
उट्टिक
आयमणी
सत्थीआयमणी
[illegible]
कडुलंडी
पृष्ठ २२१
कट्ठमय
पुप्फमय
[illegible]
पत्तमय

(१५) भोजनविभाग

पृष्ठ ६४
पुंभोयण
कूर
ओदण
मद्य
असण
भोयण
जेमण
आहार

पायस
परमन्न
दधिताव
विलेपिक
दधिकूरक
दुद्धकूरक
घतकूरक
सासवकूरक
गुलकूरक

पत्तकूरक
कुलत्थकूरक
मुग्गकूरक
मासकूरक
ओदणकूरक
अतिकूरक
तिलकूरक
मूतकूरक
थीआहार

पृष्ठ ७१
दुदुण्हिका
उद्दुण्हिका
समगुण्हिका
जागू
कसरी
अंबिली
पत्तंबेली
वाल्कडी

तक्कुली
कुम्मासपिंडी
सत्तुपिंडी
तप्पणपिंडी
इतिपिंडी
ओदणपिंडी
तिलपिंडी
पीडपिंडी
रव्हामसी

रसाला
पडिमट्ठा
चोराली
अंबपिंडी
अंबकधूती
उलूरधूविता
अंबाडगधूती
भोजन
पृष्ठ १७६

पाणजोणिगत
मूलजोणिगत
धातुजोणिगत
पाणजोणिगत
दुद्ध
दधि
णवणीत
[illegible]
घत
मंस
वसा
मधु
संखयआहार
असंखयआहार
सोतगुल
[illegible]
अग्गेयआहार
अणग्गेयआहार
पृष्ठ १७७
मूलजोणिगत
मूलगत
खंधगत
अग्गगत
कंदगत
तजगत
णिज्जासगत
णिज्जासगत
सिरिविट्ठकसह
छता
सल्लकि
कास
सोणिय
[illegible]
लसिया
जवागू
उच्छुरस
गोलोय
पत्तरस
पुप्फरस

फलरस
[illegible]
अग्गगत
पत्तगत
पुप्फगत
फलगत
पुप्फगत
पत्तगपुप्फ
गुलुकपुप्फ
मंजरीपुप्फ
फलगत
रुक्खगत
गुम्मगत
वल्लीगत
छुपगत
पृष्ठ १७८
सालि
कोद्दव
वीहि
कंगु
रालक
वरक
सामाग
तिल
मास
मुग्ग
चणक
कलाव
णिप्फाव
मसुर
कुलत्थ
तुवरि
[illegible]
गोधूम
कुसुंभ
सासव
अतसी
मधुर
तित्त

कसाय
अंबिल
कडुक
लवण
पृष्ठ १७९
विस्सोदण
अतिकूरक
गुलकूरक
घतकूरक
विलेपि
पायस
कसरि
दधिताव
सकुलि
अंबेल्लि
अंबिलक
पालीक
पक्खिमंस
परिसप्पमंस
चतुप्पदमंस
सिंगिचतुप्पदमंस
असिंगिचतुप्पदमंस
पृष्ठ १८०
अट्ठमंस
सुक्कमंस
उस्सयभोयण
मतकभोयण
सड्ढकभोयण
दासीभोयण
वालोपणयणभोयण
देवताभोयण
मंतगहणभोयण
मंतसमावणभोयण
विज्जागहणभोयण
विज्जासमत्तिभोयण
अभिणवभोयण
सीतभोयण
भिक्खोदण
असामण्णभोयण
सहभोयण

पाणजोणिमयभायण-भोयण
धातुजोणिमयभायण-भोयण
मूलजोणिमयभायण-भोयण
जवागू
दुद्धजवागू
घयजवागू
तेल्लजवागू
अंबिलजवागू
उण्हियजवागू
ओसधजवागू
आलुक
कसेरुक
सिंघाडक
भिस
भिसमुणाल
चाय
मच्छंडिका
गुल
सक्करगुल
इक्कास
पृष्ठ १८२
तप्पणा
बदरचुण्ण
विक्कस
कलायभज्जिया
मुग्गभज्जिया
जवभज्जिया
गोधुमभज्जिया
सालिभज्जिया
तिलभज्जिया
अणग्गेयलवण
सामुद्द
सेंधव
सोवच्चल
पंसुक्खार
अग्गेयलवण
जवखार

सोवच्चिका
पिप्पली
खारलवण
वट्टभोयण
मोदक
पेंडिक
पप्पड
मोरिंडक
सालाकालिक
अंबट्टिक
वित्थडभोयण
पोवलिक
वोक्किलक
पोवलक
पप्पड
सक्कुलिका
पूप
फेणक
अक्खपूप
अपडिहत
पवितल्लक
वेलातिक
पत्तभज्जित
उल्लोपिक
सिद्धत्थिका
बीयक
उक्कारिका
मंडिल्लका
दीहभोयण
दीहसकुलिका
खारवट्टिक
खोडक
दीवालिक
दसिरिका
भिसकंटक
मत्थतक
लेज्झभोयण
फाणित
कक्कब
तिलक्खली

पलाल
संथाराग
लेज्झचुण्ण
भोजन
पृष्ठ २२०
दुद्ध
दधि
[illegible]
णवणीत
कुचिया
आमधित
गुलदधि
रसालादहि
मंथु
परमण्ण
दधिताव
तक्कोदण
अतिकूरक
मंस
रुधिर
वसा
कुसण
कोलत्थ
तंबलिक
साकरस
थूणिकाखल
अंबिल
उपसेक
पृष्ठ २४६
दुद्धुण्हिका
दधिताव
अंबेल्लि
विलेपिका
[illegible]
गंगावत्तग
चुक्कितक
चप्पडी
अंबट्टिग
घतउण्ह
पोवलिका

(१६) पेयविभाग

पृष्ठ ६४
पुंपेय
[illegible]
पक्करस

अरिट्ठ
आसव
मेरक
मधु

गोधसालक
पाणक
रस
जूस

खलक
पाणीय
खीर
दुद्ध

दधि
पय
गुल
णवणीत

दधि
घित
तेल
फाणित

सुरा
पृष्ठ १८१
पसण्णा
पसन्ना
अरिट्ठ
मद्दु

सेतसुरा
पृष्ठ २२१
पसण्णा
णिट्ठिता
मधुरक
आसव

जगल
मधुरसेरक
अरिट्ठ
अट्टकालिका
आसवासव
सुरा
कुसुकुंडी

जयकालिका
पृष्ठ २५८
बहुपिट्टिया
पसन्ना
जातिकसण्णा
अरिट्ठा

रस
पृष्ठ २३२
गुग्गुलविगत
सज्जलस
इक्कास
सिरिवेट्ठक

चंदणरस
तेलवण्णिकरस
कालेयकरस
सहकाररस
मातुलुंगरस
करमंदरस
सालफलरस

(१७) वस्त्रविभाग

पृष्ठ १६३
वत्थ
कोसेज्ज
पतुण्ण
आविक
पत्तुण्ण
खोम
दुगुल्ल
चीणपट्ट
कप्पासिक
पट्ट
लोहजालिका

सुवण्णपट्ट
सुवण्णखसित
काललोहजालिक
सकलदस
वहियदस
छिण्णदस
विचाडित
सिव्वित
पावारक
कोतवक
उण्णिक
अत्थरक

वधुवत्थ
मतकवत्थ
विलात
आतवितक
ओमहित
पृ० १६४
सेयालक
मयूरग्गीव
करेणूयक
कप्पासिकपुप्फक
पउमरत्तक
मणोसिलक

मेचक
जातिपट्टणुग्गत
पट्टिक
वट्टण
सीसेकरण
उत्तरिज्ज
अंतरिज्ज
पच्चत्थरण
वितानक
परिसरणक
पृ० २२१
कोसेज्जक

आविक
आविकपत्तुण्ण
अजीणपट्ट
अजीणप्पवेणी
चम्मसाडी
वालवीर
पृ० २३०
सजीवक
पत्तुण्ण
अजीणप्पवेणी
अजीणकंबल
वालसाडी

वालमुंडिका
वालव्वयणी
अजिणगकंचुका
चम्मसाडी
पृ० २३२
खोमक
दुगुल्ल
जंगिक
चीणपट्ट
वागपट्ट
कप्पासिक

(१८) आच्छादनविभाग

पृष्ठ ६४
पुंअच्छादण
पडसाडग
खोमदुगल्लग
चीर्णसुग
चीणपट्ट
पावार
पट्ट

साडक
सेदसाड
कोसेयपारय
कंबलक
उत्तरिज्ज
अंतरिज्ज
उस्सीस
वेघण

कप्पास
कंचुक
वारवाण
वितानक
पच्छत
सण्णाहपट्टक
मल्लसाडग
पृष्ठ ७१

थीअच्छादण
पउण्णा
पएणी
वण्णा
सोमित्तिकी
अद्धकोसिज्जिका
पसरादी
पिनाणा
दियवंतरा

लेखा
वाडकाणी
वेल्लविका
परत्तिका
माहिसिका
इड्डी
जामिलिका
थीअच्छादणप-
कार्यक

सण्हा
थूला
सुवुता
दुब्बुत्ता
अप्पग्घा
महग्घा
अहता
धोनिका

(१९) भूषण–आभरण–अलंकारविभाग

पृष्ठ ६४-६५
पुंजातीयभूसण
तिरीड
मउड
सीहभंडक
अलकपरिक्खेव
मत्थककंटक
गरुलक
मगारक
दसमक
सीटक
हरियक
चक्कमिहुणग

झंकक
[illegible]
खड्डुग
णिडालमासक
तिलक
मुहफलक
विसेसक
अनंग
कुंडल
चक्क
मत्थग
[illegible]
दक्खागक

कुरबक
कण्णकोवग
कण्णपील
कण्णपूरक
कण्णखीलक
कण्णलोडक
केयूर
तलभ
कंदूग
परिहेरग
आवेढग
वलयग
हत्थकलापग

हत्थखड्डुग
अणंत
सुहुग
हत्थमंडक
कंकण
वेढक
हार
अद्धहार
फल्हारक
वेकच्छग
गेवेज्ज
कट्ठ
कडक

सुत्तक
सोवण्णमुत्तग
निगिंच्छिग
हिदयत्ताणक
सत्थिक
सिरिवच्छ
अट्ठमंगलक
सोत्तिमुत्त
रयणकलावग
गंडूपक
ससिपधम्मक
णीपुरग
अंगजक

[illegible]
पादखडुयग
परमासक
पादकलावग
सरजालक
बाहुजालक
ऊरुजालक
पादजालक
अक्खक
पुस्सकोकिलक
कंचीकलावक
हमुडोलक
पृ. ७१

थीजातीयभूसण
सिरीममालिका
णलियमालिका
मकरिका
ओराणी
पुप्फितिका
मकण्णी
लकडा
वालिका
कण्णवलीका
कण्णिका
कुंडमालिका
सिद्धत्थिका
अंगुलिमुद्दिका
अक्खमालिका
संघमालिका
पयुका
णितिरिंगी
कंटकमालिका
घणपिच्छलिका
विकालिका
एकावलिका
पिप्पलमालिका
हारावली
मुत्तावली
कंची
रसणा
जंबूका
मेखला
कंटिका
संपडिका
पामुद्दिका
खम्मिका
पादमुद्दिका
पायढ्ढिका
खिंखिणिका
पृ. ११६
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कण्णवलयक
खड्डक
मुद्दिका
वेढक
कण्णपालिक
णीपुर
कण्णुप्पलक
पृष्ठ १६२
प्राणयोनिगत
धातुयोनिगत
मूलयोनिगत
प्राणयोनिगत
संखमय
मुत्तामय
दंतमय
गवलमय
वालमय
कट्ठमय
मूलयोनिगत
कट्ठमय
पुप्फमय
फलमय
पत्तमय
धातुयोनिगत
सोवण्णमय
रुप्पमय
तंबमय
सीसमय
लोहमय
तपुमय
काललोहमय
आरकूडमय
गोमेयक
लोहितक्ख
पवालक
रत्तक्खारमणि
लोहितक
[illegible]
विमलक
सेतक्खारमणि
मसारकल्ल
कालक्खारमणि
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सिरआभरण
ओचूलक
णंदिविणद्धक
अपलोकणिका
सीसोपक
कण्णाभरण
तलपत्तक
आवद्धक
पलिकामदुघनक
कुंडल
[illegible]
ओकासक
कण्णेपूरक
कण्णुप्पीलणक
अक्खिआभरण
अंजण
भुकुटिआभरण
मषी
गण्डाभरण
हरिताल
हिंगुलुय
मणसिला
ओट्ठाभरण
अलत्तक
कण्ठाभरण
वण्णसुत्तक
तिपिसाचक
विज्जाधारक
असीमालिका
हार
अद्धहार
पुप्फलक
आयलिका
पृष्ठ १६३
मणिसोमाणक
अट्ठमंगलक
पेचुका
वायुमुत्ता
पुप्फसुत्त
[illegible]
[illegible]
बाहुआभरण
अंगय
तुडिय
[illegible]

हत्थाभरण
हत्थकडग
कडग
रुचक
सूचीक
हत्थोपक
अंगुलिआभरण
अंगुलेयक
मुद्देयक
वेंटक
कटिआभरण
कंचिकलापक
मेखलिका
कडिउपक
जंघाआभरण
गंडूपयक
णीपूर
परिहेरक
पादाभरण
खिंखिणिक
खत्तियधम्मक
पादमुद्दिका
पादोपक
तिलक
पृष्ठ २४६
बालतिलक
कण्णातिलग
तवणिज्जतिलग
पदुमतिलग
पृष्ठ १८३
पादकलाप
पादकिंकिणीका
खत्तियधम्मक
पादुका
उपाणह
मल्ल
मुकुड
[illegible](?)
ण्हाण
पघोवण
[illegible]
[illegible]
हरिताल
हिंगुलुक
मणसिल

अंजण
चुण्णक
अलत्तक
गंधवण्णक
कण्णसोधणक
अंजणी
सलाका
कुच्चठावण
कुंच
सूची
धूपण
गंधविधी
सासा
खम्मिका
वतंसक
ओवास
कण्णपीलक
कण्णपूरक
णंदीविणद्धक
[illegible]
तिलक
कुंडल
वलिका
तलपत्तक
पृष्ठ १९३
अंजण
[illegible]
पघोवण
पच्चासण
अणुलेवण
विसेसकाप
धूमाधिवास
परिधाण
उत्तरासंग
सोणिसुत्त
[illegible]
सुरभिजोग
हत्थोपक
संविधाण
भिंगार
छत्त
[illegible]
[illegible]
पृष्ठ २२१
सुवण्ण

कप्प
तंब
हारकूड
तपु
सीसक
काललोह
वट्टलोह
सेल
मत्तिका
कट्ठमय
पुप्फमय
फलमय
पत्तमय
पृष्ठ २४२
सुंभलक
पेलक
मुकुड
वेढण
मालिका
वट्ट
सीसावक
पृष्ठ २५९
सुं (सुं) भलक
[illegible]
आपेलग
मालिका
वट्टापेल
मुकुड
तेल्ल
पृष्ठ २३२
कुसुंभतेल्ल
अतसीतेल्ल
[illegible]
करंजतेल्ल
उण्हीपुण्णामतेल्ल
तिलतेल्ल
उसणीतेल्ल
वसीतेल्ल
सासवतेल्ल
पूतिकरंजतेल्ल
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मूलकतेल्ल

अतिमुत्तकतेल्ल
तिलतेल्ल

इंगुदीतेल्ल
पधकलीतेल्ल

चंपकतेल्ल
चंदुणिकापुस्सतेल्ल

जातीतेल्ल
पीलुतेल्ल

यूथिकातेल्ल
ओसधतेल्ल

वक्किकतेल्ल
पुस्सतेल्ल

(२०) आसनविभाग

पृष्ठ १५
पल्लंक
फलक
कट्ठ
पीढिका
आसंदक

फलकी
भिसी
चिंफलक
मंचक
महासण
पीढग

कट्ठखोड
मदट्टिका
उप्पल
लोहसंघात
दंत
अट्ठिक

मूमीमय
तणमय
छगणपीढग
पुप्फ
फल
बीय

तण
साडा
मही
पृष्ठ १७
डिप्फर
खट्टा

अत्थरक
पवेणी
कंबल
सुहस्सहा
कट्ठपीढ
खेडुखंड
समंथणी

(२१) शयनासनविभाग

पृष्ठ ५२
सयणासण
पल्लंक
मसारय
मंचक
खट्टा
फलिक
मंचिक
कणक

तलिय
भूमि
सिलातल्ल
फलपुप्फहरितसेज्जा
तिणसेज्जा
सुककट्ठसेज्जा
जाणसेज्जा
बीयसेज्जा
धणधण्णसेज्जा
पहरणावरणसेज्जा

सेलसेज्जा
तुससेज्जा
लोहसेज्जा
अंगारछारिकासेज्जा
झामसेज्जा
मासालग
पृष्ठ ६५
पुंजातीयसयणासण
आसण

सव्वतोभद्द
सयणासण
आसंदग
भद्दपीढ
पादफल
वट्टपीढक
डिप्फर
पीढफलक
सरियक
तलिय

मसूरक
अत्थरक
कोट्टिम
सिलातल्ल
मासाल
मंचक
पल्लंक
पडिसेज्जक
पृष्ठ ७२

थीजातीय सय-
णासण
सेज्जा
खट्टा
भिसी
आसंदी
पेढिका
महिसाढ
सिला
फलकी
इट्टका

(२२) अपश्रयविभाग–टेका–तकिया

पृष्ठ २६
आसणापस्सय
आसंदय
भद्दपीढ
डिप्फर
फलकी
भिसी
कट्ठपीढ
तणपीढ
मट्टियापीढ
छगणपीढ
सयणापस्सय
सयण
आसण
पल्लंक
मंच
मासालक
मंचिका

खट्टा
सेज्जा
जाणापस्सय
सीया
आसंदण
जाणक
घोलि
गल्लिका
सगड
सगडी
याण
पृष्ठ २७
पुरिसापस्सय
मणुस्स
गय
वाजी
वसभ
करभ

दारपिधणापस्सय
कीडिका
दारकवाड
रस्सावरण
कुड्डापस्सय
लित्तकुड्ड
अलित्तकुड्ड
लित्तचेलिम
अलित्तचेलिम
लित्तफलकमय
अलित्तफलकमय
लित्तफलकपासित
अलित्तफलकपासित
खंभापस्सय
खंभ
पाहाण
धरणिखंभ
पिलक्खखंभ

णावाखंभ
छायाखंभ
खीवरुक्खखंभ
दगलट्ठिखंभ
सेलखंभ
कट्ठखंभ
अट्ठिकखंभ
रुक्खापस्सय
कंटकीरुक्ख
खीररुक्ख
चेतितापस्सय-
पडिमापस्सय
सेलपडिमा
लोहपडिमा
अट्ठिपडिमा
कट्ठपडिमा
पोत्थकम्मपडिमा
चित्तकम्मपडिमा

अधोगागार-
संयितापडिमा
मित्तिपडिमा
दारुपडिमा
हरितापस्सय
तणभारय
पत्तभारय
फलभारय
पुप्फभारय
भायणापस्सय
कुंभकारक
लोहमय
पटल
कोत्थकापल
मंजूसा
कट्ठभायण
पृष्ठ २०
अपवरखंभ
पीढोल्कगुंभ

चेतितपादव
पण्णपोट्टल
फलपोट्टल
मूलपोट्टल
पुप्फपोट्टल
घतकेला
तेल्लकेला
सुराकुंभ
अरंजर
पृष्ठ ३१
सोमाण
मिनी
सव्वतोभद्दभायण
दारपिंड
कवाड
अरंजरपेडिका
वेदुया
निस्सेणि
चेतिक

(२३) रतविभाग

पृष्ठ १८३
दिव्वरत
माणुस्सरत
तिरिक्खजोणियरत
पुरिसरत
थीरत
णपुंसकरत
चुंबितरत
आलिंगितरत
सेवणारत
अभारिकपुरिसरत
सभारिकपुरिसरत
अपतिकथीरत
सपतिकथीरत
अणरततुरस्सरत
वंझायीरत
दिव्वरत
अच्छरारत
देवरत
णागकण्णारत
णागरत
किंनरिरत
किंनररत
पिसाईरत
पिसायरत
रक्खसरत
रक्खसीरत
गंधव्वरत
गंधव्वीरत
असुरकन्नारत
असुररत
मतकपडिमारत
पत्थिवपडिमारत
सुत्तिकापडिमारत
चित्तपडिमारत
तिरिक्खजोणि-यरत
सगुणिरत
कक्कडिरत
टिट्टिभीरत
पारेवतीरत
छिन्नपालिरत
गोरत
महिसरत
अयेलकरत
अस्सतरिरत
सुणिकारत
वराहीरत
वळवारत
उट्टीरत
गद्दभीरत
गावीरत
महिसीरत
माणुस्सरत
थीरत
पुरिसरत
णपुंसकरत
विगतरत
अविगतरत
पृष्ठ १८४
उट्ठितरत
उवविट्ठरत
संविट्ठरत
अवत्थद्धरत
दक्खिणपस्सरत
वामपस्सरत
उत्ताणरत
णिकुज्जरत
ओणतरत
उब्भरत
एकभगरत
पसच्छियवेलुफालियरत
उत्ताणरत
उभयोसंविट्ठ
अद्धसंविट्ठ
एक्कापविट्ठ(द्ध)
पणतरत
कडिगहित
चतुप्पद
रधप्पयात
उपविट्ठरत
सयणावत्थद्ध
आसणावत्थद्ध
साहावत्थद्ध
वक्खावत्थद्ध
पृष्ठ १८५
गुदेरत
णाभिरत
थणंतररत
पाणिरत
उज्जारत
सामारत
कालिकारत
दीहारत
रस्सारत
थूलारत
किसारत
बालारत
वयत्थारत
मज्झिमारत
महव्वयारत
थंभणीरत
खत्तिकारत
वेस्सीरत
सुद्दीरत
कसिणोरक्खलभज्जारत
कारकभज्जारत
ववहारिभज्जारत
पउत्थपतिकारत
अविधवारत
अवट्ठितारत
चलचित्तारत
उद्दुणीरत
अणुदुणीरत
विसदारत
दुस्सीलारत
अद्धसंवुतारत
सभज्जारत
परभज्जारत
मित्तभज्जारत
रायपुरिसभारियारत
परिचारिकारत
परूढणखकक्खरोमारत
अचिरपरूढणहरोमारत
सुपरिमज्जितणहकक्ख-वत्थिसीसारत
पुधुउपधारत
संखित्तभगारत
परिमंडलभगारत
चतुरस्सभगारत
वंसभगारत
अमेखलारत
समेखलारत
कुमारिरत
जुवतीरत
उत्तानभगारत
णिण्णभगारत
पसण्णारत
कुद्धारत
चित्तारत
मुदितारत
विस्सुयकित्तिरत
पक्खातारत
दंसणीयरूवसंपण्णारत
सुगंधारत
दुट्ठथीरत
भिउडीरत
णिकाणितरत
खयरत
णक्खपदरत
दंतखयरत
गीतरत
हसितरत
आहारितरत
सुसुयरत
लोणियओधायणरत
सुहारत
पडियारत
विवादरत
रत्तिरत
दिवारत
संझाकालरत
पदोसरत
अवरण्हरत
मज्झंतियरत
अद्धरत्तरत
पच्चूसरत

(२४) दोहदविभाग

पृष्ठ १७१
रूवगतदोहद
मणुस्सगत
चतुप्पदगत
पक्खिगत
परिसप्पगत
कीडकिविल्लगत
पुप्फगत
गिरिगत
णदीगत
समुद्दगत
तलागगत
वाविगत
पुक्खरिणिगत
अरण्णगत
भूमिगत
णगरगत
खंधावारगत
छुद्दगत
निडुगत
गुम्मगत
पल्लगत
महामरगत
गुहगिगत
पव्वतगत
आरामगत
देवगत
संगामगत
सद्दगतदोहद
मणुस्ससद्दगत
पक्खिसद्दगत
चतुप्पदसद्दगत
पृष्ठ १८२
परिसप्पसद्दगत
दिव्वघोसगत
वादित्तघोसगत
आभरणघोसगत
गंधगत दोहद
णाणगत
अणुलेवणगत
मजिकामगत
पदंसगत
धूमगत
मल्लगत
पुप्फगत
फलगत
पत्तगत
आहारगत
रसगतदोहद
पाणगत
भोयणगत
खज्जगत
लेज्झगत
फासगतदोहद
आसणगत
सयणगत
वाहणगत
गहगत
वत्थगत
आभरणगत
जाणगत
समयदोहद
सरदे वत्त
गिम्हे वत्त
पाउसे वत्त
वासारत्ते वत्त
हेमंते वत्त
वसंते वत्त
सुक्कपक्खे वत्त
काळपक्खे वत्त
पक्खसंधीसु वत्त
अब्भंतरपंचमीवत्त
परमपंचमीवत्त
अब्भंतर
दसमीवत्त
परमदसमीवत्त
'पायरासे वत्त
पदोसे वत्त
मज्झंतिके वत्त
अड्डरत्ते वत्त
अपरण्हे वत्त
अतिवत्तसद्दवत्त
अणागतसद्दवत्त
वत्तमाणसद्दवत्त

(२५) रोगविभाग

पृष्ठ २०२
छेज्ज
विलक
तिलकालक
पत्थक
पृष्ठ २०३
कीडिमक
कुणिणख
गंठि
वण
काण
अंध
बहिर
कण्णच्छेज्ज
णासारोग
णासाछेज्ज
जिब्भारोग
जिब्भाछेज्ज
तयादोस
फासोवघात
खुंट
गंडीपाद
खंज
कुणीक
पलित
खरड
चम्मकील
कीडिग
किलास
कट्ठ
सिब्भ
खत
सुणवारक
कामल
णील
कण्हतिल
पीलक
गलुक
गंड
दद्दु
कोढिक
कोढित
वातंड
अंहरि
वातंडमरिस
भगंदल
कुच्छिरोग
वातगुम्म
सूल
छद्दि
फिक्का
अवयि
गलगंड
कट्टुसालुक (कंठमालक)
पट्ठीरोग
खंडोट्ठ
गुम्ल
करात
खंडदंत
सामदंत
गीवारोग
सीसवाधि
अक्खिवाधि
वातिक
पेतिक
सेंभिक
पृष्ठ २०४
सण्णिवातित

(२६) उत्सवविभाग

पृष्ठ ९७
बालक
जाणक
ठितपडिया
पंचमिका
सत्तमिका
उट्ठाणक
मासपूरणक
पिंडवद्धणक
उवणिग्गमण
पादपेसणक
परंगेणक
पदक्कमणक
पचाहरणक
चोलक
उपणयण
लेहणिक्खिवण
गणितापडणक
पृष्ठ ९८
गुलभक्खण
बाढकार
समासेयणक
सुण्णिका
उपमाणक
गोसग्गण्हाणक
पडिवज्झक
णिव्वहण
अधिक्कमणक
तोप्पारुमणा
पातिज्ज
णवण
पंचनेजण
वारेज्ज
अण्णोण्ण
जामातुकीय
दसमीण्हाणक
पृष्ठ १२१
बालोपणयण
वाधुज्ज
अधिक्कमणक
पृष्ठ १४७
बलि
मंगल
यागहरण
सेसा
पृष्ठ २०८
पिसुकज्ज
पेतकिच
पृष्ठ २२३
जायणविवड्ढी
पडिभोगकम्म
चेट्ठ
आवाह
वीवाह
चोलोपणयण
तिधि
उस्सव
समाय
जण्ण
पृष्ठ २४९
उज्जवणिका
पृष्ठ २५५
वरमज्जण
वधूमज्जण
गोसग्गण्हाणक
वरपंचमज्जण
तिरिक्खजोणिमज्जण
पृष्ठ २५६
वाधुज्ज
चोल
उवणयण
उज्जाणभोज्ज
पृष्ठ २६२
सेसा
जोग
तण्ण
बलि

(२७) वादित्रविभाग

पृ० २३०
वीणा
मसूरका
[illegible]
दद्दरक
आलिंगा
मुरव

(२८) पर्वतविभाग

पृष्ठ ७८
हिमवंत
महाहिमवंत
णिसढ
रुप्पि
मेरु
मंदर
णेलवंत
केलास
वस्सघर
वेयड्ढ
अच्छदंत
सज्झ
विंझ
मंत
मलय
पारियत्त
महिंद
चित्तकूड
अंवासण
मेरुवर

(२९) खनिजविभाग

रत्न
पृ० २३२
वेरुलिय
फालिय
मसारकल्ल
लोहितक्ख
अंजणमू(पु)लक
गोमेदक
अंकामलक
सासक
सिलप्पवाल
पवालक
वइर
मरगत
खारमणी
धातु
पृ० २३३
सुवण्णक
तवुक
तंबक
सीसक
काललोह
वट्टलोह
कंसलोह
हारकूडग
रूप्पियग
पृ० २५८
वउ
सीसक
लोह
तंब
हारकूडक
सुवण्ण
काललोह
तिक्खलोह
मुंडलोह
वर्णमृत्तिका
पृ० २३३
सुधा
सेडिका
पलेपक
णेलकरा
कडसकरा
गेरुग

मणोसिल
पवंग
हिंगुलक
पजणी
वण्णमत्तिका
णीलकधातुक
सस्सकचुण्णक
कण्हमत्तिका
पंडुमत्तिका
णदिमत्तिका
संगमत्तिका
विसाणमत्तिका
देवतायतणमत्तिका
संखभूमी
सुरंग
कडसक्करा
सुवण्ण
जातरूव
मणसिला
गोकंटक
खीरपक
भस्मवालुका
[illegible]
सुद्धभूमी

(३०) वर्ण–रङ्गविभाग

पृ० १०४
सुक्क
पंडु
णील
कण्ह
रत्त
पीतक
सेत
मेचक
पृष्ठ १०५
गयतालुकवण्ण
काकंडवण्ण
सुरगामिक
पदुमक
मणोसिलाणिभ
हरितालवण्ण
हिंगुलक
चित्तवण्ण
सिरसवण्ण
कोरेंटकणिभ

(३१) मण्डलविभाग

पृष्ठ ११५
महागमंडल
णक्खत्तमंडल
जोइस
आदिच्च
चक्क
समयमंडल
रिसिमंडल
संसमंडल
मंडलक
णापुण्णमंडल
भद्दमंडल
मंडलास
छत्तमंडल
उवलेवमंडल
किमिमंडलिक
पंचमंडलिक
अपंचमंडल
भाकण्णीकण्णिक
छक
उद्दलक
तलकण्णिक
वदक
तलपत्तक
परिहेरक
तलभ
कण्णतलपक
सदुक
मुद्दिका
वेरक
कण्णपालिक
णीपुर
कण्णुप्पलक
पण्णेलिक
सकडपट्टक
पालियकापट
अक्खपट्टक
भस्समंडल
वातचक्कमंडल
झल्लरिमंडल
लेहपट्टिकमंडल
सत्थिसंघातमंडल
अंगुलिमंडल
संघायमंडल
करणमंडल
पृष्ठ २३९
जोतिसमंडल
पुढवीमंडल
पृष्ठ २४१
महामंडल
मज्झिमगमंडल
खुड्डलगमंडल
णक्खत्तमंडल
महागमंडल
चंदमंडल
सूरमंडल
पृष्ठ २४२
पईकचक्कलग
धाडीचक्क
सकडचक्क

(३२) नक्षत्रविभाग

पृष्ठ २०६
पुव्वदारिक
दक्खिणदारिक
पच्छिमदारिक
उत्तरदारिक
समखेत्त
दिवड्ढखेत्त
अद्धखेत्त
जातिणक्खत्त
आदाणणक्खत्त
मित्तणक्खत्त
पुरिसणक्खत्त
थीणक्खत्त
णपुंसकणक्खत्त
कम्मणक्खत्त
देवणक्खत्त
गामणक्खत्त
देसणक्खत्त
कुलणक्खत्त
उपकुलणक्खत्त
कुलोपकुलणक्खत्त
पमद्दणणक्खत्त

(३३) कालविभाग

पृष्ठ २३५
मुहुत्त
दिवस
पक्ख
मास
वास
मिस्सिमंतर
[illegible]
कट्ठा
[illegible]
कला
पृष्ठ २४६
मज्झण्ह
अहोरत्त
पुव्वण्ह
अवरण्ह
मागधक
पातरास
अणुमज्झण्ह
पृष्ठ २४७
अत्थवेलिका
मागधवेला
दुद्धवेलिका
आलोलीवेलिका
आणुणामवेला
सूरवेला
पातरासवेला
गोधीवेला
जागुवेला
वामवेलिका
पाणवेला
पसुवेलिका
दीववेलिका
सामाम्पवेलीका
जामवेला
चोरवेला
गोसग्गवेला
पृष्ठ २५७
[illegible]
छाणक

(३४) व्याकरणविभाग

पृष्ठ १५२
व्याकरण
सर
वंजण
अंतत्थ
ओगाढ
अणोगाढ
घम
उम्माण
सिराकंपिय
उरत्थानीय
जिव्हामूलीय
अनुस्सार
अनुनासिक
समानक्खर
संधिअक्खर
णामिसरर
अघोस
घोसवंत
दन्तमूलजिह्वामूलीय
पृष्ठ १५३
पुव्वभाग
विभाग
बहुभस्स

(३५) तिर्यग्जातिविभाग

पृष्ठ ६२
चतुप्पद्
हत्थी
अस्स
उट्ट
गद्दभ
घोडग
वसभ
बलिवद्द
वच्छक
तण्णक
सीह
वग्घ
धक
खग्ग
रोहित
दीविक
अच्छभल्ल
तरच्छ
महिस
गय
छोयक
सस
कंरेण
घण्णक
कडुमाय
कुरंग
सियाल
सूकर
सुणय
विराल
णउल
कुक्कुर
मूसग
सरभ
रुरु
वाणर
गजपुंगव
मेस
अरणक
मेंडग
छगल
हरित
मग
कवल
कोसक
पृष्ठ ६९
चतुप्पदी
कणेरु
हत्थिणी
गावी
महिसी
वडवा
किसोरी
घोडिका
अजा
अविला
कण्हेरी
रोहिती
एणिका
पसती
कुरंगी
मिगी
महुंकी
सुण्ही
सीही
वग्घी
विकी
अच्छभल्ली
मज्जारी
मुंगसी
उण्हाली
अडिला
मूसिका
छुंछिका
ओवुलीका
उंदुरी
वाराही
सुवरी
कोली
दीपिका
खारका
घरकोइला
चतुप्पद
पृष्ठ २३८
अय
अमिल
सुणग
सूअर
[illegible]
पसत
विलाल
वाणर
सस
लोपा
पृष्ठ २३९
हय
गय
खर
[illegible]
गो
माहिस
वग्घ
अच्छभल्ल
दीपिक
तरच्छ
खग्ग
वग
रोहित
पसत
वराह
पृष्ठ २२६
गो
महिस
अय
एलक
उट्ट
खर
सुणक
सीह
वग्घ
तरच्छ
अच्छभल्ल
दीविक
गज
चमरी
खग्ग
हत्थी
अस्स
वराह
[illegible]
सियाल
मंगुस
णउल
उंदुर
[illegible]
पयल
कातोदूक
सरंत
घरघूला
थलचर
दुक्खचर
बिलसाइ
सेलबिलासय
भूमिबिलासय
वृक्षचर
बिराल
उंदुर
थालक
घरधूल
अहिणूक
तोडुक
पचलाक
शैलबिलाश्रय
दीहवग्घ
अच्छभल्ल
तरच्छ
सालिभ
लेधक
दिपिक
विलालु
अजीणविलाल
सलभ
गोधा
उंदुर
भयकर
पृष्ठ २२७
भूमिबिलाश्रय
लोपक
णउल
गोधा
अहिणूक
तोडुक
ताडक
मनुष्यतिर्यक्सा-धारण
वाणर
णरसीह
अस्सपूतण
णीलमिग
गायगोकण्ण
पृष्ठ ६२
पुंजातीयमत्स्य-जाति
मच्छ
कच्छभ
णाग
मगर
सुंसुमार
तिमी
तिमिंगिल
गिल
मंडुक
कुलीर
धोडमच्छक
पाठीण
णागरक
सण्हमच्छ
महामच्छ
[illegible]
गाधमक
पिप्पिपिण
स्त्रीजातीयमत्स्य-जाति
महुंही
अहिणूका
जलूका
अहिणी
थोमीका
मिङ्ग्वाली
कुलीरा
कच्छभी
वत्तगामी
मिगिला
मिकुप्पी
वरई
ओवातिका
मंडुकी
सुंसुमारी
असालिका
जलचर
पृष्ठ २२७
कद्दमग
हित्थिय
कच्छभक
आणावचरणिग
पदुम
भिंगणाग
वमारक
राजमहोरक
सवलाहिक
कुक्कुड
देवपुत्तक
समाणाहिय
पृष्ठ २२८
दुपदमच्छ
हत्थिमच्छ
मगमच्छ
गोमच्छ
अस्समच्छ
णरमच्छ
णदीपुत्तक
चतुप्पदमत्स्य
कच्छभ
सुंसुमार
मंडुक
उदकाय
बहुपदमत्स्य
कुमारिल
सतुचिक
दीर्घपदमत्स्य
घम्मिर
घोहणमच्छ
वइरमच्छ
तिमि
तिमिंगिल
पाठीण
सुंसुमार
कच्छभमगर
गद्दभरूपमाण
रोहित
पिचक

सतपदी
इंदगोपिका
चसणिका
पृष्ठ २२९
भमर
मधुकरी
मसग
मक्खिका
किविल्लुका
ओपविका
कुंथु
इंदगोपक
पसलचित्त
कण्हकीडिका
यूका
मंकुण
उप्पातका
रोहिणिका
शुगलिका
कण्हपिपीलिका
कण्हविच्छिका
घूण
संताणक
ढंढणाही
पुच्छमरथ

अग्गिकीड
पतंग
उद्भिज्ज
[illegible]
काकुंथिक
वडक
सिरिवेट्टक
करिण्डुक
पयुमक
सट
विलासय
कण्हगुलिक
सेतगुलिक
खुलिक
आडाडक
कसक
वातपुरील
वातंसु
कुतिपि
बहुपद
इलिका
सीकुणिक
मंदी
डब्भणाभि
तंतुवायक

णदीमच्छक
जलायुमच्छक
आसालिक
कीमिक
चुरु
गंडूपय
सव्वट्ठक
सूकमिड
पृष्ठ २३०
लिच्छ
संयुट्टिक
सूकमिद
पृष्ठ २३७
खुल्लक
वराड
संखणग
सिप्पि
गंडूपद
जलूका
आसालिका
वारवत्त
पाण्णयिक
धिंकुण
लिक्खा
घुण
चम्मकीड

फलकीड
घण्णकीड
सुत्तजगलिका
कुंथु
उरणी
सुयमुत्ता
लूता
कोलिक
घरपोपलिका
अहिलुका
भिंगारी
आलका
भमर
मधुकर
तोट्ठ
पतंग
मच्छिका
मगसक
छिर
कुलिल
तिगिलि
मंडूकलिआ
पृष्ठ २३८
गोम्मी
कीडग
विच्छिय

सुरगोपक
इंदकाइय
उंदुर
सरड
खालग
खुड्डलग
पंयोलग
वतिभेदग
गहकंडुग
कुंभकारीभ
चोलाडिग
कुलिंग
घम्मणग
पंदराग
पृष्ठ २६५
एगिंदिय
पुढविकाइक
आउकायिक
तेउकायिक
वायुकायिक
वणप्फतिकायिक
पृष्ठ २६६
बेइंदिय
संख
संखणग

सिप्पिका
जलाउ
दव किमि
णीपुर
सुमंगल
संबुक्क
तेइंदिय
जुंगलिका
उप्पाडक
उप्पातक
तणहारक
पत्तहारक
कुंथु
पिपीलिका
उवचिक
रोहिणिक
तेरटक
तपुस
मिंजिक
पातिक
साहिक
सतप्पाय
गोम्मि
हत्थसोंडक
कटमच्छ

(३६) वनस्पतिविभाग

पृष्ठ २०२
पुष्फ
फल
[illegible]
गुच्छ
गुम्म
लता
वल्ली
पत्त
पवाल
अंकुर
परोह
पृष्ठ ६३
पुंजातीय वृक्ष
अंब
अंबाडक
पनस
लकुच

असोग
तिलक
लकुची
साल
बकुल
वंजुल
पुण्णाग
णागरुक्ख
कुरवक
अंकोल
कोलिक
णग्गोध
अतिमुत्तक
अहिरण्णक
कण्णिकार
चार
[illegible]
किंसुग

पालिभद्दग
सज्ज
अज्जुण
कदंब
णिंब
कुडज
उदुंबर
अण्णोघ
णग्गोध
वड
तिण्डक
सिलिप
विल्लिपध
णिदुर
साग
असण
पाम
कोविदार

चिलक
बंधुजीवक
दधिवण्ण
सत्तिवण्ण
कोसंब
भीरुय
अयकण्ण
अस्सकण्ण
धम्मण्ण
धव
दाडिम
णालिकेर
कविट्ठ
रिट्ठक
पालावत
[illegible]
कोविदाल
[illegible]

सिरीस
उत्तोध
णल
मधुग
चंदण
लोद्द
उच्चोलक
पारंग
खदिर
अपमार
कर
पुंडरसपकारयंद
पारव
दुम
[illegible]
[illegible]
[illegible]
विरची

पृष्ठ ६३
पुंजातीय गुल्म
कोरंट
कणवीर
सिंधुवार
अणोगण
अगोझ
कुंद
मेदकंटक
[illegible]
वाणीर
छिक
[illegible]
तिमिरक
मन
[illegible]
[illegible]

पृष्ठ ६३
पुंजातीय पुष्प
पदुम
पुंडरीक
पंकय
सहस्सपत्त
सतपत्त
सप्फ
कुमुद
उप्पल
कुवलय
गद्दभग
तणसोल्लिक
भामरस
इंदीवर
कोज्जक
पाडल
कंदल
चंपगपुप्फ
हरिकाक
लवंगपुप्फ
मोगरग
अंकोल्लपुप्फ
सहचरपुप्फ
पुंपुप्फपकार्थक
कंटेगुण
संविताणक
[illegible]
खुंमल
आमेलक
[illegible]
गोच्छक
पुप्फरासी
पुप्फणिगर
पुप्फपोट्टल
पृष्ठ ६४
पुंजातीय फल
कुमंड
तुंब
कालिंग
कस्सारुग
समविंदुक
वालुक
तपुसेल्लालुक

दालिम
णालिकेर
विल्ल
आमलक
तिंदुक
बदर
सेलुडक
तलपक्क
सीवण्ण
धम्मण
तोरण
करमंद
वेभेलक
कंटासक
जंबुफल
पारावत
अक्खोल
मातुलिंग
खजूर
कलिमाजक
पृष्ठ ७०
स्त्रीजातीय वृक्ष गुल्मादि
पिप्पली
वेडसी
जंबू
अंबिलिका
चिंचिणिका
मंडी
सीवण्णी
कज्जूरी
केतकी
कट्ठकीका
तिंबुरुकी
चकंटी
बेलरी
तेरणी
भरलसा
मामली
सेवन्ती
लवापली
सीकवहोकी
लिंगिण्डी
हिंद्यपोदा

टक्कारी
वेजयंती
कंगूका
सीसवत्थिया
अप्फोतिका
धवासी
सिंदीवासी
समुद्दवल्ली
कप्पासी
हरिका
उंगुणी
मातुलिंगी
णिहू
भाफकी
भरंजरवल्ली
उदकवल्ली
कूमंडी
तवुसी
पत्तालुका
तुंबी
कालिंगी
वालुंकी
कक्खारुणी
णलिणी
पउमिणी
कमलिणी
उप्पलिणी
पिंडालुकी
घोसाडकी
ससविंदुकिणी
भंजुलिका
कसकी
कारियल्लिका
णिली
कालिका
अंजणेकसका
स्त्रीवृक्षादि पकार्थक
लता
लट्ठी
रुमिणी
काणवी
दुमगुम्मलता
पृष्ठ ७०

थीपुप्फ
चंपयजाति
महाजाति
सुवण्णजूधिका
जूधिका
तकुली
तलुसी
वासंती
वासुला
चट्टंदपुट्टी
जयसमणा
णवमल्लिका
मल्लिका
णितणिका
तिर्गिठी
पीतिका
मगयंतिका
पियंगुका
कंगुका
कुरुट्टका
वणती
अंबमंजरी
थीपुप्फपकार्थक
पुप्फमंजरी
पुप्फपिंडिया
पुप्फगोच्छी
थीपुप्फसंजोग
चंदा
तीसालिका
पारिहत्थी
कुभिंची
धम्मी
जाणी
विलिंजर
पोट्टालिका
वेजयंती
मल्लमालिका
जंगमाला
लोलकमाला
पृष्ठ ७०-७१
थीफल
मुंदिका
चलिका

कसेरका
मुणालिका
विधित्तिका
लोमसिका
अक्खोला
कुक्कुडिका
सिंगलिका
थीफलपकार्थक
फलपिंडी
फलगोच्छ
फला
फलिका
फलमाला
फलमिंजा
फलपेसिका
पृष्ठ १०४
सुकिलपुप्फ
सेडकणवीर
वासंती
वासुला
वेइल्लपुप्फिका
जाती
कुणी
जूधिका
णवमालिका
मल्लिका
चंपकाली
तणसोल्लिक
सेडकफलिका
पुंडरिक
सेडगद्दभक
सेडककंद
सिंधुवार
रुक्ख
पृष्ठ २३१
पणस
तुंब
कूमंड
अंब
अंबाडक
णीप
तिंदुक
उदुंबर

अस्सोत्थ
[illegible]
पीलु
पियाल
फरुस
चम्मणडोला
कोलक
करमंद
कलामस
पारेवत
लउच
मातुलुंग
[illegible]
जंबु
दालिम
पृष्ठ २३२
भयकण्ण
पूतिकरंज
अहिमार
पुतिला
कुंभकंडक
पृष्ठ २३८
आमलग
जंबु
लप्फल
अंबाडग
करमंद
सीवण्ण
उंबर
रातण
तोडण
सीडा
लउसु
तुंबुरु
पिप्पल
सेलुफल
कोलफल
वारमट्टिम
घरिफल
करिलेग
लोमसिक
पिद्दालक
वातिंगण
वालुंक

पूगफल
कक्कोलग
लवंग
जातीफल
मुद्दीगा
खज्जूर
मरिय
वासिका
फला
दिग्ल

मरकल
[illegible]
सिंगालक
अंधक
दालिम
तीतिणी
बिल्ली
पलालु
वेयवसक
मूल

कक्खारुक
तवुसक
पृष्ठ २३९
तलपक्क
णालिक
कपिट्ठ
लकुल
कालिंग
तुंब

कूभंड
पृष्ठ २४३
अज्जुण
कुडय
कलंब
सिलिंध
कंदलि
कुडुंबक
पृष्ठ २६६

रुक्ख
लता
गुम्म
गुच्छ
वलय
उदाण
तण
थलज
थलजहरित
कंद

मूल
खंध
[illegible]
पत्त
पुप्फ
[illegible]
बीज
जलज
[illegible]

(३७) धान्यविभाग

पृष्ठ ६६
पुंधण्ण
सालि
वीहि
तिल
कोद्दव
वरक
उरालक
चीण
मुग्ग
णिप्फाव
जव
गोधुम
मास
मूदत्य
चणक
कुलत्थ
[illegible]

पृष्ठ १६४
सालि
वीहि
कोद्दव
कंगु
रालक
तिल
मास
मुग्ग
चणक
कलाय
णिप्फाव
कुलत्थ
जव
गोधूम
कुसुंभ
अतसी
मसूर

रायससव
वरक
चणव
सेतवीहि
सेततिल
रत्तसालि
रत्तवीहि
रत्ततिल
कण्हवीही
कण्हरालक
कण्हतिल
पृष्ठ १६५
सेतणिप्फाव
रत्तसासव
रत्तणिप्फाव
हारिडणिप्फाव
सस्सप

भाजनगत धान्य
मंजूसागत धान्य
पल्लगत धान्य
जाणगत धान्य
णिवेसणगत धान्य
ओवारिगत धान्य
अरण्णगत धान्य
कीत धान्य
विक्कीत धान्य
सक धान्य
मित्त धान्य
जाचितक धान्य
णिक्खेवपरिगतधान्य
पोराण धान्य
नव धान्य
पृष्ठ १७८
कोसीधण्ण
अकोसीधण्ण

कोसीधण्ण
तिल
मास
मुग्ग
चणक
कलाय
णिप्फाव
कुलत्थ
मसूर
तुवरि
पृष्ठ २२०
सालि
वीहि
कोद्दव
कंगु
[illegible]
[illegible]

जव
गोधूम
मास
मुग्ग
अलसंदक
चणक
णिप्फाव
कुलत्थ
चणविका
मसूर
तिल
अतसी
कुसुंभ
[illegible]
सेततिल
सेतसासव
तंबणिप्फाव
रायसासव

(३८) देवविभाग

पृष्ठ ६२
देव
असुरलोक
असुरेंद
[illegible]
सुवण्ण
णागलोक
भवणवासी
महालोक
किंपुरस
गंधव्व
किन्नर
मरुत्त
भूत

पिसाय
[illegible]
[illegible]
चंद
सूर
बुध
सुक्क
बहस्सति
राहु
धूमकेउ
लोहियंक
सणिच्छर
विमाणिंद
कप्पपती

कप्पोपक
वेमाणिक
गोज्झग
गोज्झगपति
पृष्ठ ६९
देवी
असुरी
असुरमज्जा
असुरकण्णा
णागी
णागकण्णा
भवणालया
गंधव्वी
रक्खसी

लक्खी
किन्नरका
वणप्फती
दिसा
तारका
हिरी
सिरी
लच्छी
कित्ती
मेधा
सती
धिती
धी
बुद्धी

इला
सिता
विज्जा
विज्जुता
चंदलेहा
उक्कोससा
अच्छरा
देवकण्णा
असुरकण्णा
इंदग्गमहिसी
असुरग्गमहिसी
अहरिका
भगवती
अलंबुसा

मिस्सकेसी
मीणका
पियदंसणा
[illegible]
अणादिता
अइराणी
मिस्सकेसी
तिधिणी
सालिमालिणी
तिलोत्तिमा
चित्तरधा
चित्तलेहा
देय
पृष्ठ २०४

सुर
जक्ख
गंधव्व
पितर
पेत
दारग
वसव
आदिच्च
असिम
अव्वाबाध
देवदूत
अरिट्ठ
सारस्सत
गद्दतोय
वण्हि
अच्छरा
वरुणकाइय
वेसमणकाइय
सोमकायिय
खंद
विसाह
अग्गि
मारुय
पृष्ठ २०५
इंदग्गि
बंभा
इंद
उवेंद
बलदेव
वासुदेव
काम
उद्दलाद्दला
गिरी
सिव
जम
वेस्समण
वरुण
सोम
सिरी
भद्दाणी
पुढवी
एकणासा
णवमिगा
सुरादेवी
णागी
सुवण्णा
असुर
णाग
सुवण्ण
दीवकुमार
समुद्द
दिसा
अग्गि
वाउकुमार
थणितकुमार
विज्जुकुमार
सामाणिय
आभिओगिक
परिसोववण्ण
समुद्ददेवता
णदीदेवता
कूवदेवया
तलागदेवया
पल्ललदेवया
बुद्धी
मेहा
पृष्ठ २०६
खेत्तादेवता
वत्थुदेवता
णगरदेवता
सुसाणदेवता
वच्चदेवता
उक्कुरुडिकदेवता
आरियदेवता
मिलक्खदेवता
सुवण्ण
पृष्ठ २२३
वेस्समण
वेण्हु
सिव
खंद
विसाह
बंभा
बलदेव
वासुदेव
पज्जुण्ण
णाग
अलणा
अज्जा
भद्दाणी
माउया
सउणी
एकाणंसा
सिरी
बुद्धी
मेधा
कित्ती
सरस्सती
रक्खस
गंधव्व
किंपुरिस
जक्ख
पृष्ठ २२४
वेमाणित
अच्छरसा
अज्जाधिउत्थ
रुक्खाधिउत्थ
गिरिकुमारी
समुद्दकुमार
दीवकुमार
भारत
वातकण्णा
वरुण
सोम
इंद
पुधवी
सत्थंधिवुत्था
विज्जासत्थाधिवुत्था
कुलदेवता
वत्थुदेवता
वच्चदेवता
सुसाणदेवता
पितुदेवता
विज्जादेवता

(३९) एकार्थकविभाग

पुंप्यकार्थक
पृष्ठ ६१
महापुरिस
महापुरुस
पुरुससीह
पधाणपुरुस
कुलपुरुस
रायपुरुस
पुरिसिस्सर
विज्जापुरिस
जुवाण
जोव्वणत्थ
पोअंड
पुरिस
गड्डुक
पोढड
अड्ढग
सुभग
थिरंग
थिरभुय
सूर
धीर
वीर
विसारद
निच्छाव
उद्दमाण
महाबल
महापरक्कम
स्त्रीप्यकार्थक
पृष्ठ ६८
महोमहिला
महिला
सुमहिला
महोइत्थी
सुइत्थी
इत्थी
दारिया
बालिया
भिंगिका
भिंडिका
वण्डिका
मण्डिका
पोतिका
कण्णा
कुमारी
धिज्जा
पत्ती
वधू
उपवधू
इत्थिया
पमदा
अंगणा
महिला
णारी
पोहट्टी
जुवती
जोसिता
वणिता
विलका
विलासिणी
दइदा
कंता
पिया
मणामा
हिदइच्छिणा
इस्सरी
सामिणी
वल्लभी
पज्जिया
अज्जिया
नानिका
महमातुया
चुल्लमाता
माउस्सिया
पितुस्सिया
भज्जा
जारी
सही
धूता
णत्ति
पणत्तिणी
रमा
सुण्हा
सावत्ती
सल्लिका
मेधुणा
भातुज्जाया
सगोत्ता
भगिणी
भागिणेज्जा
कोडुंबिणी
पितुस्सहा
माउस्सहा
णेयातुकासहा
इत्थीरयण
महादेवी
रायपत्ती
रायग्गमहिसी
रायोपज्जायपत्ती
सेणापतिणी
भोयणी
तलवरी
रट्ठिणी
गामिणी
अमच्ची
दुलभी
पडिहारी
इस्सरिगिणी
भोइणिणी
धरिणी
सच्चवादी
इब्भी
भोगमित्ती
भडी
पाडी
काहगिणी
सहिगिणी
लाडी
जोणिगा
चिलाती
बब्बरी
पुलिंदी
अंधी
दमिली
लाजिका
उवघाइणी
दासी
कम्मकरी
पेसी
नत्तिका
पधावती
अणे

मोति
माणिणी
मातुस्सा
ओवातिका
सामोवाता
कालस्सामा
कालका
दिग्घमडहिया
खुज्जमडहिया
आयतमडहिया
चतुरस्सा
अंतेपुरिका
अभोगकारिणी
सयणपाली
मंडाकारिकिणी
तणुकी
मज्झिमिका
काणा

नपुंसकपकार्थक

पृष्ठ ७३
णपुंसक
अपुरुस
चिल्लिक
सीतल
पंडक
वातिक
किलिम
संकर
कुंभीपंडक
इस्सापंडक
पक्खापक्खि
विक्ख
संढ
णरेतर

पृष्ठ १०१
ब्राह्मणपकार्थक
पितामह
बंभ
सयंभु
पयावति
बंभण
बंभरिसि
बंभवत्थ
बंभण्णु
पियबंभण
दिजाति
दिजातिवसभ
दिजातिपुंगव
दिजाइपवर
विप्प
विप्परिसि
विप्पवर
जण्ण
जण्णोकत
जण्णकारि
जण्णमुंड
सोम
सोमपा
सोमपाइ
सोमणाम
अग्गिहोत्त
आहितग्गि
अग्गिहोत्तहुत
वेद
वेदज्झाइ
वेदपारक
चतुवेद
वातेस
पुव्वमास
चतुम्मास
जुव
चिति
अग्गिचयणी
कमंडलु
दब्भ
सज्जा
भिसी
दंड
जण्णोपइतक

कृष्णवर्णपकार्थक

पृष्ठ ९२
कण्ह
नील
कालक
असित
असितकिसिण
हरित
अंजण
कज्जल
रुयाण
भंग
खंजण
भिंगपत्त
गउल
सूगर
कोकिला
गोपच्छेलक
भमर
मोरकंठ
वायस
मातंग
मतिंग
गय
महिस
बलाहक
मेघ
जलहर
कण्हकराल
कण्हतुलसी
णीलुप्पल
पामेच्छा
णेलकंठक
मसी
आरिट्ठक
कण्हाल
कण्हमोयक

दृढपकार्थक

पृष्ठ ७८
हिमवंत
महाहिमवत
णिसढ
रुप्पि
मंदर
णेलवंत
केलास
वस्सधर
वेयड्ढ
अच्छदंत
सज्झ
विंझ
मंत
मलय
पारियत्त
महेंद
चित्तकूड
अंबासण
मेरुवर
णग
पव्वत
सेल
सिलोच्चय
सिहरि
पासाण
पत्थर
उपल
मणि
सिलापट्ट
गंडसेल
गिरिक
वइर
मेरुक
मरुभूतिक
धुवक
अचलित
थावरक
सिवणाम
गुत्तणाम
भव
अभव
थित
सुथित
ठाणत्थित
अकंप
णिप्पकंप
णिव्वर
सुहत

यामपकार्थक

पृष्ठ ७६
वाम
वामावट्ट
वामसील
वामायार
वामपवत्त
वामदेस
वामभाग
वामतो
अपवाम
अपसव्व
अवसव्व
अप्पग्घ

उत्सवपकार्थक

पृष्ठ ९८
उस्सय
समास
जण्ण
छण
अब्भुदय
भोज्ज
मज्जणक

पृष्ठ १२१
उस्सय
समास
विहि
जण्ण
छण

लक्षण पृष्ठ १७३
वण्ण
सर
गति
संठाण
संघतण
माण
उम्माण
सत्त
आणुक
पगति
छाया
सार

अष्टाङ्गनिमित्त पृ. १
अंग
सर
लक्खण
वंजण
सुविण
छिण्ण (दिव्व)
भोम्म
अंतलिक्ख